विषय.	पृष्ठांक.

एकोनविंशतितमः प्रबन्धः ।

विषय. पृष्ठांक.

विषय. पृष्ठांक.

इति रामस्वयंवरानुक्रमणिका समाप्ता।

श्रीः।

अथ रामस्वयम्वर

श्रीगणेशाय नमः।

दोहा–परते पर कारणहुँ कर, कारण पुरुष प्रधान।
परविभूति परविभव प्रभु, जय यदुपति भगवान॥
जग सिरजत पालत हरत, जाकी भ्रुकुटि विलास।
बसत अचंचल जेहि रमा, जय जय रमानिवास॥
सुरगण नरगण मुनिनगण, हरत विघन गण जोय।
एकरदन शुभ सदन जय, मदन कदन सुत सोय॥

कवित्त।

तेरईभरोसभरोभवमेंनभीतिभाऊं,भाषि भाषिभूरिभावरसनानहारती
भेदत्योंअभेदहावभावहूकुभावकेतेभावकसुबुद्धियथामतिनिरधारती
तेरियेभलाईतेभलाईकविताईभाई,माईमतिपाईकौनजापैनानिहारती
हारतीनहिम्मतिपसारतीसुकिम्मतिसँभारतीसुसंमतिजेवंदेतोहिंभारती

सोरठा–इष्टदेव शुकदेव, व्याससुवन वैराग्यवपु।
जेजन कृततुव सेव, तिनहिं पराभव भव न भव॥
प्राचेतस वाल्मीकि, जगत सुकवि रवि आदि कवि।
जयति काव्य जेहि लोक, चतुरानन ते आजुलों॥
जय जय तुलसीदास, रामायण जिन निर्मयो।
जासुप्रभाव प्रकाश रसिक होत वांचत जड़उ॥
कृष्णचरित रसपूर, नमोसुर कलिसूर कवि।
जासु भनित रसमूर, होत दूर सुनि कूरता॥
व्यासदेव पदकंज, वार वार वन्दन करौं।

जो सुमिरत मनरंज, मेटि मनोरंजन करत ॥
जासु मुक्तिप्रद नाम, हरि गुरुपद वन्दन करौं ।
तासुकृपा ममकाम, सिद्धसकल अनयासहीं ॥
रघुपति भक्तप्रधान, काशीपति पितुनामपद ।
धरि शिर करहुँ बखान, रामस्वयंवर ग्रंथवर ॥
दोहा–गान करत महँ अति सुलभ, ताते गानहिं छन्द ।
औरो छन्द अनेक किय, जहँ तहँ मंजु अमन्द ॥
चौबोला को छन्द रिजु, गान करत सुख होइ ।
गायक जन कहँ प्रीतिप्रद, सब गावत मुदमोइ ॥
दोहा और घनाक्षरी, तथा सोरठा आदि ।
चौबोला बिच बिच लसत, औरहु छन्दमजादि ॥

छन्द चौबोला ।

नारायण को रूप नाम अरु लीला धाम सुहावन ।
तिनको गाइ ध्याइ जग के जन लहत परम पद पावन ॥
जाकी रुचि जेहि रूप नाममें, सो जन तासु उपासी ।
सो तेने रस रसिक रँग्यो रँग बिरले सब रस रासी ॥
सज्जन सुमति सुशील साधुवर संसृत विमुख विज्ञानी ।
नाम धाम लीला वपु हरिके कबहुँ भेद नहिं जानी ॥
सहित भेद अथवा अभेद करि कौनहुँ विधि हरिदासा ।
होतहि हरत भूरि भव की भय रहति न पुनि यमत्रासा ॥
पै तिन महँ जे रसिक उपासक अतिशय मृदुल स्वभाऊ ।
करहिं भावना विविध भांति को रासि भेद नहिं काऊ ॥
जो जेहि देव उपासक सांचो सो अपने प्रभुकाहीं ।
परहुते पर जानत रति ठानत तेहि पर दूसर नाहीं ॥
राम उपासक कृष्णउपासक इनहुँन महँ बहुभेदा ।

मत अनुसार करत प्रतिपादन यद्यपि अनुसर वेदा ॥
शैव शाक्त अरु गाणपत्य बहु सौर वैष्णवहुआदी ।
वेद पुराण प्रमाण पृथुल पथ निज निज मत मरयादी ॥
यह झगरो बगरो जगरोधत हरि पद अति अनुरागा ।
ताते सज्जन रसिक शिरोमणि यह झवारि सब त्यागा ॥
ज्ञान विज्ञान विराग भक्ति करि ह्वै अनन्य हरि दासा ।
लीला कथा निमग्नचित्त करि नित्यहि लहत हुलासा ॥

दोहा—हरि लीला साधन विमल, लखि उपजत अनुराग ।
यह साधन सब भाँति ते, लखत सुमति बड भाग ॥

छंद चौबोला ।

शांत सख्य शृंगार सु वत्सल अरु प्रधान रसदासा ।
करिकै विमल भावना पांचौ छोड़त जग की त्रासा ॥
यद्यपि हरि के रूप अनेकन होत अनेक उपासी ।
तद्यपि पंच भावना पूरण राम कृष्ण महँ खासी ॥
मुक्ति मिलत हरि रूप ध्याय सब यामें नाहिं संदेहू ।
पैसुखराम कृष्ण ध्याये जस तस नाहिं और सनेहू ॥
ताहू पर जे भावकपूरे ते दुख सुख सुनि गाथा ।
दुखी सुखी अति होत भाव उर करि उदोत सत साथा ॥
ते समर्थ सब भाँति सुसज्जन पूरपरेसहि प्यारे ।
हरि लीला महँ लगी सुरति नित तन की सुरति बिसारे ॥
पै जे अधम मंदमति पामर मो सम विषय विलासी ।
तेऊ चहत कृष्णपद भजिबो मलक गरुड पद आसी ॥
भाग्य विवश सज्जन पद रजधरि कोटि जन्म महँ कबहूं ।
जो किय हरि महँ नेह छेह बिन देह गेह तजि तबहूं ॥
सो प्रयात हरिधाम आम अति नाम प्रतापहि धारी ।
एक बार में हौं तिहरो सुनि अपनावत गिरिधारी ॥

वेद उचारे साधु पुकारे हरि को दीन पियारे।
को दयालु देवकी लाल सों तीनिहुँ काल विचारे॥
सन्तकृपा अपने पर जानो पूर्वपुण्य कछु होई।
राम कृष्ण के चरित नीक मोहिं लगत न बरजत कोई॥

दोहा–ताते भाषा "भागवत", रच्यो स्वमति अनुसार।
बहुरि "रामरसिकावली", सन्तचरित विस्तार॥
"रुकमिणि परिणय" ग्रंथ इक, "रघुपति शतक" सिकार।
"गंगशतक" "सुंदरशतक", नेसुक कियो उचार॥
और "शतकजगदीश" को, ग्रंथ सु "भक्तिविलास"।
"विनैमाल" सु "पदावली", त्यों रघुराजविलास॥
रच्यो संस्कृत ग्रंथ कछु, शतक एक जगदीश।
सभा सु "धर्मविलास" यक "शंभुशतक" नतिईश॥
रच्यो राज रंजन बहुरि सब रस मतन प्रकाश।
कथा रुचिर रामायणी नाहिं कछु कियो विकाश॥

छन्द चौबोला।

राम कृष्ण के चरित मनोहर पतितन पावन कारी।
सुखद मनोरंजन भव भंजन दुख गंजन मनहारी॥
आदि अन्त में कृष्ण चरित्त सब आनँद अमित उदोतू।
वृन्दावन रसरास विलास विकास हास नहिं होतू॥
राज माधुरी रूप माधुरी चरित माधुरी सांची।
तुलसीवन मधुपुरी द्वारिका सन्तन मन रतिराँची॥
अति लीला लावण्य देवकी लालन की अघहारी।
कतहुँ न अस वियोग दुख वरणित जेहि सुनि संत दुखारी॥
लीला पुरुषोत्तम यदुनायक द्वारावती विलासी।
मरयादा पुरुषोत्तम श्रीरघुनायक अवध निवासी॥
प्रानहुँ प्रिय सब दीनन के निकारण करुणाई।

विना हेतु के हितू हेरि हरि हुलसावत हित दाई ॥
जो लीला में लखि ईश्वरता व्यापक विभुहि विचारो ।
रसाभास अनयास होत हठि नहिं विशेष सुखसारो ॥
जो माधुर्य्य भाव तहँ राखहु तौ दुख चरित न गावो ।
ऐश्वर्य्यहि माधुर्य्य भेद यह दोउ यक संग न भावो ॥
मैं असमर्थ नाथ दुखगाथा गावन में सब भाँती ।
विरह विपत्ति व्यथा वर्णत में रसना रहि रहि जाती ॥
यद्यपि सेतुवन्ध लङ्कापति विजय विदित तिहुँलोका ।
विपिन गमन दशरथ कुमार को उपजावत अति शोका ॥

दोहा—अवनि उतारन भार को, हरि लीन्ह्यों अवतार ।
पैन वनत वर्णत विपिन पद गमनत सुकुमार ॥

छन्द चौवोला ।

वहुरि स्वामिनी हरण महा दुख वरणि जाइ कहु कैसे ।
पुनि वियोग जग जननि नाथ को लागत कथन अनैसे ॥
ताते मम हरि गुरुनिदेश दिय वालकाण्ड भरि पाठा ।
करहु तजहु दुख कथा यथा लै घृत वुध त्यागत माठा ॥
ताते केवल वालकांड को पाठ नेम मम हेरो ।
श्रीभागवत और रामायण इष्टदेव है मेरो ॥
आचारज रामानुज आदिक दक्षिण के आचारी ।
संध्या जप तप व्रतहु नियम यम रामायण लिय धारी ॥
अश्लोकहु अश्लोकारध नहिं जवलों पाठ कराहीं ।
तवलों अम्बु पानहूं त्यागत का पुनि भोजन काहीं ॥
ताते राम स्वयम्वर गाथा रचन आस उर आई ।
रघुपति वालचरित्र विवाह उछाह देहुँ मैं गाई ॥
वालकांड को विशद चरित संक्षेप कथा षट कांडा ।

वरनहुँ रीति वालमीकी जेहि सुनि पुनीत ब्रह्मांडा ॥
उक्ति युक्ति तुलसीकृत केरी और कहां मैं पाऊँ ।
वालमीकि अरु व्यास गोसाईं सूरहि को शिर नाऊँ ॥
युगुल आदि कवि युगकलि कविरवि इष्टदेव मम चारी ।
उपजे अधम उधारण कारण सकल विश्व उपकारी ॥
काव्य प्रबंध छंद बन्धन को मैं कछु जानहुँ नाहीं ।
रचहुँ यथामति रामकथा को भजन मानि मन माहीं ॥
सोरठा—जय जय दशरथलाल, अवधपाल कलिकालहर ।
अनुपम दीनदयाल, दै मति करहु निहाल मोहिं ॥

घनाक्षरी ।

पालतप्रजासमाजकरतसधर्म राज जाको दण्डपरमप्रचंडयमराजसो ।
लाजकोजहाजकैरशत्रुनपराजैपरहितसबकाजशीलजाकोंद्विजराजसो ।
भनैरघुराजभयोभूमिमेंदराजराजनिगुणीनिवाजनिभौदूजोदेवराजसो ।
अवधविराजभानुवंशशिरताजचक्रवर्ती औरकौनदशरत्थमहाराजसो ॥
परम सुजान आठसचिवसुनीतिवानतिनमेंसुमन्तहैंप्रधानराजकाजके ।
बामदेव त्यों वशिष्ठगुरूउपरोहितहैं रक्षनकैरयासदाधर्मकेजहाज के ।
पूरणप्रकृतिसातधीरवीरहैंविख्यातरथीमहारथीअतिरथीरणसाज के ।
भनैरघुराजजाकोसुयशदराजजाकेबन्धुमित्रमंत्रीमघवान केमिजाजके

छंद चौबोला ।

सरयू तीर सोहावन कोशल नगर बसत अति पावन ।
निज छवि अमरावती लजावन सुरन मोद उपजावन ॥
द्वादश योजन लम्ब मान तेहि योजन त्रै बिस्तारा ।
कनक कोट अति मोट छोट नहिं बिमल बिशाल बजारा ॥
गली चारु चौड़ी अमली सब मंदिर सुंदर तुङ्गा ।
भनित कला के लसत पताके मानहुँ रच्यो अनङ्गा ॥
परम मनोहर राजगली मृदु फूलन ते छवि छाई ।

लगीं कनक नलिका तिनही के सलिल सुगन्ध सिंचाई ॥
वसत चक्रवर्ती दशरथ जहँ जिमि दिवि देव अधीशा ।
पालित प्रजा वृद्धि सुख पावत लहि प्रताप जगदीशा ॥
बाट बाट बहु द्वार विराजत चामीकर महरावें ।
हाटक ठाट कपाट ठटे वर घाटन घाट सोहावें ॥
सरयू तीर हेम सोपानित सब थल करहिं प्रकाशा ।
गुर्जमेरु मंदिर सम मण्डित जेहि लखि दुवन निराशा ॥
भिन्न भिन्न सब भौन भौन की गली न कछु संकेतू ।
अति विचित्र वर कनक रजत के निरमित सकल निकेतू ॥
तोपन तोम तडप तड़िता सी गुरिज कोट महँ केतीं ।
घहरहिं मनहुं मेघगण घहरत गोला अवली लेतीं ॥
तिमि थरनाल और करनाले सुतरनाल जंजालें ।
गुरगुराव रहँकले भले तहँ लागे विपुल वयालें ॥
दोहा—ऊंची अटा घटान इव, छहर छटा क्षिति छोर ।
मनहुँ स्वर्ग सोपान की, अवली लसें करोर ॥

छंद चौबोला ।

खान पान सनमान पाय के सदा समर अनियारे ।
सकल शिलिप वर औरहु परिचर निशि दिन रहत तयारे ॥
कहूं नृतक कहुँ चतुर नृत्यकी कहुँ नट करहिं तमासे ।
रोज रोज मंदिर मंदिर प्रति बहुविधि विपुल विलासे ॥
नौबत झरत द्वार द्वारनमें शंख सुतारि सहनाई ।
औरहु विविध मनोहर बाजे बजत मधुर सुर छाई ॥
बंदी मागध सूत वदत रघुवंशिन विरद बड़ाई ।
निरखत नगर नवल शोभा दिगपालहु रहत लजाई ॥
ऊंची अटा घटा इव राजहि छराति छटा क्षिति छोरें ।

मनहुं स्वर्ग की लगीं सोपानै रवि विश्रामहिं ठौरैं ॥
नगर चहूं दिशि बाग सुहावन अति मंजुल अमराई ।
विहरत विविध कुरङ्ग विहङ्ग मनोहर शोर मचाई ॥
तीनि ओर परिखा जल पूरित उत्तर सरयु सुहाई ।
गजशाला तुरङ्गशाला रथशाला विविध बनाई ॥
दुर्ग भयावन नगर सुहावन रिपु दुर्गम प्राकारे ।
इंद्र वरुण यम की गति जहँ नहिं का पुनि भूप विचारे ॥
मदमाते मतङ्ग कहुं आते कहुँ तुरङ्ग चमकाते ।
घरघरात कहुं चक्र रथन के सुभट समूह सुहाते ॥
कहुँ ऊँटन के जूट जलद अति वृषभ शकट कहुँ मन्दा ।
महिषी सुरभिपूर पय धारणि वृपभ नदत सानन्दा ॥

दोहा—दवन दुवन दल दर्प दिल, दुराधर्ष दिग दंति ।
दशरथ के सामन्त अस, दशदिशि कीर्त्ति किरंति ॥

कवित्त ।

केतेमहाराजरघुराजआवैंदेखिवेको,केतेमहाराजजावैंबलिदैस्वदेशको।
केतेमहाराजठाढ़ेरोजरोजद्वारदेशकेतेमहाराजबसैंशिरधैनिदेशको ॥
केतेचोरढारैंकेतेछत्रकोसँवारैंसङ्ग केतेधूरिझारैंपदरसम हमेशको ॥
भूपतिहजारैं तेनिहारैं रुखवारवारैं भूपचक्रवर्तीचूड़ामणि अवधेशको।
कहूंअग्निहोत्रहेतिहोताकहूंहव्यकव्यकहूंवेदवादिनकी वेदधुनिछाईहै।
कहूं कोई जपकरैं कहूं कोई तपकरैंकहूंकोईव्रतकरैंचित्तकोलगाईहै॥
पूजैकहुँदेवकोई करैकहूंदेवसेव जानै शास्त्रभेव जे वजावअधिकाई है॥
भनैरघुराजप्रजामोदितदराजहाठिकरतपरायोकाजसुरसमताई है॥२॥

दोहा—देश अनेकन के वणिक, धनद सरिस धनवान ।
निवसत कोशल नगर में, जिन के कोटि निसान ॥

छंद चौपाला ।

विशद रानमंदिर मणि माण्डत मंजुल आठ प्रकारा ।

आठ लक्ष वासव निवास वर रघुवंशिन आगारा ॥
तीनि प्रकार प्रजा निवसत चौथेमहँ रघुकुल बीरा।
पचयें वसत राजकुल के सब छठयें नृपातिय भीरा ॥
महाराज मंदिर सतयें अठयें वैकुंठ समाना।
का सुरसदन सुरेश सदन का का विधि भौन बखाना ॥
लसत सुहावन मणिपर्वत तहँ विपिन प्रमोद सु नामा।
नन्दन और चैत्ररथ्यंदन वन जेहि छवि ते छवि छामा ॥
अति विचित्र विशकर्मा कर कृत जगति जवाहिर जोती।
सुर गन्धर्व सरिस नर नारी नाहिं विद्या बुद्धि कोती ॥
अति उतङ्ग सुंदर शशिशाला सात मरातिब वारे।
मानहुँ पुहुप विमान भान अस्थान लजावन हारे ॥
हत दूषण पूषण प्रकाश इव नगर विभूषण सोई।
नरभूषण दशरथ निवास जहँ कतहूँ रूख न होई ॥
समथल ऊंच नीच नहिं कतहूं पूर्ण धर्म धन धानी।
सरस सुरस रञ्जित नीरस हत कोशलपति रजधानी ॥
वीणा वेणु पटह पणवादिक बाजत रोज नगारे।
अवध सरिस शोभा सुर नर मुनि त्रिभुवन में न निहारे ॥
भावी राम जनम गुनि प्रगट्यो वसुधा में वैकुंठा।
जहँ ब्रह्मर्षि सुरर्षि राजऋषि विचरहिं बुद्धि अकुंठा ॥

दोहा—जो देख्यो कोशल नगर, सुर नर एकहुँ बार।
तेहि न रही पुनि कामना, देखन हेत अपार ॥

छंद चौबोला।

चौहट हाट बाट हाटक के बाट बाट रमणीया।
नाटक नाट्य पाट पाटन में सुख पाटत कमनीया ॥
अमित अनुत्तम बीर नरोत्तम सत्तम धीर धुरीणा।
एकाकी लखि कबहुँ नपत नहिं धनुधर परम प्रवीणा ॥

स्वर वेधी सब शस्त्र विज्ञाता वेधकलक्ष मिहीना।
परमुख पेखि न पदहु प्रहारत कर लाघव लवलीना॥
विपिन बधत ललकारि हारि नहिं सिंहउ व्याघ्र वराहा।
मत्त मतङ्ग पाणिसोंपकरत बली उदोत उछाहा॥
ऐसे सहसन शस्त्र शास्त्र बुध कोशल नगर निवासी।
दिन दिन दून दून दशरथ नृप पुरी बसाई खासी॥
महारथी भापक यथारथी परमारथी पियारे।
प्रभु अर्थी स्वारथो न कबहूं कोशल पति सरदारे॥
याचक यज्ञ न याचक धनके सुगुणाकर द्विज ज्ञानी।
अति उदार परिवार सहित बुध वेदाकार अमानी॥
भाषत सत्य असत्य न चाषत राखत सम सब प्रीती।
कतहुँ न भापत कतहुँ न नाषत वेद पंथ शुभ नीती॥
महा महर्षि सरिस सब द्विजवर शील सकोच सुभाऊ।
प्रजन परम प्रिय प्रान सरिस जिन मानत दशरथ राऊ॥
ऐसे कोशल पुर को नायक दशरथ भू भरतारा।
जाको सुयश जगत जग जाहिर करत दिगन्त पसारा॥

दोहा–श्रीइक्ष्वाकु नरेश को, वंस हंस अवतंस।
निज सुभाव जन वश कियो, यज्ञ शील रिपु दंस॥
राजत राजा राज ऋषि, महा महर्षि स्वरूप।
विदित तीनिहूँ लोक में, जय श्रीदशरथ भूप॥

छन्द चौबोला।

महा बली नहिं दुवन दुनी जेहि मित्र सकल जग जाना।
अति ऐश्वर्य्य मान माने सुर धरा महेन्द्र समाना॥
आदि राज जिमि भये भुवनमें मनु महराज उदारा।
तैसहि दशरथ राज आजु महि पाल्यो जगत अपारा॥

सत्य सन्ध जिनके नृप पालित अवध पुरी छवि छाई ।
प्रतिदिन वर्द्धमान जेहि सम्पति अमरावती लजाई ॥
धरमनिरत हत लोभ तोष भर सत्य वचन सुखरासी ।
जग जाहिर धन धनद सरिस कुलवन्त अवध पुरवासी ॥
कोउ नहिं दीन हीन मति अघ कर असिध मनोरथ वारे ।
तरल तुरङ्ग शतांग मतङ्ग बँधे जिन द्वारन द्वारे ॥
नहिं कोउ कामी कृपिण दया बिन नास्तिक मूढ़ कुवादी ।
मुदित शील सम्पन्न महर्षि समान धर्म मरयादी ॥
नर नारी हरि धरम निरत अति देव स्वरूप सोहाये ।
बिन कुण्डल बिन मुकुट माल बिन कोउन भोग बिन भाये ॥
बिन मज्जित बिन अँग अँगरागित बिन सुगन्ध नहिं कोई ।
बिन अङ्गद बिन हार कटक बिन लखिन परै पर सोई ॥
दाता ज्ञाता दीन न पाता मिष्ट असन सब खाते ।
अग्निहोत्र सब करत विप्र नहिं क्षुद्रहु चोर देखाते ॥
निज निज कर्महिं प्रजा निरत सब कोउ नहिं सङ्कर जाती ।
दान देत उत्साह सुमति जिन दान लेत सकुचाती ॥

दोहा—विद्या वेद निधान सब, शीलवान रुचिवान ।
हेतु वाद हठवाद हत, भाषत वचन प्रमान ॥
अवध प्रजा अस कोउ नहीं, जो जग जाहिर नाहिं ।
कोउ न भयो परदार रत, सब पण्डित पुर माहिं ॥
श्रम यक वेदाभ्यास में, व्रत तप रह्यो कलेश ।
साधु विप्र ढिग दीनता, परहित विथा हमेश ॥
सहस उपर ते दान में, न्यूनाधिक्य विचार ।
आशक्ती रहि धर्म में, चुगुली पर उपकार ॥
ऋतु पति तरु विगलित सुदल, तहँ कुरूपता वास ।

बसी अरुचि यक भवन में, पाप न बस्यो विनास ॥

छन्द चौबोला ।

भेद भास यक चारि बरण में अतिथि देव में पूजा ।
चतुराई कृतज्ञताई थल अवध सरिस नहिं दूजा ॥
विक्रम बस्यो सकल शूरन गण धर्म सत्य तन माहीं ।
कुल कदम्ब महँ बसी वृद्धि तहँ दण्ड वाद्य गण पाहीं ॥
बसता बसी ब्रह्म क्षत्री विट शूद्र जाति अनुसारा ।
धर्म पतिव्रत अवध नगर महँ नारिनगण आधारा ॥
हंस वंस अवतंस भूप वर दशरथ शील सुभाऊ ।
जासु प्रशंस करत सुर नर मुनि भयो यथा मनु राऊ ॥
लसत अयोध्या के सब योधा निगमागम कृत बोधा ।
क्रोधा शत्रु समूहन सोधा नाहिं गति कहुँ अवरोधा ॥
अवध राज की विमल विराजति विशद सुवाजिन शाला ।
सकल जातिके बँधे तुरङ्गम रूप अनूप विशाला ॥
बाजि काबुली त्यों ईरानी मिसिर अरब्बी केते ।
रूसी रूमी ताजी तुरकी त्यों जङ्गली सुचेते ॥
जापानी पर्वती चीनिया भोटी ब्रह्मा देशी ।
पन्नी भीम्रावटी काठिया मारवाड मधि देशी ॥
इंगलिस्तानी ओदरियाई कच्छी ओलन्देजी ।
औरहु विविध जाति के बाजी नकत पवन की तेजी ॥
विविध रङ्ग के मनु अनङ्ग निज सायन अङ्ग बनाये ।
अंग अंग सौ त्यो [illegible] के विविध तुरङ्ग सोहाये ॥

सोरठा–अगणित नगर भुआल, जाकी गजशाला विमल ।
सिन्धुर सघन विशाल, विविध जाति अरु देशके ॥

छन्द चौबोला ।

[illegible] विविध जाति निज रूपा ।

सेत सरूप हिमाचल जनमित हिमगिरि आभ अनूपा ॥
शुंडादण्ड चण्ड फटकारत सदा वहति मद धारा ।
चौथ चन्द सम चारु दन्त दुति देत दिशेभदरारा ॥
ऐरावत के कुलके केते दिशा गजन कुल केते ।
महा पदम अंजन अरु वामन विरूपाक्ष कुल जेते ॥
भद्र मन्द्र मृग भद्र मन्द्रमृग भद्रमन्द्र मृग जाती ।
भद्र और मृग भद्र आदि बहु जे गज जाति विख्याती ॥
विभव सकल शत शक्र सरिसवर केहि विधि करौं उचारा ।
जाके भवन सोत्रिभुवन नायक लेहैं हरि अवतारा ॥
द्वादश योजन अवधपुरी सब युग योजन नृप ऐना ।
विमल राज रानिनके मंदिर मनहुँ रचित कर मैना ॥
ऐसी पुरी वसत दशरथनृप राज समाज सु साजा ।
धरम धुरंधर धीर धुरीन यथा उडगण उडराजा ॥
जासु नाम साकेत दूसरो सत्या नाम सोहाई ।
तासु तीसरो नाम अयोध्या वेद पुराणन गाई ॥
भुजबल कलित कपाट कनक के द्वारन द्वार सोहाये ।
रक्षत वीर विविध वासर निशि जिनके यश जग छाये ॥
चित्रित चित्रावली विचित्रचितेरन चराचित चारू ।
चमचमात चामीकर मंदिर चौमुख चित्त विचारू ॥

दोहा—अवधपुरी मंगलवती, निरखत मंगल दानि ।
भू वैकुंठ विराजती, को कहिसकै बखानि ॥

कवित्त ।

मायामोहनाशिनीउमाकिनीअविद्यामूल पापनकी नाशिनीहै ज्ञानरसरासिनी।
शोभाकी अनापिनी सुधापिनीहै धर्मधुरासाकिनीहै तारनकीपुण्यकीप्रकाशिनी
भनैरघुराजराजासिंहनकीवासिनीहैशासिनीअविनियमपुरकीउदासिनी

चासनीसुचेतनकीरामदासआसिनीहैरामकीपुरीसोसत्यरामतत्वमाहि

दोहा-मंत्री दशरथ भूप के, उत्तम आठ प्रधान ।
चतुर देवगुरु सरिस सब, करहिं सत्य अनुमान ॥
सकल मंत्र जिनको विदित, जानत लखि आकार ।
नित नरपति हितमें निरत, मित भाषी अविकार ॥
धृष्ट जयंतौ अरु विजय, सिद्धारथ पुनि नाम ।
तथा अर्थसाधक अपर, त्यों अशोक मति धाम ॥
मंत्र पाल सतयों सचिव, आठो सुमति सुमंत ।
देशकाल ज्ञाता सकल, धर्म निरत यशवंत ॥
श्रीवशिष्ठ ब्रह्मर्षिवर, वामदेव ऋषिराज ।
उभै पुरोहित नृपति के, कारक सब शुभ काज ॥
मंत्रिन के लक्षण कहौं, दशरथ के जेहि भांति ।
नरपति हितमें हेत नित, चित परहित दिन राति ॥
विद्यामान विनीत अति, राखत गुरुजन लाज ।
परम कुशल सब कामके, वर्द्धक दिनप्रति राज ॥
शोभामान अमान मति, ज्ञाता शास्त्र समूह ।
भक्ति त्रिविक्रम में निरत, दृढ विक्रम द्रुत ऊह ॥
कीर्तिवान कृत काम बहु, सावधान सब याम ।
जस भाषत तैसहिं करत, नहिं अनुरत परवाम ॥
तेज तरनि सम प्रथम करि, क्षमा क्षमा सी छाइ ।
राज काज सब सिद्धि करि, पावत यश समुदाइ ॥
नीचहु ऊंचहु जनन सों, वदत वचन मुसकाय ।
क्रोध काम के वश कबहुँ, कहत न वचन निकाय ॥
नित पुर को वृत्तान्त कछु, तिनहिं न कबहुँ छिपात ।
कियो नौन कर्तव्य जो, तेहि गुण दोष विज्ञात ॥
गुप्त चार ते देश को, जानत सब वृत्तान्त ।

सकल लोक व्यवहार में कुशल कला अति दांत ॥
नृपति मित्रता सुहृदता परखि गये बहु बार।
बारेहु जो अपराध कर, देहि दण्ड तेहि बार ॥
कोप भरन में निपुण अति, धरहि खर्च करि पूर।
देत सबन वेतन समै, रक्षत रहत न दूर ॥
यदपि अहित अति होइ निज, हनहि न बिन अपराध।
महा वीर रणधीर अति सदा समर की साध ॥
राजनीति जानत सकल, जन गति विपति विशेष।
सदाचार सम्पन्न सब, बिना हेतु नहि द्वेष ॥
सकल देश वासीन को, राखत प्राण समान।
द्विजन क्षत्रियन नाश बिन, भरहि कोप बिन मान ॥
देखि बलाबल दुवन को, दै मृदु तीक्षण दण्ड।
उग्र राज शासन करत, हरत प्रजन पाखण्ड ॥
सकल सचिव संमत सहित, निज निज बुद्धि विचार।
वाद विवाद बिहाय हठ कारज करत अपार ॥
कोउन मृषावादी सचिव, कपटी कुटिल कठोर।
कोउ न भयो परदार रत, कोउ नहिं चंचल चोर ॥
देश विदेश सभा सदन, राखत शांत सुभाव।
भूपति कारज करन में नित नित दून उराव ॥
धारि वसन भूषण बिमल, जात राज दरबार।
शील सहित बोलत वचन, लखि रुख भू भरतार ॥
जेहि हित होइ नरेश को, सो भाषें उर भैन।
सोवत प्राकृत नैन ते, जागत नय के नैन ॥
दोष तजत गुण को गहत लखत न प्रभु को दोष।
विश्व पराक्रम विदित जिन, सांकर करत समोप ॥

विदित विदेशहु वृत्त सब, निज बुधि विशद प्रभाव।
जानत विग्रह सन्धि नय, निज परभाव अभाव॥
स्वामी सों यांचत न कछु, करत शक्ति लों काज।
काज देखि राजी सहित, लेत जो वकशत राज॥
लोभ क्रोध मद मोह वश कबहुँ न ठानत ठान।
कामहि कीन्हें ते भये, जिनके विभव महान॥
करि सलाह हठ हेतु तजि, सूक्षम बुद्धि विचार।
करि सुंदर संमत सकल, शासन करत प्रचार॥
जानत नीति अनीति गति, दीन पीन जन हीन।
मधुर वचन बोलत सदा, राज काज लवलीन॥
ऐसे सचिवन ते सहित, दशरथ भू भरतार।
शासत सकल वसुन्धरा, धरा धर्म आधार॥
चतुर चार गुप्तहु प्रगट, के सब देश प्रचार।
पालत प्रजा भुवाल मणि करत धर्म संचार॥
कहुँ अधर्म को लेश नाहिं, धर्म कर्म रत लोग।
सुखी सनेह रुखी प्रजा, दुखी सुखी नहिं योग॥
भुवन विदित दशरथ नृपति सत्य सिन्धु चतुरेश।
जाको शासन सान को मानत सपति सुरेश॥
जगत समाधिक रहित रिपु, भयो भूमि भरतार।
मीत सुरासुर सकल भे, जेहि यश भुवन भँडार॥
जासु प्रताप प्रताप ते, भई अकण्टक भूमि।
लोकप इव सामन्त जेहि, वंदत नित पद चूमि॥
सात द्वीप नव खण्ड में, दशरथ भू भरतार।
शास्यो जिमि शासत स्वरग, वासव नयन हजार॥

कुशल समर्थ सु सचिव सब, सहित सु दशरथ राज ॥
अवधपुरी शोभित भयो, जिमि कर युत उडराज ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंहजू देव जी. सी. एस.
आई. कृते अवधपुरी वर्णनंप्रथमः प्रबन्धः ॥ १ ॥

सोरठा–यहि विधि जासु प्रभाव, श्रीदशरथ महिपाल मणि ।
और सबै चितचाव, सुत बिन तापित रहत हिय ॥

छन्द चौबोला।

कियो विचार भूप मन में अस केहि विधि सुत हम पावें ।
करिके वाजिमेध मख उत्तम हरि सुत हेतु मनावैं ॥
देहि ईश सुत वंश विधायक उऋण पितर ऋण होई ।
यहि विधि करि मतिमान ठीक मति मंत्रिन मंत्र समोई ॥
बैठि एक दिन भूप सभा महँ कह्यो सुमन्त बोलाई ।
मम हित में रत सकल पुरोहित गुरु युत ल्याउ लेवाई ॥
सुमति सुमन्त तुरन्त जाइ मतिवन्त गुरुन पहँ भाष्यो ।
गुरजन चलहु राज मन्दिर सब नृप दरशन अभिलाष्यो ॥
वामदेव जाबालि सुयज्ञहुकश्यप आदि मुनीशा ।
सकल वशिष्ठ संग ल्याये तहँ बैठे जहां महीशा ॥
सादर करि प्रणाम नरनायक दै आसन बैठाये ।
धर्म सहित निज अर्थ विधायक सुन्दर वचन सुनाये ॥
और सबै सुख नहिं सन्तति सुख सुत लालसा हमारे ।
तेहि हित अश्वमेध मख करिबो हम मन माहँ विचारे ॥
शास्त्र रीति ते सबै विचारहु जेहि विधि सुत हम पावें
सुनि नृप वचन वशिष्टादिक मुनि बोले वचन हुलासे ॥
भलो विचार कियो नर नायक करहु यज्ञ संभारा ।

तजहु तुरङ्ग सङ्ग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञ भूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै विमल विधाना ।
पैहो नरपति पुत्र सर्वथा जो तुम्हरे मन माना ॥
दोहा–पुत्र हेतु उपजी सुमति, सहित धर्म नरनाह ।
पैहो अवशि कुमार बर, चली वंश जग माह ॥

छंद चौबोला ।

सुनिकै वचन वशिष्ठादिक के सजल नैन महराजा ।
कह्यो हरषि सचिवन अब कीजै सकल यज्ञ को काजा ॥
गुरु वशिष्ठ आदिक मुनि जन के विमल वचन अनुसारा ।
तजहु तुरङ्ग सङ्ग सुभटन के दै द्रुत विजय नगारा ॥
यज्ञभूमि सरयू उत्तर दिशि कीजै विमल विधाना ।
विघन निवारण शांत करीजै जेहि विधि शास्त्र प्रमाना ॥
जो विधि हीन होत बाजीमख तौ हठि राज विनासै
ताते नाहिं अपचार होइ कछु राखेहु उर यह त्रासै ॥
हेरत छिद्र ब्रह्मराक्षस बुध बाजिमेध मखमाहीं ।
विधि विधान ते हीन होइ तो करता जीवत नाहीं ॥
ताते सावधान ह्वै कीजै सविधि समापत यागा ।
सिगरे सचिव समर्थ सबै विधि जानहु शास्त्र विभागा ॥
सचिव सुनत शासन साहिबको सादर कह्यो सराही ।
प्रभुशासन अनुसार बाजि मख होइ विधि हत नाहीं ॥
यह सुनि पुलकि वशिष्ठादिक मुनि दै नृप आशिरवादा ।
माँगि विदा निज निज अवास को गये सहित अहलादा ॥
यहि विधि मुनिन विदा करि भूपति सचिवन मख हितभाषी ॥
तुरत गये रनिवास अवास हुलासित सुत अभिलाषी ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा आदिक जे महरानी ।
तिनसों कह्यो पुत्र हित हय मख हम दीन्ह्यो अब ठानी ॥

दोहा–सुनत वचन तिनके वदन, विकसि भये मुदवन्त ।
जिमि लहि अन्त हिमन्त को, सर सरोज विकसन्त ॥
यहि विधि दशरथ भूमिपति, कौशिल्यादिक रानि ।
भनत परस्पर वचन बहु, सिगरी रैन सिरानि ॥

छंद चौबोला ।

उठि भूपति करि नित्यनेम सब सभा सदन पगु धारे ।
तहां सुमन्त यकंत जाइ शिर नाइ वृतांत उचारे ॥
सुनहु नाथ यह कथा पुरानी एक समय बन माहीं ।
गये गलानि मानि मनमें हम भजन हेतु हरिकाहीं ॥
दीन देखि मोहिं अति दयालु तहँ सनत्कुमार सिधारे ।
ज्ञान विज्ञान विराग विविधि विधि मंजुल वचन उचारे ॥
तेहि पीछे पुनि कह्यो ऐसहू अबै न तजु संसारा ।
दशरथ भूपति भवन भुवनपति लैहै नर अवतारा ॥
सनत्कुमार दरश हित मुनि जन औरौ तहँ चलि आये ।
तिनके सनमुख पुनि मुनिपति मोहिं ऐसे वचन बनाये ॥
कश्यप तनय विभांडक ह्वै हैं जाहिर सकल जहाना ।
शृङ्गीऋषि तिनके सुत ह्वै हैं कानन में अस्थाना ॥
वर्धमान ह्वै हैं आश्रम में वनचर संग विहारी ।
कछु संसार चार जनिहैं नहिं पितु सेवा सुखकारी ॥
नारी पुरुष भेद जानिहैं नहिं ब्रह्मचर्य महँ राते ।
महा महात्मा सिद्ध शिरोमणि सकल जगत विख्याते ॥
अगिनिहोत्र ठानत पितु सेवत बीति जई बहु काला ।
अङ्गदेश महँ रोमपाद यक ह्वैहै कोउ भूपाला ॥
धरम व्यतिक्रम करी भूप जब अनावृष्टि तब होई ।
परी महा दुरभिक्ष राज्य में प्रजा दुखित सब होई ॥

दोहा–निरखि घोर दुरभिक्ष तहँ, भूप दुखी मन माहिं ।
बोलि वृद्ध पण्डित द्विजन, नृप कहि है तिन पाहिं ॥
ज्ञाता लोक चरित्र के, धर्म धरा आधार ।
जाहि विधि मिटै अकाल यह, सो कीजै उपचार ॥

छंद चौबोला ।

प्रायश्चित्त करावहु मो कहँ मिटै महा दुरभिक्षा ।
हरषरहोइ प्रजा प्रमुदित सब पृथिवी पाय सुभिक्षा ॥
सुनि नृप वचन वेद विद ब्राह्मण बोले वचन विचारी ।
सुवन विभांडक मुनिशृङ्गी ऋषि आनहु इत तपधारी ॥
शांता सुता भूपदशरथ की दीजै ताहि विवाही ।
तब सुकाल महिपाल राज्य में ह्वैहै प्रजा उछाही ॥
विप्र वचनसुनि तब वसुधापति चिंता अति उर आनी ॥
मुनिवर केहि उपाव ते आवैं पुछिहैं सचिव सुज्ञानी ॥
मुनिवर आनन सचिव पुरोहित भूपति विपिन पठैहैं ।
भीति विभांडक की तेहि कानन मुनि आनन नहिं जैहैं ॥
मुनि आनन उपाय भूपति सों सादर सचिव सुनैहैं ।
गणिका गणवनजाय अवशि शृङ्गी ऋषि को लैऐहैं ॥
मुनि आगम प्रभाव ते वासव वरषि सुभिक्ष बनैहैं ।
शांता सुता शांत कांतहि लहि अनुपम सुख उपजैहैं ॥
सोइ शृङ्गी ऋषि दशरथ को अश्वमेध करवैहैं ।
चारि कुमार महा सुकुमार उदार अवधपति पैहैं ॥
इहि विधि सनतकुमार कह्यो मोहिं सो सब दियो सुनाई ।
ह्वैहैं चारि कुमार आपके संशय सकल नशाई ॥
सुनि सुमन्त के वचन भूपमणि मंजुल वचन उचारा ।
केहि विधि रोमपाद आन्यो पुर शृङ्गी ऋषिहि उदारा ॥

दोहा-सो वरणहुं विस्तार ते, तुम सुमन्त मतिमान ।
सुनि शासन नर नाथ को, लाग्यो करन बखान ॥

छंद चौबोला ।

कह्यो वचन सव रोमपाद सों सचिव पुरोहित आई ।
शृङ्गीऋषि आनन को यहि पुर ऐसो करहु उपाई ॥
शृङ्गी ऋषि नित वेद पढ़त हैं वनचर सम वनवासी ।
तनक नहीं तिय को सुख जानत संसृति विषय निरासी ॥
चन्द्रमुखी जे चित्त हारिनी तिनको तहाँ पठाई ।
आनव मुनिवर नगर मिटी दुरभिक्ष महा दुखदाई ॥
रूपवती वहु वारवधू करि भूषण वसन शृँगारा ।
मुनिहिं लोभाय उपाय अनेकनि आनहिं करि सतकारा ॥
अंगराज सुनि सचिव वचन कह करहु ऐसही जाई ।
रचन लगे रचना सुनि शासन जेहि आवैं मुनिराई ॥
चन्दमुखी बहु वारवधू गण तुरतहिं दियो पठाई ।
मुनि आश्रम के कछुक दूरि ते लागी करन उपाई ॥
पिता विभांडक के सेवन ते शृङ्गी ऋषि मतिवाना ।
कवहुं न आश्रम त्यागि आपनो कीन्ह्यो कहूं पयाना ॥
नगर नारि नर लख्यो न कबहूं जन्महि ते मुनिराई ।
पुरुष नारि को भेद न जानत मानत सव समताई ॥
विहरत विहरत एक समय मुनि वार बधुन ढिग आये ।
देखि अनूप रूप नारिन को चिते रहे भ्रम छाये ॥
मान्यो तिनहिं अपूरुब तापस वार वधू का जाने ।
वारमुखी मुनिवर विलोकि के करत चलीं कल गाने ॥

दोहा-अति विचित्र युवती सबै, करि कटाक्ष मुसकाय ।
मधुर वचन बोलत भई, मुनि समीप में जाय ॥

छंद चौबोला ।

आप कौन हौ कहां वसत हौ जानन को हम चाहैं ।
घोर महा यह विजन विपिनि में किमि करियत निरवाहैं ॥
अति सुकुमार शरीर मनोहर नोहर नैन विशाला ।
कहहु सकल मुनि हेत आपनो जो कछु उचित उताला ॥
सुनि सुनि वचन वार नारिन के मुनि जन तिनहिं विचारी ।
मानि सनेह नाय शिर तिनको कहन लगे तप धारी ॥
पिता विभांडक के सुत हैं हम शृङ्गीऋषि मम नामा ।
इत ते कछुक दूरि मम आश्रम चलहु तहाँ यहि यामा ॥
सुभग वेष मुनि जन तिहरी हम करिहैं विधिवत पूजा ।
सुनत चलीं ऋषि संग आश्रमहिं गुन्यो मनोरथ पूजा ॥
ऋषि लै जाइ वार नारिन को पूजन कियो अतूला ।
अर्घपाद्य आचमन दियो फल फूल कन्द अरु मूला ॥
ऋषि कर अर्पित कन्द मूल फल पाइ सुखीसबनारी ।
आवन चहत विभांडक मुनि अब उपजी भयमन भारी ॥
चलन चहीं गणिका तहँ ते द्रुत बोलीं वचन पियारे ।
तुम्हरे फल तो पाइ गईं हमलीजै फलन हमारे ॥
ये फल फरे आश्रमहि हमरे भोजन किहेहु सुस्वादू ।
असकहि मुनिकहँ मिलीं बारतिय भरिउर अति अहलादू ॥
मधुर सुमोदक विविधि भांति के और विविध पकवाना ।
दियो ऋषिहि कहिनाम फलन के मुनिकछु भेदनजाना ॥

दोहा– शृङ्गी ऋषि भोजन कियो, मोदकफल जिय जानि ।
कबहुँन खायो अस फलन, बनचारी तपठानि ॥

छन्द चौबोला ।

पुनि बोलीं गणिका मुनिवर सों आयो संध्याकाले ।
संध्यावन्दन आदि हम करि तट मिलब तुमहिं पुनिकाले ॥

अस कहि भगीं भामिनी तहँ ते मानि तासु पितु भीती ।
जो देखिहैं विभांडक हमको देहैं शाप अप्रीती ॥
जव ते गणिका गईं तहां ते तव ते सो ऋषि शृङ्गी ।
वढी वहुरि तिन लखन लालसा कव मिलिहैं सतसंगी ॥
होत प्रभात तुरत शृङ्गी ऋषि तेहि थलमें चलि आये ।
लखहु तेज तहँ वार वधुन को सुन्दर रूप सोहाये ॥
ारवधू आवत तिनको लखि भूषण वसन सवाँरी ।
मिलीं दौरि तिन्ह कहँ लैआईं जेहि थल वसी सुखारी ॥
वेहँसि वचनवोलीं मुनिं ते सव वे फल अव इत नाहीं ।
वलहु हमारे आश्रम जों मुनि तो देहैं तुम काहीं ॥
हमरे आश्रम विमल वाटिका तहां फरे फल सोई ।
जे फल दिये तुम्हें आश्रम चलि देहैं तेइ वहुतोई ॥
गणिका वचन सुनत शृंगीऋषि गमन हेतु ललचाने ।
कह्यो वचन हम मुनि जन तुम्हरे संगहि करव पयाने ॥
सुनि मुनि वचन उठीं सिगरी तिय कर गहि चलीं लेवाई ।
शृंगीऋषि पग परत अङ्ग पुर वरषा भै सुखदाई ॥
मिट्यो महा दुरभिक्ष शोक प्रद भे सव प्रजा सुखारी ।
रोमपाद लीन्हो आगू चलि वंद्यो पद शिर धारी ॥

दोहा—अरघपाद्य आचमन दे,पूज्यो सविधि मुनीश ।
राख्यो भवन लेवाइ कै, प्रमुदित भयो महीश ॥

छंद चौवोला ।

शृंगीऋषि सों कियो विनय पुनि तव पितु करें न कोपा ।
नातो होइ हमारो आसुहिं राज कोप कुल लोपा ॥
शृङ्गीऋषि वोले भूपति सों कछु न तोर अपकारा ।
ईश रजाय शीश सवही के ऐसो करहु विचारा ॥

शृंगीऋषि को रोमपाद नृप गे लेवाय रनिवासा।
शांता कन्या नाथ रावरी दिय विवाहि सहुलासा ॥
दान मान सनमान सहित नृप राख्यो मुनि निज गेहू।
शांता सहित तहां शृङ्गीऋषि बसे विचारि सनेहू ॥
और सुनहु कछु वचन भूपमणि जेहि हित राउर होई ॥
सनत् कुमार कह्यो मो सों अस कहौं कथा अब सोई ॥
ह्वै है कोउ इक्ष्वाकु वंश महँ दशरथ भूभरतारा।
महा सत्यवादी धरमात्मा सकल भुवन उजियारा ॥
रोमपाद अस नाम नृपति कोउ अंग देश महँ होई।
सो दशरथ को मित्र होइ गो पूरण प्रीति समोई ॥
शांता सुता भूप दशरथ के ह्वै है रूप अनूपा।
रोमपाद दशरथ संबंधी ह्वै है मित्रहु भूपा ॥
शांता सुता भूप दशरथ को बसी अंगपति गेहू।
सो बिवाहि शृङ्गीऋषि को नृप दै है सहित सनेहू ॥
अवधनाथ के पुत्र न ह्वै है तव अतिशय अकुलाई।
तुरत अङ्गपुर कोशल नायक रोमपाद पहँ जाई ॥

दोहा–रोमपाद सो हुलसि मति,कही भूप मतिवान ।
जामाता शांता रवन, मोकहँ देहु सुजान ॥

छंद चौबोला।

जो शृङ्गीऋषि अवध नगर चलि अश्वमेध करवावै
तो हम होहिं कृतारथ मख करि तासु कृपा सुत पावैं ॥
रोमपाद सुनि दशरथ वाणी सुख मानी अनुमानी ।
दैहैं तपसानी शृङ्गी ऋषि ज्ञानी कारज जानी ॥
लै शृङ्गी ऋषि अवध आइ नृप अश्वमेध मख ठानी ।
पाणि जोरि करि विनय मुनीशहिं दैहैं वर विज्ञानी ॥
सुयश हेतु अरु स्वर्ग हेतु अरु सुवन हेतु अवधेशा ।

करिहैं यज्ञ सहित शृङ्गी ऋषि श्रद्धा युक्त सुवेशा ॥
महा विक्रमी वंश विधायक पैहैं नृप सुत चारी ।
पूरब सनत्कुमार कह्यो अस मो सों सकल उचारी ॥
ताते राजसिंहमणि आसुहिं अंग देश पगु धारो ।
सदल सवाहन जाइ ऋषीशहि ल्यावहु करि सतकारो ॥
सुनि सुमन्त के वचन अवध पति अतिशय आनँद मानी ।
लै अनुमत वशिष्ठ सों आसुहि गवन दियो तहँ ठानी ॥
सहित सकल रनिवास सचिव गण सुंदर सैन्यसजाई ।
चल्यो अवध नायक सब लायक अंग देश मन लाई ॥
डेरा करत सरित वन पत्तन मन्द मन्द महराजा ।
पहुँचे अंगदेश जहँ निवसत शृङ्गीऋषि द्विजराजा ॥
प्रथम दरश कीन्हो शृङ्गीऋषि पावक सरिस प्रकासा ।
रोमपाद सुनि दशरथ आगम पायो परम हुलासा ॥

दोहा-साजि सैन्य चलि दूरि ते, लीन्ह्यो नृप अगुवानि ।
सखा सखा मिलि मोद मढि, संबंधी पहिचानि ॥
कर गहि हास विलास करि, रोमपाद महिपाल ।
गयो लेवाइ निवेस को, डेरा दियो विशाल ॥
सैन्य सहित सतकार किय, करवाई जेउनार ।
रोमपाद के भाम हैं, दशरथ भू भरतार ॥

छंद चौबोला ।

सखा परम प्रिय सन्बंधी नृप रोमपाद लहि प्यारे ।
पुनि पुनि करत महा सत्कार अघातन मोद अपारे ॥
अङ्गराज कृत अति सतकारिक कोशल नाथ उदारा ।
वसे पंच दश दिवस अंगपुर दोउ नृप एक अगारा ॥
कह्यो अंग पति सों कोशलपति शांताकांत समेता ।

हमरे कोशल नगर चलहिं द्रुत मम कारज के हेता ॥
अंगराज तब विनय करी नृप बात कही यह नीकी ।
शृङ्गी ऋषि जैहैं कोशलपुर यह हमरेहू जीकी ॥
रोमपाद शृङ्गी ऋषि सों पुनि विनय करी कर जोरी ।
अवध जाहु शांता संयुत प्रभु मानि विनय यह मोरी ॥
कहि तथास्तु शृङ्गीऋषि आसुहि चले सहित निज नारी ।
रोमपाद सों कह्यो अवधपति देहु विदा सुखकारी ॥
पुनि पुनि मिलि मिलि सखा सखा दोउ करि प्रणाम कर जोरी।
रोमपाद अरु अवधनाथ की बढ़ी प्रीति नहिं थोरी ॥
पुनि कोशलपति रोमपाद सों माँगि विदा तेहि ठौरा ।
सहित सकल रनिवास सैन्ययुत चले अवध की ओरा ॥
पठयो अवध तुरत हलकारे तरल तुरंग चढ़ाई ।
सचिवन दियो निदेश अवधपुर राखेहु सुभग सजाई ॥
छपन छपाके रवि इव भाके दण्ड उतंग उडाके ।
विविध कताके बँधे पताके छुवैं जे रवि रथ चाके ॥
दोहा—सींचीं गली गुलाब ते, अगर धूप चहुँ ओर ।
द्वार द्वार में रंभ के, खम्भ गड़े चित चोर ॥

छन्द चौबोला ।

कियो अलंकृत नगर अनूपम खबरि पाय पुरवासी ।
राज रजाइ सिवाइ कियो पुर रचना मंत्रिन खासी ॥
शांताशृङ्गी ऋषि संयुत नृप जबहिं नगर नियराने ।
लिये सकल अगुवान पौर जन दरशन हित ललचाने ॥
होत धुकार दुन्दुभिन के अरु बजत शंख सहनाई ।
सोर भोर चहुँ ओर मच्यो अति आनँद पुर न समाई ॥
शृंगीऋषि को आगे करिके नगर सुहावन राजा ।

कियो प्रवेश सहित रनिवास हुलासित सकल समाजा ॥
राज कुमारी सहित मुनीशहिं देखि महा मुद ठयऊ।
भूप चक्रवर्ती दशरथसुरपति सम शोभित भयऊ ॥
प्रविशि राजमन्दिर महँ नरपति अन्तहपुर महँ जाई।
शांता सुता सहित श्टंगीऋषि पूजन कियो महाई ॥
करि पूजन विधान युत नरपति विमल अवास टिकायो।
अपने को कृत कृत्य मानि नृप सम्पति विविध लुटायो ॥
त्रिशत साठि त्रय महरानी लखि सुता और जामाता।
रोज रोज सतकारहिं पुनि पुनि आनँद उर न समाता ॥
रानिन ते पूजित शृङ्गीऋषि शांता नैन विशाला।
वसत भये प्रमुदित कोशलपुर हरपावत महिपाला ॥
अति उराउ महँराउ मगन अति जान्यो जात न काला।
आयो विमल वसन्त काल पुनि बीति गयो यक साला ॥

दोहा—एक दिवस नर नाथ तहँ, शृङ्गीऋषि ढिग जाइ।
विनय कियो कर जोरि कै, करहु यज्ञ मन लाइ ॥
नाथ वाजिमख मोहिं अब, करवावहु विधि संग।
मिलै अवाशि सन्तान सुख, यह तुव हाथ प्रसंग ॥

छंद चौबोला।

शृङ्गी ऋषि तब एवमस्तु कहि कह सुनु भूप उदारा।
तजहु तुरङ्ग संग सुभटन के दे द्रुत विजय नगारा ॥
तब राजा सुख मानि सभा चलि तुरत सुमन्त बोलाई।
कहो ब्रह्मवादी बोलवावहु सकल पुरोहित जाई ॥
वामदेव जाबालि कश्यपहु अरु सुयज्ञ मतिखानी।
गुरु वशिष्ठ अरु और सकल मुनि ल्यावहु तुम इत ज्ञानी ॥
गयो तुरन्त सुमन्त ऋषिन को ल्यायो सभा बोलाई।

सकल सिद्धि करिहैं वाजी मख शादर सारँगपानी ॥
भूप शिरोमणि वचन सुनत सब बोले वचन सुखारी।
ह्वैहै तथा यथा प्रभुशासन वृथा न गिरा तिहारी ॥
तहँ मुनिजन सब नृपहि सराहत माँगि विदा मुद माते।
गये भवन निज निज सचिवन युत यज्ञ कर्म मन राते॥
करिकै विदा सचिव मुनिगण को कोशलनाथ प्रकासी।
अन्तहपुर को गमन करत भे मानि महा मुद रासी ॥
शृङ्गीऋषि शांता युत यहि विधि वसे अवधपुर माहीं।
वीति गयो सानंद साल यक जानि पऱ्यो कछु नाहीं ॥
आई बहुरि वसन्त जबै ऋतु राजा मनहिं विचारी।
गुरु वशिष्ठ के भवन गयो चलि बोल्यो पद शिर धारी॥
करहु अरंभ नाथ वाजी मख जेहि विधि विघ्न न होई।
तुम मुनीश त्रयकालहि ज्ञाता होइ सुवन करु सोई॥
दोहा–आप हमारे सुहृद गुरु, मोपर किये सनेहु।
रचहु यज्ञ संभार सब, यह भारा तुव देहु ॥

छन्द चौबोला।

एवमस्तु कहि गुरु वशिष्ठ मुनि बोले वचन विचारी।
करिहैं हम सब जस समर्थ मम कारज विघ्न निवारी॥
अस कहि सभा वशिष्ठ सिधारे विप्रन लियो हँकारी।
जे धर्मज्ञ वृद्ध मंत्री सब वाजी मख अधिकारी ॥
तिनसों कह्यो करहु मख कारज परिचर लेहु बोलाई।
सकल कर्मकारी कारीगर सकें जे सुभग बनाई॥
दारु कर्म कारक अरु खानक अरु दैवज्ञ सोहाये।
नट नर्तक शुचि शास्त्र विज्ञाता जे बहु श्रुत जग गाये॥
अरु जिनको उपयोग यज्ञ में वेद वादि मरयादी।
बोल्हु विप्र हजारन पण्डित वाजी मख प्रतिवादी ॥

सानुकूल सब करहु कर्म यह भूपति शासन मानी ।
सहसन कनक ईंट द्रुत आनहु जेहि वेदी निरमानी ॥
औरहु उत्तम वस्तु मँगावहु जौन यज्ञ उपयोगी ।
औरहु ब्राह्मण विविधि बोलावहु रचहु भवन सुखभोगी ॥
विविधि अन्न सम्पति सम्पादहु पानहुँ विविधि प्रकारा ।
अतिथ अवनिपति पुरवासिन हित रचहु भवन विस्तारा ॥
विविधि देश वासी जन आवहिं चारिहु वरण अपारा ।
तिनको अन्न दान विधि संयुत दीजै करि सत्कारा ॥
खेल सहित दीजै नहिं कोहु को झेल होइ नहिं दाना ।
मेल राखियो सब प्राणि न सों नाहिं अकेल सनमाना ॥

दोहा–काम क्रोध वश जनन को, होइ न कछु अपमान ।
सावधान कृत कर्म में, रहहु सदा मतिमान ॥

छंद चौबोला ।

जे कारीगर यज्ञ वस्तु के सुंदर विरचन वारे ।
ते सब क्रम ते अति विशेष ते जाहिं विविधि सत्कारे ।
अन्न वसन भूषण अरु भोजन विविधि भांति ते दीजै ।
कर्म न कोनहुँ वस्तु समै महँ चित दै सकल करीजै ॥
मुनि वशिष्ट शासन मंत्री सब बोले वचन तहाँहीं ।
प्रभु शासन अनुसार करब सब कमी वस्तु कछु नाहीं ॥
जस प्रभु को हमरे शिर शासन तामें परी न भेदा ।
देहु सविधि यज्ञ नरपति को पाइ कोउ न खेदा ॥
मंत्रिन वचन सुनि सुखी भये गुरु लियो सुमन्त बोलाई ।
कह्यो गमन अवनी अवनीपन नेउता देहु पठाई ॥
ब्राह्मन क्षत्री वैश्य शूद्र गण आनहु करि सतकारा ।
औरहु सर्व देश के मनुजन बोलहु वेगि अपारा ॥

महाराज मिथिलाधिप जिनको जनक नाम अतिशूरे ॥
लोक धर्म वेदज्ञ सत्य वल ज्ञान विज्ञानहुँ पूरे ॥
तिनको तुमहिं सुमन्त जाइ तहँ ल्यावहु नेउति वोलाई।
सांचे रघुकुल के संवंधी ताते कहौं वुझाई ॥
तैसे काशिराज प्रियवादी सुर सम जासु अचारा।
तिनको तुमहिं जायले आवहु दशरथ मित्र उदारा ॥
वृद्ध परमधार्मिक केकैपति श्वशुर भूप मणि केरो।
सादर जाइ ताहि लै आवहु पुत्र सहित मत मेरो ॥

दोहा–महाभाग अंगाधिपति, रोमपाद जेहि नाम।
राजसिंह सारो सुहृद, तेहि ल्यावहु यशधाम ॥
दक्षिण भूपति कौशला, भानुमान जेहि नाम।
शूर शास्त्र विद मगधपति, दोउ नृप आनहु धाम ॥

छन्द चौबोला।

राजसिंह शासन अनुसर सव वोलेहु राजन काहीं।
पूरुव पश्चिम उत्तर दक्षिण जे मधि देशहु माहीं ॥
सिंधु और सौवीरहु सोरठ जे भूपति रणधीरा।
न्योत पठावहु सकल महीपन वाकी रहैं न वीरा ॥
छोटे मोटे और भूप जे पृथिवी पीठ निवासी।
सदल सवांधव आनहु तिनको सत्कारहु सुखरासी ॥
सुनि गुरु वचन सुमन्त यथोचित भूपति न्योति वोलायो।
यथा योग्य भूपन के घर जन यथा योग्य पठवायो ॥
जनक आदि जे मुख्य महीपति तिनके आपुहि जाई।
सादर नेउति सदल निज संगहि ल्यायो अवध लेवाई ॥
गुरु शासन जस भयो ठानि तस सकल कर्म अधिकारी।
कियो निवेदन सवै आइ ते लीजै नाथ निहारी ॥
अति प्रसन्न ह्वै गुरु वशिष्ठ तव पुनि पुनि कह्यो वुझाई।

कोहु को दियो न खेल झेल करि राख्यो मेल सदाई॥
दाता देइ अनादर करि जो तौ हठि होत विनासा।
घर की सम्पति जाति वृथाहीं होत लोक उपहासा॥
यहि विधि गुरु कहि परम प्रमोदित गये भवन मख आसी
देश देश के सकल महीपति आये लै धन रासी॥
गुरु वशिष्ठ दशरथ पहँ चलि कै कह्यो सुनहु महराजा।
आये वाजिमेध मख देखन सब धरनी के राजा॥

दोहा—यथा योग कीन्ह्यों सविधि, मैं राजन सत्कार।
भू भरतार तयार हैं, सकल यज्ञ संभार॥
तुरत पधारहु यज्ञ गृह, सुदिन पूछि नरनाथ।
हानि कोनिहूं वस्तु नाहिं, सिद्धि करैं सुरनाथ॥
देखहु चलि मख वस्तु सब, जस मन तस सब कीन।
सुनि गुरु वचन महीपमणि, भये महा मुद भीन॥
तब वशिष्ठ शृङ्गीऋषिहु, चरण वंदि महिपाल।
सुदिन पूछि गमनत भये, मखशाला तेहि काल॥
मखशाला प्रविशे सकल, मुनि जन शास्त्र विधान।
करि आगू शृङ्गीऋषिहि, त्यों वशिष्ठ मतिवान॥
यज्ञ कर्म आरंभ किय, शास्त्रन के अनुसार।
दीक्षित भयो भुवालमणि, सहित तीनिहूँ दार॥

छंद चौबोला।

यहि विधि ते अरम्भ वाजीमख भयो वसन्तहि काला।
दिशा विजय करि यज्ञतुरंगम आइगयो तेहि काला॥
उत्तर सरयू तीर मनोरम होन लग्यो हययागा।
शृङ्गीऋषि आगू करि मुनिवर करैं कृत्य बड़ भागा॥
वेद शास्त्र पारग परणी सुर करहिं कृत्य सावधाना।

इन्द्र आदि देवन को दीन्ह्यो सविधि भूप मख भागा ।
आहुति परै न वेदीतजि कहुँ न कहुँ कर्म च्युत यागा ॥
कोउ नाहिं थकै कर्म करते द्विज कोउ नाहिं क्षुधित देखाहीं ।
मूरुख कोउ नाहिं रह्यो विप्रवर असत पंथ नाहिं जाहीं ॥
लाखन विप्र करत नित भोजन शूद्रहु नित प्रति खाते ।
तापस असन अनेकन करते खात यती सुखमाते ॥
वाल वृद्ध नारी जन रोगी यथा मनोरथ खाहीं ।
नित प्रति भोजन करहिं करोरिन देत तोष नृप नाहीं ॥
दश योजन को मखमंडल भो कोटिन मनुज वसंते ।
देहु देहु अस छाय रह्यो रव भोजन वसन अनंते ॥
देत हजारन कहत हजारन खात हजारन पांती ।
अन्नकूट गिरि सरिस हजारन असन हजारन भांती ॥
दिन दिन दून दून भोजन हित वने विविधि पकवाना ।
पुरुष नारि देशन देशन ते आवें नित नित नाना ॥

दोहा—अन्न पान सनमान ते, सिगरे तोषित होत ।
स्वाद प्रशंसि प्रशंसि द्विज, नृप यश करत उदोत ॥

छन्द चौबोला ।

सव विधि हम संतुष्ट भये अस सुनत अवध पति बानी ।
परसहिं वसन विभूषण भूषित पुरुष नारि छविखानी ॥
धारे कटक मुकुट कुंडल तन विचरहिं देव समाना ।
देहु देहु याचक मुख भाषत लेहु लेहु जन नाना ॥
कर्म कर्म अन्तर धरणी सुर करते हेतु विवादा ।
अपनी अपनी विजय चहत सव यथा शास्त्र मरयादा ॥
निज निज आसन बैठि बैठि द्विज नितप्रति कर्म कराहीं ।
करहिं अवाहन सकल देवतन भाग देन मख माहीं ॥
होता शृङ्गी ऋषि वशिष्टमुनि शिक्षा मंत्र विज्ञाता ।

कोहु को दियो न खेल झेल करि राख्यो मेल सदाई॥
दाता देइ अनादर करि जो तौ हठि होत विनासा।
घर की सम्पति जाति वृथाहीं होत लोक उपहासा॥
यहि विधि गुरु कहि परम प्रमोदित गये भवन मख आसी
देश देश के सकल महीपति आये लै धन रासी॥
गुरु वशिष्ठ दशरथ पहँ चलि कै कह्यो सुनहु महराजा।
आये वाजिमेध मख देखन सब धरनी के राजा॥

दोहा–यथा योग कीन्ह्यों सविधि, मैं राजन सत्कार।
भू भरतार तयार हैं, सकल यज्ञ संभार॥
तुरत पधारहु यज्ञ गृह, सुदिन पूछि नरनाथ।
हानि कौनिहूं वस्तु नाहिं, सिद्धि करैं सुरनाथ॥
देखहु चलि मख वस्तु सब, जस मन तस सब कीन।
सुनि गुरु वचन महीपमणि, भये महा मुद भीन॥
तब वशिष्ठ शृङ्गीऋषिहु, चरण वंदि महिपाल।
सुदिन पूछि गमनत भये, मखशाला तेहि काल॥
मखशाला प्रविशे सकल, मुनि जन शास्त्र विधान।
करि आगू शृङ्गीऋषिहि, त्यों वशिष्ठ मतिवान॥
यज्ञ कर्म आरंभ किय, शास्त्रन के अनुसार।
दीक्षित भयो भुवालमणि, सहित तीनिहूँ दार॥

छंद चौबोला।

यहि विधि ते आरम्भ वाजीमख भयो वसन्तहि काला।
दिशा विजय करि यज्ञतुरंगम आइगयो तेहि काला॥
उत्तर सरयू तीर मनोरम होन लग्यो हययागा।
शृङ्गीऋषि आगू करि मुनिवर करैं कृत्य बड़ भागा॥
वेद शास्त्र पारग धरणी सुर करहिं कृत्य सावधाना।
कहुँ कहुँ अधिक कर्म करते द्विज यथा सिद्ध अनुमाना॥

इन्द्र आदि देवन को दीन्ह्यो सविधि भूप मख भागा ।
आहुति परै न वेदीतजि कहुँ न कहुँ कर्म च्युत यागा ॥
कोउ नहिं थकै कर्म करते द्विज कोउ नाहिं क्षुधित देखाहीं ।
मूरुख कोउ नाहिं रह्यो विप्रवर असत पंथ नाहिं जाहीं ॥
लाखन विप्र करत नित भोजन शूद्रहु नित प्रति खाते ।
तापस असन अनेकन करते खात यती सुखमाते ॥
वाल वृद्ध नारी जन रोगी यथा मनोरथ खाहीं ।
नित प्रति भोजन करहिं करोरिन देत तोष नृप नाहीं ॥
दश योजन को मखमंडल भो कोटिन मनुज वसंते ।
देहु देहु अस छाय रह्यो रव भोजन वसन अनंते ॥
देत हजारन कहत हजारन खात हजारन पांती ।
अन्नकूट गिरि सरिस हजारन असन हजारन भांती ॥
दिन दिन दून दून भोजन हित बने विविधि पकवाना ।
पुरुष नारि देशन देशन ते आवैं नित नित नाना ॥

दोहा–अन्न पान सनमान ते, सिगरे तोपित होत ।
स्वाद प्रशंसि प्रशंसि द्विज, नृप यश करत उदोत ॥

छन्द चौबोला ।

सव विधि हम संतुष्ट भये अस सुनत अवध पति वानी ।
परसहिं वसन विभूषण भूपित पुरुष नारि छविखानी ॥
धारे कटक मुकुट कुंडल तन विचरहिं देव समाना ।
देहु देहु याचक मुख भापत लेहु लेहु जन नाना ॥
कर्म कर्म अन्तर धरणी सुर करते हेतु विवादा ।
अपनी अपनी विजय चहत सव यथा शास्त्र मरयादा ॥
निज निज आसन वैठि वैठि द्विज नितप्रति कर्म कराहीं ।
करहिं अवाहन सकल देवतन भाग देन मख माहीं ॥
होता शृङ्गी ऋषि वशिष्ठमुनि शिक्षा मंत्र विज्ञाता ।

पढ़ि पढ़ि मंत्र देत देवन को भाग सराग विख्याता ॥
सबै षडङ्ग वेद पाठक द्विज वहु श्रुत व्रती सुजाना ।
कारक वाद विवाद शास्त्र मत त्रयकालिक जिन ज्ञाना ॥
वेद शास्त्र विधि सबै निवाहक वाहक हयमख भारा ।
दाहक सकल शोक संसारिन गाहक गुणन उदारा ॥
सविधि रतन मंडित वहु खंभन अति विशाल मखशाला ।
छाये वसन अनूपम जिन में वँधे सुरभि सुममाला ॥
बड़े बड़े वहु रतन चमङ्कृत जिमि सप्तर्षि अकाशा ।
रंभ खंभ मण्डित अखंड अति तोरण तड़प तमाशा ॥
कौशल्या केकयी सुमित्रा पतियुत कर्म कराहीं ।
वाजिमेध वाजी छवि राजो वंध्यो तुरंग तहाहीं ॥
दोहा—पुनि तुरंग को विसस तहँ, कौशल्या करि दीन ।
कियो होम करि प्राण वपु दशरथ नृपति प्रवीन

छंद चौबोला ।

वेद विधान कियो मख राजा हीन कर्म कछु नाहीं ।
शृंगीऋषि अरु गुरु वशिष्ट मुनि करवायो नृप काहीं ॥
प्राची दिशि होता कहँ दीन्ह्यो रघुकुल वंश प्रधाना ।
अध्वर्यहि पश्चिम दिशि ब्रह्महि दक्षिण दिशि मतिवाना ॥
उदगातहि उत्तर दिशि दीन्ह्यो यज्ञ दक्षिणा भारी ।
अश्वमेध मख कियो समापत दै पुहुमी निज सारी ॥
यहि विधि सकल राज्य दै विप्रन भयो सुखी नरनाहू ।
मुनिवर आय विनय कीन्ह्यो पुनि यह हमरे उर दाहू ।
यह पृथिवी रक्षण में समरथ आपुहि एक भुवाला ।
हम ब्राह्मण जप तप व्रत जानैं लेव न मही विशाला ॥
निष्क्रय देहु कछुक भूपति मणि मणि सुवरण पट गाई ।
सदा उग्र शासन रहिये प्रभु आपु सकल महि सांई ॥

सुनि द्विज वचन हर्षि भूपति मणि निष्क्रय वख्शन लागे।
दियो लाख दश सुरभी सुंदरि दान शील अनुरागे॥
सौ करोरि मोहर पुनि दीन्हो मुद्रा चौगुन तासू।
दियो ऋत्विजन विविध दक्षिणा हय गय वसन अवासू॥
शृंगीऋषि अरु गुरु वशिष्ठ तहँ विप्रन कियो विभागा।
हर्षि विप्र सब दै आशिष पुनि बोले युत अनुरागा॥
सब विधि हम तोषित नर नायक अब नहिं आसहमारे।
द्विज आशिष प्रभाव ते पूजैं सब मनकाम तुम्हारे॥

दोहा–आये देशन देश ते, जे याचक करि आश।
दियो कोटि मोहर तिन्हैं, दारिद कियो विनाश॥

छन्द चौबोला।

दानि शिरोमणिदशरथ भूपति बैठि रह्यो जेहि काला।
एक दरिद्री द्विज तहँ आयो बोल्यो वचन रसाला॥
दानी दशरथ राज तुम्हें हम सुनियत हे जग माहीं।
करि मख कोटिन द्विजन दान दिय हमरे लेखे नाहीं॥
पायो अनहुन हम तुम्हरे मख देहु होहु जो दानी।
सुनत अवध नायक विहँसे अति लियो ताहि ढिग आनी॥
नवग्रह इव नवरतन कलित कल कंकण रह्यो जो हाथा।
सो सादर पहिराइ दियो तेहि पुनि पुनि नायो माथा॥
योजन दश मख मंडल अन्तर दस दिसि मच्यो दकारा।
मनुमहीप मणि महि मंडल ते दियो निकारि नकारा॥
पुनि वन्दन कीन्हो द्विज वृन्दन अजनन्दन अविषादा।
कोटिन विप्र वदन ते पायो कोटिन आशिर्वादा॥
भयो कृतारथ यज्ञ यथारथ करि स्वारथ निधि मान्यो।
कछुन अकारथ भोधरमारथ परमारथ हुलसान्यो॥
शृंगीऋषि को बोलि अवधपति कह्यो वचन शिर नाई।

कुल वर्द्धन अब करहु यज्ञ प्रभु जाते सुत हम पाई ॥
शृंगीऋषि तब कह्यो नरेशहि अब नाहिं होहु दुखारी ।
पैहो परम प्रबल कुलनायक सब लायक सुत चारी ॥
सुनि मुनिवर के वचन अवधपति लह्यो महा सुख धामा ।
मुनि पद पंकज बार बार किय दंड समान प्रणामा ॥

दोहा—शृंगीऋषि मेधा विमल, कियो दण्ड युग ध्यान ।
सावधान ह्वै नृपति सों, लाग्यो करन बखान ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी.सी. एस, आई कृते श्रीरामस्वयम्वरे द्वितीयो यज्ञ प्रबन्धः ॥ २ ॥

छंद चौबोला ।

पुत्र इष्ट हम करब अथर्वण मंत्र सिद्धि जेहि माहीं ।
अति सुकुमार कुमार चार प्रभु दैहैं हठि तुम काहीं ॥
अस कहि ऋषिन बोलि शृंगीऋषि पुत्र इष्ट आरंभा ।
लाग्यो करन वेद विद संयुत हवन कियो बिन दंभा ॥
भाग देन हित किय आवाहन सकल देवतन काहीं ।
प्रगट भये गन्धर्व सर्व परमर्षि सिद्ध सुर ताहीं ॥
लियो यथा विधि भाग देव सब भयो महा दरबारा ।
समय पाय विधि सों सिगरे सुर ऐसे वचन उचारा ॥
सुनहु पितामह तुव वर केवल रावण भयो बलीना ।
करत महा बाधा हम सब को अति व्याकुल करि दीना ॥
सुरपति सकत न शासन करि कछु रावण सों रण हारे ।
ह्वै प्रसन्न वरदान दियो तुम का सुर करहिं विचारे ॥
क्षमा करत तुव वर विचारि सुर को तुव वरनहिं मानै ।
ह्वै गो महा बली दशकन्धर तृण सम देवन जानै ॥

रोजहिं जीतन चढ़त देव पुर रोज करत उतपाता ।
महा महा सुर ब्रह्म ऋषिन सों वैर किये सुनु ताता ॥
पूरुब एक समय ताको सुत जीति सकल सुर लोका ।
पकरि लियो वासव को रण में दियो सबन सुर शोका ॥
अब पुनि चोपि चटक अमरावति चाहत करन चढ़ाई ।
पकरन चहत देवपति को पुनि तुव वर की प्रभुताई ॥
दोहा—गन्धर्वन देवन द्विजन, यक्षन ऋषिन प्रतक्ष ।
वार वार पीड़त रहत, तुव वर पाइ सपक्ष ॥
तापित तासु प्रताप ते, तपन तपित अति मन्द ।
बहत पवन ताके निकट, तेहि रुख राखि स्वच्छन्द ॥
दश शिर भृकुटी कुटिल लखि, तरल तरंग निकाइ ।
मानि भीति वारिध विशद, सर सम थिर ह्वै जाइ ॥

छंद चौबोला ।

सुनहु देवपति सब देवन को रावणते अति भीती ।
महा वीर बरजोर लंकपति सकै कौन सुर जीती ॥
ताते अब कछु तासु वधन की कीजै नाथ उपाई ।
ना तो सुर निवास हित दूसर दीजे स्वर्ग बनाई ॥
यहि विधि सब देवन पुकार सुनि करि विचार करतारा ॥
वोल्यो वचन सभा मधि सुंदर सुनहुदेव युत दारा ॥
हंता दशकन्धर को यह जो वसत चराचर माहीं ।
और उपाय तासु वध की अब समुझि परत कछु नाहीं ॥
महा कठिन तप करि दशकन्धर पूरुब वर अस मांगा ।
यक्ष रक्ष दानव देवन सों अभय होहुँ सब जागा ॥.
मैं ताको तप ताकि तुरत तेहि दीन्ह्यों अस वरदाना ॥
अवध होइ तैं सुरासुरन ते होइ बड़ो बलवाना ।
पै अज्ञान ते मानि तुच्छ अति नर ते अभय न याचा ॥

तातें मनुज हाथ ताकर वध ह्वै है यह मत सांचा॥
चारि वदन के वनद विनिर्गत वचन सुनत ऋषि देवा।
अति अपार आदंन मानि मन करन लगे विधि सेवा॥
यहि विधि भाषत वचन परस्पर देव और कर्ता रा।
तेहि अवसर उत्तर दिशिमें अति होत भयो उजियारा॥
धरणी गगन दशौ दिशि छायो कोटि भानु सम भासा।
सबके मूंद गये दृग तेहि क्षण देखि अपूर्व प्रकासा॥

दोहा—तेहि प्रकाश के मध्य में, पीत वसन फहरान।
खगनायक के पक्ष को, पवन प्रचण्ड वहान।

छंद चौबोला।

तेहि अवसर तहँ देव सभा मधि प्रगट भये जग स्वामी।
अखिल चराचर जीव निवास निरन्तर अन्तरयामी॥
शंख चक्र शारंग गदा नंदक सोहत भुज चारी।
खगपति पीठि सवार उदार मनहुँ घनश्यामतमारी॥
कटक मुकुट कुंडल अंगद भुज चरण कमल केयूरा।
मेदुर मेघनघटा छटा तन काम कोटि मद चूरा॥
पीत वसन फहरानि सुछविजिमि छन छवि घन छहरानी।
अलकावली लसति मुख शशि जिमि जलदावली निरानी॥
सोहत हार हिये हीरन को हिमकर सरिस विशाला।
अंबरेख कौस्तुभ कदंब छवि पद प्रलंब वनमाला॥
करुणा ऐन मन मद मोचन नलिन नयन अरुणारे।
दिवस रैन जिन सैन भैन प्रद कोटिन अधम उधारे॥
कुण्डल लोल कपोल गोल पर लेत मोल मन काहीं।
मुनि अतोल अडोल देति सुख संयुत बोल सदाहीं॥
[illegible] क्रान्ति कमनीय देखि भो कंबु अंबु को वासी।
[illegible] मणि भे जड़ तकि दर दड खग लखि चौरासी।

रम्भ खम्भ जंघन द्युति देखत नशत जनत जग माहीं।
चारु पदारविन्द जेहि सज्जन सुमन मलिन्द बसाहीं॥
त्रिभुवन भूप अनूप रूप भव कूप उधारनहारा।
अज अनादि अव्यक्त अनन्त अनेकनिधृत अवतारा॥

दोहा–देखि देव जगदीश को, कीन्हे जयजयकार।
बंदेअति सानन्द सुर, सहितशंभु करतार॥

छंद चौबोला।

ब्रह्मा शङ्कर सुर सुरेश ढिग चलि आये जगदीशा।
करन लगे अस्तुति चहुँ दिशि सुर धरे चरण महँ शीशा॥
अस्तुति करि सम्पन्न नाथ की लखि प्रसन्न सबदेवा।
बोले वचन भयातुर कातर करत चरण की सेवा॥
त्राहि त्राहि शरणागत आरत आरति हरहु मुरारी।
तुव रोपित पादपरण दाहत यह दशवदन दवारी॥
वासुदेव हे विष्णु विश्वपति जग मंगल अब कीजे।
सुर सांकरे सहायक दीनन दया दान द्रुत दीजे॥
तुमहिं न कछु सिखवन के लायक केवल सुरति करावें।
जब जब महा होति भय देवन तब तब तुम पहँ धावें॥
देवन की विनती सुनि जगपति लेहु मनुज अवतारा।
धर्म अधार उदार अवधपति होवहु तासु कुमारा॥
जाको तेज महर्षि सरिस जग विदित सु दशरथ राऊ।
शान्त दान्त वेदान्तन पारग चाहत तुवसुत भाऊ॥
श्री कीरति लज्जा इव जाकी लसहिं तीनि महरानी।
तिनहीं के सुत होहु चारि वपु सुन्दर सारंग पानी॥
नर अवतार धारि जग नायक करहु सुरन कर काना।
सकल लोक कंटक लंकापति हनहु होहु रघुराना॥
सो अवध्य देवन के करने सिद्ध अभिन दुखदाई।
गंधर्वन यक्षन विद्याधर कीन्हो सुर मनुदाई॥

दोहा–रावण को सुनि नाम सुर, करत परावन साथ।
दशकंधर के कंधरन, करहु माथ बिन नाथ॥

छन्द चौबोला।

गाढ़ो गर्व देव गंधर्वन सर्वन करत दुखारी।
महा मूढ़ मदमत्त मोहरत बाधत बिबुध हँकारी॥
पुण्यजीव जे स्वर्ग विहारी नंदनवन संचारी।
सुर सुंदरी संग विहरत जे हरत तासु हठि नारी
मुनिवर निरत महा तप कानन पंचानन इवनासैं।
वरवस धरत अपसरन मगमहँ सून करत सुरवासैं॥
तुम रक्षक शरणागत पालक दूसर दृग न देखाता।
जगभावन पावन सुखछावन रावन करहु निपाता॥
सुर मुनि गुनि समरथ जगनायक परे शरण महँ आई।
तुम त्राता दाता अभीत के माता पिता सदाई॥
देव यक्ष गंधर्व सिद्ध मुनि आरत वचन पुकारैं।
तुमहिं छोड़ि यहि काल काल इव को दशमुख संहारैं॥
तुमहीं हो सब देवन के गति जगपति विपति विनाशी।
नाथे परं तप तुमहिं परं तप सन्तापित सुखराशी॥
आशु अमरपति हनन अमर अरि अवनि चरण मन दीजै
लीला ललित लाभ लोगन को मनुज लोक महँ कीजै॥
यहि विधि सुनि देवन की वाणी हरषित सारंग पानी।
सर्व लोक वंदित रन पंडित मंडित शोभ अमानी॥
सुरा सुराधिप चराचरा कर नारायण जगस्वामी।
विधियुत सकल सुरन सों भाख्यो सब उर अन्तरयामी॥

दोहा–सुनहु त्रिदश अस वचन मम,धर्मविवश सति मानि।
भीति रीति त्यागहु सबै,जोति आपनी जानि॥

छंद चौबोला।

तुम्हरे हितहि हेत हम हरबर करि आहव अति घोरा।
जाति नाति सुत सचिव सुहृद युत भ्रात नात बरजोरा॥
पूर क्रूर दशकंठ कदन करि तव विकुण्ठ कहं जैहौं।
सुर सज्जन गो द्विज पालन करि धरा सुधर्म चलैहौं॥
एकादश सहस्र संवत कोशल पुर होहुँ निवासी।
देहौं सानुकूल सुख सन्त देव द्विज कंटक नासी
यहि विधि कहि सिगरे देवन सों मधुर वचन भगवाना।
मनुज लोक अवतार लेन को कीन्ह्यो मनहिं विधाना॥
अवधपुरी निज जन्म भूमि करि रघु कुल करहु प्रकासा।
अस विचारि ह्वै विष्णुचारि वपु हरन देव मुनि त्रासा॥
कियो विचार चारि भुज दशरथ होवैं पिता हमारे
तीनि बंधु बाँकुरे विजयकर समर शूर अनियारे॥
प्रभु के वचन सुनत सुर मुनि गण मानि महा मुद रासी।
सहित स्वयंभु शंभु हरषे अति अस्तुति विमल प्रकासी॥
तहँ गन्धर्व लगे कल गावन नचहिं अपसरा नाना।
पायो मनहुँ लाभ जीवन को मिले सकल सुरथाना॥
पुनि पुनि करहिं दण्डवत प्रभु को पुनि पुनि मिलहिं सुखारी।
पुनि पुनि प्रभु को विनय सुनावत गुनि गुनि गिरा उचारी॥
करुणा सदन वदन अवलोकत कोटि मदन मद हारी।
करहु ऐसही सही नहीं अब दीजै सुरति विसारी॥

दोहा—हम अनाथ तुम नाथ हो कीजै अवशि सनाथ।
धरहु माथमें हाथ अब सुनि विनंती सुख गाथ॥

कवित।

महा मदवारो देव दर्पन दलनवारो उग्रतेजवारो शक्रशत्रु सानवारोहै॥
विधिवरवारो लङ्कनगरीनिवासवारो सदाजयवारो युद्धकबहूँ नहारोहै॥

रावणकोमारो प्रभु कुलपरिवारो युत रोदन करायो साधुदेवबहुवारोंहैं
सुयशपसारो पुनिधामकोपधारो निज रावरेसोकौन रघुराजरखवारोंहैं

छन्द चौबोला ।

दोनन के पारायण श्रीनारायण सुनि सुर बैना ।
जानत रहे सुनै सब कारन तदपि मानि मुद ऐना ॥
गयो गिरा गीर्वाणन सो गुणि बहुरि बतावहु बाता ।
कौन उपाय पायसुर ऋषि गुणि करहिं लंकपति घाता ॥
सुनत विष्णु के वचन अमरगण कह्योचरण शिर नाई ।
मनुज रूप धरि दशरथ सुत ह्वै नाशहु राक्षस राई ॥
रावण परम भयावन संगर करि सबन्धु संहारा ।
करहु पुनीत पुहुमि पदरज सों ह्वै अवधेश कुमारा ॥
पूरुब कियो तीव्र तप रावण सहसन वर्ष सनेमा ।
ह्वै प्रसन्न ब्रह्मा वर दीन्ह्यो पायो शठ अति क्षेमा ॥
यद्यपि सबके पूर्वज लोकन कर्त्ता है करतारा ।
रावण के वर देत माहिं कछु कियो न मनहि विचारा ॥
अति तोपित दीन्ह्यो अनेक वर तैं अवध्य सुर हाथा ।
तोहिं भीति काहू ते है नहिं मम वर बश दशमाथा ॥
मानि मरकटन मनुज नीच अति तिनहि दियो बिसराई ।
लहि विरंचि वर महा दर्प भरि बस्यो लङ्क गढ़ जाई ॥
जीत्यो यम कुवेर वरुणहु को सुर पुर करी चढ़ाई ।
सकल राक्षसन देवन सों तहँ अतिशय परी लराई ॥
तासु तनय घननाद महा रथि समर शक्र गहि लीह्यो ।
रावण अपनो शासन सुर पुर फेरि सकल थल दीन्हो ॥
दोहा–कपि नर कर माग्यो नहीं,अभय हमारे भाग ।
ताते मानुप रूप धरि, करहु घात बड़ भाग ॥

छंद चौबोला ।

नाथ करत अब महा उपद्रव हरत तुरत सुर दारा ।
राखि राखि राक्षस थल थल में तीनिहु लोक उजारा ॥
जानहु सब कारण सुरनायक पूछहु कस जनु भोरे ।
विबुध विप्र मुनि धेनु धर्म गति लगी हाथ अब तोरे ॥
सुनि देवन के वचन विष्णु प्रभु पुनि पुनि मनहि विचारे ।
धरा धर्म आधार अवधपति होवें पिता हमारे ॥
दशरथ तनय होब निश्चय करि विधि सों माँगि विदाई ।
अन्तर्धान भये जगनायक मुद महर्षि उपजाई ॥
पुत्र इष्टि सुत हीन अवधपति करन लग्यो तेहि काला ।
हवन करत विधि मंत्र सहित शृङ्गीऋषि तेज विशाला ॥
तहँ यजमान भूपके सनमुख हवन कुण्ड ते प्यारो ।
अतुलित प्रभा महा बल सुंदर तीनि लोक उजियारो ॥
श्याम शरीर अरुण अंबर तन दृग विशाल अरुणारे ।
सोहत हरित मूछ शिर केश सुवेश रोम तन सारे ॥
भयो उदित मन विमल दिवाकर दिव्य विभूषण धारी ।
उन्नत शैल शृङ्ग सम अंग अनंग हेरि हिय हारी ॥
दर्पित शार्दूल सम विक्रम लक्षण लक्षित आछे ।
कर में कनक थार लीन्हें कटि कनक काछनी काछे ॥
परम दिव्य पायस सों पूरित रजत पात्र ते ढांपी ।
मनहुँ अङ्क कीन्हे निज नारी प्यारी छवि में छापी ॥

दोहा–लपटन मणि वर लपट सों दश दिशि करत प्रकाश ।
लिये थार माया मयी मानहु रूप हुताश ॥

छंद चौबोला ।

पायस लयो पुरुष पावक ते दोउ पानि पसारे ।
कह्यो बचन भूपति दशरथ सों मानहु बचन हमारे ॥

प्राजापत्य पुरुष मोहिं जानो तुव हित हेतहि आयो ।
तव कर जोरि कह्यो कोशलपति हे प्रभु भले सिधायो ॥
कहहु प्रसन्न वदन अब मोसन करहुँ कौन सेवकाई ।
प्राजापत्य पुरुष तब बोल्यो बार बार मुसकाई ॥
देवन को पूजन तुम कीन्ह्यो ताको फल यह आयो ।
धन अरोग वर्द्धन सुत दायक तुव हित देव बनायो ॥
लेहु दिव्य पायस भूपतिमणि दीजै रानिन जाई ।
अवशि पाइहौ चारि पुत्र तुम जेहि हित यज्ञ कराई ॥
जे अनुरूप पट्टरानी तव तिन भोजन हित दीजै ।
पाय प्रबल सुत चारि चक्रवर्ती महिराज करीजै ॥
तब नरेश अतिशय प्रसन्न है शिर धरि लीन्हों थारी ।
देवदत्त देवान्न प्रपूरित कनकमयी छबि वारी ॥
प्राजापत्य पुरुष चरणन को बंद्यो वारहिं वारा ।
जन्म रङ्क जिमि लहै देव तुम तिमि सुख लह्यो अपारा ॥
तीन पुरुष को दै परदक्षिण भयो कृतारथ राजा ।
सोऊ अन्तर्धान भयो करि अवधराज कर काजा ॥
पुत्र इष्टि अद्भुत करि भूपति किय समाप्त सविधाना ।
बजन लगे तब अवध नगर में थल थल निकर निसाना ॥

दोहा–उयो मनहुँ अन्तहपुरहि,शारद मोद मयङ्क ।
भूपति कांता कुमुद गण, विकसत भये निशङ्क ॥

छंद चौबोला ।

कनक थार लै भू भरतार अपार अनंद प्रकासा ।
सजल नैन पुलकित शरीर द्रुत गौरनिवास अवासा ॥
वचन कह्यो अति मंजु मनोहर कौशल्या गृह जाई ।
सुमुखि सयानि लेहु यह पायस सुतदायक सुखदाई ॥
दियो अर्द्ध पायस कौशिल्यहि जौन अर्द्ध रहि गयऊ ।

तामें अर्द्ध सुमित्रहि दीन्ह्यो अर्द्ध युगल करि दयऊ ॥
आधो दियो केकयी को नृप पुनि आधो जो बाँचो।
वहुरि विचारि सुमित्रहि दीन्ह्यो तासु नेह महँ राँचो ॥
यहि विधि भाग विभाग दियो करि सानुराग महिपाला।
भई सकल सनमानवती ते पायस पाय उताला ॥
उत्तम अवध नरेंद्र महारानी मन तजी गलानी।
उदय अपूरुव आनँद उर में भई सकल छवि खानी ॥
कौशल्या केकयी सुमित्रा पायस भोजन कीन्ह्यो।
भानु कृशानु समान तेज सब उदर गर्भ धरि लीन्ह्यो ॥
गर्भवती युवती अपनी लखि पूरण काम नरेशा।
वसत भयो सानंद अवध पुर सरयू दक्षिण देशा ॥
राज्यो अवध भुवाल काल तेहि रूप विशाल रसाला।
सुर सुरपाल महर्षि माल मधि जिमि कृपाल जग पाला ॥
देव सरिस द्युति देह प्रकासी अनुपम आनँद रासी।
पुत्र उछाह लखन के आसी भये अवधपुर वासी ॥

दोहा—देवन हित भूपति भवन, किय हरि गर्भ निवास।
को दयालु अस दूसरो, जैसो रमा निवास ॥
भये गर्भ गत विष्णु जब, दशरथ भवन मुरारि।
तब सब देव बोलाइ के कह्यो वचन मुख चारि ॥

छन्द चौबोला।

जन्म लेत जगपति भूपति गृह रावण के वध हेतू।
महा वीर रणधीर धर्म धुर धारण करि खग केतू ॥
तुम सब तासु सहाइ हेत हित धरहु कपिन अवतारा।
काम रूप अरु महा बली वपु बलो वदन आकारा॥
महाशूर मायाविद पूर प्रभंजन वेग प्रचंडा।
नीति दक्ष मतिवन्त स्वच्छ प्रत्यक्ष रक्ष कृत खण्डा ॥

महा दुरासद दुराधर्ष रण हर्ष अमर्ष प्रतापी ।
सब उपाय ज्ञाता तन त्राता मृगपति रूप कलापो ॥
सर्व अस्त्र ज्ञाता गुण धाता सुधापान इव कीने ।
राम काज हित होहु जाइ कपि अमर अनन्त प्रवीने ॥
मुख्य अप्सरा अरु गन्धर्वी त्यों देवन की दारा ।
विद्याधरी किन्नरी नामा त्यों वानरी अपारा ॥
यक्षसुता अरु ऋक्षतियन में जनमहुँ अमित कुमारा ।
बल विक्रम बुधि तुल्य आपने वानर रूप अपारा ॥
ऋक्ष प्रधान सुजाम्बवान यक मैं सिरज्यो बलवाना ।
पूरुब एक समय जमुहाताहि मम मुख कढ्यो महाना ॥
सुनि विरंचिको शासन सुरगण एवमस्तु कहि वानी ।
सिरजत भये पुत्र अपने समवानर वपु बल खानी ॥
ऋपि विद्याधर सिद्ध महोरग चारण आदिक देवा
सिरजत भये कुमार कीश वपु करन राम की सेवा ॥
दोहा—वासव कोसुत होत भो, वाली वानर राज ।
तासु भ्रात सूरज सुवन, भो सुग्रीव दराज ॥

छन्द चौबोला ।

भयो कुमार देवगुरु को तहँ तार नाम बलवाना ।
महा मुख्य मर्कट मण्डल में महा बीर मतिमाना ॥
भयो कुवेर कुमार गन्धमादन बल बुद्धि निधाना ।
भयो विश्वकर्मा कुमार नल नाम कीस बलवाना ॥
पावक पुत्र नील नोखो कपि पावक तेज प्रकासी ।
भयो वानरी महा वाहिनी सैनापति बल रासी ॥
पुनि अश्वनी कुमार कुमार भये युग द्विविद मयंदा ।
पितु सम उभै परम शोभाकर मानहुँ मत्त गयंदा ॥

जन्यो सुखेन नाम वानर यक वरुण देव जलराई।
जन्यो पुत्र परजन्य सरभ कपि जेहि विक्रम विपुलाई॥
मारुत को औरसकुमार भो महा वली हनुमाना।
अति शुभांग वज्रांग सांग वल जेहि यव गरुड़ समाना॥
सकल वीर वानरी वाहिनी बुद्धि शिरोमणि सांचो।
दोरदण्ड वल अण्ड खण्ड वरिवण्ड लीक विधि खांचो॥
औरहु वहुत देव सिरजे कपि निज वल बुद्धि समाने।
दशकन्धर वध निरत सवै कपि संगर शूर सयाने॥
महा वली विक्रम विक्रांत क्रांत मन्दर गिरि कीन्हे।
सकल कामरूपी मायावी रण रिपु पीठि न दीन्हे॥
महा मेरु मन्दर संकाश प्रकाशित विशद शरीरा।
ऋक्ष और गोपुच्छ छिप्र सव प्रगट भये रन धीरा॥

दोहा—जोन देव को रूप जस, यथा पराक्रम ओज।
पृथक पृथक तस तस अमर, प्रगटे मंडित मोज॥
गोलांगूलन में जने निज सम सुत वहु देव
कोउ ऋक्षन में प्रगट भे, कोउ किन्नरी तदेव॥

छन्द चौबोला।

कोउ अपसरन मुख्य प्रगटे कपि विद्याधर महँ सोऊ।
कोउ पन्नग कंन्या गन्धर्वी तथा किन्नरिन कोऊ॥
देव महर्षि सिद्ध गन्धर्वहु चारण नागहु यक्षा।
सिद्ध किंपुरुष विद्याधर गणतारक उरग प्रतक्षा॥
जने सकल निज निज सम वल सुत हृष्ट तुष्ट वल पुष्टा।
महा भीम काया जिन केरी अरिगण पर अति रुष्टा॥
जव चाहैं तव करे रूप तस वहु वानर वनचारी।
शार्दूल अरु सिंह दर्पतन पादप शिला प्रहारी॥

नख अरु दन्त अस्त्र हैं जिनके सकल अस्त्र के ज्ञाता ।
मन्दरमेरु डुलावन वारे महा द्रुमन उतखाता ॥
करत क्षोभ निज वेग वारि निधि पद क्षिति दारन हारे
एक फलङ्कहि करत महो दधि गगन गैल गतिवारे ॥
खंडत घन घमंड भुज दंडन पकरैं सुंड वितुंडा ।
गिरहिं गगन चर घोर शोर सुनि मनहु फटत ब्रह्मंडा ॥
ऐसे पवन वेग के मर्कट कोटि कोटि प्रगटाने ।
कोटि कोटि यूथपतिन के भे कोटि कोटि अधिकाने ॥
विन्धि मेरु मन्दर हिम भूधर कन्दर अन्दर वासी ।
और अनेकन अवनि चरण में कानन केलि प्रकासी ॥
सूरज सुवन सुकण्ठ शक्र सुत वालि भये दोउ भाई
महा वली वानर वसुधा पति करैं कीश सेवकाई ॥
दोहा—तार सुखेनहु नील नल,पनस ऋषभ वलवान ।
जाम्ववान आदिकन में, हनूमान परधान ॥

छंद चौचोला ।

सिगरे समर विशारद कपि वर गरुड गर्व गति हारी
विहरत विपिन हनत गज सिंहन महा भुजग भयकारी
कपि कुल पालक महा वाहु वर वाली भयो अधीशा ।
पाल्यो मर्कट ऋक्ष सैन्य निज भुज वल मनहुँ दिगीशा
महा शूर वानरी सैन्य सों पूरित भै सव धरणी ।
कानन कुधर सिंधु सरिता सर वसे करत कुल करणी
मेघ घटा से शैल छटा से कूदन करत कटासे ।
गिरि घटा से फटिक अटा से फेरत पुच्छ पटासे ॥
महा भीम भट सीम धीम नहिं शाखा मृग बहुताई ।
मोर मंदर पै छाप रही करि वेदित राम सहाई ॥

श्रीमद्रामायण के अनुसर इतनी कथा बनाई ।
मेरोइष्टदेव रामायण सज्जन अति सुखदाई ॥
वेद समान जासु महिमा महि मानत देव ऋषीसा ।
चौबिस सहस एक आखर जेहि करत महा अघ खीसा ॥
आदि काव्य ब्रह्मा वरदानित तेहि सम दुतिय न कोई ।
श्रीवैष्णव मंडलो परम धन सब मत संमत सोई ॥
गुरु निदेश मोहिं पाठ करनको बालकांड पर्य्यन्ता ।
ताते बालकांड विस्तृत मैं विरचौं कथा सुसन्ता ॥
तुलसिदास भाषा रामायण रच्यो सन्त सुखदाई ।
महा मनोहर आशु प्रसादक संमत वेद सदाई ॥
दोहा—जहँ तहँ तासु प्रबंध लै, ताहू के अनुसार ।
रामस्वयंवर रचहुँ मैं, जन्म ब्याह विस्तार ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्ण-
चन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी सी. एस. आई.
कृते श्रीरामस्वयंवरे अवतारप्रसंग तृतीयप्रबन्धः ॥ ३ ॥

सोरठा ।

रामायण को मूल, वाल्मीकि नारद मिलन ।
प्रश्न कियो अनुकूल, उत्तर दीन्ह्यो देव ऋषि ॥
रामायण जग माहिं अहैं देव मुनिकृत बहुत ।
अस प्रसिद्ध कोउ नाहिं वाल्मीकि कृत जस विमल ॥
रच्यो न कवि अस नाम वाल्मीकि जबलों न जग ।
जब अवतरचो उदाम वाल्मीकि मुनि आदि कवि ॥
दोहा—वाल्मीकि मुख ते लियो, जो वेदन अवतार ।
सोइ रामायण नाम भो, हरिके भूप कुमार ॥
ताको कारन सोइ भयो, सकल वेद सम्वाद ।

बाल्मीकि नारदहु को, भयो विमल संवाद ॥
सबते वर पर सबहिते, को सब गुण की खानि ।
कौन आज यहि लोक में, नारद कहहु बखानि ॥
बाल्मीकि पूछो जबहिं, तब नारद चित चाय ।
कह्यो गुणाकर जानु मुनि, हैं यक रघुकुल राय ॥
गुण वरणन के व्याज तें, हुलसत देव ऋपीश ।
वरण्यो रामायण सकल, नाय राम पद शीश ॥
रामायण सोइ मूल है, पढ़तहिं पाप परात ।
परमारथ पर पुर सुपथ, पद पद प्रेमहि पात ॥
मैं कीन्ह्यों कोशल नगर, वरणन मति अनुसार ।
भयो जौन कारण अवध, नारायण अवतार ॥
भूपयज्ञ वानर जनम, आदिक बहु इतिहास ।
बाल्मीकि मुनि की कथा, कियो न कछुक प्रकास ॥
जेहि विधि रामायण रच्यो, जस प्रण कारण जौन ।
जस गलानि विधि बानि जस, अब मैं वरणौं तौन ॥

छंद चौबोला ।

बाल्मीकि सुनि नारद मुख ते वचन परम सुख पायो ।
करि अर्चन उपचार अष्ट युग चरण कमल शिर नायो ॥
लहि महर्षि सतकार अपार प्रमोदित देव ऋपीशा ।
हरि गुण गावत बीन बजावत चल्यो सुमिरि जगदीशा ॥
जानि प्रभात महर्षि गयो मज्जन हित तमसा तीरा ।
जो सुरसरि के निकट बहति मरकत सम नीर गँभीरा ॥
बाल्मीकि को शिष्य विचक्षण भरद्वाज जेहि नामा ।
लै मुनि वसन कलश कुश आदिक गयो संग मतिधामा ॥
तमसा तीर जाय निज शिष्य निकट लखि कह मुनिराई ।

भरद्वाज सुनि विगत पंक यह तीरथ ऋषि सुखदाई ॥
अति रमणीय स्वच्छ निरमल जल ज्यों मन सन्त सदाई ॥
धरहु कलश वलकल मोहिं दीजै मज्जन करौं इहाई ॥
उत्तम तमसा तीर्थ दुरित हर मम मानस सुखदाई ।
सुनि गुरुवचन दियो वलकल तहँ भरद्वाज मुनिराई ॥
शिष्य पाणि ते लै वलकल निज इन्द्रीजित मुनि नाथा ।
विचरन लाग्यो विपिन विलोकत रह्यो न तहँ कोउ साथा॥
तहँ तमसा के विपुल पुलिन में लख्यो करांकुल जोरा ।
विहरत मिथुन भाव महँ अति रत करत मनोहर शोरा ॥
तव निपाद आयो यक पापी मुनि के लखत तहाँहीं ।
माख्यो मिथुन विहंग वाण यक मख्यो क्रौंच क्षण माहीं ॥

दोहा—लगत वाण तलफत विहँग परयो सश्रोणित गात ।
हत पति देखि करांकुली, रोदन कियो अघात ॥
अरुण शीश वेधित विशिप, पुनिपुनि रमन निहारि ।
सहचारी पतिहीन तिय, रोई करुण पुकारि ॥
रोवत निरखि करांकुली, हतपति कीन निपाद ।
वाल्मीकि मुनिराज को, उपज्यो विपुल विपाद ॥
करुणा वरुणालय ललित, अतिशय मृदुल स्वभाव ।
सजल नयन मंजुल वयन, वोलत भे ऋपिराव ॥
अति अधर्मनहिं सहि सकें, मुनि करुणा रस भीन ।
अतिशय दुखी करांकुली, देख्यो कंत विहीन ॥
वाल्मीकि भाष्यो वचन, तेहि निपाद प्रति जौन ॥
छंदरूप ह्वै शारदा, प्रगट भई भव तौन ॥
पूर्व रहो नहिं छंद गति, रही गद्यमय वानि ॥
युग पोडश अक्षर विमल, छंद अनुष्टुप जानि ॥

भरद्वाज निगमागम ज्ञाता मुनि को शिष्य विनीता ।
भरि जल कलश कंध धरि पाछे चल्यो चटक जग मीता ॥
शिष्य सहित मुनि धर्म धुरंधर आसुहिं आश्रम आये ।
बैठि कथत बहु कथा वृथा नहिं चित अश्लोक लगाये ॥
वालमीकि के देखन के हित चतुरानन चलि आये ।
सकल लोक करता जग भरता तहँ अति तेजहिं छाये ॥

दोहा—लखि महर्षि उठिचलि कछुक, बंद्यो विधि पदकंज ।
बैठे सनमुख जोरि कर, मौन भरे मनरंज ॥
पुनि महर्षि उठि हर्षि अति, पाद्यार्घासन दीन ।
दै प्रदक्षिणा पूजि विधि, सादर बंदन कीन ॥
पूंछि कुशल मुख चारि को बार बार शिर नाइ ।
आसन में बैठाइ विधि बैठ्यो शासन पाइ ॥

छन्द चौबोला ।

प्रमुदित बैठ्यो जबै पितामह लोक ओक करतारा ।
मुनि सशोक अश्लोक विचारत कछु नहिं वचन उचारा ॥
मनहिं विचारत व्याध अकारथ बध्यो विहंगम काहीं ।
रह्यो मनोहर शोर करत खग अपराधहु कछु नाहीं ॥
दुख संगिनि लखि तासु विहंगिनि मैं जो कह्यों निषादै ।
शोक सोई अश्लोक कढ़यो मुख चारि समान सुपादै ॥
यहि विधि सोचत लखि महर्षि को हर्षि सुबर्षि अमीको ॥
कह्यो वचन विधि विहँसि कियो मुनि यह अश्लोकहि नीको ।
मम प्रसाद ते प्रगट भई यह सरस्वती मुख तेरे ।
यहि विधि रचहु महामुनि मंजुल गान चरित्र घनेरे ॥
धर्मधुरंधर सकल गुणाकर लोक विशारद रामा ।
रचहु चरित तेहि सुन्यो यथा तुम नारद मुख सुखधामा ॥

राम लषण सिय चरित मनोहर रजनीचर गण केरो।
गुप्त प्रकाशित चारु चरित सब जून नवीन घनेरो॥
अविदित विदित विदित सब ह्वै हैं,हस्तामलक समानो।
मृषा वचन यहि काव्य रचन में नहिं ह्वै है सति जानो॥
मुनिवर रचहु दिव्य रामायण राम कथा मनहारी।
यही अनुष्टुप् छंदबद्ध करि औरहु छंद उचारी॥
गंगा सरयू सोन कलिन्दी धारा धरा प्रचारा।
जब लगि ध्रुव अरु भू अरु भूधर रहै सकल संसारा॥

दोहा—तब लगि राम कथा विमल,तव निर्मित मुनि राय।
चलि है चारु विचारु बिन,तीनि लोक लों जाय॥
जब लगि रामायण कथा,चलिहै निर्मित तोरि।
तब लगि तुम मेरे भवन,बसिहो आशिष मोरि॥
पुनि ऊरध गति होहुगे,बसिहो विमल विकुण्ठ।
हरि लीला रस मगन मन, कबहुँ न तुव मति कुण्ठ॥
वाल्मीकि सों अस वचन, हरषित कहि करतार।
तहँ अन्तरहित ह्वै गये, गये ब्रह्म आगार॥

छंद चौबोला।

सुनि स्वयंभु के वचन शिष्य युत मुनिवर विस्मय छाये।
सकल शिष्य अश्लोक सोई तहँ बार बार मुख गाये
चतुर पाद सम अक्षर मंजुल बहु विधि अर्थ समाते।
अतिशय प्रीति प्रमोदहिं पूरित्त गावत्त नहीं अघाते॥
विहग शोक सुश्लोक भयो सोइ वाल्मीक करुणाई।
राम कथा को मूल मनोहर कवि जीवन सुखदाई॥
पुनि रामायण रचन हेत तहं, मुनिवर मनहिं विचारयो।
यही अनुष्टुप रीति राम यश निरमाणन निरधारयो॥

मंजुल पद बहु भाँति अर्थ युत पूर्ण प्रबन्ध उदारा ।
रच्यो मुनीश विमल रामायण उद्धारक संसारा ॥
सम अक्षर अश्लोक अनेकन जेहि यश जग उजियारा ।
महा यशी सु महर्षि हर्षि उर रच्यो चरित्र अपारा ॥
सकल समास सन्धि पट कारक बहु विधि क्रिया कलापा ।
भाव व्यंग धुनि रस संचारो स्थायी विषय अमापा ॥
उक्ति युक्ति प्रत्युक्ति सुक्ति गति वचन विलक्षण जामें ।
शब्द मनोहर अर्थ मनोहर पूर्न प्रबन्ध उदामें ॥
बाल्मीकि सब शिष्य बोलि तहँ कह्यो सुनो मम प्यारे ।
विधि निदेश रामायण बरणों जागे भाग हमारे ॥
रघुनन्दन जानकी सुयश अस दशमुख सकुल निपाता ।
सेतबन्ध भूभार हरण हरि औरहु चरित विख्याता ॥

दोहा—करहुँ रचन आरम्भ अब रामायण परबन्ध ।
मन उल्लास विकाश करि मंजुल छन्द निबन्ध ॥

सोरठा—यहि विधि कियो विचार रामायण निर्मानहित ।
जेहि विधि सुन्यो उदार नारद मुनि के वदन ते ॥
बाल्मीकि मुनिराय त्रैलोकज्ञ कृतज्ञ वर ।
धर्मज्ञन समुदाय धर्म रेख जाकी विदित ॥

दोहा—चरित सु रघुकुल चन्द के मुनिवर कियो विचार ।
दुविध प्रगट अरु अप्रगट संक्षेपहु विस्तार ॥
धर्म [illegible] रघुवीर ।
[illegible] ॥

निश्चल लगो समाधि मन गयो राम रस घोरि॥
राम लषण अरु जानकी श्रीदशरथ महिपाल।
कौशल्यादिक रानि गण संयुत राज विशाल॥
हँसित वदित हुलसित नमित चेष्टित चारु चरित्र।
आदि अन्त देखो पढ्यो सकल यथावत चित्र॥
सत्यसिन्धु रघुवंश मणि सीता लषण समेत।
कियो चरित जो विपिनि में देख्यो सकल सचेत॥
भयो जौन जो होइ गो वर्तमान है जौन।
करामलक सो लखत भो योग दृष्टि ते तौन॥
देखि यथावत चरित सब ज्ञान योग की दीठि।
रचन हेत उद्दित भयो गुणि पद्यावलीमीठि॥
काम अर्थ गण ते वलित धर्म अर्थ विस्तार।
रत्नाकर सागर सरिस श्रवण सुधा की धार॥
अनुक्रमणिका देव ऋषि राम चरित की जौन।
वाल्मीकि मुनि सों कही लीन्ही सैली तौन॥
श्रीरघुवंश चरित्र को रचन सहित विस्तार।
मुनि कीन्ह्यो सूचन प्रथम वरणहुँ सकल उदार॥

छन्द चौबोला।

जेहि विधि जनम लियो कोशलपुर नारायण सुख सारा।
राम नाम अभिराम धाम सुख हरन हेतु भुवि भारा॥
परम पराक्रम प्रथित तीनि पुर, निज परजन अनुकूला।
सुन्दर रूप मनोज त्रिभुवन कबहुँन काहुँ प्रतिकूला॥
करुणासिन्धु पुनि दीनबन्धु प्रभु शील सकोच सुभाऊ।
वरन्यो ताहि सदा मुनि मंजुल बाल चरित्र उराऊ॥
पुनि वरन्यो कौशिक मुनि आगम राम लषण निमि मांचे।

लहि वशिष्ठ मुनि को अनुशासन नृप सुत दिय अनुराग्यो॥
काम कथा कौशिक कुल गाथा यथा ताड़ुका मारी।
जिमि कीन्ह्यो कौशिक मख रक्षण रजनीचर संहारी॥
मिथिला गमन सुमति नृप दरशन जिमि सुरसरि महि आई।
वरणन कीन्ह्यो कथा यथा विधि गोतम तिय गति पाई॥
वरण्यो पुनि मिथिलेश समागम रंगभूमि धनु भंगा।
वैदेही विवाह सुख वरण्यो बंधु विवाह प्रसंगा॥
परशुराम मद मथन कह्यो पुनि अवध नगर आगमनू।
कियो बहुरिरघुवर गुन वरणन सकल अमङ्गल दमनू॥
श्रीरघुपति अभिषेक तयारी विघ्न केकयी कीन्हा।
सीता लषण समेत राम वनवास भूप जिमि दीन्हा॥
दशरथ शोक विलाप मरण पुनि वरण्यो भरत अवाई।
प्रजा विषादित त्यागि गये जिमि चढ़ि स्यन्दन रघुराई॥

दोहा–कह्यो निषाद कथा यथा, आयो बहुरि सुमन्त।
शृंगवेर पुर सुरसरी, उतरे जिमि भगवन्त॥

छंद चौबोला।

सानुराग जिमि जाय प्रयागै भरद्वाज पदवंदे।
भरद्वाज शासन लहि रघुपति उतरे यमुन अनंदे॥
वाल्मीकि मुनि मिलि पुनि निवसे चित्रकूट महँ जाई।
पर्णकुटी रचि सिया लषण युत लखे विपिनि समुदाई॥
वरण्यो भरतागमन बहुरि मुनि दशरथ को जल दाना॥
भरत राम संवाद कह्यो पुनि लहि पादुका पयाना॥
अवध आय जिमि भये भरत पुनि नन्दीग्राम निवासी।
जिमि दण्डक अरण्यको गमने रघुवर विपिन विलासी॥
अत्रि और अनुसुइया दरशन दियो यथा अँगरागा।

पुनि विराध वध कह्यो यथा शरभंग शरीरहि त्यागा ॥
फेर सुतीक्षण कह्यो समागम बहुरि अगस्त्य मिलापा ।
वरण्यो पंचवटी निवास पुनि जिमि हिम शिशिर प्रताप ॥
शूर्पणखा कुरूप जिमि कीन्ह्यो करत हास संवादा ।
खरदूषण त्रिशिरा वध वर्णन पुनि दशकण्ठ विषादा ॥
पुनि मारयो मारीच यथा प्रभु वरणि जानकी हरना ।
राम विलाप कलाप कह्यो पुनि गीधराज गति करना ॥
पुनि वरण्यो कबन्ध दरशन मुनि पंपासरहि पयाना ।
शबरी के फल खाइ दीन गति विरह विलाप बखाना ॥
ऋष्यमूक को गवन पवन सुत मिले जवन विधि आई ।
पुनि सुग्रीव सनेहसोम कहि दुंदुभि अस्थि ढहाई ॥
दोहा–सततालभेद यथा, वालि सुकण्ठ विरोध ।
पुनि गारयो सुग्रीव रण, वध्यो वालि करि क्रोध ॥

छन्द चौपैया ।

बहुरि विलाप प्रलाप कह्यो जिमि कीन्ह्यो प्रभु पहँ [illegible] ।
पुनि अभिषेक नगर सुग्रीवहिं दियो राज्यकर भाग ॥
पुनि पावस महँ घन प्रवर्षण वर्षा बरणन कीन्ह्यो ।
शरद [illegible] पहँ लषन पठै जिमि दीन्ह्यो ।
[illegible] कटक आनन पुनि राम सुकंठ मिलाना ।
[illegible] चारि दिशि जापि वानरदल धावा ॥
[illegible] सुकण्ठ कृत हनुमन मुद्रिक दाना ।
[illegible] स्वयंप्रभा बिल दर्शन सिंधु तीर कर जाना ।
[illegible] कहो जिमि यथा [illegible] ।
[illegible] दिन घटयो [illegible] ॥
[illegible] पुनि निशि माहि [illegible] ।

सुरसै तोपि राहु जननी हनि निरख्यो लंक पताका ॥
प्रविश्यो पवनतनय रजनी मुख लङ्क निशङ्क अकेला ।
करि ताड़न लंकिनी अशंकिनि उँदेशशो शुभ वेला।
भवन भवन महँ खोजि जानकी रावण महल पधारयो ।
कनक कोट कमनीय कँगूरे निज कर काम संवारयो ॥
आमखास में रामदास चलि लख्यो अवास अनूपा ।
मन्दोदरी देखि सिय भ्रम करि गिरयो मनो दुख कूपा ॥
पुहुप विमान लख्यो पुनि जेहि विधि वहु विधि रावण रानी ।
पुनि अशोक वाटिका गयो कपि जहँ सीता दुख सानी ॥

दोहा—वैदेही दरशन कियो, जेहिं विधि पवनकुमार ।
दियो सुंदरी मुंदरी, वुड़त मनहुँ आधार ॥

छन्द चौवोला ।

कह्यो जानकी संभाषण जिमि त्रिजटा स्वप्न बखाना ।
चूड़ामणि दीन्ह्यो वैदेही हरषि लियो हनुमाना ॥
वन उजारि मारयो रखवारन मंत्रिन पुत्र निपाता ।
सेना अग्रज हत्यो पंच भट अक्ष कुमारहि घाता ॥
वहुरि इन्द्रजित ब्रह्मअस्त्र कृत हनुमत बंधन गायो ।
सभा गमन रावण समुझावन लावन लंक गनायो ॥
वहुरि नांघि सागर जिमि आयो मधुवन कपिन उजारा ।
कह्यो राम दर्शन चूड़ामणि दीन्ह्यो पवनकुमारा ॥
मरकट कटक सहित रघुकुलमणि जिमि सागर तट आये ।
भन्यो नील नल कर ते जिमि प्रभु सागर सेतु बँधाये ॥
रावण ते अपमान पाय जिमि पार विभीषण आयो ।
प्रभु पद परसि पाइ अभिषेकहि रावण वध विधिगायो ॥
पार जाइ पठवाइ वालिसुत रावण को समुझायो ।

घेरी लंक चहूँकित रजनी कपि दल चहुँ दिशि धायो ॥
संकुल महा युद्ध वरण्यो पुनि धूम्राक्षादिक घाता ।
पुनि प्रहस्त वध रावण को रण कुंभकरण वधख्याता ॥
त्रिशिरादिक को कह्यो समर पुनि मेघनाद संग्रामा ।
हनूमान द्रोणाचल आन्यो दहन लंक सब धामा ।
इन्द्रजीत को पुनि वध वरण्यो लषण बान लगि भयऊ ।
बहुरि मूलबल निधन कह्यो मुनि जिमि रावण रण ठयऊ ॥

दोहा-पुनि वरण्यो रावण निधन, सीतामिलन हुलास ।
कह्यो विभीषण को तिलक, पुहुप विमान विलास ॥
अवध नगर आगम कह्यो, भरत सभाग समोद ।
राज तिलक रघुवीर को वरण्यो प्रजा विनोद ॥
वानर विदा बखान किय, रघुपति रंजन राज ।
सिय गवनी पुनि विपिन जहँ, सुंदर ऋषिन समाज ॥
अब आगे को चरित जो,कह्यो सो उत्तर पाहिं ।
वरण्यो यह अनुक्रमणिका,ऋषि रामायण माहिं ॥
श्रीमद्रामायण बिमल, अक्षर वेद समान ॥
आदि काव्य अनुपम अरथ, अघ बन दहन कृशान ॥
परम पुरुष श्री विष्णु जब, भे अवधेश कुमार ।
वालमीकि मुख ते तबहिं, वेद लियो अवतार ॥
लंकापति रण जीति कै, जब आये रघुनाथ ।
सीता अनुज समेत प्रभु, कीन्ह्यो प्रजन सनाथ ॥
राज करत रघुनाथ को, बीति गयो बहु काल ।
सिंहासन आसीन प्रभु, छावत मोद विशाल ॥
रामायण रमणीय अति, मुनि विरच्यो तेहि काल ।
राज करत रघुवंशमणि, भाइन सहित भुआल ॥

श्रीमद्रामायण विमल, पद विचित्र मनहार।
कथा विचित्र विचित्र धुनि, भाव विचित्र अपार॥
यद्यपि रामायण अमित, राम कथा विस्तार।
सब रामायण मूल यह, वेद समान उदार॥
मुनि विरच्यो चौविस सहस, रामायण अश्लोक।
सर्ग पञ्च शत कांड पट,हरन हार सब शोक॥
उत्तर कांड रच्यो बहुरि, कांड भविष्य समेत।
आठ कांड यहि विधि भयो, रामायण सुखसेत॥
राज तिलक सिय गमन लगि,उत्तर कांडहिं जान।
ताके उपर भविष्य है, ऐसो मूल प्रमान॥
रचि महर्षि रामायणहिं, कीन्ह्यो मनहिं विचार।
काको देयँ पढ़ाइ यह, को भारती भँडार॥
मुनि के अस चिन्तन करत, कुश लव सोय कुमार।
आय गहे मुनि पद कमल,बालक बुद्धि उदार॥

छंद चौबोला।

धरम निरत रघुनन्दन नन्दन अरिवृन्दन जय कारी।
मधुर कंठ जिन यश जगपूरित निज आश्रम सञ्चारी॥
लखि महर्षि दोउ बंधुन कहँ तहँ वेदविदांवर दोऊ।
रामायण इन दुहुँन पढ़ावउँ इन सम और न कोऊ॥
अस विचारि दोउ बालक बुधिवर अपने निकट बोलाई।
वेद तुल्य रामायण सुंदर दीन्ह्यो सविधि पढ़ाई॥
उत्तम आदि काव्य रामायण राम परायण प्यारा।
जनक लली को चरित मुख्य जेहि रावण सकुल सँहारा॥
अर्थ गँभीर पढ़त कोमल पद महा मधुर जेहि गाना।
राग ताल सातहु स्वर संयुत वीनालयहु मिलाना॥

हास वीर शृङ्गार भयानक करुणा रौद्र रसादी।
अरु वीभत्स पांच रस मुख्यहु दास्य आदि मरयादी॥
सकल कथित रामायण अन्तर जहँ जस कथा प्रसङ्गा।
जहाँ जौन रस वर्णन कीन्ह्यो रच्यो रूप रति रङ्गा॥
ऐसो अति अद्भुत रामायण कुश लव काहि पढ़ाये
रूप मनोहर लक्षण लक्षित महा मधुर स्वर छाये॥
मनहुँ राम प्रतिविम्ब दूसरे कुश लव गान प्रवीने।
सकल मुर्छना के अति ज्ञाता अनुपम वैस नवीने॥
मनहुँ युगल गन्धर्वन ढोटा जोटा यक अनुहारी।
धर्माख्यान पढाय महा ऋषि भयो अतीव सुखारी॥
दोहा–रचि रामायण मुनि तिलक, दियो कुशलवहि पढाय।
कण्ठ गान लागेकरन, लय स्वर मधुर मिलाय॥
भई समाज तहां महा, जुरे विप्र ऋषि आय।
पढ्यो यथा कुशलव तथा, रामायण दिय गाय॥

छन्द चौबोला।

राज चिह्न चिह्नित बड़भागी अनुरागी सुकुमारे।
वाल्मीकि के शिष्य महा मति रघुकुल तिलक कुमारे॥
मुनि मंडली मध्य जब दोऊ राज कुँवर किय गाना।
सुनन लगे निश्चल मन मुनि गण रामायण अख्याना॥
साधु साधु मुख वचन कहत सब बहत नैन जल धारा।
विसमित चकित सुखित हिय हुलसित प्रेमित वचन उचारा॥
यह रामायण गीत मनोहर रच्यो महर्षि अनूपा।
अति सुंदर अशोक शोक हर लोक सुखद रस रूपा॥
चारु चरित्र विचित्र कियो जस जेहि थल रघुकुल नाथा।
सो प्रत्यक्ष अस होत अक्ष पथ स्वच्छ सत्य यह गाथा॥

यहि विधि सुनत सराहत सज्जन दिन प्रति साधु समाजा।
कुश लव गावत मुनिमंडल महँ सुनि त्यागत सब काजा॥
गावत जो रस तदाकार सो देखि परै सब काहीं।
भाव व्यंग मृदु शब्द अर्थ बहु सुधा सरिस श्रुति माहीं॥
यहि विधि अति उत्साहित मुनि गण सुख अंबुधि अवगाही।
चूमि चारु मुख कुँवरन को तहँ बारहिं बार सराही॥
ह्वै प्रसन्न दीन्ह्यों वलकल कोउ दियो कमण्डल कोई।
कोउ मृगचर्म मेखला कलशहु कोउ आसन मुद मोई॥
कहन लगे सज्जन कुश लव सों अचरज कीन्ह्यो गाना।
सकल गान कोविद दोउ प्यारे तुम सम धन्य न आना॥

दोहा—जो कोउ रामायण सुनत, आयुष बाढ़ति तासु।
सकल संपदा लहत सो, होत न कौनहुँ हासु॥
सबके श्रवण मनोहरो, रघुपति चरित प्रबन्ध।
अतिहि अनूपम प्रगट भे, विविधि छन्द के बन्ध॥

सोरठा—सकल कविन आधार, भयो समापत क्रम यथा।
सकल सुकृत आगार, भावुक भक्तन देव तरु॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि मुनि समाज महँ कुश लव रामायण जब गायो।
लहि अनन्द मुनि वृन्द अनूपम अति अनुराग बढ़ायो॥
तहि विधि कुश लव श्रीरामायण गान करन नित लागे।
जहँ तहँ मुनि आश्रमन ग्राम पुर छावत सुख बड़ भागे॥
जहँ गावत रामायण कुश लव जन समाज तहँ दौड़ै।
बरसत आनँद प्रेम मगन सब सुनत गुनत मुद मोई॥
एक समै रामायण गावत ते दोउ राम कुमारा।
अवध नगर आये चित चाये रूप युगल जनु मारा॥

गलिन गलिन तेहि अवध नगर में गावत विचरन लागे ।
अवध नगर वासी सुखरासी श्रम नासी अनुरागे ॥
द्वार २ सत्कार करत जन वार वार मुद भीने ।
राम चरित सुनि प्रेम मगन ह्वै राम चरण चित दीने ॥
यहि विधि वीत गये वहु वासर गावत कुश लव काहीं ।
भयो नगर महँ शोर ओर चहुँ ठौर ठौर सब पाहीं ॥
अति सुंदर सुकुमार मनोहर मुनि वालक दोउ आये
गाइ गाइ रामायण पुर महँ आनँद धूम मचाये ॥
एक समै रघुनन्दन सुंदर सिन्धुर शुभग सवाँरे ।
भरत लषण रिपुदमन सहित प्रभु सब शृङ्गार शृँगारे ॥
पुर छवि लखन हेतु निकसे प्रभु कोशल नगर वजारा ।
रामायण गावत सुख छावत निरखे युगल कुमारा ॥
दोहा—कह्यो राम तहँ भरत सों, काके वालक दोइ ।
मोर चरित गावत मधुर, सुर संयुत रस मोइ ॥

छंद चौबोला ।

ये वालक दोउ राजभवन में भरत वेगि वोलवायो ।
इनको गान सुनत मन हुलसत दोउ कर रूप सोहायो ॥
अस कहि प्रभु पुर विचरि भवन कहँ गमन कियो युत भाई
भरत तुरत वोल्यो कुश लव को चारु चार पठवाई ॥
कोटि भानु भासित सिंहासन राम विराजत तामें ।
मनहुँ भानु मण्डल पर मंडित भेदुर मेघ ललामें ॥
भरत लषण रिपुदमन लसत ढिग और सचिव सरदारा ।
सुर नर मुनि गंधर्व सवै तहँ वैठे सभा मँझारा ॥
तेहि अवसर दोउ वालक कुश लव ल्यायो दूत लेवाई ।
खड़े भये दरवार वीच ते सबको चित्त चोराई ॥

कोटि मदन छबि कदन करत दोउ रामहिं की अनुहारी।
मनहु तरनि मंडल ते प्रगटे मंडल युगल तमारी॥
लखि आतम सम रूप अङ्ग छबि करि विसमय उर भारी।
रघुकुल मणि तहँ भरत लषण सों विहँसत वचन उचारी॥
अहैं कौन के बालक सुन्दर मम पुर कहँ ते आये।
कहां पढ्यो यह चरित हमारो को पुनि गान सिखाये॥
पूछो भरत कौन के बालक केहि हित अवध सिधारे।
कहां पढ्यो यह चरित मनोहर हैं कहँ सदन तिहारे॥
रघुकुल सभा मध्य कुश लव तब मंजुल बचन उचारे।
वाल्मीकि मुनि के सुत हैं हम तिन ढिग सदन हमारे॥

दोहा–यह प्रबंध मुनि सो पढ्यो, तिनको शासन पाइ।
अवध नगर आवत भये, विचरहिं चरितनि गाइ॥
राज दूत द्वै जाय कै, ल्याये हमहिं लेवाइ।
करिहैं हम सोई अवशि, देहि जो भूप रजाइ॥

छन्द चौबोला।

प्रभु कह विहँसि भरत सों हरपित भापहु ऋपि युग वाले।
रहे जो गावत गान करैं सो सभा मध्य यहि काले॥
सावधान ह्वै वीणा लैकर सुर माधुरी मिलाई।
करैं गान सुखदायक सबको भीति त्यागि हुलसाई॥
प्रगट अर्थ अति मंजुल वाणी ढरै अमी की धारा।
सुनत सभासद तन मन हिय जेहि होहि अनन्द अगारा॥
सुनत वचन रघुकुल मणि के तब भरत कही मृदुवानी।
गावहु चरित मधुर सुर बालक प्रभु सुख शासन मानी॥
तब कुश लव सब सभा सदन उर छावत परम प्रमोदू।
वीण मिलाइ अरम्भ गान किय माच्यो विपुल विनोदू॥

जस विचित्र पद जस चरित्र वर जस रति रस धुनि भाऊ।
तस मंजुल सुर वीन मधुर ध्वनि गाये सहित उराऊ॥
सुनत सभासद राज सिंह सब रघुवंशी अनियारे।
पुलकावली शरीर सजल द्दग श्रवण करत प्रभु प्यारे॥
कह्यो राम निज भाइन भृत्यन सुनहु सचिव सरदारा।
क्षोणिप लक्षण लक्षित स्वच्छ विलक्षण दक्ष कुमारा॥
बालक वाल्मीकि मुनि के दोउ मम कीरति कल गावैं।
त्यागि परस्पर वचन करव सब करै सुश्रवण सभामें॥
सहित सीय बंधुन कपि कुल युत उदय विभूति हमारी।
रघुकुल विभव अवध प्रभुताई निशिचर गण रण भारी॥

दोहा–राम वचन सुनि सुठि सुखद, सकल सभा हरषानि।
सुनन हेत निज प्रभु चरित, परम प्रीति उमगानि॥
सुनत राम शासन युगल, बालक सभा मँझार।
रामायण गावन लगे, कोकिल कंठ उदार॥
भरी गान की माधुरी, छुरी सभा चहुँ ओर।
परी परी तारी पगी, भयो राम रँग बोर॥
तजि उतङ्ग सिंहासना लीन भानु कुल भान।
निकट बैठि प्रभु श्रवण रुचि, तब कीन्ह्यो अनुमान॥
उठे सभा तो जाहुँ उठि, होइ महा रस भङ्ग।
याते सम सम उतरिहौं, बैठौं बालक सङ्ग॥
अस विचारि रघुनन्द गहे, उतरि सुमन्दहि मन्द।
बैठि कुमारन के निकट, सुनन लगे सुखकन्द॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

दोहा—आदि काव्य अघ गिरि कुलिश, रामायण सुख सार ।
वाल्मीकि कृत जग विदित, विंशति चारि हजार ॥
विदित राम यश कोटि शत, अति उत्तम विस्तार ।
यक यक अक्षर मुख कहत नाशत पाप पहार ॥
जब पुराण वैकुण्ठपति, प्रगटे अवध अगार ।
तबहिं चतुरविंशति सहस, लियो वेद अवतार ॥
रामायण विरचे अमित, सुर मुनि मति अनुसार ।
तिन में जान प्रधान यह, श्री वाल्मीकि उचार ॥
जस सुर मुनि विरचितनमें,मुनि कृत मुख्य प्रमान ।
तिमि नर कृत रामायणहिं, तुलसी रचित प्रधान ॥
भगवत अनुरागी पुरुष, विषय विमुख मतिवान ।
रामायण सरवस तिन्हैं, नाहिं अस दूसर जान ॥
वाल्मीकि कृत सुर गिरा तुलसीकृत नर बानि ।
राम चरित सरबस उभै लियो सत्य मैं जानि ॥
ताते तुलसी कृत कथा रचित महर्षि प्रबन्ध ।
विरचौं उभय मिलाइकै, राम स्वयंवर ग्रन्थ ॥
वाल्मीकि विरचित शुभग, रामायण सम वेद
तिमि गोस्वामी रचित वर, राम चरित नहिं भेद ॥
लै बहु ग्रंथन संमतहि. विरच्यो तुलसीदास ।
श्रीमद्रामायण विमल, जानहु स्वयं प्रकास ॥
कल्प कल्प के भेद में, कथा सत्य सब सोइ ।
यह पुराण शैली विमल और भांति नहिं होइ ॥
ताते कहौं विशेष कछु, रच्यो जो तुलसीदास ।
तीनि भांति रावण जनम, राम जन्म परकास ॥

छन्द चौबोला ।

जनम्यो जबहिं जटंधर । महाबली सुर सेना ।

तब भू भार हरण हित प्रगटे केशव कृपा निकेता ॥
दियो देवऋषि शाप रुद्र गण ते दोउ भूतल माहीं ।
रावण कुंभकरण प्रगटे जिन सरिस कोऊ बल नाहीं ॥
भानु प्रताप भयो कोउ भूपति धरम निरत दोउ भाई ।
विप्र शाप वश दशकंधर अरु कुंभकरण भेआई ॥
कल्प कल्प में सत्य कथा सब जौन गोसाईं गाई ।
कबहुँ प्रतापी रावण होतो यहू कथा विदिताई ॥
राम जन्म में हेतु अनेकन कहँ लो कहौं बखानी ।
पै पुराण श्रुति संमत सब विधि जौन कहे मुनि ज्ञानी ॥
सो यहि भांति विदित सब ग्रंथन भागवतादिक माहीं ।
वरणन करहुँ तौन यहि औसर है शंका कछु नाहीं ॥
हरि पार्षद जय विजय अनूपम सनकादिक को रोके ।
ते प्रचंड दिय शाप दुहुन कहँ ह्वै असर्पके ओके ॥
असुर भाव दोउ तीनि जन्म लगि जन्म जगत् महँ पैहौ
हरि कर लहि वध विगत शाप ह्वै पुनि विकुंठ कहँ ऐहौ ॥
प्रथम जनम ते हिरन कशिप अरु हिरण्याक्ष भे जाई ।
राक्षस रावण कुंभकरण पुनि तेई भये महि आई ॥
पुनि शिशुपाल दन्तवक्रहु भे तजे न आसुर भाऊ ।
महाबली त्रिभुवनके जेता डरैं जिन्हैं सुर राऊ ॥

दोहा—कनक कशिपु कनकाक्ष को, हन्यो नृसिंह वराह ।
कुम्भकरण रावण हन्यो, ह्वै प्रभु कोशल नाह ॥
दन्तवक्र शिशुपाल को हन्यो देवकीलाल ।
विगत शाप हरि पारपद, बसे विकुण्ठ विशाल ॥

छंद चौबोला ।

तुलसिदास को संमत सोऊ कीन्ह्यो ग्रंथ बखाना ।

तीनि जन्म लगि भये असुर दोउ सो द्विज वचन प्रमाना ।
जब जब होतो धरम गलानी तब हरि धरि अवतारा ।
प्रगटत पावन चरित चारु जग हरत भूमि कर भारा ॥
दुखी देखिदेवन देवन पाति दिय मखमें वरदाना ।
अवध प्रगट ह्वै दशरथ नंदन हरिहौं शोक महाना ॥
सोई सत्य वचन करिवेहित यज्ञ भाग के ब्याजा ।
गर्भ वास किय रमा निवास हुलासक देव समाजा ॥
भई समापत अश्वमेध जब गे सुर लै लै भागा ।
रानिन सहित राजमणि दशरथ अति प्रमुदित बड़ भागा ॥
भाइन भृत्यन सचिव सैन युत अवधपुरी कहँ आये ।
विप्र वृन्द अति पूजि विदा किय गे निज गृह सुख छाये ॥
निज निज सदन गये भूपति सब पाइ पाइ सत्कारा ।
वरणत दशरथ शील सुयश गुण पुनि पुनि वदन अपारा ॥
शांता सहित गये शृङ्गीऋषि वहु विधि पूजन पाई ।
गये रोमपादहु तिनके सँग धरि अवधेश मिताई ॥
यहि विधि सबकी विदा भूपमणि करिकै आनँद रासी ।
पुत्र जनम चिन्तत भे नित नित कौशल नगर निवासी ॥
नित नित प्रजा मगन आनँद रस निज निज देव मनावैं ।
चारु चारि भुज के प्रताप ते चारि कुवँर नृप पावैं ॥

दोहा—जबते नारायण कियो, नृप घर गर्भ निवास
तबते कोशल नगर महँ, नित नव होत हुलास ॥

कवित्त ।

कौशलनगरछाईपरमविभूतिताई आईमनो लैन अगवाईसोनयाईकी॥
विधिपठवाईघरघरअधिकाईकविवृन्दमुखगाईतिहुँलोकचारुताईकी ॥
रघुराजराजमणिहियकीहरपदाईभूपकीचलाईकहालोकपसिदाईकी ॥

पाईथिरताईचंचलाकोचंचलाईभाईसाजोसवैसाजुरघुराईकीअवाईको
विविधिकताकेजिन्हैंताकेसुरवृन्दछाकेवासवधनुषउपमाकेतुंगताकेहैं॥
दंडजाकेजड़ितसुमनिमुकुताकेभाकेपेखेजिन्हैंपापनपरापैपरेंडाकेहैं॥
रघुराजराकेचन्द्रमाकेसमताकेजाकेभासकलसाकेनाकेनाकेनाकनाकेहैं
अंबरउड़ाकेअंशुमानकेअरूझैंचाके फहरैंअनूपऐसेअवधपताकेहैं ॥
हारनमें नारनमें नदिनकिनारन में विपुल बजारनकतारन अपारहैं ॥
अखिल अखारनअगारनहजारनमें मनुजअपारनमेंआनँदउभारहैं ॥
रघुराज राजदरवारनदुवारन में शूरसरदारन में दारन मँझारहैं ॥
अवध प्रजानके उचारण मेंछायो यहि भूपकेकुमारकवेदेइकरतारहैं ॥
विप्रब्रह्मध्यावैंत्योंमनावैंमनकामैनिजवनिकविदेशजामैग्रामैजवगामैंहैं
गामैतवऐसोसुखभूपति कुवँर पामैअवधप्रजान कोप्रमोदधामधामैंहैं॥
धामैं धन हेत धूमधामैंकरि कामैंवस भापैरघुराज दिनरैन जामजामैंहैं।
जामैं ह्वै सनाथ हम कुवँर देखामैंईशसदनभरेकीकवसम्पति लुटामैंहैं॥
कोईपूछैज्योतिपिनकोईपूछैपंडितनकोईपूछैसन्तनकोसेवासानुरागते
कोई पूछैब्रह्मचारी कोईपूछैव्रतधारी कोईपूछैवृद्धनारीकोईयुक्तयागते
कोई चेटकीनपूछैकोईखेटकीनपूछैकोईनैमिकिनपूछैकोईपूछैकागते॥
कौनेदिनह्वैहैकृतकाजरघुराजराज पाइचारिकुवंरहमारेवड़ेभागते ॥

दोहा—बाढ्यो अवध प्रजान के, अंबुधि उमगि उछाह ।
धारा ब्रह्मानन्द की, ढरै कौन दिन माह ॥
पल पल पोटन में गनत, पल पल युग सम जात ।
राम जन्म आनँद अवधि, अधिक अधिक अधिकात ॥
जैसे तैसे बीतिगे, कलपत द्वादश मास ।
आई चतुरि वसन्त ऋतु, विमल भई दश आस ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

फूटि उठो काननमें कुसुम की राजी भली

झूमि रहे भूमि तरु फलको सँभारना ।
पादप पुहुमि नवपल्लवते पूरिआये
हरिआयेसियरायेभायेतेशुमारना ॥
रघुराज लोनी लोनी लता लहरान लागीं
अनुरागी भौंर भीर गुंजैं मंजु पारना ।
सरिता विमल जल सजल जलद जूह
पावस शरद त्यों वसन्त को विचारना ॥
तरल तरङ्ग मन्द मन्द भई अंबुधिकी
अंवर अमन्द चन्द चन्द्रिका पसारी है ।
शीतल समीर धीर कलित उसीर वास
लाग्यो वेगि वहन प्रसून धूरि धारी है ॥
चक्रवाक कोकिल मराल चारु चातकहुं
करै रघुराज मोर शोर मन हारी है ।
पटऋतुनिज निज वैभव विलास छाये
देखिकै अवध रामजनम तयारी है ॥
सस्यवती भई जगतीहूजागिजोमवारी
धनधान्यपूरितप्रजाकेगणह्वैगये ।
बिकसे विमलकमलाकर दिवाकरसों
प्रगटअमित रतनाकरभूरह्वैगये ॥
अतिशैप्रसन्न हव्यबाटहव्यलेनलागे
पाटपाटबाटबाटठाटठाटठाट ठगये ।
सदन सदनशुभ सोहिलोसुहावनीनै
गाइउठींभाइउठींछनछिनछिनगये ॥
सोरठा–दिनकर किरनि उदोत, कियो न अति शीतल गरम ।
निशि तारागन होत, नूत नूत में दून दुति ॥

मेष राशि गत भानु, नपत अश्वनी संग में ।
मास मनोहर जानु, चैत चारु चहुँकित सुखद ॥

कवित्त ।

गहगहेगगनमें बाजेबहुबाजिउठे लहलहे ललित विमानन गट्टहैं
महमहे लोक दश चारिहू सुगन्धनते उमहे महेश अजआदिसुरठट्टहैं
रघुराज विद्याधर चारण गंधर्व यक्ष किन्नरकुतूहल करनलागेपट्ट हैं
प्रेम रङ्ग लट्टपट्ट आवैंजायँझट्टपट्ट देववृन्ददेखेपरैं मानो नट्टवट्ट हैं।
चौदहभुवनमाच्योबारबारजैजैकारसिद्धसुरअस्तुतिअनूपमउचारेहैं।
एकओरजलदकेमाचेवहारेमंजु एकओरनाकन के नदतनगारेहैं॥
मंदमंदवारिवृन्दसज्जितसुगन्धआति विमलप्रसूनवृन्दहीसेव्योमढारेहैं॥
भनैरघुराजब्रह्मलोकतेअवधलगि गगनमेंगसिगेविमानके कतारेहैं॥
विमलवसंतऋतुतोममधुमासशुभस्वच्छसितपक्षनौमीतिथिशशिवारहैं
अभिजितविजयप्रदाताहैमुहूरतसोसूलयोगकौलैानामकरणउदारहैं॥
रघुराजवेलामध्यदिवसकीआईजबैअतिमनभाईसुखदाईनिर्विकारहैं॥
सगुनसोहावनअनेकतहँहोनलागे परैलागे खलन परावन अपार हैं॥
कुवँरजनमजानिअवसरआनँदको माच्योखैरभैरराजमंदिरमेंभारीहै॥
अतिअतुराईएकसखीचलिआईतहांबैठेरघुवंशीराजवंशीदरबारी है॥
भूपमणिकानमेंसुधासमानवाणीकहीसावनसलिलजनुमूखताकियारीहै
रघुराजमानोंप्राचीदिशितेउदोतभयोशोकसर्वरीकोनाशिआनँदतमारीहै
द्विजनबोलावोद्वारतोरनबँधावोइष्टदेवशिरनावोऔधआनँदतेछाइगो॥
तुरतवशिष्टजीकोभवनलेवाइल्यावोरंगनिचोरावोअन्नसुखनसमाइगो॥
अन्नकेआनिधरआंगनलगावोल्याइविशदवितानननतनावोशोकजाइगो
रघुराजआखिलसजाननखुलावोखूबआवोसुतजनमको अवसरआइगो
एकसुनिदूसेकह्योतीजेकह्योचारिहूसोंचारिकह्योचौदहसोंचौदशतचारिसो
फैलिगईवानरघुराजराजमंदिरमें पुत्रकोजनमशुभसमयो निहारिसो॥

धायेधरणीकेयाचकानके महानवृन्दभूमिभूतिभामिनीहूभौनकोविसारिसो
धनीधनहीनह्वैहैं दीननकोदानदैकैह्वैहैंधनीनिर्धनीदारिद्रशिरटारिसो ॥
हल्ला परयो अवध महल्ला ते महल्ला मध्य
गल्ला मच्यो बाहेरहू जनम कुमार को ।
तियन को तल्ला पिय तियन पियल्ला त्यागे
ढौसत प्रवल्ला मल्ला धाये राजद्वार को ॥
कल्ला करैं आगू जान देत लेतवल्ला के ते
अतिहि उतल्ला ना सँभार वृद्ध वारको ।
चल्ला चल्ला छायो रव ह्वै गयो वहल्ला हमैं
लल्ला देत ईश आजु अवध भुवार को ॥
सादर सखी के साथ वादर वदन ह्वै कै
भूपति पधारे महारानी के महल को ।
कौशला के अंगना में अंगना की भीर भारी
आवैं जायँ नारी सुकुमारी ते टहल को ॥
कौन काको पूछे नहिं छूछे हाथ काहुन के
वरणि सकै को कवि चहल पहल को ।
रघुराज आनँद को दहल अवध भयो
काढ़िगो कलेश कोटि कल्मष कहल को ॥
सोरठा-तव आयो सो काल जो दुर्लभ वहु कल्प महँ ।
प्रगटे दशरथ लाल कौशल्या की सेज पर ॥

कवित्त ।

सिद्धिन की सिद्धि दिगपालन की ऋद्धि वृद्धि वेधाकी समृद्धि सुर सदन धुरंपरी
ब्रह्मकीविभूतिकरतूतिविश्वकरमाकीलाहिवी सकलपुरहूतकीलुरंपरी
रघुराजचैतचारुनौमीसितशशिवार अवधअगारनवनिद्धिहूधुरंपरी ।
वैभवविकुंठब्रह्मानन्दकीअपारधारकौशलाकीकोपियकुमारह्वैकुरंपरी

शंभुऔस्वयंभुजाकीभ्रकुटिनिहारैंनितलोकपालजाकेपदकंजशिरधारैं
देवऋषिब्रह्मऋषिराजऋषिमहाऋषिमहिमाविचारैंपैनपावैंनेकुपारहै
वाणीकोविलासहैप्रकाशचारिवेदनकोविश्वसृष्टिपालनसँहारखेलवारो
सोईरघुराजभूमिभारकेउतारैहेतुलीन्ह्योअवतारअवधेशकेअगारहै
जपतजपतबहुभांतितेतपतकोटिजन्मनमेंआवैजेहिभासकोचमंकाहै
जेहिअवराधैसिद्धकरतसमाधैकेतीवाधैसहिविश्वकीउपाधैनाहिंशंकाहै
रघुराजसोईसुरनायकविकुण्ठधनीकौशिलाकीसेजदामिनीहीसोदमङ्काहै
धामधामबजतबधावनोअमरपुरधामधामपरिगोपरावनोत्योंलंकाहै ।

छंद मनोहरा ।

नव कंज सुनैना मंजुल वैना कृत जग चैना भुज चारी
मुनि मन हारी ।
पट पीत विलासा विद्युत भासा रमा निवासा सुखकारी
मूरति प्यारी ।
शिर मुकुट ललामा मणिगणधामा कचउपमा मा हियहारी
अलि दुतिकारी ।
मृदु गोल कपोला कुंडललोला अतिहिअमोला छविभारी
मकराकारी ।
युग अधर प्रवाला बाहु विशाला दीन दयाला दुख नासी
घट घट वासी ।
उर में वनमाला कंठ रसाला त्रिभुवन पाला नाहिं आसी
माया दासी ।
पग मणि मंजीरा संयुत हीरा हर जन पीरा अनयासी
सत रिपु नासी ।
रावण वध कामी त्रिभुवन स्वामी अन्तर यामी गङ्गासी
कीरति पासी ।

सोरठा—अद्भुत रूप निहारि, कौशिल्या कर जोरि कै ।
बोली वचन उचारि, जय सज्जनपतिअमरपांलि ॥
जय जय अधम अधार, पूरण ब्रह्म अपार गति ।
जय वैकुंठ विहार, विष्णु सच्चिदानन्द हरि ॥
उतपति थिति संहार, बार बार संसार कर ।
जय त्रिभुवन संचार, करुणा पारावार प्रभु ॥
जय जय दीनदयाल मधुसूदन सुरमाल मनि ।
जय सज्जन रिपु काल, जयतिपाल शशि भाल अज ॥
ध्यावत जेहि मुनि वृन्द, परहु ते पर पर पुरुष सोइ ।
तजि विकुंठ आनन्द, आजु अवधपुर अवतरयो ॥

दोहा—यहि विधि अस्तुति करि विमल, पुनि बोली शिर नाइ ।
नाथ अनूपम रूप यह, को बरणै मुख गाइ ॥
जो मोपर प्रभु करि कृपा, प्रगटे अवध अगार ।
बाल चरित सुख ज्यों लहौं, करहु तौन उपचार ॥
कौशिल्या के वचन सुनि, माधव मृदु मुसकाइ ।
कह्यो वचन सुनु मातु मैं, भयों तोर सुत आइ ॥
नीति रीति जस रावरी, सो करिहौं सब भांति ।
बाल विनोद प्रमोद तू, जेहि पैहैं दिन राति ॥
अस कहि श्रीवैकुण्ठ पति, कौशिल्या के अङ्क ।
बालक ह्वै रोवन लगे,सुरपालक निश्शङ्क ॥
भयो शोर चहुँ ओर तब, कौशिल्या के आज ।
श्रीरघुराज अनन्द दे, प्रगटे श्रीरघुराज ॥

बधाई ।

धनि धनि मधु वर मास हुलास विलास नयो ।
धनि धनि ऋतुपति सुकुलपक्ष विधु वार ठयो ॥

धनि सुपुनरवसु नखत मेष रवि राशि गयो ।
धनि नवमी तिथि मध्य दिवस मङ्गल समयो ॥
धनि दशरथ जेहि भवन राम अवतार लयो ।
धनि धनि कोशल नगर ब्रह्म सुख जहँ उनयो ।
धनि धनि रघुकुल जासु सुयश तिहुँ लोक छयो ॥
तीन घरी ब्रह्मांड धन्य आनंद मयो ।
धनि रघुराज समाज आज कृतकाज भयो ॥

माची धौसनकी धुधुकारी
कोशल नगर डगर डगरन चिचढरकतनहर न बहु रँगत
भूप भवन महँ भवन भवनते मणिन लुटावत सबनरना
राम जन्म आनंद मच्यो जग जन रघुराज जात बलिह

मच्योरी रंगमहल में रंग ।
केसरि कीच बीच नर नारी बिछलत उमँगि उमङ्ग ॥
एक ओर रघुवंशी राजे साजे अभरन अङ्ग ।
एक ओर युवतिन को मण्डल लीन्हे वीण मृदङ्ग ॥
नाचि रहे कोउ गाइ रहे कोउ करत खेल खुलि जङ्ग ।
सरयू भई भारती धारा पाइ गुलाल प्रसङ्ग ॥
रह्यो न सुरति सँभार सबन के ह्वैगे आनँद दङ्ग ।
श्रीरघुराज मनोरथ पूरण भयो सकल दुख भङ्ग ॥

कौशलपुर बाजे बधैया ।
रानिकौशिला ढोटा जायो रघुकुल कुमुद जोन्हैया ॥
फूले फिरत समात नाहिं सुख मग मग लोग लोगैया ।
सोहर शोर मनोहर नोहर माचि रह्यो चहुँ वैया ॥
छिरकत कुंकुम रंग उमंगित मृगमद अतर मिलैया ।
धार अपार बही सरिता सम सरयू पीत करैया ॥

श्रीरघुराज जगत् महँ जागो वरण दकार सदैया।
कोउ न रह्यो तीनों पुर में अस एक नकार कहैया॥
दोहा—चैत शुक्क नौमी नखत, पुनरवसू विधुवार।
कौशिल्या के भौन में, भयो राम अवतार॥
चैत शुक्क दशमी विमल नपत पुष्य कुजवार।
भयो केकयी के भवन भरत चन्द्र अवतार॥
चैत शुक्क एकादशी अश्लेषा बुधवार।
भयो लषण रिपुदमन को, जनम जगत सुख सार॥
अवैकह्यो संक्षेप सों, जनम चारिहू बंधु।
आगे विस्तर भाषिहौं, जिमि कुण्डली प्रबंधु॥

बधाई।

आली आज भूप के द्वारे नौमति बाजि रही है।
कुवँर जन्यो कौशिल्या रानी अवध प्रजा उमहीहै॥
हरद दधिदूबभरिथार सुरदारतेहिवारनृपवार बहुवारआवनलगीं।
प्रजापरिवार रघुवंश सरदार आनंद आगार रति रंग रंगन रँगीं॥
पुर द्वारहो द्वार दुंदुभीधुधुकार झांझे झनतकारआपारजालिमजगीं।
कोशलहि बाजारसंवर्पसंचार उतसाह पारावारतोपअगणित दगी॥

बधाई।

चारि कुंवर कोशल नरेश के आजु लियो अवतार।
नृप दशरत्थ उदार शिरोमणि दीनन देत हजार॥
मंदर सरिस मंदिरन मंदिर तुंगतरल निसान।
चय चारु चंदिर इव चहूंकित बजत नवल निसान॥
याचक अयाचक दान राचत माचि मोद महान।
सुर सुंदरी अँगुरीन गहि गहि नचहिं लैलै तान॥
दोहा—बिछे बिछौने जरकसी, लसी ललित दरबार।
पीत वसन भूपण वर बानिक, रघुवंशी सरदार॥

छंद त्रिभंगी ।

सुर चढ़े विमाना सुखन समाना वरषै नाना कुसुम गनै ।
गुनिकै निज त्राना जै भगवाना करहिं वखाना छनै छनै ॥
रक्षक नहिं आना दयानिधाना हम नहिं जाना तुमहिं विनै ।
अज इन्द्र इशाना अमर प्रधाना तन पुलकाना करहिं विनै ॥

पद ।

अन्तहपुर चौगान लौं, निकसत कसमस होइ ।
नर नारीधावत सुख छावत पूंछत कोहु नहिं कोइ ॥
कुंकुम के रँग कीच मच्यो महि उड़त गगन वरवादले ।
मिलत गुलाल लाल तेहि काल मनो सुठि सावन वादले ॥
देत रतन गण जो जेहि भावत धरे कितेकन फादिले ।
खेलत खुलि खुलि आमखास में रघुवंशी साहिजादिले ॥
चैत शुकल नौमी तिथै मध्यदिवस भे राम ।
वजत वधाई धाम धाम रघुराज भयो कृत काम ॥
आनँद मगन अवधपुर वासी प्रगटे आजु अवनि अविनासी ।
भूपति अवध वजार लुटावत गावहिं नारि पियारि रमासी ॥
दुरिगे देवन दीह दाह दिल छायो त्रिभुवन अमित उछाहू ।
भरि पूरण याचक धन पायो श्रीरघुराज आजु सव लाहू ॥
कौशल नगर डगर डगरन विच जगरमगर मचिरह्योआजरी ।
हरद दूब दधि थारन भरि भरिभामिनिगमनहिंसाजिसाजरी ॥
भूरि भीर भै भूप भवन महँ दुख दारिद को भो अकाजरी ।
नर सम सुर गहगहे वजावत मन उमहे तहँ विविधि नाजरी ॥
जो पावत सोउ देत देत सोउ कोउनलेत मढ़ि सुख दराजुरी ।
सुर सुंदरी महलप्रतिनाचहिं महल महल रघुकुल समान री ।
कौशिल्या केकयी सुमित्रा जन्यो चारि सुत सुछवि छाजरी ॥

को बरणै सुख पाय एक मुख श्री दशरथ रघुराजराज री ॥
दशरथ गृह नौमत बाजै सब देव भये कृत काजै ॥
अशरन शरन सुभरन भूरि सुख असुरन करन पराजै ।
दीनबंधु भे चारि बंधु सुत राजसिंह महराज ।
को बरणै सुख भयो जौन निज नाथ पाय रघुराजै ॥
चलिये अब भूपति भौन भटू जहँ चारि सुचारु कुमार भये ।
नृप याचक वृन्द अयाच कियो पुर के जन मोद अपार मये ॥
गणिकागण नाचिरहीं चहुँघा बहु बाजन द्वारहिं द्वार ठये ।
वर गायक गाय रहे सुर सों धरनीसुर वेद उचार कये ॥
पुर घाटन बाटन हाटन हाटन बांधि सुबंदनवार दये ।
नहिं आनँद औध समात सखी सुर सन्त कलेश बिकार गये।
रघुवंशिन राज समाज सजी रघुराज तिन्हैं बलिहार लये ॥

बधाई देन चलु बारी ।

कौशल्या केकयी सुमित्रा जनम्यो सुत चारी
अस अवसर अब बहुरि न पैहै धनि निज भाग बिचारी ।
श्रीरघुराज निरखि लालन को पुनि पुनि लै बलिहारी ॥

दोहा—ल्याई सखी लेवाय तहँ, आये भवन भुवाल ।
नांदीमुख क्रम सों कियो, हरषि सराध उताल ॥

छंद चौबोला ।

भवन भवन में परम मनोहर सोहर गावन लागीं ।
आनँद उमग उराव अटक नहिं इन्दुमुखी अनुरागीं ॥
भई भीर भूपति के द्वारे रज पषाण ह्वै जाहीं ।
देश देश के वेश नरेश सुद्वार देश दरशाहीं ॥
कोउ तुरङ्ग चढ़ि कोउ मतंगचढि कोउस्यंदन चढ़ि आये ।
अति उछाहनरनाह भरे सब सम्पति विपुल लुटाये ॥

जिनके धन नहिं ते पट आयुध देत लुटाइ उछाहो ।
जे लूटत तेउ तुरत लुटावत कोउ न भये धनग्राही ॥
कञ्चन मई भई वसुधा तहँ कोउ धन सञ्चन करहीं ।
राम जन्म ते लाभ लोक में कोउ न लाभ उर धरहीं ॥
देहु देहु अरु लेहु लेहु यह छाय रह्यो रव भारी ।
कसमस परत कढ़त कौशलपुर को सुख सकै उचारी ॥
कोउ मतङ्ग कोउ देत तुरंगन कोउ भूषण पट कोई ।
कछु न अदेय रह्यो तेहि अवसर ग्राम धाम धन जोई ॥
द्वारे द्वारे बजत नगारे वन कारे वहरारे ।
विपुल किता के विविध पताके चपला के छविहारे ॥
तोरन मनहुं इंद्रधनु सोहत मोरकूक सहनाई ।
वर्षत आनँद आँसु अंबु सोइ अवध प्रजा समुदाई ॥
देश देश के याचक आये ते वहु जीव सोहाहीं ।
सुरभित सलिल धार सरयू मिलि सरिता सिन्धु समाहीं ॥

दोहा–किशलय अंकुर दूब नव, भरि थारन पुरनारि ।
लसंहिं चँदैनी चारु सम, हरित तृणन मनहारि ॥
द्वारदेश अवधेश के, लखि सुत जन्मउराय ।
वरषा ऋतु आई मनहुँ, देन वधाई धाय ॥

छंद चौबोला ।

विविधि रंग अंबर कम्मर कसि विविध रंग शिर पागे ।
विविध रंग तेइ कुसुम विराजत अँगराग सुख रागे ॥
विविध सुगंधित अनिल वहत तहँ जन समूह वस मन्दा ।
है सरयू शीतल अति आवत परसत परम अनन्दा ॥
बहु मुरचङ्ग मृदंग सरंग उपंग सुसलिल तरंगा ।
बाजत रंगभूमि रस रंगनि तेइ मनु वदत विहंगा ॥

नर्तक नचत मयूर मनहुं बहु भवन कुंज छवि छाये ।
सोहर मंजु पुंज सुख को अति भौरन गुंज सोहाये ॥
दान अखंड अमल अंबर सम कीरति कर दिशि छाजे ।
उड मंडल द्विज मंडल सोहत तिमि वशिष्ट द्विजराजे ॥
राज राज रघुराज तनय सुख उदै देखि कृत काजा ।
मानहुं सकल समाज जोरि कै मिलन चल्यो ऋतुराजा ॥
निर्मल अवध जलाकर सोहत विकसत हिय जलजाता ।
फटिक अटा ते शरद घटा मनु कोक वृन्द बुध ख्याता ॥
पूरित सस्य प्रमोद मही सब शशि भूपति शशि शाला ।
लघु बड़ सोहत रतन कलश बहु तेइ तारन की माला ॥
देव विमानावली विराजति गगन पंथ मल हीना ।
सारस सुखित मराल कराकुल जनु सोहत पख पीना ॥
रघुवंशी सरदार रतन की खोसे शीश कलंगी ।
मनहुँ सालि की बालि विविध अति सोरि रहीं बहुरंगी ॥

दोहा:-अवध भुवार अगार में लखि कुमार अवतार ।
मनहुँ शरद ह्वै शारदा खरी करति बलिहार ॥

छन्द चौबोला ।

देश देश के विप्र महाजन भूपति धनी भिखारी ।
कवि नट भाट सूत मागध बहु बंदी परम सुखारी ॥
गायक वादक नरतक हीन प्रवीन दीन बल पीना ।
कौतुककार अपार कलाकर जे प्राचीन नवीना ॥
बाल वृद्ध नारी नर अगणित चारों बरन अपारा ।
आये सकल हुलास प्रकाशित दशरथ भूप दुआरा ॥
ग्राम ग्राम महँ धाम धाम महँ नर नट सैन उजारा ।
व्रज पुर पत्तन नगर नाकलों नदत नवल नगारा ॥
देहु देहु जस छाइ रह्यो रघुनंदन जय जय कारा ।
रामजनम उत्साह प्रवाह गयो बढ़ि भुवन नकारा ॥

सुर पुर नर पुर नाग लोक लों बाजै विविध बधाई।
जे जहँ ते तहँ धनहिं लुटावत आनँद उर न समाई॥
गावहिं मङ्गल गीत प्रीति भरि भुवन चारि दश माहीं।
भरे भूरि ब्रह्मांड छोरलों सोहर शोर सोहाहीं॥
अगणित विमल विमान वियत पथ झरहिं कुसुम समुदाई
पुरी पुहुप पर्वत सम सोहति पुहुमी परिमल छाई॥
रामजनम आनंद उदित रवि कंज प्रजा विकसाई।
दुर्जन मूक उलूक लुकाने दुख निशि गई सिराई
सुर मुनि कियो अरंभ कर्म सब शङ्का नींद विहाई।
त्यों याचक नर नारि कोक सम मिलें वियोग विहाई॥
सोरठा–को कहि सकै उछाह राम जन्म में जस भयो।
लहै कौन विधि थाह, मनुज महोदधि में प्रविशि॥

छंद चौबोला।

सकल राजवंशी रघुवंशी राज कुँवर सब आये।
हय गय भूषण वसन रतन रति संपति विपुल लुटाये॥
महल महल में महा मनोहर लागि गयो दरबारा।
नहिं आनन्द अमात अवधपुर बह्यो सरयु मिसि धारा।
सजि सजि भूषण वसन विविध विधि लिये कनक कर थार
दधि दुर्वा दल सुफल हरिद्रा चलीं लगाय कतारा॥
गावत मङ्गल गीत भामिनी गज गामिनी सिधारी।
दमकि रही दामिनी सरिस दुति दिन यामिनी सुखारी॥
वृन्द वृन्द नारिन के प्रविशत निकसत कसमस परई।
नहि उछाह वश पीर गनत कोउ नहिं तहँ ते कोउ टरई॥
भई भीर भूपति के मन्दिर रह्यो न देह सँभारा।
फटत छोर जरकस जामन के टूटत हीरन हारा॥

कोउ नहिं करत सम्हार हर्ष वश को पूछै पुनि केही।
जो पावत कछु सोऊ लुटावत सिगरे राम सनेही॥
कोउ नाचत कोउ गावत भावत बाज बजावत केते।
कोउ कूदत मूदत नहिं पाये कोउ करतालहि देते॥
अवध प्रजा अंगन परसन सुर अवनिप अङ्गन माहीं।
ह्वै लघु बालक सहित अंगनानि अनुपम नाच कराहीं॥
कसि फेटे कटि प्रेम लपेटे यक यक भेंटत जाहीं।
दुख मेटे रावण लघु सेटे दुलहेटे बतराहीं॥
दोहा–भये जे बालक विबुध गण ते मिलि बालक वृन्द।
वचन व्याज अस्तुति करत प्रगटे देखि मुकुन्द॥
भजन–भूप के अनंद भयो जै रमैया लाल की।
याचक अनेक पाये हाथी घोडा पालकी॥
देवन सनाथ कियो जै जै रघुलाल की।
जागी जोर भाग आज कोशला भुवाल की॥
जैति जै विकुण्ठ धनी जैति जै कृपाल की।
जैति कौशलेश पुत्र कौशिला के लाल की॥
जैति सर्व काल लोक पाल मालपाल की।
जैति हाल काल व्याल मोचन दयाल की
जैति चारि भाल चन्द्रभाल शोक काल की।
नाशन अकाल जैति करन सुकाल की॥
जैति विश्व को भुवाल देव आलवाल की।
जैजै दुति जीत मेघ माल त्यों तमाल की॥
जैति दीन दाहिनो सुबाहु जे विशाल की।
जैति सिंधुजा सु प्रान वल्लभ रसाल की॥
जैति पाद कंज मंजु दीनन निहाल की।

जैति चक्र चण्ड खण्ड नक्र वक्र गाल की ॥
जैति भूमि भार हार वानि दीन पालकी ।
जैति जै महेश चित्त मानस मरालकी ॥
जैति रघुराज पै करैया कृपा जाल की ।
जैजै रघुवंश हंस कोशलेश लालकी ॥
दोहा—जे सुर वालक ह्वै कहत, तिन्हैं अवध के वाल ।
यह सुनि कहत कहा वकतु, जगत केर जंजाल ॥

छंद चौबोला ।

इतनेहीं अवसर महँ मंदिर भीर भई जन भारी ।
सकल राज वंशी रघुवंशी और अवध नर नारी ॥
भई विभिन्न समाज उभै तहँ यक नारिन यक नर की ।
खुलि खुलि खेलन लगे रंग सब रंग भूमि मनिवर की ॥
कनक कुम्भ सहसन केसरि के पीतहि रंग भरे हैं ।
सहसन राजत कुम्भ भरे दधि राजत फरस धरे हैं ॥
भरे अतर के अमल विराजत राजत कनक पराता ।
चारु चंद्र चंडांसु अकारहि थार विविध अवदाता ॥
तिनमें धर्‌यो गुलाल विविध रँग विविध वादले पूरे ।
दधि कर्दम खेलत रघुवंशी नर नारी नव नूरे ॥
वांधि वांधि वाला निज वृन्दन राज कुँवर धरि लेहीं ।
मलि मुख लाल गुलाल ताल दै बोरहिं रङ्ग सनेही ॥
तैसहि राज समाज जोरि जन धावैं हरष उमाहे ।
गहि गहि सकल सुंदरिन को तहँ गेरहिं कुण्ड उमाहे ॥
मच्यो कीच केसरि को वेसरि विछलत तेहि नर नारी ।
तेहि ऊपर अरगजा वादले परि सुखात रँगवारी ॥
भयो धुन्ध ऊपर गुलाल को नभ मंडल लौं परसै ।

मूँदत भानु विमान वितानन दशहु दिशानन दरसै॥
बहुरि कनक पिचकारिन ते जब उड़त सुरंग फुहारे।
तब मिटि जात गुलाल धुंध नभ प्रगटत रंग पनारे॥
दोहा—केसरि रँग धारा मिलति, सरयू धारहिं जाइ।
राम जन्म मनु पीत पट, पहिरि लियो हरषाइ॥

छंद चौबोला।

कबहूं बहति सेत दधि धारा सरयू में मिलि जाई।
नृपहि बधाई देन हेतु मनु सुर सरिता चलि आई॥
कबहुं उसीर अंतर को धारा हरित वरण छबि छाई।
मनहुं कलिन्दी परम अनंदी पति देखन हित धाई॥
अधिक कहूँ रोरी की वोरी अरुण धार प्रगटानी।
सोहत मनहुँ भारती धारा सुख लूटन ललचानी॥
कबहूँ हरित सुरंग पीत रँग उमड़हिं तीनिहुँ धारा।
राम जन्म मनु मानि त्रिवेणी लिय सरयू अवतारा॥
धारे अरुण वसन सुखमाते रंगित अरुण शरीरा।
मनहुं जोति घायल रण घूमत रघुवंशी रणधीरा॥
खेलत टूटि गये मुकुता सृग मुकुत वृन्द छहराने।
मनु अपार सुख लेन तार गण द्वार द्वार दरशाने॥
पुरुप नारि खेलत उमंग भरि त्यागि शरीर सम्हारा।
मिलत मोद भरि हटत हारि नाहिं धसत गसत बहु वारा॥
नारि पुरुप कहँ नारि बनावहिं दै दै चहुँकित तारी।
पुरुप लजाय पराय जात कहुँ सुनि सुनि मंजुल गारी॥
खेलत कोउन अघात मोद रस प्रविशत धाइ देखैया।
दशरथ भूप भाग भाषत सुख दै दैविविधि बधैया॥
रथ तुरङ्ग मातङ्ग चढ़े कोउ यक एकन ललकारें।

मिश्रित रोरी रतन मूठि तहँ बारहिं बार पवारैं ॥

दोहा–वारन वाजी आदि सब, वाहन भये सुरङ्ग ।
रह्यो न अस कोउ अवध पुर, जो खेल्यो नहिं रङ्ग ॥
फटिक फरश पर बादलो, छायो केसरि कीच ।
जलद पटल रविकर निकर, मनु गिरि अस्त नगीच ॥

छंद चौबोला ।

खेलत खेलत रघुवंशिन को भयो विलंब महाना ।
आनँद रस वश अति उछाह दिन काल जात नहिं जाना ॥
खेलत खुशी भये रघुवंशिन कोशलपति सुख छाये ।
दे नवीन भूषण पट सुंदर जस तस कै बरकाये ॥
बोलि वशिष्ट आदि गुरु वृद्धन कुँवरन भवन सिधारे ।
नांदीमुख शराध आदिक नव जात कर्म निरधारे ॥
जो राजर्षि यज्ञ भागन ते अवलौं नाहिं अघायो ।
ताहि कनक मुद्रा महँ मधु धरि दशरथ भूप चटायो ॥
हिरण्याक्ष अरु हिरनकशिप भट आदिक जो संहारयो ।
ताहि प्रेतबाधा वारन हित राई लोन उतारयो ॥
जासु चरण प्रगटित्त सुरसरिता कीन्ह्यो विश्व पुनीता ।
तेहि शुचि करन हेत कौशिल्या नहवावै अति प्रीता ॥
जो बलि छल्यो बाढ़ि बामन वपु द्वै पद किय संसारै ।
धन्य भाग तेहि रानि कौशिला छोट रूप महँ पारै ॥
जासु नाम मुख लेत रोग भव छूटत बिनहिं प्रयासा ।
ताहि देत घुँटो नृप भामिनि देखहु अजब तमासा ॥
जो सच्चिदानन्द विग्रह प्रभु पीतांबर छवि छावैं ।
तेहि दशरथ रानी हुलसानी नीलो वसन वढ़ावैं ॥
जासु वचन वेद वाणी विधि विबुध बँधे सुख सोवैं ।

दशरथ भौन कोन सूपा तेइ कहाँ कहाँ प्रभु रोवैं ॥

दोहा–जासु नैन की सैन ते, विश्व पलत नशि जाय ।
ते नयननि में कौशिला, काजर दियो लगाय ॥
जात कर्म जस कौशिला, कीन्ह्यो निज सुत केर ।
तेहि विधि तीनों कुंवर कर, करी मातु सुख ढेर ॥

छंद चौबोला ।

घर घर मङ्गल विविध वधावा माच्यो परम उरावा ।
ह्वै गो आजु सनाथ अवधपुर सकल जगत सुख छावा ॥
जिमि सुन्दर मंदिर महीप के छायो परम उछाहू ।
तेहि विधि अवध नगर घर घर नर नारि उछाह अथाहू ॥
कंचन केतु कलित कदली के खम्भ अनेकन द्वारे ।
धरे पुरट घट भरे सलिल शुचि चमचमात दुतिवारे ॥
घर घर तोरण ध्वजा पताके विविध किता के सोहैं ।
सींची गली सुगन्ध सलिल भल थल थल मानस मोहैं ॥
घर घर नाचत घर घर गावत घर घर बाज बजावैं ।
घर घर हुलसत घर घर विलसत घर घर रतन लुटावैं ॥
घर घर रचित चितेर चतुर कर चित्रावलि अति चारू ।
घर घर धूम धाम माच्यो पुर विमल विनोद विहारू ॥
आवत आसु अवध वासी सब कोशलनाथ जोहारें ।
धन लुटाइ धन पाइ राज ते सादर सदन सिधारें ॥
यहि विधि मच्यो अवधपुर आनँद को बरनै मुख एकू ।
अति संघर्ष हर्ष वर्षत नहिं सुर नर रह्यो विवेकू ॥
अवध अनन्द निहारि गगन पथ रुके भानु गति भूली ।
रुक्यो चक्र शिशुमार चार तेहि राम जन्म सुख फूली ॥
अवध जौन दिन जन्म लियो हरि सो दिन भो षट् मासा ।

हरि गुण गावत चले दिवाकर त्यागि खलन की त्रासा॥

दोहा--बहुत काल में सुरति करि, जब डोल्यो शिशुमार।
तब संध्या भै भानु किय, अस्ताचल संचार॥

छंद नराच।

प्रदीप पांति भावती प्रदीप पांति भावती।
सुमङ्गलानि गावती सुमङ्गलानि गावती॥
सुदाम दाम पावती सुदाम दाम पावती॥
फुलेहरानि ल्यावती फुलेहरानि ल्यावती॥

कवित्त।

पेपिकैप्रदोसकालभौनमाहिपालजूकेचामीकरथारनमेंपरमप्रभादली।
धै धै हेमदीपकप्रदीपातिसुपंथछाइ पहिरेसुरंगपटधारे भूपनावली॥
मङ्गलामुखीनसंगगावैमङ्गलानिगीतमङ्गलानिद्रव्यलीन्ह्योचारुकुसुमावली
रघुराजआईराजमन्दिरअवधनारीतारावलीआगेकरिमानोचपलावली
भूपतिभवनमेंविराजोदीपराजीखासीप्रगटभईहैपुनिअवधतमाममें॥
घाटघाटबाटबाटहाटहाटदीपठाटजागीरोशनाईजगतीकेग्रागग्राममें॥
प्रगट्यो प्रकाशस्वर्गलोकब्रह्मलोकहूंलौंकोन्हेतेहिजामधामदेवधामधाननं
भैनरघुराजरघुराजकेजनमदिनजोतिभैउदोतिसोविकुण्ठअभिराममें॥

सवैया।

दीपति दीपावली दशहूं दिशि दीह देवारन द्वारन द्वारन।
तैसे हजारन ऊँचे अगारन बाग बजारन त्यों नहीं बगारन॥
त्यों सरयू के किनारन धारन सोहि रहे मणि दीप कतारन॥
श्रीरघुराज मशाल अपारन वाजिन वाजिन बारन बारन।

घनाक्षरी।

गोशनी के पुंज रोशनीके बने ऋपि बहु
रोशनी के गुच्छ रोशनी के रस अच्छे हैं।

रोशनी के बाजी ताजी रोशनी की गजराजी
रोशनी के राजिव तड़ाग गन स्वच्छे हैं ॥
चंद चाँदनी सो कहूं विमल प्रकाश पूरो
कहूं भान भासही सो फूल जात लच्छे हैं।
भनै रघुराज कहूं श्याम रंग पीत रंग
हरित सुरङ्ग रङ्ग भूमि रङ्ग लच्छे हैं ॥
दोहा–कारीगर केते तहां, कारीगरी देखाय
करी रोशनी विविध विधि, द्वारन द्वार बनाय ॥

सवैया।

सम्पति केती लुटावत पावत गावत बाज बजावत प्रीते।
बात बतावत मोद बढ़ावत त्यों हँसिकै हुलसावतही ते ॥
रङ्ग उड़ावत साजु सजावत खात खवावत प्यावत जीते।
यद्यपि याम भये पट मास पै आवत जावतही जनु बीते ॥
दोहा–बिते याम युग द्योस के, बिते चारि निशि याम।
भये याम पट मास पट, राम जनम अभिराम ॥

छन्द चौबोला।

मोदमई यहि भांति चैत की नौमी निशा सिरानी।
भयो भोर चहुँ ओर शोर मग करन लगे सुखदानी ॥
उठि भूपति करि प्रात कृत्य सब लियो वशिष्ट बोलाई।
दीन्ह्यो द्विजन दान संपति बहु बार बार शिर नाई ॥
महा महर्षि वशिष्ठ आदि नृप लै अन्तहपुर गयऊ।
कुल व्यवहार चार संसारी सकल निवाहत भयऊ ॥
पुनि भुवाल मणि जाय सभा महँ बैठे परम उदारा।
बोलि बोलि सिगरे रघुवंशिन कीन्ह्यो अति सतकारा ॥
नट भाटन बन्दी वर सूतन पंडित कविन सुजाना।

दश स्यन्दन स्यन्दन गज वृन्दन दै दै अति सनमाना॥
कोउ नहिं बाकी रह्यो भुवन अस जेहि दशरथ नहिं दीन्ह्यो।
ऐसहु रह्यो न कोउ कोशलपुर जो सम्पति धरि लीन्ह्यो॥
ऋतु अनऋतु गति तजे मही रुह फूले फले अपारा।
जहँ जस सलिल प्रयोजन तहँ तस घन बरसै जल धारा॥
बीति गये यहि भांति दिवस दश मङ्गल मोद उराये।
एकादशयें दिवस भूपमणि मुदित वसिष्ठ बोलाये॥
सिंहासन बैठाय पूजि पद बार बार शिर नाई।
अति विनीत ह्वै विनै कियो नृप आनँद अंबु बहाई॥
देव मनोरथ सकल हमारे पूरे दया तिहारे।
यदपि रहे दुर्लभ परमेश्वर करुणा नैन निहारे॥

दोहा—नाथ धरी सुख शोधि कै द्विजन सहित विन देर।
नामकरण अब कीजिये, चारि कुमारन केर
सुनि वसिष्ठ प्रमुदित भये, एवमस्तु कहि वैन।
उठि मंदिर आवत भये बोलि मुनिन भरि चैन॥
नामकरण को दिवस शुभ करि मुनि संग विचार।
नृपहि बोलाय सुनाय दिय, आनँद बढ्यो अपार॥

छन्द चौबोला।

माधव कृष्ण पंचमी शुभ तिथि नाम करन अब होई।
यह सुनि अवध प्रजा उछाह वश लहे नींद नहिं कोई॥
नई साजु साजन सब लागे बांधे पीत निसाना।
तोरण कदलिखंभ द्वारन प्रति ताने विशद विताना॥
भूप चौक महँ चंद चांदनी सरिस चांदनी सोही।
तोरण विमल मदनमुख मोरन जेहि लखि मुनि मति मोही॥
कदली खम्भ कनक के राजहिं रतन पुहुप छविछाये।

रतन दिवार अपार दिवारन चित्र अगार बनाये ॥
मीन विहङ्ग कुरङ्ग रतन के रङ्ग रंग के सोहैं ।
धवल धाम पर नवल निसान पवन पथ मानहुँ पोहैं ॥
खैर भैर मचि रह्यो नगर महँ नामकरण उतसाहू ।
कियो जनाव जाइ रनवासहि यहदशरथ नरनाहू ॥
नामकरण सुनि सकल कुमारन अति हुलास रनिवासा ।
लगीं सजावन चारु चौक सब परम उतङ्ग अवासा ॥
विविध कनक के खम्भ वितानन मुक्त झालरैं झूमे ।
चौक चारु महँ रतन चौक रचि किय विचित्रता भूमे ॥
तहँ वशिष्ठ कौशिल्या के घर शासन जाइ सुनायो ।
चारो भाइन नामकरण हितब रहौं साजु सजायो ॥
सूरज चन्द्र कनक बनवाये औरहु वेद विधाना ।
नाम लिखन हित पान कनक के अति सुंदर निरमाना ॥
दोहा–औरो सामग्री सकल, विरची वेद विधान ।
मुनि उर लागी लालसा, कैसे होय विहान ॥

छन्द चौबोला ।

जैसे तैसे बीतिगई निशि प्रगट्यो विमल प्रभाता ।
उठि अवनीपति नित्य कृत्य करि बोल्यो गुरुहि विख्याता ॥
लै मुनि मंडल गुरु वशिष्ठ तहँ भूपति सदन सिधारे ।
यह सुनि द्वार द्वार कोशलपुर बाजन लगे नगारे ॥
नौमत झरन लगी नृप मन्दिर तुरत गुनी जन आये ।
बाज बजाय गाय सुर छावत नाचन लगे सुहाये ॥
सकल राजवंशी रघुवंशी बैठे आनि दरबारा ।
अति संघर्ष भयो नृप मंदिर उमग्यो मोद अपारा ॥
और राजमंत्री सेवक सब राजभवन महँ आये ।

लहि सतकार बैठ दरबारहि संपति विपुल लुटाये॥
लहत अनेक इनाम गुणी जन यदपि न कछु जिय आशा।
तहँ अनेक कौतुकी कला करि लागे करन तमाशा॥
छूटन लागी तोप तड़ातड़ शोर दिगन्तन छायो।
चढ़े विमान सुमन वरषैं सुर जय रव जगत सुहायो॥
अवसर जानि मुदित जगतीपति पहिरि पीत पट भाये।
करि आगे द्विज वृन्द वशिष्ठहि अन्तहपुर कहँ आये॥
पढहिं विप्र सुस्तैन चैन भरि मंगल साजु सवँरे।
कौशिल्या केकई सुमित्रा भूपति सँग बैठारे॥
बैठे भूपति कनकासन में करन लगे कुल रीती।
गौरि गणेश पूजि पृथिवीपति करी श्राद्ध जस नीती॥
दोहा–महा मनोहर सोहरो, गावन लागीं नारि।
त्रिशत पट्टि रानी तहां बैठीं मणि गण वारि॥

छंद चौबोला।

चारि कुमारन धरि सूपन महँ धाई हरषित ल्याई।
लीलक वसन वोढ़ाइ गौरि ढिग धरत भई सुख छाई॥
प्रथम रंगनाथै नृप पूज्यो करि षोडश उपचारा।
यथा योग्य कुलदेवन पूज्यो यथा योग्य सतकारा॥
सब देवन पूज्यो पृथिवीपति सन्त विप्र वर गाई।
दीन्ह्यो आशिर्वाद सकल मुनि धनि धनि कौशल साई॥
होवैं चिरायुष पुत्र तिहारे जीवहु नृप युग चारी।
दृढ़ धर्म पथ रहैं सर्वदा सुख साहिबो तिहारी॥
पुनि वशिष्ट पद परसि भूपमणि विनैकरी करजोरी।
नाथ नाम कीजै पुत्रन को यही विनै अब मोरी॥
सुनि वशिष्ट पुलकित तन नैननि ढारत आनँद धारा।

कियो विचार मनहिं मन ऐसो धनि धनि भाग हमारा ॥
उपरोहिती कर्म अति निंदित यदपि होत जग माहीं ।
तदपि आज मोहिं भयो सकल फल मो सम दूसर नाहीं ॥
जग कारन कारन तारन जग अज महेश सुर साईं ।
तासु करौं मैं नामकरण अब नृप बालक को नाईं ॥
अस विचारि शिर नाइ मनहिं मन बैठे निकट मुनीशा ।
बोलि भूप कहँ सूप निकट तब सुमिरि सत्य जगदीशा ॥
इनके अहैं अनेक जगतमें नाम कर्म अनुसारा ।
सकल नाम इनहीं के जानहुं कहि न सकैं करतारा ॥

दोहा–गुण अनेक अभिराम अति, विदित तीनिहू धाम ।
आम जगत विश्राम अति, अहैं नाम श्रीराम ॥
पुनि केकई कुमार को लीन्ह्यो अङ्क उठाइ ।
मुनि वशिष्ठ बोले वचन कोशल पतिहि सुनाइ ॥
भरतखंड वासिन सकल भरिहै सब मनकाम ।
ताते यह कहवाइहैं जगत भरत अस नाम ॥
लक्षित सकल सुलक्षणनि महा वीर जग आम ।
तीजो सुत नृप रावरो लहै सुलक्ष्मण नाम ॥
वैरि वृन्द बाधक विदित विश्व विजय वपु बाम ।
चौथो सुत नृप रावरो लहै शत्रुहन नाम ॥
असकहि मुनिवर कनक के चारि पान कर लीन ।
चारि कुमारन के तुरत चारि नाम लिखि दीन ॥

घनाक्षरी ।

पालन करन विश्व मङ्गल करन विश्व
अन्तहू करन जाको नित्य आचरन भो ।
दीन दुख दरन हरन महि भारहेत

सन्तन भरन हित जासु औतरन भो ॥
अधमोद्धारन दीह दुख को दरन जौन
पोषन करन अशरन को शरन भो ।
भनै रघुराज सब नाम को करन जाते
ताको आजु औधपुर नाम को करन भो ॥

सोरठा–करुणासिंधु मुरारि, करुणाई को कहि सकै ।
जाको वेद पुकारि, नेति नेति भाषत रहैं ॥
जाते सब अवतार, सो अवतार लियो अवध ।
को कहि पावै पार, जासु कृपा महिमा अमित ॥

दोहा–मुनि वशिष्ठ बोले वचन, सुनहु अवध भरतार ।
जन्मकुंडली सुतन की, सुनिये सहित विचार ॥

छंद चौबोला ।

संवत सर्वजीत त्रेता युग ऋतु वसन्त मधु मासा ।
नखत पुनर्वसु शुक्ल पक्ष वर शशि वासर सहुलासा ॥
शूल योग तिमि करन कौल शुभ नौमीतिथि सुखदाई ।
मध्य दिवस अरु कर्क लगन में जन्म लियो रघुराई ॥
परे प्रथमही गुरु शशि सुंदर गुणगाहक सुत होई ।
चौथे शनि को सुनहु नृपति फल सकल भांति मुद मोई ॥
पित्त वात की प्रकृति कछुक तन कछु आलस सुकुमारी ।
बहुत थूल नहिं होय शरीरहु कबहुँ विपिन संचारी ॥
धर्म हेतु सुख शील साहिबी गुरु पितु मातु रजाई ।
तजि कछु दिन पर हेत बसहिंगे विपिन दूरि कहुं जाई ॥
छठयें केतु अतिथि सुर भूसुर कवि दीनन सतकारी ।
अति दयाल तन दुति तमाल वर बहु तीरथ पग धारी ।
सतयें मंगल तिय विरही है प्रबल शत्रु सों लरिहैं ।

करिहैं कपि मित्रता महानी सुयश सकल जग भरिहैं ॥
नवयें शुक्र बुद्धि विद्या मय अति कृतज्ञ नृप सोई।
परम उदार विचार मान पुनि विभव विष्णु सम जोई ॥
दशयें रवि वसु वाहन त्यों निगमागम सकल बतैहैं।
बुधि बल विद्या विपुल विशारद शत शक्रन सुख पैहैं ॥
धन अरु धान्य धाम पूरित ध्रुव कहुँ मुनि वेष बनैहैं।
महाराज शिर मुकुट मणिन मंडित नख जोति सुहैहैं ॥

दोहा—द्वादशयें बुध राहु को, फल सुनु महा महीप।
साधुन हेती होहिंगे, शासक सातहु द्वीप ॥

छंद चौबोला।

निशा नाथ फल पुनि सुनु नरपति धर्म कर्म मन लाऊ।
अति विनीत शुभ शील डील रिजु अतिशय सरल सुभाऊ ॥
और बृहस्पति को फल नृप मणि जइ प्रताप सुराले।
दृढ़ मंत्री शरणागत पालक संतन के सुख आले ॥
अब शुभ योग बतावत हों कछु बालक जेठ तिहारा।
जन्म पंचग्रह उच्चयोग यह ह्वैहैं भूभरतारा ॥
सातद्वीपनवखंडनरंजनअकथअलौकिककरणी।
सांचोसकलभुवनकोस्वामीयहिपतिमनिहै धरणी ॥
केंद्री है नवयेंकरस्वामीयोगचन्द्र चूड़ामनि।
गुरुद्विजभक्तसकलगुणसागरदाताशूर शिरोमनि ॥
सबमदनिरसतहैंनिशिपतिकोयोगकहीकल्पद्रुम।
श्रीरघुराज सो जगत जियावै दोष हरे केमद्रुम ॥

या सुत के गुण योग भोग वर पुहुमा प्रतिथ प्रभाऊ।
मेरीका गति कहन सकल फल कहिन सकैं अहिराऊ॥
नाहिं जानों को आइअवतरो जागे भाग तिहारे।
किधौं रमावल्लभ तुम्हरे घर करिकै कृपा सिधारे॥
सुनहु भरत की भूप कुंडली कुँवर केकई केरो।
पुष्य नक्षत्र चैत्र शुदि दशमी मीन लगन शुभ हेरो॥
दंड निशा बाकी जनम्यो यह सकल जगत सुखदाई।
प्रथम शुक्र दूजे रवि शशिजहु राहु चतुर्थ गनाई॥

दोहा–पँचयें गुरु शशि आठयें, शनि दशयेंहै केतु।
अहैग्यारहें भौम अस, भरत कुंडली नेतु॥
धरम धुरंधर वीर मणि, अग्रज प्राण पियार।
इष्टदेव सम मानिहै, जेठो भ्रात उदार॥
नेम निबाहक अति सहज, सुंदर शील सुभाव।
जेठ भ्रात अनुहार तन, दायक मुनिन उराव॥
बुद्धिमान मंजुल वचन, विक्रम शक्र समान।
परकृत लगी कलंक कछु, कछु दिन दुखी महान॥
तजि कुटुंब धरि वेप मुनि, करिहै तप अति घोर।
बंधु प्रीति यहि सम न कहुं, बंधु वियोगहु थोर॥
लषण कुंडली अब सुनहु, चैत्र शुक्र बुधवार।
तिथि एकादशि चौदहें, दंड माहँ अवतार॥
कर्क लग्न में जन्म भो, प्रथमै गुरु शशि जान।
चौथे शनि छठयें कह्यो, केतु महा बलवान॥
सतयें मंगल नवम पुनि, शुक्राचार्य्य सोहाइ।
दशयें रवि बुधबारहें राहु परयो ग्रह आइ॥
यह कुंडली के सुफल, सुनहु सकल महिपाल।

कनक वरण तन अति सुभग, सुंदर बाहु विशाल ॥
महा वली धनु शर निपुण वीर शिरोमणि सत्य ।
सर्वस अग्रज मानिहै, तेहि पद निरत सुनित्य ॥
अति प्रचंड खंडल दुवन, यश भरिहै नव खंड ।
शील रूप गुण निधि नवल, दलिहै पुहुमि पपंड ॥
विद्यामानगमान वित, निरभै सहज सुभाव ।
गौर वरण सरसिज नयन, जिमि पूरण उड़राव ॥
दीन सनेही हीन दुख कछु दिन नारि वियोग ।
काननचारी कछुक दिन, जेठ भ्रात संयोग ॥
सुर जेता नेता अवनि, भुवन उदग्र प्रताप ।
करी मिताई कपिन सों, करि वैरिन सन्ताप ॥
महा शत्रु संगर वधी, दिन प्रति युद्ध उछाह ।
अति आतुर क्रोधी कठिन, दल नायक जग माह ॥
तीनिहुं वंधुन ते कछुक, आयुष ओछि निदान ।
लषण कुंडली को कियो फल नर नाह वखान ॥

घनाक्षरी ।

जीजैफलभूपसुनिशत्रुशालकुंडलीकोचैत्रशुक्लएकादशीनपतसेरखाहै।
चौदैदंडवीतेदिन लीन्ह्योअवतारयहकरकलगनमें अतीवसुखरेखाहै॥
मूरतिमेंगुरुशशिचौथेशनिछठैकेतुसातयेंसुभौमनौमशुक्रशाघलेखाहै
दशयेंतमारिवुधराहुवारहेविराजैताकोफलादेशसुनौसोमतिसरेखाहै॥
महावलीधीरवीरअग्रगण्यधराधन्यविदितब्रह्मण्यत्यौंशरण्यसर्वकालहै
पूरणशशीसोवेपभ्राताभक्तरेखजाकीरातैगोनशत्रुशेपतेपसुरपालहै ॥
भनैरघुराजमथुराकोयह होईराज करीसवकाजभ्रातहुकुम मेंहालहै ॥
संगर करालसदादीनजन जूह पाल तेजग्रहपालइवह्वैहै शत्रुसाल है॥
दोहा—चारि कुमारन कुंडली, फल दीन्ह्यो मुनि गाइ ।

सुनि भूपति रानी सकल, बोलीं पद शिर नाइ॥

छन्द चौबोला।

औरहु चार करावहु मुनिवर शशि सूरज सुत देखैं।
तुम्हरी कृपा नाथ यह आनँद हमको भयो अलेखैं॥
चारिकुमारन के कर ते कछु दीजै दान कराई।
धर्म निशा महँ करहु नाथ पुनि षष्ठी कृत्य बनाई॥
सुनि मुनि वचन पुलकि तन बोले सो अवसर अब आयो।
कुँवरन को लै जाइ बाहिरे सूरज चन्द देखायो॥
उठीं सकल रानी हुलसानी पीत वसन तन धारे।
दशरथ पीतांबर पहिरे तहँ मंजुल वचन उचारे॥
देव तिहारी कृपा भये सुत ताते तुमहि उठाई।
लै अंगन प्रभु चारि कुमारन रवि शशि देहु देखाई॥
मुनि वशिष्ठ अभिलषित सिद्ध गुणि राम हि लियो उठाई।
विहँसि देखावन शशी दिवाकर अंगन में लै आई॥
रामहिं प्रथम देखायो रवि शशि पुनि लषणै मुनिराई।
बहुरि भरत रिपुसूदन कहँ तहँ अति आनँद उर छाई॥
मङ्गल गीत कामिनी गावैं अति मंजुल सुर छाई।
बाहर दगैं तोप अगणित जन सम्पाति रहे लुटाई॥
मुनि समीप दशरथ नृप सोहत पुनि तीनो महरानी।
पुनिसै तीनि साठि रानी सब सोहि रहीं छवि खानी॥
करहिं कुमारन की नेउछावरि चूमहिं वदन सरोजू।
करहिं बहुरि दशरथ नेउछावरि रह्यो न दुखकर खोजू॥

दोहा-कौशिल्या केकैसुता, तथा सुमित्रा पाहि।
करहिं नेछावरि सकल तिय, कनक रतन शिर माँहि॥
रघुवंशिन की दार बहु, सचिव सुहृद पुर नारि।

करी निछावरि विविध विधि प्रमुदित सुतन निहारि ॥

सवैया।

प्रभु आपने आपने देखन को अँगनामें कढ़े मुनि अंक लसैं।
धनि भाग विचारितमारि तहां रथ रोकि रहे हिय में हुलसैं॥
तिनको करि वन्दन वारहि वार शशी युत मोद लहे सरसैं।
रघुराज गुने हम देखे तिन्हैं अजौं देखन को जो अजौं तरसैं॥
जाको अहै मन चंद्रमा चारु सुनैन हैं सूरज बाहु सुरेशू।
जो करता भरता हरता जग मानत लोकप जासु निदेशू॥
को वरणै रघुराज की भाग हरी प्रगटे जेहि आइ निवेशू।
अंगन में शशि सूर देखावत पाणि में सूपन लै अवधेशू॥

दोहा—कहांकहां रोये हरी, मुनि कह भरि अनुराग।
कहँ विकुण्ठ कहँ वसुमती, धनि धनि दशरथ भाग॥
मुनि कह तुमहुँ देखावहू, लै सूपन कर माहिं।
सुतन सूर शशि यह छनै, मङ्गल होत सदाहिं॥
पृथक पृथक सूपन सुतन, भूपति पाणि उठाइ।
देखरायो रवि चन्द्रमा, अंबक अंबु बहाइ॥

घनाक्षरी।

सातलोकऊरधत्योसातलोकअधहूकेसंयुतअखंडब्रह्मअंडएकफनमें॥
धारेअहिराजजौनसरपपसमानविश्वसोई तेजविश्व ते समेतछनछनमें॥
कमठावतार धारि धारे पीठिपंकजसो भुवनअधारसरदारसुरगनमें॥
ताकोसूपपारिकैउठाइनिजदायनसोंभूपदेखरावैभानकोशिलाअँगनमें।

सोरठा—शीत भानु अरु भान, यहि विधि सुतन देखाइ कै।
दियो विविध विधि दान, अवधनाथ आनँद मगन॥
यहि विधि करि सब चार, भूप बाहिरे गमन किय।
जहां सचिव सरदार, बैठे वर दरबार महँ॥

सिंहासन आसीन, भयो भूप मघवा सरिस ।
पुरजन सचिव प्रवीन, आइ जोहारे भृत्य भट ॥
यथा योग्य सतकार, यथा योग्य बैठाइ किय ।
बोले वचन सुवार, तुम्हरी कृपा उछाह यह ॥
दोहा–मुनिवर कुँवरन पाणि ते, लक्ष लक्ष वर धेनु ।
दान करायो सविधि तहँ, भयो दीन गण चेनु ॥
करि रक्षन पठि मंत्र मुख, यंत्र बांधि मुनि राइ ।
सावधान कहि तियन को, गे मन्दिर हरषाइ ॥
सभा भवन में भूप उत, बैठे सहित समाज ।
पौर प्रकृति भट जान पद, रघुवंशी सब राज ॥

छंद चौबोला ।

बार बार सतकार करहिं नृप मंजुल वचन सुनाई ।
अतर पान सुरभित जल माला सबको देत देवाई ॥
ईश मनावहिं अवध प्रजा सब पुत्र चिरायुष होवैं ।
को महीप मानद तुम्हरे सम हम तुव बल सुख सोवैं ॥
कह्यो राजमणि पुनि रघुवंशि न आजु जाति जेवनारा ।
भोजन भवन चलहु बांधव सब हिलि मिलि करहिं अहारा ॥
अति राजी रघुवंशिन राजी विकसित दृग राजीवा ।
भोजन भवन जाइ धोये पद कर हिय हरष अतीवा ॥
यथा योग्य बैठे सब बांधव तब नर नाथ उदारा ।
मध्य बंधु मंडली विराजे तुरतहि बोलि सुआरा ॥
भरि भरि विविध भांति पकवानन विविध हेम के थारा ।
परसहु सकल राजवंशिन को करहिं यथेच्छ अहारा ॥
फमि पट आछे सबके पाछे ल्यावहु मम पनवारा ।
सम हमको तस सब भाइन को करहु न भेद विचारा ॥

सुखीसूद सुनि सपदि चले तहँ सरदारन अनुरागे ॥
कञ्चन थारन भोज्य अपारन प्रमुदित परुसन लागे ॥
ओदन दुदल बटी बट व्यञ्जन पय पकवान अपारा ।
मन रञ्जन विरञ्जन बहु भांतिन कलिय कबाबहु सारा ॥
विविध भांति पूरी सुख पूरी झूरी सरस सुहाई ।
विविध भांति मेवा पट रस युत तिमि बहु भांति मिठाई ॥
दोहा—को बरणै अवधेश के व्यञ्जन विविध प्रकार ॥
करि सतकार उदार नृप, करवाये जेउनार ॥

छंद चौबोला ।

सकल राजवंशी रघुवंशी भोजन करि सुख छाये ।
अचवन करि नरनाथ हाथ सों तांबूलन को पाये ॥
बहुरि प्रजन को कियो निमंत्रण व्यञ्जन विविध जिवँाये ॥
पौर जानपद दै असीस सब निज निज भवन सिधाये ॥
भाइन मंत्रिन भृत्यन प्रकृतिन प्रजन सुहृदगण काहीं ।
यथा योग्य भूषण पट दीन्हे बाचि रह्यो कोउ नाहीं ॥
यथा कियो सतकार बाहिरे दशरथ नृप मति खानी ।
तिमि बांधवन पौर नारिन को सतकारी सब रानी ॥
खात खवावत हँसत हँसावत भै संध्या सुखदाई ।
छठी चारु उपचारु करन नृप कह्यो वशिष्ठ बोलाई ॥
परम हुलास प्रकाश हिये महँ गुरु रनिवास सिधारे ।
षष्ठी भवन साजु सब सुन्दर वेद विधान सवाँरे ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा बैठीं सुतन समेतू ।
कनक कुम्भ मणि खचित सप्त शत धरिगे कनक निकेतू ॥
मणिन दीप अवली अति राजति आगे गौरि गनेशू ॥
पुरट पात्र सामग्री सोहति जैसी वेद निदेशू ॥

जहँ प्रगटे नारायण जगपति चारि भ्रात भगवाना।
तहँ की सम्पति विभव साहिवी को करि सकै बखाना॥
सोरठा—राम जनम उतसाह, मैं वरण्यौं संक्षेप कछु।
को अस कवि जग माहँ, पावत पार समग्र कहि॥

इति सिद्धिश्री साम्राज महाराजाधिराज श्री महाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते रामस्वयंवर ग्रंथे रामजन्मोत्सवे पंचम प्रबन्धः॥ ५॥

दोहा—कवि कोविद ज्ञानी रसिक, वरणैं रामचरित्र।
कथन व्याज कीन्हे भजन, इत उत होन पवित्र॥
हरि लीला वरणत यथा, चित्त अचञ्चल होइ।
योग याग साधन विविधि, तथा करै नहिं कोइ॥
ताते हरि लीला कथन सब साधन शिरमौर।
कहत सुनत वरणत गुणत, अस आनँद नहिं और॥
भागवतादिक ग्रंथ को, जानहु यही निचोर।
हरि लीला गावत सदा, पावत अवध किशोर॥
चलै ग्रंथ पुहुमी प्रथित, सुकवि प्रशंसहिं मोहि।
यहि हित मैं रघुवर कथा, नहिं वरणो सुख जोहि॥
महा घोर कलिकाल यह, मोसम अघी अनेक।
निरत विषय रस मोह वश त्यागत भक्ति विवेक॥
योग याग जप तप नियम, ज्ञान विज्ञान विराग।
हरि लीला अनुराग तजि, करत विषय अनुराग॥
सुतदारा सम्पति सदन, अति अशक्त निज मानि।
खान पान तजि आन नहिं, जानत सुख जिय आनि॥
कहौ कौन विधि होइ भल, दीन्हे प्रभुहि विसारि।

निरत जगत के करम नित, हारेहु गुणत न हारि ॥
पिता पितामह आदि सब सुतहू नाति पनाति ।
बन्धु कुटुंबहु नारि नित मरत लखत दिन राति ॥
महा मोह बश तदपि जन, हम जीहैं शत वर्ष ।
मानि ठानि जग काज नित, मृषा गुणत दुख हर्ष ॥
सो कलिकाल प्रभाव सति, नाहिं देही को दोष ।
मो सम अघी अलाल बहु, करत कछू न समोष ॥
सो ऐसे कलि के समय, केवल नाम अधार ।
कौनहु मिस सुख ते कढ़त, पीसत पाप पहार ॥
पूरब पुण्य रही कछुक, ताते लहि सतसङ्ग ।
सन्तन के उपदेश ते, रँग्यो कछुक हरि रङ्ग ॥
श्रीगुरु कृपा प्रसाद वश उपज्यो कछुक विचार ।
मोसम अघी न और कोउ, करौं कौन उपचार ॥
श्रीहरि गुरु पितु की कृपा, कियो मनहिं अस ठीक ।
जैसे तैसे राम यश, विरचहुँ नेवर नीक ॥
कृष्ण राम के नाम गुण, लीला धामहुँ रूप ।
वरणन व्याजहि ते वदो यह उधार भव कूप ॥
नाहिं जानौं कछु छन्द गति, नाहिं साहित्य सँयोग ।
नाहिं शास्त्रन सम्बन्ध कछु, तापर ग्रस भव रोग ॥
राम कृष्ण लीला कथा, करहुँ यथा मति गान ।
और उपाय प्रकार कछु, मोहिन सरल देखान ॥
राम कृष्ण कीरति विमल, जो कछु वरणन होइ ।
मोर भाग सन्तन कृपा, कारण और न कोइ ॥
राम जनम उतसाह यह, वरण्यो मति अनुसार ।
वाल चरित अब कछु कहौं, रसिकन को आधार ॥

छन्द चौबोला।

नामकरण जबते पुत्रन को कीन्हे दशरथ राई।
तबते होत रहत नित नव नव मङ्गल मोद बधाई॥
रोजहिं मुनि मण्डली महीपति सादर निवति जेवावैं।
दीन द्विजन गृह बोलि बोलि बहु व्यंजन विविधि खवावैं
न्योति न्योति पुरवासिन को नृप रचि रचि असन प्रकार
सादर सूपकार हाथन ते करवावते अहारा॥
रोज रोज विप्रन वसुधापति रतन दक्षिणा देही।
रोज रोज दीनन के दारिद दारत राम सनेही॥
उमा रमा शारदा शची सब औरहु देवन दारा।
अवध नगर नारिन स्वरूप धरि करि षोड़श शृङ्गारा॥
कौनहु काज व्याज अन्तहपुर प्रमुदित करहिं प्रवेशा।
करि कोनेहु उपाय देखहिं प्रभु त्यागहिं सकल कलेशा॥
सुंदर कनक अमोल खटोलन नील निचोलन धारे।
किलकत कबहुँ हँसत कहुँ रोवत सोवत चारि कुमारे॥
कबहुँ निहारत कर मुख डारत कबहुँ उचारत गूंगा।
पय प्यावति जननी लखि सूखत अधर निदरि दुति मूंगा॥
सखी डुलावहिं बिजन बैठि कोउ राईलोन उतारैं।
नेह पोरि पट अनल जरावहिं दीठि दोष हुतशारैं॥
गुरु वशिष्ठ बोलवावहिं रानी आवहिं सांझ सबेरे।
दाप देन के व्याज परसि पद पावहिं मोद घनेरे॥

दोहा—भूमि धेनु पट कनक नित, अन्न करावहिं दान।
बालक शांति पढ़ैं विहँसि, रखहिं सुत भगवान॥

छंद चौबोला।

कोउ सुहरी घुनघुना डुलावैं कोउ करताल बजावैं।

अङ्ग उठाइ कोऊ हलरावैं सुत रोवन नहिं पावैं ॥
सखि कज्जल को परम सलोना भाल डिठोना देहीं ।
मनु पङ्कज कोना पर बैठो अलिछोना मधु लेहीं ॥
कबहूँ अङ्ग उठाइ भामिनी मणिन चित्र दरशावैं ।
कबहुँ अङ्ग धारि मणिन खिलौनन अनुपम खेल खिलावैं ॥
कबहुँ पालने पारि मनोहर जननी मन्द झुलावैं ।
कहां कहां रोवन जब लागैं कहा कहत दुलरावैं ॥
जिन बालन के नाम सुनत भव भूत भीति भजि जावैं ।
तिन बालकन धूप देतीं तिय भूत भीति नहिं आवैं ॥
करन चरण मुख चूंमहिं जननी लखि नैननि तृण तूरी ।
तेहि औषधिमूरी तिय प्यावैं जो जग जीवनमूरी ॥
कुंवर कहूं रोदन अति करहीं नाहिं रगाइ रगवावैं ।
तब झारहिं पढ़ि मंत्र अनेकनि भूपहि खबरि जनावैं ॥
आवहिं तब रनिवास राजमणि गुरु कहँ सङ्ग लेवाई ।
तुलादान घृत अन्न मधुन के विप्रन देहिं दिवाई ॥
वृद्ध वृद्ध नारी पुरवारी बाल चिकित्सा ज्ञानी ।
तिनहिं बोलाइ झराइ विविध विधि तजहिं शङ्क सब रानी ॥
वामदेव आदिक मुनि ज्ञानिन सुतन निकट बैठाई ।
शङ्कर विष्णु सहस्र नाम कर पाठहु देहिं सुनाई ॥

दोहा–यहि विधि अवध अनन्द महँ, बीत्यो पञ्चम मास ।
लाग्यो षष्ठम मास पुनि, अति हुलास रनिवास ॥
एक दिवस नरनाह तब, गुरु मन्दिर महँ जाइ ।
गुरु पद पङ्कज परसि के बार बार शिर नाइ ॥
बोले बचन विनीत है, सुनिये देव दयाल ।
अब आयो कुँवरन सकल, अन्नप्रासनी काल

यथा उचित तस कीजिये, करिलीजिये विचार।
मंत्रिन आयसु दीजिये, करन हेत उपचार

छंद चौबोला।

सुनत वशिष्ठ हुलसि हिय बोले भलें कह्यो महराजा।
चारि कुमार अन्न को प्रासन करवावहु कृत काजा॥
अस कहि शुभ दिन शोधि ब्रह्मऋषि तुरत सुमन्त बोला
भादौं मासि श्रवण द्वादशि को सुदिवस सुखद सुनायो
जेहि दिन वामन जन्म लियो जग तेहि दिन भूप दुलारे।
कराहिं अन्नप्रासन दुखनाशन रङ्गनाथ के द्वारे॥
सुनत सुमन्त पुलकि तन बोले भले कह्यो मुनिराई।
हौं अब जात साज सजवावन जस मुनिराज रजाई॥
बगरि गई यह मोदमई सब खबरि अवधपुर माहीं।
नृप कुंवरन की अन्नप्रासनी होति द्वादशी काहीं॥
नगर नारिनर अति आनंदित यथा विभव जिन केरे।
लगे बनावन बाल विभूषण हीरा हेम घनेरे॥
सुनि कुँवरन की अन्नप्रासनी भरि उमंग अनुरागीं।
पृथक पृथक दशरथ महरानी साज सजावन लागीं॥
घर घर तोरण विमल पताके कञ्चन कुंभ धराये।
क्रमुकरंभ के खंभ विराजत पथ जल सुरभि सिंचाये॥
सचिव सुमंत आदि जेहि विधि मुनिराज रजायसु दीन्हे।
तेहि विधि साज़ु साजि सब विधि सों राजकाज सब कीन्हे॥
आइगई द्वादशी हुलासिनि अन्नप्रासनी वाली।
सोर भोर माच्यो कोशलपुर चलीं सकल जुरि आली॥
दो०-उठि प्रभात नरनाह तब, सहित उछाह नहाय।
नित्य कृत्य निरवाहि सब, नावक चरण दिवाय॥

छन्द चौबोला ।

चले रंगमंदिर अति सुंदर जहं इंदिरा प्रियाले ।
तहँ कौशिल्या अरु कैकेई लषण जननि तेहिं काले ॥
औरहुं त्रिशत साठि महरानी रची शची इव साची ।
परिचारिका सहस्रन सोहैं रति रंभा छवि राची ॥
गावहिं मंगल गीत प्रीत भरि कनक कुंभ शिर धारे ।
कोउ दधि दूब हरद अक्षत भरि चलीं कनक कर थारे ॥
यहि विधि सहित सकल रनिवास हुलास भरे महिपाला ।
रंगनाथ मन्दिर महँ आये लै चारिहु निज लाला ॥
करि वन्दन पुनि दै परदक्षिण बैठे मंदिर माहीं ।
पौर जानपद सचिव आदि सव नाहिं तेहि चौक समाहीं ॥
विविध भांति वाजन तहँ बाजैं सुमन सुमन झरि लाये ।
गायक नर्तक गावत नाचत कौतुक कला देखाये ॥
तव सुमंत कहँ वोलि महीपति शासन दियो सुनाई ।
रघुवंशिन कहँ वेगि वोलावहु सादर नेवत पठाई ॥
कियो महीपति रंगनाथ को पूजन सकल प्रकारा ।
वार वार वंदन करि शिर सों करि अस्तुति वहु वारा ॥
चारि कुमारन के कर ते तहँ नेउछावरि करवाई ।
वोलि परम परवीन सुवारन वहु व्यंजन मँगवाई ॥
धरयो रंगपति के आगे सव थारन पुरट भराई ।
गुरु वशिष्ठ तहँ रंगनाथ कहँ दियो निवेद लगाई ॥

दोहा-मनरञ्जन गञ्जन अरुचि, वहु विधि वने विरंजु ।
पय प्रकार वहु भांति के, कलित मसाले मंजु ॥

छन्द चौबोला ।

दधि प्रकार ओदन प्रकार वहु तिमि कृशरान्न प्रकारा ।

मृदु मिष्टान प्रकार अनेकन सुधा स्वाद सुख सारा ॥
विविध वटी वट फल प्रकार बहु पूरी पूप सुहाये।
तिमि प्रकार आचारन के बहु पट रस रुचिर मिलाये॥
चारि भांति के परम मनोहर औरहु सब पकवाना।
सुरभित सलिल अनेक भांति के सूपकार मतिवाना॥
यथा योग रघुवंशिन परुसे भृत्यन कहँ तिमिदीने।
औरहु साधुन विप्रन को तहँ परुसे परम प्रवीने॥
भोजन प्रथम सन्त सब कीन्हे पुनि द्विजवृन्द जेवाँये।
दै दक्षिणा भूपमणि निज कर पुनि सादर शिर नाये॥
पाय अशीश महीश शीश धरि गुरु वशिष्ठ ढिग जाई।
गुरु के अंक कुमारन को तहँ बैठाये शिर नाई॥
रंगनाथ को लै प्रसाद मुनि रामहिं दियो खवाई।
बहुरि भरत कहँ तिमि लषणहुँ कहँ रिपुहन को सुख छाई
मुनि कह सुनहु महीप शिरोमणि लै निज अंक कुमारा।
करहु अन्नप्रासनी पाणि निज यथा वंश व्यवहारा॥
पढ़न लगे स्वस्त्ययन ब्रह्मऋषि गाइ उठीं सब नारी॥
लै नरनाथ अङ्क रघुनाथहि रंगनाथ संभारी॥
तनक तनक सिगरे सुख व्यंजन सुतहि खवावन लागे।
मोचत युगुल विलोचन आनँद बारि परम अनुरागे॥

दोहा—लषण भरत रिपुदमन की, अन्नप्रासनी कीन।
लघु लघु भूषण कर चरण पहिराये मुद भीन॥

कवित्त।

अतिअनुरागनतेब्रह्माजूकीजागनकेभागनतेआजुलौंनतोपकछुपायोहै
महाभागदेवनकेसेवनतेसाहेबजोपायकैकितेकवलिचित्तनहींलायोहै।
बलिप्रहलादअंबरीपआदिभक्तनतेलहिकैनिवेदभूरिभोजकहवायोहै।
सोईरघुराजराजराजदशरत्थजूकेपाणिचारिचारुतेआशुहीअपायोहै

दोहा—जो पट रस नव रस स्वरस, रस अनरस मय देव।
ताहि चटावत पट रसन,धन्य अवध नर देव॥
चारि कुमारन की करी, अन्नप्राशनी भूप।
पुनि रघुवंशिन ते सहित, भोजन कियो अनूप॥

छंद चौबोला।

रानी सकल कुमारन को तब राई लोन उतारी।
भाल डिठौना दै अति लोना फेरि उतारयो वारी॥
वीर सिंह रघुवंशी को तहँ लीन्ह्यों तुरत बोलाई।
रतनालिका तासु वर दारा धौवा धाइ बनाई॥
भूपति लै चारो कुवँरन को सपदि बाहिरे आई।
शत्रुंजय सिंधुर हरि गज सम ता पर दियो चढ़ाई॥
पुनि तुरङ्ग पर पुनि स्यन्दन पर दशस्यन्दन चढ़वाई।
कुवँरन कर छुवाय संपति बहु दीनन दियो लुटाई॥
जय जयकार मच्यो तीनिहुँ पुर भयो महा संवर्षा।
देव विमानन हने दुंदुभी करि फूलन की वर्षा॥
सचिव पौर बांधव उतसाहित लै लै भूषण दीन्हे।
सहित सकल रनिवास राज वर गृह प्रवेश तब कीन्हे॥
को कहि सकै आज दशरथ की भाग्य विभूति बड़ाई।
जासु भवन अवतरयो भुवनपति कृपासिंधु रघुराई॥
देखि कुमारन अवध प्रजा सब आनँद मगन महाना।
अनिमिष निरखत वदन अनूपम चन्द चकोर समाना॥
कोउ दुलरावै कोऊ खिलावै कोउ हलरावै आई।
चारु चौंर चहुँ ओर चलावैं मोरछलान डोलाई॥
देहिं अशीष अवध नर नारी युगयुग जीवहिं प्यारे।
कब कर शर धनु धरि विचरहिंगे अङ्गन अटनि अखारे॥

दोहा—अन्नप्रासनी राम की, यहि विधि भई विशाल।
अवध प्रजा आनँद मगन, वसे सहित महिपाल॥

छंद चौबोला।

जब ते अन्नप्रासनी ह्वै गै रङ्गनाथ के द्वारें।
तब ते कुवँर कढ़हिं नित बाहर प्रमुदित प्रजा जोहारें॥
मणि मंदिर में रतन पालने मंजुल रेशम डोरी।
राजकुवँर तिन में अति राजत करत चित्त की चोरी॥
जननी सुखित झुलावहिं निज कर मन्दहि मन्द अनंदी।
कनक खिलौने सुतन खेलावहिं सबै प्रीति की फंदी॥
रोजहि चलि वशिष्ट मुनि झारहिं ग्रह के दान करावै।
मास मास पूतना विधानहुं करवावें निशि जामे॥
छोटे कर पद छोटि अँगुरियां छोटि नखावलि राजै
पङ्कज कोस ओस कण मानहु सुखमा कोस दराजै॥
कहुँ विहँसत कहुँ चरण चलावत कहूं करत किलकारी।
कहुँ रोवत जननी मुख जोवत पय प्यावति महतारी॥
कबहुँ उठाय अली कोउ अङ्कहि निज चित्रित दिखावैं।
निरखि निरखि निज विहँसि विहँसि कहुँ आपहु भुजा उठावैं॥
कबहुँ रुदन रोवन नहिं रोवत रुवाये न रुवाहीं।
[illegible] करावहिं जननी विविध उतार करावीं॥
[illegible] वदन प्रताप [illegible] पालक मन मोहाहीं।
मानहुँ [illegible] चन्द्रमा [illegible] माहीं॥
[illegible] भरीं निज आनन [illegible]।
[illegible] निज [illegible]॥
[illegible] राम की [illegible] भई [illegible]।
[illegible]॥

कवित्त।

चौंकिउठेशंकितविरञ्चिसञ्चरञ्चनहिंशंकरसशंकितविचारैंतेहियामहैं।
छोनीछोड़िबेकोचहैंदिग्गजदहंसमानिहोलखोलमाचिरहेदेवधामधामहैं
भनैरघुराजउठीतरलतरङ्गसिन्धु प्रलैकेपयोदधायेव्योमठामठामहैं।
डोल्योशिशुमारत्योंतरणितारातारापतिचरणअँगूठोजबमेलेमुखरामहैं

छंद चौबोला।

नित नित पुरवासिनी अङ्गना ल्यावैं नवल खिलौना।
तेहि मिसि देखि राजकुँवरन को आपहिं अवै चलौना॥
कोउ झुँगुली कोउ मृदुल बढ़नियां कोउ ल्यावैं रचि ताजा।
कोउ बनाइ पट तुरँग मतंगन कोउ लावै लघु बाजा॥
जे लखि जातीं लालन कोंते कहहिं निरखि हम आईं।
सुनि सुनि जे न लखीं ते धावैं देखन को हुलसाईं॥
रतनन कीछोटी बहु खुरियां त्योंथरियाँ मन हारी।
तिनमें कछुक पान भोजन धरि चखवावहिं महतारी॥
रामहिं करत पियार केकई कौशिल्या त्यों भरतैं।
राम केकई भरत कौशिला मानहु जन्यो उदरतैं॥
सहज सुभाउ सुमित्रा मानहिं भरत राम ममवारे।
त्यों केकई कौशिला जानहि रिपुहन लषण हमारे॥
जो प्रभु समर सुरासुर धावत खगपति पीठि सवारा।
तेहि घोरिला चढ़ाइ नृपरानी करवावैं संचारा॥
कब चलि पद पूरिहो मनोरथ लालन अवशि हमारा।
कबहुँ कहैं होरिल कब कानन खेलिहो जाइ शिकारा॥
गाइ गाइ पालने झुलावैं बिजन डोलावैं माता।
जून जून में जोहि जगावैं पुलकित सांझ प्रभाता॥
जननिन को तहँ सुनन प्रीति बश बिसराति सुरति वचनकी।

धन की मन की सदन बदन की भोजन की छन छन की॥

दोहा—काकहुँ दाकहुँ बाकहत, हँसि हँसि बूझहिं मात।
कबहुँ बोलावत अंगुलिन, पलन परे किलकात॥
यहि विधि बीत्यो वर्ष यक, आनँद मय सब याम।
औचक हौं यक दिवस में, लियो करौंटा राम॥

छंद चौबोला।

रतनालिका आदि सब नारी देखि महा सुख पायो।
राम करौंटा लेबजाय तहँ रानिन तुरत जनायो॥
रानी परम मोद उर मानो भूपहिं खबरि जनाई।
द्वारे में नौमति सहनाई बजवायो सुख छाई॥
सुनत भूप मणि दान दियेबहु पूरे याचक आसा।
गुरु वशिष्ट अरु वामदेव लै सपदि गये रनिवासा॥
रानी सकल राज मणि मोदित सुतकर दान दिवायो।
गावन नाचन लगे गुणी जन अवधनगर सुख छायो॥
यहि विधि दिन प्रति भूप भवन महँ आनँद मंगल होई।
देखि देखि चारिउ कुवँरन को धन्य होत सब कोई॥
चारहु बालक चलहिं घुटुरुवन जननी लेहिं उठाई।
दशरथ भूपति अजिर महा सुख दून दून अधिकाई॥
किलकहिं कबहुँ लराहिं आपुस महँ पुनि यक एक मनावैं।
मणि खंभन महँ लखि प्रतिबिंब चहैं तेहि हम गहि ल्यावैं॥
लघु लघु कंचन के हय हाथी स्यन्दन सुभग बनाई।
तिन महँ धाय चढ़ाय कुमारन ल्यावहिं अजिर बगाई॥
कबहुँक रमत त्यागि पान पय अंगन मचलि परैं।
बार बार जननी समुझावहिं मानिन रुदन करैं॥
मणि घुटुरी कंचन घुनघुनियां जननी जाय बनावैं।

हाऊते डेरवाइ उठाइ अङ्क पय पान करावैं ॥
दोहा-एक समय बैठी रहीं, कौशिल्यादिक मात ।
पय प्यावत हलरावतीं, कहि कहि लालन तात ॥

छन्द चौबोला।

सखी सयानि एक तहँ आई ऐसे वचन सुनायो ।
योगी बाबा नारि लिये यक द्वार देश महँ आयो ॥
बैल चढ़ो अँग भस्म चढ़ाये भानु समान प्रकासू ।
बालक करतल देखि कहत सब जनम हाल अनयासू ॥
जहँ जहँ गयो अवध पुर घर घर तहँ तहँ शिशुकर देखी ।
जन्म भरे की खबरि कही सब रक्ष्यो शिशुन विशेखी ॥
वड़ो चेटकी है वर ज्ञानी कह्यो सु मोहिं बोलाई ।
एक वार दशरथ के लालन दे देखाय तैं माई ॥
मोहिं न कछु अभिलाप राज घर लालच लाल लखनकी ।
हमहिं लखत आयुप बहु बाढी सुंदरि राम लषनकी ॥
जो आयसु अब होइ स्वामिनी ल्यावहुँ ताहि लेवाई ।
योगी बाबा बड़ो जनैया लखै कुवँर सुखदाई ॥
ल्याउ लेवाइ तुरत योगीवर कौशिल्या कहबानी ।
गई लेवाइ ताहि अन्तहपुर महा मोद मन मानी ॥
योगी बाबा देखि रामकहँ कीन्ह्यो मनहिं प्रणामा ।
करी मनहिं मन तासु नारि नति पूर भयो मन कामा ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा चलि आई सब रानी ।
तेहि बैठाय पीठ पद धोयो लै पानी निज पानी ॥
ल्याइ चारिहूँ लालन को तब डारयो चरणन माहीं ।
योगी कह्यो जियैं युग युग सुत इन कहँ कछु डर नाहीं ॥
[दो]हा-कौशिल्या कह नाइ शिर, कहँते आये आप ।

अपनो नाम बताइये, करहु कौन को जाप॥

छंद चौबोला।

योगी कह्यो सुनहु महरानी मम कैलास निवासा।
यह पषाण कन्या मम नारी नाम मोर कृतिवासा॥
दैव बैल वाहन मोहिं दीन्ह्यों वसन मोर गज खाला।
सुन्यो उछाह अवध को आयो देखन को तुव लाला॥
भये मनोरथ पूर हमारे देखि कुमार तिहारे।
तोहिं सम भागवन्त नृप घरणी हम नहिं जगत निहारे॥
तब रानी शिर नाइ कह्यो अब सुत गुण बरणहु ज्ञानी।
कहन लग्यो योगी बाबा तहँ धन्य भाग निज मानी॥
षोड़श वर्ष न्यून नेसुक जब ह्वै है बालक तोरा।
तब विदेश ब्राह्मण सँग जैहै अनुज सहित वन घोरा॥
परम अपावनि परम भयावनि यक नारी को मारी॥
पुनि राक्षसन मारि संगर में करिहै मख रखवारी॥
प्रगट करी पाथर ते वनिता पुनि धनुहीं यक तोरी।
महा अमरषी यक ब्राह्मण कर बातन ते मद मोरी॥
तब दुलहिन पैहै अति सुन्दरि कौनहुँ राजकुमारी।
यक नारीके वचन पास परि देहै पिता निकारी॥
लै तिय अनुज चली कानन को घर अनरथ अस होई।
तापस वेष विपिन बसि बहु दिन मुनिन महा मुदमोई॥
पुनि यक अनुज लेवावन जैहै नहि ऐहै घर माहीं।
जैहै विपिन पराय दूरि बहु हनिहै निशिचर काहीं॥

दोहा- महा मुनिन मिलि पुनि बसी, दच्छिन करत अहेर।
नाक कान कटवायहै, अनुज हाथ तिय केर॥

छंद चौबोला।

तहँ यक [illegible] आप अधर्मी राजा हरिहै याकी नारी।

वनचर सँग यह करी मिताई यक वनचर को मारी ॥
कहूँ सेतु सागर महँ रचिहै लै कपि कटक अपारा।
सकुल सदल निज रिपु को करिहै करि सङ्गर संहारा ॥
बहुरि आपने भवन आयहै करीराज बहुकाला।
तुव सुत पाइ प्रताप देव मुनि ह्वैहै सकल निहाला ॥
द्वै द्वै सुत चारिहू सुतन के ह्वैहैं बली बिशाला।
अश्वमेध मख करी कितेकन ह्वैहै दीनदयाला ॥
तेरे सुत के नाम धाम गुण वरणि सकौं मैं नाहीं।
तुव सुत ते सनाथ सिगरो जग नहिं संशय यहि माहीं ॥
सुनि अवधूत वचन रानी सब गुणि अहलाद विषादा।
कह्यो मिटै बाधा सिगरी जेहि अस कछु करहु प्रसादा ॥
लै योगी निज गोद राम को मोद मानि मन भूरी।
छ्वै शिर कर पुनि परसि कञ्ज पद धारयो शिर पद धूरी ॥
मंत्र सुनावन व्याज शंभु तब कह्यो राम के काने।
बहुरि विवाह समै लखिहैं हम मिथिलापुर सुख साने ॥
सुनहु राज तिय कबहुँ पुत्र तुव ठाकुर रह्यो हमारो।
ताते याको औ हमरो नित है सम्बन्ध अपारो ॥
पूजि गई कामना हमारी लालन देखि तिहारो।
अब मैं जान चहौं अपने घर करि रक्षण तुव प्यारो ॥
अस कहि उमासहित परदक्षिण दीन्ह्यो चारि पुरारी
बार बार पद परसि पाणि सो कीन्ह्यो गमन सुखारी ॥

दोहा–नित नव लीला करतप्रभु, अम्ब अनन्द बढ़ाइ।
जेहि श्रुति ढूंढ़त सोरह्यो, दशरथ भवन लुकाइ ॥

कवित्त।

योगीजाहिअचलसमाधिकोलगाइध्यावैपावैनहिंसाधनअनेकनकरतहैं।

शंभुऔस्वयंभुशक्रसकलसुरासुरादिसिद्धमुनिजाकोदाँहछाँहविचरतैं
वाकमनगोचरअतीतमोहमायाजीतपरब्रह्मपरधामविश्वकोभरत हैं॥
सोइरघुराजआजअवधअधीशजू के अजिरमें धूरिधूसरितविहरतहैं ॥

सवैया ।

खेलि रहे अँगना में लला अवला त्यों उठाइ कहूं रज झारैं।
त्यों मचला मचली कवहूं करि केती कला करि मोद पसारैं॥
श्रीरघुराज छला कचके शिर मानो झलाझल रेशम तारैं।
कीन्हे वलावली बालन सों अवधेश लला सबके मन हारैं॥
जानु सों धावत मंदहि मंद स्वछंद गिरैं उठिकै पुनि धावैं।
त्योंही परस्पर पाणि गहे यसिलैं हँसि हेरि हुलास बढावैं॥
श्रीरघुराज नृपांगन में निज अंगन को अँगराग लगावैं।
लै रजपाणि उडावैं लला नहिं आवैं जबै उठि मातु बोलावैं॥

दोहा--यहि विधि बीते वर्ष युग, एक दिवस मुद बाढ़ ।
कनक कुंभ कर पकरिकै, भये राम महि ठाढ़ ॥

छन्द चौबोला ।

धाई लखि धाई सुखछाई मातन खवरि जनाई ।
ठाढ़े भये कुँवर यहि अवसर कृपा करी जगसाँई ॥
आनँद अंबु अंब अंबक भरि सवै तहां जुरि आई ।
दीनन दीन्ह्यो दान मान करि कुंभ सोधाई पाई ॥
खवरि पठाइ दई दशरथ पहँ रामभये अवठाढ़े।
उभे पाणि नृप माणिन लुटावत आये अति मुद बाढे ॥
फैलिगई सुधि डगर डगर महँ अवध नगर चहुं ओरा ।
ईश कृपाते आजु ठाढ़ भे चारिहु भूपकिशोरा ॥
ग्रामदेवतन नगर नारि नर लागे करन पुजाई ।
धाम धाम में धूम धामते लागो वजन वधाई ॥

अति डरावते रावद्वार महँ परे निसानन घाऊ ।
नौमत लागी झरन परन वहु अवध न हर्ष अमाऊ ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा सकल ग्राम सुर पूजें ।
भाषैं सकल पुजारिन तहँ की सकल मनोरथ पूजें ॥
ग्रामदेव कुलदेव देव वर इष्टदेव अरु देवी ।
रोजहि पूजहिं दशरथ रानी सुत मंगल हित सेवी ॥
जासु कृपा उपजत जग मंगल नशत अमंगल जाते ।
मङ्गल चहति तासु नृपरानी लघु देवन पूजाते ॥
पुर की कुल की और देश की वृद्ध नारि जे आवें ।
पावन हेतु अशीप भूपतिय तिन के पगन परावें ॥

दोहा–पुनि पुनि सुतन सिखावहीं, जननि अंक बैठाइ ।
जाय पिता पहँ बाहिरे, रहहु न विलम लगाइ ॥

छन्द चौबोला ।

लुटरे केश शेश शावक सम छोटे मृदु घुँघुवारे ।
जननि पाणि पोछे ओछे नाहिं सुरभित अतर अपारे ॥
अर्ध इंदु इव लघु ललाटपर लागे तीनि दिठोना ।
सुधा पियन हित मनहुँ शीश मधि लसैं भुवंगम छोना ॥
त्रिकुटी ते कानन लगि सोहत भ्रकुटि रेख लघु लोनी ।
मनहुँ काम लिखि दियो लीक द्वै इतनी ही छवि छोनी ॥
शील अयन युग नलिन नैन वर अति विशाल कजरारे ।
मनहुँ मीन छवि जाल फँसे द्वै शोभा सिंधु करारे ॥
मन हुलासिका नवल नासिका लघुमुकुता युत राजे ।
मानहुँ चम्पक कली भली विधि ओस बिंदु अति भ्राजे ॥
अति मृदु वदन अधर अरुणारे लसहिं दँतुलिया प्यारी ।
मनहुँ कंज बिंब धरे बिंब युग अंतर बीज निहारी ॥

लसत कपोल अमोल गोल अति तनक अलक छहराहीं।
मनहुँ शोभ सरसी मणि मंडित काम केतु फहराहीं॥
मधि हीरा दुहुँ दिशि मुकुतावलि कठुला कंठ विराजा।
बंधु कंबु कहँ भुज पसारि जनु मिलन चहत द्विजराजा॥
छोटी मुकुत माल लहरैं उर जननी करन सँवारी।
मानहुँ यमुन धार हंसावलि बैठी पंख पसारी॥
छोटे छोटे भुजन विजायठ छोट कटक करमाहीं।
मनहुँ भरी छवि छरी मदन की बंधन कनक सोहाहीं॥

दोहा-कटि करधन छुगुनू छजित, श्यामल वदन सोहाय।
मनहुँ नील मणि मंदरै, बस्यो वासुकी आय॥
लघु ऊरू लघु जानु लघु, जंघ पृथुल छवि छाज।
युगल नवल कदली मनहुँ, उलटायो रति राज॥
लघु नूपुर लघु कटक पद, लघु मुकुतनकी पांति।
मनु मराल सावक अवलि, सरसिज चहुँकित भांति॥
लघु अँगुरी लघु नखअवलि, लघु कोमल पद मंजु।
मनु तारा निज प्रभु दुवन, किय कारागृह कंजु॥

कवित्त घनाक्षरी।

कोशलेश लाल जू के लाल लाल पदतल,
अङ्कुश कुलिश कञ्ज चक्र धुज रेख हैं।
ठुमुकि ठुमकि वागैं कौशिला के आंगन में,
झुनुकि झुनुकि बाजैं भूपण विशेख हैं॥
द्रवीभूत होती मणि उपटैं चरण चारु,
न्मै चन्दवदनी अनन्दित अशेख हैं।
रघुराज तेई पद पावन की लाख लाख,
करैं अभिलाख लेखा लोकन अलेख हैं॥

छोटे छोटे शीश तापै टोपी लसैं छोटी छोटी,
छोटी सी रतन राजी छोटे लगे गोटे हैं ।
छोटी छोटी मोती कान छोटे कठुला त्यों कण्ठ,
छोटे से विजायठ कटक दुति मोटे हैं ॥
छोटी छोटी झंगुली झलाझल झलकदार,
छोटी सी छरी को लिये छोटे राज ढोटे हैं ।
छोटे छोटे पायँन विहारि रघुराज आज,
करत विकुण्ठ सुख औध आगे छोटे हैं ॥
छोटे छोटे हीरन के हार पहिराये कण्ठ,
छोटे नख नाहर के रक्षा हेतु साजे हैं ।
छोटे छोटे यंत्र जे बनाये हैं सुमंत्र गुरु,
तंत्रन विधानते सुनाभि लो विराजे हैं ॥
माजूफल शंख रुद्र अक्ष त्यों वजरवट्ट,
तुलसी को गुलिका सुधारे छवि छाजे हैं ॥
रघुराज राजैं राज अङ्गनमें चारों लाल,
कहूं कौन कहूं भौन कहूं दरवाजे हैं ॥
छोटे छोटे नूपुर सो छोटे छोटे पायँन में,
छोटो जरकसी सुपामरी ।
ख नैन भाल,

भाल दैदिठोना केश अतर लगाइ कै ।
सखिन सयानिन को सङ्ग में कराइ चाइ,
राय के समीप में पठावैं छोह छाइ कै ॥
ललकि बढ़ाय पाणि दोऊ पसराय लेहिं,
भूप उर लाय सुख सिन्धु में समाइकै ।
भनै रघुराज कोई गादी गिरदा में चढैं,
कोई गोद गरे हरे हरे लपटाइकै ॥
जागे एक द्योस राम भोरहीं ते रोवैं,
पय करत न पान राई लोन को उतारी है ।
वामदेव औ वशिष्ठ तुरत बोलायो भौन;
हाथहू देवायो नारी मंत्र पढि झारी है ॥
लै लै हलरावैं रगवावैं त्यों देखावैं,
चित्र अखिल खिलौनन खिलावैं देत तारी है ।
रघुराज पालने झुलावैं बजवावैंबाज
जननी अनेकन जतन करि हारी है ॥
जब नारगाने राम रमणी चतुर कोई
आसुही कनक पट वारन बनायो है ॥
है है लाल हाथी एक आयो भागो भौन जाइ
करो पय पान अस कहि डेरवायो है ॥
भभरि भगाने मातु अङ्क में लुकाने जाइ
किये पय पाने रघुराज इमि गायो है ॥
डर्‌यो हरि सोई हेम हाथी को जो ग्राह ग्रस्यो,
हाथन सों हाथा हाथी हाथी ऐंचि ल्यायो है ॥
दोहा–यहिविधि बीती वैस कछु, करत विनोद विशाल ।
अवध अजिर विचरत भये, पञ्च वर्ष के बाल ॥

छन्द चौबोला ।

भानु उदै के कछु आगे ते जागहिं रोजहि रानी ।
सखिन बोलाइ लगाइ जुगुति सब छानि धरावहिं पानी ॥
उठैं लाल जब मींजत नैननि कज्जल कलित कपोला ।
मनहुँ श्याम सरसिज महँ सोहति मधुकर अवलि अलोला ॥
अम्ब अम्ब कहि जननि बोलावहिं दे भोजन मोहिं भूखा ।
तुरत उठाइ अङ्क सजनी तहँ पोंछहिं पट मुख रूखा ॥
मचलि परहिं भोजन बिनु पाये तब जननी उठि धावैं ।
रचि रोटी माखन मिश्री धरि कनक थरुलियन ल्यावैं ॥
नेसुक सुतन खवाइ पोंछि मुख नेसुक दै करमाहीं ।
आप करैं मज्जन आदिक सब बालक खेलन जाहीं ॥
तहँ सम वैस अवधपुर बालक खेलन सङ्ग सिधारैं ।
कहुँ अङ्गन कहुँ भवन भीतरे कहुँ बाहेर कहुँ द्वारैं ॥
माखन मिश्री विविध मिठाई लै कर चारिहु भाई ।
बाँटहिं सखन काटि कछु दांतन कछुक फेंकि कछु खाई ॥
एक हाथ रोटीप्रभु लीन्हे एक हाथ में लकुटी ।
खात खात डोलत आँगन में मटकावत कहुँ भृकुटी ॥
किलकत हँसत लरत मुख भाषत मंजुल तोतरि बानी ।
पट अष्टादश चारि चारि के मुनि शारदा बिकानी ॥
छीनि लेत एक के कर ते एक मंजुल माखन रोटी ।
सो माखन अति धाइ गहत [illegible] कुमुद कलित कल चोटी ॥
दोहा—यहि विधि अवध अधीश के, अंगन में [illegible] ।
परम [illegible] करना विवश [illegible] ॥

कवित्त ।

[illegible]

जानि कै अवध अवतार अविनाशी को।
आयो सो दरश आसी परम हुलासी हिये
जाको वरदान अहै विश्व के प्रकाशी को॥
कबहुं नतोहिं महामाया मोह भासी भव
ह्वै है तू अज्ञान नासी कल्प कल्प नाशो को।
वायस विलोकि औधवासी रघुराज राम
वालक विलासी भूल्यो ब्रह्म गति खाशी को॥
वायस विचारचो बुद्धि शुद्ध सत्वरूप जाको
सत्ताते जगत व्यापी माया जासु दासी है।
सत चिदानन्द रूप है अनूप रघुराज
सृजत हरत पालै विश्व अविनासी है॥
सोई परब्रह्म लीन्ह्यों औध अवतार सुन्यो
देख्यो आइकै सो यह ब्रह्म तेजरासी है।
रोटी गहे हाथ में सुचोटी गुहे माथ में
लँगोटी कछे नाथ साथ वालक विलासी है

दोहा–जान्यो प्रभु यह काग को, मायाव्यापी मोरि।
दरशाऊं महिमा कछुक, लेहुँ भक्त भ्रम चोरि॥

कबित्त।

भरिअनुरागकागवागैप्रभुपाछेलागपद्मरागअङ्गनमेंभागवड़मानिकै।
भूमिगिरेजूठेकनखातनअघातउरजातकहुँआगेगतिचञ्चलसीठानिकै॥
एकवारपाणिसोंगिरायोरामरोटीटूकभाग्योचोंचदाबिद्रोणभीतिअतिआनिकै
हाथकोपसारेनाथमाथकोउघारेधाये वायसकेसाथरघुराजजनजानिकै

सवैया।

वायस पीठ को औप्रभु पाणि को अन्तर अंगुल द्वैक देखानो।
भाग्यो महा भभरो भव लोकन सातहू स्वर्ग पताल पराने॥

मेरु के कन्दर अन्दर हू धस्यो देख्यो जबै मुरि कै डर मानो।
अंगुली द्वै निज पीठि ते पाणि पसारे भुजा रघुराज लखानो॥
वायस भीति सों मूँद्योदृगै पुनिखोलि लख्योपुरकौशलआयो।
पांचही वर्ष के अङ्गन खेलत ताहि विलोकि हरी मुसकायो॥
ताही समै प्रभु के विहँसात तुरन्तही सो मुख जाय समायो।
श्रीरघुराज अनेकन अण्डकटाह लख्यो कछु अन्त न पायो॥
वीते अनेकन कल्प तहां भटकात कहूं थिरता नाहिं पाई।
देखी विचित्र भली रचना बहु सांसहि लेत सो बाहर आई॥
श्रीरघुराज लख्यो प्रभु को कर रोटी सुखेलत अङ्गन धाई।
काग कह्यो हरि सों शिर नाइ हर्यो भ्रम मों महिमा दरशाई
श्रीरघुराज को बन्दन कै गिरि नील को वायस कीनो पयानो।
भक्त शिरोमणिताहि कोह्वैकैदियो निज भक्तिहीकोवरदानो॥
खेलन लागे सखान के सङ्ग कोऊ यह चित्त चरित्र न जानो।
जानि विलम्ब तुरन्तही अम्ब बोलाइ कराइ दियो पयपानो॥

दोहा—पुनि तीनिहुं जननी रच्यो, विविध कलेऊ मीठ।
कनक कटुरियन थरुलियन, धर्‍यो मूंदि मणि पीठ॥

छंद चौबोला।

तुरत बोलावन लालन के हित जननी सखिन पठाई।
कहत भई ते जाइ सुतन सों माता तुमहिं बोलाई॥
चलहु कुवँर सब करहु कलेऊ अतिशय होति विलम्बा।
विरचि विविध व्यञ्जन मन रञ्जन परिखे बैठी अम्बा॥
खेल रङ्ग महं रँगे लाल सब कीन्ह्यो कछू न काना।
विहरत सखन सङ्ग अङ्गन में मारत लकुट निशाना॥
सखी उठाइ लङ्क लै गमनी मचलि परे अङ्गन में।
खेलन लगे खेल पुनि सोई लाल सखन सङ्गन में॥

बहुरि सखी चलि कह रानिन सों खेलत सकल कुमारे
तुमहिं चलहु महरानी ल्यावहु कहा न करत हमारे॥
कह्यो केकई जाइ सुमित्रा लालन करहु कलेवा।
जो बिलम्ब होई भोजन की रिस करिहै नरदेवा॥
अस कहि लियो उठाइ कुमारन भोजन भवन सिधारी
कौशिल्या के निकट सुतन को जेवन हित बैठारी॥
चारि पिढुलिया चारि थरुलिया चारिहु कनक कटुरिय
चारिहु लालन को बैठाइ धरी पुनि लघु बहु खुरियां॥
पायस पूरी ओदन अद्भुत मोदक विविध प्रकारा।
विविध भांति की बनी मिठाई गोरस दधि घृतसारा॥
माखन मिसिरी मधुर मलाई सुरभित विविध मसाले।
लालन लगीं खवावन जननी कहि कहि वचन रसाले॥
दोहा-करन लगे चारिहु कुंवर, भोजन विविध प्रकार।
जननि डोलावहिं कर बिजन, निरखहिं मुख बहु बार॥

छंद चौबोला।

हिलि मिलि भोजन करत लाल सब हँसत हँसावत प्यारे।
छीनत यक कर कौर और कर कहि कहि चोर पुकारे॥
कोउ उठि भागत पुनि नाहिं आवत धिरवत अँगुलि देखाई।
तब बरबस जननी गहि ल्यावैं देहिं पीठ बैठाई॥
सुरभित सलिल पियावहिं कुंवरन कथा अनेक बखानैं।
खेल मगन सुधि कराहिं न भोजन बार बार सन्मानैं॥
एक कौर लीजै पितु की बादि एक कौर बादि मोरा।
एक कौर केकेइ की बादि एक सुमित्रा कोरा॥
जासु कौर नाहिं लाल लेहुगे सो मानी अपमाना।
यदि ... करवावहिं महतारी भोजन व्यंजन नाना॥

इमि भोजन करवाइ माइ सब निज कर कर पग धोई।
पोछि बदन पौढ़ायो लालन पालन में मुद मोई॥
चापहिं पद पंकज कर कंजन सजनी बिजन डोलावैं।
मन्द मन्द रघुनंदन को तहँ प्रिय पालने झुलावैं॥
कथा कहन लागी कौशिल्या सुनियो लाल कहानी।
तनक सोइ पुनि खेलन जैयो पचै पेट कर पानी॥
रह्यो एक दैत्यन को राजा हिरणकशिपु जेहि नामा।
कीन्ह्यो सकल भुवन अपने वश जीति सुरन संग्रामा॥
ताके चारि कुमार भये पुनि अति सुंदर सब भाई।
छोट सुवन कर पिता दियो प्रहलाद नाम धरवाई॥

दोहा–पढ़वावन लाग्यो सुतन, गुरु के सदन पठाय।
लगे पढ़ावन आसुरी, विद्या कवि समुझाय॥
सबै बाल तहँ आसुरी, विद्या पढ़े अजान।
पढ्यो नहीं प्रहलाद सो, यदपि गुरू अनखान॥

छंद चौबोला।

जब गुरु जाहिं करन गृह कारज तब प्रहलाद सुजाना।
बोलि सकल बालकन भक्ति रस करवावहिं हठि पाना॥
आवहिं गुरु जब लेहिं परीक्षा तब बालक सानन्दा।
ज्ञान विराग भक्तिरस भाषहिं कहि माधव गोविन्दा॥
तब गुरु महा कोप करि भाषत इनको कौन नशावै।
जानि परत कोउ विष्णु पक्ष कर मोहि चोराइ इत आवै॥
एक दिवस बालक बोले सब सिखवावत प्रहलादा।
गुरू कछू नहिं दोष हमारो करियत वृथा विवादा॥
तब गुरु कह्यो कोपि प्रहलादहि सिखवावत तू कारे।
कौन आइ धौं तोहिं बिगार्‌यो तूं बालकन बिगारे॥

अस कहि गहि प्रहलाद पाणि को लैगो राजसभा में।
कह्यो दैत्यपति सों यह बालक चलतन मोर कहा में॥
सुनि बैठाइ अङ्क दानव पति पोंछि बदन पुचकारो।
बेटा पढ़ो कौन विद्या तुम देहु परिक्षा सारो॥
तब प्रहलाद विष्णु प्रतिपादन कीन्ह्यो सब सम्वादा।
हिरणाकशिप कोपि बोल्यो तब करि मन महा विषादा।
रे मम कुल बालक तैं बालक सुरपालक कर दासा।
अजहुं छोड़ि दे बुद्धि बावरी नहिं पैहै अति त्रासा॥
दे देखाइ अपने प्रभु को मोहि तौ जानौं तोहि सांचो।
नातौ शीश काटिहौं तेरो तैं मेरो सुत कांचो॥

दोहा--विहँसि कह्यो प्रहलाद तब, मम प्रभु सब थल बास।
मो महँ तो महँ खङ्ग महँ, खम्भहु अवनि अकास॥
इतनो सुनि करि लाल दृग, लै कराल करवाल।
उठ्यो मसकि माहि जानु युग, मनहुँ काल को काल॥
कह्यो दैत्यपति तोर प्रभु, जो सब थल में होइ।
कढ़ै नक्यों यह खम्भ ते, तोहिं रक्षै उर गोइ॥
जबते कहन लगी कथा, तब यतनी लगि राम।
औंघाने हूंके दियो, जहँ जहँ रह विश्राम॥
हिरणकशिप प्रहलाद को, लै कराल करवाल।
कह्यो तोर रक्षक कहां, दे देखाइ यहि काल॥
शरणागत पालक प्रबल, यह सुनि कृपानिधान।
परे पालने राम को, भूलि गयो शिशु भान॥

घनाक्षरी।

कहत कथा के कौशिला के पति सिंधु जाके
फरके प्रचण्ड दोरदंड तेहि काल हैं।

उठि पलना ते ललना के मध्य रघुराज,
कीन्ह्यो महा गाजसी गराज विकराल हैं ॥
हाल्यो भूमि मंडल सुहाल्यो है अमर वास,
चौंके चारि भाल शशि भालहू उताल हैं।
हर वर माची महा खभैर असुर पुर,
भभरि भगाने देव भभैर बिहाल हैं ॥
दोहा–महा अशुभ मन मानि कै, उठी अम्ब अतुराइ।
शिशु शिर कर धरि कहति भै, लाल कहां को आइ।

छन्द चौबोला।

लियो उठाइ अङ्क महँ जननी पोंछि वदन पुचकारी।
राई लोन उतारि बार बहु पढ़ि मंत्रन दिय झारी॥
पुनि गो पुच्छ भ्रमाइ शीश महँ तुरत वशिष्ट बोलाई।
बोलि चेटकिन मातु तुरतही भूपहि खबरि जनाई॥
भूप जानि भूकम्प भीति भरि भीतर भवन पधारे।
जुरि आयो रनिवास तहां सब पूछहिं भ्रम उरधारे॥
कहा भयो यह शोर घोर अति छाइ गयो चहुँ ओरा।
सब ते कहति कौशिला रानी नाहिं जानो कछु मोरा॥
पलन परे मम ललन उँघाने मैं कछु कही कहानी।
वज्रपात सम भै अघात धुनि एकहि बार महानी॥
भूप कह्यो भूकंप भयो अति ताको शोर महाना।
और न जानि परत कारण कछु यही सत्य अनुमाना॥
गुरु वशिष्ट अरु वामदेव तहँ दान करावन आये।
सुनि वृत्तांत नितांत राम के बार बार मुसकाये॥
कह्यो बहुरि राजा रानिन सों तजहु सबै भय भारी।
भूमिकंप को भयो शब्द यह नहिं कछु अशुभ विचारी॥

अस कहि दान करायो पुत्रन शांति कछुक तहँ कीन्हे।
कियो गवन मुनि भवन आपने राम चरित चित दीन्हे॥
भूपति सब कहँ सावधान करि अति अचरज मन माने।
बाहर जाय सभा सामंतन सब वृत्तांत बखाने॥

दोहा-तबते जब सोवहिं लला, तब जननी निज पानि।
धरे रहैं कहनी कहहिं, महा भीति मन मानि॥

छन्द चौबोला।

दुपहर जानि जगे चारिउ सुत उपटन मातु लगावैं।
गरम सुगंधित सलिल विमल रचि सुतन सपदि नहवावैं
देह पोंछि पुनि ऐंछि श्याम कच चोटी सुभग बनावैं।
एक एक मणि भाल उपर गहि फिरि भूषण पहिरावैं॥
पुनि झँगुली तन ताज शीश पर चरण वसन पहिराई।
देहिं ललाट दिठोना सुंदर कज्जल नयन सोहाई॥
बहु विधि करि शृंगार कुमारन सखि मंडल करि संगा।
छोटि छोटि पहिराइ पनहियां नृप दरबार उमंगा॥
कोउ कजरौट जरौट लिये कर कोउ मोरछल कोउ छाता।
राई लोन उतारहिं कोउ सखि कोउपंजा अवदाता॥
यहि विधि चारौ कुँवर सखिन सँग भूपति सभा सिधारे।
पितहि विलोकत प्रथम जाव हम धाये करि किलकारे॥
लषण दौरि कै चढ़े ग्रीव महँ मुकुट पकरि दोउ हाथा।
रिपुहन भरत बैठि युग जानुन मध्य अंक रघुनाथा॥
चूमहिं वदन सुतनकर भूपति टोढ़ी धरि बतरावैं।
सुनि सुनि तोतरि बानि विनोदित हँसैं हेरि हँसवावैं॥
यदपि राज मणि चारिहु पुत्रन करहिं सनेह समाना।
तदपि प्रीति की रीति नीति लखि राम प्रेम अधिकाना।

अति सुन्दर सुकुमार मनोहर रामलषण दोउ ढोटा ।
तैसइ सुभग शील मय सोहत भरत शत्रुहन जोटा ॥
दोहा—कहुँ सिंहासनते उतरि दौरि चढ़ैं नृप अङ्क ।
उदित उदैगिरि में मनहुँ, पूरण चारि मयंक ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि सुतन खिलावत नृपमणि सिंहासन आसीने ।
लहत मोद भट सचिव सभासद पंडित प्रजा प्रवीने ॥
तेहि अवसर गन्धर्व युगल तहँ प्रभुदरशन की आसा ।
चित्रसेन विश्वावसु आये दशरथ नृपति निवासा ॥
करि सतकार उदार शिरोमणि सभा बीच बैठाये ।
करहु गान बालक हुलासहित शासन तिनहिं सुनाये ॥
करि प्रणाम गंधर्व भूप को प्रभुको वंदन कीन्हे ।
महा मुदित सारंग राग तहँ करि अरम्भ दोउ दीन्हे ॥
वीण बजावत मंजुल गावत उपज अमित उपजावैं ।
लै सुर ताल डिगत नहिं नेकौ कोशलनाथ रिझावैं ॥
सुनि गंधर्व गान तानन युत चारिहु राजकुमारे ।
मंद मंद सानंद दुहुँन ढिग रघुनन्दन पगु धारे ॥
सफल जानि गन्धर्व जन्म निज लिये अङ्क बैठाई ।
प्रभु पदरज शिर धारि सुखी भे प्रेम वारि झरि लाई ॥
प्रेम मगन गावन लागे पुनि निरखत चारिहु भाई ।
मंजुल पद लै छन्द ताल युत दशरथ सुयश बनाई ॥
वेला वीति गई बहु गावत वासव की सुधि आई ।
शक्रसभा का समय बीति गो बोले वचन डेराई ॥
हम कहँ देहु विदा भूपतिमणि जाहिं इंद्र दरबारा ।
करि है कोप जो हम नहिं जैहें यही काल नटसारा ॥

दोहा–गंधर्वन के वचन सुनि, गान जानि जिय वंद।
सजल नयन विमनस भये, तहँ चारिहु रघुनंद॥
विमन कुमारन को निरखि, भूपति करि कछु गर्व।
मेघ गिरा बोलत भये, सुनहुँ युगल गंधर्व॥

छन्द चौबोला।

तिहरो गान सुनत मन मोहे चारिहु कुँवर हमारे।
ताते अबै नजाहु इंद्रपुर गावहु सभा मँझारे॥
भीति पुरंदर की जो मानहु तौ हम लिखि यक पाती।
बांधि बाण महँ पठवत यहि क्षण जहँ वासव रिपुघाती॥
अस कहि धनुष मँगाय महीपति लिखि वासव कहँ पत्री।
बांधि बाण महँ तज्यो जोर करि पहुंच्यो सभा पतत्री॥
बँधी बाण महँ पेखि पुरंदर पाती पढ्यो पियारी।
चित्रसेन विश्वावसु को तब दियो हुकुम असुरारी॥
रहैं आजुते अवध नगर महँ दोउ गंधर्व सुजाना।
करहिं गान नित राज सभा महँ खुशी होहिं भगवाना।
दशरथ धन्य धन्य कोशलपुर धन्य सभासद सर्वा।
धन्य भये नृप सभा जाइ के मेरे दोउ गंधर्वा॥
तबते चित्रसेन विश्वावसु सभा जाय नित गावैं।
अमित इनाम राम दरशन युत रोज रोज दोउ पावैं॥
पुनि वसुधाधिप बोलि बालकन कही विनोदित बानी।
जननि भवन कहँ गवन करहु अब भै संध्या सुखदानी।
करिके बिदा कुमारन को नृप संध्योपासन कीन्ह्यो।
वदन प्रसन्न सदन गुरु गमने मुनि बंदन करि लीन्ह्यो।
पुनि गुरु सों कर जोरि कह्यो नृप सुनिये देव कृपाला

चूड़ाकरण करण बेधन को आयो यह शुभ काला ॥

दोहा-सचिवन आयसु देहु प्रभु, करहिं सकल संभार ।
तुम्हरी दया मिले हमैं, ये सुकुमार कुमार ॥

छन्द चौबोला।

मुनि कह भली बात भाषी नृप अब विलंब नहिं होई ।
चूड़ाकरण करणवेधन को सुख लूटै सब कोई ॥
अस कहि विदा कियो भूपति को सचिवन सपदि बोलायो ।
चूड़ाकरण करणवेधन को शासन सुखद सुनायो ॥
सचिव कहैं कर जोरि सुनहु गुरु है तयार संभारा ।
तेहि दिन होय उछाह अमित जब शासन होय तुम्हारा ॥
शोध लगन सुदिवस मुनिनायक किय रनिवास जनाऊ ।
चले सचिव शिर धरि मुनि शासन जाय जनाये राऊ ॥
चूड़ाकरण करण वेधन कों जब आयो दिन सोई ।
खैर भैर माच्यो कोशलपुर प्रजा सुखी सब कोई ॥
भोरहिं ते जागीं रानी सब भूषण वसन सँवारी ।
जोरि सखिन मंडल गावत कल रङ्गभवन पगु धारी ॥
इत राजवंशिन रघुवंशिन जोरि राज मणि आये ।
विशद रङ्गमन्दिर अङ्गन में द्रुत दरबार लगाये ॥
गुरु वशिष्ठ अवसर विचारि तहँ चारिहु कुँवर बोलाये ।
गौरि गणेश पूजि पुण्याह सुवाचन सविधि कराये ॥
सोहर परम मनोहर घर घर गावन लागीं नारी ।
बाजन बाजन लगे विविध विधि सुम बरषहिं असुरारी ॥
कोउ गावैं कोउ बाज बजावैं कोउ नाचहिं दै तारी ।
राजभवन महँ महा मोद गुनि कोशल प्रजा सुखारी ॥

दोहा-गये कुमारन के निकट, दशरथ भूप उदार ।

बैठायो निज अङ्क में, चारिउ राज कुमार ॥

छन्द चौबोला ।

भूपति कह्यो मिठाई देहैं लालन कान छेदाये ।
अति विचित्र भूषण पुनि देहैं शिर मुंडन करवाये ॥
परम निपुण सुख कर वरनापित लीन्ह्यो तुरत बोलाई ।
क्रम सों चारि कुमारन को नृप दिय मुंडन करवाई ॥
परम मनोहर काकपक्ष युग शिखा राखि शिर दीन्ही ।
करणवेध पुनि कियो सुतन कर रङ्गनाथ नति कीन्ही ॥
सम्पति अगणित दियो भिखारिन कीन्ह्यो दारिद दू
वजे नगारे गगन अपारे पुहुप वृष्टि भै भूरी ॥
पुनि भूपति चारिहु सुत संयुत भोजन करन विराजे ।
रङ्गनाथ को पाइ प्रसादहि पूरण भे सब काजे ॥
बैठीं तहँ सिगरी महरानी पीत वसन तन धारे ।
मनहुँ क्रिया सब ब्रह्म वपुप ढिग सोहत तहँ फल चारे ॥
छोटी शिखा छोटि जुलफैं युग मुंडित शिर अति सोहैं ।
मानहुँ पुंडरीक महँ चहुँकित भवँर वृन्द मन मोहैं ॥
झालियां लसहिं कनक की कानन हीरन जड़ित नगीने ।
मनहुँ देत कवि जीव मंत्र कछु पूरण शशिहि प्रवीने ॥
पीत पाग जामा कटि फेटो चारिहु कुँवर सोहाहीं ।
मनु आतप रंजित घन घेरे चारि दिवाकर काहीं ॥
पुनि कुँवरन आगू करि राजा वाहर सभा सिधारे ।
सचिव पौर सामन्त आदि सब कोटिन मणिगन वारे ॥

दोहा—चढ़ि नालकी नरेश तहँ, संयुत चारि कुमार ।
रङ्ग महल गमनत भये, सङ्ग सचिव सरदार ॥
यहि विधि विहरत अवधपुर, नित नित नव आनन्द ।
आठ वर्ष के होत भे, चारिहु भूपति नन्द ॥

घनाक्षरी।

छोटीछोटीतानैंशीशराजैंग्रहराजैंसमछोटीछोटीफिनियाँफवीहैंछोटेकानमें
छोटीकण्ठीकठुलेविराजैंछोटेकण्ठनमेंछोटेछोटेअङ्गदसुछोटेसेभुजानमें॥
छोटेजामाछोटेपायजामापायपङ्कजलोंछोटीछोटीघुँघरूसुबाजैंनूपुरानमें
छोटोबाहियमेंलीन्हेछोटोसीधनुहियाँपनहियाँपगनरघुराजचलैंसानमें
छोटेनैनछोटेवैनशोभएेनचैनभरेखेलिरहेखूबछोटेछोटेसेसखानमें ॥
छोटेछोटेछत्रछोटे छोटेआतपत्रतत्र छोटेसे पतत्र छोटेतूणतेजवानमें।
भनेरघुराजराजराजकेदुलारेराजैं मदनपराजै होत औरको जहानमें।
छोटीढालछोटीह्वालतामैंकरवालछोटीछोटेछोटेलालऔधपालअंगनानमें
जननी जगावैं प्रात मज्जनकरावैंवेगि मेवाकेअनेकनकलेवाःकरवावैं हैं॥
अति सुकुमारनकुमार नसिंगारिनीके सखन समेतपितापासपठवावैंहैं
रघुराजराजराजदेखिरघुनन्दनकोपरमअनन्दनसोअङ्कबयठावें हैं ॥
दानकोसिखावैंमानकरनासिखावैंत्योंकृपाणचलवावैंत्योंकमानचलवावैंहैं

सोरठा—सुदिवस सुखद सोधाइ, भेज्यो भवन वशिष्ट के।
विद्यारम्भ कराइ, लगे परिक्षा लेन नित॥

छंद चौबोला।

थोरेही दिन में सब अक्षर अक्षर प्रभु को आये।
भाषाबन्ध प्रबन्ध छन्द युत चारहु बन्धु सोहाये॥
जौन पढ़ैं गुरु भवन सुवन सब सो नित पितहि सुनावैं।
सुनत सराहत सकल सभाजन जननि जनक सुख पावैं॥
एक दिवस यक गुणी अपूरब राजसभा महँ आयो।
लहि नृप शासन सामग्री निज कौतुक की फैलायो॥
देखन को धाये नर नारी शोर भयो रनिवासा।
राजकुमार तुरत चलि आये देखन हेतु तमासा॥
बैठे पिता अङ्क रघुनन्दन भरत शत्रुहन जानू।

लषन कूदि चढ़ि गये कंध महँ मनहुँ मेरु पर भानू ॥
करणाटकी हाटकी सुंदर सभा तुरन्त बनाई ।
ढोल बजाय बखानि भूप कहँ दिय आवर्त लगाई ॥
पुनि अति मंजुल विविध भांति के लग्यो बजावन बाजे ।
जेहि सुनि विद्याधर चारण किन्नर गंधर्वहु लाजे ॥
करणाटकी नटी प्रगटी पुनि घटीघटी सो नटती ।
चलति चटपटी परम अटपटी नटन मांहिं नहिं नटती ॥
नेसुक गाइ देखाइ भाव बहु करिके कला कितेकी ।
नृपहि कियो पुनि विनय जोरि कर देखहु कृतयुग नेकी ॥
सकल प्रजा अति सुखी भये जब कृतयुग जग महँ आयो ।
त्रेता द्वापर सुख दुख किय सम कलियुग दुखहि बढ़ायो ॥

दोहा–सो सतयुग को आगमन, प्रथम लखो महिपाल ।
अस कहि अन्तर्धान भै मध्य सभा सों बाल ॥
बजे नगारे सुमति के, सेत ध्वजा फहरान ।
मनहुं अपूरब धर्म को, पूरब प्रगट्यो भान ॥

घनाक्षरी ।

सोहतवसनसेततरलतुरङ्गसेतकेतुत्योंसपेदगले तुलसीकीमालहै ।
रघुराजमूरतिमनोज्ञमनोधर्महीकीउर्द्धपुंड्रचन्दनकीछाईदुतिभालहै ॥
हरेरामहरेरामहरेकृष्णहरेकृष्णवदनउचारनकरतसबकालहै ।
धर्मकोपसारतविदारत अधर्मनकोआयोदरबारसतयुगमहिपालहै ॥

दोहा–बैठ्यो सिंहासन जबै, सतयुग भू भरतार ।
दूतन को दीन्ह्यो हुकुम, ल्यावहु मम सरदार ॥

सवैया ।

दूत सुनिर्मल मानस दौरि के मंत्री विवेकै सुनायो रजाई ।
भूप बोलायो तुम्हें सबको जग कारज हेत चले अतुराई ॥

श्रीरघुराज चले सिगरे तहँ लीन्ह्यों विवेकहि को अगुवाई ।
सत्य सुशील सकोच सुसाहस धीरज धर्मन की समुदाई ॥
धर्म अधर्म को भेद देखावत हंस सो छीर औ नीर समानै ।
ईश औ जीव के बीच में सेवकस्वामि को भावविभासतज्ञानै ॥
श्रीरघुराज सतोगुण सेत विराजत रूप अनूप महानै ।
पुण्य औ पाप पथै प्रगटावत आयो विवेक प्रधान दे मानै ॥

सोरठा—उठि सतयुग महिपाल, बैठायो अपने निकट ।
सचिव विवेक विशाल, करि वन्दन बैठत भयो ॥

सवैया ।

विश्व को द्रोह दुरावत दीह देखावत नादुवनै दुनियां में ।
मित्रता मंजुल मोद बढ़ावत आपनेही सबको वश कामें ॥
भूमि को भूपण श्रीरघुराज वशीकर मंत्र यही सब यामें ।
अम्बर चित्र विचित्र विराजत आयो सुशील यशील सभामें
पाप को मूल उखारत टारत धर्म को मूल महीमेंजमावत ।
त्यों यमराज को बास उजारत नर्क को आमद आसुघटावत
श्रीरघुराज अनेकन धर्म सहाय करावत सन्तन भावत ।
आइ सभा महँ सत्य जू सोहत ठालचीओलवरान कोलावत
गोवत औरन के अपराधन और के हेतु सहैं दुख केते ।
छोडैं नहीं कबहूं मरयाद करैं सबको अहलाद सचेते ॥
और के काज के हेतु तजै निज काज सुलाज के बांधतनेते ।
श्री रघुराज सभा महँ आयो सकोच अपोच विमोच सँकेते ॥

दोहा—मेटत अमित अनर्थ को करि शुभ अशुभ विचार ।
साहस आयो तेहि सभा सहत सुखदु दुख भार ॥

सवैया ।

केती विपत्तिन की प्रभुता जग मेटत सो अपने परभाऊ ।

प्रतीहार तब धाइ, दूत खबरि आवन कह्यो ।
भूपति लियो बोलाइ, आइ चार शिर नाइ कह ॥

कवित्त ।

पायकेस्वयंभुजूकोशासननरेशत्रेतादीन्ह्योंहैंनिदेशसुनोकृतमहाराज सो ॥
पालतजगततुम्हैबीतिगेबहुतदिनछाइरह्योसतोगुणविश्वमेंदराजसो ॥
पूजिगोप्रमाणअबअपनेमकानजाहुअबतोजहानमेंहमारोआयोकाजसो
धर्महूचलैहैंकछुअर्थहूचलैहैं कछुकामहूचलैहैंकछुभनैरघुराज सो ॥
त्रेताजगनेताजानिविधिअभिप्रेतामानिसतयुगपरमसचेताकह्योदूतको
मेरोलघुभाईत्रेताहोइराजाकरैराजहौंतोअबजाउँ जहांधामपुरहूतको॥
असकहिसतोगुणीसतयुगशीलभरोसाधारणसपदिसिधायोराखिसूतको
वेदमेंपुराणमेंबखानरघुराजजाकोकृतयुगसमयुगभावो नाहिंभूतको ॥
सोरठा—सिंहासन आसीन,भयो आइ त्रेता नृपति ।
ताके सुभट प्रवीन, आये सब दरबार में ॥

कवित्त ।

धर्मआयोअर्थआयोकामआयोआशाआईराजनीतिआईसुखदुखआदिआयेहैं
जपतपयोगरहेशुद्धजेसतोगुणमेंथोरीक्षातिथोरीक्षमाथोरेछलछायेहैं ॥
एकअंशधर्मघटचोतैसेसतोगुणहट्यो रजोगुणआइसत्योप्रजाअर्थभायेहैं।
भृगुकुलराजरघुराजरघुवंशराज हरिअवतारभूमिभारकोनशायेहैं ॥
त्रेताजगजेतामहाराजकोहुकुमचल्योयज्ञकरिदानकरिपावैनिरवानको
क्रियाकरिअर्थपावेअर्थयुक्तधर्मभावैरजोगुणसहितसतोगुणप्रमानको।
जौनजसकर्मताकोतौनतसफलदैजेराखोक्रियामुख्यहानिलाभअनुमानको
भनैरघुराजसबकाजकरोलाजराखिअर्थधर्ममोक्षहेतुभजोभगवानको॥
करैलागेयागजनजगतविधानवेदकोऊनिहकामकोऊकरतसकामहैं ।
कामनारहितकीन्हेपायेनिरवाणफलकामनासहितकीन्हेपायेस्वर्गधामहैं॥
यजनकेयोगतेजनार्दनको जोवजो है अर्थनाहिंव्यर्थभेअनर्थकेननामहैं

त्रेतामहाराजरघुराजराजकीन्ह्योखूबपायेप्रजाविश्वबीचवेशविसरामहैं
ताहीसमैचपलासीचमकिचहूंघाचायकढ़िआईचपचमकायचारुनटीहैं
राजकेकरतत्रेताराजसोंवचनबोलीबोलीनहिंमानोंमेरेवैनयही पटीहै॥
भनैरघुराजविधिआयसुतेआसुअबद्वापरअवाईकी देखाई चटपटीहै।
पूरोह्वैगयेप्रमाणआपकीजियेपयान चलिहैनरावरीनरेशनटखटीहैं।

दोहा–सुनि विरञ्चि शासन प्रबल, त्रेता गयो झुराय ।
कुसुमित फलित महीरुहे, गाज परै ज्यों आइ ॥
उतरि सिंहासन ते तुरत, मन में मानि खँभार ।
त्रेता गयो विरञ्चि पुर, तजि जग को संभार ॥

कवित्त ।

रजोगुणतमोगुणदोऊउभैओरराजैंसतोगुणपीछेचलोउदासीनआवै है।
कामक्रोधलोभमोहमत्सरउराउभरेसत्यऔअसत्यदयाहिंसासंगभावैहै॥
धर्मयुगपादअहलादतेविहीनवेश ग्रंथसतपंथसतसुखदुख छावै है।
पुण्यपापजापतापसरिसप्रतापथापद्वापरदिगन्तनलोंदापदरशावै है॥
द्वापरादिवाकरसोंवैठोहैसिंहासनमें हाकिमी हुकुम करसरिसपसाराहै।
करैंधर्मकर्मसबस्वारथ के हेतपरमारथकोजानिवोअकारथउचारा है॥
भनैरघुराजपरिचर्य्याहीतेसिद्धिहोइजपतपयागयोगदम्भकोसहाराहै।
कलहकुरीतिकूटकपटकृपिणताईकामकामिनीकोकछुभयोअधिकाराहै

सोरठा–द्वापर कीन्ह्यो राज, यदपि प्रमाणहिं आपने ।
अधिक अधीन समाज, पुण्य प्रवीण विहीन बल ॥
लीन्ह्यो प्रभु अवतार, यदुवंशिन के भवन में ।
श्री वसुदेव कुमार, हरन हेतु भू भार के ॥
भयो दुती अवतार, दया करन जीवन उपर ।
बुध जेहि नाम उदार. जैन धर्म प्रगट्यो अवनि ॥

कवित्त ।

एकदिनवैठेदरबारमध्यद्वापरकेदद्वापरयोचारोंओरदाइदाइ ह्वै रहो ।

आयोदूतआयोदूतबड़ोमजबूतद्वारभूपबोलवाइबेकोप्रतीहारसोंकही॥
भनैरघुराजआइगयोसोसभाकेबीचताकोदेखिकौनजाकेभैनउरभैनहीं
अतिबिकरालललाललोचनविशालकह्योहालकलिकालमहिपालदूतहौंसही

सोरठा—कलियुग पठयो मोहिं, मंत्र कहन तुमसों कछू।
विधि निदेश दिय तोहिं, जाहु भवन मिति पूजिगे॥
भयो हमारो राज, जो न हुकुम अब मानि हो।
ह्वै है बड़ो अकाज, तुमहिं निकासब दंड दै॥
द्वापर सुनत डेराइ, कह्यो दूत सों अस वचन।
हौं यह राजि बिहाइ, चलो जात विधि के सदन॥
अस कहिद्वापरराज, कलियुग के भय भागि गो।
भयो दूत कृत काज, गयो भूप कलिकाल पहँ॥

कवित्त।

पाइकैखबरखूबीखुशीमानिखक्खामारिखल्कक्केखालीकरिबेकोखैरभैरसों
सैनहीसो सैन बोलि चैनऐनआनिटर सैनपति मैनकरिभैनऐरगैरसों॥
भनै रघुराजडङ्कादैकैकलिकालचल्योमहिपसवारअघतोपनकीफैरसों
सचिवअधर्मआगेअसतिअनीतिपाछे आतिशैडराउधरेधर्महीकेबैरसों।
कुपथशपताकेकारे कुपथकेनागकारेकूरताहुरङ्गकारेपैदरकपटके॥
कामहैहरौलकोहप्रबलमुसाहिबहै मुख्यमंत्रीमोहमित्रमत्सरानिकटके।
लोभहैसजानचोपदामदहैन्यापक [illegible] नटके
भा [illegible] नभटपापनटखटके॥
कीन्हेहैं [illegible] प्यारहै

देखि रघुराज भूप विहँसे ठठाइकै।
ठिकै सिंहासन में शासन पसारयो कलि
शत विवेक निज नाम को सुनाइकै॥
वेव सुभट सरदारन को बोलि बोलि
दैदै भेज्यो तुम देशन में जाइकै।
न को मारो पुण्य पुर को उजारो
धर्ममूल को उखारो यज्ञशालन जराइकै॥
सुनि कलिकाल के प्रवीर रणधीर धाये
आसु अविवेक ढाहि दीन्ह्यो ज्ञान कोट को।
लोभ हन्यो तोपै त्यों दया को दौरि कोह हन्यो
काम मारयो लाज औ विवेक अति मोट को॥
मद मारयो शील को कुशील मारयो सौहृद को
मत्सर निपात्यो नीति प्रीतिही के जोट को।
भाषैं रघुराज परमारथ को स्वारथहूं
कैं दियो अधर्म धर्म बन्द लोट पोट को॥
छल नाश्यो शुद्ध बुद्धि दम्भ नाश्यो साधुताई
अहङ्कार नाश्यो ब्रह्म विमल विचार को।
नाश्यो अपकार दौरि पर उपकारहू को
विपुल विकार शुचि आलस अचार को॥
नाशी कुटिलाई सरलाई को भलाई भ्रम
नाश्यो शठताई सतसंगन अपार को।
भनै रघुराज त्यों विचार को हठायो हठ
विषै जग लूटि लीन्ह्यो भक्ति के भँडार को॥
राग त्यों विरागै वध्यो मोह मेट्यो मुक्ति पथ
मारयो मृषा सत्य को अधीरज त्यों धीर को।

कामना अकामै कूटचो भव की त्यों भावना
भगायो हरि भावना को कोदो दल्यो खीर को ॥
भनै रघुराज तैसे अतिथि के आदर को
आसुही अनादर उदारयो कारि पीर को।
जप तप योग याग अरुचि उडाइ दीन्ह्यो
कारपण्य कैद कै लियो उदार वीर को
व्रत प्राणायाम यम नियम त्यों संयमहूं
नाशे रोग रारि करि कलि को प्रताप है।
दुष्कृत विनाश्यो सब सुकृत सहजही में
कीन्ही क्षमा छाम दीह दंड करि दाप है ॥
भनै रघुराज तैसे चातुरी को आतुरीहू
पातुरी विसन नाश्यो सम्पति अमाप है।
निठुर निकास्यो नेह शूरता को कदराई
पुण्य को पराज्यो कलि छाप करि पाप है ॥

दोहा-परचो हुकुम इछा जगत, कलि नृप को अति घोर।
धरम धुरा धरणी धस्यो, भग्यो धरम जिमि चोर ॥

कवित्त।

छोड़िछोड़िधर्म कर्ममनुजमलीनअतिकरैलागेपापपरमारथविहाइकै।
नारीतजिपतिनपरोसिनसोंप्रीतिकीन्ह्योपुत्रपितादेखिदांतपीसैरिसिहाइकै।
माताकोनिकारैंत्योंहींभ्राताकोनिनारेकरैंजोवैंमुखदारैंवारवारशिरनाइकै
भनैरघुराजपरनारिनसोंप्रेमकैकैसम्पतिकोखोवैंपुनिरोवैंपछिताइकै ॥
ब्राह्मणकहाइसबवेदसनवन्धछोडेतीनितागसूत्रहीतराखैं वँभनाई है।
जैवपोवैंदजापांचचारिसैंविवाहनमें तेईचोखब्राह्मणह्वैपावतबड़ाई है ॥
संध्याशाखासूत्रसंहिताहूकोनलेशकछुभनैरघुराजज्ञानभक्तिकोचलाईहै
वामकेगुलामकरैंकामनिजयमयामधामधाममेंगैंभीखलेंवनसुनाईहै॥

खेतीमेंनिपुणवासछोलैमेंनिपुणवोझाढोवैमेंनिपुणमूखतामेंनिपुणाई है
ऋणमेंनिपुणव्याजलेनमेंनिपुणभयेव्यौहरनिपुणस्वर्गकौडीकीकमाई है
चोरीमेंनिपुणचानडालीमेंनिपुणतैसेचुगुलीनिपुणत्योंहींनिपुणढिठाई है
भनैरघुराजघरकाजमें निपुणनहीं एकमें निपुणजातेरीझैयदुराई है॥

सवैया।

किङ्कर काम के कोह के कूकुरे कूरता कादरीमें कठिनोई।
कोक कलान के काम करैया कहैया कुढंग कपार कराई॥
कञ्चन कामिनी काजकेकाजिल काजीकुशास्त्रनकृत्यकुनोई।
कूसुर कर्म कहौं कहँ लों करनैल वने कलि के सव कोई॥
काम कलानि में खासे प्रवीण रचे रसग्रंथनिनायकानायक।
काम कथैंहरिही की कथा नहिंभक्तिविरक्तिमहासुखदायक॥
रास कोहासकोत्योंहीविलासकी आपैसवैनहिंआपनलायक।
नाम सिंगारी न हैंअधिकारीमहीपभिखारीअकीरतिमायक॥
केते करैं रोजिगार सदा तरवार को लीन्हे जुझार महावैं।
वेद विधान के ज्ञान नहीं कछु धर्म अधर्म को ज्ञान भुलावैं॥
श्रीरघुराज सिखाये ते खीझत रोजही रीझे रहैं गणिकावैं।
शाखा न सूत्र न संहिता जानत सांचे महापशु विप्रकहावैं॥
हीन अचार विहीन विचार ते पालत हैं परिवार सदाहीं।
खेती में खोइ दियो सिगरी वय पै परमारथ लेशहू नाहीं॥
श्रीरघुराज भनै धन के हित द्वारहि द्वार न जात लजाहीं।
ठानि उपास जनेऊ को तोरत फोरत मूड़ ते विप्र कहाहीं॥
सम्पति भूमि के हेत अनेत न भूपति को कछु शासन मानैं।
धींग मों लिया बधि ठौर करैं कछु औरहि और बखानैं॥
पेट को मारि मरैं पुनि भूत है लोग पुजावत हैं [illegible] समानैं।
श्रीरघुराज भनै तिनको [illegible] कहैं नहि [illegible] जानैं॥

ऐसे अनेकनि भांति के कौतुक जे कलि धर्मनि कर्मनि साने ।
कीन्ह्यो विदूषक राज सभा मधि देखत बालक नाहिं अघाने ॥
ज्योंज्यों नचै करैं कौतुककौतुकी त्योंत्यों निरातलखैं ललचाने।
श्रीरघुराज विलंब विचारि महीपति बैन कहे हरषाने ॥
कौतुकी कौतुक कीन्ह्योभलो युगयाम बितीते भयो अतिकाले ।
बन्द करौ अब फन्द सबै जननी बोलवावतीं लालन हाले॥
यों कहि भूप तुरन्त सुमन्त को शासन दीन्ह्यो उदारउताले ।
देहु इनाम इन्हें गज बाजि विभूषण सम्पति शाल दुशाले ॥

दोहा—तहां सुमन्त तुरन्तहीं, नट को निकट बोलाय ।
नृप अज्ञा अनुसार ते, दीन्ह्यों सकल मँगाय ॥

छंद चौबोला ।

चारिहु बालन निकट बोलि नृप वदन चूमि अस बोले ।
मातु भवन अब सुवन जाहु सब भोजन करहु अमोले॥
कहे कुँवर तब पिता सङ्ग तुवभोजन करब तहाँहीं ।
नाहिं जैहैं नाहिं खैहैं तुम बिन बैठे रहब इहाँहीं ॥
सुनि शिशु वचन विहँसि भूपति मणि आसुहिं उठे अनंदे ।
उठे सकल सामन्त शूर सरदार नरेशहि बंदे ॥
गवने मन्द मन्द सानन्दित चहुँकित चारि कुमारा ।
मानहुँ लोकपाल चारिहु दिशि मध्य लसत करतारा ॥
परिचर सहसन चले संग ले छरी छत्र औ चौंरा ।
फिरे तीनि डेवढ़ी ते परिजन चलीं अली चहुँ ओरा ॥
अंतहपुर प्रवेश करि राजा गये कौशिला अयना ।
नृप सँग चारि कुमार निहारि सुफल भे सब के नयना ॥
भूपति भोजन भवन पधारे बैठि करन जेवनारे ।
कनक रजत भाजन बहु सोहत चहुँकित चारि कुमारे ॥

चारु चारि चामीकर के तहँ धरे सुवारन थारा ।
पंचम थार भूप के आगे व्यंजन विविध प्रकारा ॥
लागे भोजन करन भूमिपति नारायण मुख भाषी ।
विविध बात बतरात हँसत कछु महा मोद मिति नाषी ॥
भूपति भोजन करत श्रवण सुनि सहित कुमारन चारे ।
आई तहँ कैकई सुमित्रा द्रुतकौशिला अगारे ॥

दोहा—औरहु सब रानी तहां, कौशिल्या के अयन ।
आय अवनिपति सुत सहित, देखि सुफल किय नयन ॥

कवित्त ।

नृपबतरातजातमंद मुसक्यातजातमंदमंदखातजातआनँदविचारिकै ।
निरखिकुमारसबछोरिछोरिथारनिजबैठेपितुभाजनकेनिकटासिधारिकै ॥
भैनरघुराजजोलोंसानैनृपव्यंजनलै बचननखानैबहुयुक्तिनउचारिकै ।
तौलोंखायलेतसानोव्यञ्जनकोचारोनंदहँसतनरेंद्रखालीथालीकोनिहारिकै ॥

दोहा—पायस अपने हाथ सों, सांनि सांनि रचि कौर ।
जात खवावत सुतनको, नर नायक शिरमौर ॥

छंद चौबोला ।

भोजन करत एक व्यञ्जनजो सोतीनों सुत लेहीं ।
जो पारत ताते पुनि झगरत जो न देत तेहि देहीं ॥
कतहुँ कतहुँ झगरत चारिहु सुत भूपति तारि बचावैं ।
कोउ काहूके ऊपर डारि कछु अवनिप संकुहि जावैं ॥

पानि पियावत कबहुँ खेलावत पावत मोद तहाहीं ॥
लरत बचावत कथा सुनावत दुलरावत बहु बारा।
हँसत हँसावत रीझि रिझावत लूटत सुख संसारा ॥
धनिधनि दशरथ सूपकार सब हरि भोजन अधिकारी।
यज्ञ भाग जो नहिं अघात सो जिन कर रचित अहारी ॥
करि भोजन नृप सहित कुमारन गवने अँचवन हेतू।
अँचै शयन के अयन सिधारे चैन भरे नृप केतू ॥
धात्री सकल कुमारन को तहँ जननि निकट लै आईं।
बीरी वदन खवाइ शयन महँ पाइँ पलोटि सोवाईं ॥
यहि विधि रोज रोज रानी सब राजा सहित सुखारी।
बालकेलि लखि निज बालन की सालन जात बिचारी ॥

दोहा–एक समय मधुमास में, राम जनम दिन जानि।
कौशिल्या आनंद भरि, मज्जन करि अतुरानि ॥

छन्द चौबोला।

पहिरि पीत पट रंगनाथ के भवन गईं सुख सानी।
करि पूजन षोडश उपचारन कही जोरि युग पानी ॥
अचल करहु अब सुख सम्पति प्रभु यह सब विभव तुम्हारा।
अस कहि गईं पाकमंदिर महँ व्यञ्जन रचन अपारा ॥
तहँ खेलत देख्यो रघुनन्दन तब चित भै दुचिताई।
सुतहि कौन ल्याई यहि थलमें हौं सोवाइ उत आई ॥
अस कहि ललन लखन को दौरी जहां पलन प्रभु सोये।
तहाँ लख्यो सोवत अपनो सुत महामोद मन मोये ॥
दौरि पाकमंदिर महँ आई भोजन करत निहारी।
महा भीति उपजी मन में यह शङ्का टरै न टारी ॥
चकित जानि जननी जिय रघुपति वपु विराट दरशायो।

कोटि स्वयंभु शंभु शक्रादिक बहु सुर कौन गनायो ॥
वदन हजारन चरण हजारन नैन हजारन सोहैं ।
गिरि कानन सर सरित सिंधु युत महिमंडल वन मोहैं ॥
रोम रोम प्रति कोटि कोटि ब्रह्मांड निहारयो माता ।
कालहु कर्म सुभाउ प्रकृति जिय माया अति अवदाता ॥
देखि विराट रूप सुत को तव नारायण जिय जानी ।
अस्तुति करन लगी कौशिल्या जोरि जलज युग पानी ॥
विश्वाधार विश्वपालक प्रभु सिरजक नाशक सोई ।
आदि अनंत अचिंत्य अनादि अगोचर अज तुम ओई ॥

दोहा—वात्सल्य रस हानि लखि, हरि लीन्ह्यो हरि ज्ञान ।
पुनि पलना सोवन लगे, प्राकृत बाल समान ॥

छंद चौबोला ।

यहि विधि लीला करत अनेकन देत मोद पितुमातै ।
विहरत अवध नगर रघुनंदन सहित तीनिहूं भ्रातै ॥
बीति गये कछु काल मोद मय भे नव वर्ष कुमारा ।
जननी जनक करन तब लागे मनहीं मनै विचारा ॥
एक समय दशरथ नरनायक अंतहपुर पगु धारे ।
कौशिल्या केकई सुमित्रा सपदि सहर्ष हँकारे ॥
लै लै सुतन सङ्ग अति आतुर महरानी सब आई ।
औरहु त्रिशत साठि महिषी सब आईं तहँ सुख छाई ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रे कह्यो महीपति बैना ।
भये कुमार वर्ष नव के सब केशव कृपा सचैना ॥
चाही कियो हमहुँ तुमहूँ को अब व्रतबंध विचारा ॥
एकादश हायन के अन्तर लहैं जनेउ कुमारा ॥
कह्यो कौशिल्या पुलकि पुलकि तन बुलकि उछाह अपारा ।

गुरु वशिष्ठ सँग करि सुमंत्र पिय करहु सकल संभारा ॥
निज अभिमत सब रानिन को मत जानि उठे अवधेशा।
गये सुमंत्र सहित अति आतुर तेहि क्षण गुरू निवेशा ॥
करि वंदन पद जोरि कंज कर विनय कियो शिर नाई।
उचित होइ तौ कुँवरन को व्रतबंध करौं मुनिराई ॥
गुरु कह अब न विलंब करौ व्रतबंध काल यह साँचो ॥
बोलि विविध दैवज्ञ तज्ञ उपवीत यज्ञ दिन राँचो ॥
दोहा—अस कहि मुनि पुनि पुलकि तन, सुनहु सुमंत्र सुमंत।
सुदिन रचन हित ज्योतिषी, आनहु इते तुरंत ॥

छन्द चौबोला।

तहाँ तुरंत सुमंत गणक गण ल्यायो ललकि लेवाई।
गुरु वशिष्ठ आज्ञानुसार ते दीन्ह्यो सुदिन बनाई ॥
वचन कह्यो गुरु रचन हेतु व्रतबंध यज्ञ संभारा।
पगुधारो नरनाथ निलै अवदूसर नाहिं विचारा ॥
करि प्रणाम गुरु पद पंकज को भूपति भवन सिधाये।
अनुजन सहित राम व्रतवन्ध करन की साज सजाये ॥
फिर्‌यो निमंत्रण महिमंडल में होत राम व्रतवन्धा।
देश देश के सब नरेश जिन कोशलेश सनबन्धा ॥
ते सब हरषि अवध पुर आये भयो महा संघर्षा।
परै राम के कंध जनेऊ यहै हर्ष उतकर्षा ॥
सकल सुयोग सहित सो सुदिवस आइ जबहिं नजिकाना।
अवध नगर घर घर बहु बाजन बाजन लगे निसाना ॥
माड़ो गड़ो रंगमन्दिर के अंगन वेदविधाना।
ताऊपर जरकसी कसीदा मणिमय विशद विताना ॥
जानि प्रभात काज कौशिल्या उठो रैन कछु बाकी।

करि मज्जन पटपीत पहिरि तन अति आनँद रस छाकी॥
गई रंगमन्दिर वंदन करि सादर पूजन कीन्ह्यो।
बहुत मनाइ नाइ शिर प्रभुपद गवन भवन मन दीन्ह्यो॥
लगीं मातु सब साज सजावन भै व्रतवन्ध तयारी।
मुनिन सहित तहँ गुरुवशिष्ठ पगुधारे आनँद भारी॥

दोहा–जेहि जस देत निदेश गुरु, सो तस ठानत काज।
विप्र सचिव परिजन प्रजा, पूरण सदन समाज॥

छंद चौबोला।

जानि मुहूरत गुरुवशिष्ठ तहँ चारिहु कुँवर बोलायो।
राज समाज सहित दशरथ महराज कुँवर युत आयो॥
बाजत विविध मनोहर बाजन घर घर मङ्गल गावैं।
राचहिं नारि मनोहर सोहर मोहर मुदित लुटावैं॥
नारी सहसन शिर धरि कलशन गावत आईं आगे।
तिनके पीछे कुँवर चारि युत भूप चले बड़ भागे॥
जबहिं यज्ञ मंडप महँ भूप कुमारन संयुत आये।
तेहि अवसर को आनँद सहसानन मुख चुकै न गाये॥
राज समाज विराजत वैदिक विप्र समाज दराजा।
उतै रङ्ग मन्दिर महँ नारि समाज सोहाति सलाजा॥
छाइ रही मख मंडप अन्तर विप्र वेद धुनि धारा।
नचहिं नर्तकी विविध कला करि दशरथ भूपति द्वारा॥
रघुवंशी सरदार नाग चढ़ि सम्पति हुलसि लुटावैं।
भैर भेर मचि रह्यो अवधपुर कोउ आवैं कोउ जावैं॥
तहँ वशिष्ठ मुनि सो महीप कह कृत्य करावहु नाथा।
तुम्हरी कृपा लहे हम यह दिन रघुकुल भयो सनाथा॥
तहँ महीप चारिहु कुँवरन की अलकावली निहारी।

जानि क्षौर व्रतवन्ध विहित विधि भरि आये दृग वारी ॥
चारि कनक चौकिन में चारि कुमारन को वैठाये।
दानकराइ वेद विधि अनुसर मुनि मुंडन करवाये ॥
दोहा--अलक विगत मुख लसत अस, जलद पटल बिलगाइ।
मनहुँ कढ्यो पूरण शशी युग, अहि सुत उर लाइ ॥

छंद चौबोला।

वेद विधान कराइ मंजु मेखला प्रभुहि पहिरायो।
मनहुँ नीलमणि महिधर के मधि वासुकि अहि लपटायो ॥
जासु नाम श्रुति पंथ परतहीं पाप परावन होई।
तेहि प्रभुके श्रुति पथ गायत्री मुनि उपदेश्यो सोई ॥
मंजु मेखला धारि दंड लै प्रभु पहिरे कोपीना।
भिक्षा माँगन हेतु ठाढ़ भे चारिहु वन्धु प्रवीना ॥
श्याम वरण तन कनक जनेऊ सोहि रह्यो छवि खानी।
मनु तमाल में सोन जुही की ललित लता लपटानी ॥
विश्व भरन पोषण जिनकर सों सुर मुनि नर कर होई।
सो मांगन को पाणि पसारे देहु भीख सव कोई ॥
औसर जानि उठे जगतीपति सङ्ग चलीं सब रानी।
मुक्ता मणि प्रवाल माणिक लै दियो भीख मन मानी ॥
सकल राजवंशी रघुवंशी आये संयुत दारा।
दे दे भीख सीख लै सिगरे निज निज गये अगारा ॥
मुनि वशिष्ठ चारिहु बंधुन को अपने निकट बोलायो।
विहँसि विहँसि जग उपदेशक को वहु उपदेश सुनायो ॥
लैभिक्षा शिक्षा अरु दिक्षा इच्छा के अनुसारा।
शासन लहि गुरु पितु मातन को माँगन चले अगारा ॥
प्रथम रङ्ग मन्दिर महँ माँगो पुनि वशिष्ठ के ऐना।

बहुरि गवन किय पिता भवन को त्रिभुवनपति भरि चैना।
दोहा–कौशिल्या अरु केकई, और सुमित्रा भौन ।
माँगि भीख भ्रातन सहित, किय सुमन्त गृह गौन ॥

छंद चौबोला ।

आवत माँगन हेत राजसुत देखि सुमन्त तुरन्ता ।
धाये घरनि सहित अति विह्वल कहि जय जयति अनन्ता
गिरचो चरण महँ पाणि जोरि पुनि खडो भयो सुख छाई ।
क्षणक्षण रूप अनूप निहारत मनहुँ रङ्क निधि पाई ॥
कह्यो जोरि कर जो कछु मेरो सरवस ग्रहण करीजे ।
चरण कमल की भक्ति पावनी यहि अवसर मोंहि दीजे ॥
मन्द मन्द प्रभु एवमस्तु कहि कौशिल्या गृह आये ।
तहां कियो भोजन भ्रातन युत मातन मोद बढ़ाये ॥
पहिराई पोशाक पीत तहँ कौशिल्या महरानी ।
भाल डिठोना डीठि निवारन दियो त्रिकुटि हरपानी ॥
सुतन नैन दिय कज्जल रेखा रेखा शिति छवि सीमा ।
अलि अवली जनु घेरि रही शारद सरसिज अवलीमा ॥
गये पिता के भवन कुँवर सब भूपति देखि जुड़ाने ।
लियो ललकि बैठाइ कुमारन सिंहासन हरपाने ॥
लागी होन कुँवर नेवछावर मणि गण रतन अमोले ।
गुरु वशिष्ट को बोलि महीपति अपनी आशय खोले ॥
सकल वेद विद्या कुँवरन को दीजे नाथ पढाई ।
धनुर्वेद गांधर्व वेद अरु वेद अङ्ग समुदाई ॥
मुनि तथास्तु कहि गवन भवन किय संध्याकाल विचारे ।
उठे भूप सतकारि सभासद कुँवर सदन पगु धारे ॥
दोहा–बीती रजनि अनन्द सों, भयो महा सुख भोर ।

पढ़न हेतु विद्या गये, गुरु गृह राज किशोर ॥

छन्द चौबोला।

राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु कुँवर अनोखे ।
गुरु वशिष्ठ लखि दै अशीष बहु बैठायो मति चोखे ॥
जानि सकल विद्या निधि प्रभु को विद्यारम्भ करायो ।
जौन जौन प्रभु को दरशायो बिन श्रम सो सब आयो ॥
चारि वेद वेदांग पुराणहुँ राजनीति इतिहासा ।
धनुर्वेद गन्धर्व वेद पुनि आयुर्वेद प्रकासा ॥
कोउ न राम सम कौनहुँ गुण महँ तैसहि तीनिहुं भाई ।
औरहु रघुवंशी कुमार सब पढ़े शास्त्र समुदाई ॥
थोरे कालहि में रघुनन्दन भाइन सखन समेतू ।
वेद शास्त्र पढ़ि लियो दियो पुनि गुरु दक्षिण कुलकेतू ॥
अति रण धीर वीर नृपनन्दन सखा सकल सँग माहीं ।
सरयू तीर शरासन शर लै सिगरे खेलन जाहीं ॥
तहँ ऋजु पृथुल दूर अरु निकटहु सूक्षम रोपि निसाना ।
बार बार अभ्यास हेतु सब मारहिं तकि तकि बाना ॥
जो चुकि जाइ ताहि तारी दै हँसत सबै तेहि ठामा ।
लक्ष वेध जो करै राम तेहि देत सराहि इनामा ॥
राम शिरोमणि धनु विद्या महँ लषण भरत रिपुनासी ।
औरहु सकल राजवंशी सुत भये शस्त्र अभ्यासी ॥
करहिं शस्त्र अभ्यास पहर युग पुनि अन्तहपुर आवैं ।
मातु बिरचि मन रंजन व्यञ्जन चारिहु सुतन खवावैं ॥

दोहा—यथा आपने सुतन को, तथा सखन समुदाइ ।
मानहिं मातु बिभेद बिन, प्रीति रीति दरसाइ ॥

छन्द चौबोला।

रहे मास यक दिवस कुँवर सब भूषन बसन सजोंगे ।

दशरथ को दरबार जात जुरि धनु शायक कर धारी॥
लक्ष वेध की कथा कहत सब जौनहुक्यो जस मारो।
भूपति हँसत हुलास हिये भरि देत इनाम अपारो॥
संध्या समयजानि रघुनन्दन सखा बंधु सँग लीन्हे।
करि संध्या वन्दन सरयू महँ गमन नगर कहँ कीन्हे॥
चढ़ि तुरंग झमकावत वागत लागत परम सलोने।
मानहुँ कढ़ि मन्दर कन्दर ते नवल सिंह के छोने॥
देखन हेतु सकल पुरवासी होत आसुपथ ठाढ़े।
राम रूप छवि आनँद राशी टरैं न तहँते गाढ़े॥
जहँ जहँ जात बंधु चारिहु पुर तहँ तहँ नगर निवासी।
संग संग प्रभु के विचरत सब पानिप पीवन प्यासी॥
यहि विधि सकल अवध पुरवासिन आनँद अमित पसारैं
यथा योग सुनि प्रजा विनय प्रभु तथा योग निरधारैं॥
रजनी आगम जानि राम तहँ बंधु सखानि समेता।
गमनत मंद मंद मुख भनत अनंदित आइ निकेता॥
करहिं प्रजन की विनय पिता सन सकल मनोरथ पूरैं।
रामरूप छवि देखि सभासद क्षण क्षण कर तृणतूरैं॥
वेला जानि वियारी की प्रभु जननि सदन पगुधारे।
कनक थार महँ मातु परोसहिं सालन करहिं अहारे॥

दोहा–शयन करहिं निज निज सदन, अति सुकुमार कुमार।
जननी सकल सुवावतीं, कहि कहि कथा अपार॥

कवित्त।

कहति कहानी कौशिलाजु क्षीर सिंधु मध्य,
भूधर त्रिकूट रह्यो गज बलवार है।
ग्रस्यो तेहि आइ एक महाबली ग्राह गाढ़े,

भयो युद्ध दोहुन को हायन हजार है ॥
हार्‌यो करि कोहू को निहारो नाहिं रखवारो,
आरत पुकारो अब अच्युत अधार है ।
ल्याउ चक्र मेरो अस कहि उठि धाये राम,
मातु मुख सुनत गयंद की गोहार है ॥
चौंकि उठी जननी धर्‌यो है दौरि अंगन लौं,
अंक में उठाय लाय पलना सोवायो है ।
भनै रघुराज मुख चूमति चरण चापि,
चील्ही करवाय राई लोन उतरायो है ॥
कैसो कियो लाल देख्यो सपन कराल कछू,
काहे है निहाल यहि काल उठि धायो है ।
डर मति मान मैं तो तेरेई समीप वैठी,
कहूँ नाहिं ग्राह नाहिं कहूं गज आयो है ॥
दोहा–यहि विधि करत कला विविध, वसत अवधपुर माँह ।
अवध प्रजानि उछाह नित, राम बाँह की छाँह ॥

छंद चौबोला।

सत्य शीलनिधि कोमल कटु विन बदत बैन मुसुकाई ।
प्रीति रीति सब सों अति राखत सहज सदा रघुराई ॥
कोहुको निरखि कलेश सहत नाहिं रहत हमेश दयाला।
शुद्ध बुद्ध उद्धत उदार वर डरत न कालहु काला ॥
पर तिय डीठि पीठि रिपुगण रण युगल वस्तु कृपणाई ।
शूर सपूत सुजान सुसाहेब सांकर सहज सहाई ॥
धर्म धुरन्धर धीर शिरोमणि मति गम्भीर विचारी ।
उदै दिवाकर इव प्रताप गुण आकर जग सुखकारी॥
वस्तु यथारथ ज्ञान मान विन परस्वारथ रत रोजू ।

खलता मृषा विषमता खरता खोजेहु मिलत न खोजू ॥
कौन कौन गुण कहौं रामके सहस जीह कहँ पाऊं ।
पाऊं तौं अहिपति असत्य लखि वरणि पार किमि जाऊं ॥
वरण्यो जिमि रघुनंदन के गुण तैसहि तीनिहु भाई ।
भाई भाई सहज मिताई सो कहँलौं कहि जाई ॥
यद्यपि चारिहु भाइन की है सब विधि ते समताई ।
तदपि राम गुण सिंधु थाह जग कोउ न आजु लगि पाई ॥
प्रथित पृथुल पुहमी पराक्रमी पर पयोधि घट योनी ।
तेजवन्त गुणवन्त सन्त प्रिय हन्ता हठि अनहोनी ॥
निरमल शारद शशी सरिस प्रभु उदित अवध दिशि प्राची
कोन भुवन अस भयो राम सो जाकी रुचि नहिं राची ॥
दोहा—चलनि कहनि विहँसनि रहनि, गहनि सहनि सब ठाम ।
चहनि नेह की नहनि सो, कियो जगत वश राम ॥

छन्द चौबोला ।

चारिहु बंधु कबहुँ सीखन हित सखन सहित अहलादे ।
सज्जित सिंधुर सकल भांति सो बैठहिं आपु कलादे ॥
अति निशङ्क अंकुश लै लै कर मत्त मतङ्ग धवावैं ।
कहुँ बैठावहिं मंद चलावहिं अद्भुत कला देखावैं ॥
परम निपुण जे पील पाल वर तिनहिं बुलाइ बुलाई ।
गज चालन की लियो कला सिखि चतुर चारिहू भाई ॥
तीनिहु भ्राता और सखा सब यदपि सिख्यो यक साथै ।
तदपि गुणी जन जे प्रवीण जन कहत अधिक रघुनाथै ॥
अति सुकुमार कुमार चारिहू कबहुँ तुरङ्ग सवारे ।
लै दिनकर तेजा कर नेजा सङ्कदि जात शिकारे ॥
तैसहि राजकुमार छबीले सकल अश्व असवारा ।

बाजी कला सकल विधि सीखत राम सङ्ग सुकुमारा ॥
तरल तुरङ्गन चपल कुरङ्गन सङ्गहि सङ्ग धवावें।
कहुँ बरछी कहुँ बाण कृपाणहुँ पहुँचि समीप चलावें ॥
कहुँ कूकर शूकर पर छोड़त हूँकरि दपटत बाजी।
कहुँ चीते झपटत रपटत मृग लपटत लखि अति राजी ॥
हय मुरकावनि सपदि चलावनि थहरावनि झमकाई।
बाजी कला सकल सीखे सब तदपि अधिक रघुराई ॥
कबहुँ पिता के आगे फेरत बाजिन चारिहु भाई।
भूप विलोकत कला कुतूहल हुलसि देत मुसक्याई ॥

दोहा–विस्तर राम शिकार को, इतै न वर्णन कीन।
ब्याह अन्त मृगया शतक, कहिहौं कछुक नवीन ॥

छन्द चौबोला।

आवहिं कबहुँ चढ़े स्यंदन लै लै तेहि कै जग आमें।
आमें विपिन कबहुँ संचारें चारें वर दुनिया में ॥
उपजामें सुख जब घर जामें रथचरजामें जामे।
जामें दुख जन जूह न जामै सो ठानत वसु जामे ॥
हरि कुल हरि रथ हरि सञ्चारत हरि हरि हरि रथ बेगू।
हरि मुख हरि प्रिय हरि मद गंजित हरि हरि हरि कर तेगू ॥
धामें धाम धाम धामें रवि वामें वामें वामे।
वसुधा मे जिन बानि सुधा में वसुधा मे सुद्धामें ॥
बाण चलामें रिपु विचलामें दीठि लक्ष विचलामें।
वेधत विशिप चलामे तामें तामें ह्वे रुचलामें ॥
हारें हारें करत विहारें सिहारें संहारे।
असहारें कबहूँ नहिं हारें देव देत उपहारें ॥
हारें ही में युवति निहारें वार वार बलिहारें।

हारें नहिं सुहृदन व्यौहारैं प्रथमहिं गुरुन जोहारैं॥
चारें वन्धु सुधर्म प्रचारैं पर चारैं बहु चारैं।
चारें नेग जनन सञ्चारैं अपचारैं उपचारैं॥
खंडें खंडें दंडिन खंडें नहिं खंडैं श्रुति खंडे।
खंडे इव मीठे निज खंडे खंडे खंड पखंडे॥
शुचिताई गुनिताई ताई है न रहै उचिताई।
ताई नहिं प्रभुताई के महि जग जाहिर शुचिताई॥
दोहा—चाग गहनि स्यन्दन चढनि, हय फेरनि संग्राम।
तजनि विशिष वैठनि गठनि, सिख्यो सकल विधि राम॥

कवित्त।

कमलसी कमलासी कौशिक करिन्दहीसी,
कामसी अकामसी कपूरहीसी केशसी।
केशव के कंबुसी सुकेशव के कौस्तुभसी,
कौमोदकीसी कौमुदीसी कुमुदेशसी॥
कहै रघुराज कामधेनु कल्प कुंज कैसी,
कंजकैसी कुंद कैसी कन्द कुधरेश सी।
कीलहीसी कच्छप कमुच्छ कोशलेश कृकी,
कीरति कसायनी है कलिकी कलेश सी॥
बाण सन्धानन में कमानहूके तानन में,
शर के पयान में सुरीति निज गान में।
लक्षपान बान में प्रत्यक्ष दर्शानन में,
शिक्षा उपदान में त्यों कलंकदपान में॥
भनै रघुराज धनु मुष्टि [illegible] में,
[illegible] त्यों तानन में [illegible] में।
[illegible] तानन में बीर के [illegible] में

कोई ना धनुष मान राम सो जहान में ॥
दोहा—धीर शिरोमणि वीर वर, लसत पाणि धनु तीर।
बुद्धि गिरा गम्भीर अति, वसत अवध रघुवीर ॥

छंद चौबोला।

कबहूँ चारिहु बंधुन को लै खेलत विपिनि शिकारा।
कबहूँ चढ़े मतङ्ग तुङ्ग वर विहरत अवध बजारा ॥
भाइन सहित सदा रघुनन्दन करत जनक सेवकाई।
राखे रहत सदा पितु की रुख मानत रोचि रजाई ॥
सदा कहत कर जोरि वचन मृदु मनहुँ खसत मुख फूला।
पितु शासन सुनि सपदि सवारत देत अनंद अतूला ॥
पूंछि पूंछि पितु सों रघुनायक करत पौर पुरकाजा।
राम सनेह शील रति रांचे मँगन रहत महराजा ॥
कबहुँ चरण चापत पितु केप्रभु कबहूँ बिजन डोलावें।
पितु सों विदा माँगि रघुनन्दन भोजन करन सिधावें ॥
जबलों रहत राम अंतहपुर करत जननि सेवकाई।
जननी वचन सुनत त्वरिताकरि जात काज हित धाई ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा औरौ मातु अनेका।
भेद विगत मानत समान सब जानत धर्म विवेका ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन को प्रभु जानत जनक समानें।
तेऊ निज सुत ते प्रभु सौगुण मानत मानहुँ प्रानें ॥
धनि दशरथ धनि अवध प्रजा धनि कौशिल्या महरानी।
तजि विकुंठ जाके अङ्गनि में खेलत सारँग पानी ॥
पितु सेवन जस करत राम नित तैसहि तीनिहुँ भाई।
राम संग डोलत मृदु बोलत पुरजन आनँद दाई ॥
दोहा—यद्यपि सकल समान सुत, शील सनेह सकोच।

तदपि अधिक कछु राजमणि, करत राम रुचि रोच ॥

छंद चौबोला।

भोरहि ते चारिहु भाइन को पट भूषण पहिराई।
लघुकरवाल ढ्राल लघु ढालैं पग पावँरी सोहाई॥
मेवा विविध कलेवा दै दै सेवा सखनि सजाई।
पठवहिं मातु भूप दरबारै टीको श्याम लगाई॥
यद्यपि संग संग विहरत सब सखन सहित सब भाई।
तद्यपि लषण सनेह राम पर दिन दिन दून देखाई॥
लषण करन लागे बालहि ते रघुपति पद सेवकाई।
अति सुंदर सुकुमार गौर तन देखत मदन लजाई॥
खेलत बैठत वागत धावत आवत जावत माहीं।
सोवत जोवत विविध तमासे विपिन शिकार सदाहीं॥
सकल समै महँ सब कारज महँ लछिमन परम सुजाना।
जग अभिराम राम पद सेवत वहिरभूत जिमि प्राना॥
जेठ बंधु पुनि दीनबन्धु गुणि कुमुद बंधु सुउदोते।
सो रघुपति पद सेवत लछिमन छन भरि विलग न होते॥
जहि महँ होहिं प्रसन्न राम अति सोई मनते करहीं।
यथा राम सबके प्रिय तेसहि लषणहुँ जन सुख भरहीं॥
यथा राम सीख्यो धनु विद्या लषण सिख्यो तिमि सोई।
यथा राम सेवत पितु के पद तिमि लछिमन मुद मोई॥
रामहुँ को तेसहि लछिमन प्रिय सकल काल सब थल में।
विना लषण नाहिं लहत नींद प्रभु रजनी सेज अमल में॥

दोहा-विना खवाये लछिमनहिं, भोजन करत न राम।
विना पियाये जल तिन्हैं, पियत न जल अभिराम॥

छन्द चौबोला।

कौशिल्या के भवन कबहुँ प्रभु चारिउ बंधु सिधारे।

विञ्जन विविधि प्रकार सुधा सम संयुत सखन अहारैं ॥
कबहुं केकयी चारि बन्धु को विञ्जन बिरचि बोलावैं।
सुधा सरिस विञ्जन परोसि यक थारहि माहँ खवावैं॥
कबहुँ सुमित्रा चारि कुमारन करवावतीं कलेवा।
दुलरावत निज पाणि खवावत महा मधुर रस मेवा॥
लछिमन को प्रभु अपने कर ते भोजन विविध करावैं।
तैसहि भरत शत्रुसूदन को बहु अनुमोदि खवावैं॥
जब भोजन लछिमन करि चुकते तब प्रभु खाय सुखारी।
मातनसों मृगया हित माँगत विदा पाणि धनु धारी॥
चारहु बन्धु उमङ्ग भरे अति होत तुरङ्ग सवारा।
लै बरछो तिरछो गति गमनत संयुत राज कुमारा॥
कहूं जमावत कहुँ कुदावत कहूँ धवावत बाजो।
कहूँ फिरावत कहुँ बैठावत कहूं उड़ावत ताजी।
देखि कुरङ्गन को कानन में है आनन करि सूधो।
रघुकुल पञ्चानन दपटत द्रुत जेहि जब कतहुँ न रूधो॥
भागत मृग मारत बरछिन सों यक एकन ललकारैं।
कबहुँ खड्ग से कबहुँ बाणसे हनि मृग करत शिकारैं॥
जहँ जहँ राम धवावत बाजी तहँ तहँ पाछे पाछे।
धनु शर लै रक्षत रामहिं तहँ गच्छत कम्मर काछे॥
दोहा–गिरि कानन सम विपम थल, जहँ जहँ विहरत राम।
तहँ तहँ रक्षत राम कहँ, गच्छत लक्ष्मण वाम॥

छंद चौबोला।

कौनौ समय कौनहूं थल महँ जहँ जहँ प्रभु चलि जाहीं।
लषण तजत नाहिं रघुकुल मणि कहँ रहत समीप सदाहीं॥
जैसे रहत राम ढिग लक्ष्मण रक्षन हित वसु यामा।

तैसे भरत समीप शत्रु सूदन सोहत अभिरामा ॥
प्राण समान राम जस मानत लछिमन को सब काला ।
भावत तैसहि भरत भक्त निज जिय सम मम रिपुशाला ॥
राम भरत को जस सनेह तस कवि न लहत कहि पारा ।
प्रीति रीति चारिहु भाइन की मैं किमि करौं उचारा ॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन चारिहु राजकुमारा ।
विहरत अवध नगर पुरवासिन आनँद देत अपारा ॥
चारिहुकुँवर न सहित भूपमणि जब बैठत दरबारा ।
सोहत चारिहु लोकपाल युत मनहुँ मुदित करतारा ॥
दिन रजनी जननी सजनी युत सुत सेवत क्षण जाहीं ।
भव संभव दुख सुख अनुभव जब जानि परत कछु नाहीं ।
मचो रहत नित नव अभिनव सुख सब पुरवासिन पूरो ।
दशरथ को आनंद कहौं किमि जासु राम सुत रूरो ॥
एक समय दशरथ वशिष्ठ मुख सुनते रहे पुराना ।
निकसी कथा विराग योग जप करि पावत भगवाना ॥
इतने में रघुनन्दन आये बैठि गये पितु अङ्का ।
लखि मुनि सजल नयन भूपति सों बोले वचन अशङ्का ॥

दोहा—योग याग जप तप नियम, कथा वृथा सुनि लेहु ।
सकल सुकृत को जौन फल, तुमहिं चहौ तेहि देहु ॥

छंद चौबोला ।

तुमहिं न बाकी कछु भूपतिमणि जग महँ सुकृति अधारा ।
ज्ञान विराग योग जप तप व्रत जाके राम कुमारा ॥
दशरथ वंदि वशिष्ठ चरण युग जोरि कहे कर दोई ।
जापर राउर कृपा नाथ अस असन होइ कस सोई ॥
ताही समय भरत लक्ष्मण रिपुदमन पिता ढिग आये ।
चारिहु बन्धुन को विलोकि दशरथ अति आनँद पाये ॥

नीति विवेक अनेक गुणन युत नेकु नीति नहिं हीना ।
ज्ञान मान जग जान शिरोमणि वीर प्रधान प्रवीना ॥
नहिं सुन्दर त्रिभुवन महँ अस कोउ जस दशरथ सुत चारी ।
धनुधारी हितकारी भारी सुर नर मुनि मनहारी ॥
दिग सिन्धुर कुंभन महँ मण्डित जिनकी कीरति माला ।
करामलक इव विद्या सिगरी सबको ज्ञान त्रिकाला ॥
नहिं अनीति रत नहिं कुसङ्ग कृत नहिं अधर्म व्रतधारी ।
सदा दीर्घदरशी नृप नन्दन पितु पद वंदनकारी ॥
दीपति दीप शिखा सो दीपति अवनीपति सुत चारी ।
तेज प्रताप ओज माधुर्य्य महा सौंदर्य जितारी ॥
कौशलपति पुत्रन कहँ देखत बहुरि वशिष्ठ उचारे ।
जगतीपति ब्याहन के लायक भये कुमार तुम्हारे ॥
गुरु के वचन सुनत सकुचे सब भरत कह्यो कर जोरी ।
भै तयार ज्योंनार भवन महँ मातु बोलायो मोरी ॥

दोहा–राम लषण रिपु हन सहित, बालन वृद्ध समेत ।
चलिय पिता भोजन करन, अब विलम्ब केहि हेतू ॥

छन्द चौबोला ।

सुनत भरत के वचन विहँसि कछु उठ्यो भूप शिरताजा ।
रघुकुल राज समाज उठो तहँ कहि जै जै महराजा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवन्शिन को लै बालन बोलि भुवाला ।
करिकै गुरु वशिष्ठ पद वन्दन चले नरेश उताला ॥
आगे आगे चले चारि सुत पाछे दशरथ राउ ।
वृद्ध वृद्ध रघुवंशिन लीन्हे अतिशय करन सुभाऊ ॥
सोहत अवध नाथ सुत संयुत बंधुन सहित उदारा ।
मानहु लोकपाल देवन युत जात भवन करतारा ॥

वृद्ध वृद्ध रघुवंशी सोहत मनहुँ सतोगुण रूपा।
चारि फलन इव चारिहु नंदन शुद्ध सतोगुण भूपा॥
कैकइ भवन भूप पगु धारे करन हेतु ज्योंनारे।
राम जाइ जननी सों आतुर ऐसे वचन उचारे॥
मातु मोहिं अति क्षुधा सतावति देहु सुधा पकवाने।
मैं खैहौं सबके प्रथमहि इत पिता सङ्ग नहिं खाने॥
मातु चूमि मुख सुत दुलरावति कह्यो वचन हे लाला।
पाक भवन महँ भोजन कीजै सहहुन क्षुधा कशाला॥
त्रिभुवनधनी भवन भोजनमें भोजन करन लगे हैं।
खात खात खायो सिगरे जे व्यञ्जन स्वाद जगे हैं॥
सूपकार सब जाइ हँसत केकइ सों वचन उचारयो।
राजपट्ट महिषी तिहरो सुत सिगरो असन अहारयो॥

दोहा–सुनत केकई उठि तुरत, देख्यो व्यञ्जन भौन।
रह्यो अन्न संपन्न जो, वच्यो न सो भरि लौन॥

छंद चौबोला।

सूपकार सब जाय भूप सों विस्मित कह्यो हेवाला।
अन्न पाकशाला को खायो तिहरो जेठो लाला॥
सुनि भुवालमणि रघुवंशिन युत लागे हँसन ठठाई॥
जननी मानि अजीरण का भय गुरु वशिष्ट बोलवाई॥
गये तहां तुरंत वशिष्ट मुनि कही केकई बानी।
जेठो लाल अन्न बहु खायो रही न पाक निशानी॥
मोहिं अजीरन का भय लागत नाथ करहु उपचारा।
गुरु वशिष्ट हँसि कह्यो राम सों खायो भोजन सारा॥
राम कह्यो मैं क्षुधित अहौं गुरु अबलौं नाहिं अहारी।
मानहुँ कृपा जाय व्यञ्जन पर लीजै नैन निहारी॥

लै सँग सकल सूपकारन को जाइ वशिष्ठ निहारे ।
दून दून व्यञ्जन सब देखे भोजन भवन मँझारे ॥
प्रभु चरित्र गुणि मुनि मनहीं मन रामहिं कियो प्रणामा ।
कह्यो केकई सों नृप हूँ सों राम न कियो कुकामा ॥
तिहरो सुत भूखो मुख सूखो झूठहि वदत सुआरा ।
लेहु बोलाइ खवाइ देहु नृप और न करहु विचारा ॥
राउ रानि सिगरे रघुवंशी गुणे वशिष्ठ प्रभाऊ ।
सुत को अमित प्रभाव न जाने जामें है सब भाऊ ॥
पुनि कुमार संयुत कोशलपति लै सिगरे परिवारा ।
केकय सुता भवन महँ कीन्ह्यो व्यञ्जन बिबिध अहारा ॥

दोहा–यहि विधि करत अनेक तहँ, कला कुतूहल राम ।
जननी जनक प्रजान को, नित पूरत चितकाम ॥
बालकेलि महँ हरि मगन, जननी जनक सनेह ।
अवलोकत अनुदिन अमर, उपज्यो अति संदेह ॥
कहहिं परस्पर बचन अस, दशरथ मख महँ आइ ।
करी प्रतिज्ञा जगतपति, चतुराननहिं सुनाइ ॥
दशरथ भूभरतार घर, लै अवतारहिं आसु ।
दशकंधर को मारि कै, करिहैं सुर दुख नासु ॥
बिसरि गयो सो प्रण प्रभुहि, राजभवन महँ आइ ।
किधौं बिकुंठ धनी अबै, नाहिं प्रगटे महि जाइ ॥
ताते चलहु बिरंचि पहँ, पूँछि मिटावहिं शोक ।
जबलों दशकंधर जियत, तबलों सुखी न लोक ॥
अस बिचारि करि देव सब, गे करतार अगार ।
ह्वै दशमुख सों अति दुखी, कीन्हे बिकल पुकार ॥
दशरथ मख में बिष्णु प्रभु, कीन्ह्यो प्रणहिं उदार ।

मैं रावण कों मारिहौं, लै मानुष अवतार ॥
सो प्रभु दशरथ भवन में, प्रगटे भ्राता चार ।
बालकेलि रत लखि तिन्हैं, हमहिं होत भ्रम भार ॥
राज सम्पदा पाय प्रभु, भूलि गये प्रण सोइ ।
धौं अबलौं अवनी प्रगट, भये न श्रीपति ओइ ॥
लोक लोक अरु लोकपति, काहिन रावण भीति ।
को अब शोक निवारिहै, वली लङ्कपाति जीति ॥
सुनि विधि विबुधन के वचन, विहँसि वदे वर वैन ।
भयो महा भ्रम सुर तुम्हैं, अब पैहौ सब चैन ॥
अवध नगर दशरथ भवन, हरि लीन्ह्यो अवतार ।
शम्भु कही मोंसे कथा, सो मैं करौं उचार ॥

छन्द चौबोला ।

रघुपति बाल चरित्र विलोकन धरि धरि मनुज शरीरा ।
कागभुशुंडि और हम गवने जहँ विचरहिं रघुवीरा ॥
सङ्ग सङ्ग देखत चरित्र सब परम विचित्र अपारा ।
करत प्रणाम मुदित मनहीं मन वहति नयन जल धारा ॥
बाल विनोद विलोकत प्रभुको पुरबालक सँग माहीं ।
संग संग खेलत जस प्रभु रुचि जन जानै कोउ नाहीं ॥
कहुँ कहुँ कागभुशुंड अकेले मेरोसंग विहाई ।
धरि लघु रूप काग देखत नित प्रभु चरित्र लरिकाई ॥
उठि प्रभात कछु लेकर भोजन खेलत चारिहु भाई ।
गिरत टूक जो कछु प्रभु करते काग लेत सो खाई ॥
अति सुन्दर मंदिर अंगन महँ खेलत चारिहु भाई ।
मंजुल श्यामल गौर कलेवर अंग अंग छविछाई ॥
नव राजीव कमल कोमल पद नख द्युति शशि छविहारी ।

कुलिश ध्वजादिक उपटत महि महँ जहँ जहँ प्रभु सञ्चारी॥
मणि मञ्जीर मंजु मन रञ्जन छाइ रहत झनकारी।
कटि किङ्किनि अंगदभुज सोहत मुक्तमाल मनहारी॥
रेखा तीनि उदर मधि राजत जनु विधि जग शुभगाई।
खांचि दियो त्रै वार लीक कहि अस नहिं कतहुँ देखाई॥
चारु चिवुक कलकंठ कंबु सम सुन्दर वाहु विशाला।
शिशुवर वपुप चौतनी शिर पर गोरोचन छवि भाला॥

दोहा—कढ़ति तोतरी वाणि कछु सुनत मोद पितु मात।
खग निहारि धावत धरनि कहि मुख वायस जात॥

छन्द चौबोला।

वालकेलि रत देखि नाथ को वायस उर भ्रम आयो।
प्राकृत शिशु सम इनकी लीला वेद ईश कस गायो॥
इतना ताके मन महँ आवत धरन हेत प्रभु धाये।
भज्यो भभरि वायस अंवर उड़ि गुणि हरि कहँ नियराये॥
जहँ जहँ जात परात काग नभ बहुरि विलोकत पाछे।
द्वै अंगुल को रहत वीच कर भजत वेग करि आछे॥
सात लोक ऊरध के भाग्यो सातहु लोक पताला।
गयो विरञ्चि लोक कहँ वायस हट्यो न भुजा विशाला॥
प्रभु चरित्र जिय जानि बहुरि पुनि अवध पुरी कहँ आयो।
प्रभु विलोकि वायस को विहँसे सो द्रुत वदन समायो।
तहँ ब्रह्मांड अनेकन देख्यो पृथक पृथक वहु रचना।
नील निपध आदिक सुमेरु गिरि काहिन जाय सो वचना॥
एक एक ब्रह्मांडन वायस शत शत वर्ष वितायो।
तदपि राम माया को नेकहुँ उड़ि उड़ि पार न पायो॥
देख्यो विविध भांति जग वायस सुर नर आनहिं आना।
एकन देख्यो आन रूप कहँ दशरथ सुत भगवाना॥

गयो बहुरि अपने आश्रम कहँ नील शैल के शृङ्गा।
यक शत कल्प बैठि ध्यायो हरि तदपि न मन भ्रम भङ्गा।
सुन्यो श्रवण प्रगटे कोशलपुर राम विकुंठ अधीशा।
देखन बालचरित आयो पुनि जहँ खेलत जगदीशा॥

दोहा–विहँसे तब दशरथ सुवन, कढ्यो बाहिरे काग।
उतै बीतिगे कल्प बहु, इतै दंड युग लाग॥

छन्द चौबोला।

यहि विधि करत अनेकन लीला शुभ शीला तन नीला।
अवध बसीला चरित रसीला नृप घर राम रँगीला॥
यहि बिधि बीति गये कछु वासर करत मातु पितु चायन
राम लषण रिपुदमन भरत की भई वैस दश हायन॥
शीश चौतनी कानन कुंडल नासा मणि मन मोहै।
कठुला कण्ठ विकुण्ठनाथ के मुक्त माल उर सोहै॥
अंगद भुजनि काम रद हद प्रद कञ्चन कटक कलाई।
चौरासी कटि परम प्रकासी लघु धोती छबि छाई॥
मणि मञ्जीर नवल नूपुर पग लघु अँगुली झलकाती।
लघु फेंटे कटि कसे कनकमय तोतरि वाणि सोहाती॥
लघु लघु लसत उपानत लघु पद लघु धनुहीं कर माहीं
लघु शायक लायक शिशु ढालैं लघु लघु तूण पिठाहीं॥
लघु ढालैं लघु लघु करवालैं लघु लघु कर उर मालैं।
लघु लघु उर मालैं छवि जालैं लघु बालैं लघु हालैं॥
लघु बोलनि लघुचलनि हँसनिलघु लघुचितवनिलघुधावनि
लघु लघु सखा सङ्ग महँ खेलत नाहिं लघु सुख उपजावनि
भोरहिं मातु उठावति लालन सम्भल कछुक खवाई।
पोंछि शरीर ऐंछि कारे कच भूषण पटपहिराई॥
सभा सिगारन के हित सिगरे सखन बोलाई।

निज सुत सरिस खवाइ प्याइ जल करि शृँगार सुखदाई ॥

दोहा–भाल विशालहि लाल के, दियो दिठोना विंदु ।
मोत मदन मनु मानिकै, लियो अङ्क करि इंदु ॥
घुँघुवारी अलकैं लटकि, हलकैं अमल कपोल ।
मनहुँ शशांक सशङ्कि शनि पहिरयो नील निचोल ॥
जलज युगल उर गल उभै, महा पदिक मधि भाइ ।
मनहुँ कम्बु गुनि बन्धु विधु, मिलत करन पसराइ ॥
कज्जल रेख विशेख चप, कोरन लों छवि देत ।
श्याम जाल मनु रेशमी, फँसे मीन युग सेत ॥

कवित्त ।

छोटीकरवालैंकरछोटीपोठिढालैंढकीछोटीकसीकम्मरदुआलैंमणीजालकी
छोटीउरमालैंमंजुछोटीउरमालैंमुक्त छोटीचारुचौतनीविशालैंद्युतिभालकी
पगनपनहियाँसुछोटीमणिआलवालैं हालैंरघुराजजनकरननिहालकी।
सङ्गसमवैसवालैआवैंपितुआलैराम चटपटचालैचित्तसालैनृपलालकी
कहूंनृपअङ्गनमें खेलैंवालसङ्गनमें कहूंनृपअङ्गनमेंदौरिलपटाते हैं ।
चढ़तेमतङ्गनमें कबहूँ तुरङ्गन में कबहूँसतांगन में दूरि कढ़िजातेहैं॥
सौधनि उत्तङ्गनिअरोहिकै उमङ्गन में मणिनकुरङ्गनविहङ्गनलरातेहैं।
वालकेलिजङ्गन में जीतिरसरङ्गनमेंरघुराजचित्तचोपिचङ्गनचढ़ातेहैं॥

दोहा–अति चञ्चल अति चारु वपु, चित चोखे सुत चार ।
चमत्कार सब गुणन में, चतुर सुविमल विचार ॥
यहि विधि भाष्यो शंभु मोहिं, अवध नगर ते आय ।
थोरे कालहि में हरी, देहैं शोक नशाय ॥
सुनि विरञ्चि वाणी विबुध, मानि प्रबल विश्वास ।
दशकन्धर को मानि भय, गे निज निजे निवास ॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते
राम स्वयम्बर ग्रन्थे बालहीला वर्णनो नाम षष्ठः प्रबंधः ॥ ६ ॥

दोहा—वसत अवधपुर देत सुख रघुनन्दन युत भ्रात।
द्वादश वर्षहि के भये, मुदित करत पितु मात॥

छंद चौबोला।

कोउन राम सम वेद विज्ञाता त्राता जग सुखदाता।
अति अवदाता गुणनि विधाता प्रजा सनेह अवाता॥
चढ़ि तुरङ्ग झमकावत आवत जब कहुँ खेलि शिकारा।
सखन वन्धु युत अति छवि छावत करत अवध उजियारा।
लपण कुमारन के आवन हित जाय उतङ्ग अगारा॥
खड़े होत पुहुमीपति नायक लहत अनंद अपारा॥
जहँ ते लखत पिता कहँ रघुपति त्यागत तुरतहि याना।
करत प्रणाम पिता ढिग आवत वन्धुन सहित सुजाना॥
जैसी पितु के उर अभिलापा तैसै करत अगारी।
सुखी होत सब प्रजा वन्धु जन सचिव पिता महतारी॥
वाल जननि ढिग पितु ढिग सेवक स्वामी प्रजन समीपा।
सुहृद सखन ढिग कवि कविजन ढिग नृपगणनिकट महीपा
परम विचक्षण सकल सुलक्षण रक्षण वानि सदा की।
लक्षण सहित रहत प्रभु क्षण क्षण छवि अक्षन फल दाकी॥
यहि विधि निरखि कुमारन को तहँ मन मोदित नर नाहू।
कियो विचार सार सब सुख को होइ विवाह उछाहू॥
तब तुरन्त बोल्यो सुमन्त को ल्याउ वशिष्ठ लेवाई।
सुहृद सचिव पुर प्रजा वृद्ध जन दीजै सभा लगाई॥
कछु आपन की अभिलापा उर उपजी अवशि हमारे।
करिहैं गुरु शासन शिर धरि जो सम्मत होइ तिहारे॥

दोहा—सुनत सुमन्त तुरन्त चलि, ल्याये गुरुहि लेवाइ।
सुहृद सचिव पुरजन सुजन, आये सुनत रजाइ॥

छंद चौबोला।

वृद्ध वृद्ध सिगरे रघुवंशिन पौर सचिव मतिवाना।
नृप की सभा मध्य सब बैठे करत विचार विधाना॥
बंधु पुरोहित सचिव पौर जन प्रभु मुख रहे निहारी।
कहि न सकत पूछे बिन कोई भै समाज तहँ भारी॥
सब कहँ देखि भूपमणि बोले सुनहु सकल मम बैना।
भये कुमार बिवाहन लायक उचित झेल अब हैना॥
ईश कृपा भे कुँवर चारि मम तुम्हरे पुण्य प्रभाऊ।
अस विचारि अब करत मोर मन करहुँ विवाह उराऊ॥
जो तुम्हार सबको संमत अस होइ हिये हुलसाये।
तौ जेहि जहँ जस परै योग लखि बनतो अबहिं सुनाये॥
निज अभिलषित सुनत सिगरे जन बोलि उठे यक बारा।
राम ब्याह अब करहु भूपमणि दूसर कछु न विचारा॥
सबको संमत सबको यह सुख सब ऐसहि अभिलाषी।
राम ब्याह कब लखब नयन इन सत्य कहैं शिव साषी॥
बांधे मौर चारि भ्रातन को कब देखन दिन होई।
अस अनन्द महँ जेहि संमत नहिं ताते मंद न कोई॥
सुनहु भूमि भूषण इत दूषण कह वशिष्ठ मुसकाई।
जो प्रभु दियो पुत्र तुमको सोइ देहै योग लगाई॥
इतनेही में द्वारपाल द्वै आतुर आये धाई।
करि वंदन ते अजनंदन को दीन्ह वचन सुनाई॥

दोहा-महाराज महिपति मुकुट, जासु महा मुनि ख्याति।
सोई विश्वामित्र इत, आये बिनहि जमाति॥

छन्द चौबोला।

बोलि द्वारपालन इमि भाष्यो दीजै द्रुतहि जनाई।
महाराज के दरशन आसी हम आये इत धाई॥

तिनके वचन सुनत हम सिगरे खबर जनावन आये।
आज्ञा होइ महा मुनि आवैं आप दरश ललचाये॥
द्वारपालके वचन सुनत नृप उठे समाज समेतू।
लेन चले मुनि की अगुवाई जिमि विधि कहँ सुरकेतू॥
महाराज देख्यो चलि आगे मुनि ठाढ़े दरवाजे॥
ज्वलत तेज तप कर ब्रत कृश तनु तापस वपुप विराजे॥
दंड समान प्रणाम कियो नृप मुनि पद पङ्कज माहीं।
पुनि उठि अर्घपाद्य आचमनहुँ दीन्ह्यो सविधि तहांहीं॥
सचिव पौर सामन्त भृत्य भट लै लै निज निज नामा।
विश्वामित्र ब्रह्मऋषि के पद कीन्हे दंड प्रणामा॥
नृप कर पूजन लियो महा मुनि सकल शास्त्र अनुसारे।
विश्वामित्र लगाइ हिये महँ मिले भूमि भरतारे॥
हरपि कह्यो कौशिककहिये नृप सब विधि कुशल तिहारी
सचिवन सहित शत्रु गण शासन मानत हैं हितकारी॥
मानुप दैव कर्म सब राउर होत यथा विधिपूरे।
सचिव साहनी सुभट सुतन युत सदन अहैं सब रूरे॥
विश्वामित्र विलोकि वशिष्टहि करि प्रणाम शिर नाई।
वामदेव आदिक मुनिजन सों मिले भुजन पसराई॥

दोहा—कुशल प्रश्न पूछ्यो सबन, अपनी कुशल सुनाय।
दशरथ के सँग भवन में, किय प्रवेश सुख पाय॥

छन्द चौबोला।

कनक सिंहासन आसन के हित विश्वामित्रहि दीना।
तसहि गुरु वशिष्ठ कञ्चन के आसन भे आसीना॥
वामदेव मुनिवरन यथोचित नृप आसन बैठाये।
सचिव पौर सामन्त महाजन सबही आनँद पाये॥

सविधि कियो पूजन महीश जगदीशै मानि मुनीसै ।
अघ खीसै पर गति तोहिं दीसै मुनि दिय नृपहि असीसै ॥
मुनि पद कञ्जन निज कर कञ्जन दावत दशरथ भाषे ।
परम प्रमोदित सुकृत उदोदित सत सेवन अभिलाषे ॥
यथा लाभ पुरपन पियूप को सूखत धानहिं पानी ।
जिमि समकुल विवाहिता तिय में पुत्र जनम सुख खानी ॥
प्रानहु ते प्रिय बहुत काल महँ यथा मीत पुनि आवै ।
महा महोदे जिमि उछाह के अति प्रवाह उपजावै ॥
तिमि आगमन रावरो मुनिवर हम सब कहँ सुखदाई ।
भले नाथ आये हमरे घर आजु महा निधि पाई ॥
कारज करौं कौन मुनि आरज दीजै सपदि रजाई ।
तुम सेवन के योग भाग वश तुम्हरो भई अवाई ॥
धर्म धुरन्धर धरनि धन्य तुम अतिशै कृपा पसारे ।
कियो जन्म मम सफल सकुल प्रभु जीवन गाधि कुमारे ॥
आजु दरश पाये पद पङ्कज सब फल फल्यो प्रभाता ।
प्रथम भये राजर्पि बहुरि ब्रह्मर्षि भये अवदाता ॥

दोहा—तरणि तुल्य तप तेज तुव, पूजन लायक नित्त ।
तुमहिं समर्पण करत हौं, तन मन वाहन वित्त ॥
अश्वमेध को फल लह्यो, प्रभु आगम ते आज ।
सकल धर्म को फल यही, तुव दरशन कृत काज ॥

सवैया।

राकस भीति दवारि दही बुधि वेलि सी कौशिकके दुख पागी ।
धर्म सरोवर सूखत सोचि सहाय नहीं सरिता जल जागी ॥
श्रीरघुराज सो श्रीरघुराज की बानि महा बरषा ऋतु लागी ।
फावि रही तिनि फैलिरही तिमि फूलि रही त्यों फली बडभागी॥

दोहा--विश्वामित्र अनंद लहि, रोमांचित सब गात।
राजसिंह सों कहत भे, विस्तर वैन विख्यात॥

कवित्त।

विदितवसुंधराविभाकरविशुद्धवंशवंदितवसुंधराधिराजनसों सर्वदा।
सगरदलीपअंवरीपअंशुमानअज जैसेभये तैसेआप भुवनकेशर्मदा॥
रघुराज रावरेकोभापिवोअचर्यनाहिं परमप्रतापदेवराजहूकोभर्मदा।
ताके हैं वशिष्टसे हमेश उपदेशवारेताकेवैनविप्रनके धर्म कर्मवर्मदा॥

दोहा--जाके हित आयो इतै, सो सुनिये महराज।
तेहि पूरण करि होहु अब, सत्यप्रातिज्ञ दराज॥

छंद चौबोला।

करनलगे मख सिद्धाश्रम में हम जेहि काल भुवाला।
तहँ मारीच सुवाहु निशाचर आये कठिन कराला॥
जब हम व्रत करि यज्ञ समापन करन चहे द्विज संगा।
निशिचर युगल कामरूपी तब करि दीन्हे मख भङ्गा॥
रुधिर मांस मल हाड पीवकच वरपे वेदी माहीं।
यज्ञ विध्वंस किये मम निशिचर तब तजि नेम तहांहीं॥
निरानंद दुख भार भरे अति त्यागि यज्ञ संभारा।
जानि नरेश धर्मरक्षक तोहिं आये अवध अगारा॥
जो अस कहहु नाथ जग जाहिर है रावर तपतेजा।
निशिचर केतिक वात शाप दै करिये भस्म करेजा॥
तो यह यज्ञ माहँ सुन भूपति कोप करब विधि नाहीं।
यज्ञ व्रती जो करै कोप कछु महा विघन ह्वै जाहीं॥
ताते मैं नहिं कियो कोप कछु दुष्टन दियो न शापा।
करिके कोप नाशि मख फल सब लहौं वहुरि परितापा॥
ताते अस विचार मन आयो कोप न मन उपजाऊ।
टसदाय करिके टपाय अस क्रतु को विघन वचाऊ॥

सो उपाय अब सुनहु महीपति जेहि मख रक्षण होई ।
गयो आज़ुलों और द्वार नहिं है न सहायक कोई ॥
यदपि होत अनरस अस माँगत वचन कठिन कस कहिये ।
तदपि धर्म मरयाद सोचि मन मौन कौन विधि रहिये ॥

दोहा—और उपाय देखाय नहिं, मख रक्षन के हेतु ।
कठिन वस्तु माँगन परयो, सुनु दिनकर कुल केतु ॥

कवित्त ।

नीरदवरणवारोपङ्कजनयनवारो भृकुटोविशालवारोलम्बभुजवारोहै ।
पीतपटकटिवारोमन्दमुसुकानवारो शूरसरदारोरणकबहूं न हारो है॥
रघुराजरावरेकोरोजरोजप्राणप्यारोजालिमजुलुफवारोकोशिलादुलारोहै
माँगनोहमारोहोयमेरोमखरखवारोरामनामवारोजेठोतनयतिहारोहै ॥

दोहा—मेरे तप के तेज ते, रक्षित राज कुमार ।
ह्वै है समरथ सकल विधि, करि निशिचर संहार ॥

छन्द चौबोला।

विविध रूप करिहैं हम साँति साँति राम कुवँर कल्याना ।
तीनिहुं लोकन में तिहरो सुत पै है सुयश महाना ॥
नहिं रघुपति सन्मुख द्वै निशिचर खडे होन के योगू ।
राम छोड़ि अस कोउ नाहिं तिनकर करै जो प्राण वियोगू ॥
महावली तिमि अति अभीत शठ कालपाश वश दोऊ ।
नहिं बचिहैं रिपु राम समर महँ अस भापत सब कोऊ ॥
सुत सनेह संदेह करो जनि यदपि राम अति प्यारे ।
जानो यही सत्य नर नायक गये निशाचर मारे ॥
जैसे राम जौन जस विक्रम सो सिगरो हम जाने
जानत हैं वशिष्ठ औरो मुनि जे नितहीं तप ठानें ॥
धर्म लाभ जगती महँ थिर जस जो चारहु जगतीसा ।

तौ रामहिं अब देहु भूपमणि दुतिय विचार न दोसा ॥
जो वशिष्ठ आदिक मंत्री तुव देहिं सलाह विचारी ।
तौ मेरे सँग रघुनन्दन को देहु पठाय सुखारी
जेठो तनय तुम्हार प्राण प्रिय यदपि देत कठिनाई ।
विप्र काज लगि विन विलम्ब नृप दीजै तदपि पठाई ॥
दश दिन ते नहिं अधिक लगी दिन करत यज्ञ रखवारी ।
जाते यह मख काल टरै नहिं सोई करहु विचारो ॥
अस कहि वचन धर्म युत मुनिवर मौन भये तेहि काला ॥
मुनि नायक के वचन सुनत नर नायक भयो विहाला ।

दोहा–सींच्यो राम सनेह जल, नृप मन तरु सुकुमार ।
तापर गाधि सुवन गिरा, गिरी गाज यक वार ॥

कवित ।

कोमलकमलपैतुपारकोतोपाउजैसे,नवलतिकापैज्योंदमारिदीहज्वालहै
जैसे गजराजपैगराजमृगराजकेरी,पुनिग्रहराजपैज्योंसिंहिकाकोलालहै
भनै रघुराजरघुराजकोविरहजानि,सुखपियरायगयोकोशलभुआलहै।
परम कशालापायह्वैगयोविहालाअति,गिरिगोसिंहासनतेभूमिभूमिपालहै

दोहा–विकल विलोकत नृपति मणि, परिचर अति अकुलाइ ।
सुमन विजन हांकन लगे, सुरभित जल छिरकाइ ॥
उव्यो दंड द्वै महँ नृपति, लीन्ह्यो श्वास अघाय ।
मन्द मन्द वोलत भयो, कौशिक पद शिर नाय ॥

कवित्त ।

बूढ़ेभयेज्ञानीभयेतपसीविख्यातभये,राजऋषिह्वैतेब्रह्मऋषितुमह्वैगये
विमलविरागीभयेजगतकेत्यागीभयेविश्वबड़भागीभयेविपयउरनाये
भनैरघुराजभगवानभक्तिवान भये,महाधर्मवानसत्यवानजगज्वैगये
क्षमामेंअछेहक्षमामानभयेकाहेमुनि,मेरेछोटेछोहरापैदयावाननाभये

गोड़शहूवर्षकोनपूरोभयोमेरोसुतदूधमुखसूधनाहिंसीखोशस्त्रकलाको।
धीरतानपूरीत्योहोधीरतानपूरीदूरोबुद्धिकीगंभीरतावखानैअस्त्रबलाको।
भनैरघुराजवलविक्रमविचारिकौनमाँग्योमुनिएकजौनजीवनकोशलाको।
देशाकोपदेहोंसैनसाहिबोकोदेहोंधनप्राणहूंकोदेहोंपैनदेहोंरामललाको।
दोहा–विचरत विपिन विलोकि वृक, हहरत हिय सुकुमार।
ते किमि रजनीचर समर, करिहैं लखि विकरार॥

कवित्त।

चौथेपनपायोपुत्रचारिरावरेकीकृपा,माँगोमुनिराजनाहिंवचनविचारिकै
सर्वसवकशिदेहुंहियमेंउछाहछाइ, वनतनदेतसुकुमारतानिहारिकै॥
भनैरघुराजनेहसबपैसमानमेरो,तदापिजियोंगोकैसेरामकोनिकारिकै।
तुमहिंकहोजूकहूंशावकमरालनके,करतमतङ्गनसोंसमरहंकारिकै॥
दोहा–तुमहि दिहे कछु हानि नाहिं, सबविधि सुतन सुपास।
सुनि कानन कानन गमन, मैं किमि रहौं अवास॥

छंद चौबोला।

यह सुंदर साहनी सजी मम रिपु दाहनी विशाला।
तेहि ले रक्षण में करिहौं हति रक्स कठिन कराला॥
महा विक्रमी शूर सकल मम निपुण समर सरदारे।
ते मारिहैं निशाचर के गण नहिं माँगहु मम वारे॥
ना तो नाथ हमें सँग चलिहैं ले कर में धनु वाणा।
रजनिचरण रण करि संहरिहैं जौं लगि तन में प्राणा॥
विपन रहित पूरण मख होई करिये कछुन सभारे।
नाति साँकर तुव शासन साधन नहिं माँगहु मम वारे॥
नहिं जानत कछु बाल बलाबल अस्त्र शस्त्र नहिं ज्ञाता।
सङ्गर दाँउ पेंच सीखे नहिं किमि करिहैं रिपु घाता॥
निशिचर महा बली छलकारी मायावी उतपाती।

होइँ भले पै रघुवर बिछुरन निमिषहु नहिं सहि जाती ॥
सत्य सत्य जानहु मुनिनायक कहौं न कछु कदराई ।
जेठो कुँवर प्राण जीवन मम जीहौं नहिं बिलगाई ॥
जो रामहिं लै जान चहौ हठि तौ चतुरङ्ग समेतू ।
मैं चलिहौं मख रक्षन के हित यह मम जीवन नेतू ॥
साठि हजार वर्ष बीते मोहिं तब पायो सुत चारी ।
सह्यों महा दुख सन्तति के हित किमि सुत देहुँ निकारी ॥
यद्यपि चारि सुवन सेवक तुव मोर सनेह अथाहू ।
तदपि जेठ पर प्रीति रीति अति नहिं रामहिं लै जाहू ॥

दोहा--कहहु नाथ राक्षसन को, बल विक्रम केहि भांति ।
का के सुत कैसे वपुष, कैसी शत्रु जमाति ॥
कैसे करिहैं राम रण, रजनीचर के सङ्ग ।
मख रक्षण की कौन विधि, जेहि व्रत होइन भङ्ग ॥
मोहिं काह अब उचित है, कौशिक देहु निदेश ।
दानव मानव भषत हैं, कपटी क्रूर हमेश ॥
मैं केहि विधि रिपु जीतिहौं, कहौं सकल समुझाइ ।
बली भयङ्कर रजनिचर, करत युद्ध छल छाइ ॥
सुनि दशरथ के वचन मृदु, कौशिक मुनि मुसकान ।
करन लगे विस्तर कछुक, राक्षस वंश बखान ॥

छन्द हरिगीतिका ।

पौलस्त्य वंश प्रसिद्ध जग जेहि भयो राक्षस राज है ।
जेहि नाम रावण लोक रावण सुहित असुर समाज है ॥
सो पाय प्रबल विरञ्चि वर त्रैलोक बाधत भूरि है ।
जेहि चलति चारि दिशा चमूरविभास छावति धूरि है ॥
सो महा बल है महा विक्रम लङ्क नगर निवास है ।

भ्राता धनद विश्रवाको सुत सुन्यो अस इतिहास है॥
जेहि पाय परमप्रताप सुर पुर परत रोज परावने।
भ्रकुटी निहारत लोकपति तेहि युगल वीर भयावने॥
मारीच और सुबाहु दशमुख पाय शासन सान सों।
मख विघन करत विशेष जग में वीरता अभिमान सों॥
अस सुनत मुनि के वचन भूपति कह्यो पद शिर नायके।
ऋषि करन रावण समर हम असमर्थ हैं तहँ जाय के॥
अब होहु मेरे सुतन पैं कौशिक प्रसन्न कृपा भरे।
मोहिं जानि दीन दया करो सेवक अहैं हम रावरे॥
गन्धर्व चारण यक्ष पन्नग देव दानव व्रात हैं।
हठि तजत रण रावण निरखि तहँ मनुज केतिक बात हैं॥
अति वलिन को वल समर में दशकंठ नाशत क्षनहिं में।
ताके लरन को देहु शिशु यह बात राखहु मनहिं में॥
लै सङ्ग मुनि चतुरङ्ग यद्यपि जाहुँ सुतन समेतहू।
तद्यपि न रावण सकौं जीति सहाय नाक निकेतहू॥

दोहा–अमर सरिस सुंदर सुछवि, तापर अति गभुवार।
नाहिं जानत रण विधि कछू, नाहिं देहौं निज वार॥
सुवन सुंद उपसुंद के, सङ्कर काल समान।
भले करहिं मख विघन नाहिं, देहौं पुत्र अयान॥
जने यक्ष कन्या उदर, खल मारीच सुबाहु।
रण पंडित खंडित दुवन, मंडित समर उछाहु॥
सीखे शस्त्र कला सकल, दायक दैत्य अनंद।
सनमुख सुरभी सिंह के, पठवावहु कुलचंद॥
लगत कातरी अस कहत, होतो शासन भङ्ग।
ताते द्वै में एक सों, मैं हठि करिहौं जङ्ग॥

कही दीनता यदपि बहु शंक सकोच सुजान।
नर नायक के वचन सुनि मुनि नायक अनखान॥
हव्य बाट जिमि होम की, ज्वालामाल विशाल।
लहि आहुति लपटै कढ़ै, तिमि मुनि कोप कराल॥
विनय रीति बिसराय सब, लखि वशिष्ट की ओर।
बोले विश्वामित्र तब कीन्हे अमर बघोर॥

कवित्त।

प्रथमप्रतिज्ञाकरीशासनकरूंगोसब सुत केसनेह वश कसबिसराइये।
यहविपरीतरघुवन्शिनउचितनाहिंआजुलौंनऐसीभानुवंशिनसेपाइये॥
भनैरघुराजजोकल्याणहोइरावरेकोतौतोहमआयेजसैतेसेफिरिजाइये।
मिथ्यावादीह्वैकेभूपभोगभोगियेअनूपबंधुनसमेतसुखसम्पातिकमाइये॥
कहतसकोपविश्वामित्रकेबचनऐसे डोलिउठी धरा धराधरनसमेतहैं।
भागेदिगकुञ्जरदहनलगीदशोदिशादेवतापरानेतजिनाककेनिकेतहैं।
भनै रघुराज घोरेवारिधसुवेलनको ह्वैगयेअनेक जल जंतुहू अचेतहैं॥
हायहायमाच्योविश्वधायधायभापैसुरकालविनुकाहेप्रभुबाँधैंप्रलैनेतहैं
दोहा—व्याकुल विश्व विलोकि सब, मुनि वशिष्ठ मति धीर।
दशरथ सों बोले वचन, हरन हेत जग पीर॥

छन्द चौबोला।

सुनु इक्ष्वाकु वंश पङ्कज रवि द्वितिय धर्म अवतारा।
सुयशमान श्रीमान करहु नहिं सत्य धर्म संहारा॥
धर्म धुरंधर त्रिभुवन जाहिर धरमात्मा अवधेशा।
सत्य धर्म को धरहु धरापति तजि अधर्म दुख वेशा॥
कौशिक सों पूरब प्रण कीन्ह्यो जो कछु शासन होई।
सो करिहों मैं अवशि गाधिसुत नहिं संशय अब कोई॥
प्रण करिकै झूटो करि डारत सकल धर्म तेहि केरा।
जात रसातल तन ते तुरतहिं वेद पुराण निबेरा॥

ताते विदा करहु कौशिक सँग रामहिं मोह विहाई।
करहु न कछु भय भूमिनाथ अब राखहु धर्म सदाई॥
जानहिं बाणहिं जानहिं सिगरे अस्त्र शस्त्र रघुराई।
कौशिक ते रक्षित रघुनन्दन का करिहैं अरि आई॥
ज्यों पियूप पावक ते रक्षित सक्यो न हरि अरि कोई।
तिमि तुव सुत कौशिक ते रक्षित भगिहैं रिपु रण जोई॥
भूप धर्म विग्रह कौशिक मुनि बलिनहुँ माहिं बलीना।
अस नहिं विद्यावान जगत महँ महा कठिन तप लीना॥
अस्त्र शस्त्र जानत जस कौशिक कोउन चराचर तैसो।
इन सम कोउ नहिं यहू काल महँ नहिं जानिहै पुनि ऐसो॥
देव सिद्ध मुनि असुर राक्षसहु यक्ष प्रवर गंधर्वा।
किन्नर चारण सहित महोरग इन सम जग नहिं सर्वा॥

दोहा--पुरा प्रजापति एक रह, जासु कृशाश्वहि नाम।
अस्त्र शस्त्र सब देत भो, सो कौशिकहि ललाम॥
दिव्य शस्त्र अरु अस्त्र सब, अहैं कृशास्व किशोर।
अङ्ग उपनिपद रहस युत, शिवसों लियो निहोर॥
रह्यो चक्रवरती नृपति, विश्वामित्र महान।
कियो राज शासन पुरा, जाहिर भयो जहान॥
ते सब पुत्र कृशास्व के धार्मिक रहे सुबाम।
दक्ष सुता युग ते रहीं, जया सुप्रभा नाम॥
यक यक कन्या प्रगट किय, पुत्र पचास पचास।
जयकारी दुतिमान अति, रूप अनेक विकास॥
सत संख्यक दिव्यास्त्र सब, प्रगटे भूरि विभास।
काम रूप बरिबंड अति, जिन किय असुर विनास॥
जन्यो सुप्रभा जे सुवन, ते तिनके संहार।

सब अमोघ दुर्धर्ष ते, जानत गाधि कुमार ॥
विश्वामित्र चहैं जो नृप, विरचैं अस्त्र नवीन।
ऐसो समरथ धर्म वित, मुनि सरवज्ञ प्रवीन ॥
त्रिकालज्ञ यह गाधि सुत, कछु नहिं जो नहिं जान ॥
तिनके सँग रघुपति गमन, नृप संशय जनि मान ॥
यदपि निशाचर हनन में समरथ गाधि कुमार।
तव सुत के हित हेतु हठि. याचत जानि उदार ॥

सवैया।

ऐसो सुनी वर वानी वशिष्ठ की भूपति के मन आनँदआ
कौशिक के सँग में सुत को गुन्यो गौन सुमंगल भौनसो
श्रीरघुराज को शोक मिट्यो रघुनंदन देन हियो हुलसा
फेरि महीप विचारि मनै वन एक को गौनन योगजनायो

इति सिद्धिश्रीसाम्राज श्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपा
धिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयम्बर ग्रं
विश्वामित्र गमन वर्णनोनाम सप्तमः प्रबंधः ॥ ७ ॥

दोहा–यदपि गाधिसुत सङ्ग में, नहिं दुख पैहैं राम।
लषण गमन सँग उचित है, मारग सेवन काम ॥

छंद चौबोला।

अस विचारि मन महँ धरणीपति तुरत सुमन्त बोलायो।
गद गद गर अतिशय धीरज धरि मंजुल वचन सुनायो ॥
जाहु सुमन्त राजमंदिर महँ लै आवहु इत रामैं।
लै आइयो लषनहूं को इत जो उन के सँग आमैं ॥
सुनत सुमन्त नाथ वन्दन करि रघुनन्दन ढिग आयो।
चलहु राम अभिराम जनक ढिग भूपति तुमहिं बोलायो ॥
सुनि पितु शासन गुनि दुख नाशन उठि आसन ते आसु।

गहे लषण कर कमल जगतपति चले पिता के पासू ॥
रामहिं लषण सहित आवत लखि दुखी सुखी समराजा।
कियो जनक वन्दन रघुनन्दन उठी तुरन्त समाजा ॥
भूपति दै असीस अपने ढिग बैठायो रघुनाथै ।
विश्वामित्र वशिष्ठ कमल पद धरचो राम निज माथै ॥
तैसहिं लषण वन्दि मुनि पितु पद बैठे रघुपति पासा।
रघुपति वदन विलोकि गाधिसुत पायो परम हुलासा ॥
राम जाहु कौशिक मुनि के सँग कढ़त न नृप मुख बानी ।
राज समाज जकीसी ह्वै गै मन महँ परम गलानी ॥
अवसर जानि वशिष्ठ कह्यो तहँ सुनहु राम मम प्यारे ।
आइ परचो यक द्विज कारज अब बनतो गये तिहारे ॥
कौशिक मुनि मख रक्षण के हित चहत पठावन राजा ।
मुनि प्रताप ते काज सिद्धि सब तुमको सुयश दराजा॥

दोहा—मातु पिता गुरु सदन ते, तिहरो अधिक सुपास।
तुम क्षत्री रघुकुल धनी, कीजै वैर विनास ॥

छंद चौबोला ।

सुनि वशिष्ठ के वचन धीर धरि धरणीपति पुनि भाष्यो।
विप्र काज लगि आजु देहुँ मैं नाहिं सरबस कछु राष्यो ॥
धर्म धरा सुर हित क्षत्रिन के लागत तन धन धामा ।
ते क्षत्री त्रिभुवन महँ पूजित होत सिद्धि सब कामा ॥
सुनहु प्राण प्रिय राम आजु ते जब लगि मुनि सँग रहियो।
मातु पिता गुरु भाव गाधिसुत महँ सब विधि ते गहियो ॥
जननि जनक ते अधिक गाधिसुत करिहैं संच तिहारो ।
कौशिक शासन सकल शीश धरि सिगरो काज सिधारो ॥
अस कहि सजल नयन गद गद गर भूपति भये दुखारी।

उठि तुरंत कर जोरि सुखी सुठि रघुवर गिरा उचारो ॥
विप्र काज लगि पुनि पितु शासन गुरु निदेश पुनि भा
मोते कौन धन्य धरणी महँ सकल सुकृत फल पायो।
जाउँ मातु पद वंदन करिकै गुरु पितु पद शिर नाई।
विश्वामित्र सङ्ग जैहौं हठि करिहौं सब सेवकाई ॥
अस कहि उठे लोक लोचन फल जननी सदन सिधारे।
तब पितु पद प्रणाम करि लछिमन हरषित वचन उच
रघुपति सङ्ग विप्र कारज लगि मोरेहु गमन उराऊ ॥
देहु निदेश नाथ निरशङ्कित यहिमें मोर बनाऊ ॥
भूपति कह्यो उचित अस तुमको जाहु राम हित लागी
सावधान रहियो निशि वासर जेठ बंधु अनुरागी ॥

दोहा—लषण मनहुँ सरबस लहे, चले राम के संग ।
जननी सदन सिधारिकै भाषे भरे उमंग ॥
आयो विश्वामित्र मुनि नृप सों मध्य समाज ।
माँग्यो रघुपति को हुलसि, मख रक्षण के काज ॥
महि सुरकाज विचारि कै, पिता राम को दीन ।
होंहूं सङ्ग सिधारतो, रहौं न राम विहीन ॥
जननी शंक न कीजिये, सादर देहु रजाय ।
दश दिन में द्विज काज करि, ऐहौं इत अतुराय ॥

कवित्त।

सुनतठगोसीरहीमातुनहिवाणीकहीमहादुखसानीसहीसोचनसमातहै।
सुरतसँभारिनैनपरतआमितवारिबोलीहैपुकारिकोशिलाजूऐसीबातहै।
भनैरघुराजमेरोजीवनअधारसुकुमारहैकुमारन विदेशरीति ज्ञातहै ॥
[illegible] जातहै
[illegible] है।

अहैंसबकोऊशूरसचिवसुहृदवोऊ बरजैं न सोऊदोऊमुनिकाबतातहै॥
भनै रघुराज सूधदूधमुखमेरोलालजानैनाभुआलयहकालकरामातहै।
करीकौनकरतूतमुनिकोलग्योधौंभूतदेखोमेरोपूतअवधूतलीन्हेजातहै
सोरठा—सुनि कोशिला प्रलाप, आईं सब रानी तहां।
लागीं करन विलाप, राम गमन काको रुचत॥
जननी विकल विचारि, रघुनन्दन बोले वचन।
तोको शपथ हमारि, करै खेद जो नेकु मन॥

छन्द चौबोला।

द्विज कारज लगि क्षत्रिन को तन गाधिसुवन सेवकाई।
गुरु अनुमत पुनि पितु निदेश शिर तामें मोर भलाई॥
छत्री कुलमहँ जन्म विप्र दुख कानन सुनि नहिं जातो।
सो अति अधम तासु यह अपयश जननी जगन समातो॥
गुरु पितु अरु तुव पद प्रताप ते मोर सिद्ध सब काजा।
जो अनुचित कछु जानत तौ कस जान देत महराजा॥
ताते अब नहिं कछु शङ्का करु मङ्गल करु महतारी।
रञ्चक नहिं बिसंच कौशिक सँग जात लषण सहकारी॥
सुनत सुवन के वचन कौशिला धरि धीरज उर भारी।
बोली वचन सूंघि सुत को शिर जैसी खुशी तिहारी॥
अस कहि मंगल द्रव्य साजि सब दधि दुर्वा धरि थारी।
गौरि गणेश पुजाय पूत कर मंगल वचन उचारी॥
रक्षहिं नारायण सब थल महँ सहित विरञ्चि पुरारी।
सकल देव दाहिने दशो दिशि रहैं शोक भय हारी॥
रंगनाथ को हौं सुत सौंपति इष्टदेव भगवाना।
मो गरीबिनी के दोउ बालक रखैं कृपानिधाना॥
अस कहि सावित्री तिय के शिर धरि धरि कलश सहीना।

उठि तुरंत कर जोरि सुखी सुठि रघुवर गिरा उचारो॥
विप्र काज लगि पुनि पितु शासन गुरु निदेश पुनि भायो।
मोते कौन धन्य धरणी महँ सकल सुकृत फल पायो॥
जाउँ मातु पद वंदन करिकै गुरु पितु पद शिर नाई।
विश्वामित्र सङ्ग जैहौं हठि करिहौं सब सेवकाई॥
अस कहि उठे लोक लोचन फल जननी सदन सिधारे।
तब पितु पद प्रणाम करि लछिमन हरषित वचन उचारे॥
रघुपति सङ्ग विप्र कारज लगि मोरेहु गमन उराऊ॥
देहु निदेश नाथ निहशङ्कित यहिमें मोर बनाऊ॥
भूपति कह्यो उचित अस तुमको जाहु राम हित लागी।
सावधान रहियो निशि वासर जेठ बंधु अनुरागी॥

दोहा—लषण मनहुँ सरवस लहे, चले राम के संग।
जननी सदन सिधारिकै भापे भरे उमंग॥
आयो विश्वामित्र मुनि नृप सों मध्य समाज।
माँग्यो रघुपति को हुलसि, मख रक्षण के काज॥
महि सुरकाज विचारि कै, पिता राम को दीन।
होंहूं सङ्ग सिधारतो, रहौं न राम विहीन॥
जननी शंक न कीजिये, सादर देहु रजाय।
दश दिन में द्विज काज करि, ऐहौं इत अतुराय॥

कवित्त।

सुनतठगोसीरहीमातुनहिंबाणीकहीमहादुखसानीसहीसोचनसमातिहै।
सुरतगँभारिनैनपरतअमितवारिचोटीदैपुकारिकैशिशानृपसीबातिहै।
भनैरघुराजमेरेजीवनअधारसुकुमारदैकुमारन विदेशरीतिजातिहै॥
भूपकिर्योंदाग्योभूतगेक्योंदिनमनवृतहायमेरापूतअवधूतलोंकैजातिहै।
हूजहुँसमानमेंकमोंजागनअनैसीपैसीजैसोहोतआनपैसीकहूँनादिखातिहै।

पढ़न लगे स्वस्त्ययन भूपमणि सब संदेह विहाई ॥
दोहा-विजयमंत्र पढ़ि सहित विधि, अभिमंत्रित करि अंग।
मंगल लागे पढ़न पुनि, गुरु वशिष्ठ दुख भंग ॥

छन्द चौबोला।

कुशिक तनय पुनि दशरथ नृप को दीन्हे आशिरबादा।
तुमहीं बिन को राखे मेरी सकल धर्म मर्य्यादा ॥
शीश सूंघि दशरथ पुत्रन को फेरि पीठि में पानी।
दियो कुमारन कुशिक तनय को जे मंगल अनुमानी ॥
राम लपण को आगे करिकै विश्वामित्र सिधारे।
चले कछुक भूपति पहुँचावन सहित वशिष्ठ उदारे ॥
आगे राम लपण पुनि कौशिक गुरु वशिष्ठ महराजा।
राम लपण दशरथ आसीसब सोहति राज समाजा ॥
द्वार देश लौं जाय गाधिसुत बोले मंजुल बानी।
सीखदेहु तौ अब हम गमनहिं बसहु अवध सुख खानी ॥
भूपति चरण पकरि पुनि पुनि कह ये तुम्हरे दोउ बारे।
इनकी सोपाति सकल भांति की मुनिवर हाथ तिहारे ॥
राम लपण पुनि गुरु वशिष्ठ कहँ कीन्ह्यो दंड प्रणामा।
आशिरवाद दियो मुनि हरपित होहिं सिद्ध सब कामा ॥
पुनि नरेश रघुनाथ लपण को शीश सूंघि उर लाई।
बिदा कियो पढ़ि मंगल मंत्रन दुख सुख आंसु बहाई ॥
फैलि गई सुधि सकल अवधपुर धाये सब पुर वासी।
मुनि भय वश कछु वचन कहत नहिं सङ्ग गमन के आसी॥
राम तिन्है समुझाइ कह्यो बहु ऐहौं दशदिन माहीं।
धरहु धीर नेसुक प्रिय पुरजन मुनि सँग में भय नाहीं ॥
दोहा-राम लपण लै मुनि चलै, धन्य जनम निज मानि।

शीतल मंद समीर तहँ वहन लग्यो सुख खानि ॥

छन्द चौबोला।

जगत प्रसन्न भयो तेहि अवसर देव महा सुख माने।
दै दुंदुभी धुकार गगन महँ वरषैं फूल अमाने ॥
रञ्जक रजनहिं गगन पंथ महँ अति निरमल दश आशा
वदहिं परसपर देव दुखी सब भयो अवशि दुख नाशा।
चढ़ि विमान जब गगन पंथ महँ देवन दियो नगारे।
सो सुनि अवध शंख सहनाई बाजन लगे अपारे ॥
सगुण होत अति सुखद दशो दिशि विप्र करत जै कारा
फरकत दक्षिण नयन बाहु भ्रुव चित उत्साह अपारा ॥
सावित्री द्विज नारि कलश शिर लै शिशु सनमुख आवैं
वछरा प्यावत मिलै धेनु ढिग मृगगण दक्षिण धावैं ॥
क्षेमकरी ऊपर थहराती मिलहिं पढ़त द्विज वेदा ।
दधि तंदुल कहँ मिलहिं मीन पथ बार वधू विन खेदा ॥
बोलहिं विविध विहङ्ग सोहावन लोवा दरशन देती ।
अग्निहोत्र पावक ज्वाला माला हवि बढ़ि बढ़ि लेती ॥
नीलकण्ठ उड़ि बैठत तरु पर हंसावली उड़ाती ।
आवत सन्मुख सजे बाजि गज पीठि पवन रिपु घाती ॥
आगे विश्वामित्र चले तहँ पाछे राम सुजाना ।
लषण चले तिनके पाछे पुनि लिहे शरासन बाना ॥
जहँ जहँ जात राम लछिमन मुनि तहँ तहँ अम्बर माहीं ।
मन्द मन्द मृदु विंदु वरषि घन करत पन्थ महँ छाहीं ॥

दोहा–अति सुकुमार कुमार दोउ, मुनि मुख निरखत जात ।
करत पान पीयूप छवि, तदपि न नेकु अघात ॥

कवित्त ।

भाउ सेसिरी आरेकुंडलझलकवारेकुंचितअलकवारेगोरतनकारे ॥

मन्दमुसकानवारेनेकुनैनअरुणारेकटिमेंनिषङ्गकरबालनकोधारे हैं ॥
वामकरचापवारेदाहिनेसुधारेशरपीतपटवारेतीनों लोक रखवारे हैं॥
भनैरघुराजमुनिसङ्गमेंसिधारेदोऊ काकपक्षवारेदशरत्थकेदुलारे हैं॥
हाथनमेंसोहेतदस्तानेगोधचर्मनके कठिनकरालकरवालकटिकालसी
लोचनविशालहियेलालनकीमालपीठसोहैढकीढालमूर्तिकोटिरतिपालसी
भनैरघुराजरघुराजवन्शपालमुख उदैउडुपालहारावलीउडुजालसी ॥
आगेमुनिपालपुनिसोहैंरघुलालत्योंलषणलालपीछेशोभासांचीतीन्यालसी।

छन्द गीतिका।

ग्रामीण निरखत कुँवर दोउ मुनि सङ्ग विपिन सिधारहीं।
सुकुमार अति सुकुमार काके मदन मदहि उतारहीं ॥
नर नारि जुरि जुरि ते परसपर विविध वचन उचारहीं।
कानन कठिन कोमल चरण कोउ सुजन कसन नेवारहीं ॥
भल जननि जनक दया विहीन पठाय दीन सुकानने।
अवधूत यह निर्दय अकृत न वरिजहूपर मानने ॥
कोउ कहत पुनि कारण कवन मुनि सङ्ग बालक आनने।
हमको लगत अनुचित अमित नहिं हेतु कछु पहिचानने ॥
कोमल वदन नहिं घोर आतप चलत पथ कुम्हिलात हैं।
श्रमबिंदु वदन विराजते मनु ओसकण जलजात हैं ॥
कोउ कहत क्षत्री कुँवर दोउ संग्राम हेत जनात हैं।
करि अमित छल उपजाय भ्रम मुनि माँगि लीन्हे जात हैं ॥
कोउ आय पूछहिं निकट चलि बालक युगल मुनि कौनके।
केहि हेतु तुम लै जात कहँ कस भये प्रिय नहिं भौन के ॥
कौशिक कहत दोउ तनय मेरे रहैं सँग पुनि कौन के।
जिमि तुम सुतन निज चहहु जहँ लै जाहु कारज कौन के ॥
लखि ग्रामनीतिय युगल जोड़ी कहहिं वचन विचारिकै।

यह मुनि कठिन अतिशै निठुर नहिंद्रवत कुँवर निहारिकै।
कोउ कहहिं हमारे ग्राम महँ मुनि बसहिं कहहु सुधारिकै।
कोउ कहहिं जो नहिं बसहिं तौ अब जाहिं धूपनेवारिकै॥
कोउ सलिल शीतल ल्याय भापहिं कुँवर कछुक पियाइये
कोउ ल्याय भोजन विविध व्यञ्जन कहहिं नेकु खवाइये॥
कोउ नारि नर निज भवन द्वारहि कहहिं मग इत आइये
कोउ कहहिं कौशिक करहु करुणा इतहि रजनि बिताइये
दोउ राज कुँवरन लखन हित नर नारि सङ्ग सिधारहीं।
कोउ निकट चलि पूछहिं भवन कहँ कौन हेत पधारहीं।
रघुपति कहत हँसि मुनि जनक मम औरकछु न विचार
जहँ जात मुनि तहँ जात हम सेवा धरम निरधारहीं॥
जिन चरण पुहपन पांखुरी चाहति गड़ानि अति कोमले
ते कठिन कङ्कर सहत किमि पठये जनक जननी भले॥
कोउ कहत क्षत्री जाति राज कुमार हैं सँग निर्मले।
नहिं गनत परहित हेत निज दुख वन्श के अति उज्ज्वले॥
कोउ कहति सखि तैं जा दिठौना विंदु दीजै भाल में।
जामें न टोना लगै दोहुँन उचित है यहि काल में॥
कोउ कहत गमनत पीर ह्वै है चरण वरण प्रवाल में।
मैं जाहुँ नेसुक दाबि आऊं चलत चाल मराल में॥
जुरि जुरि कहहिं नर नारि अस छविभाजुलो देखी नहीं।
नर नाग सुर गन्धर्व सवं अखर्व यद्यपि हैं सही॥
कोउ कहहिं सुंदरता समेत रच्यो विरञ्चि उमाहहीं।
सुनियत मदन को परम [illegible] चि सो [illegible] नको छाहहीं॥

दोहा—दोउ पन तन समता [illegible]
चढ़े गगन दिय हारि [illegible]

कवित्त।

ीर रस रङ्गवोरे जुरे जङ्गजैतवारेनैन अरुणारे वाण धनुपनिधारेहैं।
पूरतिपै कोटिमैनवारेखङ्गतूणवारे वदनप्रकाशदश दिशनिपसारेहैं॥
भनैरघुराजदोऊविश्वामित्रसङ्गवारे मुनिमखरक्षणके हेतु पगु धारेहैं।
क्रीटयकतूणयककरशरनोकतीजे मानोतीनिफनकेभुजंगभयकारेहैं॥
पङ्कजपगनिविश्वामित्रसंगपंथडोलैं आपतौअक्षुद्रक्षुद्ररक्षकुलघाती हैं।
करशरसहितशरासनकृपाणतूण चमकै अनेकरङ्गभूपणकीजातीहैं॥
भनैरघुराजमुनिपाछेपाछेआछेलसैं काछेकटिकाछनीनसङ्गमेंजमातीहैं।
मानोकरतारविश्वव्याधिकेनिवारनकोलीन्ह्योसङ्गअश्वनीकुमारछविमातीहैं।
भापैमुखएकरामलपणकीशोभाकौनशेपशिवशारदाउचारिहियहारेहैं।
मोहतमनुजमन मंडितकरतमहि मन्दमन्दमगमेंगयन्दगतिवारेहैं॥
भनैरघुराज विश्वभूपणविराजैंदोउ धर्मकेधुरन्धरधरामेंधाक धारेहैं।
कोमलकमलहूतेकठिनकुलिशहूतेमानोशीतभानुभानुकाननपधारेहैं।

सवैया।

मुनि संग चले रघुनन्दन सोहत निन्दत मैन अनंदित रूप हैं।
दोउ अनंदित वंदित विश्व ते आपही ते अपने अनुरूप हैं॥
पावक के हैं कुमार मनो युग गो द्विज रक्षक धर्म के जूप हैं।
गाधितनै मख राखन के हित भेज्यो कुमारन कोशल भूप हैं॥

दोहा—यहि विधि विश्वामित्र सँग, चलत चलत मग राम।
अवध नगर ते कोस पट, आये अति अभिराम॥

बरवै।

अतिकठोरलगिआतपकोमलगातश्रमजलकणतननिकसेअतिहिसोहात
तरुतमालमहँमानहुसीकरओसझलमलझलकतचहुंकितपायप्रदोस॥
गौर लपण तन सोहत जलकणचारु मानहुँरजताचलपरतारविहारु।
अतिशैकोमलआननकछुकुम्हिलानसांझसमयजिमिअंबुजनेकुमलान

देखि महामुनिमनमेंमानिगलानितरुछायालखिसीरीश्रम सुखदानि।
ठाढ़े भयेमहामुनिसमयविचारिमधुरवचन बोले पुनि राम निहारि॥
सुनहु राम रघुनन्दनराजकुमार कौशिल्या सुखकारी प्राण पियार।
बन्योनल्यावतमोसेमन पछितात कारज बशकाकरिये वनतनजात॥
अमलकमल पद कोमल भूमि कठोर कैसे पन्थ सिरैहै राजकिशोर।
इतै सलिल अति शीतल कीजै पान तरु छायामें बैठो मुखकुम्हिलान॥
असकहिऐंचि कमंडलजलभरिल्याय राजकुमारनमुनिवरपानकराय
पोंछिप्रस्वेदपाणिनिजव्यजनडोलाय रामलषणसे बोलेमुनिअकुलाय॥
सुनहु वत्स मम प्यारे मंत्रउदार बला अतिबला विद्या मोद अगार
पढ़ेयुगलविद्याके सकलसुपास नहिंश्रमतननहिंभ्रममननहिंबुधिनाश
नाहिं विपरीत रूप कीकवहूँ होय बलाअतिवला विद्या पढ़े जोकोय
सोवत जागत बैठत वागत माहिं करैं धर्पणा निशिचर कबहूँनाहिं
जो विद्या पढ़ि लेहो रामसुजान तौ तुम्हरीभुजवलसमजग नाहिंआन।
तीनि लोकमहँतुमसम होइ न कोय पढ़े जोकोउ यहविद्याजानैसोय॥
भाग्यमान अरुचतुरहुँतेहि समकौन सब प्रश्नन कोउत्तरभाषततौन।
निश्चय काज करन में सोइ प्रवीन ज्ञानमान मतिमानहुँ धीरधुरीन॥
जो विद्या पढ़ि लेहो तुम रघुवीर तौ तुम्हरे सम होई कोइ न धीर।
पंथ पढ़त शुग विद्या दुखनहिंहोइ सकल ज्ञानकीमाता जानहुदोइ॥
क्षुधातृपानाहिंवाधातै लगतिनथाकजेोकोउ पढ़ैपंथमहँतेहिवलधाक।
लेहु युगल विद्या तुम राजकुमार सकल लोक के रक्षण हेत उदार॥
बला अतिबला जोतुमपढ़िहौराम तौतिहरो यशव्यापीतीनिहुँधाम।
दोउविरञ्चि की तनया तेजअपार तुम लायकाविद्या के धर्म अधार॥
सुरनर मुनिके कारज तुमसेलाग तपकरिपावताविद्या सहितविभाग।
लेहु राम रघुनन्दन विद्या दोय तुमसम कोउप्रिय मोरपरै न जोय॥
दोहा—सुनि प्रभु मुनि के वचन वर, चरण करन जल धोय।

अति प्रसन्न मन शुचि सदा, बैठे मुनि मुख जोय ॥

छन्द चौबोला ।

अवसर जानि गाधिनंदन तहँ विद्या मंत्र उचारे ।
कण्ठ कराय सिखाय न्यास सब बोले वचन सुखारे ॥
जन अभिराम राम यहि रजनी इतहीं करहु निवासा ।
सकल वास को है सुपास इत आगे चले प्रयासा ॥
राम लषण लहि विद्या मुनि सों शोभित भये प्रकाशी ।
मनहुँ हजारन किरणि पसारत उदित शरद तम नाशी ॥
परम रम्य सुन्दर अमराई सरयू सुखद किनारे ।
विश्वामित्र निवास कियो तहँ संयुत राज कुमारे ॥
संध्या समय विचारि गाधि सुत राम लषण सँग लीन्हे ।
चलि सरयू तट शुचि निरमल जल संध्या वंदन कीन्हे ॥
पुनि आये तीनों निवास थल मुनिवर बोले बानी ।
शयन करब अब उचित लाल इत मम आँखी अलसानी ॥
सुनि कौशिक के वचन बंधु दोउ कोमल तृण बहु ल्याई ।
निज कर कमल सुधारि शयन हित दीन्ही सेज बनाई ॥
विश्वामित्र बहुरि अपने कर कियो सेज विस्तारा ।
कराहिं शयन सुख सहित उभै दिशि जामें राजकुमारा ॥
शयन करन जब परे महा मुनि राम लषण दोउ भाई ।
लगे चरण चापन कौशिक के कर पङ्कज पसराई ॥
जाके कौशिक आदि ब्रह्मऋषि पद पङ्कज रज ध्यावैं ।
सो प्रभु कुशिक तनै पद मींजत यह अचरज सुर गावैं ॥

दोहा—ऋषि बोले मञ्जुल वचन, करहु शयन अब लाल ।
कौन तुम्हार सरिस जग, नन्द धर्म को पाल ॥
सुनि गुरु शासन बंधु दोउ, शयन कियो तृण सैन ।

लागे कहन कथा कछुक, विश्वामित्र सुतेज ॥

कवित्त ।

पावनिपरमयहरजनीसुहावनीहै आवनिमयङ्ककीअनन्दअधिकाई है
उदैउडगणउपजावनिशयनप्रीतिधावनिसमीरअलसावनिसदाई है
रघुराजदिनश्रमसकलनशावनिसनङ्ककी बढ़ावनिमयङ्कप्रभुताई है।
चोरसुखछावनिविछावनिनयननींदशांतगतिभावनिविभावनिसुहाई है।

दोहा—ऐसी कहि नेसुक कथा, शयन कियो मुनि नाथ ।
सोवत गुरु गुणि लषण युत, शयन कियो रघुनाथ ॥

कवित ।

कोमलकलितसुमसेजकेसोवैयादोऊमंदिरमणिनमातुव्यजनडोलाईं
सरससुगन्धफैलीरहतिअनेकभांतिमणिनप्रदीपकीप्रकाशताजहांईं
सोईरघुराजदोऊसोवैंतृणसेजहोमें वृक्षनकीछायावन भूमिकातमाईं
तदपिकृपीशसुखलालनतेपालनते औधतेअधिक सुखसवंरीसोईं

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी सी. एस. आई कृत राम स्वयम्वर ग्रन्थे राम गमन वर्णनो नाम अष्टमः प्रबन्धः ॥ ८ ॥

दोहा—सुख सोवत रघुपति लषण, आगम जानि प्रभात ।
विश्वामित्र उठे प्रथम, राम दरश ललचात ॥

छन्द चौबोला ।

झलमल गगन पंथ तारागण निरखि मयङ्क मलानो ।
मनो समर करि भानु सङ्ग महँ हारो हहरि परानो ॥
विकसन लगी कमल कलिका कल कुमुदिनि गन मकुलानें ।
मनो विभाकर वीर विलोकन निशि कर सुभट सकानें ॥
कूजन लगे कलापन विहङ्ग वर बैठ वृक्षन डारें ।
अंशुमान आगम सुनि मानो द्विज गन वेद उचारें ॥
नभहिं हटानि क्रम क्रम आनन पूरब दिशि अरुनाई ।

छन्द चौबोला।

पुरुषसिंह जागहु रघुनंदन कौशिल्या के प्यारे।
करहु विमल सरयू जल मज्जन सज्जन प्राण अधारे॥
हे रघुनंदन संध्या वन्दन, को अब अवसर आयो।
उदै उदैगिरि अंशुमान भो तुव दरशन ललचायो
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति उठे नयन अलसाने।
लषणहुँ को जगाय मुनिवर पद वंदे हिय हरषाने॥
पर्ण सेज तजि प्रात कृत्य करि सरयू तीर सिधारे।
सविधि कियो सरयू जल मज्जन धौत वसन तन धारे॥
दै दिनकर को अर्घ मंत्र पढ़ि उपस्थान पुनि कीन्हे।
गायत्री को जपन लगे पुनि ब्रह्मबीज मन दीन्हे॥
यहि विधि करि संध्या वंदन रघुनंदन मुनि ढिग आये।
मुनि पद पदुम पराग शीश धरि भूषण वसन सोहाये॥
कसि निषङ्ग कोदंड चंड शर लै कर क्रीट सवाँरी।
पहिरि युगल दस्ताने दोउ कर कीन्हे चलन तयारी॥
राम लषण को देखि गाधिसुत अतिशय आनँद पाये।
लै मृगचर्म कमंडल मुनिवर आगे चले सोहाये॥
राम लषण गमने तिन पाछे आछे वेष बनाये।
गङ्गा सरयू सङ्गम पहुँचे तहँ मध्याह्न नहाये॥
करि मध्याह्न काल की संध्या मुनिवर निकट सिधारे।
मुनि दीन्हे फल मूल सुधा सम दोऊ बन्धु अहारे॥

दोहा–मुनि के आगे आय के, बैठे लषणहुँ राम।
लखि गङ्गा सरयू मिलनि, लहत भये सुख धाम॥

छंद चौबोला।

गङ्गा सरयू सङ्गम के तट आश्रम लखि बहु मुनि के।
करत रहे पूरब जहँ बर तप निकट सरयु सुर धुनि के॥

राम कह्यो कर जोरि सुनहु मुनि काके आश्रम अहहीं।
देहु बताय कृपा करि हमको सुनन बन्धु दोउ चहहीं॥
सुनि कोशल किशोर की वाणी कौशिक मुनि सुखपाई।
कह्यो विहँसि अवधेश लाल सुनु आश्रम जासु सोहाई॥
मदन रह्यो जब मूरतिवन्त काम जेहि बुध वर भाखें।
योगी तपी ब्रह्मचारी जन जासु सदा भय राखें॥
तौन काम को बोलि शक्र ढिग ऐसे वचन उचारा।
हर गिरिजा को व्याह भयो अब कैसे जनै कुमारा॥
सेनापति सो होइ हमारो भयो व्याह यहि हेतू।
आई गौरि गेह जबते तबते किय शिव तप नेतू॥
जाहु करहु तुम विघन शम्भु तप यह उपकार हमारो।
चल्यो शक्र शासन सुनि मनसिज उर में जन्यो खभारो॥
शीतल मंद सुगन्ध समीर वसन्त लिये सँग माहीं।
हन्यो कुसुम शर शंकर के उर पूरब राम इहाँहीं॥
सावधान तप करत रहे इत निश्चल अङ्ग गिरीशा।
हेर्यो करि हुंकार कोपि हर जर्यो काम नहिं दीशा॥
जबते काम जरायो शङ्कर गिरिगे यह थल अङ्गा।
कहवावन लाग्यो तबहीं ते जग में मदन अनङ्गा॥

दोहा–गिरे अङ्ग यहि देश में, अङ्गहीन भो काम।
अङ्ग नाम यहि देश को, भयो तबहिं ते राम॥

छन्द चौबोला।

सो अनङ्ग कोहै यह आश्रम ये मुनि शिष्य हमारे।
सबै निरन्तर निरत धर्म महँ विगत पापहै प्यारे॥
आजु रहहु इतहीं रघुनन्दन सिगरी रजनि सुखारी।
महा पुण्यप्रद दोउ सरिता वर उतरब उये तमारी॥

रजनी में उतरन नहिं लायक उतरब भये प्रभाता।
चलब सबै पुनि सिद्धाश्रम को महा पुण्य फल दाता॥
रघुनंदन निज पद रज पावन यह आश्रम करि दीजै॥
तुव दरशन अभिलषित सकल मुनि लोचन सफल करीजै॥
करि मज्जन जप हवन सकल मुनि बैठे आश्रम माहीं।
तप विज्ञान दृष्टि ते जाने आये राम इहाहीं॥
निज गुरु सहित लषण रघुपतिकी सब मुनि जानि अवाई
आये आसु दरश के आसी मनहुँ महा निधि पाई॥
गुरु को कियो प्रणाम चरणमहँ रामहि दियो असीसा।
कंद मूल फल आगे राखे पूछो कुशल मुनीसा॥
अर्घपाद्य आचमन आदि दै पूजे गुरुहिं अपारा।
अनुपम अतिथ विचारि राजसुत कीन्हे बहु सत्कारा॥
मुनि जन ते सत्कार पाय बहु कहि निज कुशल कहानी।
सरयू सुरसरि सङ्गम गमने संध्याकालहिं जानी।
राम लषण कौशिक करि मज्जन संध्यावन्दन कीने।
मुनि लेवाइ लै गये आश्रमहिं करि विनती मुद भीने॥
दोहा–राम लषण कौशिक तहां, बैठे मुनिन समाज।
कामाश्रम वासी मुनिन, भयो अनंद दराज॥
मुनि कहि कथा विचित्र अति, सब अभिमत अभिराम।
लषण राम अभिराम को, कीन्ह्यो मन विश्राम॥
शयन काल पुनि जानिकै, तृण साथरी बिछाय।
सोये विश्वामित्र मुनि, लषणहुँ राम सोवाय॥
यहि विधि कामाश्रम सुखी राम लषण मुनि सङ्ग।
बसत भये मुनिगण सहित, लहि आनंद अभङ्ग॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई कृते रामस्वयम्वर ग्रन्थे कामाश्रम निवास वर्णनोनाम नवमः प्रबन्धः।

दोहा-भानु आगमन जानिकै, लाल शिखा धुनि कीन।
सबते आगे जगत पति, जागे राम प्रवीन॥

छन्द चौबोला।

कह्यो लषण कहँ उठहु लाल अब भये भोर सुखदाई।
इतने में मुनि नाथ उठे पुनि हरि हरि हरि मुख गाई॥
राम वदन तब निरखि गाधिसुत मंजुल वचन उचारे।
सुरसरि सरयू संगम मज्जन गमनहु सङ्ग हमारे॥
कौशिक संग चले सरिमज्जन राम लषण रणधीरा।
विश्वामित्र शिष्य सिगरे मुनि गवने बुद्धि गँभीरा॥
सुरसरि सरयू सङ्गम में सब सविधि कियो अस्नाना।
दै रवि अर्घहि उपस्थान करि गायत्री जप ठाना॥
नित्य नेम निरवाहि उछाही आश्रम आइ तुरन्ता।
करी गमन की सपदि तयारी कह्यो मुनिन मतिवन्ता॥
आनहु नाव उतारन के हित उतरैं गङ्ग सुखारी।
अस कहि तीर गये सुरसरि के मुनि युत सुर भय हारी॥
ल्याये सुख भरनी मुनि तरनी गुरु सों कहैं सुबैना।
उतरहु नाथ विलम्ब करहु जनि होइ पंथ प्रद चैना॥
कौशिक कह्यो भली भाषे मुनि को तुम सम उपकारी।
अस कहि चढ़ि मुनिवर कुँवरन युत नाउ नवीनहिं भारी॥
राम लखण युत लषण लगे तहँ सरयू गंग हिलोरे।
जल उच्छलत स्वच्छ मच्छन युत कच्छप पीठि कठोरे॥
मंद मंद कहुं चलत विमल जल कहुं सवेग धुनि धारा।
भूरि भ्रमर गम्भीर परत कहुँ शोर घोर घहरारा॥

दोहा-उठतीं तुंग तरंग बहु, बोलत विपुल विहंग।
सरयू सुरसरि दरश ते, होत तुरत अघ भंग॥

सरयूजल जब गंगजल, मिलत मध्य महँ जोर।
घोरशोर तब होत तहँ, लहिकै पवन झकोर॥

छंद चौबोला।

लरिकाई बश करि चपलाई सहित लषण रघुराई।
पूछत भये शोर कस होतो देहु मुनीश बताई॥
अति कौतुक मोहि लगत शोर करि मिलहि नाथ जब धारा।
हहरत कहुं घहरत पुनि घनसों सरयू शोर अपारा॥
राम वचन सुनि कौशिक मुनि हँसि सरयू कथा बखानी।
गिरि कैलास माह यक मानसरोवर सर सुखदानी॥
रच्यो सरोवरसो विरंचि मन ते मंजुल हंसालै।
ताते मानस नाम कहायो विमल सलिल सबकालै॥
सोई मान सरोवर ते सरयू सरिता निकसी है॥
राम रावरे अवध नगर ते उत्तर दिशि विलसी है॥
कढी सवेग सरोवर ते यह घोर शोर है ताते।
मिली जह्नुकन्या में पुण्या घहरारे अधिकाते॥
सकल मनोरथ पूरण वारी अहै पाप की आरा।
करहु प्रणाम प्रतीति प्रीति युत कौशलराजकुमारा॥
कियो प्रणाम राम लछिमन युत सुरसरि सरयू काहीं।
दक्षिण तीर जाय नउका ते चले विपिनपथ माहीं॥
महा घोर वन सघन भयानक परत पंथ अँधियारी।
देखि राम पूछ्यो मुनिवर सों नाथ कौन बन भारी॥
मुनिवर महा भयानक कानन झिल्लीगण झनकारा।
महा भयावन बोलत पक्षी दारुणपंथ अपारा॥
दोहा-विविध सिंह अरु बाघ बहु, वारण विविध वराह।
गरजत तरजत ओर चहुँ, कैसे पथिक निबाह॥

छन्द चौबोला ।

औरहुआमिष भक्षक जे पशु विचरहिं वन भयकारी ।
रहहिं न मूक उलूक दिनहुँ महँ नादत काक सियारी ॥
अश्व करन धव ककुभ विल्व पक पाटल तिंदु पलासा ।
वंस झौर गभीर भीति कर नहिं सूझत दश आसा
तापर वदरी खदिर ववूरन कंटन की अधिकाई ।
खेले वहु शिकार सरयू वन लखी न अस वनताई ॥
मुनिवर देहु वताय कौन वन सूझत मारग नाहीं ।
रवि प्रकाश आवत नाहिं धरणी शाखा पत्रन छाहीं ॥
सुनि रघुपति के वचन गाधिसुत कही विहँसि वर वानी ।
सुनहु वत्स रघुवन्श विभूषण जासु विपिन सुख दानी ॥
पूरुव मलद करूप देश द्वै देव किये निरमाना ।
पूरण रहे धान्य धन जन ते सरित तडागहु नाना ॥
प्रथमहिं जव वृत्रासुर [illegible] समर मध्य मघवाना ।
लगो ब्रह्महत्या [illegible] कलेश महाना ॥
सुर मुनि [illegible] कराई ।
कलशन [illegible] शक्र नहवाई ॥
द्विज [illegible]
[illegible]

रहैं धान्य धन जन गण पूरण आधि व्याधि ते हीने।
सुनि सुरपति के वचन देव सब परम प्रशंसा कीने॥
मलद करूष देश दोउ जैसे किये शक्र उपकारा।
तथा पाकशासन वर दीन्ह्यो लहे देश सुख भारा॥
बहुत काल लगि मलद करूपहु रहे पूर धन धामा।
आधि व्याधि अरु सकल उपाधि विहीन भये सब ठामा॥
कछुक काल ते पुनि यक यक्षी काम रूपिणी घोरा।
धारण करि हजार हाथी बल होत भई बरजोरा॥
सुंद नाम को यक्ष भयो यक रही ताहि की दारा।
नाम ताड़ुका भूरि भयावन जेहि मारीच कुमारा॥
जाको शक्र समान पराक्रम भय कर महा शरीरा।
महाबाहु अरु महा शीश जेहि वदन दरी गम्भीरा॥
सोइ राक्षस मख मोर विनाशत त्रासत देश निवासी।
जननि तासु ताड़ुका भयावनि खाति मनुज की रासी॥
मलद करूप देश महँ जबते किय ताड़ुका निवासा।
तबते दियो उजारि देश दोउ दै जीवन को त्रासा॥
भये भयावन देश सकल थल गये मनुज सब भागी।
यह पन्था ते बसति कोस पट धावति रोज अभागी॥

दोहा—कौशल नाथ कुमार तुव, होइ सदा कल्यान।
यही पंथ पगु धारिये, वन ताड़ुका महान॥

सवैया।

निज बाहुन के बल केवल राम करौ बध ताड़ुका को तुरतै।
निहकण्टक देश करौ रघुनंदन आसुमरी तुम ते जुरतै॥
यह शासन मोर गुनो रघुराज करौ द्विज काज सुबंधु युतै।
अवधेश के लाड़िले वीर शिरोमणि केतिक बात तुम्हैं करतै॥

दोहा—राम ताडुका भीति ते, इत नहिं आवत लोग।
पापिनि के वध करन को, मिल्यो भले संयोग ॥
दारुण वन वृत्तांत यह, मैं वरण्यों रघुनाथ।
देश उजारयो ताडुका, अव तुम करौ सनाथ ॥
विश्वामित्र मुनीश के सुनत वैन वर राम।
जोरि पाणि शिर नाइ कै, वोले वचन ललाम ॥

छन्द चौबोला।

यक्षी होति अल्प वल मुनिवर सुनो सनातन रीती।
यह ताडुका सहस गज वलयुत कैसे भय विपरीती ॥
महा धीर रघुवीर वचन सुनि कौशिक कहे सुखारी।
भई जोर वारी जेहि नारी सुनहु राम धनु धारी ॥
पूरव भयो सुकेत यक्ष यक स्वर्ग लोक वल शाली।
शुभ आचार धर्म को ज्ञाता रह्यो तनय ते खाली ॥
कियो महा तप जाय विपिन में भे प्रसन्न करतारा।
कन्या रत्न ताडुका दीन्ही तेहि वल नाग हजारा ॥
सहस नाग वलवारी कन्या पायो यक्ष सुकेतू।
पुत्र दियो नहिं ताहि चारि मुख जानि तासु कछु हेतू ॥
नाम ताडुका नाग सहस वल कन्या पाइ उछाही।
जम्भ पुत्र यक रह्यो सुंद तेहि दुहिता दियो बिवाही ॥
पाय जम्भ संयोग ताडुका जन्यो पुत्र अति पापा।
नाम जासु मारीच भयो जग भो राक्षस लहि शापा ॥
दै अगस्त्य मुनि शाप सुंद को कीन्हो जवै विनाशा।
सुत मारीच समेत ताडुका चली करन मुनि नाशा ॥
महा कोप करि गरजत तरजत धाई भक्षण हेतू।
आवत देखि अगस्त्य ताडुकै दियो शाप मुनिकेतू ॥

रे मारीच होहि राक्षस तैं महा भयङ्कर वेषा।
पुनि ताड़ुकै शाप दीन्ह्यो मुनि कै कै कोप विशेषा॥

दोहा–मनुज भक्षणी होसि तैं, महा कुरूप कराल।
सुन्दर रूप विहाय यह, दारुण वपु यहि काल॥

छंद चौवोला।

पाय शाप मारीच ताडुका मुनि भयते तहँ भागे।
सो अगस्त्य को वैर विचारत देश उजारन लागे।
भो मंत्री मारीच जाय पुनि दशकंधर को प्यारो।
महा क्रोध करि तौन ताडुका मलद करूप उजारो॥
रहैं अगस्त्य देश दोउ अति प्रिय विचरत रहे मुनीसा।
मुनिको कछु करि सकी न पापिनि किये देश दोउ सीसा॥
अति दुरधर्ष महा दारुण यह यक्षी द्विज दुखदाई।
गो ब्राह्मण हित हनहु राम यहि मुनि पालक रघुराई॥
महा दुष्ट अतिशय पराक्रमी शाप विवश विकराला।
याके सनमुख होत न कोउ भट वसुधा वीर विशाला॥
तुमहिं विना सुनिये रघुनन्दन अस को त्रिभुवन माहीं।
हनै ताडुका को विक्रम करि मृषा कहौं कछुनाहीं॥
नहिं नारी वध दोष गुणो तुम नेकु दया न करीजे।
चारि वरण के हेत राम अब पापिनि को वध कीजे॥
तुम हौ राज कुमार अनोखे अविचल हैं तुव धरमा।
रक्षण प्रजाहेतु करिवो हित क्रूर अक्रूरहु करमा॥
पातक होय सदोष होय वा निन्दै कोउ कितनोई।
जामें रक्षण प्रजन होय हठि करैं जुरक्षक होई॥
जिनके शिर में राज भार है करैं राज को काजा।
तिनको धर्म सनातन है यह होत न दूषण भाजा॥

दोहा–महा अधर्मिनि ताडुका, है न धर्म को लेश ।
हनहु याहि रघुवंश मणि, मेटहु मनुज कलेश ॥

छन्द चौबोला ।

दैत्य विरोचन की दुहिता यक नाम मन्दरा जाको ।
रही महा बलवंतिनि चाही नाशन वसुंधरा को ॥
तेहि लै वासव वली वज्र कर जाय तुरंत सँहारयो ।
नारी वध को पाप नेकुनहिं अपनेमनहिं विचारयो ॥
एक समय महँ शुक्राचारज कीन्ह्यो मनहिं विचारा ।
शिवप्रसाद ते सुर पुरोहिती पाऊं मिटै खभारा ॥
अस विचारि मुनि कियो महातप गिरि कैलाशहिं जाई ।
इतै असुर सब शुक्र जननि सों भाषे जाय डेराई ॥
शुक्र चहत सुरपति पुरोहिती हम सब भये अधीरा ।
अबतो वासव ओर विना श्रम होत असुर दर पीरा ॥
शुक्रजननि अब शक्रनाश करु तबतो असुर सुखारी ।
अब करी अब कौन शुक्र विन असुरन की रखवारी ॥
सुनि भृगुरमणी शुक्र मातु सों करन लगी अभिचारा ।
सुनासीर ते सून होय जग रहै न अमर अधारा ॥
अपनो जानि विनाशव वासव जाय मकुंद पुकारयो ।
करुणानिधि लै चक्र चटक चलि शुक्र मातु को मारयो ॥
यह सब कथा प्रसिद्ध पुराणन चतुरानन शिव गाई ।
राजसुतन कर मारि गई जे भई नारि दुखदाई ॥
ताते मम शासन शिर धरिकै रघुपति दया विहाई ।
करहु तुरंत ताडुका ताड़न नहिं वैरिनि वचिजाई ॥

दोहा–सुनि मुनिवरके वचन वर, जोरि पंकरुह पानि ।
नाय शीश नेसुक विहँसि राम कह्यो मृदुवानि ॥

रे मारीच होहि राक्षस तैं महा भयङ्कर वेषा।
पुनि ताड़कै शाप दीन्ह्यो मुनि के कै कोप विशेषा॥

दोहा–मनुज भक्षणी होसि तैं, महा कुरूप कराल।
सुन्दर रूप विहाय यह, दारुण वपु यहि काल॥

छंद चौबोला।

पाय शाप मारीच ताड़का मुनि भयते तहँ भागे।
सो अगस्त्य को वैर विचारत देश उजारन लागे।
भो मंत्री मारीच जाय पुनि दशकंधर को प्यारो।
महा क्रोध करि तौन ताड़का मलद करूष उजारो॥
रहैं अगस्त्य देश दोउ अति प्रिय विचरत रहे मुनीसा।
मुनिको कछु करि सकी न पापिनि किये देश दोउ खी
अति दुरधर्ष महा दारुण यह यक्षी द्विज दुखदाई।
गो ब्राह्मण हित हनहु राम यहि मुनि पालक रघुराई॥
महा दुष्ट अतिशय पराक्रमी शाप विवश विकराला।
याके सन्मुख होत न कोउ भट वसुधा वीर विशाला
तुमहिं विना सुनिये रघुनन्दन अस को त्रिभुवन माहीं।
हनै ताड़का को विक्रम करि मृषा कहौं कछुनाहीं॥
नहिं नारी वध दोष गुणो तुम नेकु दया न करीजै।
चारि वरण के हेत राम अब पापिनि को वध कीजै।
तुम हौ राज कुमार अनोखे अविचल हैं तुव [illegible]
रक्षण प्रजाहेतु करिबो हित क्रूर [illegible]
पातक होय सदोष होय वा [illegible]
जामें रक्षण प्रजन होय हठि [illegible]
जिनके शिर में राज भार है [illegible]
तिनको धर्म सनातन है यह [illegible]

तेहिं दिशि चली अतुराय। धावत सुधरणि कँपाय॥
जेहि रूप अति विकराल। मुख वमति पावक ज्वाल॥
भुज मनहुँ पादप शाल। वपु शैल सरिस विशाल॥
वहु वृक्ष टूटत जात। मनु वेग वन न समात॥
अस वदन बोलत बात। को कियो शोर अघात॥
मगचली आवति कोपि। निज शत्रु भक्षण चोपि।
आनन अमर्षित ओपि। वन धूरि धुंधहिं तोपि॥
करि दियो धुंधाकार। अवनी अकाश मँझार।
फूटत पषाण अपार। टूटत तड़ातड़ डार॥
जहँ जहँ चली सो जाति। तहँ धूरि भूरि देखाति॥
तेहिं देह नहिं दरशाति। केवल अवाज सुनाति॥
वन जीव भगत चिकारि। वपु विकट तासु निहारि॥
वन घटा की अनुहारि। विकराल वदन वगारि॥
सो काल रजनि समान। जनु चहति खान जहान॥
रद दरत उड़त कृशान। चिक्करत शोर महान॥
को धस्यो यहि वन आय। यम सदन भीति विहाय॥
को कियो शोर कठोर। नहिं जानतो वल मोर॥
अस कहत आई दौरि। जग पापिनो शिर मौरि॥
शिर नील चन्दन खौर। वहु खुली केशर झौर॥

दोहा-यहि विधि आई ताड़ुका, कीन्हे भषन उमङ्ग।
राम लषण मुनि जहँ खडे, पावक मनहुँ पतङ्ग॥

छंद झूलना।

तेहिनिरखिरघुवीररणधीरकरतीरलैवचनगम्भीरसौमित्रिसोंकहतभे।
अरुणनेसुकनयनसकलसुखमाअयनभयेसंग्राम केचयनधनुगहतभे॥
यहपर्वताकारविकरारवपुताड़ुकाझरतअङ्गारमुखमोचुकी जननिसी।

छंद चौबोला ।

जब मुनि गये आप कौशलपुर पिता सभा मधिमाहीं ।
मांग्यो मोहिं यज्ञ रक्षण हित दियो पिता हमकाहीं ॥
तबते तुम्हहिं अहौ पितु माता भ्राता त्राता मोरे ।
हम दोउ बंधु रावरे सेवक वचन सूत्र महँ जोरे ॥
जो कछु कहौ तौन करिहैं सब तुव शासन है शीशा ।
पिता वचन गौरव पितु शासन नहिं उलंघि भल दीशा ॥
चलन लगे जब अवध नगर ते तब पितु मम गुरु आगे ।
मोहिं बुझाय कह्यो नरनायक बार बार अनुरागे ॥
पिता मातु भ्राता गुरु सुहृदहुँ कौशिक अहैं तिहारे ।
जो कछु देहिं तुम्हहिं शासन मुनि कीन्ह्यो विनहिं विचारे ॥
सो पितु शासन पुनि तुव शासन लंघन केहि विधि करिहैं ।
इष्टदेव पितु आप ब्रह्मऋषि यह अपयश कहँ धरिहैं ॥
गो ब्राह्मण हित सकल लोक हित तुव शासन हित नाथा ।
मैं करिहौं ताड़ुका निधन हठि जो लैहौं रघुनाथा ॥
अस कहि श्रीरघुबीर बीर मणि गहि कोदंड प्रचण्डा ।
कियो धनुष टंकोर घोर रव भरिगो भुवन अखण्डा ॥
भगे विहंग कुरंग विपिनके वज्रपात जिय जानी ।
धुनि टंकोर कठोर घोर अति सुनि ताडुका डेरानी ॥
कारिके क्रोध बोध नहिं कीन्ह्यो कौन योध वर आयो ।
काके काल शीश पर नाच्यो को यह शोर सुनायो ॥

दोहा—उठी तुरंतहि राक्षसी, दीन्यों काल जगाय ।
मद्दा मीन मूरति मनहुँ पठानो जमुहाय ॥

छंद [illegible] ।

नहिं [illegible] भयो टंकोर । गिरि धसनि कानन कोर ॥

प्रचंडधूरिधुन्धकारअन्धकारकैदियोअनेकतारभासकारचन्दमंदसो कियो
देखातनादिशानिशाभईमनोसुसामनीअनेकभाँतिगर्जितर्जिताडुकाभयामनी
अनेकलूकवारतीविदाहती वसुंधराप्रकाशतीअनेकशैलसानुमानकंदरा।
तहाँसबंधुकौशलेशकोकुमारकोपिकैप्रचंडलैकोदंडतासुअन्तचित्तचोपिकै
पतत्रिधारवारवारवारवारछोडतेवचैनतेयहीउचारिशस्त्रधार ओड़ते॥
देखातनाअकारतासुशब्दहींसुनातेहैविचारिशोरओरवाणमारतेअघातहै
नरेश केकुमारमारिशब्दवेधिवानमेंकियोसुतासुगौनरोधजौनआसमानमें॥
पयानकैसकीनव्योमवाणजालछाइगो रहीनसंधिनेकुताहिशोकओकआइगो
प्रचंडकोपताडुकाअखंडओजमायनी गिरिधराधडाकदैसुरेशशोकदायनी
अमर्षिवोरशोरकैनरेशकेकिशोरपैसबंधुरामपैचलीचमङ्किचित्तचोर पै ।
अकाजदेवकारिणीसुगाजसीगराजिकैपथामयङ्कओरजातराहुओजसाजिकै
विलोकिदेवरामओरजातघोरताडकाकियेहहापुकारभापिभापिआनुआडका
डगैधरामनोमतङ्गनावमेंसवारभोवसुंधराधरौगिरौदिगीशशोकभारभो ॥
नरामकोनलक्ष्मणैनकौशिकैततक्षणै यचाइहौविशेषितेकरौतुरन्तभक्षणै।
अनेकवारयों पुकारिताडुकाभयङ्करीनगीचआयघोरसोमनोकलासुसंकरी
नपाणिहैनकानहैनाकहैभयामिनी रंगीशरीरश्रोणितैमनोसुकालकामिनी ॥
नरेशकेकुमारकोननेकुभीतिहोतिभैविजैनभाममोदिनीक्षणैक्षणैउदोति ॥

दोहा—जब तडिता सी तड़पि कै, सो ताडुका तुरन्त ।
महा विकट आई निकट, करती कटकट दन्त ॥
तब नेसुक मुसक्याइ कै, चितै लषण की ओर ।
साज्यो धनु शायक सहज, वीर धीर शिरमोर ॥

छंद तोटक ।

हरि वज्र समान सुबाण लियो सुर देवन देखत कोप कियो ।
धनु शायक साजि सुकानन लौं गुन खैंचि अकम्पित आनन लौं ॥
तकि कै तकि कै उर पापिनि को लखि कै द्विज देवन शापिनि को।

उरफटतवादरनसेलखतकादरनकेभगतवांदरनसेभटप्रलयरजनिसी॥
दुर्धर्षमायाप्रवलकरतगलवलचपलभरीछलवलसकलभीतिगलगसिका
कोदंडसंधानिलगिकानयुगवानतेकरतहोंहानियहिकरनअरुनासिका॥
विननाकऔकानकीभईपुनिभजिगईकुपथपुनिनालईमीचुतेवचिगई॥
नारिअनुमानिनहिंउचितवधजानिजुपरानपरणतेकहौवीर छतिकाठई

दोहा—यहि विधि भाष्यो लषण सो राम ताड़ुका देखि ।
राज कुमारन को निरखि धाई सो लघु लेखि ॥

कवित्त ।

कीन्हेबाहुऊरधकोमूरधकेखोलेकेशलेशनदयाकोताकोकोपहीकोभारा है
करतचिकारविकरार मुख कोवगारिधावतधरणि धाईधूरिधुंधधारा है।
भनैरघुराजमुनिप्रीतिके विवशह्वैकेकरिकैहुंकारमुखवचन उचारा है।
समरमँझार पावैविजयअवार यह श्याम सुकुमाररणवाँकुरोकुमारा है

सवैया ।

शामल गौर महा सुकुमार कुमारन अङ्गन कोमलताई ।
त्यों मुख माधुरी मंजु विलोकत कोटिन काम की सुंदरताई ॥
ताड़न ताड़ुका आई हुती सोजकीसी सकी नहिं सामुहें धाई।
श्रीरघुराज विचारै लगी छवि आजु लों ऐसी न आँखिन आई॥
दैत्यन देवन देखे कितेकन चारन सिद्धन की समुदाई ।
राजकुमारन देखे अनेकन पै नहिं देखे यथा दोउ भाई ॥
श्रीरघुराज कहा करिये नहिं खात बनै नहिं जात पराई ।
ताते उड़ाय कै धूरि की धार कुमारन देहुँ मैं आसु भगाई॥

दोहा—अस विचारि जिय ताड़ुका धुरी धूरि की धार ।
अति गरजन तरजन लगी कियो महा अँधियार ॥

छन्द ।

वरजोर भुजनि उठाय व[illegible] ।

बरषन लगी पाषाण दशो दिशान किय नभ यामिनी ॥
माया करति बहु भांति पापिनि गिरत गगन पषान हैं।
तब भये नेसुक कुपित दोऊ बंधु समर सुजान हैं ॥
कोदंड करि टंकोर घोर करोर शर छोड़न लगे।
अवनी गगन शर भये पूरित सुर विमानन लै भगे ॥
तहँ ताड़ुका कृत उपल वृष्टि समान रजकन सी भई।
दश आश परम प्रकाश प्रगट्यो तासु माया मिटि गई ॥
तब यातुधानी कोप सानी कियो मन अनुमान है।
शिशु लखत छोटे परम खोटे लेन चाहत प्रान है ॥
अस गुनि भयङ्कर रूप करि दोउ भूपनन्दन खान को।
धाई धसावत धरणि गरजत राहु जैसे भान को ॥
तहँ ताड़ुका तकि तीर लै तुकि तज्यो श्रीरघुवीर है।
काट्यो युगल कर तासु तुरतहिं भई अतिहि अधोर है ॥
भे छिन्न भुज अति खिन्न तन शरभिन्न नदति कराल है।
काट्यो कुपित तेहि कान नासा शरन लक्ष्मण लाल है ॥
तहँ ताड़ुका बिन बाहु को बिन कान की बिन नाक की।
शोभित भई जनु वृक्ष शाख विहीन भयप्रद नाक की ॥
तन बही श्रोणित धार समर मँझार सरित प्रवाह सी।
मायाविनी कीन्ह्यो अनेकन रूप रण जलवाह सी ॥
दोहा–कहुँ घन सम कहुँ शैल सम कहुँ तरु सम विकराल।
कहूँ सिंह सम व्याघ्र सम कियो वपुष ततकाल ॥

छन्द जयकरी।

रघुवीर लक्ष्मण धीर हनि हनि तीर तहँ सहसान।
कीन्ह्यो व्यथित नहिं रुकन पाई भई अन्तरधान ॥
बरषन लगी सो विविध वृक्ष पषाण शैल समान।

उरफटतवादरनसेलखतकादरनकेभगतवांदरनसेभटअलयरजानिसी॥
दुर्धर्षमायाप्रवलकरतगलबलचपलभरोछलबलसकलभीतिमलासिका
कोदंडसंधानिलगिकानयुगवानतेकरतहोंहानियहिकरनअरुनासिका॥
विननाकऔकानकीभईपुनिभजिगईकुपथपुनिनालईमीचुतेत्रविगई॥
नारिअनुमानिनहिंउचिततवधजानिजुपरानपरणतेकहेवीर छतिकाठई

दोहा–यहि विधि भाष्यो लपण सो राम ताडुका देखि ।
राज कुमारन को निरखि धाई सो लघु लेखि ॥

कवित्त ।

कीन्हेवाहुऊरधकोमूरधकेखोलेकेशलेशनदयाकोताकोकोपहीकोगारहैं
करतचिकारविकरार मुख कोवगारिधावतधरणि धाईधूरिधुंधधारहैं।
भनैरघुराजमुनिप्रोतिके विवशह्वैकैकरिकैहुंकारमुखवचन उचारहैं।
समरमँझार पावैविजयअवार यह श्याम सुकुमाररणवाँकुरोकुमारहैं

सवैया।

शामल गौर महा सुकुमार कुमारन अङ्गन कोमलताई ।
त्यों मुख माधुरो मंजु विलोकत कोटिन काम की सुंदरता
ताड़न ताडुका आई हुती सोजकोसी सकी नहिं सामुहें
श्रीरघुराज विचारै लगी छवि आजु लों ऐसी न आँखिन
दैत्यन देवन देखे कितेकन चारन सिद्धन की समुदाई ।
राजकुमारन देखे अनेकन पै नहिं देखे यथा दोउ भाई
श्रीरघुराज कहा करिये नहिं खात बनै नहिं जात
ताते उराय के धरि की धार कमा[illegible] आसु भ[illegible]

गनंडधूरिधुन्धकारअन्धकारकैदियोअनेकतारभासकारचन्दमंदसो कियो
ञातनादिशानिशाभईमनोसुसामनीअनेकभाँतिगर्जितर्जिताडुकाभयामनी
नेकलूकचारतीविदाहती वसुंधराप्रकाशतीअनेकशैलसानुमानकंदरा।
हाँसबंधुकौशलेशकोकुमारकोपिकैप्रचंडलैकोदंडतासुअन्तचित्तचोपिके
गतत्रिधारबारबारबारबारछोडतेवचैनतेयहीउचारिशस्त्रधार ओड़ते॥
देखातनाअकारतासुशब्दहींसुनातहैविचारिशोरओरवाणमारतेअघातहै
नेरेश केकुमारमारिशब्दवेधिवानमेंकियोसुतासुगौनरोथजौनआसमानमें॥
पयानकैंसकीनव्योमबाणजालछाइगो रहीनसंधिनेकुताहिशोकओकआइगो
प्रचंडकोपताडुकाअखंडओजमायनी गिरिधराधडाकदैसुरेशशोकदायनी
अमर्पिघोरशोरकैनरेशकेकिशोरपैसबंधुरामपैचलीचमक्किचित्तचोरपै ।
अकाजदेवकारिणीसुगाजसीगराजिकैयथामयङ्कओरजातराहुओजसाजिकै
विलोकिदेवरामओरजातघोरताडकाकियेहहापुकारभापिभापिआनुआडका
डगैधरामनोमतङ्गनावमेंसवारभोवसुंधराधरौगिरिदिगीशशोकभारजो ॥
नरामकोनलक्ष्मणैनकौशिकैततक्षणै बचाइहोविशेपितेकरौंतुरन्तभक्षणै।
अनेकबारयों पुकारिताडुकाभयङ्करीनगीचआयजोरसोंमनोकलासुमंकरी
नपाणिहैनकानहैंनाकहैभयामिनी रँगीशरीरश्रोणितैमनोसुकालकामिनी ॥
नरेशकेकुमारकोननेकुभीतिहोतिभैविजैप्रभावमनोदिनीक्षणक्षणडदीति भ॥

दोहा—जब तडिता सी तड़पि कै, सो ताडुका तुरन्त ।
महा विकट आई निकट, करती कटकट दन्त ॥
तब नेसुक मुसकाइ कै, चितै लषण की ओर ।
साज्यो धनु शायक सदन, वीर धीर शिरमोर ॥

छंद तोटक ।

हरि वज्र समान सुबाण लियो दुख देवन देखत कोप कियो ।
धनु शायक साजि सुकानन लौं गुन खैंचि अकम्पित आनन लौं ॥
तकि कै तुकि कै उर पापिनि को दलि कै द्विज देवन शापिनि को ।

नभ पंथ धावति रव सुनावति मनहुँ फोरति कान॥
कहुँ रहति आगे जाति पाछे भ्रमति दशहुँ दिशान।
नहिं देखि परति अकाश में अँधियार करति महान॥
कहुँ लूक बरसावति उलूकन सरिस लेति उड़ान।
करि कोप कहुँ प्रगटाति दूरि देखाति पुनि नियरान॥
कहुँ मांस बरषति हाड़ बरषति रुधिर बरषति भूरि।
कहुँ दूरि ते तरु तूरि हनि पुनि पूरि देती धूरि॥
तहँ लखत लक्ष्मण राम कौतुक सरल बाण चलाय।
प्रभु करत क्रीड़ा समर की ब्रीड़ा न मनमें ल्याय॥
खेलत समर महँ राम लक्ष्मण जोहि मुनि मति धीर।
कर कमल गहि कोमल वचन बोलत भये गंभीर॥
अवधेश लाल न कीजिये यह पापिनी सँग खेल।
लरिकई अबलों ना गई बड़ि होत वध की झेल॥
याकी कला लखि हँसहु तुम सुर मुनिन उपजत शोक।
यापै दया करिबो न योग कुरोग मेटहु लोक॥
यह महा पापिनि यज्ञ नाशिनि करति अतिहि अधर्म।
कर कान नासा बिन बचै तौ होइ निन्दित कर्म॥
रघुलाल आवत सांझ अब होई बली लहि रैन।
रजनीचरन रजनी लहत बल दून होत सचैन॥
दोहा—जबलो आवै साँझ नाहिं तबलो राजकिशोर।
हनहु ताड़का को तुरत, पुनि होई बरजोर॥

छन्द चामर।

उतैमहाभयङ्करीनिशङ्करीअमर्पिकैअतूलशूलखड्ग आदिशस्त्रकोप्रवर्षिकै
उड़ातिआसमानमेंदेखातिना।पयानमेंनिपातवज्रशोरसोकठोरकैदिशाननें
पषाणपादपानकोसमूहभूमिडारतीनरेन्द्रकेकुमारकोअदृश्यह्वैप्रचारती

हम अरु देव मरुत गण संयुत सन्तोपित विधि नाना ॥
ताते कहत सबै मुनि तुमसे रघुपति को कछु दीजै।
लखें लोक तुव नवल नेह फल अनुपम जग यश लीजै ॥
नाम प्रजापति जो कृशास्व है ताके पुत्र अपारा।
दिव्य अस्त्र अरु शस्त्र तेज जिन मानहुँ भानु हजारा॥
तप बल ते सिगरे अमोघ जे जानहुँ सब मुनिराई॥
ते सब लषण राम को दीजै तासु पात्र रघुराई॥
दिव्य अस्त्र पावन के लायक रघुनायक युत भाई।
अबै बहुत करिहैं सुर कारज राजकुँवर कहँ जाई ॥
अस कहि देव देवपति सिगरे करि प्रणाम पुनि रामै
वन्दि चरण लक्ष्मण कौशिक के गये सुखी सब धामै ॥
विश्वामित्र चरण वंदे पुनि राम लषण दोउ भाई।
लियो उठाय अङ्क महँ मुनिवर मनहुँ महा निधि पाई॥
बैठे यक तरु तर मुनिवर लै गोद लषण अरु रामैं।
वार वार शिर सूंघि सराहत पूरण भो मन कामैं॥
फेरत पीठि पाणि पोछत मुख चूमत वदन सुखारी।
अङ्ग अङ्ग पुलकावलि छाई ढारत नैननि वारी॥

दोहा—इतने में संध्या भई, अस्ताचल गे भान।
राम लषण सों कहत भे, कौशिक मुनि हरषान॥

सवैया।

पायो महा श्रम राज किशोर इतै यह ताड़ुका के रण माहीं।
ह्वै हैं पिरात सुपङ्कज पाणि प्रस्वेद के बिंदु शरीर सोहाहीं॥
श्रीरघुराज सुनो रघुराज विचारि कह्यो नहि बात वृथाहीं।
आज निवास करो रजनी इत काल्हि चलो मम आश्रमकाहीं॥
कौशिक के सुनि बैन मनोहर राज किशोर महा सुख पाई।

अस ठीक विचार कियो मनमें वध को अब काल यही छनमें ॥
प्रभु सो शर त्यागि न दीठि दई पवि पात अघात अवाज भई।
दिशि दामिनि सो दमक्यो शर सो नहिं देखिपरयोनिकरयोकरसो
उर जाय लग्यो तिय पापिनि के द्विज देवन के दुख दापिनि के।
तनको शर फोरि धस्यो धरणी तहँ तासु विलाय गई करणी ॥
शर लागत घोर चिकार कियो सिगरे सुर कानन मूँदि लियो।
तहँ यक्षिणि सो भ्रमि भूमि परी पुहुमी जनु गाज गराज गिरी ॥
गिरते धरणी तहँ डोलि उची मुनि कौशिक को यह बात रुची ॥
उलटे दृग भे रसना निकरी वह राक्षसि सो पुहुमी पसरी ॥
मारिगै जब यक्षिणि संगर में सुर दुंदुभि दीन सुअंबर में ॥
सुर फूलन की बहु वृष्टि किये निजको निहकण्टक जानि लिये ॥
जग में जयकारहि माचि रह्यो धनि हौ धनि राघव शक्र कह्यो ॥
अति भीम अपावनि यक्षिणिया तेहि दीन परागति अक्षिणिया ॥
तुमहीं विन को यहि नाश करै द्विज देवन को दुख दीह हरै॥
मुनि कौशिक मोदित होत भये रघुनन्दन को मुख चूमि लये ॥
ऋषि वारहिं वार अनंद भरे निज आंखिन ते असुआन ढरे ॥
रघुनायक मोहिं सनाथ कियो यह पापिनि को परधाम दियो ॥
तुमहीं सम कौन दयाल अहै जनदीननको भल कौन चहै ॥
करि हैं अब शैन सुखी सिगरे जन जे यह पापिनिते बिगरे ॥

दोहा--हन्यो ताड़ुका राम जब, सुखी भयो सुर राज ।
आयो कौशिक के निकट लै सब सुरन समाज ॥

छन्द चौबोला।

सकल देव अति भये प्रमोदित वासव सँग महँ आये ।
देव देवपति करि कौशिक नति जोरि पाणि अस गाये ॥
सुनहु महा मुनि राम ताड़ुका हत्यो भयो कल्याना ।

यंवर ।

, दृग मींजत अलसान ।
दिनकर वन्श प्रधान ॥
मुदित, रघुनन्दन दोउ भाय ।
, निरमल सरित नहाय ॥
तुरत, नित्य कृत्य निरवाहि ।
, जहँ सोये सुख माहिं ॥
के कै वासव वात विचार ।
चन, बंधुन विगत विकार ॥

छंद चौबोला ।

धु वीर वर आवहु निकट हमारे ॥
लेहु शत्रुजित कौशिल्या के प्यारे ॥
कट बोलाय गाधिसुत राम लषण दोउ भाई ।
सुत मंत्र अस्त्र सब कहन लगे हरषाई ॥
हीं तुमसे अति कीन्हो बड़ उपकारा ।
अरु शस्त्र दिव्य सब कौशलनाथ कुमारा ॥
न शस्त्रन ते रघुवर दानव देव भुजङ्गा ।
गंधर्व सिद्ध चारण जीतहुगे जङ्गा ॥
लोक वशीकर ह्वैहौ नहिं तुव विश्व समाना ।
ानत शिव को हम जानत नहिं जानत जग आना ॥
न अस्त्र शस्त्र रघुनंदन शत्रु विजै कर वारे ।
प्रतीति सहित देतो मैं तुमको पात्र निहारे ॥
दंड अरु गदा चक्र जे दिव्य लेहु रघुराई ।
चक्र अरु काल चक्र पुनि ग्रहण करहु युग भाई ॥
त्र अस्त्र लीजै नर भूपन शंभु शूल बरजोरा ।
पुनि ऐषीक अस्त्र लीजै अब गदा अस्त्र हर घोरा ॥

पङ्कज पायँ गहे मुनि के शिर नाइ के कीन्हे बिनै दोउ भाई।
श्रीरघुराज सुनो मुनिराज न नेसुक है हमरो प्रभुताई।
आप प्रताप ते ताप बिना जग ताड़नि ताडुके मोचु सताई॥

दोहा—रहहु आज रजनी इतै, यह सलाह भल कोन।
भोर चलो जेहि ओर मन, चलन सङ्ग श्रम होन॥
तेहि रजनी में सुख सहित, वन ताडुका मँझार।
विश्वामित्र बसे सुखी लै दोउ राजकुमार॥
गयो शाप ते छूटि वन, ताही दिन ततकाल।
लसत भयो जिमि चैत्र रथ, बाग कुबेर विशाल॥

कवित्त घनाक्षरी।

मारिताडुकाकोरामबसेतेहिकाननमेंसुयशदिशाननमेंफैलिगोदरा
आयेऋषिवृन्दरघुनन्दकीप्रशन्साकरेंअतिहिअनंदपायमुनिनसमाज
शापहूंते तापहूंते विगतविपिनभयोरजनीविमलसजनीसीसुखसाजहै॥
मुनिराजकाजकरिमुनिनसमाजयुतलषणसमेतसोयेसुखरघुराजहै॥

दोहा—सजनी सी रजनी भई, बन भो भवन समान।
कौन शोक जेहि लोक में, वस्यो भान कुल भान॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवर ग्रन्थे ताडुका वधो नाम दशमः प्रबन्धः॥ १०॥

दोहा—अरुणाई प्राची दिशा नेसुक कियो पसार।
शशि विकास कछु हास भो, जहँ तहँ झलमल तार॥
विश्वामित्र उठे प्रथम, सुनि धुनि लालशिखान।
अति मंजुल बोले वचन, सुनहु भान कुल भान॥
समर श्रमित शोभित बिजै, समित शत्रु सुख पाय।
सूर मिलन आवत ललकि, उठहु लषण रघुराय॥

मुनिवर की वाणी सुनत, दृग मींजत अलसान।
परन सेज में जगत भे, दिनकर वन्श प्रधान॥
मुनि पद वंदन करि मुदित, रघुनन्दन दोउ भाय।
संध्या वंदन करत भे, निरमल सरित नहाय॥
मुनि मज्जन करिकै तुरत, नित्य कृत्य निरवाहि।
आये ताही तरु तरे, जहँ सोये सुख माहिं॥
वेला विमल विलोकि कै वासव वात विचार।
विश्वामित्र वदे वचन, वंधुन विगत विकार॥

छंद चौबोला।

दीनवंधु दोउ वंधु वीर वर आवहु निकट हमारे॥
दिव्य अस्त्र सव लेहु शत्रुजित कौशिल्या के प्यारे॥
अस कहि निकट वोलाय गाधिसुत राम लपण दोउ भा
न्यास अङ्ग युत मंत्र अस्त्र सव कहन लगे हरपाई"
मैं संतुष्ट अहौं तुमसे अति कीन्हो वड़ उपकारा।
देउँ अस्त्र अरु शस्त्र दिव्य सव कौशलनाथ
जिन अस्त्रन शस्त्रन ते रघुवर दानव देव
दैत्य सर्व गंधर्व सिद्ध चारण जीतहुगे
तीनहुँ लोक वशीकर ह्वैहौ नहिं तुव
की जानत शिव की हम जानत नाहिं
... शत्रु
ते सव ...

देहु राम ब्रह्मास्त्र अवारन महा बाहु रघुराई।
शिखरी त्यों मोदकी गदा युग दीपति भरी सदाई॥
धरम पाश अरु काल पाश पुनि दुव दारन दोउ फाँसी।
सूख ओद लीजै असनी युग रघुनंदन सुखरासी॥
दोहा–पाशुपतास्त्र अमोघ नहिं सकै सुरासुर वारि।
त्यों नारायण अस्त्र यह,सकल क्षणै जग जारि॥

छन्द चौबोला।

अग्नि अस्त्र अरु परवतास्त्र पुनि त्यों पवनास्त्र प्रमाथी।
हे शिर अस्त्र क्रौंच अस्त्रहु पुनि लेहु लषण केसाथी॥
रुद्र शक्ति अरु विष्णु शक्ति द्वउ लीजै दशरथ लाला।
किङ्कनि अस्त्र कराल काल सम त्यों कपाल कंकाला॥
ये सब अस्त्र देव धारत नित जौन तुम्हें सिखवाऊं।
महा अस्त्र विद्याधर लीजे पुनि नंदन जेहि नाऊं॥
खड़गरत्न देतो नरवरसुत अस्त्र महा गन्धर्वा।
मोहन अस्त्र लेहु रघुवल्लभ मति मोहन रिपु सर्वा॥
प्रस्वापन अरु प्रसमन ये युग लीजै प्राणपियारे।
सूरज अस्त्र लेहु रघुनंदन सूरज के कुलवारे॥
धरपन सोषनं अरु सन्तापन वैरि विलापनकारी।
मंदन और कंदर्प अस्त्र दुरधर्ष हर्प प्रद भारी॥
तथा पिशाच अस्त्र अरि मोहन लेहु राज दुलहेटे।
तामस सोमन लेहु वार बहु शत्रुन को दरभेटे॥
महा दुरासद सम्वरतक यह अस्त्र लेहु रघुनाथा॥
मौसल अस्त्र महा रण कौशल फोरत शत्रुन माथा॥
सत्य अस्त्र मायास्त्र महावल घोर तेज तन कारी।
पुनि परतेज विकरपण लीजे सौम्य अस्त्र भयहारी॥

; संहार मनु, कीन्हे सविधि बखान।
वंदि अनंदितें, लीन्हे राम सुजान॥

कवित्त।

तअतिभासमन्तकोईधूमधामकोईमनहुँअँगार है।
जेरेहाथहर्षमोईमधुरवचनकीन्हेरामसेउचार है॥
वरेकेकिङ्करहैंकीजैजौनशासनसोकरैं विन वार है।
गकह्योवसौमेरेमनकरिगोसहाइअवैजाइयोअगारहै॥

न सुनि हरषि कै, दै परदक्षिण चार।
सिंहं अस कहि गये, ते सब उपसंहार॥
आनि तिनको मुदित, विश्वामित्रहि राम।
ग वंदि बोलत भये, चलहु नाथ जहँ काम॥
श सूंघि मुख चूमि मुनि, आगे करि दोउ भाइ।
ले प्रमोदित पंथ महँ, वार वार हरपाइ॥

छन्द चौबोला।

महा भयावन रह्यो ताड़का विपिन वृक्ष समुदाई।
भयो सोहावन अतिशै पावन परसत पद रघुराई॥
निकसि ताड़का वन ते रघुपति निरख्यो दूरि पहारा।
ताके निकट मेघ इव मंडित देख्यो श्याम पतारा॥
तब अति मधुर वचन रघुनायक मुनि नायक सों बोले।
नाथ कौन वन श्याम मनोहर पादप अतिहिं अमोले॥
वृक्ष खंड अति रुचिर विराजत अति अचरज मन मोरे।
कुसुमित लता ललित लहराती तरु गण जिमि कर जोरे॥
लोरें आय भूमि तरु शाखा फल फूलन के भारा।
नाना रङ्ग कुरङ्ग सङ्ग यक चरैं सुढंग अपारा॥
बोलत सुखो विहङ्ग रंग वहु अङ्ग अङ्ग छवि माते।

नेसुक रह्यो और उतकंटक निज भुज वल हरि लीजै॥
दोहा—सुनि कौशिक के वचन वर, राम लपण कर जोरि।
कह्यो चाय चलिये चटक, नहिं बिलंब मति मोरि॥

छंद चौबोला।

यहि विधि पाय अस्त्र अरु शस्त्रहु प्रभु प्रसन्न मुख भयऊ।
परमपवित्र लोक पावन पद चलन पंथ मन दयऊ॥
चलत समय पुनि विश्वामित्रहिं कह्यो जोरि युग पानी।
सकल सुरासुर दुराधर्ष सब अस्त्र लहे सुखदानी॥
करिकै कृपा देहु मुनिवर मोहिं अस्त्रन को संहारा।
सुनि मुनि सकल अस्त्र संहारन कीन्हे सविधि उचारा॥
सत्यवन्त अरु सत्य कीर्ति अरु हरपन अरु संरंभा।
नाम पराङ्मुख और अवाङ्मुख प्रतीहार विन दंभा॥
लक्ष अलक्ष युगल दृढ़नाभ सुनाभ दशाक्ष शतानन।
दश शिरपन अरु महा सतोदर रिपु गन गज पंचानन॥
पद्मनाभ अरु महानाभ दोउ द्रन्दहु नाभ सुनाभा।
ज्योति निकुन्त निराश विमल युग जोगंधर बड़ आभा॥
अरु विनीद्र तिमि मत्तहि प्रसमन तैसहि सारचिमाली।
रुचिरवृत्ति मतपितृ सौमनस धन धानहुँ धृत माली॥
तिमि विभूति अरु वनर कह्यो युग तैसहि वन कर वीरा।
कामरूप मोहन आवरणहुँ लेहु काम रुचि वीरा॥
जृम्भक सर्वनाभ सन्धानहु वरन आदि संहारा।
तेकृशास्वके पुत्र प्रकाशी सदा काम संचारा॥
अस्त्रन के संहार सकल ये लीजे राज कुमारा।
तुमहीं मदण करन के लायक दुतिय न दुनी निहारा॥

दोहा--मुनि अस्त्रन संहार मनु, कीन्हे सविधि बखान।
गुरु पद वंदि अनंदितै, लीन्हे राम सुजान॥

कवित्त।

प्रगटभयेतेमूर्तिमन्तअतिभासमन्तकोइधूमधामकोइमनहुँअँगार हैं।
चंदरवितुल्यकोइजोरेहाथहर्षमोइमधुरवचनकीन्हेरामसेउचार हैं॥
भनैरघुराजहमरावरेकेकिङ्करहैंकीजैजौनशासनसोकरैं विन वार हैं।
हँसिरघुवन्शमणिकह्योवसौमेरेमनकरिगोसहाइअवैजाइयोअगारहैं॥

दोहा--राम वचन सुनि हरषि कै, दै परदक्षिण चार।
मन वसिहैं अस कहि गये, ते सब उपसंहार॥
गये जानि तिनको मुदित, विश्वामित्रहि राम।
चरण वंदि बोलत भये, चलहु नाथ जहँ काम॥
शीश सूंघि मुख चूमि मुनि, आगे करि दोउ भाइ।
चले प्रमोदित पंथ महँ, वार वार हरषाइ॥

छन्द चौबोला।

महा भयावन रह्यो ताड़का विपिन वृक्ष समुदाई।
भयो सोहावन अतिशै पावन परसत पद रघुराई॥
निकसि ताड़का वन ते रघुपति निरख्यो दूरि पहारा।
ताके निकट मेघ इव मंडित देख्यो श्याम पतारा॥
तब अति मधुर वचन रघुनायक मुनि नायक सों बोले।
नाथ कौन वन श्याम मनोहर पादप अतिहि अमोले॥
वृक्ष संड अति रुचिर विराजत अति अचरज मन मोरे।
कुसुमित लता ललित लहराती तरु गन निमि कर जोरे॥
डोरैं आय भूमि तरु शाखा फल फूलन के भारा।
नाना रङ्ग कुरङ्ग तङ्ग पक चरैं तुरंग अपारा॥
बोलत सुखा विहङ्ग रंग बहु भङ्ग भङ्ग छवि माते।

नेसुक रह्यो और उतकंटक निज भु

दोहा—सुनि कौशिक के वचन वर, राम ल
कह्यो चाय चलिये चटक, नहिं वि

छंद चौबोला।

यहि विधि पाय अस्त्र अरु शस्त्रहु
परमपवित्र लोक पावन पद चल
चलत समय पुनि विश्वामित्रहिं क
सकल सुरासुर दुराधर्ष सब अ
करिकै कृपा देहु मुनिवर मोहिं
सुनि मुनि सकल अस्त्र संहारन
सत्यवन्त अरु सत्य कीर्ति अ
नाम पराङ्मुख और अवाङ्मुख
लक्ष अलक्ष युगल दृढ़नाभ
दश शिरपन अरु महा सतो
पद्मनाभ अरु महानाभ दोउ
ज्योति निकुन्त निराश विमल
अरु विनीद्र तिमि मत्तहि
रुचिरवृत्ति मतपितृ सौमनस
तिमि विभूति अरु वनर कह्यो
कामरूप मोहन आवरणहुँ लेहु
जृम्भक सर्वनाभ सन्धानहु वरन
तेकृशास्वके पुत्र प्रकाशी सदा
अस्त्रन के संहार
तुमहीं ग्रहण

पुरासुरासुर भयो समर जब सुधा हेत अति घोरा।
जीते देव दैत्य भागे रण दानव मरे करोरा॥
शुक्राचारज सबन जियायो पढ़ि पढ़ि मन्त्र महाना।
बलिहि विश्वजित यज्ञ करायो असुर भये बलवाना॥
चढ्यो महाबल बलि वासव पै अमरावति कहँ घेर्‌यो।
भगे देव सब देखि दैत्य बल बलि शासन निज फेर्‌यो॥
सुर पुर नर पुर और नाग पुर बलि की फिरी दोहाई।
लाग्यो करन राज त्रिभुवन की वासव लुक्यो डेराई॥
महा यज्ञ कीन्ह्यो अरंभ बलि विमल नरमदा तीरा।
आप भयो यजमान शुक्र आचारज भे मति धीरा॥
देव अग्नि को आगे करिकै यहि आश्रम को आये।
विष्णु जगत पति को विपत्ति निज आतुर वचन सुनाये॥
हे करुणा निधान नारायण अखिल जगतपति स्वामी।
कौनि भांति ते विनय करैं हम तुम हौ अंतरयामी॥
दोहा–लीन्ह्यो बलि सुर राज्य सब, शक्रहि दियो निकारि।
आये हम तुम्हरे शरण, राखहु लाज मुरारि॥

छन्द चौबोला।

हे प्रभु जबलौं यज्ञ समापति होइ न यहि बलि केरी।
तबलौं करौ देव कारज प्रभु हानि होति लहि देरी॥
सत्यसन्ध असुरेश यज्ञ में जेजे याचक जाहीं।
जो जो माँगत सो सो देतो रहत आश पुनि नाहीं॥
बलि को दान पाय याचक जग होत दरिद्र दरिद्री।
समरथ महा मनोरथ पूरत होत अभद्री भद्री॥
ताते प्रभु सुर कारज के हित करहु देव कल्याना।
माया बटु ब्राह्मण को वपु धरि बलि पहँ करहु पयाना॥

मंडित मधुकर के गुंजारन थल थल विमल देखाते॥
यह ताड़ुका भयावन वन ते निकसी पन्था सूधी।
सोई विपिन मनोहर जाती नाथ कतहुँ नहिं रूधी॥
यही पंथ है चलब सहित सुख देश मनोहर लागे।
नव पल्लव पिक वल्लभ मंजुल पिक कूजै बड़ भागे॥
कहुँ सर कहुँ सरसी रस संयुत सरस सरस सरसाते।
अति गंभीर नीर मनि सन्निभ सीर समीर चलाते॥
कल कुञ्जन गुंजत मंजुल अलि वंजुल सुरभि सोहाई।
मन रंजन कंजन की शोभा मंजन योग जनाई॥

दोहा—कहहु नाथ कानन कवन, पंचानन ते हीन।
काको यह आश्रम विमल, देखतही सुख दीन॥

कवित्त।

केतीदूरनाथरावरोहै भलीयज्ञथलीपुण्यतेपलीहैकौनगलीगुरुताकी
आवैंजहांब्रह्मघातीराक्षसजमातीदुष्टयज्ञउतपातीसुनैगतिअतिबांकी
भनै रघुराज मखराखनकेहेतुमोहिंभेज्योमहाराजवसुधाकेधर्मधाकी
राक्षसनमारिमखरक्षणक्रियाकोकरिपूरणकरौंगोआसुआशमनथाकी

दोहा—यह सुनिबे की आश मोहिं, वरणन करहु मुनीस।
कहँ आश्रम तुव कौन मग, काको वन यह दीस॥

छंद चौबोला।

सुनत बैन रघुकुल नायक के मुनि नायक मुद मानी।
सो कानन की आदि अन्त ते लागे कहन कहानी॥
यहि आश्रम में वरष हजारन सो युग लो भगवाना।
करत कठिन तप नारायण प्रभु बसे मुदित विधि नाना॥
यह पूरब बामन को आश्रम छल्यो जो वलि असुरेश।
याको नाम राम सिद्धाश्रम भे सिध करत कलेश॥

सुरासुरासुर भयो समर जब सुधा हेत अति घोरा।
जीते देव दैत्य भागे रण दानव मरे करोरा॥
शुक्राचारज सबन जियायो पढ़ि पढ़ि मन्त्र महाना।
बलिहि विश्वजित यज्ञ करायो असुर भये बलवाना॥
चढ्यो महाबल बलि वासव पै अमरावति कहँ घेर्यो।
भगे देव सब देखि दैत्य बल बलि शासन निज फेर्यो॥
सुर पुर नर पुर और नाग पुर बलि की फिरी दोहाई।
लग्यो करन राज त्रिभुवन को वासव लुक्यो डेराई॥
महा यज्ञ कीन्ह्यो अरंभ बलि विमल नरमदा तीरा।
आप भयो यजमान शुक्र आचारज भे मति धीरा॥
देव अग्नि को आगे करिकै यहि आश्रम को आये।
विष्णु जगत पति को विपत्ति निज आतुर वचन सुनाये॥
हे करुणा निधान नारायण अखिल जगतपति स्वामी।
कौनि भांति ते विनय करैं हम तुम हौ अंतरयामी॥
दोहा–लीन्ह्यो बलि सुर राज्य सब, शक्रहि दियो निकारि।
आये हम तुम्हरे शरण, राखहु लाज मुरारि॥

छन्द चौबोला।

हे प्रभु जबलौं यज्ञ समापति होइ न यहि बलि केरी।
तबलौं करौ देव कारज प्रभु हानि होति लहि देरी॥
सत्यसन्ध असुरेश यज्ञ में जेजे याचक जाहीं।
जो जो माँगत सो सो देतो रहत आश पुनि नाहीं॥
बलि को दान पाय याचक जग होत दरिद्र दरिद्री।
समरथ महा मनोरथ पूरत होत अभद्री भद्री॥
ताते प्रभु सुर कारज के हित करहु देव कल्याना।
माया बटु ब्राह्मण को वपु धरि बलि पहँ करहु पयाना॥

प्रभु हँसि सुनि देवन की वाणी एवमस्तु मुख भाषे।
तेहि अवसर कश्यपहु अदिति हरि आराधन अभिलाषे॥
अदिति और कश्यपहु करत तप बीते वर्ष हजारा।
करि समाप्त व्रत मधुसूदन की अस्तुति किये अपारा॥
कृष्ण तपोमय तपोराशि तुम तपमूरति तपरूपा।
तप करि देखत तुमहिं यथारथ पुरुषोत्तम सुरभूपा॥
यह जग सब तुम्हरे शरीर महँ जोहत यदुपति योगी।
तुम अनादि मन वच अतीत हौ जग विकार विन भोगी॥
परब्रह्म परपुरुष परात्पर परगति परमप्रभाऊ।
हम शरणागतहैं तिहरे प्रभु करुणा मृदल सुभाऊ॥
कश्यप वचन सुनत जगनायक बोले मंजुल वानी।
तुम हो विगत सकल कलमष मुनि माँगहु वर विज्ञानी॥
दोहा–वर पावन के योग हौ, अभिमत मोहिं वर देव।
पैहौ तुम कल्याण बहु, विफल कतहुँ मम सेव॥

छंद चौबोला।

सुनि मुकुन्द के बैन अनंदित कह्यो मरीचि कुमारा।
मम अरुअदिति अमर अभिलाषा पूरहु परम उदारा॥
देहु यही वर दानिशिरोमणि होवहु पुत्र हमारे।
पुत्रवती ह्वै अदिति आप से त्यागै सकल खभारे॥
छोटे होउ बंधु वासव के बहु विधि विबुध विषादी।
करहु सहाय नाथ देवन की होय आसु अहलादी॥
यह आश्रम राउर प्रसाद ते सिद्धाश्रम कहवाई।
उठहु देव हित देव देव अब कर्म सिद्ध ह्वै जाई॥
कश्यप कही मानि मधुसूदन अदिति गर्भ महँ आये।
प्रगट भये छहि श्रवण द्वादशी वामन नाम कहाये॥

यक कर छत्र कमण्डल यक कर शिखा सूत्र अति सोहै।
तरुण तरणि सम तेज प्रकाशित तन सुंदर मन मोहै॥
बामन वपु धरि वासुदेव अस बैरोचनि पहँ आये।
वटुवपु अति विचित्र अवलोकत बलि विस्मय रस छाये॥
असुर राज शिर नाइ कह्यो पुनि माँगु विप्र मन जोई।
तोर मनोरथ पूरण करिहौं बात और नहिं होई॥
तीन पाद पुहुमी प्रभु माँग्यो देन लगे बलिराई।
शुक्राचारज वारन कीन्ह्यो दीन्ह्यो विष्णु जनाई॥
सत्यसंध बलि तदपि न मान्यो पुहुमी दियो त्रिपादा।
पावत दान बढ्यो तहँ बामन जहँ लग जग मरयादा॥

दोहा–तीन पाद महि माँगि इमि, नापि जगत निज पाय।
वासुदेव वासवहि दिय, तीनि लोक सुख छाय॥
जानहु तुम अपनो कथा पूछहु यथा अजान।
जो जानो मेरो रह्यो नेसुक कियो बखान॥
यह आश्रम संसार को श्रमनाशन रघुराज।
बामन प्रभु परभाव ते सिद्धाश्रम कृत काज॥
बामन प्रभु पदभक्ति वश में इत करहुँ निवास।
का पूछहु जानहु सबै रवि किन जान प्रकास॥

सवैया।

याही लिये लला माँगि महीप सों ल्याये लेवाय इतै दोउ भाई।
आवैं इतै रजनीचर घोर करैं उतपात महा दुखदाई॥
श्रीरघुराज सुनो रघुराज न दूसरि आश निहारी दोहाई।
घोर धुरंधर वीर शिरोमनि देखिहौं रावरे की मनुसाई॥
खेलि इतै मृगया सरयू बन मारे अनेकन बाघ बराहू।
तैसो करौ निकुला घनु को लहै जग्यन वाले निशाचर काहू।

श्रीरघुराज गरीब निवाज करौ सुधि ज्यों गजराज औ ग्राह
ज्यों मधुकैटभ ज्यों मुरकोतिमि मारियेआजुमरीच सुबाहु

दोहा–सुनि धुनि संयुत मुनि वचन, विहँसे राज किशोर।
तुव प्रताप सब सिद्ध गुरु, नाहिं कछु मोर निहोर॥

छंद।

सुनि रघुनन्दन वचन मनोहर मुनिवर हिय हरषाने।
मिटी शंक सब ह्वै निशंक अति कहे वैन सुखसाने॥
पहुँचब आजु राम सिद्धाश्रम हम तुम प्राण पियारे।
यथा हमारो तथा तिहारो भेद न परत निहारे॥
अस कहि मुनिनायक रघुनायक लषण सहित पग धारे।
मनहुँ पुनरवसु युगल तार बिच इंदु प्रकाश पसारे॥
सिद्धाश्रम महँ राम लषण मुनि कीन्ह्यो जबै प्रवेशा।
लखि तहँ के वासी तपरासी धाये विगत कलेशा॥
विश्वामित्र चरण पंकज महँ प्रमुदित किये प्रणामा।
गुरु को पूजन कियो सविधि पुनि जाने हम कृत कामा॥
राम लषण को मुनि सिगरे पुनि अनुपम अतिथि विचारी।
कन्द मूलफल फूल भेंट दै दीन्हे शीतल वारी॥
दीनबंधु दोउ बंधुन को मुनि किये परम सतकारा।
दियो अशीश मुनीश ईश गुनि स्वागत वचन उचारा॥
बैठे राम लषण मख शाला विश्वामित्रहि आगे।
मुनि मण्डल मण्डित रघुनन्दन निरखहिं सब अनुरागे॥
कुशल प्रश्न पूछत रघुबर को बीति गये द्वैदंडा।
तब कर जोरि कह्यो कौशिक सों प्रभु कारि कर को दंडा॥
आजुहि ते बैठो मुनि नायक निज मख दिक्षा माहा।
करहु निशंक यज्ञ विधि संयुत ऐहैं निशिचर नाहा॥

दोहा–होइ सिद्धि सिद्धाश्रमहु, वाणी सत्य तुम्हारि ।
आप प्रताप न दाप कछु, पाप शाप गे जारि ॥
राजकुमारन के वचन, भरे वीर रस रङ्ग ।
सुनि कौशिक मुनि मुदित मन, कियो अरम्भ प्रसङ्ग ॥
राम लपण मुख भाषि अस, कियो निशा सुख शैन ।
कौशिक मुनि सब मुनिन युत, शैन किये भरि चैन ॥
पाय प्रभात प्रहर्षि उठि, करि मज्जन दोउ भाय ।
तिमि संध्यावन्दन विमल, दियो अर्घ दिन राय ॥
गायत्रीको जाप करि, प्रात कृत्य निर्वाहि ।
होम करत कौशिक चरण, गहे तुरन्त उछाहि ॥
देश काल ज्ञाता युगल, त्राता राज किशोर ।
देश काल अनुरूप तहँ, कहे वचन वर जोर ॥
जानन चाहैं नाथ हम, रजनीचर जेहि काल ।
विघन करन ऋतु आवते, प्रेरित काल कराल ॥
रहैं सजग तौने समय नहिं भ्रम होइ मुनीश ।
हमको समय बताइ कै, सुचित भजौ जगदीश ॥
समर उमङ्ग भरे सुनत, राम लपण के बैन ।
सिगरे मुनि बोलत भये, तिनहि सराहि सचैन ॥

सवैया ।

सुंदर साँवर राजकिशोर भली यह बात कही मन भाई ।
हौ समरत्थ सबै विधि ते दशरत्थ के लाडिले आनँददाई ॥
कौशिक दिक्षा लई मख की भये मौन वदे विधि जेहै नसाई ।
आजु ते औ षटवासर लौं रघुराज जू रक्षण कीजै बनाई ॥

दोहा–सुनत मुनिन वाणी विमल, यशी अवधपति लाल ।
सयुग कसे कम्मर कठिन, करन समर ततकाल ॥

कवित्त घनाक्षरी ।

चामीकरकवचविराजतवपुपदोऊकटिमेंकरालकरवालकालकेसमान
मुकुटविशालमाथेमाणिकप्रवालगाथेहाथेमेंविशालचापदाहिनेदिसवान
भनै रघुराजयुगकंधननिषंगसोहै अंगअंगवीररसरंगअतिउमगान ॥
जंग जैतवारेदशरत्थकेदुलारेभये समरतयारेअरुणारे दृग दरशान।

दोहा–सुनत दुगुन देखत त्रिगुन, चौगुन समर मँझार ।
मनहुँ फोरि वख्तर कढ़त, राम अंग सुकुमार ॥

कवित्त ।

लसतदुकूलपीतभूषणनखतज्योतिउदैमान शीत भानवदनविराजते।
करनसुहाने दसतानेमणिकंचनकेजानेजगवीरत्योंवखानेमुनिराजते॥
भूपतिकिशोरवागेयज्ञशालाचारोओर तपोवनरक्षितहैरक्षससमाजते।
भनैरघुराज कोशलेशकेकुमारसुकुमारमारमदमारत्यागेनींदआजते॥

दोहा–राम लषण पट निशि दिवस, नींद भूख अरु प्यास ।
तजे तमकि संगर सजे, मख रक्षण के आस ॥

सवैया ।

बीति गये जब पंच निशा दिन आयो छठौं दिन पूरणमासी ।
पूरण आहुति को समयो भयो भे मुनि वृन्द विषादित त्रासी ॥
श्री रघुराज कह्यो लषणै लला होउ तयारविलंब बिनासी ।
जानि परै हमहीं हठि आजु निशाचर सैन की आवनि खासी ॥

दोहा–राम वचन सुनि मुनि सकल, भरे समर के जोम ।
उपाध्याय उपरोहितौ, करन लगे विधि होम ॥
स्रुवा कुशा अरु चमस युत कुसुमहु समिध समेत ।
विश्वामित्रहि हवन में, ज्वलित धूम को केत ॥
ज्वालमाल लखि वेदिका, मुनि सब अशुभ विचारि ।
कौशिक ते बोलत भये, गुनि आगम निशिचारि ॥

पंच दिवस मख विधि सहित, भयो मंत्र युत काज।
छठमें दिन अब विघ्न कछु, जानि परत मुनि आज॥

कवित्त।

भापतपरसपरऋपिनकेभीतिभरेमौनमुनिकौशिकनबोल्योरामहेरिकै
दशिणदिशातेमनोभादवनिशांहैघोरउक्योअंधकारचारोओरनतेघेरिकै
मूंदिगयोभासमानआसमानहीतेततहांहोतभैभयानकअवाजकानपेरिकै
हल्लामखशालामच्योसकलविहालाभयेरक्षौरघुराजआजभापैमुनिटेरिकै
कोऊभगेपात्रछोड़िकोऊभगेहोमछोड़िकोऊभगेस्रुवाछोड़िभूसुरविचारेहैं
कोऊमृगचर्मत्यागेलैलैमुनिजीवभागेरहेमखकर्मलागेभरेभीतिभारेहैं।
हाहाकारमाचिरह्योविश्वामित्रआश्रममेंहँसिरघुराजरामकेतननेवारेहैं।
वैव्योगाधिनन्दनभरोसे रघुनंदनके जानतहमारे रघुवीर रखवारेहैं॥

दोहा—उठें यथा कारी घटा, पूरब पवनहिं पाय।
श्याममेघमाला गगन, दक्षिण परी देखाय॥

छन्द भुजङ्गप्रयात।

धरा में मच्यो धूरि को धुंधकारा। प्रलैयामिनी सोभयोअंधकारा॥
भई गाज कैसी गराजै दराजै। कहैं विप्र कैधों प्रलय होति आजै॥
करैं रात्रिचारी महा घोर शोरा। किहे मूढ़ माया सोदायानथोरा॥
चले आवते आस आकाश चारी।महा भीम काया निशाकेविहारी॥
द्रुतै व्योम धावैं यथा राहु केतू। किये यज्ञके विघ्नकोभूरि नेतू॥
लखे यज्ञ धूमै हिये मे उराये। चहूं ओर ते शस्त्र लै वेगि धाये॥
महा मूढ़ मारीच तैसे सुबाहू। सुने गात को घात आघात दाहू॥
महा राक्षसी सैनके बीच माहीं। प्रचारे दोऊ बार बारै तहांहीं॥
धरादेव को अध्वरै ध्वंसि डारौ। रची यज्ञशाला भटो जायजारौ॥
बचें विप्र नाहीं सबै कोअहारौ। लगे यज्ञ जूपै जरै ते उखारौ॥
भरौ यज्ञवेदी मलौ मूत्र धारा। उपाधी महा गाधि कोहै कुमारा॥

करै यज्ञ मानै नहीं वार वारा। सहाई बोलायो उभै भूप वारा॥
सुने वैन मारीच के रात्रिचारी। चले चाय चारौदिशा शस्त्रधारी॥
नाहीं जानते आपनो हाल काला करै यज्ञ की रक्ष त्रैलोक्यपाला॥
महाभीम काया करै भूरि माया। चढ़ेव्याघ्रवाराहव्यालौनिकाया॥
कहूं भास होते कहूं अंधकारा। कहूं मेघ धावैं तजैं रक्तधारा॥
भरी वेदिका श्रोनितै ओघमाहीं। लगे वर्षनै माँस हाडौ तहांहीं॥
यहो भांतिकीन्ह्यो महायज्ञ भंगा। न जानै महा मीच को मूढ़संगा॥
करै शोर भारी कहूं देत तारी। निशाकाल चारी कहूं देतगारी॥
कहूं दन्त पीसैं कहूं खीस काढ़ैं। कहूं छोट होते कहूं वेगि बाढ़ैं॥
यही भांति सो राक्षसी सैन भारी। कियोहै उपद्रौ महाभीतिकारी
नहीं धर्म को लेस नेको शरीरा करै नित्य गो विप्र को भूरिपीरा।

सोरठा–यहि विधि जब मारीच, सहित सुबाहु अनेक भट।
जानि न आपन मीच, किये उपद्रव अति कठिन॥
उड़ि उड़ि आसु अकाश, भरे कुंड श्रोणित समल।
करि करि कोप प्रकाश धाये दाहन मख भवन॥

कवित्त।

आयगेनिशाचरविलोकिरघुवंशवीरवेदीकोविलोकेभरेश्रोनितकीधारहै
धायेकंजपायनसोदोऊबंधुकोपकैकैराक्षसीचमूनिहारेगगन मँझारहै॥
प्रवलमरीचऔसुवाहुचोंपिचलेआवैंभापतवचनआजुकौनरखवारहै।
भनैरघुराजनव नलिन विशाल नैन बोलेमंजु वैनचैनउरमेंअपारहै॥
देखोदेखोलपणभपनकोभरोसकीन्हेचखननिकारेमांसभखनपियारहै।
धायेचलेआवैंधर्मधुराधसकावैंभीरुभीतिउपजावैंनहिसमरजुझारहै॥
भनैरघुराजसीखेदिव्यअस्त्रकौशिकसेतिनकीपरीक्षालेनमनमेंहमारहै।
मारिमानवास्त्रकोउड़ाइदेतोअंबरमेंकादरकुटिलक्रूरकौनफलमारहै॥
भापिरघुवीरसनधानिएकतीरधनुमानवास्त्रकोप्रयोगकीन्ह्योमंत्रपढ़िकै
खैंचिगुणकानलौंसमानपा

कोपवाण ..

भनैरघुराजरामशायकउड़ायोताहि फेक्योशतयोजनसमुद्रहूतेकढ़िकै
भ्रमतभ्रमतगिरयोअतिहिअचेतह्वैकेवस्योपारावारपारआयोनहिंचढ़िकै

दोहा—ताते कारज जानि कछु, हरन हेत भुव भार।
प्रान दान मारीच को, दीन्ह्यो राम उदार॥
उड़ै यथा घन की घटा, पौन प्रचंडहि पाय।
उड़यो तथा मारीच रण, परयो सिंधु महँ जाय॥

छंद मोती दाम।

मारीच को लखि राम। बोलेसु करुणा धाम॥
यह मानवास्त्र महान। मैं हन्यो करि संधान॥
लै गयो शत्रु उड़ाय। दिय सिंधु मध्य गिराय॥
कीन्ह्यो न तेहि विन प्रान। लखि लेहु लषण सुजान॥
राक्षस अनेक प्रचंड। आवत इतै वरिवंड॥
सबमें सुबाहु प्रधान। आवत इतै अनखान॥
मानत नहींयह दुष्ट। मोपर भयो अति रुष्ट॥
हनिहौं निशाचर वृन्द। बचिहैं न करि वहु फन्द॥
ये सकल धर्म विहीन। अति हैं अधर्म प्रवीन॥
छावत पुहुमि महँ पाप। मुनिजन करत संताप॥
वहु विघन करते यज्ञ। है मूढ़ मति अति अज्ञ॥
नित करत श्रोणित पान। अबलौं न अघनि अघान॥
राक्षस पिशाची योनि। हठि हेरि ते अनहोनि॥
ताते हनौंगो आजु। आये विघन मख काजु॥
इनके वधे नहिं दोष। कर धरहु धनु करि रोष॥
अस वचन कहि अभिराम। कोपे समर श्रीराम॥
उत उड़त लखि मारीच। शुभबाहु कोप्यो नीच॥
बोल्यो भटन ललकारि। करि कठिन कर तरवारि॥

धोखो दियो मुनि मोहिं । मैं लिय प्रथम नहिं जोहि ॥
ल्यायो कुमार बोलाय । निज करन हेत सहाय ॥

दोहा–रूप अनोखे अति नवल, चोखे रन संचार ।
धोखे धोखे युध करत, हैं कोउ राज कुमार ॥
सरल युद्ध मारीच किय, इन दिव्यास्त्र चलाय ।
धोखे धोखे रोपि रण, दीन्ह्यो ताहि उड़ाय ॥

छंद पद्धरी ।

मोहितदपिशंकनहिंलगतिनेक।अबमारियुगलराखिहौंटेक ॥
धावहुप्रबीरवाचैंनभागि । मखभवनमध्यकरिदेहुआगि ॥
अबखायलेहुदोउभूपवाल।अबदयाकेरकछुहैनकाल ॥
पुनिदौरिखाहुकौशिकहिजाय।द्विजबचैंनहींकतहूंपराय ॥
मारीचबहुरिआवततुरंत।हमकरबउभैद्विजवंशअंत ॥
बचिहैंनधेनुधरणीमझार।नहिंरहीधर्मकोकहुंप्रचार ॥
कहियोंसुबाहुकरिघोरशोर।धायोतुरंतजहँनृपकिशोर ॥
बोल्यो प्रगर्भ बाणी कठोर ।धोखे उठाय दिय भ्रात मोर ॥
बचिहौन आजु तजि समर ठोर।मैंलखततिहारो बाहु जोर ॥
प्रभु कह्यो मंद मुसकाय बैन।हम छत्रि जाति कछु लगति भैन।
नहिं शंक करौ मम भगन हाल।रणछत्रिजातिपीछेदेवाल ॥
तुम घोर बडे बहुपाप कीन । ताते विरंचि अब फलहु दीन ॥
तुम हने बापुरे द्विज वृथाहि।अबलौं न पर्यो रन छत्रि पाहि ॥
कस करौ न विक्रम भूरि आज ।मैं खडो समर मख रखन काज।
करियोसचेत संग्राम काम।मम विश्व विदित है राम नाम ॥
तुम संग सेन ल्याये अपार । हमहूं अकेल भ्राता हमार ॥
अब कठिन परी मख भवन जान।स[illegible] न ठंकपतिदैनान।
सुनि बास सुबाहु रघु[illegible] भ[illegible] । करिगाढ नै।

करवाल काढ़ि कर करि करालाधायो प्रचंड मनु काल काल ॥
भूधराकार ताको शरीर। करि घोर शोर द्विज देत पीर ॥
दोहा–धावत आवत भीम भट, समर सुबाहु सुबाहु।
संधान्यो शर भानु कुल, कुमुद नवल निशि नाहु ॥

कवित्त।

परमकरालमानोकालहूकोकालव्याल,
मुनिननिहालकरतेजआलवा है।
अतिहिउतालबढ्यो पावक को मंत्रजाल,
उठी ज्वालमाल डग्यो दिग्गज को माल है ॥
चन्द्र भाल चारि भाल लोकपाल भे बिहाल,
हल्ला पर्यो स्वर्ग ते रसातल पताल है
सूखे ताल बंदगाल बिहँसे लषण लाल,
रघुराज जबै शर साज्यो रघुलाल है ॥
दोहा–छोड़त बाण कठोर तहँ, भयो धनुष टंकोर।
दिग दन्तिन के फोरि श्रुति, चल्यो बिशिष बरजोर ॥

कवित्त।

कोटिपबिपातसोअघातघोरशोरछायो,
अवनीगगनउतपातअतिछायगो।
दिशि अवदात होन लाग्यो है प्रभात दाह,
उल्कापात वज्रपात धरणि देखायगो ॥
भनै रघुराज राम शायक प्रबल शत्रु,
छाती को बिदारि कै निषंग पुनि आइगो।
सहित सनाहु भरो समर उछाहु,
महाबाहु सो सुबाहु बारि बुल्ला सो बिलायगो ॥
दोहा–पावक शर छोड्यो इतै, प्रभु करि जै अभिलाप।
उतै समर महँ शत्रु की, उडत देखानी राप ॥

छन्द गीतिका।

उड़िगो मरीच सुबाहु जरिगो देखिकै रजनीचरा।
करि घोर शोर अथोर भूप किशोर पै धाये धरा॥
भूधराकार शरीर धरु धरु मारु मारु उचारहीं।
तरवार पैनीधार धारे बार बार प्रचारहीं॥
कोउ लिये कुन्तल परस तोमर आस पाश पसारहीं।
कोउ परिघ मुदगर मुशल हल गल बलकि रण संचारहीं॥
कोउ करत माया भीमकाया वमत पावक ज्वाल हैं।
कोउ श्वान मुख कोउस्यार मुखकोउ विकट वदन बिड़ाल हैं॥
कोउ नागमुख कोउ नागमुख कोउ नाग छोरे बार हैं।
मुख मुच्छ मानहु भ्रमर गुच्छ बुभुच्छ कुच्छ अपार हैं॥
सब समर चोखे सकल रोपे स्वामि जोखे जीति के।
कुलके अनोखे बाल धोखे चले पुषित अनीति के॥
राक्षस हजारन घनाकारन नृप कुमारन मारने।
रणमें न हारन शस्त्र डारन लगे प्रबल प्रचारने॥
लखि लषण तैसहि लक्ष्मणाग्रज तज्यो तुकि शर धार हैं।
कोदंड मण्डल करत रण संचरत बारहिं बार हैं॥
शायक चले विकराल व्याल विशाल इव तेहि काल हैं।
निशिचर करत वश काल हाल कृपाल कौशलपाल हैं॥
भट कटत चटपट हटत नहिं कटकट करत खल दंत हैं।
लटपट गिरत झटपट उठत अटपट न मानत अंत हैं॥
भे घुसी घट घट कहत हट हट समर नटखट करत हैं।
कोउ बढ़त मढ़त प्रमोद रण को गढ़त असिमुख लरत हैं॥
[illegible] छोड़त तीर बेग समीर हैं।
पोर [illegible] कै भयभीर किय खल भीर हैं॥

कोउ कटे कंधहु कमर बंधहु उठे अमितकवंधु हैं ।
अरि अन्ध किय सतिसन्ध हनि रण बाँकुरे दोउ बन्धु हैं ॥
परिगयो हाहाकार समर मँझार खलन अपार में ।
तन कटे अति बिकरार श्रोणित धार बही संहार में ॥
महि मुंड रुंडन झुण्ड मंडित कुंड श्रोणित के भरे।
जिमि चंड मुण्डन दल्यो चंडी राम तिमि खल संहरे ॥
तहँ काक बिपुल बलाक गीध शृगाल आमिष भखत हैं ।
योगिनि जमाति कराल कीकैं देत पल अभिलषत हैं ॥
कर खड्ग खप्पर बिगत कप्पर पुहुमि उप्पर नचत हैं ।
वैताल भूत पिशाच केती कला गहि महि रचत हैं ॥
अंबर उड़त निशिचरनिकर शर लगत झरि पुनि परत हैं ।
भर भर भगत खरभर मचत कोउ डरत कोउ उठि लरत हैं ॥
छाये गगन मंडल अखंडल बाण मण्डल राम के ।
चंडांशु परम प्रचंड कर मूँदे भये संग्राम के ॥
लै भगे देव विमान नहिं अवकाश रह्यो अकाश में ।
सर भरे नाग निवास नरन अवास नाक निवास में ॥

दोहा—समर कोपि रघुवंशमणि, जानि मुनिन बड़ रोग ।
निशिचर निकर बिनाश हित,किय पवनास्त्र प्रयोग ॥

छंद तोटक।

जब छोड़ि दियो पवनास्त्र हरी । प्रगटे शर लाखन ताहि घरी ॥
शर झुंडन झुंडन छाइ गये । रजनीचर वीर बिलाय गये ॥
अब शेष रहे रिपु जे सिगरे । यक एकन पै शर लाख गिरे ॥
पद जानहु जंघ भुजा शिर को । किय खंड अखंड रहे थिर को ॥
अति आरत शोर मच्यो रण । मे छनदाचर क्षीण भये क्षण में ॥
कोउ [illegible] मेरें । कोउ आंतन गातन ऐंचि मरें ॥

सब सैन सुबाहु मरीचहु की । हतिगे रन दूर नगीचहु की ॥
नहिं बाचि कोऊ घर फेरि गये । रघुनन्दन के शर प्राण लये ॥
पुनि पौन प्रचंड अखंड चल्यो । रजनीचर सैन वहोरि मल्यो ॥
सब एकहि बार उड़ाय दियो । रण लोथिन सों तहँ सून कियो ॥
रघुवीर विचित्र पराक्रम को लखि देव सबै न कछू श्रम को ॥
यक बार बजाय नगारन को । बरषे तहँ फूल अपारन को ॥
जय शोर मच्यो चहुँ ओर तहाँ सुर पावत भे मनमोद महाँ ॥
नभ अप्सर नाचि रही अमला । सुर गायक गाय रहे सकला ॥
जय कौशलपाल कृपाल हरी । सुर वृन्दन की भय भूरि हरी ॥
निज शायक ते इन पापिन को।निज लोक दियो द्विज दापिन को॥
इमि गाय बजाय नवाय शिरै । सुर गे निज धाम विचारि फिरै ॥
इत कौशिक आय प्रमोद भरे । मुनि संग सुनावत जैति हरे ॥
दोउ बंधु खड़े रण जीति जहां । चलि आवत भे मुनिनाथ तहां ॥
युत बंधु लखे रघुनन्दन को । जिन काटि दियो दुख द्वंदन को ॥
दोहा—आनँद वश मुनिनाथ सों, बोलि न आयो बैन ।
लखन लगे दोउ बंधु की, शोभा अनमिष नैन ॥

कवित्त ।

सहज निशाचर समरअवगाहिठाढ़े उरमेंउछाहितनअतिरणधीर हैं॥
नेकुश्रमबिंदु इंदु वदन विराजमान मन्दमन्दफेरतसुवामकरतीर हैं॥
भनै रघुराज रघुराज दुलहेटेदोऊ मेटे महिदेवन कीदेवनकोपीर हैं।
मानहुँ निहार फारि युगलतमारिकेढ़मेढ़सुखमातेतैसेयुगरघुवीरहैं॥
कहूँ कहूँ श्रोणितकेकन तनराजैंअतिउडिरिपुतनतेपरेहैंबाण जोरते।
सुभगतमालतरुडारनविहारकरैंचुनीराय मुनीमानोआनँद अथोरते
भनैरघुराजमुनिराजकाजकीन्होपूरदेवनसमाजकोउवारचोदुखघोरते
कटिमेंनिषङ्गकसेलपणमघोरसंगकौनरणधीरआजुकौशलकिशोरते॥

स्तुतिकरतमुनिवृन्दठाढेचारौओरविश्वामित्रचूमैंमुखलेतहैंचलैयाको
हारिकैंतमीचरसँहारिकैपसारियशदुखसोउचारचोमोहिंलीन्हेसंगगैयाको
भैनेरघुराजवेदविप्रकोपलैयापायोसंगकोडोलैयारघुकुलकेजोत्नैयाको
वोलेमुनिभैयासत्यवचनकहैयाकिधौंयाकोधन्यमैयाकिघौंमेरीधन्यमैयाको

दोहा-राम वाह पूजे मुनिन, अस्तुति करत तहांहिं ।
यथा सुरासुर रण जिते, सुर पूजे हरि काहिं ॥

सवैया ।

कौशिक को लखि श्रीरघुनन्दन धाय गिरे पद पङ्कज माहीं ।
जोरिकै पङ्कज पाणि सुखी मुख मंजुल वाणि कही मुनि पाहीं ॥
श्रीरघुराज सुनो ऋषिराज न मोर है जोर निहोरहु नाहीं ।
केवल रावरे की कृपा पाय जित्यौं क्षण में रण में रिपु काहीं ॥
कीजै समापत यज्ञ द्रुतै रघुराज प्रमोदित शंक विहाई ।
आये इतै शठ मारि गये जरि जैहैं बहोरि बचैं न पराई ॥
हाजिर मैं हौं हजूर में रावरे सेवा करे सहितै लघु भाई ।
जो दशकन्धरहू चढ़ि आइहैं तौ हनि जाइहै नाथ दोहाई ॥
मुनि नायक बोले सुनो रघुनायक आप हमारे सहायक हौ ।
अति दीनन आँनँद दायक हौ कहँ लौं वरणौं सब लायक हौ ॥
रघुराज सुनो रघुराज कुमार धरे कर मैं धनु शायक हौ ।
मख पूरण मैं अब शोच कहाँ तुमहीं यह रक्ष विधायक हौ ॥

दोहा-सुनि मुनिकी वाणी विमल, राम परम सुख पाय ।
सज्जन प्रिय मज्जन किये, प्रथम लषण नहवाय ॥
रघुपति शासन पाय कै, मुनि आरम्भ मख कीन ।
सविधि सारित्विज याग को, पूर्णाहुति करि दीन ॥

दोहा-कौशिक मख समाप्त करि, लखि दश दिशि निरबाध।
राम लषण को मोदि कै, बोले बुद्धि अगाध ॥

कवित्त।

कीन्ह्यो यथारथ मोहि कृतारथ है न अकारथ कर्म तिहारो।
स्वारथ सत्य कियो पितु बैन तथा परमारथ पूरो हमारो॥
सत्य भयो अब सिद्ध को आश्रम छायरह्यो यश विश्व मँझारो।
श्रीरघुराज सुनो रघुराज अहै तुव हाथ पदारथ चारो॥
दोहा–प्रभु विहँसे मुनि वचन सुनि, कह्यो जोरि युग पानि।
हम सेवक तुम स्वामि हौ, लेहु सत्य यह जानि॥
मुनि मोदित मनमें भये, जानि शैन को काल।
सुखी शैन कीन्हे सुचित, तिमि सोये रघुलाल॥

इति सिद्धिश्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयम्वरे यज्ञरक्षणमारीच सुबाहु वधो नाम एकादश प्रबंधः॥११॥

दोहा–सिद्धाश्रम सोवत सुखी, लपण राम मुनि व्रात।
आनँद प्रद प्रगट्यो तहां, निशा प्रयान प्रभात॥

चौपाई।

करन लगे कोयल मृदु कूका। होन लगे सब मूल उलूका॥
शशि मलीन झलमल भे तारे।कोकी कोक अशोक निहारे॥
कलरव लागे करन विहङ्गा। वन को चरि चरि चले कुरङ्गा॥
शीतलमन्द सुगन्ध समीरा। बहन लग्यो नाशक सब पीरा॥
तजन लगे तरु कुसुम अपारा। कहुँ कहुँ खग बैठहिं उडि डारा॥
विकसीं बहु राजिव की राजी। चले पथिक पंथन महँ काजी॥
निशा सिरानि भयो भिनसारा। पूपन पूर्व प्रकाश पसारा॥
कली गुलाबन की चटकातीं। दे चुटकी मनु विश्व जगातीं॥
जानि प्रभात गाधिसुत जागे। रघुपति लपण जगावन लागे॥
उठहु लाल शुभ भयो प्रभाता। मज्जन करहु देव मुनि व्राता॥

उठे राम तब लषण जगायो । तजि आलस मुनि पद शिर नायो ॥
धौत वस्त्र लै मुनि सँग माहीं । मज्जन हेत चले सरि काहीं ॥
प्रात कृत्य करि सविध नहाये । अर्घ प्रदान दीन सुख छाये ॥
करि संध्यावन्दन रघुनंदन । रघुकुल चंदन दीन्ह्यो चंदन ॥
आये मुनि आश्रमरघुराई । लषण सहित शोभित सुखदाई ॥
दे शिर क्रीट विभाकर भासी । कानन में कुण्डल दुति खासी ॥
कसि निषङ्ग लै कर धनु शायक । सजे सुभग लछिमन रघुनायक ॥
मुनि आश्रम मज्जन करि आये । पूजन हवन कियो सुख छाये ॥
बैठे मुनि मनु पावक ज्वाला । मुनि समाज तहँ लसी विशाला ॥
अवसर जानि राजसुत आये । सानुराग मुनि पद शिर नाये ॥

दोहा–निरखि युगल जोरी सुभग, दशरथ राज किशोर ।
अनमिष मुनि सिगरे लखत, जैसे चंद चकोर ॥

चौपाई ।

सहज सुभाउ सहज दोउ भाई । कौशिक लियो अङ्क बैठाई ॥
शीश सूँघि फेरत तन पानी । पठत राम रक्षा मुनि ज्ञानी ॥
समय जानि बोले रघुराई । सुनहु मोरि विनती मुनिराई ॥
हम किङ्कर दोउ बंधु तुम्हारे । सौंप्यो तुमको पिता हमारे ॥
मातु पिता भ्राता तुम ज्ञाता । स्वजन बंधु गुरु प्रिय अवदाता ॥
हौ सरवस मुनि नाथ हमारे । तुम्हरी कृपा शत्रु सब मारे ॥
अब जो शासन करहु मुनीशा । सो करिहौं निशंक धरि शीशा ॥
शासन होइ अवधपुर जाऊं । मातु पिता कहँ सुखी बनाऊं ॥
अथवा चलौं संग जहँ जाहू । तुव सँग सब सुपास मुनि नाहू ॥
सुनि विनीत मंजुल प्रभु बानी । कौशिक भन्यो त्रिकाल विज्ञानी ॥
इतरन रुधिर बही सरि धारा । प्रगटति हैं दुरगन्ध अपारा ॥
ताते चलहु और थल प्यारे । जहँ सुपास सब भांति तुम्हारे ॥

देखि देखि देशन रघुराई । जाहु भवन कहँ आनँद दाई ॥
पुनि जो मुनि सब संमत करहीं । हमहुँ तुमहुँ तेहिविधिअनुसरहीं॥
अस कहि कह्यो मुनिन मुनि राई । काह उचित भाषहु सब भाई ॥
सिगरे मुनि कौशिक रुख जानी । एक बार बोले मृदुबानी ॥
अस संमत मुनिनाथ हमारा । सुनहुतुमहु अरु राजकुमारा ॥
मैथिल महाराज विज्ञानी । धर्म धुरन्धर यज्ञ विधानी ॥
तिनके भवन सुनी अस बाता । धनुष यज्ञ होई विख्याता ॥
है यक धनुष धरणिपति धामा । हर कोदण्ड कहावत नामा ॥
दोहा–धनुष रहा अद्भुत परम, अप्रमेय अति घोर ।
परम प्रकासी गुरु परम, कोटिन कुलिश कठोर ॥

चौपाई ।

देवन आय यज्ञ महँ दीने । लिये विदेह महा मुद भीने ॥
देव दैत्य गन्धरबहु नाना । चारण सिद्ध सबै बलवाना ॥
सके न कोऊ ताहि चढ़ाई । मानुष की का कथा चलाई ॥
रच्यो स्वयंवर भूप विदेहू । सुनियत मुनि कीन्ह्यो प्रण येहू ॥
सकै जो कोउ कोदंड चढ़ाई । सीता सुता लेइ सो भाई ॥
यह सुनि केते राजकुमारा । गये विदेह नगर बलवारा ॥
राज राजसुत जुरे तहांहीं । सके चढ़ाय अबै लगि नाहीं ॥
तहां चलहु लै राज कुमारा । हमहुँचलब तुव संग उदारा ॥
रङ्गभूमि देखब छविछाई । लखब स्वयंवर अति सुखदाई ॥
तुमहूं राजकुमारन काहीं । धनुप देखायो अवसर माहीं ॥
अति विचित्र मख भूमि सोहाई । चित्र विचित्र विदेह बनाई ॥
धरो धनुप तेहि जनक निवेसू । पूजित चन्दन पुहुप हमेसू॥
धूप दीप नैवेद्य अपारा । पूजत नृप षोड़श उपचारा ॥
देवन रचे धनुप निज हाथा । दियो शंभु कहँ अति सुख साथा ॥

लह्यो यज्ञ फल धनुष विदेहू। तबते धनुष धरयो तेहि गेहू॥
रच्योस्वयंवर सोइ धनु केरा। जनक चहत भूपन बल हेरा॥
चलहु जनकपुर गाधिकुमारा। लै कोशल कुमार सुकुमारा॥
अस हमरी सबकी अभिलाषा। प्रथमहि ते संमत करि राषा॥
पूरहु गुरु अभिलाष हमारी। जो कौशिक रुचि होइ तुम्हारी॥
सुनि मुनि वचन महा मुद पाई। विश्वामित्र कह्यो अतुराई॥
दोहा-भली कही मुनिजन सकल, संमत सब विधि मोर।
चलिहौं मैं हठि जनक पुर, लै सँग राजकिशोर॥

चौपाई।

अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरन्त प्रस्थान पठायो॥
भई जनकपुर गवन तयारी। साजे सहस शकट तपधारी॥
अगिनहोत्र पात्रन धरि लीने। उचित वस्तु सब भरे प्रवीने॥
लै मुनि मंडल गाधिकुमारा। राजकुमारन संग उदारा॥
गह्यो जनकपुर पंथ सुहाई। बनदेवता सकल शिर नाई॥
गवन समै मुनि वचन उचारा। पावहु तुम कल्याण अपारा॥
सिद्धाश्रम तें हम अब जाहीं। रक्षण कियो सदा यहि काहीं॥
उत्तर दिशा गंग के तीरा। तहँ ह्वै जाब सहित रघुबीरा॥
यह हिमवंत सिलोच्चै नामा। शृङ्ग गङ्ग तट अतिअभिरामा॥
ताके दक्षिण शुभ पंथाना। तहँ ह्वै हम सब करब पयाना॥
सुखी रहौ बनदेव इहांहीं। कबहूं मिलब बहुरि तुम काहीं॥
अस कहि मुनिवर सुखी अपारा। आगे करि दोउ राजकुमारा॥
मुनि समाज लै तहां ततक्षिन। सिद्धाश्रम को करि परदक्षिन।
कौशिक चल्यो जनकपुर काहीं। गौरि गणेश सुमिरि मन माहीं॥
तहँ के सकल कुरङ्ग विहङ्गा। बोलि उठे सब एकहि सङ्गा॥
भये शकुन मङ्गलप्रद नाना। मंगल मूल संग भगवाना॥

देखि देखि देशन रघुराई । जाहु भवन कहँ आनँद दाई ॥
पुनि जो मुनि सब संमत करहीं । हमहुँ तुमहुँ तेहिविधिअनुसरहीं॥
अस कहि कह्यो मुनिन मुनि राई । काह उचित भाषहु सब भाई ॥
सिगरे मुनि कौशिक रुख जानी । एक बार बोले मृदुबानी ॥
अस संमत मुनिनाथ हमारा । सुनहुतुमहु अरु राजकुमारा ॥
मैथिल महाराज विज्ञानी । धर्म धुरन्धर यज्ञ विधानी ॥
तिनके भवन सुनी अस बाता । धनुष यज्ञ होई विख्याता ॥
है यक धनुष धरणिपति धामा । हर कोदण्ड कहावत नामा ॥

दोहा—धनुष रहा अद्भुत परम, अप्रमेय अति घोर ।
परम प्रकासी गुरु परम, कोटिन कुलिश कठोर ॥

चौपाई ।

देवन आय यज्ञ महँ दोने । लिये विदेह महा मुद भीने ॥
देव दैत्य गन्धरबहु नाना । चारण सिद्ध सबै बलवाना ॥
सके न कोऊ ताहि चढ़ाई । मानुष की का कथा चलाई ॥
रच्यो स्वयंवर भूप विदेहू । सुनियत मुनि कीन्ह्यो प्रण येहू ॥
सकै जो कोउ कोदंड चढ़ाई । सीता सुता लेइ सो भाई ॥
यह सुनि केते राजकुमारा । गये विदेह नगर बलवारा ॥
राज राजसुत जुरे तहांहीं । सके चढ़ाय अबै लगि नाहीं ॥
तहां चलहु लै राज कुमारा । हमहुँचलब तुव संग उदारा ॥
रङ्गभूमि देखब छविछाई । लखब स्वयंवर अति सुखदाई ॥
तुमहूं राजकुमारन काहीं । धनुष देखायो अवसर माहीं ॥
अति विचित्र मख भूमि सोहाई । चित्र विचित्र विदेह बनाई ॥
धरो धनुष तेहि जनक निवेसू । पूजित चन्दन पुहुप हमेसू॥
धूप दीप नैवेद्य अपारा । पूजत नृप षोड़श उपचारा ॥
देवन रचे धनुष निज हाथा । दियो शंभु कहँ अति सुख साथा ॥

लह्यो यज्ञ फल धनुष विदेहू। तबते धनुष धरयो तेहि गेहू॥
रच्योस्वयंवर सोइ धनु केरा। जनक चहत भूपन बल हेरा॥
चलहु जनकपुर गाधिकुमारा। लै कोशल कुमार सुकुमारा॥
अस हमरी सबकी अभिलाषा। प्रथमहि ते संमत करि राषा॥
पूरहु गुरु अभिलाष हमारी। जो कौशिक रुचि होइ तुम्हारी॥
सुनि मुनि वचन महा मुद पाई। विश्वामित्र कह्यो अतुराई॥
दोहा-भली कही मुनिजन सकल, संमत सब विधि मोर।
चलिहौं मैं हठि जनक पुर, लै सँग राजकिशोर॥

चौपाई।

अस कहि कौशिक सुदिन बनायो। तहँ तुरन्त प्रस्थान पठायो॥
भई जनकपुर गवन तयारी। साजे सहस शकट तपधारी॥
अगिनहोत्र पात्रन धरि लीने। उचित वस्तु सब भरे प्रवीने॥
लै मुनि मंडल गाधिकुमारा। राजकुमारन संग उदारा॥
गह्यो जनकपुर पंथ सुहाई। वनदेवता सकल शिर नाई॥
गवन समै मुनि वचन उचारा। पावहु तुम कल्याण अपारा॥
सिद्धाश्रम तें हम अब जाहीं। रक्षण किये सदा यहि काहीं॥
उत्तर दिशा गंग के तीरा। तहँ ह्वै जाब सहित रघुवीरा॥
यह हिमवंत सिलोच्चै नामा। शृङ्ग गङ्ग तट अतिअभिरामा॥
ताके दक्षिण शुभ पंथाना। तहँ ह्वै हम सब करब पयाना॥
सुखी रहौ वनदेव इहांहीं। कबहूं मिलब बहुरि तुम काहीं॥
अस कहि मुनिवर सुखी अपारा। आगे करि दोउ राजकुमारा॥
मुनि समाज लै तहां ततक्षिन। सिद्धाश्रम को करि परदक्षिन।
कौशिक चल्यो जनकपुर काहीं। गौरि गणेश सुमिरि मन माहीं॥
तहँ के सकल कुरङ्ग बिहङ्गा। बोलि उठे सब एकहि सङ्गा॥
भये शकुन मङ्गलप्रद नाना। मंगल मूल संग भगवाना॥

कछुक दूर लगि कौशिक काहीं। पहुँचायो पशु पक्षि तहाँहीं॥
चली सकल मुनि राज समाजा। मध्य सबंधु लसत रघुराजा॥
युगल याम लो पंथ सिधारे। पहुँचे जब सब सोन किनारे॥
लख्यो महानद सोन सुहावन। पुण्य बढावन पाप नशावन॥
दोहा-युगल जाम बीत्यो दिवस, निरखि पुण्यप्रद सोन।
सोन कूल में बसत भे, श्रमित दूर करि गौन॥

चौपाई।

सोनभद्र महँ सबै नहायो अति निरमल जल अति सुख पाये॥
कीन्ह्यो होम सविधि मुनिराई। जानि अस्त गमनत दिनराई॥
राम लषण दोउ सोन नहाये। संध्या वंदन करि सुख पाये॥
गये गाधिसुत निकट तुराई। कौशिक सहित मुनिन शिर नाई॥
मुनि लीन्ह्यो निज निकट बोलाई। आगे बैठायो दोउ भाई॥
सोन महानद पाप विनासी। लगे प्रशंस करन तपरासी॥
लषण सहित प्रभु वरणन कीन्ह्यो।मुनि मण्डल अति आनँद दीन्ह्यो॥
विश्वामित्रहु सोन प्रभाऊ। कीन्ह्यो वरणन सहित उराऊ॥
लषण राम मुनि भये सुखारी। सुनि कै सोन महातम भारी॥
राम कह्यो कौशिकहि बहोरी। सुनहु देव विनती कछु मोरी॥
परम सोहावन है यह देशा। बसन चहत चित इहाँ हमेशा॥
ताते अचरज मन महँ लागे। सोन निरखि मन अति सुख पागे॥
कौन देश यह बन अभिरामा। सब सम्पत्ति भरी सब ठामा॥
कुंज मंजु अलिगंज विराजे। लसत कुरङ्ग विहंग समाजे॥
कहौ नाथ यह देश कहानी। इत को भयो भूप यशखानी॥
कथा कहौ विस्तार समेतू। अति अभिलाष सुनन मुनिकेतू॥
सुनत राम के वचन सोहाये। कौशिक मुनि अति आनँद पाये॥

चूमि बदन बोले मृदु बानी। पूछो भले राम गुणखानी॥
अस कहि विश्वामित्र सुजाना। लगे करन निजवंश बखाना॥
तीन देश को सबइतिहासा। मुनि मंडल मधि सहितहुलासा॥
दोहा—रघुपति अनुमति पाय कै, त्रिकालज्ञ मुनिराय।
लग्यो सुनावन राम को, कथा प्रबन्ध लगाय॥

छंद चौबोला।

ब्रह्मयोनि ते प्रगट भयो यक कुश नृप महा यशीला।
सज्जन पूजित सतिव्रत धारत धर्म कर्म शुभ शीला॥
वैदरभी ताकी पटरानी रूपवती कुलवारी।
ताके भये कुमार चारि गुण गण युत विक्रम भारी॥
अपने सम विचारि पुत्रन को युत उतसाह प्रकासी।
सतिवादी धरमिष्ठ सुतन सों बोल्यो वचन हुलासी॥
करौ धर्म पालन पुहमी को पै हौ धर्म महाना।
पितु के वचन सुनत चारिहु सुत करि संमत सुख माना॥
निज निज नगर बसाय निपुण अति बसे चारिहू राजा।
नाम कुशांबु रच्यो कौशांबी संयुत प्रजा समाजा॥
धर्मात्मा कुशनाभ रच्यो पुर भयो महोदै नामा।
नृप अमूर्तिरज धरमारण्य रच्यो पुर अति छविधामा॥
वसु जेहि नाम भूप सो विरचो गिरिव्रज नगर सोहावन।
यह वसुमती भूमि वसु की है पंच शैल ये पावन॥
नदी मागधी अति रमणीया मगध देश ह्वै वहती।
पंच पुहमि धर मध्य विराजत गिरिमाला इव महती॥
वसु नृप के पूर्वज ते सेवित अन्न प्रदाइनि भूरी।
नदी मागधी अति निरमल जल इत ते है नहिं दूरी॥
नृप कुशनाभ राजऋषि के जो रही घृताची रानी।

सो शत सुता जनी अति सुंदर युवती भूषण जानी॥
दोहा–ते भूषण पट पहिरि कै, निकसी बागन बाग ।
जिमि घन महँ बहु दामिनी, शोभित सहित सोहाग ॥

छन्द चौबोला ।

गावहिं नाचहिं बाज बजावहिं पावहिं आनँद भारी ।
मची सकल वाटिका मनोहर नूपुर की झनकारी ॥
चितवनि चलनि अनूप रूप तिन सम नहिं भूमि मँझारा।
कुंजथली महँ भली बिराजहिं जिमि घन बिच बिच तारा॥
गुणाकरी लखि भरी सुयोवन पवन मोहिं अस भाष्यो।
राजसुता तुम होउ दार मम मेरो मन अभिलाष्यो ॥
बड़ आयुष पैहो सिगरी तुम त्यागहु मानुष भाऊ ।
मनुष योनि महँ योवन चल है होवहु देव प्रभाऊ ॥
अक्षै योवन लहहु अमरता का तुम्हरी है हानी ।
पवन वचन सुनि बिहँसि कन्यका बोली मंजुल बानी ॥
अन्तर चरहु पवन प्राणिन के कछु नाहिं तुमहि छिपाना।
सुनहु देव वर वृथा करहु तुम कस हमरो अपमाना ॥
हम कुशनाभ भूप की कन्या धन्या धर्म समेतू ।
निज तप बल जो चहहि अनिल तोहिं देहि छुडाय निकेतू
होसि कालवश कुमति प्रभञ्जन पिता सुनत अति माखी
हठि के तोर विनाश करैं गे सत्य चन्द रवि साखी ॥
वरहि कहौ किमि अपने ते वर पिता अनादर होई ।
अहै पिता प्रभु भाग हमारे जेहि देहै वर सोई ॥
सुनत कन्यका वचन प्रभञ्जन प्रविशि कोप तन माहीं ।
कियो कूबरी सकल कुमारिन रहिगै शोभा नाहीं ॥

दोहा-पवन प्रपीड़ित नृपसुता, व्रीडित दुखी दराज।
जनक भवन को गवन किय, रोदन करत नराज॥
सुता दीन लखि कूबरी, विसमित कह्यो नरेश।
कहा भयो को कूबरी, कियो तुमहिं केहि देश॥
को अधर्म कीन्ह्यो महा, भापहु कस न कुमारि।
तड़फराहु अति ताप भरि, करहु विलाप पुकारि॥
अस कहि भूपति योगिवर, कीन्ह्यो अचल समाधि।
जानन हित दुख कन्यका, कीन्ह्यो कौन उपाधि॥

छन्द चौबोला।

सुनि कुशनाभ वचन कन्या सब कही गिरा शिर नाई।
पिता पवन गहि अशुभ पंथ यह कीन्ह्यो धर्म विहाई॥
हमहिं कह्यो तुम होउ दार मम देहँ देव बनाई।
तब हम कह्यो ताहि अस मम पितु जेहि देहँ विधि ल्याई॥
होई सो पति अवशि हमारो जेहि विवाद पितु करिहैं।
नहिं वरिहैं हम अपने ते पति यह अधर्म कहँ धरिहैं॥
सुनि मम वचन पवन कोप्यो अति परख्यो नहिं तुव बानी।
प्रविशि अंग महँ कियो भंग सब अनिल भयो दुखदानी॥
सुनि दुहितन के वचन धरणिपति धार्मिक सो कुशनाभा।
शत कन्या सों कह्यो वचन वर भूप तेज रवि आभा॥
क्षमा मान जे क्षिति महँ सज्जन सदा क्षमा ते करते।
क्षमा कियो तुम संमत करि सब याते अघ सब नरते॥
राखो कुल की लाज आज तुम कीन्हो क्षमा कुमारी।
क्षमा होति दुर्लभ देवन महँ मनुजन काह उचारी॥
जैसी क्षमा करो दुहिता तुम तिगरी धर्म विचारी।
तैसी क्षमा होति कबहूँ नहिं वेद पुरान विचारी॥

क्षमा दान अरु क्षमा सत्य तिमि क्षमा यज्ञ तुम जानो।
क्षमा अहै यश क्षमा धर्म पर क्षमा जगत थिति मानो॥
देव आभ कुशनाभ भाषि अस कीन्ही विदा कुमारी।
कीन्ह्यो मंत्र बोलि मंत्रिन सब सुता विवाह विचारी॥

दोहा—सचिव किये स्वीकार सब, सुता विवाह विचार।
उचित कुमारी व्याह अब, देश काल अनुसार॥

छन्द चौबोला।

तौने काल माहँ रघुनन्दन भयो महा मुनि चूली।
सिद्ध उर्द्धरेता शुभचारक किय तप ब्रह्म न भूली॥
ताहि करत तप लखि गन्धर्वी सेवन कियो तहांहीं।
नाम सोमदा सुता उर्मिला धर्म सहित वन माहीं॥
परम प्रीति करि मुनि सेवन रत बसी विपिन मुनि सङ्गा।
कछुक काल महँ चूलि नाम मुनि बोले वचन अभङ्गा॥
हे गन्धर्वी तुव सेवा से भो प्रसन्न मन मेरो।
कौन करौं उपकार कहौ तुम माँगु जौन मन तेरो॥
अति सन्तुष्ट जानि मुनि को तहँ गन्धर्वी भरि चैना।
कह्यो जोरि कर परम प्रीति सों अतिशै मंजुल बैना॥
ब्रह्म तेज संयुत मोहिं दीजे धार्मिक एक कुमारा।
नाहिं मेरे पति नाहिं मेरे सुत नहिं काहू की दारा॥
सुनहु विप्र वर मैं शरणागत दीजे विमल कुमारा।
सुनि गन्धर्वी वचन चूलि मुनि दीन्ह्यो पुत्र उदारा॥
संकल्पहि ते दियो ताहि सुत ब्रह्मदत्त अस नामा।
ब्रह्मदत्त सोमदा तनय सो भयो तेज बल धामा॥
बस्यो कांपिलीपुरी सोहावन जिमि सुर पुर सुर राजा।
सोई ब्रह्मदत्त भूपति को नृप कुशनाभ दराजा॥

चाह्यो देन सतौ दुहिता को तुरतबरात बोलाई।
क्रम सों दियो बिवाहि उछाहित दै संपति समुदाई॥
दोहा–ब्रह्मदत्त कन्या करन, कियो ग्रहण जेहि काल।
मिट्यो पवन क्रम कूबरो, बिलस्यो रूप बिशाल॥
देखी सुंदर सब सुता, बिगत पवन कृत रोग।
महाराज कुशनाभ तब, हरषित भो बिन शोग॥
ब्रह्मदत्त को ब्याह करि, दै दाइज धन भूरि।
कीन्ह्यो बिदा सदार तेहि, पहुँचायो कछु दूरि॥
पुत्रवधू लखि सोमदा, पायो परम अनन्द।
कर गहि गहि गृह लै गई, नृपहि सराहि सुछन्द॥
इते भूप कुशनाभ तहँ करि कन्यका बिवाह।
पुत्र इष्टि सुत हेत किय, रह्यो पुत्र हित दाह॥
इष्टि समापति जब भई, तब कुश ब्रह्म कुमार।
कह्यो आप कुशनाभ ते, पैहौ पुत्र उदार॥
तुव समान धरमिक महा, नाम गाधि अस जासु।
सो पैहौ सुत तासु बल, कीरति करी प्रकासु॥
अस कहि कुश कुशनाभ से, गगन पंथ ह्वै आशु।
गयो सनातन ब्रह्मपुर कुश करि सुयश प्रकाशु॥

छन्द चौबोला।

थोरे काल माहिं रघुकुल मणि सो कुशनाभ अगारा।
धर्म धुरन्धर जग महँ जाहिर जनम्यो गाधिकुमारा॥
सोई मोर पिता रघुनायक धर्म धीर धन धामा।
है हमार कुशवंश राम यह, ताते कौशिक नामा॥
सत्यवती जेठी भगिनी मम पिता रिचीकहि ब्याही।
गमनी सहित शरीर स्वर्ग सो पति सेवन उतसाही॥

धर्म वर्द्धनी सत्यवती सो पतिव्रत धर्म प्रचारा।
महा नदी सो भई कौशिकी जग में परम उदारा॥
दिव्य पुण्य जल अति रमणीया हिमगिरि ते प्रगटानी।
करत अमल परसत जल जग में लोकन मङ्गल दानी॥
हमहुँ बसे हिमवान कंदरा नदी कौशिकी तीरा।
भगिनि सनेह सने कीन्हे तप कछुक काल रघुवीरा॥
नेम हेत पुनि सिद्धाश्रम में आये भगिनि विहाई।
सो सिद्धाश्रम सत्य भयो तुव विक्रम ते रघुराई॥
यह वरण्यों उतपत्ति आपनी वंशहु कियो बखाना।
जो पूछ्यो तुम दशरथ नंदन देशहु कर अख्याना॥
कथा कथत रघुनायक तुमसों बीति गई अधराता।
युगल बंधु अब शैन करोजै ह्वै हैं पाउँ पिराता॥
बहुत दूरि चलि आये मारग अति सुकुमार कुमारे।
तुमहिं चलावत होत पंथ दुख कौशिल्या के बारे॥
दोहा—मुनिजन कीजै शैन सब हमहुँ कछुक अलसान।
नवल नृपति नंदन युगल नलिन नयन अरुणान॥

चौपाई।

यह यामिनि कामिनि सुखदाई। जगउ जीव कहँ आलसदाई॥
तरु निहचल जनु अति अलसाने। मुकुलित कंज कुमुद विकसाने॥
शशी प्रकाशित भासित तारा। भयो मंद मनु जन संचारा॥
सोवन लगे विहंग अपारा। सोवहिं चरहिं कुरङ्ग सदारा॥
अंधकार छै रह्यो दिशानन। झिल्ली झनक परै सुनि कानन॥
प्रचरहिं प्रचुर निशाचर घोरा। प्रेत पिशाच प्रमोदन थोरा॥
कहुँकहुँ कूकत मुदित मयूरा। करत मनहुँ वंशी रव पूरा॥
कहुँकहुँ चातक बोल सोहावन। भये अमूक उलूक भयावन॥
क्रम क्रम संध्या सकल सिरानी। मनु नखतन की मिटी गलानी॥

ज्यो सिंधु ते शशी सोहायो । मनहुँ जीति रण रविहि भगायो ॥
निरखत शशि हरषत जग प्रानी । कौन इंदु सम आनँद दानी ॥
रवि कर घोर ताप जग छावत । कहु मयङ्कबिन कौन मिटावत ॥
फैल रही छवि फरश जोन्हाई । मानहुँ हिम बितान सुखदाई ॥
नव पल्लव चमकत चहुँ ओरा । मुकुतमाल जनु बिपिन करोरा ॥
अंधकार रजनी कर भारी । कौन बिना हिमकर हठि हारी ॥
संयोगिनि रजनी सजनी सी । होति बियोगिनि सोइ अहिनी सो ॥
भयो निशा वश विश्व सनाका । पर्यो मनो रविकर पर डाका ॥
तोय तरंग मंद मृदु वाता । कोकी कोकन शोक अघाता ॥
चरहिं फणी धरि मणी सुखारी । कंजन कोस ओसकन धारी ॥
यहि विधि कौशिक निशा बखानो । आलस बलित चन्द किय बानो ॥
दोहा—लगे प्रशंसा करन मुनि साधु साधु मुख गाय ।
अति उज्ज्वल कुशवंश यह निरत धर्म समुदाय ॥
जे नर भे यहि वंश महँ ते करतार समान ।
पुनि विशेषि कुश कुल कमल विश्वामित्र प्रधान ॥
नदी कौशिकी सरित वर कुल को करति उदोत ।
सुयश रावरो धरणि में बरणि पार को होत ॥
यहि विधि सुनि मुनि जन वचन मुनिवर मुदित अगाध ।
गाधिसुवन सोवत भये जानि बिगत सब बाध ॥
राम लषण सुनि सुयश युत विश्व विदित कुश वंस ।
हंस वंस अवतंस दोउ, बिसमित किये प्रशंस ॥
सोवत जानि मुनीश को भयो अल्प जनु भान ।
तृण साथरी बिछाय कै, सोये राम सुजान ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज्य महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपा पात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरे श्रीकौशिक वंश वर्णनो नाम द्वादश प्रबन्धः ॥ १२ ॥

दोहा–सुखद सोन तट मुनि निकट, सोवत लक्ष्मण राम।
ब्रह्म मुहूरत होत भो, जागे मुनि मति धाम॥
अरुणाई छाई ललित, प्राचीदिशा निहारि।
मुनि मंजुल बोले वचन, करि अस्मरण मुरारि॥

सवैया।

हे रघुवंश के वारिज भान प्रधान प्रधानन में सुखदाता।
श्रीअवधेश के नंदन बाँकुरे वीर शिरोमणि विश्व विख्याता॥
श्रीरघुराज सुनो कृत काज सुदेव मुनीन समाज के त्राता।
श्यामल गात दृगै जलजात उठो अब तात भयो है प्रभाता॥
मोहि गई इन नैनन में तजि है नहिं नींद तुम्हैं तजि दीजै।
आलस त्यों अँगिरान की व्याजन छोड़ति अंग न संग करीजै॥
श्रीरघुराज दिनेश हुलासित अर्घ के आसित तोषित कीजै।
पायँन पर्सन को पुहुमी पथ के मिस चाहति प्रेम पतीजै॥
रावरे के यश सों लजि कै भजि चंद दुरचो गिरि अस्त मँझारी
आप प्रतापते कोमल तेज विलोकन आवत तोपि तमारी॥
श्रीरघुराज लला लखो कौतुक सांझ गये फँसि भौंर दुखारी
वारिज के बिकसे निकसे पिकसे तन के परै पीत निहारी॥

दोहा–करत शयन बीती निशा, भयो राम भिनसार।
उठहु तात मज्जन करहु सज्जन के आधार॥

छंद चौबोला।

सुनि मुनि वचन उठे रघुनायक अलसाने अँगराने।
कर सों कर गहि लषण उठाये मुनि बंदे सुखसाने॥
मज्जन हेत गये नद तट पर प्रातकृत्य निरबाही।
सविधि नहाय कियो संध्या पुनि दीन्ह्यो अर्घ उछाही॥
ह्वै तयार कर लै धनु शायक रघुनायक दोउ भाई।

विश्वामित्र संग पगु धारे लखे सोन सुखदाई ॥
सुनि सो मृदुल बैन बोले प्रभु सोनभद्र यह पावन ।
अहै महानद महा पुण्यप्रद दुहुँ दिशि पुलिन सोहावन ॥
मज्जन करत रद्द पापन को हेरि हद्द हुलसावै ।
सकल नदिन महँ नद्द विराजत सद्द सुयश जग छावै ॥
विमल नीर गंभीर न कहुँ थल तीर तीर वन सोहै ।
कट्यो महीधर मेकल सो यह हरत कलुप जे जोहै ॥
फोरत विविध धराधर आयो वसुंधरा छविदाई ।
निरमल जल भल उथल सकल थल मलतमनुजमलिनाई॥
मुनिवर उतरव अब पायँन सों नहिं तरनी कर कामा ।
विश्वामित्र बैन बोले हँसि सुनहु लपण अरु रामा ॥
जो मारग मुनि जन दरशायो तेहि मारग ह्वै जैहैं ।
आजु दूर नहिं गंग तीर महँ तुमरो वास करैहैं ॥
अस कहि राम लपण सँग लैकै मुनिवर सहितसमाजू ।
उतरे सोन भौन आनँद के चले पंथ कृत काजू ॥
दोहा—चलत चलत तेहि पंथ महँ, वीति गये युग याम ।
विष्णु पदी सरिता लखे गंगा जग जेहि नाम ।

कवित्त ।

स्वच्छैहैकच्छाराहँसिकरतविहारामहातुंगेहैकगारामुनिमज्जतअपाराहै
एकओरदेवदारादेवन करतारालिहेविविधप्रकाराकेलिकरतहजाराहै।
रघुराजहीरनकेहारा इव धौलधारा धरणीमँझाराधावैकरिवहराराहै ।
पुण्यकोपसाराअधमानकोअधाराकरपापनकोछाराकलिकालकोपछाराहै
दोहा—कल रव सारस हंसको, मच्यो गंग दुहुँ ओर ।
चक्रवाक माला विमल,करत मनोहर शोर ॥

देखि सरित वर सुरसरी, मुनि युत राजकुमार।
करि प्रणाम अस्तुति किये, आनँद लहे अपार॥
विष्णु पदी के तीर मैं कीन्ह्यो कौशिक बास।
राम लषण मुनि मंडली पाये सकल सुपास॥

छन्द चौबोला।

कीन्ह्यो मज्जन सविधि गंग महँ देव पितर संतोषे।
सविधि कियो पुनि होम अनल में सकल धर्म के चोपे॥
यहि विधि मुनि तहँ राम लषण को मज्जन विधि करवाई
ऋषिन सहित आपहु मज्जन करि बासथली महँ आई॥
कंद मूल फल सुधा सरिस लै राजकुमारन दोने।
अपने ढिग भोजन कराय कर पायँ धोवाय प्रवीने॥
बैठे राम लषण संयुत मुनि मुनि मंडली बिराजी।
सुचित चित्त करि नित्यकर्म सब लखि सुरसरि अति राजी॥
अवसर जानि जोरि कर पंकज राम कह्यो शिर नाई।
नाथ सुनन की कछु अभिलाषा सो अब देहु सुनाई॥
कौन भाँति त्रैलोक्य नाकि कै गंग धरा महँ आई।
पावन करत अपावन जन को मिली नदीपति जाई॥
सुनत राम के वचन महामुनि मधुर महा सुखदाई।
वृद्धि जनम गंगा को बरणन करन लगे हुलसाई॥
है हिमवान महान महीधर आकर धातुन केरो।
जहाँ लसत सुंदर बदरी वन तपसिन वृन्द बसेरो॥
ताके प्रगटी परम सुंदरी युग सुकुमारि कुमारी।
नाम मेनका हिमगिरि की तिय मेरु सुता छविवारी॥
सोई मेनका सुता जनी द्वै जेठि गंग भो नामा।
ताकी अनुजा भई दुतीया उमा नाम छवि धामा॥

दोहा–हिमगिरि की जेठी सुता, गङ्ग नाम की जोय।
सुर कारज के करन हित, सुर माँगे सुख मोय॥

छन्द चौबोला।

सुनि देवन को विविध याचना अति हरषित हिमवाना।
लोक पावनी अघनशावनी कियो सुता कर दाना॥
तीन लोक मङ्गल के कारण कामचारिणीगंगा।
लै तेहि सुखी स्वर्ग गमने सुर माने सिद्ध प्रसंगा॥
तीनि लोक हित जब गंगा को लै सुर स्वर्ग सिधारे।
उमा दूसरी हिमगिरि कन्या तब तप करन विचारे॥
गई विपिन कहँ कियो महा तप शिव पति होयँ हमारे।
जानि सुता रुख हिमपति व्याह्यो शंकर को सुखधारे॥
लोक वंदिनी पाप कंदिनी हिमगिरि युगल कुमारी।
तिनको यह चरित्र कछु वरण्यो राम लषण धनु धारी॥
गंगा जेठी उमा दूसरी देवी शंभु पियारी।
जेहि विधि गमनी गंग सुरालै सो सब दियो उचारी॥
प्रथम गई गिरवान सदन कहँ गगन पन्थ ह्वै गङ्गा।
सोई सुर सरिता रमनीया करति कलुप कुल भंगा॥
सुनहु सुजन गतिदान शिरोमणि तुव पद पाय प्रवाही।
कस पूछहु अनजानत से मोहिं तुम्हहि विदित का नाही॥
जब सुरलोक गई सुरसरिता सुरपुर अघ हरिलीन्ही।
मन्दाकिनी नाम अस पायो अमरन आनँद दीन्ही॥
सोई यह राजति अवनी महँ कलि कल्मप को आरा।
अधरम धुरा विध्वन्स करति ध्रुव धरणी धावति धारा॥

दोहा–जे मज्जत पीवत सलिल, नैनन निरखत गङ्ग।
नाम उचारत नित बदन, होत पाप तिन भङ्ग॥

देखि सरित वर सुरसरी, मुनि युत राजकुम
करि प्रणाम अस्तुति किये, आनँद लहे अ
विष्णु पदी के तीर मैं कीन्ह्यो कौशिक व
राम लषण मुनि मंडली पाये सकल सुपा

छन्द चौबोला ।

कीन्ह्यो मज्जन सविधि गंग महँ देव पित
सविधि कियो पुनि होम अनल में सक
यहि विधि मुनि तहँ राम लषण को म
ऋषिन सहित आपहु मज्जन करि वा
कंद मूल फल सुधा सरिस लै राजकु
अपने ढिग भोजन कराय कर पायँ
बैठे राम लषण संयुत मुनि मुनि मं
सुचित चित्त करि नित्यकर्म सब ल
अवसर जानि जोरि कर पंकज रा
नाथ सुनन की कछु अभिलाषा स
कौन भाँति त्रैलोक्य नाकि के गं
पावन करत अपावन जन को मि
सुनत राम के वचन महामुनि म
वृद्धि जनम गंगा को वरणन कर
है हिमवान महान महीधर आक
जहाँ लसत सुंदर बदरी वन त
ताके प्रगटी परम सुंदरी युग
नाम मेनका हिमगिरि की ति
सोई
ता।

सुनत महेश्वर देवन वाणी वचन तथास्तु उचारा।
कह्यो सुरन सों पुनि गिरिजापति शोक टरे नहिं टारा॥
धारण करब तेज अपने में होइ त्रिलोक सुखारी।
पतित तेज जो भयो हमारो कहहु देव को धारी॥
तब बोले सब देव जोरि कर धरणी धारण करिहैं।
सुनहु महेश शंभु वृषभध्वज यहि विधि जग सुख भरिहैं॥
वामदेव सुनि विबुधन विनती त्याग्यो तेज कराला।
रह्यो छाइ पृथिवी गिरि कानन जगी ज्वलनइवज्वाला॥
सकी न धरणि सम्हारि तेज सो तब भे देव दुखारी।
कह्यो पाकशासन अति दुखित हुताशन काहि हँकारी॥
प्रविशहु शंभु तेज महँ पावक पवन सहाय बोलाई।
सुनत शक्र शासन कीन्ह्यो तस पवनहुताशन जाई॥
प्रविशत पावक पवन तेजहर भयो सेत गिरि रूपा।
कछुक काल लहि सरवन भयऊ दिनकर अनल सरूपा॥
सो सरवन में भयो स्वामकार्तिक जेहि नाम उचारा।
सकल देव मुनि ह्वै अति हरपित गे कैलास पहारा॥
उमा शंभु की अस्तुति कीन्हे जैं जैं शंभु भवानी।
भये प्रसन्न सुनत गिरिजापति सुरसमाज हरपानी॥
दोहा–गीर्वाणन को देखिके, गौरी गुनि सुर दोप।
अरुण नयन बोली वयन, करि देवन पर रोप॥

छन्द चौबोला।

सुत अभिलाप हमारी हरि लिय किये देव अपकारा।
ताते सुनो कुमार आजु ते नहिं जनि है तुव दारा॥
सुत संभव पौरुप ते हीने ह्वैहै नाक निवासी।
पुत्र जन्म सुख कबहुँ न पैहौ रैहौ संतत आसी॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि सुनि मुनिवर की बानी राम लषण सुख पाई।
चरण बंदि बोले अति हरषित मन बिसमित दोउ भाई॥
ब्रह्म वंश शिरमौर धर्म युत तुम बरणी यह गाथा।
हिमगिरि जेठि सुता को चरित कहो सिगरो मुनि नाथा॥
दिव्य लोक अरु मानुष लोकन किमि सुरसरि चलि आई।
तीनिहुँ लोक प्रवाह प्रथित भो कौन हेत मुनिराई॥
यह सुरधुनी कथा न सुनी हम कहहु मुनीश उदारा।
त्रिकालज्ञ तुम सुनन आश मोहिं करहु कथा विस्तारा॥
केहि विधि गंगा भई त्रिपथगा जाहिर तीनहुँ लोका।
हे धरमज्ञ कर्म कैसे किय तीनिहुँ लोक अशोका॥
विश्वामित्र तपोधन सुनिकै राजकुँवर की बानी।
लागे कहन गंग गाथा मुनि मंडल मध्य विज्ञानी॥
प्रथमहिं भयो विवाह शंभु को उमा बरयो बरिआई।
निरखि भवानी को शंकर प्रभु मोहित भे ललचाई॥
रास विलास करत गौरी हर बीति गये शत बरषा।
नहिं जनम्यो कुमार सुरसेनप भये देव निन हरषा॥
तब विरंचि आदिक सिगरे सुर गमन किये कैलासा।
करि अस्तुति शिर नाइ बार बहु कह्यो सुनहुँ कृतवासा॥
देव देव हे महादेव तुम लोकन के हितकारी।
बंदत देव वृन्द तुमको प्रभु करहु प्रसाद पुरारी॥

दोहा—नाथ तिहारो तेज यह, सकै लोक नहिं धारि।
विहित वेद विधि करहु तप, उमा सहित त्रिपुरारि॥

छन्द चौबोला।

तीनि लोक हित हेतु शंभु प्रभु धारण कीनै तेना।
रहहु सकल लोक लोकनपति कंपन सुरन करेना॥

सुनत महेश्वर देवन वाणी वचन तथास्तु उचारा।
कह्यो सुरन सों पुनि गिरिजापति शोक टरे नहिं टारा॥
धारण करव तेज अपने में होइ त्रिलोक सुखारी।
पतित तेज जो भयो हमारो कहहु देव को धारी॥
तब बोले सब देव जोरि कर धरणी धारण करिहैं।
सुनहु महेश शंभु वृषभध्वज यहि विधि जग सुख भरिहैं॥
वामदेव मुनि विबुधन विनती त्याग्यो तेज कराला।
रह्यो छाइ पृथिवी गिरि कानन जगी ज्वलनइवज्वाला॥
सकी न धरणि सम्हारि तेज सो तब भे देव दुखारी।
कह्यो पाकशासन अति दुखित हुताशन काहि हँकारी॥
प्रविशहु शंभु तेज महँ पावक पवन सहाय बोलाई।
सुनत शक्र शासन कीन्ह्यो तस पवनहुताशन जाई॥
प्रविशत पावक पवन तेजहर भयो सेत गिरि रूपा।
कछुक काल लहि सरवन भयऊ दिनकर अनल सरूपा॥
सो सरवन में भयो स्वामकार्तिक जेहि नाम उचारा।
सकल देव मुनि ह्वै अति हर्षित गे कैलास पहारा॥
उमा शंभु की अस्तुति कीन्हे जै जै शंभु भवानी।
भये प्रसन्न सुनत गिरिजापति सुरसमाज हरपानी॥

दोहा–गीर्वाणन को देखिकै, गौरी गुनि सुर दोप।
अरुण नयन बोली बयन, करि देवन पर रोप॥

छन्द चौबोला।

सुत अभिलाप हमारी हरि लिय किये देव अपकारा।
ताते सुनो कुमार आजु ते नहिं जनि है तुव दारा॥
सुत संभव पौरुप ते हीने ह्वैहैं नाक निवासी।
पुत्र जन्म सुख कबहुँ न पैहौ रैहौ संतत आसी॥

तब ते देवन की दारन में जनमै नहीं कुमारा ।
गौरी शाप आजुलौं लखियतु है रघुराज उदारा ॥
यहि विधि देवन शिवा शाप दै दई शाप धरणी को ।
धरयो तेज तैं मेरे पति को धिक २ तुव करणी को ॥
पृथवी तेरे होइँ रूप बहु होइँ बहुत पति तेरे ।
पुत्र प्रमोद लहै कबहूं नहिं शाप प्रभावहि मेरे ॥
मोर पुत्र सुख तुही निवारयो ताते सुत नहिं होई ।
रे कुमतिन पातिव्रत धर्म रही नहिं बहु पति जोई ॥
शिवा शाप सुनि सुर समाज सब शोकित भे सुख हीने ।
देवन दुखी देखि गिरिजा हर गमन वरुण दिशि कीने ॥
जाइ हिमाचल के उत्तर दिशि गौरी युत गौरीशा ।
करन लगे तप कठिन उमा हर मिलन हेत जगदीशा ॥
भन्यो चरित्र भवानी को यह करि नेसुक विस्तारा ।
सुनहुँ बहुरि गंगा चरित्र अब दशरथ राज कुमारा ॥
जब तप करन गये गौरी हर हिमगिरि उत्तर आसा ।
अनिल अनल युत अमर सिद्ध मुनि गे तब ब्रह्म अवासा ॥

दोहा–सेनापति को सुरन को, होइ यही अभिलाप ।
इन्द्र अनिल यम वरुण शिखि आदि देव ऋषि लाप ॥
वंदन किये स्वयंभु को, अस्तुति करि नाहिं थोरि ।
सुनहु पितामह यह विनै, कहत देव कर जोरि ॥

छंद चौबोला ।

जो प्रथमहिं दीन्ह्यो सेनापति देवन को करतारा ।
सो अबलो नहिं भयो भूमि में [illegible] ॥
उमा शंभु तप करत हिम [illegible] पामे ।
याको करि विचार [illegible]

देवन के अज अहो परम गति पूरक उर अभिलापा।
सुनि सुर बैन प्रबोधि बिबुधगण मधुर चारि मुख भाषा॥
अब नहिं ह्वै है देवन के सुत दीन्ही शाप भवानी।
शिवा शाप को मेटि सकै जग लेहु सत्य सुर जानी॥
यह आकाश गामिनी गंगा पावक पाय सहाई।
महा प्रबल सुरगण को नायक सेनापति प्रगटाई॥
जेठि सुता हिमगिरि की गंगा जबहिं पुत्र लै आई।
तबै उमा अमरप नहिं करिहै लैहै सुत अपनाई॥
ऐसे सुनि करतार बचन सुर अतिशय आनँद पाई।
गमनत भये देव कैलासै चतुरानन शिर नाई॥
देख्यो अति उतंग भूधर मणि मंडित धातु हजारा।
पुत्र हेतु पावक बोलाइ कै ऐसे वचन उचारा॥
धूमकेतु सुर कारज के हित शम्भु तेज जो धारा।
सो अब तजहु तुरत गंगा महँ प्रगटै प्रबल कुमारा॥
सुनत गीर्वाणन की वाणी अगिन गंग ढिग जाई।
कह्यो देवि अब गर्भ धरहु उर देवन को सुखदाई॥

दोहा—अनल बैन सुनि सुर नदी, धरयो दिव्य निज रूप।
लखि सुरसरि महिमा अनल, त्यागो तेज अनूप॥

छंद चौबोला।

त्यागत तेज सुनो रघुनंदन गंगा सोतन माहीं।
गयो पूरि सब थल दोउ पारन ज्वाल माल दरशाहीं॥
अति विकराल ज्वाल निकसत जल मनहुं कुंड घृत डारयो।
सकल देव के आगि पुरोहित गंगा ताहि उचारयो॥
तुव उदभूत त्रिनेत्र तेज यह सकौं न मैं अब धारी।
भई व्यथित अति जरत अंग सब क्षण महँ चाहत जारी॥
पावक भाष्यो विष्णु पदी सों शंभु तेज अति घोरा।

तजहु हिमाचल के पापा में यह सम्मत हैं मोरा॥
सुनत अनल के वचन जाह्नवी तेज ऐंचि सो तनते।
तज्यो हिमाचल कंदर अंदर वंदर भागे वनते॥
तजत तेज जो गिरयो धरणि में कनक भयो पुनि सोई।
तत सुजांबूनद सम भाषित लखे देव सब कोई॥
तीक्षणता जो रही तेज की तामें लोह सो भयऊ।
रह्यो तेज कोमल जो सोई सीस राँग ह्वै गयऊ॥
यहि विधि धरणि तेज धूर्जटि को परत भई बहु धातू।
शङ्कर तेज प्रभाव हिमाचल भयो कनक संघातू॥
परवत कानन लता कुंज तरु तृण पाषाण अपारा।
भये कनक के चटक चारु अति पुरुष सिंह यक बारा॥
जात रूप तबते कहवायो यह सुवरण जग माहीं।
प्रगटयो एक कुमार चारु अति शंकर तेज तहाहीं॥

दोहा—देव मरुतगण सङ्ग लै, आयो बास वधाय॥
अति सुकुमार कुमार लखि, लीन्ह्यो अङ्क लगाय॥

छन्द चौबोला।

को बालक को क्षीर पियावे यह शङ्का प्रगटानी।
षट कृत्तिका सुरेश बोलायो कही विमल तिन बानी॥
जो यह बालक होइ हमारो तौ हम दूध पियावें।
देव कह्यो शिशु अहै तिहारो यह संमत ठहरावें॥
षट् कृत्तिका मानि सुत आपन बालक छीर पियायो।
तब बासव तेहि कार्तिकेय अस शिशु को नाम धरायो॥
पुनि तहँ सकल देव अस भाषे यह कृत्तिका कुमारा।
ह्वै है तीनि लोक महँ जाहिर बल विक्रमी अपारा॥
षट कृत्तिका सुनत सुर बाणी गर्भ मलिन सुत जानो।

नहवायो तेहि विमल गङ्गजल शिशु आभा प्रगटानी ॥
पावक ज्वाल सरिस बालक सो अति सुंदर सुकुमारा।
भो असकंद गर्भ ताते असकंदहि नाम उचारा ॥
क्षीर पियावन लगी कृत्तिका यक बालक षट नारी।
षटमुख करि शिशु षट जननो को किय पय पान सुखारी ॥
एक दिवस में षट जननी को षट मुख करि पय पाना।
भयो युवा सुकुमार मनोहर विक्रम ओजनिधाना ॥
वाहन भयो मयूर तासु पुनि लै कर शक्ति प्रचंडा।
कीन्ह्यो दलन दैत्यदल निज बल तारक हन्यो उदण्डा ॥
सुखित भये सुर कार्तिकेयको सुर सेनापतिकीन्हे।
किय अभिषेक देवदल नायक नाम तासु करि दीन्हे ॥

दोहा–अग्नि सहित सिगरे अमर, देखि अतुल दुति तासु।
हर्षवंत सब होतभे, पूरण भयो प्रयासु ॥
यह गङ्गा कोचरित में, वरण्यो राज कुमार।
महा धन्य अति पुण्य प्रद, संभव कह्यो कुमार ॥
कार्तिकेयके भक्त जे, हैं अनन्य महि माहिं।
बड़ आयुष सुत नाति लहि, तासु लोक को जाहिं ॥
यह कौशिक मुनि रामसों, कथा माधुरी गाय।
लगे कहन इतिहास पुनि, रविकुल की हरषाय ॥

छन्द चौबोला।

भयो अयोध्या अधिप भूप यक बल प्रताप तपधामा।
कीन्ह्यो नवोखण्ड महँ शासन रह्यो सगर अस नामा ॥
यक वैदर्भ भूप की दुहिता नाम केसिनी जाको।
भई जेठ महरानी नृप की धारयो धर्म धुराको ॥
दुतिय अरिष्टनेम की दुहिता सुमति नाम नृपनारी।

रह्यो न पुत्र सगर भूपति के ताते भयो दुखारी ॥
भूप सगर लै दोऊ रानी गयो हिमाचल माहीं ।
भृगु प्रश्रवन निकट तप कीन्ह्यो भृगुमुनि रहे तहाहीं ॥
करत करत तप विते वर्ष शत भृगुमुनि भये प्रसन्ना ।
दिय वरदान सगर भूपति को ब्रह्मतेज संपन्ना ॥
महाराज तुम संतति पैहौ अति कीरति संसारा ।
यक तिय जनी वंश कर सुत यक यक तिय साठि हजारा ॥
भृगु के वचन सुनत दोउ रानी कह्योवंदि करि जोरी ।
कैसो यक सुत साठि सहस कस भाषहु नाथ वहोरी ॥
सुनि रानिन के वचन ब्रह्मऋषि दीन्ह्यो वचन उचारी ।
एक कुमार वंश कर होई करी उपद्रव भारी ॥
साठि हजार कुमार अपार वलीह्वैहैं उतसाही ।
दुइ में कौन कौन वर लैहै कौन आश केहि काही ॥
सुनि मुनि वचन केसिनो लीन्ह्यो पुत्र वंश कर जोई ।
लहुरी सुमति गरुड़ भगिनी तहँ लियो बहुत सुत सोई ॥

दोहा—कीर्तिवंत बलवंत सुत, होवैं साठि हजार ।
लीन्ह्यो अस वर सगर तिय, भृगु सों राजकुमार ॥

छंद चौबोला ।

सगर भूप रानिन ते संयुत भृगु परदक्षिण दीन्ह्यो ।
अति आनंदन सो रघुनन्दन अवध आगमन कीन्ह्यो ॥
काल पाय जेठो महरानी जनम्यो एक कुमारा ।
भयो भुवन जाहिर असमंजस ताकर नाम उचारा ॥
गरुड़ भगिनि जनम्यो यक तुंवा तामें वीज अपारा ।
वीज भेद ते भे कुमार ते सुंदर साठि हजारा ॥
सुमति कुंभ तब साठि सहस लै भरि भरि घृत सब माहीं ।

यक यक बीज डारि यक यक घट दीन्ह्यो धाइन कार्ही ॥
यक यक बीजन ते यक यक सुत होत भये दुति खासी ।
धाय सकल पय प्याय बढ़ायो भये युवा बलरासी ॥
यहि विधि सगर अवधपति के तहँ अतिशै प्रबल कुमारा ।
जेठ भयो असमंजस आत्मज लहुरे साठि हजारा ॥
जेठो सगरसुवन असमञ्जस करनलग्यो अघ भारी ॥
अवध प्रजन के पुत्र पकरि के देतो सरयू डारी ॥
बूड़त तिनहिं निरखि कै विहँसत रोवत प्रजा दुखारी ।
हाहाकर मच्यो कौशलपुर देहिं प्रजा सब गारी ॥
प्रजा अहित रत निरखि पुत्र को नहिं सहिगयो पुकारा ।
दियो निकारि सगर भूपति तब कानन कुटिल कुमारा ॥
रह्यो एक असमञ्जस के सुत अंशुमान अस नामा ।
महा बली भो परम धरम रत सम्मत लोक ललामा ॥

दोहा–यहि विधि बीत्यो काल कछु, रघुवर सगर नरेश ।
अश्वमेध के करन को, कियो मनोरथ वेश ॥
मंत्रिन सों करि मंत्र नृप, ज्ञाता वेद विधान ।
कीन्ह्यो यज्ञ अरंभ को, सगर नरेश सुजान ॥

छंद चौबोला ।

रघुनंदन सुनि मुनिवर वाणी बोले करि अति प्रीती ।
सुनन चहत विस्तार सहित हम कथा यथा मख रीती
कैसे कियो यज्ञ वेदज्ञ सो पूरब पुरुष हमारे ।
सुनि नरनायक कुँवर वचन वर मुनिवर वैन उचारे ॥
सुनहु राम नृप सगर यज्ञ जस कीन्ह्यो परम उदारा ।
शंकर श्वसुर हिमाचल नामक है अति तुङ्ग पहारा ॥
तैसहि दक्षिण दिशा विंध्य गिरि पावन परम उचारा ।

दोउ धरणीधर बिच की धरणी अति शुचि वेद विचारा॥
यज्ञ दान जप तप के लायक तेहि महि सगर भुआला।
यज्ञ अरंभ कियोमुनि संयुत रचि विशाल मखशाला॥
देखि परैं जहँ ते दोउ पर्वत विंध्य और हिमवाना।
अंत्रवेद अस नाम देशको भारतखण्ड प्रधाना॥
छूट्यो अश्वमेध को वाजी अंशुमान रखवारा।
कीन्ह्यो ताहि सगर नरनायक भेज्यो कटक अपारा॥
यज्ञपर्व महँ वासव आयो राक्षस रूप बनाई।
हरयो तुरंत तुरंग यज्ञ को भये दुखित द्विजराई॥
उपाध्याय गण जाय कह्यो तव सुनहु भूप यजमाना।
मख वाजी लै गयो चोर कोउ यह भयो विघ्न महाना॥
मारहु तुरत तुरंगचोर को ल्यावहु वेगहि वाजी।
विगत विघ्न क्रतु करहु समापत हम ह्वै हैं तव राजी॥
दोहा–यज्ञ विघ्न हठि करत है सबहिं अमंगल घोर।
करहु वाजिमख निरविघन, हनहु हेरि हयचोर॥

छंद चौबोला।

सगर राज सुनि सभा बैठि अस उपाध्याय की बानी।
बोल्यो साठि हजार कुमारन शासन दियो विज्ञानी॥
मंत्र पवित्र ब्रह्मऋषि मण्डल करहिं यज्ञ को कर्मा।
तहँ रक्षसन शक्ति नाहिं आवनि हरै तुरंग अधर्मा॥
ताते तुरत जाहु हय हेरहु मंगल होय तुम्हारा।
यह समुद्र माला महि मंडल बचैं न बिना निहारा॥
जो वसुधा विस्तार विलोके नाहिं विलोकहु वाजी।
तो खनि डारहु सकल मेदिनी यक यक योजन राजी॥
जहँ लों मिलै न मख को वाजी तहँ लगि करि सुत करनी

यक यक सुत यक यक योजन लगि खोदि धसावहु धरनी॥
मख दिक्षित हम उपाध्याय युत बैठें लै निज नाती।
जब लगि नहिं तुरंग देखब हम तब लगि अति दुख छाती॥
सुनि पितु शासन साठि हजार कुमार महा बलवारे।
चले अश्व खोजन अवनीमहँ पितु रजाय शिर धारे॥
डारे खोजि सकल धरणी कहँ लखेन कतहुँ तुरंगा।
साठि हजार कुमार महा बल रँगे कोप के रंगा॥
एक कुमार एक योजन लो वज्र सरिस निज बाहू।
डारचो खोदि खूब धरणी को भयो मेदिनी दाहू॥
कुलिश सरिस लै शूल करन महँ तिमि दारुण हलधारा।
गई खोदि वसुमतो विकल अति कीन्ह्यो घोर चिकारा॥

दोहा–मारे गये भुजंग बहु, भो बहु असुर विनास।
राक्षसहू केते हते, भय जीवन बड़ि त्रास॥

छंद चौबोला।

हाहाकार मच्यो महि मंडल प्राणिन कियो पुकारा।
सगर सुवन खनि डारचो धरणी योजन साठि हजारा॥
सुनहु पुरुष पंचानन ते सब खनत खनत महि काहीं।
पहुँचे जाइ रसातल सिगरे अंत धरातल माहीं॥
यहि विधि जंबूद्वीप शैल युत खोदत सगर कुमारा।
चारिहु ओर अवनि फिरि आये नहिं मखवाजि निहारा॥
तब सुर असुर और गन्धर्वहु पन्नग भये दुखारी।
जाय सत्यलोकै अति विसमित जहाँ बसत मुख चारी॥
सुर सब करि अस्तुति विरंचि को अति विपन्न मुख कीने।
कहे पितामह सों सन्तापित वचन भूरि भय भीने॥
हे चतुरानन सगर कुमारन धरणि खोदि सब डारे।

अपने वल ते विन अपराध वृथा जल जीवन मारे ॥
यही हमारो यज्ञ विघन किय यही तुरंग चोराये।
अस कहि कहि मारे वहु जीवन सगर सुअन भ्रम छाये॥
सुनि देवन के वचन पितामह तिनको देखि दुखारी।
काल प्रभाउ सकल मोहित गुनि कही गिरा मुख चारी॥
जाकी यह सिगरी वसुधा है वासुदेव भगवाना।
कपिल रूप ह्वै पालत पुहुमी नाशत नेवर नाना॥
तासु कोप पावक महँ जरिहैं सिगरे सगर कुमारा।
कल्प कल्प महँ खनत मही जारत तिन कपिल उदारा॥
दोहा-सगर सुवन को और विधि, कवहुँ होत नहिं नास।
सुनि विधि शासन तेंतिसौ देव गये निज वास॥

छन्द चौवोला।

इतै प्रचंड सगर के नंदन साठि हजार उदंडा।
खनत मही को हनत भूमिचर माच्यो शोर अखंडा॥
मनहुँ होत पविपात पुहुमि पर धुंधकार भो भारी।
उछलत सिंधु सलिल अंवर लौं लागत शूल कुदारी॥
यहि विधि खनत खनत धरणी को चारिहु दिशि फिरि आये।
सगर सुअन चलि अवध नगर महँ जनकहि वचन सुनाये॥
डारयो ढूँढ़ि भूमि भूधर वन मारयो जंतु अपारा।
दानव देव पिशाच उरग निशिचर किन्नर संहारा॥
मिल्यो न पिता अश्व मख वाजी हरनहार नहिं पायो।
काह करें दीजै अव शासन वुद्धि विचारि सुनायो॥
सुनि पुत्रन के वचन सगर नृप करि अमरप अति घोरा।
वहुरि कुमार खनहु वसुधातल लौटो हनि हय चोरा॥
मख वाजी वाजी कर हरता जव लगि मिलै न प्यारे।

तब लगि खोजहु खनहु खूब महि पालत वचन हमारे ॥
सुनि पितु शासन सगर सुअन सब साठि सहस्र बलीने ।
खनत खनत महि गये रसातल पितु शासन सति कीने ॥
लखे पर्वताकार महा दिग्गज धरणी धरि ठाढ़ो ।
वन पर्वत सरि सिंधु सहित महि धरे शीश बल गाढ़ो ॥
बहत गंड मद रद उदंड अति विरूपाक्ष जेहि नामा ।
सगर सुवन दै दिग्गज को परदक्षिण किये प्रणामा ॥

दोहा–पर्व पाय दिग्गज जबै, श्रमित कँपावत माथ।
तबहिं होत भूकंप महि, ताहि दिशा रघुनाथ ॥

छन्द चौबोला ।

यहि विधि खनि पूरुब दिशि धरणी लखि दिग्गज सनमानी ।
दक्षिण दिशि लागे महि खोदन सगर सुअन बलखानी ॥
तहँ दिग्गज देखे नृप नंदन महा पद्म जेहि नामा ।
महा पर्वताकार शरीर धरे शिर धरा ललामा ॥
अति विस्मय करि सकल सगर सुत दै परदक्षिण ताको ।
साठिहजार कुमार सगर के लगे खनन वसुधा को ॥
पूरुब दिग्गज दक्षिण दिग्गज देखत सगर कुमारा ।
खनत खनत महि पश्चिम आये दिग्गज तहाँ निहारा ॥
नाम सौमनस धरे धरा शिर विंध्य गिरिंद समाना ।
पूछि कुशल शिर नाय सगर सुत कीन्हे खनत पयाना ॥
खनत रसातल उत्तर आये दिग्गज लखे महाना ।
भद्र नाम तन सेत विराजत मनहुँ खड़ो हिमवाना ॥
दै परदक्षिण करि प्रणाम तेहि धरी धरणि शिर देखो ।
साठि सहस्र सगर नृप नंदन तहाँ तुरङ्ग न पेखो ॥
लागे खनन कोप करि पुहुमी पूरुब दिशा पधारे ।

गये जबहिं ईशान दिशा महँ सिगरे सगर कुमारे ॥
महा भीमकाया जिनकेरी अति उदंड बल बाहू।
खोदत महि तुरंग नहिं देखत भरे दीह उर दाहू ॥
सगर कुमार जाय कछु आगे कीन्हे कोप महाना।
लखे सनातन वासुदेव अवतार कपिल भगवाना ॥
दोहा–कछुक दूर महँ कपिल के, देखे चरत तुरंग।
रघुनंदन सब सगर सुत, ह्वै गये आनँद दंग ॥

छन्द चौबोला।

करिकै कोप कराल लाल दृग आपुस महँ अस गाये।
धावहु धावहु धरहु धरहु अब घोर चोर हम पाये ॥
अस कहि कोउ कर किये कुदारी कोउ कर में हल धारी।
कोउ धाये पाषाण पाणि गहि कोउ बहु वृक्ष उखारी
धाये सगर कुमार कोप करि साठि हजार अपारा।
ठाढ़ो रहु ठाढ़ो रहु भाषत बचिहै नाहिं गवाँरा ॥
हमरे पिता यज्ञ को बाजी ल्याये चोर चोराई।
अब नहिं बचत मीचु नगचानी पहुँचि गये हम आई ॥
तेरे हेत खोदि महि डारे जीव अनेक सँहारे।
भाग्य विवश पाये अब तोको लहब मोद तोहिं मारे ॥
अस कहि महा कराल काल सम सगर कुमार अपारा।
आये कपिलदेव सन्मुख ते कहत मारु धरु मारा ॥
कपिल कुमारन को आवत गुनि नेसुक नैन उघारा।
करिकै कोप कराल काल सम पुनि कीन्ह्यो हुंकारा ॥
कपिलदेव के करत तहाँ यक बार नेकु हुंकारा।
साठि हजारहु सगर कुमार भये तुरतै जरि छारा ॥
जरिगे सकल सगर के नंदन लाग्यो भसम पहारा।

रघुनंदन करिये नहिं अचरज कपिल कृष्ण अवतारा ॥
परि पावकमहँ ज्यों पतंग गण जरिगे करि अपकारा ।
जस को तस बैठो समाधि करि कपिल कछू न बिचारा ॥
जो राउर दासन को रघुवर करत कछुक अपचारा ।
ताकी होत दशा यहि विधि की वेद पुराण पुकारा ॥
दोहा–बिते बहुत दिन सुतन को, गये सगर जिय जानि ।
अंशुमान निज नाति सों, बोल्यो वचन बखानि ॥

छंद चौबोला ।

शूर शिरोमणि शास्त्र विलासी अपने तेज प्रकासी ।
अंशुमान तुम नाति हमारे शुद्ध बुद्ध बलरासी ॥
गये तुम्हारे काकन को अब बीते वर्ष अनेका ।
अबलों पायो खोज कतहुँ नहिं अवनी खनी कितेका ॥
पायो तुरँग किधौं नहिं पायो ताते सुनु न पतारे ।
खोजन साठि हजारन काकन बनिहै गये तिहारे ॥
बसत बली बहु जीव धरातल ताते लै धनु बाना ।
गमनहु सहित युद्ध सामग्री तुम बल बुद्धि निधाना ॥
वंदन लायक वंदन करिकै युध लायक युध ठानी ।
सिद्ध अर्थ करि लौटहु नाती मम मख पारग ज्ञानी ॥
सुनि आजा राजा को शासन अंशुमान बलवाना ।
चल्यो धनुप शर लिहे विक्रमी कटि में कसे कृपाना ॥
निज काकन को खनित धरातल तेहि पथ कियो पयाना ।
सगर भूप शासन शिर धरिकै अंशुमान मति माना ॥
दानव दैत्य पिशाच राक्षसहु सिद्ध विहंग भुजंगा ।
सादर लहत प्रशंसा तिनसों देख्यो दिशा मतंगा ॥
करि प्रणाम परदक्षिण दै तेहि सादर पूछि भलाई ।

निज काकन के बाजि हरन की पूछी खबरि तुराई ॥
अंशुमान के वचन सुनत दिग सिंधुर वचन उचारा ।
लौटहु गे लहि सिद्ध बाजि युत हे असमंज कुमारा ॥
दोहा–दिशानाग के सुनि वचन, अंशुमान हरषाय ।
चल्यो यथा क्रम दिग्गजन, मिल्यो सुखित सिरनाय ॥
सकल दिशा गज कहत भे, अंशुमान तुम जाहु ।
पैहौ वाजी अर्थ सिधि, रही न उर में दाहु ॥

छन्द चौबोला ।

अंशुमान सुनि दिग्गज वाणी चल्यो चपल बलवारा ।
पहुँच्यो जाय इशान दिशा में देख्यो राख पहारा ॥
ताके निकट चरत बाजी तहँ विस्मित भयो अपारा ।
जानि भस्म अपने काकन की आरत कियो पुकारा ॥
इनकी प्रेत क्रिया किमि कीजे किमि दीजे जल दाना ।
अंशुमान अति शोकित दुःखित भयो न परै अनुमाना ॥
सलिल देन को चहत तेही क्षण सलिलाशयनहिं देखै ।
चकित व्यथित अकुलाय चहूं कित चख फेरत वन पेखै ॥
एक बार देखत अति दूरी देख्यो विहँग अधीशा ।
निज काकन के मातुल को तहँ तुरत नवायो शीशा ॥
अंशुमान को गरुड़ कह्यो तब करहु न शोक कुमारा ।
जारयो साठिहजार कुमारन करिकै कपिल हुँकारा ॥
तुव काकन को वध जग संमत भयो करो न खभारे ।
साधारण जल देन योग्य नहिं काका कुवँर तिहारे ॥
जेठी सुता हिमाचल केरी इतै ल्याय द्रुत दीजै ।
त्रिभुवन पावन गंगा जल में काकन क्रिया करीजै ॥
तुव काकन को भसम राशि पर परी गंग जब धारा ।

जैहैं सकल स्वर्ग लोकहि तब तरिहैं साठि हजारा ॥
बाजी लै तुम जाहु अवधपुर यज्ञ समापति कीजै।
सगर पितामह सों हेवाल सब काकन को कहि दीजै ॥
दोहा—पन्नगारिं के वचन सुनि, अंशुमान सुख पाय।
लै बाजी आयो बहुरि, कह्यो सगर सों जाय ॥
अंशुमान मुख सुनत नृप, गरुड़ बचन दुख पाय।
कियो समापति बाजि मख, गयो अवध अकुलाय ॥
केहि बिधि आवै गंग महि, तरै मोर कुमार।
लाग्यो करन बिचार बहु, पावत शोक न पार ॥
करत बिचार न पार लहि हायन तीस हजार।
सगर भूप करि राज महि, गमन्यो स्वर्ग अगार ॥

छंद चौबोला।

सगर भूप जब गयो देवपुर काल धर्म कहँ पाई।
अंशुमान को भूप कियो तब प्रकृत प्रजा समुदाई ॥
अंशुमान् तहँ महा धर्मरत पाल्यो प्रजन महीपा।
ताके भयो सुनहु रघुनंदन भूपति नाम दिलीपा ॥
सो दिलीप शिर राज भार दै तप हित गो हिमवाना।
गंगा ल्यावन हेत भूप सो अति दारुण तप ठाना ॥
बत्तिस सहस वर्ष हिम गिरि में अंशुमान तप कीनो।
कियो तपोवन में तन त्यागन गयो स्वर्ग सुख भीनो ॥
भयो दिलीप महीप मही में सुनि आजन मुनि जारा।
कौन भांति ते लहैं सगर सुत बिमल गंग जल धारा ॥
कैसे धरणी सुरधुनि आवै किमि होवै जल दाना।
तरैं सगरसुत साठि हजारहु यह उर शोक महाना ॥
निश्चय नाहिं पायो दिलीप सुत कीन्ह्यो बहुत बिचारा।

भयो भगीरथ तासु कुमार धर्म धुर धारण वारा॥
कियो दिलीप यज्ञ जगती में सविध अनेकन राजा।
तीस हजार वर्ष महि पाल्यो संयुत प्रजा समाजा॥
करि कै राज दिलीप महीपति गंगा गवन खभारा।
व्याधि पाय तन तज्यो काल वश गवन्यो देव अगारा॥
इंद्रलोक जब गो दिलीपनृप अपने कर्म प्रभाऊ।
भयो भगीरथ भूपति धार्मिक सो कोशलपुरराऊ॥

दोहा–सुनहु राम राजर्षि सो, भूप भगीरथ नाम।
पायो नहीं कुमार सो, यतन कियो सुत काम॥

छन्द चौबोला।

कपिलदेव कृत जारन सुनिकै सगर कुमारन काहीं।
गंगधार बिन साठि हजारन अहै उधारन नाहीं॥
सगर अंशुमानहु दिलीपनृप कीन्ह्यो तप यहि हेतू।
भूप भगीरथ सुनि वृत्तांत नितांत कियो तप नेतू॥
बोलि सचिव गण सौंपि राजि तब गयो हिमाचल राजा।
तहँ गोकरण नाम यक तीरथ सुखित बस्यो रघुराजा॥
भूप भगीरथ किय अरम्भ तप करि निज ऊरध बाहू।
तापत पञ्च अग्नि इन्द्रीजित रोजहि सहित उछाहू॥
एक मास महँ यक वासर तहँ भूपति करत अहारा।
यहि विधि करत घोर तप ताको वीते वर्ष हजारा॥
मिलै मोहिं गंगा की धारा तारौं सगर कुमारा।
भूप भगीरथ के मन में यह दूसर नाहिं विचारा॥
की गंगा को आनि स्वर्ग ते सगर कुमारन तारौं।
की तप करि गोकरण क्षेत्र में यह शरीर को जारौं॥
तीसर बात लिखी नहिं ब्रह्मा यह संकल्पहि मोरा।

अस विचार करि भूप भगीरथ किय तप परम कठोरा॥
भूप भगीरथ को तप लखि कै भो प्रसन्न करतारा।
देव वृन्द लै संग चारिमुख नृपति निकट पगु धारा॥
अति संतापित करत महा तप भूप भगीरथ काहीं।
बोल्यो वचन विरंचि सुधा सम अति प्रसन्न मन माहीं॥

दोहा—तेरे तप ते भूप मैं, तोपित हौं वड़ भाग।
जौन कामना होय मन, तौन आज वर माँग॥

छन्द चौबोला।

लखि स्वयंभु को भूप भगीरथ गुनि निज भुवि वड़ भागा।
करि प्रणाम युग पाणि जोरि कै मन वांछित वर माँगा॥
मोपर होहु प्रसन्न पितामह तौ ऐसो वर देहू।
सगर सुवन सुरसरि जल पावैं मिटै मोर संदेहू॥
जो तप को फल देहु पितामह तौ प्रपितामह मेरे।
मो कर पाय गंग जल सिगरे सुरपुर करहिं बसेरे॥
सगर कुमारन साठि हजारन कपिलदेव मुनि जारा।
मेरे संग गंग की धारा बोरै भसम पहारा॥
संतति देहु मोहिं त्रिभुवन पति नहिं कुल होय दुखारी
यह उपकार करौ रविकुल को ऐसी विनय हमारी॥
भूप भगीरथ को सुनि जाचन ह्वै प्रमुदित करतारा।
बोल्यो महा मनोहर वाणी सिगरे देव मँझारा॥
सुनहु महारथ भूप भगीरथ महाराज मम बैना।
सिद्ध मनोरथ होय तिहारो मृषा वचन मम है ना॥
हे इक्ष्वाकु भूप कुल वर्द्धन तप कीन्ह्यो अति घोरा।
होई सकल सुलभ चितचाहो सुनहु वचन कछु मोरा॥
सुता हिमाचल की जेठी यह त्रिभुवन पावनि गंगा।

ताकी धार धरन को समरथ है यक दहन अनङ्गा ॥
गंग प्रवाह पतन पुहुमी यह सकिहै नाहिं सँभारी ।
अति वर जोर धार सुरसरि की बिना शंभु को धारी ॥

दोहा—ताते करहु उपाय नृप, होहिं प्रसन्न पुरारि ।
अस कहि देवन बृन्दयुत, गये धाम मुखचारि ॥
सत्यलोक महँ जाय बिधि, गंगे कह्यो हँकारि ।
करहु धरणि संचार तुम, सगर कुमारन तारि ॥
ब्रह्मा जब वरदान दै, गये आपने धाम ।
हर प्रसन्न हित तप कठिन, कियो भूप तेहि ठाम ॥

छंद चौबौला ।

भूप भगीरथ एक वर्षलगि एक अंगुठा के भारा ।
ठाढ़ो रह्यो धरणि महँ निहचल मानस प्रणव उचारा ॥
पूरण भयो जबै संवत्सर शंकर औघड़ दानी ।
सर्व लोक वंदित गिरिजापति पशुपति परम विज्ञानी ॥
आये भूप भगीरथ आश्रम शंकर वृषभ सवारा ।
देखि भगीरथ गिरयो चरण में अस्तुति कियो अपारा ॥
जैशंकर जै जै गिरिजापति जै जै औघड़ दानी ।
जै महेश मुनि मानस वासी जै जै रमन भवानी ॥
जै कैलास वास कृतवास निराश विपै विज्ञानी ।
जै करुणाकर जन तारण हर महिमा वेद बखानी ॥
जै जै शंभु दंभु दुख भंजन रंजन संत सदाहीं ।
जै जै आशुतोप संतापित रोपित कबहूँ नाहीं ॥
जै जै दीनदयाल काल सब कालहु के तुम काला ।
जै गजचरमांबर त्रिशालधर जै कपाल उर माला ॥
जै काशीपति जै त्रिभुवनपति जै त्र्यंबक भगवाना ।

जै यदुपति गुरु जै यदुपति प्रिय जै सब गुणनि निधाना ॥
जै जै दक्ष यज्ञ विध्वंसन जै जै त्रिपुर विनासी।
जै गणेश षटवदन पिता प्रभु जै शशिभाल प्रकासी ॥
जै धुरजटी जटन में धारहु शंभु सुरधुनी धारा।
शरणागत हम अहैं रावरे यह अभिलाष हमारा ॥

दोहा–भूप भगीरथ के वचन, सुनि शंकर हरषाय।
कह्यो दिलीप कुमार सों गिरा अमोरस प्याय ॥
हम प्रसन्न तुमपर अहैं, सुनहु भगीरथ भूप।
धारण करिहैं सुर धुनी, धारा धरणि अनूप ॥
अस कहि शंकर नृपति सों गवन कियो कैलास।
बैठे जटा बगारि शिर गंग धरण की आस ॥
उत स्वयंभु शासन लहत, गङ्ग वेगि करि घोर।
चली चपल सुरलोक ते, धसी धरणि की ओर ॥

कवित्त।

रघुराज भूपतिभगीरथकेप्रण हेत भद्रहेतभवकेअभद्रकलिकाल के।
स्वर्गतेगिरिहैधाराहारावलीमुक्तकैसीशोभाकीअगारागनमंडितमरालके।
शरद घनावलीसीगगनगलीमेंभलीचलीआवैचपलउधारनउताल के।
पुहुमी परनलागेपापनपरावनेत्योंपापिनकेआयेअबवखतनिहालके ॥

दोहा–गंग दुरासद वेग करि, किय विचार तेहि काल।
शंकर को निज धार धरि, करहुँ प्रवेश पताल ॥
अति दुरधर्ष सहर्ष तहँ, अति उत्कर्षहि धार।
गिरी गंग अति कोप करि शंकर जटनि मँझार ॥

कवित्त।

गंगधारभारभूमिसहिहैनएकोवार जाइहैरसातलमँझारपाय झोकको।
माचिहैहैहाहाकारप्राणिनसँहारह्वैहै ह्वैहैकरतारजूअगारएक शोकको॥
रघुराजऐसोकरिविमलविचारशंभुकृपापारावारदीन्ह्योमंगलत्रिलोकको

कढ़ी बिंदु नामा सरै से विख्याता । तहाँ ह्वै गई गंग की धार साता॥
चलीं तीनि पूर्वै शुभै मालिनीते । कहै ह्लादिनी पावनी नालिनीते॥
गई तीनि धारा जवै पूर्वओरा । चलीं तीनि धारा प्रतीचीसजोरा॥
सतद्रू सुतोता तथा सिंधु नामा । हरै लोक के पाप को पुण्यधामा॥
रह्यै सातईं धार जो गंग केरी । चली भूप के संग आनंद घेरी ॥
भगीरत्थ हू स्यन्दनै ह्वै सवारा । कहै कौन आनंद ताको अपारा॥
महा जोर सो सुर्धुनी धार आई । भगीरत्थ के रत्थ के सत्थ धाई ॥
गिरी व्योमते शंभु केशीशमाहीं । जटा जूट में सो भ्रमी थोर नाहीं॥
निकारचो जवै गङ्ग को सो पुरारी। तवै सात धारा भई भूमि चारी ॥

दोहा—चल्यो भगीरथ को सुरथ, जेहि पथ आगे धाय ।
तेहि पाछे भागीरथी, चली महारव छाय ॥

छंद चौबोला ।

गिरी गगनते गंग शंभुशिर फेरि धरणि महँ आई ।
बगरि गयो जल चहुँकित जगती घर्घर धुनि क्षिति छाई ॥
मच्छ कच्छ शिशुमार ग्राह बहु देते उछलि हिलोरा ।
गिरे सकल जलधार संग महँ सोहत धरणि करोरा ॥
हल्ला परचो त्रिलोक महल्ला गिरी गंग की धारा ।
धाये सकल विलोकत कौतुक सुर नर सिद्ध अपारा ॥
तहँ देवर्षि महर्षि असुर सुर विद्याधर गंधर्वा ।
चारण यक्ष राक्षसहु आदिक त्यों महि मानव सर्वा ॥
गिरत गगन ते गंग धार को सकल विलोकन आये ।
चढ़े विमानन हय गै आनन गगन पंथ छवि छाये ॥
गिरी धरणि महँ जहँ सुर धुनि की धारा अघ की आरा ।
लागे ठट्ट विमानन के तहँ सोहत सुर सुरदारा ॥
गंग पतन अवनी महँ अद्भुत अवलोकन के आसी ।

देखि देखि सुर सकल बखानत सुरधुनि धार सुधासी ॥
जस जस गंगा गिरत गगन ते तेहि धारा के साथै ।
आवत चले विमान करारिन देव नवाये माथैं ॥
चमकत अंबर अमर आभरण मनु रवि उये अनेका ।
तरल तरंग गंग की राजहिं उछलत जल लगि ठेका ॥
महा मीन शिशुमार ग्राह तहँ उठैं तरंगन माहीं ।
अति चञ्चल छलकत जल झलकत चपला सम चमकाहिं

दोहा—मनहुँ हजारन दामिनी, गगन पंथ दरशाहिं ।
प्रगटी तहँ सुखमा अमित, कबहुँ लख्यो कोउ नाहिं ॥

चौपाई ।

विमल सेत जल उछलत आवे । धारन रूप हजारन भावे ॥
मिलिमिलि धार बहुरि बिलगाहीं । चारुचलत चमकत चहुँघाहीं ॥
मनहु शरद जलधर नभ धावैं । माल मराल विशाल सोहावैं ॥
चक्रवाक सारस करि शोरा । गङ्ग संग नभ उड़त करोरा ॥
कहुं द्रुततर गमनत जल धारा । कहूं जाति पुनि कुटिल अपारा ॥
कहुँ कहुँ करति महा विस्तारा । कहूं सूध धावति जव धारा ॥
क्रम क्रम जाति कहूँ पुनि गङ्गा । करति अपार करारन भङ्गा ॥
मन्द मन्द कहुँ चलति स्वछंदा । नीच होति कहुँ होति बलंदा ॥
कहुँ सुरसरि अति सरल सिधावति। कहुँ पुनि जोर शोर करिधावति
परम भयावन भवँर महाना । उछलत तुंग तरङ्गनि नाना ॥
कहूँ भिरहिं धारनि सो धारा । जल उतङ्ग मनु लसत पहारा ॥
पर्वत फोरि कहूं कढि जाती । दरशत विमल नीर बहु भाँती ॥
प्रथम उतङ्ग गङ्ग की धारा । चली गगन पथ तुङ्ग अपारा ॥
पुनि सुर धुनी धार ढरकानी । भरतखंड सागर समुहानी ॥
गिरी शंभु शिर पुनि महि आई । भय सुरधुनी धार चकराई ॥

पापिन पापन पर्‌यो परावन। पर पद पाथ पोषि पर पावन ॥
तहँ महर्षि गन्धर्व अपारा । दनुज मनुज सुर असुर कतारा ॥
जीव सकल वसुधातल वासी । रहे और जे नाक निवासी ॥
हरि पद जल परसत शिव अङ्गा । आयो धरणि जानि जल गङ्गा ॥
मज्जन कीन्हे सकल सप्रीता । कोटि जन्म अघ भये पुनीता ॥

दोहा--शापी पापी जगत के, सन्तापी जन वृन्द ।
ते परसत सुरसरि सलिल, भे हत कलुप अमंद ॥
शाप पाप वश जे विबुध, किये धरातल वास ।
ते सुरधुनी नहाइ कै, कीन्हे नाक निवास ॥

चौपाई।

भयो लोक सब मुदित महाना।सुरसरि तोय तेज पसराना ॥
विविध विहङ्ग पतङ्ग कुरंगा । गङ्ग नहाइ लहे सुर संगा ॥
सुरसरि तोय तेज उजियारा। रह्यो न लोकन अघ अँधियारा ॥
कौतुक निरखि भगीरथ राजा। मान्यो सिद्धि सकल निज काजा ॥
चढ़ो दिव्य स्यन्दन नृप नंदन। चल्यो गंग संगहि कुल चंदन ॥
भयो गंग धारा के आगे। चल्यो भूप अतिशय अनुरागे ॥
भूप भगीरथ रथ के पाछे। गङ्ग तोय धायो अति आछे ॥
हर्षि महर्षि सहित सुर वृन्दा। राक्षस दानव दैत्य सुछन्दा ॥
तहँ गन्धर्व सर्व गण यक्षा। किन्नर चारण भुजग सपक्षा ॥
सुर सुंदरी करत कल गाना। किये भगीरथ संग पयाना ॥

दोहा-मच्छ मकर कूरम उरग, ग्राह गोह शिशुमार ।
विछलत पछिलत उच्छलत, धावत सुरधुनि धार ॥

कवित्त ।

ढाहतकरारे त्योंकरतजरतारेशोर बोरतवगारेवेशुमारे चली त्रिपथी॥
पुण्य कोपतारेपापपुंजनकोनारेसोहैदेवन[illegible]

भनैरघुराज देव लोकन केद्वारेखोले अधमअपारेतारेपापके महारथी
वड़भागीभूपतिभगीरथकेपाछेलागीजातज्योंभगीरथत्योंजातिहैंभगीरथी

छन्द चौवोला ।

आवत आवत धार गंग की जह्नु आश्रमहि आई ।
करत रहे तहँ यज्ञ जह्नु नृप सिगरो साजु सजाई ॥
जह्नु यज्ञ सामग्री सिगरी वोरयो धारन गंगा ।
जानि राजऋषि गंग गर्व अति कीन्हो कोप अभंगा ॥
जह्नु नरेश तपोवल कीन्ह्यो गंग सलिल सब पाना ।
यह अद्भुत लखि करन लगे सुर हाहाकार महाना ॥
ठगि सो रह्यो भगीरथ भूपति जान्यो सरवसु हानी ।
लाग्यो अस्तुति करन जह्नु की मन महँ मानि गलानी ॥
देव यक्ष गन्धर्व आदिसव करि अस्तुति शिर नाये ।
निज दीनता देखाय विविध विधि राजऋषीश मनाये ॥
तज्यो जह्नु गंगा कानन सो अपनी सुता वनाई ।
तवते तीनिहुँ लोक सुरसरी नाम जाह्नवी पाई ॥
पुनि सुरसरी प्रचंड वेग सो चली सिंधु की ओरा ।
मिली कलिंदी और गण्डकी सरयु सोन वरजोरा ॥
लगी भगीरथ रथ के पाछे भागीरथि वड़भागी ।
पहुँची जहाँ सगर कुँवरन की रही राख वुझि आगी ॥
भूधर रह्यो भसम को भारी परी गंग की धारा ।
रंचक रही न राख लखन को माच्यो जैजैकारा ॥
सगर कुमारन खाख धार धरि गंगा सिंधु समानी ।
गई रसातल फोरि धरातल चक्रपाणि पद पानी ॥

दोहा-गंगाजल परसत भसम, नृप सुत साठि हजार।
देव महल्ला में घुसे, हल्ला करि यक वार॥
भये देव कलमष विगत, नन्दन विपिन विहार।
करत रहत नित प्रति अछै, पूरण पुण्य अगार॥
भूप भगीरथ भाँति यहि, तप करि ल्यायो गंग।
सगर सुवन तारयो तुरत, पायो सुयश अभंग॥

छंद चौबोला।

यहि विधि लै सुर नदी भगीरथ सगर कुमारन तारा।
आय कह्यो तब अति प्रसन्न ह्वै सकल लोक करतारा॥
सुनहुं भगीरथ तुव करतारित सिगरे सगर कुमारा।
बसे देव सम दिवि लोकन में सुंदर साठि हजारा॥
सुनहुं भगीरथ जबलगि जलनिधि जलरैहै जगमाहीं।
तबलों सुर सम सगर कुमार स्वर्ग बसिहैं क्षति नाहीं॥
यह गंगा जेठी दुहिता तव ह्वै है पुण्य प्रचारा।
तुव कृत भागीरथी नाम अस करिहैं मनुज उचारा॥
गङ्गा और त्रिपथगा दिव्या भागीरथी ललामा॥
तीनिहुँ लोकन में प्रवाह तेहि हेत त्रिपथगा नामा॥
देहु तिलांजुलि पितामहन को गंगा जल महराजा।
पूरण करी प्रतिज्ञा अपनी भये भूप कृत काजा॥
पूर्व पुरुष जे रहे तिहारे धरमात्मा यश वारे।
तिनके पूर भये न मनोरथ जैसे भये तिहारे॥
अंशुमान महराज कियो तप जिन सम भयो न दूजो।
ल्याय सके नहिं गंग जगत में नाहिं मनोरथ पूजो॥
पुनि राजर्षि महर्षि तेज जिन ममसम तप जिन केरो॥
क्षत्र धर्म महँ एक महीप दिलीप पिता रह तेरो॥

दोहा–तीन दिलीप महीपहूं, सुरसरि आनन काज।
करत करत तप तन तजे, भये न अस कृतकाज॥

छन्द चौबोला।

जस तुम उतरे प्रण पयोधि नृप करि तप कठिन अपारा।
तुम्हरे यश ते भयो भगीरथ आज सेत संसारा॥
जो तुम कियो गंग अवतारन अधम उधारन राजा।
तेहि कारन वैकुंठ अगारन वसिहौ सहित समाजा॥
तुमहु करहु मज्जन सुरसरि महँ सत्य ब्रह्मद्रव नीरा।
भूप भगीरथ सकल पुण्य फल रूप अहो मति धीरा॥
करिकै पूरुव पुरुपन को अव तर्प्पण श्राद्ध विधाना।
जाहु अवधको हमहुँ जाहिं घर लहौ भूप कल्याना॥
अस कहि भूप भगीरथ ते विधि गये आपने धामा।
तरपण कियो भगीरथ विधि युत सगर सुतन कृत कामा॥
दै जल सविधि श्राद्धकरि भूपति अवध नगर को आयो।
सुयश भगीरथको परिपूरण तीनिहुँ लोकन छायो॥
पूर मनोरथ प्रजा प्रमोदित कियो राज्य वहु काला।
संशय शोक ताप त्रय निरगत भयो प्रताप विशाला॥
रघुकुल चंदन हे रघुनंदन यह गंगा इतिहासा।
मैं वरण्यों विस्तार सहित सव तुव पुरुपन यश खासा॥
संध्या काल लाल अव आयो पूछौ अव कछु नाहीं।
संध्या करन चलहु गंगातट मुनिन संग सुखमाहीं॥
धन प्रद यश प्रद आयुप को प्रद सुखप्रद स्वर्ग प्रदाता।
यह गंगा इतिहास अपूरव मैं वरण्यों अवदाता॥

दोहा–जो विप्रन अरु क्षत्रियन, वैश्य शूद्रन काहि।
गंगा चरित सुनावतो, अथवा सुनहिं सदाहि॥

ताके उपर प्रसन्न अति, देव पितर सब होत।
सहजहि कारज सिद्धि सब, दश दिशि सुयश उदोत॥
यह गंगा अवतरन महि, श्रद्धा करि जो कोय।
सुनत तासु मन कामना सकल सिद्धि द्रुत होय॥
यह गंगा गाथा सुनत सिगरे पाप परात।
बढ़त आयुषा जगत में कीरति अति अवदात॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरे गंगावतरणो नाम त्रयोदश प्रबंधः॥ १३॥

दोहा—गंग कथा कौशिक कथित, सुनत लषण अरु राम।
अतिशै विसमित चित्त ह्वै बोले वचन ललाम॥

छन्द चौबोला।

यह गंगा अवतरन पुण्य प्रद अति अद्भुत मुनिराई।
मोहिं सुनायो जेहि विधि सुरसरि मिली सिंधु महँ जाई॥
ममपूरुब पुरिखन की गाथा बिच बिच सकल सुनायो।
आजु नाथ तुम्हरे मुख सुनिकै अति आनँद हम पायो॥
अस कहि राम लषण मुनि संयुत सन्ध्यावंदन कीन्हे।
मुनि शासन लहि तृण शय्या महँ सुखद शयन मन दीन्हे
कौशिक कथित देवसरि वरणन मन महँ करत विचारा।
युगलबंधु सुखशयन किये तहँ उठे जानि भिनसारा॥
प्रात कृत्य करिकै रघुनंदन सहित लषण लघु भाई।
विश्वामित्र समीप आइकै कहे चरण शिर नाई॥
नाथ व्यतीत भई रजनी सब क्षण समान हम काहीं।
चिन्तत गंग चरित्र भनित तुव चुक्यो न सो मन माहीं॥
तुमहि जानि उतरन के लालो मुनिन उतरनी तरनी।
लाइ सुख भरनी मन हरनी गंगपार की करनी॥

दोहा–तीन दिलीप महीपहूं, सुरसरि आनन काज।
करत करत तप तन तजे, भये न अस कृतकाज॥

छन्द चौबोला।

जस तुम उतरे प्रण पयोधि नृप करि तप कठिन अपारा।
तुम्हरे यश ते भयो भगीरथ आज सेत संसारा॥
जो तुम कियो गंग अवतारन अधम उधारन राजा।
तेहि कारन वैकुंठ अगारन बसिहौ सहित समाजा॥
तुमहु करहु मज्जन सुरसरि महँ सत्य ब्रह्मद्रव नीरा।
भूप भगीरथ सकल पुण्य फल रूप अहौ मति धीरा॥
करिके पूरुब पुरुपन को अब तर्प्पण श्राद्ध विधाना।
जाहु अवधको हमहुँ जाहिं घर लहौ भूप कल्याना॥
अस कहि भूप भगीरथ ते विधि गये आपने धामा।
तरपण कियो भगीरथ विधि युत सगर सुतन कृत कामा॥
दै जल सविधि श्राद्धकरि भूपति अवध नगर को आयो।
सुयश भगीरथको परिपूरण तीनिहुँ लोकन छायो॥
पूर मनोरथ प्रजा प्रमोदित कियो राज्य बहु काला।
संशय शोक ताप त्रय निरगत भयो प्रताप विशाला॥
रघुकुल चंदन हे रघुनंदन यह गंगा इतिहासा।
मैं वरण्यों विस्तार सहित सब तुव पुरुपन
संध्या काल लाल अब आयो पूछौ अब कछु
संध्या करन चलहु गंगातट मुनिन संग सु
धन प्रद यश प्रद आयुप को प्रद सुखप्रद
यह गंगा इतिहास अपूरव मैं वरण्यों अब

दोहा–जो विप्रन अरु क्षत्रियन, वैश्य शूद्रन
गंगा चरित सुनावतो, अथवा सुनि

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महा विप हालाहल जेहि नामा।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा॥
जरत सुरासुर जानि जगत को गे कम्पित कैलासा।
त्राहि त्राहि शङ्कर संकटहर अब रक्षहु कृतिवासा॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शङ्कर शरण नेवाजी।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी॥
करत सुरासुर के अस्तुति तहँ प्रगट भये भगवाना।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना॥
रुद्र शूलधर सो भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विप जारत जग समुदाई॥

दोहा– तुम पूर्वज सब सुरन के, कढ्यो पूर्व विप घोर।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर॥
असकहि नारायण भये, तेहि थल अन्तरधान।
हरि को शासन हर सुनत, कियो मनहि अनुमान॥
देवन को दुख देखि शिव, प्रभु शासन शिर धारि।
हालाहल विप अमृत सम, पान कियो त्रिपुरारि॥
देवन को तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास॥

छंद चौबोला।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुंच्यो जाइ पताला।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला॥
तुमहीं हो सब प्राणिन के गति सुरगति नाथ विशेशा।
मंदर को उधार कीजे अब रक्षहु हमहिं रमेशा॥
सुनि देवन की आरत वाणी प्रगटे शारँगपानी।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल बलखानी॥

राजकुमार वचन सुनिमुनिवर मुनिन सहित चढ़ि नाऊ।
उतरे गङ्ग सङ्ग दशरथ सुत त्रिभुवन विदित प्रभाऊ ॥
उत्तरकूल जाय मुनि नायक सब ऋषिगन सतकारे ।
कियो निवास राम लक्ष्मण युत सुंदर गङ्ग किनारे ॥
महा मनोहर पुरी सुहावनि जाको नाम विशाला ।
देखि सकल मुनि लगे सराहन पाय अनंद विशाला ॥

दोहा—राम लषण युत गाधिसुत, चले नगर की ओर ।
अमरावती समान छवि रमणीयता अथोर ॥
पुरी मनोहर पेखि प्रभु, जोरि सुपंकज पानि ।
कौशिक मुनि सर्वज्ञ सों, कही वाणि सुखदानि ॥
कौन राज को वंश यह, बसत कौन अब राज ।
पुरी विशाला किमि भई, कहौ सकल मुनिराज ॥
सुनि दशरथ नन्दन बचन, विश्वामित्र प्रवीन ।
पुरी विशाला की कथा, कहन लगे प्राचीन ॥

छन्द चौबोला ।

सुनहु राम वासव की गाथा भयो जौन यह देशा ।
पूरब दिति अरु अदिति सुवन सुर असुर भये बल बेशा ॥
पुरुषसिंह तहँ बैठि सुरासुर दोऊ किये विचारा ।
केहि विधि अजर अमर होवैं हम रहै न रोग अपारा ॥
चिन्तत सकल सुरासुर के तहँ एक बुद्धि दृढ़ कीन्हे ।
क्षीर सिंधु मथि अमी निकासैं सकल यही मन दीन्हे ॥
मथन क्षीर सागर निश्चय करि रजु करि वासुकि नागा ॥
मंदरगिरि को विरचि मथानी मथन लगे बड़भागा ॥
बीते मथत हजारन हायन दव्यो वासुकी नागा ।
वमत महा विष बहु मुख दंसत सिलन कोप अति जागा ॥

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महा विष हालाहल जेहि नामा ।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा ॥
जरत सुरासुर जानि जगत को गे कम्पित कैलासा ।
त्राहि त्राहि शङ्कर संकटहर अब रक्षहु कृतिवासा ॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शङ्कर शरण नेवाजी ।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी ॥
करत सुरासुर के अस्तुति तहँ प्रगट भये भगवाना ।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना ॥
रुद्र शूलधर सो भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई ।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विष जारत जग समुदाई ॥

दोहा– तुम पूर्वज सब सुरन के, कढ्यो पूर्व विष घोर ।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर ॥
असकहि नारायण भये, तेहि थल अन्तरधान ।
हरि को शासन हर सुनत, कियो मनहि अनुमान ॥
देवन को दुख देखि शिव, प्रभु शासन शिर धारि ।
हालाहल विष अमृत सम, पान कियो त्रिपुरारि ॥
देवन को तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास ।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास ॥

छंद चौबोला ।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुंच्यो जाइ पताला ।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला ॥
तुमहीं हो सब प्राणिन के गति सुरगति नाथ विशेशा ।
मंदर को उधार कीजै अब रक्षहु हमहिं रमेशा ॥
सुनि देवन की आरत वाणी प्रगटे शारँगपानी ।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल चलखानी ॥

राजकुमार वचन सुनिमुनिवर मुनिन सहित चढ़ि नाऊ।
उतरे गङ्ग सङ्ग दशरथ सुत त्रिभुवन विदित प्रभाऊ॥
उत्तरकूल जाय मुनि नायक सव ऋषिगन सतकारे।
कियो निवास राम लक्ष्मण युत सुंदर गङ्ग किनारे॥
महा मनोहर पुरी सुहावनि जाको नाम विशाला।
देखि सकल मुनि लगे सराहन पाय अनंद विशाला॥

दोहा—राम लषण युत गाधिसुत, चले नगर की ओर।
अमरावती समान छवि रमणीयता अथोर॥
पुरी मनोहर पेखि प्रभु, जोरि सुपंकज पानि।
कौशिक मुनि सर्वज्ञ सों, कही वाणि सुखदानि॥
कौन राज को वंश यह, वसत कौन अव राज।
पुरी विशाला किमि भई, कहौ सकल मुनिराज॥
सुनि दशरथ नन्दन वचन, विश्वामित्र प्रवीन।
पुरी विशाला की कथा, कहन लगे प्राचीन॥

छन्द चौबोला।

सुनहु राम वासव की गाथा भयो जौन यह देशा।
पूरब दिति अरु अदिति सुवन सुर असुर भये बल वेशा॥
पुरुषसिंह तहँ बैठि सुरासुर दोऊ किये विचारा।
केहि विधि अजर अमर होवैं हम रहै न रोग अपारा॥
चिन्तत सकल सुरासुर के तहँ एक बुद्धि दृढ़ कीन्हे।
क्षीर सिंधु मथि अमी निकासैं सकल यही मन दीन्हे॥
मथन क्षीर सागर निश्चय करि रजु करि वासुकि नागा।
मंदरगिरि को विरचि मथानी मथन लगे बड़भागा॥
बीते मथत हजारन हायन दन्यो वासुकी नागा।
वमत महा विष बहु मुख दंसत सिलन कोप अति जागा॥

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महा विष हालाहल जेहि नामा।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा॥
जरत सुरासुर जानि जगत को गे कम्पित कैलासा।
त्राहि त्राहि शङ्कर संकटहर अब रक्षहु कृतिवासा॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शङ्कर शरण नेवाजी।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी॥
करत सुरासुर के अस्तुति तहँ प्रगट भये भगवाना।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना॥
रुद्र शूलधर सो भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विष जारत जग समुदाई॥

दोहा– तुम पूर्वज सब सुरन के, कढ्यो पूर्व विष घोर।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर॥
असकहि नारायण भये, तेहि थल अन्तरधान।
हरि को शासन हर सुनत, कियो मनहि अनुमान॥
देवन को दुख देखि शिव, प्रभु शासन शिर धारि।
हालाहल विष अमृत सम, पान कियो त्रिपुरारि॥
देवन को तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास॥

छंद चौचोला।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुंच्यो जाइ पताला।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला॥
तुमहीं हौ सब प्राणिन के गति सुरगति नाथ विशेशा।
मंदर को उधार कीजे अब रक्षहु हमहिं रमेशा॥
सुनि देवन की आरत वाणी प्रगटे शारँगपानी।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल चलखानी॥

राजकुमार वचन सुनिमुनिवर मुनिन सहित चढ़ि नाऊ ।
उतरे गङ्ग सङ्ग दशरथ सुत त्रिभुवन विदित प्रभाऊ ॥
उत्तरकूल जाय मुनि नायक सब ऋषिगन सतकारे ।
कियो निवास राम लक्ष्मण युत सुंदर गङ्ग किनारे ॥
महा मनोहर पुरी सुहावनि जाको नाम विशाला ।
देखि सकल मुनि लगे सराहन पाय अनंद विशाला ॥

दोहा—राम लपण युत गाधिसुत, चले नगर की ओर ।
अमरावती समान छवि रमणीयता अथोर ॥
पुरी मनोहर पेखि प्रभु, जोरि सुपंकज पानि ।
कौशिक मुनि सर्वज्ञ सों, कही वाणि सुखदानि ॥
कौन राज को वंश यह, वसत कौन अब राज ।
पुरी विशाला किमि भई, कहौ सकल मुनिराज ॥
सुनि दशरथ नन्दन वचन, विश्वामित्र प्रवीन ।
पुरी विशाला की कथा, कहन लगे प्राचीन ॥

छन्द चौबोला ।

सुनहु राम वासव की गाथा भयो जौन यह देशा ।
पूरव दिति अरु अदिति सुवन सुर असुर भये वल वेशा
पुरुषसिंह तहँ वैठि सुरासुर दोऊ किये विचारा ।
केहि विधि अजर अमर होवैं हम रहै न रोग अपारा ॥
चिन्तत सकल सुरासुर के तहँ एक वुद्धि दृढ़ कीन्हे ।
क्षीर सिंधु मथि अमी निकासैं सकल यही मन दीन्हे ॥
मथन क्षीर सागर निश्चय करि रजु करि वासुकि नागा
मंदरागिरि को विरचि मथानी मथन लगे वड़भागा ॥
वीते मथत हजारन हायन दव्यो वासुकी नागा ।
वमत महा विष वहु मुख दंसत सिलन कोप अति जागा

मथत क्षीरनिधि कढ्यो महा विप हालाहल जेहि नामा।
ताते जरन लग्यो सिगरो जग सुर नर असुर सधामा॥
जरत सुरासुर जानि जगत को गे कम्पित कैलासा।
त्राहि त्राहि शङ्कर संकटहर अब रक्षहु कृतिबासा॥
जै जै देव देव पशुपति प्रभु शङ्कर शरण नेवाजी।
जयति रुद्र गिरिजापति जै हर तुम देवन हित काजी॥
करत सुरासुर के अस्तुति तहँ प्रगट भये भगवाना।
शंख चक्र शारङ्ग गदाधर देवन वृन्द प्रधाना॥
रुद्र शूलधर सों भाष्यो हरि नेकु मन्द मुसकाई।
मथत क्षीरनिधि कढ्यो प्रथम विप जारत जग समुदाई॥

दोहा– तुम पूर्वज सब सुरन के, कढ्यो पूर्व विप घोर।
ताते तिहरो भाग है, पान करहु मत मोर॥
असकहि नारायण भये, तेहि थल अन्तरधान।
हरि को शासन हर सुनत, कियो मनहि अनुमान॥
देवन को दुख देखि शिव, प्रभु शासन शिर धारि।
हालाहल विप अमृत सम, पान कियो त्रिपुरारि॥
देवन को तहँ त्यागि हर, गवन कियो कैलास।
लगे सुरासुर मथन पुनि, करि करि अमित प्रयास॥

छंद चौबोला।

धस्यो महा मन्दर अधार बिनु पहुंच्यो जाइ पताला।
तब गंधर्व सर्व सुर असुरहु ध्याये कृष्ण कृपाला॥
तुमहीं हो सब प्राणिन के गति सुरगति नाथ विशेशा।
मंदर को उधार कीजै अब रक्षहु हमहिं रमेशा॥
सुनि देवन की आरत वाणी प्रगटे शारँगपानी।
धरि कमठावतार नारायण गे पताल चलखानी॥

जानि शक्रहंता सुत भावी छल करि वासव जाई।
अति सनेह दरशाय मातु की करन लग्यो सेवकाई॥
अग्नि काठ कुश सलिल फूल फल ल्यावत सुनत रजाई।
औरहु वस्तु जो मातु चहै सो आनतबिलम विहाई॥
कर पद मरदन विजन डोलाउब सेज बिछाउब आदी।
सेवन करत शक्र दिति को नित उर छल मुख मृदुवादी॥
यहि विधि बीते सहस वर्ष जब रहे वर्ष दश बाकी।
तबदिति हरषित कह्यो शक्र सों जानि शुद्ध मति ताकी॥
सुनहु पुत्र सुरनायक निहरो पिता दियो वरदाना।
सहस वर्ष बीते सुत पैहौ जग विजयी बलवाना॥
सहस वर्ष मोहिं विते करत तप अब बाकी दश वर्षा।
सो बीते लखिहौ भ्राता को पैहौ अतिशय हर्षा॥
जाँच्यों तुव हित पुत्र कंत सो त्रिभुवन जय के हेतू।
विजयमान ह्वै निज भ्राता युत बसिहौ नाक निकेतू॥
अस कहि वासव सों दिति हरषित मध्य दिवस अलसानी।
शिरहन ओर चरण करि सोवन लगी अविधि नहिं जानी।

दोहा—अविधि अशुचि गुनि शक्र तेहि, चरण ओर शिर देखि।
हँस्यो मनहिं मन मुद मगन, सोइ अवसर अवरेखि॥
दिति शरीर के विवर ह्वै, कीन्ह्यो उदर प्रवेश।
सप्त खण्ड दिति गर्भ को, किय लै कुलिश सुरेश॥
करत खंड तहँ वज्र सो, रोयो गर्भ पुकारि।
मारुद मारुद शक्र कह, दिति जगिचकी निहारि॥

छंद चौबोला।

नहिं रोवै अस कहत जात हरि गर्भहि काट[illegible]
रोवतहू नहिं दया करत कछु सुमि[illegible]

तब दिति कह्यो न गर्भनाश करु दया करहु सुरराई।
लिहे कुलिश कर जोरि पाणि दोउ कह्यो वचन शिर नाई॥
मातु अशुचि ह्वे शयन कियो तें करि शिरहन युग पादा।
यह अन्तर हौं पाय प्रविशि उर नहिं गुनि तोर विपादा॥
लै कर कुलिश शक्रहंता तुव गर्भखंड किय साता।
यक यक खंडन सात खंड किय क्षमु अपराधहि माता॥
जानि तहाँ दिति गर्भखंड वहु महा शोक दुखपाई।
दुराधर्प वासव सों बोली अति सनेह दरशाई॥
सप्तखंड यह गर्भ भयो जो सो अपराध हमारो।
तिहरो प्रिय करनो हम चाहति नहिं अपराध तिहारो॥
भयो विपर्यय जौन गर्भ मम तेहि अस करो सुरेशा॥
मारुद मारुद कह्यो ताहि ते मारुत नाम हमेशा॥
यक यक खंडहि सात खंड किय ते सब भे वंचासा।
भयो सात गण सात सात वपु करें सुनाक निवासा॥
वातसकंध थान पावैं सब विचरें स्वर्ग सदाहीं।
मारुत नाम विख्यात त्रिलोकहि लहैं दिव्य वपु काहीं॥
वहै एक गण ब्रह्मलोक महँ इन्द्रलोक महँ दूजो।
दिव्य वायु विख्यात भुवन महँ वहै मरुतगण तीजो॥
दोहा—रहे चारि जे मरुत गण शासन पायतुम्हार।
वहत रहैं दशहू दिशन, वासव मोर कुमार॥
देव रूप सुत होहिं सब, अति बलीन दुनिमान।
सात सात को एक गण मारुत देव प्रधान॥
सुनि विमातु के वचन वर, वासव पाय विनोद।
जोरि पानि पङ्कज कह्यो, मोदि जानु निज गोद॥

छन्द चौबोला।

जैसो वचन उचारयो माता यहि विधि सिगरो होई।
यामें कछु संशय नहिं मानो मोर बंधु सब कोई॥
जेहि जेहि लोकन कह्यो मातु तैं तेहि तेहि लोकन माहीं
कह्यो जौन विधि तेहि विधि बहिहैं तेरे पुत्र सदाहीं॥
यहि विधि निश्चय करि माता सुत गये स्वर्ग कहँ दोऊ।
त्यागि तपोवन बसे नाक महँ अस भाषत सब कोऊ॥
हे रघुनंदन यही देश सो कीन्ह्यो दिति तप भारी।
कियो विघन वासव मारुत गण प्रगटे जग संचारी॥
कुशालवन यह देश नाम है दूसर नाम विशाला
नृप इक्ष्वाकु पुत्र यक सुंदर अलंबुषी को लाला॥
नाम विशाल विशाला नगरी यह थल भूप बसायो।
हेमचन्द्र भो पुनि विशाल सुत महाबली जग जायो॥
हेमचन्द्र के पुनि सुचन्द्र भो सुत सुचन्द्र धूम्रासू।
भयो पुत्र धूम्रासु भूप के संजै नामक तासू॥
संजैनंदन भो सहदेव कृशास्व तासु सुत भयऊ।
पुनि कृशास्व के सोमदत्त भो सुयश जासु जग छयऊ॥
सोमदत्त के भो ककुत्स्थ सुत जासु पराक्रम भारी।
विद्यमान ताको सुत है अब सुमति नाम सुखकारी॥
दुर्जय परम शत्रुदल गंजन तुव बांधव रघुनाथा।
देव समान स्वरूप धर्मधर कारक प्रजन सनाथा॥

[illegible]—नृप इक्ष्वाकु प्रसाद ते, भये जे वंश विशाल।
[illegible]र्म धुरन्धर धरणि पति, ते जीवत बहु काल॥
[illegible] महात्मा सकल ते, धरमात्मा महिपाल।
[illegible] भूपति सकल, समर शूर रघुलाल॥

बसैं विशाल पुरी निशा, आजु सबै सुख पाय।
काल्हि लखन मिथिलेश को, मिथिलापुर महँ जाय॥
गाधिसुवन के सुनि वचन, राम लषण सुख पाय।
निशा विशाला में बसन, संमत दियो सुनाय॥
बसे सरित तट तरुन तर, लै कौशिक मुनि भीर।
संध्योपासन हेत किय, गवन लषण रघुवीर॥
विश्वामित्र मुनीश को, आगम सुनि हरपाय।
सुमति भूप आवत भयो, अगवानी हित धाय॥
सहित पुरोहित सचिव सब, सुमति सबांधव आय।
विश्वामित्र मुनीशके पर्यो चरण शिर नाय॥
जोरि पाणि पङ्कज कह्यो, कुशल रहे मुनिराय।
मोहिं धन्य धरणी कियो दरशन दीन्ह्यो आय॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराजश्रीमहाराजा बहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी सी. एस. आई. कृते रामस्वयम्बर ग्रन्थे क्षीराधि मंथन मरुत जन्म वर्णनो नाम चतुर्दश प्रबन्धः॥ १४॥

दोहा–सुनत सुमति वानी विमल, विश्वामित्र सचैन।
वसुधाधिपहि सराहि बहु, बदे विमल वर बैन॥
ईश कृपा हम तुम कुशल, रहहिं सदा सब ठाम।
सुमति सुशील सुभाव तव, लखि पाये सुखधाम॥
यहि विधि भाषत मुनि नृपति, वचन विदित व्योहार।
संध्या करि आये उभै, दशरथ राजकुमार॥

कवित्त।

मानोएकसङ्गआवैंभानुसितभानुदोऊमानोद्वैशरीरकैकशानुछविछावैं हैं
फैलतप्रभाकेपुंज गंजन मदनमदहदसुखमाकेभरेचखन चोरावें हैं॥

भनैरघुराज विश्वमोहनीनजरिपाशफाँसैंमनविहँगनजानअन्तपावैं हैं।
देखतसरूपअवधेशजूके लालनके पलकप्रदातैंमंदकरणी बनावें हैं॥
सोरठा-लषण राम अवलोकि, उठी तुरंत समाज सब।
सुमति नैन जल रोकि, कौशिक सों पूछत भये॥

छन्द झूलना।

आफताव सो एक महताव सोदूसरा चश्मके चोरखूबसूरतीखूब हैं।
रुआब यों ख्वाब में देखने में नहीं शान औ शौक में सच्चईसूब हैं॥
कहैं रघुराज मुनिराज हमसे कहौ कौन केफबे फरजंद दिलहूब हैं।
बिहिश्तकेनूर मशहूर दिलहूर हरजान में जहाँके जान महबूब हैं॥
इनको भौंह टेढ़ी कसी जेब देती दुनौ चश्म ते हद कत्लाम कर्ते॥
नये चांदसे वदन विदुरानिखासी त्यों जवाहिरजड़ेकड़े दिलकोदर्ते॥
क्या सजीली जवानी की है रोशनी जबर्दस्ती हमारे हियो हर्ते।
रघुराज मैं आजतक देखा नहीं ऐसीअजबसूरत के जंगल में फिर्ते॥
दोहा-सुमति भूपके कहत अस, दोउ कुमार सुकुमार।
आये मुनिवर के निकट, सव समाज मनुहार॥
मुनि उठि अङ्क लगाइ कै, लिय आगे बैठाय।
भे चकोर चख सबन के, निरखि वदन निशिराय॥
सुमति सकोच सनेह वश सुठि सुख तहँ सरसाय।
कौशिक सों पूछो बहुरि, विनय प्रीति दरशाय॥

छंद सुंदर।

गाधिसुतसुनहुँ कल्यानहैं रावरे। कौनके पुत्र ये गोर अरु साँवरे॥
देवसेरूपवरविश्वमें विक्रमी। मंद गति सिंहअरुसिन्धुरअतिक्रमी॥
ओजशार्दूलसेमत्तनृपभाकृती।मदनमदकदनकसविपिनचारणव्रती।

लसैकटिकसीयुतढालकरवालहैं । पीठितूणीरयुग शरनके जालहैं ॥
धनुर्धरधर्मधरधीरधरधरानिमें । होयगोकोउनइनगुणनसमकरानिमें ॥
मनहुंजोरी विबुधवैदकी सोहती । जो वनाईअरुणता हियो मोहती ॥
कहौमुनिकिधौंयुगदेवइतआयगे । पुरीपुरजनअमितमोदसरसायगे ॥
लसतकोदंडशरचण्डभुजदण्डमें।करनअरिखंडयहखण्डनवखण्डमें॥
कुसुमकोमलचरणकठिनधरनीचलैं।परसिकंकरनिकरनाथमोमनमलैं
कहौमुनिकौनआगमनकोहेतु है । कौन इनको पितासुकृतिकोसेतुहै॥
कहाँइनकोसदनवसतकेहिनगरमें।कौनहितफिरतदोउडांगकीडगरमें।
कौनकारणरहतरावरेनिकटमें।डरतमुनिक्योंनतुमल्यायवननिकटमें।
युगलजोरीभलीअसनदेखीकहूँ।फिरचोमुनिनाथमेंदिशाविदिशाचहूँ॥
चित्त चोरत चितैचखन चहुँओरहें।विप्रकुलतिलककीभूपशिरमोरहैं॥
किधौंविधिधामकेकामअवतारहैं । किधोंजगसुछविकेसछविआगारहें॥
हियोवरबसहरैं वेशवानिकवने । चुकत नहिंरूपसौंदर्य्ययकमुखभने॥
विरचिविधिइन्हेंधोंधोइकरवोठिगो । पेखिमनमोरमुदमहोदधिपैठिगो॥
वदनविधुदेखिसुरसुन्दरीरीझतीं।पलकपरिकलपगुनिपलकपरिखीजतीं
कृपाकरिकहौमुनिराजअवआजई।प्रथमइनकुँवरकोआगमनकाजई ॥

सोरठा–सुनत सुमति के वैन, विश्वामित्र हुलास भरि ।
दे रघुपति छवि नैन, चैन ऐन कह वैन वर ॥

कवित्त।

आफ़्तावऔलाद मरजादवारे सङ्ग चलते पील असवार प्यादे ।
रहनेवाले ये ऐश आराम के हैं मघवान ते शान औ शाननादे ॥
रघुराज दोउ आले मरातिबा के इसीवक्त में पूर करि दिये वादे ।
समर बाँकुरे ठाकुरे अवध के हैं दशरत्थ बादशाह के शाहजादे ॥

सवैया।

नीच मरीच सुबाहु महाखल टे रजनीचर को समुदाई ।

आश्रम आय हमारे महा बल घोर घमंड भरे दुखदाई ॥
मो मख मंडप मंडल वेदिका श्रोणित मांसहु की झरिल्याई।
श्रीरघुराज सुनो सुमती नृप जारयो ममाश्रम आगि लगाई ॥
ठाढ़े रहे रणबाँकुरे दोऊ महा रजनीचर धाये प्रचारी।
शायक लै बिनहीं फर को रघुनायक ताकि सुभायक मारी॥
नीच मरीच को आसु उड़ाय गिराय दियो शतयोजन चारी।
श्रीरघुराज कुमार महा सुकुमार कियो मख की रखवारी॥
आयो सुबाहु उमाहु भरो रण जो सुर नाहु को दाहु देवैया।
आसुही आस्यवगारि उचारि यो ठाढ़ो रहै नृप लाल लड़ैया॥
पावक शायक ताके दियो उर नेसुक कोपित ह्वै रघुरैया।
भाषत हौं रघुराज किहे शिव साख सो खाख भयो दुख दैया॥
धाये तुरंत तमीचर औरहु ताकि तिन्हैं लषणौ ललकारयो।
झारयो शरासन ते शर बृन्दन वारहिं बार प्रवीर प्रचारयो॥
श्रीरघुराज बड़ो रण बाँकुरो भाँति भली रिपु सैन सँहारयो।
फागु सो खेलिलियोक्षण में हँसिहोलिकासो खलको दलजारयो।
कीन्ह्यो भली विधि रक्षनयज्ञको लक्षन मारि निशाचरतक्षन।
होत विलक्षन यज्ञ विदेह की जात निरक्षन आपने अक्षन॥
श्रीरघुराज विशाल पुरीपति है इनते पर दूसरो दक्षन।
पक्ष अपक्षन के शुभ लक्षन जेठ हैं राम कनिष्ट हैं लक्षन॥

सोरठा–सुनि मुनिवर के बैन, अति आनँद भूपति लह्यो।
छके देखि छवि नैन मैन माधुरी वारि दिय॥

छन्द चौबोला।

अतिथ अपूरुब जानि अवनिपति दशरथ राजकुमारा।
भूषण वसन विचित्र मँगाय [illegible] अनुपम सतकारा॥
पाय समति [illegible] [illegible] [illegible] सुख साने।

कीन्ह्यो निशा निवास हुलासित आसित भोर पयाने ॥
सुमति सराहि सुशील सनेह गेह गवन्यो शिर नाई ।
भूप विशाल सराहि काल कछु शयन किये दोउ भाई ॥
उठि प्रभात सब प्रात क्रिया करि कोमल पद जलजाता ।
अति अवदात विख्यात विश्व मुनि संग चले दोउ भ्राता ॥
गह्यो मंजु मारग मिथिला को मुनिन समाज समेतू ।
मंद मंद गमनत गयंद गति ऋषि सँग रघुकुल केतू ॥
गये दूर पथ युग योजन जब जनक नगर रहि गयऊ ।
मिथिलापुर के तुंग पताके मुनिगण देखत भयऊ ॥
अति उतंग मंदिर सुंदर सब चमचमात चहुँपाहीं ।
फहरैं नाके नाक पताके सुखमा के पुर माहीं ॥
मानहुँ पूरुब उदै दिवाकर बिलसत करन पसारे ।
नहिं ठहरात दीठि जगमग दुति चौधा चखन निहारे ॥
कनक कलश बिलसत तारा इव छुअन चहत नभ मानो ।
जगमगात जनु कनक कलश मिस मिथिलापतियशजानो ॥

दोहा—लगे सराहन सकल मुनि, जनक नगर छवि भूरि ।
राम लषण दरशावहीं, कहहिं अबै पुर दूरि ॥

कवित्त ।

प्राची दिशि प्रगट दिवाकर द्वितीय कैधों,
शरद निशाधौं चन्द्रतारा युत भावती ॥
माया को बिलास कैधौं ब्रह्म को निवास कैधौं,
विष्णु को अवास कैधौं छाया छवि छावती ॥
रघुराज देखो यह जनक नगर शोभा,
देखत बनत नहिं मुख कहि आवती ।
कैधौं अलकावती है कैधौं अमरावती है,

पद्मा की बनाई कैधौं पुरी पद्मावती ॥
दोहा–सकल भुवन शोभा भरी, दूरिहिते दरशाइ ।
निकट गये कस लखि परी, यह मुख कही न जाइ ॥

छन्द चौबोला ।

और कछू नेरे जब गवने मुनि युत राजकुमारे ।
मिथिलापुरी निकट अमराई शीतल सघन निहारे ॥
तहँ यक मंजु मनोहर मुदकर आश्रम सून देखाना ।
जोरि पाणि पंकज रघुनंदन मुनि सों वचन बखाना ॥
सुनत राम के वचन गाधिसुत बोले मृदु मुसकाई ।
हौं सब कथा कहत जैसो इत भो वृत्तांत महाई ॥
जासु श्राप ते भयो सून यह आश्रम प्रथम सुजाना ।
गौतम मुनि यक रहे महातप यहि आश्रम मतिमाना ॥
तिनकी रही अहिल्या नारी अतिसुंदर सुकुमारी ।
दोउ मिलि कीन्ह्यो इहाँ महा तप वर्ष अनेक सुखारी ॥
गौतम नारि निहारि महा छवि सुरनायक मन मोह्यो ।
घात लगायो मिलन हेत तेहि नाहिं अवसर कछु जोह्यो ॥
तब गौतम को रूप धारि हरि आयो आश्रम माहीं ।
मज्जन हेतु गये मुनिवर जब प्रविश्यो तुरत तहाँहीं ॥
कह्यो अहिल्यै वचन विहँसि कछु सरस सनेह देखाई ।
जानि सुमुखि ऋतु काल तिहारो हौं आयो इत धाई ॥
मोहि लियो मन रूपमाधुरी तोहिं सम विश्व न नारी ।
हौं रतिदान माँगने आयों जरत अनंग दवारी ॥
गौतम वेष जानि वासव को मोहि वचन रचनाई ।
कियो विहार विचार अहिल्या महा कुमति उर आई ॥

दोहा–कियो विहार सुरेश सँग, गौतम मुनि की नीरि।
पुनि मुनि को डरि शक्र सों, कही गिरा भय भारि॥

छन्द चौबोला।

अपने को अरु हमरेहु को अब रक्षण किह्यो उपाई।
जो जानिहैं मुनीश कर्म यह देहैं तुरत जराई॥
कह्यो पुरंदर अति प्रसन्न ह्वै राख्यो जीवन प्यारी॥
नहिं जानिहैं प्रसङ्ग महामुनि हौं अब जात सिधारी॥
यहि विधि मुनितिय सों रमि वासव चल्यो कुटी सो आसू।
कढ़त कुटी ते मिलि गे गौतम उर उपजी अति त्रासू॥
ज्वलित तेज तप दुराधर्ष अति आश्रम करत प्रवेशा।
अपनो रूप धरे छल वल वश देख्यो त्रसित सुरेशा॥
समिध सहित कुश लिये पाणि मुनि यक कर कुंभसनरा।
वासव छल वल जानि तपोबल कियो कोप मतिधीरा॥
बोले वचन अरे सुरनायक कियो महा अपकारा।
दुराचारमम दार नष्ट किय पैहै फल यहि वारा॥
मेरो वपु धरि अरे सुराधम नाहिं कछु धर्म विचारी।
रम्यो विप्रनारी सों सुरपति मेरी त्रास विसारी॥
ताते वृषण हीन होवै हठि पावै अति संतापा।
यहि विधि कहि वासव को गौतम दियो अहिल्यै शापा॥
रीपापिनि तैं धर्म छोड़ि सब सुरपति सों रति ठानी।
अंतरहित ह्वै बस यहि आश्रम विना अन्न अरु पानी॥
आठों पहर तपतरहि है तन जब बीती बहुकाला।
तब ऐहैं दशरथ के नंदन रघुपति कोशल पाला॥

दोहा–तिनके परसत चरण युग, लहि आपन आकार।
ऐहै मेरे निकट पुनि, करि रामहि सतकार॥

अस गौतम के कहत भो, वृषण हीन सुरराज।
भई अहल्या रूप बिन, आश्रम रही अकाज॥
सोरठा—यहि विधि दै मुनि शाप निज तिय को अरु शक्र को
तजि आश्रम लहि ताप, गये हिमाचल करन तप॥
किन्नर चारण सिद्ध, सेवित हिमगिरि सर्वदा।
आश्रम एक प्रसिद्ध, तहां लगे तप करन मुनि॥

छन्द चौबोला।

इतै विकल बासव बिन वृषणन गमन्यो स्वर्ग दुखारी।
भसम सैन अन्तरहित वपु ह्वै रही तहां मुनि नारी॥
अतिशय पीडित भयो पुरंदर देवन मुनिन बोलायो।
सुर गुरु सों अरु पावक सो तहँ व्यथित वदन अस गायो॥
गौतम तप को विघन करन हित मैं कीन्ह्यो अपचारा।
दियो शाप मोहिं घोर महा मुनि साधत काज तुम्हारा॥
अंडकोश बिन भये शाप वश अब का करिय उपाई।
दै कै शाप अहिल्यहु को मुनि दीन्ह्यो भसम छिपाई॥
हे सुर मुनि सुर कारज साधत भै यह दशा हमारी।
ताते करौ सहाइ सबै मिलि मैं नाहिं होहुँ दुखारी॥
अगिनि देव गुरु औरौ सुर ऋषि सुनि बासव केबैना।
पितरन देवन और मरुतगण बोलि कहे भरि चैना॥
भयो पुरंदर गौतम शापित वृषण हीन यहि काले।
सकल देव मुनि मेख वृषण लै देहु वृषण सुरपाले॥
सवृषण बासव होय यही विधि मिटै दुसह दुख भारा।
वृषण हीन ह्वै मेख देवतन दै है तोष अपारा॥
मेख वृषण लै जो सुरपति के देहो देव लगाई।
इन्द्र दुसह दुख मिटी यही क्षण मेख लही शुचिताई॥

मेख वृषण अस नाम शक्र को ह्वै है सब संसारा ।
अवृषण मेख देव पितरन को देहै तोष अपारा ॥
दोहा—जो कोउ अवृषण मेख को, सुर पितरन के काज ।
करि उदेश जग देइगो, तेहि फल दिहेहु दराज ॥

छन्द चौबोला ।

अगिनि वचन सुनि देव पितर सब मेखन वृषण उखारी ।
दियो लगाइ देव नायक के मिटी पीर तन भारी ॥
धरयो पुरंदर को सुर मुनि सब मेखवृषण अस नामा ।
अति पवित्र भो मेख मांस तबहीं ते सुर नर कामा ॥
यह पूरुब की कथा कही सब गौतम की अति प्यारी ।
अब धनुधारी पशु धारी मुनि नारी आसु उधारी ॥
विश्वामित्र वचन सुनि रघुपति करि आगे मुनिराई
गौतम आश्रम गये लषण युत पीछे मुनि समुदाई ॥
परत पायँ पंकज रज तेहि थल गौतम शाप नशानी ।
प्रगट भई तहँ आसु अहल्या गुण मंदिर छबिखानी ॥
राम लषण मुनि लखे अहल्या बड़भागिनि तेहि जानी ।
जबते गौतम शाप दियो तेहि तबते अबै लखानी ॥
तिय भूषण विरंचि कर विरची रूपवती मनु माया ।
मनहुं महोदधि मथि प्रगटायो प्रभा रेख दिन राया ॥
मनहुं तुपार अपार विराजित द्वितिय चंद की रेषा ।
अतिशय कृशित वपुप मुनि नारी लखि सुंदर प्रभु वेषा ॥
बार बार दृग वारि वहावत पुलकावलि तन माहीं ।
नहिं निकसत कछु प्रेम विवश मुख अनिमिप लखति तहाँहीं ॥
सावधान ह्वै पुनि कर जोरी प्रभु के आगे ठाढ़ी ।
अस्तुति करति अहल्या मुद भरि प्रेमभक्ति उर बाढ़ी ॥

सोरठा—जै जै कौशल नाथ, परब्रह्म व्यापक जगत ।
प्रभु मोहिं कियो सनाथ करुणा वरुणालै विदित ॥

स्तुति ।

परसत पद पावन पाप नशावन पावन पतित होत क्षण में
देखत रघुनायक जग सुखदायक लायक होत देवगण में ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक शरीरा धरि उर धीरा वचन कही ।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी मन हुलसानी चरण गही
जै ज्ञान गम्य विमुखन अगम्य आनम्य शंभु अज चरणा ।
मैं नारि अपावनि अति अघ छावनि अधम चारहू वरणा ॥
राजीव विलोचन भव भय मोचन दीन सकोचन आये ।
मैं शरण तिहारे राजकुमारे जग उजियारे भाये ॥
मुनि शाप जो दीन्हा अति भल कीन्हा चीन्हा मोहिं अधम
देख्यों भरि आंखी प्रभु जग साखी भाखी बिनै अपारा ॥
बिनती प्रभु मोरी मैं मतिभोरी खोरी मम बिसराई ।
निज पद रति दीजै दासी कीजै छीजै तन सेवकाई ॥
तुव पद सुर सरिता जग अघ हरिता धरिता शिव निज शीशा।
अघ दाहक नाऊँ कहँ लगि गाऊँ पाऊँ भक्ति अशीशा ॥
करि कृपा सनेहू जो कछु देहू सो लेहू फल फूला ।
मैं रही अनाथा भई सनाथा माथा मम पद मूला ॥

दोहा—यहि विधि करि अस्तुति विमल, प्रेम पुलकि मुनि नारि ।
रही अचंचल मूँदि चप, लखि मूरति मन हारि ॥

छन्द चौबोला ।

गौतम घरणी राम लषण गुनि पद गहि कियो प्रणामा ।
निज पति वचन सुरति करि मुनि तिय भैपूरणमनकामा ॥
कंद मूल फल फूल विविधि विधि दीन्ह्यो प्रभु कहँ ल्याई ॥

पूजन कियो सविधि युग बंधुन प्रीति रीति दरशाई ॥
जानि अहल्या प्रीति प्रेम प्रभु लिय सादर सतकारा।
जै जै कहि प्रभु अधम उधारन दीन्हे देव नगारा॥
चढ़े विमानन लेख अलेखन बरपहिं मुदित प्रसूना।
तहँ गन्धर्व अपसरहु किन्नर पाये आनँद दूना॥
आये सकल अहल्या आश्रम प्रभु दरशन हित लागी।
महा समागम भयो कुटी में कहहिं सकल बड़भागी॥
धन्य धन्य मुनिनारि अहल्या तोहिं हित हरि पगुधारे।
धनि गौतम जिनकी अस गेहिनि शाप व्याज तेहि तारे॥
अस कहि करहिं अहल्या पूजन सुर मुनि किन्नर नाना।
महा तपोबल ते गौतम मुनि यह चरित्र सब जाना॥
योग प्रभाव आइगे गौतम प्रभु पद पंकज बंदे।
राम लषण मुनि पद प्रणाम किय बारहिं बार अनंदे॥
राम लषण कौशिक मुनि गण को गौतम किय सतकारा।
सुखी अहल्या सहित भये मुनि गे तप हित लै दारा॥
गौतम और अहल्या कर ते राम लषण दोउ भाई।
बार बार सतकार पाय बसि बार चले अतुराई॥

दोहा—यहि विधि गौतमनारि को, नाम अहल्या जासु।
तारयो पदरज झारि निज, भजे न को पद तासु॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपा पात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंबरे अहल्या उद्धारणो नाम पञ्चदशः प्रबंधः॥ १५॥

दोहा—जा दिन प्रभु गौतम परनि तारयो पदरज झारि।
ताही दिन ताकी कुटी कियो निवास मुरारि॥

छन्द चौबोला ।

लखि प्रभात पूषन की आवनि यामिनि जानि सिरानो।
हुलसत कोक अशोक होन हित तारावलि बिलगानो॥
मुनिनायक युत रघुनायक उठि प्रातकर्म सब कीन्हे।
मुनि मंडली सहित रघुनंदन जनक नगर पथ लीन्हे॥
चले महर्षि महा उत्साहित जनक दरश अभिलाषी।
विश्वामित्र महामुनि मोदित चलत राम रुख राषी॥
उत्तर पूरबकोण पंथ मृदु पग पग शीतल छाया।
चले जात मुनि मंडल मंडित लषण सहित रघुराया॥
आगे आगे चलत गाधिसुत पाछे राजकुमारा।
पहुँचे जनक नगर उपवन हेमंत वसंत बहारा॥
यज्ञथली भुवि भली जनकपुर राम लषण अस भाखे।
सुनहुं महा मुनिनाथ जनक नृप आति सुंदर करि राखे॥
बहु वासव सी वर विभूति यह ऋद्धि सिद्धि समुदाई।
तापर पुनि मुनि होत स्वयंवर अद्भुत परै लखाई॥
जनक नगर महँ होत स्वयंवर धनुपयज्ञ संभारा।
देखन को देशन देशन ते आये भूप हजारा॥
महा भीर भूपति के पुर में लाखन विप्र जुहाने।
चारिहुँ वरण अनेकन आये यज्ञ लखन ललचाने॥
चारिहुँ ओर जनकपुर के मुनि रहीं जहां अमराई।
उपवन वर वाटिका वजारन भरी जनन समुदाई॥

दोहा—वैदिक विप्रन के विविध, शकटन की समुदाय।
अमराइन डेरा परे, विलग कहूं न देखाय॥

छंद चौबोला ।

ताते करहु निवास महामुनि जहां स्वच्छ थल होई।

जहां जलाशय होय विमल अति सहसा जाय न कोई ॥
सुख उपजावनि मन भावनि अति जनक पुरी छवि छाई।
लखी आजुलो अस कतहूं नहिं यथा विदेह बनाई ॥
आजु भयो अतिकाल महामुनि ताते चलहु तुराई।
नीर निवास सुपास सकल विधि जहँ शीतल अमराई ॥
मुनि सुनि वचन पाय आनँद अति चले पंथ तजि दूरी।
देखे यक थल सकल हरष भल विमल जलाशय पूरी ॥
शीतल अमराई छवि छाई मंजु विहङ्गन शोरा।
अति इकांत जहँ होत शांत चित विगत मलिन सब ठोरा॥
वहत नदी अति निकट सुगम तट शाखा सलिल विलोरै।
मधुकर गुंजनि कुञ्जनि कुंजनि मंजु पुंज तरु झोरै ॥
सकल सुपास निवास योगथल लखि मुनि लषण खरारी।
कीन्हे वास हुलास भरे सब भयो नाश श्रम भारी ॥
देखत जनक नगर की शोभा लोभा मन अविकारी।
भनत परसपर वचन सकल ऋषि नृप विदेह बड़वारी ॥
कञ्चन कोट कँगूरे कलशा गोपुर गुरज दुआरा।
अति सुंदर मंदिर उतंग वर कनक सुवनक केवाँरा ॥
शशिशाला अंतहपुर शाला शाला सभासदन के।
गजशाला तुरङ्गशाला वर निर्मित मनहुं मदन के॥

दोहा।

हाट बाट घर घाट के, सुछवि पाट नव ठाट।
हाटक के फाटक लसत, मनहुं तेज हवि बाट ॥

सवैया।

चाँदनी सी चमके चहुं ओर तनी चुनी चाँदनी चारु महाई।
चित्रित चित्र विचित्र बने चितये जेहि चित्त गहै चकिताई ॥

कौन कहै मिथिलेश कि संपति शक्रहु देखि लहे लघुताई।
श्रीरघुराज जहां जगदंब अलंब भई तहँ कौन बड़ाई॥

छन्द हरिगीतिका ।

कहुँ धरणिपति सैना परी फहरत अनेक निशान हैं।
हय गय अनेकन विविधि स्यंदन सिविर विशद वितान हैं।
नौबत झरत बहु नृपति डेरन दुन्दुभी धुनि है रही।
कहुँ नचत नट कहुँ बजत बाजन वार तिय गति लै रही॥
कहुँ लसत उपवन मुनिन मंडल करत वेद उचार हैं।
कोउ करत संध्या करत कोउ अभ्यास शास्त्र अपार हैं॥
कोपीन दंड कमंडलहु मृगचर्म छत्र विराजते।
आये लखन धनुयज्ञ कौतुक सहित मुनिन समाज ते॥

दोहा—अभिलाषन लाषन मनुज, अवलोकनि धनु यज्ञ।
आये मिथिला नगर महँ, अज्ञहु तज्ञ कृतज्ञ॥
यथा योग्य भूपन जनक,कीन्ह्यो अति सतकार।
निमि कुल कमल पतङ्ग को, छायो सुयश अपार॥
यहि विधि भाषत मुनिन के कोउ पुरवासी जाय।
जाहिर कियो विदेह को गाधिसुअन गे आय॥
विश्वामित्र मुनीश को सुनि आगम मिथिलेश।
सतानंद को बोलि द्रुत चले मिलन शुभवेश॥

छन्द चौबोला।

सदानंद आगे करि लीन्ह्यो द्विज मंडली सोहाई।
पढ़त वेद वैदिक धरणीसुर जयधुनि चहुँकित छाई॥
चलत पयादे मुनि दरशन हित सबै सराहत लोगू।
मिलन जात मनु ब्रह्म सतोगुण करि विराग भव भोगू॥
आवत देखि विदेह भूप को मुनिजन देखन धाये।

आय आय कौशिक मुनि के ढिग सुखित समाज लगाये ॥
आवत जानि भूप को कौशिक द्वै मुनि तुरत पठाये।
ते निमिकुल भूपति को कर गहि मुनिनायक ढिग ल्याये ॥
विश्वामित्रहि भूप विलोकत कीन्ह्यो दंड प्रणामा।
कौशिक धाय उठाय लाय उर आशिप दियो ललामा ॥
दै आसन बैठाइ भूप को अति सतकारि मुनीशा।
सादर कुशल प्रश्न पूछ्यो पुनि मोदित अहहु महीशा ॥
तब कर जोरि कह्यो मिथिलापति कुशल कृपा तुव नाथा।
कीन्ह्यो पावन पुरी हमारी अब मैं भयों सनाथा ॥
सैन सहोदर सचिव सहित प्रभु सब विधि कुशल हमारी।
सफल भयो मम धनुपयज्ञ अब करी कृपा मुनि भारी ॥
बोले विहँसि गाधि नंदन तब रचना भली बनाई।
लखन स्वयंवर कसि कसि कम्मर आये नृप समुदाई ॥
महा भागवत हे मिथिलापति ज्ञान विज्ञान निधानू।
लखन स्वयंवर धनुपयज्ञ युत हमहूं कियो पयानू ॥

दोहा–गये हुते संध्या करन, पुरुपसिंह दोउ भाय।
आये सहज समाज मधि, जिमि उडगण दिनराय ॥

पद खिमटा।

मिथिलापुर आये मुनिराई।
सुनि मिथिलापति सकुल जाइ तहँ वार वार बंदे शिरनाई ॥
ताही समय लखन फुलवाई गये हते सलपन रघुराई।
आइ गये तन गौर श्याम तहँ कौशिकमुनि समीपसुखदाई ॥
लोचन सुखद विश्व चितचोरन वैकिशोर अति सुंदरताई ॥
उठी समाज राजसुत देखत मुनि निज निकटलियो बैठाई।
सुखीसकलजलवहतविलोचनपुलकितगातनकछुकहिजाई ।

मूरति मधुर मनोहर जोरी जोहि विदेह विदेह सोहाई॥
प्रेम मगन नृप कौशिक सों कह गद्गद गिरा गह्वर गवाँई।
ई दोउ बालक नृप कुल पालक धौं मुनि वंश वतंश बनाई।
किधौं उभे वपुधरयो ब्रह्म इत वेगि वताइय नाहिं दुराई।
सहज विराग वलित मन मेरो इनहिंनिरखि अवगयो थकाई
छोडि ब्रह्म सुख रँग्यो रूप रस जैसे चंद चकोर मिताई।
जनक वचन सुनि कह्यो गाधिसुत सत्यसत्यतुमनृपानगाई
तप बल मदन शिंगार रूप धरि आये करन आप सेवकाई
महाराज रघुराज राज वर राजकुँअर जानहु दोउ भाई॥

छंद झूलना।

तामरसनयनतनश्यामघनश्यामइवकित्तिजिनआमदिक्करिनकरणातरन
तरनिसमपरमपरतापमुनितापहर शापहरपापहरदुखिनदारिददरन
नृपतिशिरमौरचखचित्तकेचोरचटमदनमदमोरयुगचरनभवभयहरन
भनेरघुराजराजानकेराज दशरत्थमहराज के कुँवर आनँद भरन

दोहा—राजकुमारन देखि तहँ,सिगरी उठी समाज।
भये अचंचल सवन के नयन लखन के काज॥
सहित समाज विदेह तहँ, राम लषण को देखि।
पलकन ते कीन्हे विदा, निमि नृप को दुख लेखि॥
देव रूप सिगरे भये, चहे देवपति होन।
भये विदेह समान सब, निरखि राम छवि भौन॥
सुरति सम्हारि नरेश तब कौशिक को कर जोरि।
पूछे गद्गद गर गिरा, प्रेम पयोनिधि बोरि॥

सवैया।

सुंदर श्यामल गौर शरीर विलोकत धीर रहे कस काके।
लोचन विश्वके चित्तके चोर किशोर कुमार छये सुखमा के॥

आपने आनन इंदु छटानि ते हारक भे सबके मनशाके।
श्रीरघुराज कह्यो मुनिराज अनोखे ललानि के नाम पिता के॥
हैं धौं उभै मुनि के कुलपालक कीधौं महीपति बालक दोई।
देखत रूप अनूप सुनो मुनि मेरी दशा हठिकै अस होई॥
भूलो विराग विज्ञान सरूप इन्हैं लखि और देखात न कोई।
ब्रह्म को आनँदवाद भयो उपज्यो उर आनँद जोई न जोई॥
वारिय गौन में सिंधुर सिंहनि शारद नीरज नैननि वारिये।
वारिये मत्त महावृष ओजहि चंद छटा मुसकानि उतारिये॥
वारिये श्रीरघुराज भुजानि पै भोगिन भोगन तुल्य विचारिये।
वंचक सी विधि की करनी इनकी रुचि रंचक मैं न उचारिये॥

दोहा—यहि विधि भाषत नृपति के, आये राम समीप।
मुनि सादर लक्ष्मण सहित, बैठाये कुलदीप॥

कवित्त।

कटिमेंकरालेकरवालेकसी द्वालैबीच ढालैउरमालैउरमालेलालैरंगकी।
माथनमेंमुकुटरसालैमणिहीरलालैफैलतिविशालैप्रभाचदनपतंगकी॥
भनैरघुराजमिथिलापुरसमाजराजदेखिततकालैहालैहालैभूलैअंगकी।
दुअनकोकालकालैमीतनकोमोदमालै देखिरघुलालैचालैकोछविअनंगकी

दोहा—कहत परसपर पुर प्रजा, पेखत राज कुमार।
इनहिं देखि आँखिन तरे, को आवत सुकुमार॥
विरति अछेह सुब्रह्म रति, जनक ज्ञान को तेह।
सो सरसाइ सनेह सुठि, भये विदेह विदेह॥

कवित्त।

काकेउदैपूरुबकीपुण्यपरिपूरणहै कौनपैविधाताआजुदाहिनोदयालहै
काकेअँगनामेंआजुखेलतीहैसिद्धिनिधिकैनलूटिब्रमानंद्हगयोनिहालहै
आजुलौं नदेखेऐसेकुँवरकलानिधिसे विरतिनालितमन ह्वगयोनिहालहै

भनैरघुराजमुनिराजक्योंवताओनहिंसाँवरोसलोनोकहोकाकोयहला
मदनकहानीसुनीहतीसुंदराईकेरी कोऊनहिंदेखोनयनदूरहूनिराय
कहतअनेकमुनिअश्वनीकुमारकथावृथासोजनातिइनजोटाछविछाय
ह्वैगईनहोइगीनहेरेहूँमिलैगीअवदेखोयहजोरीजैसीआजुइतआयकै
रघुराजकैधोंपरब्रह्महैप्रसन्नतोहिं रूपदरशायो युग मूरतिवनाय
कहांपायेकौनकेपठायेसंगआयेनाथकैसेकैछोड़ायेभौनभलेपितुमात
कोमलकमलहूंतेचरणवगायोवन कंकरकठिन काहेआपअवदात
आतपसहतसुकुमारयेकुमारकाहेआपनेहोहाथन तेविरचे विधात
भनै रघुराज मुनिराजमोहिंजानोपरैसुभगसहोदरकुमारदोऊभ्रात
भूषण भुवनकेनदेखे परैं दूषन के पूषनप्रकाशकेपियूषनसुभाउ
जीतेएकएकछविसिंधुकीतरंगनसोंसितासितसुखमाउमंगनिउराउ
विश्वमनहारेअरुणारेनयनप्यारेअतिजंगजैतवारेधनुधारेचित्तचाव
भाउकेप्रभाउकेवनाउकेभलेहैंमुनिवेगिहीवताउसुतकौनराजाराउ

दोहा–सुनि विदेह के वर वचन, बोले मुनि मुसकाय ।
जौन कही तुम सत्य सब, मृपा न नेक जनाय ॥

कवित्त ।

विश्ववराविदितवसुंधराधिराजधीर वीरमणिअवधअधीशनरपाल
विवुधसहाईशक्रजाकीरुखराखेचलैवंदतचरणधराधीशनकेमाल
धरमधुरंधर धरामें धाकधावैध्रुव ध्रुवसोंसमुद्धतप्रतापसर्वकाल
भनैरघुराजराजराजमणिमहाराजदाहिनोदुनीकोदशरत्थजूकेला
शारदशशीसीकौमुदीसीमुखदीसीभलीभोजीमुखमसीमीसीरदनिसोह
देवनकीलीसीसुंदराईविसेवीसोभूरि कनकतपोसीतनदुतिअधिक
क्षमाअवनीसीरीसीअरिनपैकालपीसीवोलनिमधुरसुधासीसीढरक
भनैरघुराजमहाराजमिथिलेशसुनोरामघनश्यामको लपणलघुभा

दोहा–जेहि कारण आये इतै, दशरथ राजकुमार ।
सुनो कथा सिगरी खरी, मिथिला भू भरतार ॥

सवैया ।

लंक बसै रजनीचर नाह महा भट रावन रावरो जानो ।
ताके पठाये मरीच सुबाहु उपद्रव यज्ञ में कीन्ह्यो महानो ॥
हौं तप भंग भै शाप दियो नहिं कौशलनाथ पै कीन्ह्यो पयानो ।
माँग्यो नृपै सुत द्वै रघुराज दियो दशरत्थ दयाल ह्वै दानो ॥
ये युग नंदन कौशल नाथ के लै सँग आश्रम बाट सिधारे ।
मारग में मिली ताड़ुका आय भयावनि धावति दंत निकारे ॥
खेल सों खेलतही रघुनंदन बाणन वृन्दन ताहि सँहारे ।
श्रीरघुराज विशोक भये तहँके मुनि मानव पापिनि मारे ॥
आयके आपने आश्रम में कियो यज्ञ अरंभ प्रमोद प्रफुल्ला ।
आये निशाचर साहनी साजि मरीच सुबाहु सुने मख गुल्ला ॥
श्रीरघुराज सुनो मिथिलेश दोऊ दशस्यंदन के रण दुल्ला ।
मारिके वाण दिशानन भेजे बिलाय गये जिमि वारि के बुल्ला ॥
रावरी राजसुता को स्वयंवर त्यों धनुयज्ञ सुने सब कोई ।
आवन लागे इतै हमहूँ तब राजकुमार कहे मुद मोई ॥
श्रीरघुराज हमू चलिहैं सुख पैहैं विदेह की जागहि जोई ।
ताते लेवाय चले सँग में मुनिके क्षण छोड़े महा दुख होई ॥
श्रीरघुराज समेत जबै मुनिवृंद विशाल पुरी महँ आयो ।
भूप सुबुद्धि कियो अति आदर द्वै दिन लौं कहुँ जानन पायो ।
ज्यों त्यों के आवन दीन्ह्यो नरेश बसे पुनि गौतम आश्रम भायो ।
भूप सुनो जो चरित्र भयो तहँ आजुलों ऐसो न आँखिन आयो ॥
साँवरो राजकुमार गयो कुटी एक पषाण परो रह्यो भारी ।
तामें धरयो सहजे पद पंकज ताते कढ़ी यक सुंदरनारी ॥

अस्तुति कै गवनी पति धाम को आपनो नाम अहल्या पुकारी।
शाप प्रताप शिला सो रही रघुराज लला तेहि दीन्ह्यो उधारी॥

दोहा–अब आये मिथिलानगर, संयुत राजकुमार।
भयो प्रसन्न हमार मन, लहि तुम्हार सतकार॥
कियो स्वयंबर को महा, मिथिलाधिप संभार।
धनुपयज्ञ लखि कुँवर दोउ, जैहैं अवध अगार॥
सुनि कौशिक के वचन वर, गौतम जेठ कुमार।
सतानंद बोल्यो वचन, धनि धनि अवध भुआर॥

छंद चौबोला।

जाहि विधाता दियो कुँवर अस अनुपम त्रिभुवन माहीं।
तासु भागि वरणन समरथ अब अहै विश्व महँ नाहीं॥
अस कहि बार बार रघुनंदन लषण बदन छवि देखी।
रोमांचित तन सतानंद तव मोदित भयो विशेखी॥
सतानंद कौशिक सों बोल्यो सुनिये गाधिकुमारा।
परस कराय राम पद जननी कीन्ह्यो तासु उधारा॥
कहहु फूल फल लै जननी मम किह्यो प्रभुहि सतकारा।
पूरब कथा सुनाय दियो तुम वासव कर आचारा॥
कहहु कहहु पितु आये की नहिं राम दरश के हेतू।
राम लषण बंदे मम पितु कहँ लै आशिप सुख सेतू॥
सतानंद के सुनत वचन तहँ कौशिक मुनि मुसकाने।
बारहि बार सराहि गौतमहि कहे वचन सुखसाने॥
जो करतव्य रह्यो हमरो कछु सो सब पूरण भयऊ।
मिली रावरे पितु कहँ पत्नी शाप ताप मिटि गयऊ॥
अस सुनि ह्वै प्रमुदित गौतम सुत विश्वामित्र सराहीं।
कह्यो राम सों बैन चैन भरि तुम सम कोउ जन नाहीं॥

आय दरश दीन्ह्यो मिथिलापुर विश्वामित्र समेतू ॥
है ब्रह्मर्षि महामुनि कौशिक सिद्धि सकल तप से
मैं बरणों अब सुनहु राम तुम विश्वामित्र प्रभाऊ ॥
भये जौन विधि महा ब्रह्मऋषि जगत विदित सब

दोहा—रह्यो चक्रवर्ती नृपति, पूरब गाधि कुमार ।
पाल्यो पुहमी धर्म युत, दियो प्रजन सुख सार ॥

छंद चौबोला ।

एक समय पुहमी विचरत में सैन्य सहित महिपाला ॥
गयो वशिष्ट आश्रमहि राजा लखि रमणीय विशा
तहँ देवर्षि महर्षि ब्रह्मऋषि करैं महा तप नाना । धाना ॥
होम करत कहुँ बालखिल्य मुनि जप तप तेज गि मा ।
निरखि वशिष्ठ गाधिनंदन तहँ कीन्ह्यो मुदित प्र मा ॥
आशिष दे विधि सुत बैठायो आसन दियो लल ना ।
मूल फूल फल दै सतकारयो कुशल प्रश्न कर न ाना ॥
नाथ कृपा सब कुशल हमारी कौशिक वचन बर ाषा ।
बिदा होन जब लगे गाधिसुत तब वसिष्ट अस भा ॥
करन हेत आतिथ्य रावरी सैन सहित अभिला कोई ।
नृप कह मूल फूल फल रावर याते अधिक न मोई ॥
चहौं भवन को गवन नाथ अब लह्यो दरश सु ीकारा ।
पुनि पुनि कियो वशिष्ट निमंत्रण कियो भूप स ॥
जाय वशिष्ट धेनु सबलासों बंदत वचन उचारा
विश्वामित्र भूप इत आये वर्षहु वस्तु अपारा ारा ॥
सैन्यसहित मैं गाधिसुवन को करन चहौं सत अनेका ।
सुनि मुनि बैनै सुरभि सबला तहँ प्रगटी ॥
खान पान अस्थान थान पट बहु विधि सहित

सहित समाजहि कौशिक राजहि राज भवन सब भूला।
वासव वास वास सुख पायो भये सकल सुर तूला॥
दोहा--विश्वामित्र विलोकि कै, सवला परम प्रभाउ।
जाय वशिष्ट समीप में, कह्यो सुनहु मुनिराउ॥

छन्द चौबोला।

लाख गऊ लीजै हमसे मुनि सुरभी सवला दीजै।
चौदह सहस कनक भूपित गज अवहीं ग्रहण करीजै
नहिं मानौ तौ कोटि गऊ मुनि नायक हमसे लेहू।
होइ जो संपति सकल हमारे सो लै सुरभी देहू॥
कह्यो वशिष्ठ अनंत कोटि जो गऊ भूप मोहिं दीजै।
तदपि न देहैं सवला तुमको अस न मनोरथ कीजै॥
वसुधा की संपति लै सिगरी जो तुम हमको देहौ।
हय गय गोपट रजत कनक वहु तदपि न सवला पैहौ॥
सकल काज साधनो धेनु यह है सरवस्व हमारी।
कारन अहै अनेक ताहि ते देव मनै न विचारी॥
जव नहिं दियो वशिष्ट धेनु कहँ तब कौशिक कुल राजा।
वरवस लियो छोराय भटन सों चल्यो भवन कृत काजा॥
तोड़ि सकल वंधन सवला तहँ राज भटन झिझकारी।
गई वशिष्ठ समीपहि रोवति आरति गिरा उचारी॥
केहि अपराधहि तज्यो ब्रह्मसुत लिहे जात मोहिं भूपा।
सुनि वशिष्ठ दृग सलिल वहावत वोले वचन अनूपा॥
कौन जोर हमरो सवला अब राजा वड़ो वलीना।
क्रोध करैं तो होइ भंग तप ताते शाप न दीना॥
चतुरंगिनो सैन हमरे कहँ हम ब्राह्मण तप धारी।
सुनि वशिष्ट के वचन दीन अति सवला गिरा उचारी॥

दो०—ब्राह्मण बल आगे कहा, क्षत्री को बल होइ।
बली भूप यद्यपि अहे, तव बल सरिस न कोइ॥

छन्द चौबोला।

शासन देहु मोहिं मुनिनायक देखहु समर तमाशा।
यक क्षण में नृप गाधिसुअन को करिहौं दर्प विनाशा॥
कह्यो वशिष्ठ करहु जस भावै तजौं न मैं तुम काहीं।
इतना कहत धेनु कोपित ह्वै सिरज्यो यवन तहांहीं॥
हथियारन युत यवन हजारन कढ़े तासु हुंकारा।
विश्वामित्र विलोकत सिगरी कियो सैन संहारा॥
गाधितनै तव करि अमर्ष अति कियो धनुष टंकोरा।
छाय दिशानन वाणन मारि मलेच्छन को मुह मोरा॥
सुरभी जोहि यवन गण भागत निज प्रति रोमनि तेरे।
सिरज्यो कोटिन महा मलेच्छन भरिगे भूमि घनेरे॥
आयुधवंत यवन धाये सब मारन गाधि कुमारे।
भूपति मारि मारि वाणन बहु कियो यवन संहारे॥
कह्यो वशिष्ठ धेनु सिरजहु फिरि इतना सुनि सुरभी सों।
कोटिन यवन सकल सिरज्यो तन करि अदभुत करनी सों॥
हय गय स्यंदन सहित पदातिन कीन्हे सैन निपाता।
विश्वामित्र पुत्र शत धाये करन वशिष्टहि घाता॥
तिनको कियो भसम ताही क्षण करि वशिष्ट हुंकारा।
रह्यो अकेल गाधिनंदन तहँ लह्यो विषाद अपारा॥
विना तेज को यथा दिवाकर आकर विना रतन को।
विना पक्ष पक्षी अहि विष विन संपति विना यतन को॥

दोहा—यहि विधि ह्वै कौशिक नृपति, छोड़ि विजय उत्साह।
छोटे सुत को राज दे, गयो हिमलय माह॥

छंद चौबोला ।

शंभु प्रसन्न हेत कीन्ह्यो तप सहि आतप जल धारा।
महा कठिन तप लखि गिरिजापति ह्वै प्रसन्न यक बारा॥
आये विश्वामित्र आश्रमहि कह्यो माँगु वरदाना।
महादेव के वचन सुनत नृप मंजुल बैन बखाना॥
जो प्रसन्न मोपर गिरिजावर तौ करि जन पर नेहू।
अस्त्र शस्त्र सब विश्व भरे के मंत्र सहित मोहिं देहू॥
एवमस्तु कहि शंकर गवने पाइ अस्त्र महिपाला।
मृतक समान वशिष्ठ मानि तहँ बाढ्यो दर्प विशाला॥
आयो कुपित ब्रह्मसुत पहँ सो पावक अस्त्र पवारा।
अति रमणीय वशिष्ट आश्रमहि ज्वालन मालन जारा॥
भगे भभरि सब शिष्य पुकारत अति आरत दिशि चारी
जीव विहीन कुटी भै मुनि की रह्यो एक तपधारी॥
ब्रह्मदंड लै खड़ो ब्रह्मसुत करत ब्रह्म कर ध्याना।
अति निर्भय रवि कोटि तेज तन कोपित वचन बखाना।
रे रे दुराचार मूरख वर आश्रम मोर जरायो।
तातें जानै निज आयुष हत का करिहै सजि आयो॥
अस कहि खड़ो वशिष्ट अकेलो ब्रह्मदंड कर धारे।
विगत धूम इव पावक ज्वाला तीक्षण तेज पसारे॥
अगिनि अस्त्र छोड्यो कौशिक नृप सो मुनि दंड समाना।
सिगरे अस्त्र चलाय दियो तहँ ब्रह्मदंड किय पाना॥

दोहा-लियो ब्रह्मशर गाधिसुत, मुनि पै दियो चलाय।
ब्रह्म तेज महँ मिलत भो, मानहुँ गयो बुताय॥
असि लीन्ह्यो ब्रह्मास्त्र जब, प्रगट्यो तेज कराल।
जरनलग्यो त्रिभुवन तहां, भे सुर सिद्ध बिहाल॥

छन्द चौबोला।

आय सकल तहँ मुनि वशिष्ठ की अस्तुति करि कहवानी।
भयो पराजित मूढ़ महीपति तेज समेटहु ज्ञानी॥
विश्वामित्र विलोकि दशा निज मानि हारि अस भाख्यो।
धिक क्षत्री वल धन्य विप्र वल अवलों भ्रम उर राख्यो॥
अतिशय तपित हृदय उसांस लै पुनि पुनि मनहि विचारी।
हारि गयों मैं मुनि वशिष्ठ सों करिये काह मुरारी॥
अव करिहों में घोर महातप विपिनि बीच कहुँ जाई।
की तजि हों तन की ह्वै हौं हठिं अव ब्रह्मर्षि वजाई॥
अस गुनि गयो दिशा दक्षिण मुनि गाधिसुवन युत रानी।
कियो घोर तप सहस वर्ष लौ फल मूलासन ज्ञानी॥
करत महा तप भये पुत्र शत मधु छंदादिक नामा।
वर्ष सहस वीते चतुरानन आयो पूरणकामा॥
विश्वामित्रहि कह्यो चारिमुख भये राजऋषि राजा।
अस कहि गमन्यो लोक आपने लै निज सकल समाजा॥
किय ब्रह्मर्षि होन हित अति तप नाम राजऋषि पायो।
विश्वामित्र दुखी ह्वै तहँ पुनि करन महातप ठायो॥
इतै त्रिशंकु भूप कौशलपुर भयो जगत विख्याता।
यज्ञ करन हित गुरु वशिष्ठ सों बोलि कही अस वाता॥
गुरु अस यज्ञ करावहु हम को सहित देह दिवि जाहीं।
कह्यो वशिष्ठ अशक्य भूप यह हम करवैहें नाहीं॥

दोहा–तव त्रिशंकु गुरुसुतन पहँ, दक्षिण दिशा सिधारि।
सोइ यज्ञ करावने, कह्यो चरण शिर धारि॥
गुरुसुत बोले सुनु नृपति, पितु न करायो जौन।
कैसे हम करवावहीं, कहव उचित नहिं तौन॥

सुनि सरोप गुरुसुत वचन, कह्यो त्रिशंकु वहोरि ।
आन गुरू करिहौं कहूँ, दियो खोरि नहिं मोरि ॥
तहां वशिष्टकुमार सुनि, भूपति वचन कठोर ।
दीन्हे शाप त्रिशंकु को. करि अमरप अति घोर ॥
रेत्रिशंकु गुरु द्रोह किय, लेहु तासु फल हाल ।
अति संतापित शरीर च्युत होहु जाय चंडाल ॥

छंद चौबोला ।

भूपतिभवन दुखी फिरि आयो शोचत निशा वितायो ।
होत भोर भो घोर वपुष नृप श्याम वसन तन जायो ॥
कनकआभरण भये लोहके अति विकराल शरीरा ।
ताहि देखि मंत्री पुरजन सब भागे भयभरि भीरा ॥
तपत त्रिशंकु दिवानिशि डगरयो लह्यो न कहुँ सुख प्रीती ।
विश्वामित्र चरण चलि पकरयो करि शरणागत रीती ॥
त्राहि त्राहि रक्षहु मोहिं मुनिवर जरौं विप्र की शापा ॥
असकहि विश्वामित्रहिभाष्यो निज वृत्तांत सतापा ॥
विश्वामित्र वशिष्ट वेर गुनि कहयो त्रिशंकुहि बानी ।
सहित शरीर स्वर्ग पहुंचैहौं नहिं करु भूप गलानी ॥
अस कहि यज्ञ अरंभ कियो मुनिमुनिगणसकल बोलाये ।
आये सकल सिद्धि योगी ऋषि नहिं वशिष्ट सुत आये ॥
क्षत्री याजक जहँ चंडाल अहै यजमान अयाना ।
कैसे देव भाग लैहैं सब हम नहिं करब पयाना ॥
यह सुनि विश्वामित्र कोप करि दीन्हो शाप प्रचंडा ।
होहि वशिष्ट कुमार भस्म सब यह दूषन कर दंडा ॥
मान नरम लगि नीच योनि लहि होहि स्वमांस अहारी ।
नट पुत्र जो है वशिष्ट को नाम महोदै धारी ॥

सो निपाद ह्वै है वहु जन्मनि सोइ मुह नाम उचारी।
अस कहि लाग्यो करन यज्ञ मुनि नृप त्रिशंकु सुखकारी॥
दोहा–भाग देन देवन सवन, आन्यो गाधिकुमार।
नहिं आये लखि देवतन, कीन्ह्यो कोप अपार॥
कौशिक तप वल तुरतहीं, कियो त्रिशंकु पयान।
पहुँच्यो स्वर्ग समीप जव, तव रोक्यो मघवान॥
रे गुरु विमुख त्रिशंकु नृप, गिरौ भूमि पुनि जाय।
नीचे शिर ऊरध चरण, गिरयो भूप दुख पाय॥

छन्द चौबोला।

विश्वामित्रहि दुखित पुकारयो त्राहि त्राहि मुनिराई
तिष्ठ तिष्ठ कहि गाधितनै तहँ रोक्यो तेहि वरिआई॥
महा तपोवल रचनलग्यो तहँ दूसर स्वर्ग महाना।
विविध देव नर पशु फल फूलहु अन्न रचे तहँ नाना॥
देखि द्वितीय स्वर्ग निर्माणत लै सुर सुरपति आयो।
कौशिक मुनि सों कह्यो वचन वर वृथा मुनीश रिसायो॥
जैसो कह्यो करैं हम तैसहि वचन प्रमाण तुम्हारे।
मम निर्मित सुर विटप अन्न पशु रहैं सदा नभ तारे॥
नृप त्रिशंकु सुरसरिस लहत सुख रहै अकाश सदाई।
अधाशिर ऊरध चरण चारु वपु तेज चमक चहुँघाई॥
एवमस्तु देवन सव भाषे गये भवन छविरासी।
विश्वामित्र प्रभाव आजलों रहत त्रिशंकु प्रकासी॥
अति निशंक सुंदर मयंक इव यदपि कलंकहि रासी।
विश्वामित्र विघन तप में लखि मनसे मानि उदासी॥
गयो तुरत पुष्कर कीन्ह्यो तप महा घोर तेहि काला।
ताही समय अवधपुर भयऊ अंबरीप महिपाला॥

लाग्यो करन यज्ञ विप्रन युत मख पशु हरचो सुरे
कह्यो विप्र सब पशु हेरहु नृप नहिं पाइहौ कलेशा ।
हेरत हेरत अंवरीप नृप भृगु तुंगहि चलि गयऊ ।
तीन पुत्र युत तहँ रिचीक मुनि दार सहित तप ठयऊ

दोहा—याच्यो यक मुनि सुत नृपाति, करिकै धर्म चपेट ।
लहुरो दियो न मातु तहँ पिता दियो नाहिं जेट ॥
नाम जासु सुनसेफसो, मँझिलो रह्यो कुमार ।
सो अपने ते कहत भो, मोकहँ लेहु भुआर ॥
लाख सुरभि दै नृपति तेहि, सुनसेफहि लै लीन ॥
अंवरीप डगरचो अवध, पुष्कर डेरा कीन ॥
मातुलहैं सुनसेफ के, विश्वामित्र उदार ।
सो विचारि मुनि को तनय, कीन्ह्यो जाय पुकार ॥

छन्द चौबोला ।

हैं मातुल हम शरण तुम्हारे राउर चरण अधारा ।
यहि अवसर नहिं मातु पिता मम तुमहीं हौ रखवारा ॥
अस कहि सचारि कही सिगरी जस अंवरीप ले आये ।
लाख गऊ लै मख पशु कीन्ह्यो जननि जनक यश गाये ॥
सुनि मुनि उर उपजी अति करुणा बही नयन जलधारा ।
लियो अंक बैठाय भगिनि सुत समुझायो बहु बारा ॥
शतौ आपने सुतन बोलि तहँ कौशिक वचन उचारे ।
याके बदले माहिं एक सुत होहु यज्ञ पशु प्यारे ॥
परम धर्म है पर उपकार सार यक वेद बखाने ।
ताते अंबरीप भूपति सँग जाहु पुत्र सुख माने ॥
सुनि पितु के अस वचन पुत्र शत कहे वचन रिसि साने ।
आने के सुत हेत आपनो पुत्र देहु का जाने ॥

दै निज सुत बध हित करियत ज्यों निज तन मांस अहारा।
इतना सुनत सुतन की वाणी मुनि भे कुपित अपारा ॥
तुरत शाप दै घोर महामुनि निज पुत्रन को जारा।
दियो मंत्र द्वै पुनि सुनसेफहि यहि विधि वचन उचारा ॥
यज्ञ यूप महँ जब तोहिं बांधिहि भूपति भगिनि कुमारा।
तेहि अवसर द्वै मंत्र पढ्यो तुम मिटी भूरि भय भारा ॥
अस कहि विदा कियो सुनसेफहि अंबरीप सँग माहीं।
यज्ञ यूप बांध्यो तेहि जबहीं पढ्यो सुमंत्रन काहीं ॥

दोहा–भे प्रसन्न हरि वासवहु, अभय कियो सुरराउ।
अछत गयो सुनसेफ घर विश्वामित्र प्रभाउ ॥

छन्द चौबोला।

भई समापति यज्ञ भूप की वासव बहु फल दीन्ह्यो।
महा विघन गुनि तहँ महा मुनि जाय अंत तप कीन्ह्यो ॥
पूरण सहस वर्ष बीते जब करत महा तप ताके।
आय देवपति देव सहित कह तुम ऋपि हौ वसुधाके ॥
विश्वामित्र बहुरि बिमनस ह्वै करन लग्यो तप घोरा।
वासव मोहिं नहिं कह्यो ब्रह्मऋपि नहिं जान्यो श्रम मोरा ॥
एक समय सुंदरी अपसरा तहां मेनका आई।
मज्जन करत ताहि लखि कौशिक मोह्यो तप बिसराई ॥
ह्वै कंदर्प दर्प के वशमहँ ल्यायो कुटी लेवाई।
सेवक सरिस कियो सत्कारहि राख्यो सदन टिकाई ॥
करत विहार मेनका के सँग बीतिगये दश वर्षा।
जान्यो जात काल कौशिक नहिं भयो विघन उत्कर्षा ॥
[illegible] देवन कृतकरमा।
[illegible] कह्यो गयो सब धरमा ॥

शाप देत मुनि डरपत सनमुख खड़ी मेनका प्यारी।
विदा कियो मेनका महामुनि मंजुल वचन उचारी॥
कौशिक जाय कौशिकी के तट महाघोर तप ठा
वीते वर्ष सहस्र करत तप सहत शोक दुख नाना
डरे देव सव आय कहे तुम भये महर्षि मुनीशा।
पुनि विरंचि तेहि कह महर्षि सुख कृपा योग जगदीश

दोहा—मुनि वोले नहिं ब्रह्मऋषि भये कौन अपराध।
विधि कह इन्द्रीजीत नहिं, यही कियो तोहिं वाध॥

छन्द चौवोला।

अस कहि गये विरंचि ब्रह्मपुर मुनि ठान्यो तप घोरा।
निरालंव ऊरध भुज ठाढ़ो भक्षत पवन झकोरा॥
ग्रीपम ऋतु तापत पञ्चागिनि वरपा रहत उघारे।
शिशिर सलिल महँ रहत याम वसु वीते वर्ष हजारे॥
करत महातप गाधि सुअन कह भयो देव संतापा।
रंभा को वोलाय वासव अस वोल्यो वचन अमापा॥
विश्वामित्र महातप को तप करहु विघन तुम जाई।
जोरि पाणि पंकज रंभा तहँ वोली वचन डेराई॥
मोहिं शाप दे भसम करी हठि कृपा करहु सुरराई।
शक्र कह्यो जव काम संग है का करिहैं मुनि राई॥
जाहु वसंत काम रंभा सँग मुनि तप देहु नशाई।
चली चारु रंभा नाशन तप काम वसंत लेवाई॥
भयो वसंत विपिन मंजुल महि फूलन सेज विछाई।
कोकिल कलरव नचन लगीं तहँ सुर सुंदरी सुहाई॥
हन्यो पंचशर मुनिहिं महाशर कौशिक नयन उघारा।
जानि शक्र कृत कर्म कोपि अति रंभै शाप उचारा॥

रंभा तू पषाण ह्वै है हठि दश हजार भरि वरषा।
तोहिं उधार करिहै वशिष्ठ मुनि तब पैहै पुनि हरषा॥
रंभै शाप देत मनसिज लखि भग्यो वसंत समेतू।
कही जाय सिगरी निज करणी रंभा शाप अचेतू॥

दोहा—इतै महामुनि मन गुन्यो, कोप कियो तप घात।
तातै कोप शरीर ते, दूरि करौं भल बात॥
नहिं बोलिहौं टरिहौं नहीं, सोपिहौं श्वास शरीर।
नहिं ह्वैहौं ब्रह्मर्षि मैं, तबलों सहिहौं पीर॥
करि अस कौशिक नेम मन, सहस वर्ष को धीर।
दुराधर्ष तप करत भो, चलि गङ्गा के तीर॥
त्यागि हिमाचल गाधि सुत, पूरुब दिशा सिधारि।
सहस वर्ष लों मौन व्रत, कीन्ह्यो मनहि बिचारि॥

छंद चौबोला।

रह्यो काठ इव अचल महामुनि देव विघ्न बहु कीन्हे।
तदपि क्रोध उपज्यो नहिं उर में महा मौन व्रत लीन्हे॥
बीते वर्ष सहस्र वित्यो व्रत अन्न खान कछु लाग्यो।
आयो वासव विप्र रूप धरि याचन को अनुराग्यो॥
दीन देखि दीन्ह्यो व्यञ्जन सब कौशिक कियो न कोपा।
कह्यो न कछु पुनि मौन धारि व्रत तप पथ महँ पद रोपा॥
आसन अचल मौन व्रत धारे रह्यो रोकि पुनि श्वासू।
तपत महातप श्वास रोकि मुनि घ्यावत रमा निवासू॥
बीते वर्ष हजार कौशिकहि कढ्यो धूम शिर तेरे।
जरन लग्यो ताते त्रिभुवन सब लोकन परे अँधेरे॥
... ष अहि गंधर्वहु सब भे व्याकुल भूरी।
... कै त्यागि गरूरी॥

अति कसमसत जरत तन धाये गे विधि लोक दुखारी।
जोरि पाणि पंकज सब भाषे सुनहु विनय मुख चारी॥
लोभ करायो क्रोध करायो बहुविधि गाधिकुमारै।
बढ़त गयो दिन दून तासु तप नेकहु नहिं हिय हारै
जो नहिं तासु मनोरथ पूरण करिहौ तुम चतुरानन।
नाशन चहत भुवन तप तेजहि ज्वाला उठति दिशानन
क्षुभित सिंधु धरणी नित कंपति मारुत वहत कठोरा।
फूटन चहत धराणि धर धसकत बढ्यो तेज तप घोरा॥
दोहा–जबलों निज तप तेज ते, दहै न भुवन मुनीश।
तबलों तासु मनोरथहि, पूरण कीजै ईश॥
देवराज की राज जो, माँगै गाधिकुमार।
तौ हमरौ संमत अहै, दीजै विनै विचार॥
सुनि अलेख लेखन वचन, गुनि अशेष तप शेष।
करन रेख ब्रह्मर्षि की, विधि आयो विन द्वेष॥

छंद चौबोला।

विश्वामित्रहि बद्यो वचन वर अब ब्रह्मर्षि भये हौ।
अति तोषित तुम्हरे तप ते हम धनि धनि धरणि जये हं
है कल्पांत तिहारी आयुष तदपि स्वच्छन्दहि मरना।
जात अहैं हम लोक आपने सुखी रह्यो सुख भरना॥
सुनि विरंचि के वचन महा मुनि कीन्ह्यो दंड प्रणामा।
कह्यो विरंचिहि वचन जोरि कर सिद्धि कियो मनकामा॥
जो प्रसन्न तुम होउ दयानिधि जानहुँ मोहि प्रशांता।
तो परब्रह्म वपुष प्रतिपादक दीजे वेद वेदांता॥
क्षत्र धर्म विद वेदब्रह्म विद मुनि वशिष्ठ तुव सूना।
कहहिं मोहिं ब्रह्मर्षि हर्षि हिय करहिं नेह दिन दूना॥

सुनि मुनि वचन देवगण धाये तुरत वशिष्ठहि ल्याये ।
विश्वामित्र वशिष्ठ दुहुँन की अतिशय प्रीति कराये ॥
कह्यो वशिष्ठहु विश्वामित्रहि तुम ब्रह्मर्षि भये हौ ।
जगत् चराचर अपने तप बल सति २ जीति लये हौ ॥
सुनि वसिष्ठ के वचन विनोदित विश्वामित्र सुखारी ।
पूजन कियो वशिष्ठहि गुरु गुनि सुनहु राम धनुधारी ॥
यहि विधि भये ब्रह्मऋषि कौशिक कथा सकल मैं गाई ।
येई रघुपति मुनिन शिरोमणि तपमूरतिमनभाई ॥
धर्म धुरंधर तेज तरणि इव विश्वामित्र मुनीशा ।
धन्य धन्य तुम धन्य बंधु दोउ नित नावहुँ तेहि शीशा ॥
दोहा—अस कहि गौतम को सुवन मौन भयो मतिमान ।
राम लषण मिथिलेश युत, सुनि गाथा हरषान ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वंयवरे विश्वामित्र चरित्र वर्णनो नाम षोडशः प्रबंधः ॥ १६॥

दोहा—जोरि पाणि पंकज हरषि, कह्यो बहुरि मिथिलेश ।
धन्य धन्य प्रभु गाधिसुत, सत्य धर्म तप वेश ॥

छंद चौबोला ।

मोहिं धन्य कीन्ह्यो धरणी महँ धर्म धुरंधर नाथा ।
धनुष यज्ञ देखन मिसि आये सहित लषण रघुनाथा ॥
किये देश घर । कही नहिं जाई ।
महाई ॥

सुनत रावरो चरित तोप नहिं होत श्रवण सुख पूरे॥
बीति गये युत याम दिवस के क्षण सम परचो न जानी।
ढरे भानु पश्चिम आशा कहँ सुनहुँ विनय विज्ञानी॥
पाय रजायसु जाउँ भवन कहँ ऐहौं बहुरि प्रभाता।
पैहौ दरप देखि पद पंकज सहित नवल दोउ भ्राता॥
अति प्रसन्न ह्वै कह्यो गाधिसुत भली कही मिथिलेशू।
गवनहुँ राज राज मंदिर कहँ मैं रहिहौं यहि देशू॥
सुनि सुनि वचन मुदित मिथिलापति मुनि पद कियो प्रण
आशिष लै दीन्ह्यो परदक्षिण गयो हरपि निज धामा॥
वस्तु अनेक विशेष विमल वर बहु विदेह व्यवहारा।
पठयो विश्वामित्र मुनीशहि तैसहि राज कुमारा॥
सतानंद पुनि आय मुनीशहि रघुपति लषण समेतू।
सादर सपदि लेवाय जाय दिय डेरा बिमल निकेतू॥

दोहा—अति रमणीय विशाल वर, गृहा राम अभिराम।
बसे महातप धाम मुनि, सहित लपण श्रीराम॥

चौपाई।

कथा मनोहर अति अब आई। ताते रचन चहौं चौपाई॥
चौपाई सम छंद न आना। सुभग मधुर पद लै विधि नाना॥
लहि मिथिलापति अति सतकारा। भे प्रसन्न मुनि नृपति कुमारा॥
करि सेवा मुनि की दोउ भाई। भोजन कीन स्वाद समुदाई॥
सुभग सेज करि कछु विश्रामा। उठे राम दिन रह यक यामा॥
भूपण वसन पहिरि तेहि काला। वाण शरासन लसत विशाला॥
कौशिक निकट गये दोउ भाई। लहि आदर बैठे शिर नाई॥
मुनि निहारि नख शिखसुठि शोभा। नहिंअघात निरखत मन लोभा॥
मुनि मंडली तहां जुरि आई। लगे कहन मुनि कथा सोहाई॥

रुव जनक वंश प्रभुताई । जनक नगर की सुंदरताई ॥
दोहा–जनक नगर शोभा सुनत, स्वर्ग न जासु समान ।
लखन लालशा लपण की, लाखन विधि अधिकान ॥

कवित्त ।

मैथिलानगरशोभादेखनकोलोभाचित्तमुनिकेसकोचबशकहतिनबातहै ।
तैसे जेठबंधुरघुनायकसकोचपायलाजलरिकाईकीअधिकअधिकातहै ॥
रघुराजमुनिनसमाजअभिलापतैसीजानिकैमनोरथमनहिंसरसात है ।
उरतेउठतकंठआइकेफिरतनटबटकोतमाशोलखिरामसुसकात है ॥
दोहा–जानि लखन पुर लपण रुख, प्रभु नेसुक मुसकाय ।
जोरि जलज कर कहत भे, मुनि सों पद शिर नाय ॥

सवैया ।

नाथ कछू विनती सुनिये रघुराज चहै लघु बंधु हमारो ।
पाय रजाय तिहारी प्रसन्नसों देखहुँ में मिथिलापुर सारो ॥
मोहिं लजाय डरै तुमको प्रभु ताते कछू नहिं बैन उचारो ।
जाऊँ लेवाय लै आऊं देखाय पुरी यदि शासन होयतिहारो॥
युक्ति के बोरे पछोरे पियूप के बैन निहोरे कह्यो रघुराई ॥
सो सुनि गाधिकुमार विचारि कह्यो सुख अंबुधिचित्तडुबाई॥
जाहु लला लपनै संग लै पुर देखहु पै न कियो लरिकाई ॥
राखो नहीं तुम जो मरयाद कहौ मुनि दीन बसें कहँ जाई ।
दोहा–सुनि मुनि वचन मुदित मन, पुरुप सिंह रघुवीर ।
धर्म धुरंधर वंदि गुरु, चले रुचिर रणधीर॥

कवित्त सवैया ।

शिर चौतनी चारु विचित्र बनी मणि मोतिन की लर त्यों लहरै।
छवि सिंह मनोहर मूरति सो छनही ोणिछटाछहरै ॥
युग कंधन

रघुराज गरीब नेवाज दोऊ अवलोकन काज चले शहरै ॥
पट पीत विराजि रहे कटि में तन कोटिन कामके दर्प दहै।
उर मोतिन माल विशाल लसै करवाल करालजे शत्रु जहै ॥
झनकारी मची पग नूपुर की जिनको सुर सिद्धमुनीशचहै।
अवधेश के डावरे साँवरे गौर करैं मन वावरे पंथ गहै ॥

दोहा--तिलक रेख राजति रुचिर, सुंदर भाल विशाल।
मनहुँ अष्टमी नखत पति, पहिरयो चंपक माल ॥
घुँघुवारी अलकैं लटकि, हलकैं छलक कपोल।
मनु अरविंद मरंद हित, अलि अवली अति लोल ॥
कारी कारी अहिन सी, भृकुटि लहै श्रुति संग।
उपजत विनशत फलत जग, लहि नेसुक जिन भंग ॥
छहरति हँसनि मरीचिका, महि मंडित चहुँ ओर।
मुख मयंक लखि आजु पुर, ह्वै है सकल चकोर ॥
कटि निषंग धनु वाम कर, दाहिन फेरत वान।
मोल लेन जनु जात हैं, जनक नगर जन जान ॥

चौपाई।

पुरुष सिंह सुंदर दोउ भाई। पहुँचे पुर फाटक जब जाई
ऋषिन भीर रणधीरन संगा। नगर विलोकन भरी उमंगा
रहे कोट पुर वाहर जेते । देखि युगल जोरी तब तेते"
ठाढ़े भये आय पथ आई। निज निज सब कारज बिसराई॥
देखि मनोहर मूरति जोरी । त्यागे पलक भई मति भोरी ॥
कहते कौन भूप के ढोटा । आये इत अपूरब जोटा ॥
कोउ कह दोउ अश्वनी कुमारा। चहत स्वयंबर नयन निहारा॥
कोउ पूछहि मुनि जनन बोलाई। कुँवर कौन के देउ बताई ॥
केहि कारण मग पग चलिआये। गज तुरंग रथ क्यों नहिं ल्याये"

कौने भाग्यवंत के जाये। मानहुँ विधि निज हाथ बनाये॥
जो कोउ तिनहि बतावन लागे। ते धनि कहत अवधपति भागे॥

दोहा-एक एकन ते कहत महँ, फैली खबर अपार।
आवत देखन नगर दोउ, सुन्दर राज कुमार॥

कवित्त घनाक्षरी।

कहैंएकएकनतेतेऊएकएकनतेखबरखुश्यालीभै महल्लन महल्ला हैं।
नवलकिशोरदोऊचारुचितचोरअबआवैंयहिओरठौरठौरजोरहल्लाहैं॥
रघुराज देखनउमंगभरेनारीनर त्यागेसंगछाकेरंग अंगन उतल्ला हैं।
गलिनमेंगल्लावृन्दअलिनविहल्लापूछैंकौनकेमहल्लामध्यदशरथलल्लाहैं॥

दोहा-जो जोहत सो जकि रहत, नैननि पलक नेवारि।
चित्र पूतरी से भये, जनक नगर नर नारि॥
देख्यो गोपुर जनकपुर, बनक बिकुंठ समान।
तनक हीन नहिं विधि रचनि, कनक कलश असमान॥
नृपबालक प्रविशत नगर, धाये बालक वृन्द।
पुरपालक आगू लिये, नहिं मालक मतिमंद॥

सवैया।

छोटे बड़े पुरवासी सबै लखें रूप अनूप सु भूप किशोरन।
मेचक कुंचित केश मनोहर चंचल नैनन चित्त के चोरन॥
श्री रघुराज चलैं मग मंद अनंद उदोत करैं सब ठोरन।
खूब खुशी के खजाने खुले पुर धावन धावन खोरन खोरन॥
विज्जु छटा ज्यों घटा घन में तिमि ऊँची अटान चढींपुरनारी।
धाम को काम विसारि बधू युगबंधु विलोकहिं होहिं सुखारी॥
श्रीरघुराज के आनन अंबुज भे अलि अंबक आसु निहारी।
पावें यथा सुर पादप को यक बारही भाग ते भूखे भिखारी॥
झांकैं झुकी युवती ते झरोखन झुंडनि ते झरफैं करटारी।

देखि मनोहर सुंदर रूप अचञ्चल कीन्हें दृगञ्चल प्यारी॥
श्रीरघुराज सखीन समाज में लाज को काज परै ननिहारी।
आपुस में वर वैन भनै सखि आजु लही फल आंखि हमारी॥
भाखतीं चाखतीं शोभ सुधा रस कोई नहीं अस है तनधारी
जोहरी होत न चारि भुजा तौ समान कही इनके अनुहारी॥
बूढ़े महामुनि शांत उपासी चलाइये क्यों चरचा मुखचारी।
श्रीरघुराज सुनो सखि सत्य अहै तिमि आनन पंच पुरारी॥
देवन के पलकैं न परैं दृग तैसहि दैत्य भयङ्कर भारी।
देखे हजारन राजकुमारन आये स्वयंवर कारण कारी॥
श्री रघुराज हमारे विचार सुधाधर से मुख मंजु निहारी।
कैसे अनङ्ग लहै समता जेहि अङ्गन जारि दियो त्रिपुरारी॥
दानव मानव देव अदेवहु देखे न काहि विदेह पुरी में।
पूरुब गाथ पुराणन में सुनि ताते कहौं सखि बात फुरी में॥
श्री रघुराज स्वयंवर के दिन ऐहैं नरेश समाज जुरी में।
ता दिन देखि परी सब की छवि कौन मिली इनकी मधुरी में॥
सो सुनि बोली द्वितीय सखी टक लाये कुमारन के मुख माहीं।
ते कवि क्रूर कुबुद्धि सही जिन आनन इंदु समान बताहीं॥
पक्ष घटै पुनि पक्ष बढ़ै त्यों कलङ्क मढ़े रहे रोगी सदाहीं।
मों मन आवत श्रीरघुराज इन्हैं लखि लाजि बसै नभ माहीं॥
कौनो सखी पुनि बोली विनोदित सत्य सखी है विचार हमारो।
शंभु विलोकी इन्हैं कबहूँ समता करतो कछु दोखके मारो॥
सोई विचारि बड़ो अपराध प्रकोपिकै तीसर नयन उघारो।
श्री रघुराज मनोज को मौज उतारि भेट दई मार को जागे॥
और कह्यो सजनी शुनिकै पुनि कौनके टाट मढ़ा छवि छावै।
कौन है नाम त्यों ग्राम है कौन कहां केहि कारण कौन पठावै।

कैसे रहे जननी जनकौनहिं नेसुक नयन दया रस लाये।
श्री रघुराज सुकोमल पायँन जात चले चख चित्त चोराये॥
दूसरी बोली सुनो रघुराज अहैं अवधेश नरेश के ढोटे।
कौशिक ल्याये मखेहित रक्षण खेत खपाय दिये खलखोटे॥
गौतम नारिकोतारि तुरंतहि आये विदेह पुरी भल जोटे।
श्याम को नाम कहैं सब राम कहैं लषणै अस बंधु जो छोटे॥
धन्य है कौशिला राम प्रसू लषणै जननी सो सुमित्रा कहावे।
आली इन्हें अवलोकि कै आँखिन और कहो किमिनयनसमावे॥
श्री रघुराज सखीन समाज में आज मोलाज कोकाज परावे॥
जाति चली अब रोकि गली मिलों छैल छलीको भलीयहभावे॥

दोहा–विप्र काज करि बंधु दोउ, आये नगर विदेह।
यक विदेह यहि पुर रह्यो, इन किय अमित विदेह॥

सवैया।

पुनि कोई तहां लखि राजकिशोरन बोलि उठी मधुरी बतिया,
सखि येई सुबाहु मरीच हते नहिं लागत सत्य किहू भँतिया॥
रघुराज महा सुकुमार कुमार हमार हरे हिय को गतिया।
निशिचारिन संग लड़ावत में कस कौशिक की न फटी छतिया॥
अपरा अलि सो सुनि बैन कह्यो सखि जौन भयो सो भलो ह्वै गयो।
विधि बैठे विदेह के कंठ इन्हें सिय व्याहैं विशेष तो मोद मयो॥
यह शामल राज कुमार सखी वर जानकी योगहि जन्म लयो।
रघुराज तथा मिथिलापुर राज अकाज यही जो न काज भयो॥
कोई कह्यो रघुराज सुनो दुख होत अरी क्षणहीं क्षणहीं मन।
भूप विदेह प्रतिज्ञा करी तुम जानती हो सिगरी सजनी जन॥
सो तजिहैं किमि चित्त कठोर चितै चित चोर किशोरन के तन।
जो न कियो परनै पन पेलि पषान परैं पुहुमी पति के पन॥

दोहा—जन्म अनेकन की सुकृति, जो कछु होइ हमार
तौ व्याहै वर जानकी, सुंदर श्याम कुमार ॥

सवैया ।

सो सुनि कोपि कही कोउ कामिनी नेक नहीं सखि भेद लहैहै।
कौशिक पै मिथिलेश पधारि लेवाय टिकाय दियो वर गेहैं॥
श्री रघुराज विचारिकै ताते कहौं हिय से नहिं मोहिं संदेहै।
कौशल राज कुमार को छोड़ि कहौ मिथिलेश सिया केहि देहै

दोहा—रूप मनोहर बंधु दोउ, जो नहिं भूप लोभान।
तौ झूठहि कहवावतो, विश्व विदेह सुजान॥
ऊँचो अंचल ओढ़ि कोउ, कहति विरंचि मनाय।
श्याम कुँवर व्याहै सिया, यह सुख देहु देखाय॥

सवैया ।

कोऊ कहै रघुराज सखी यह सूरज सो रुचि श्याम कुमार है।
चंद सो गौर लसै लघु बंधु मनोजहु को मद मोचनहार है।
देखि इन्हैं गुनि त्यों पन भूप को लागति री हिय में अति हार है॥
लैपुरवासिन की विधि पुण्य करै सबको हमरो उपकार है।
कोऊ कहै कर जोरि कै ऊरध शंभु स्वयंभुविनै सुनि लीजे।
हे भुजचारि मुरारि रमा पुरवासिन के अब प्रेम पतीजे॥
शारदा गौरि मनोरथ पूरहु दीनता देखि यही वर दीजे।
श्रीरघुराजसु श्याम कुमारको जानकी व्याह विशेषि करीजै॥
नैन लजाते हिये पछिताते बताते सुबैन कही सखि सोई।
येकन घाते हमैं मिलि जाते देखाते स्वरूप महा मुद मोई॥
जो मदिनाते विवाद भयो तो दोऊ रघुराज सुभाते सदोई
ये मिथिला तिन नैं हैं कहूँ ससुरार के नाते लखो सब कोई॥

दोहा—कोई सखि बोली तहां, किलकि कामना पूरि।
जो अभिलाषा तुम करी, देव करी नहिं दूरि॥
अपर अली बोली बहुरि, कही सखी अति नीक।
होइ श्याम सिय व्याह जो सकल सुकृत फल ठीक॥

सवैया।

कोई कही मटकाइ के नैन चढ़ाइ के भौंह सुशीश डोलाई।
तू ना सुनी री प्रभाव कुमार को भापति हौं जोपैहौं सुनि आई॥
येई अबे गये गौतमकी कुटी सो इनके पग की रज पाई।
श्रीरघुराज भयो बड काज अहल्या सु पाहन ते प्रगटाई॥
सो सुनि कै कछु खेद भरी सुकुमारता लालन की लखि गाई।
श्रीरघुराज कहो सिधि काज लखै हम आजुही कौन उपाई॥
शंभु कोदंड कठोर महा नव राजकिशोर सुकोमल माई।
क्यों प्रण छोरिहैं तोरिहैं चाप बहोरिहैं संदुर सीय के आई॥
कोई कह्यो धरो धीरज धाम में राम हमैं सुख बोरिहैं बोरिहैं।
सोमिथिलाधिप को पन बंधन वीर विशेपि कै छोरिहैं छोरिहैं॥
श्रीरघुराज समाज के मध्य महीपन को मद मोरिहैं मोरिहैं।
श्याम महा अभिराम विना श्रम शंभु शरासन तोरिहैं तोरिहैं॥
विश्व की सुंदरताई समेटि कै चंद सुशीलता तासु मिलाई।
कोमलता लियो कल्पलता की छमा क्षिति छीन दियोतेहिछाई
जौन विरंचि रची सिय मूरति श्रीरघुराज भरी निपुणाई।
सो विधि साँवरी मूरति सोहनी मोहनी मंजुल दीन्ह्यो बनाई॥

दोहा—नहिं संशय कछु कीजिये, हठि करिहै विधि व्याह।
मिथिलापुर वासिन हमें, होई अवशि उछाह॥
सुनि सिगरी ताके वचन, बोलीं एकहि बार।
होइ ऐसहो ऐसही, यही करै करतार॥

पुरवासिन नारिन कहत, ऐसे बहु विधि बैन ।
राजकुँवर निरखत नगर, मंद मंद भरि चैन ॥

छंद हरिगीतका ।

जहँ जात राजकुमार पथ पुर वार संग अपार हैं ।
तहँ वार वार अनेक वार अनंद ढारत धार हैं ॥
करि अमितसतकारन हजारन युवति वृन्द निहारहीं ।
ऊंचे अगारन लगि केवाँरन नैन पलक नेवारहीं ॥
वरषहिं प्रसूनन वृन्द उमँगि अनंद श्रीरघुनंद पै ।
कहुं मंद सुरभित सलिल नलिका झरहिं गवन गयंद
आगे वतावत पंथ वालक लाल यहि मग आइये ।
यहि ओर कौतुक विविध विधि निज अनुज को दरशा
चितवत चहूं कित चारु नगर प्रयात अमित सोहात
मनु छविपुरी महँ मार अरु शृंगार वपु दरशात हैं ॥
कंचन कलश विलसत विमल मानहुँ गगन तारावली
फहरत पताके तुंग चमकत चारु जनु तड़ितावली ॥
फावित फटिक की फरस फाटक हाटकी हिय हारने
फैलत फुहारन सलिल सुरभित द्वार द्वार हजारने ॥
मनु काम कर निरमान विविध दुकान धनद धनीन के
पन्ना पदिक तिमि पदुम रागन राशि लाग मनीन को ॥
कंचन कपाटन ठटे ठाटन वाट वाटन द्वार हैं ।
सरसीन घाटन हेरि हाटन मुदित राज कुमार हैं ॥
कहुँ चलत चारु तुरंग मत्त मतंग एकहि संग हैं ।
कहुँ नगर अंगन नृपन की चतुरंग वदित उमंग हैं ॥
ऊंची अटा शारद घटा सो कलित गोरे
गोखे गवाक्षहु छजत छज्जा देव

पिक मोर सुकहुँ कपोत जिनके लसत सत्य समान हैं।
बहु विहँग बैठहिं निकट परसत जानि उड़त डेरान हैं॥
जहँ लखहु तहँ चौहट्ट मंदिर ठट्ट विशद बजार हैं।
राजत कनक सब वस्तु पूरित विविध अन्नागार हैं॥
जेहि बाट गमनत राजसुत तहँ तहँ लगत जन ठाट हैं।
हर हाट में बर बाट में घर घाट में नहिं आट हैं॥
अमरावती अलकावती पदमावती नहिं सरि लहैं।
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर पुरी को सम कहैं॥
निरखत नगर हरखत कुँवर बरखत सुमन सुर वृन्द हैं।
वैदिक महीसुर पढ़त मंगल जैति रघुकुल चंद हैं॥

दोहा–पुनि पूरबदिशि गवन किय, उभै बंधु रणधीर।
पंथ बतावत संग में चली बालकन भीर॥

छंद गीतिका।

कोउ कहत बालक इतै आवहु युगुल राज कुमार।
तुमको देखावहिं जहँ स्वयंबर होनहार अवार॥
प्रभु चले बालक संग पीछे भरे लषण उमंग।
देखे धनुप मख भूमि चलि जेहि लसत लजत अनंग॥
अति विशद थल सम मध्य गच बिल्लौर की मनु नीर।
बिलसत वितान महान झालर झुकी मुकुतन भीर॥
चहुं ओर परम उतंग मंच विरंचि विरचित भूरि।
नहिं कतहुँ रंचक जन विसंचक संच कर नहिं दूरि॥
तिनके तहां पाछे कछुक मंचावली यक ओर।
जेहि माँह बैठहिं जानपद संकेत होइन ठोर॥
पाछे तिनहुँ के धवल धाम विदेह दिय बनवाय।
पुर नारि बैठि निहारि कौतुक लहें मोद निकाय॥

सोहत रजत के मंच छड बैठक कनक के भूरि।
कलसी कलित रतनावली तेहि भरे चंदन चूरि॥
वासव निवास विलास सम कीन्हे निवास प्रकास।
हठि हेरि होत निराश विशुकरमा निपुणता भास॥
प्रभु पाणि पंकज पकरिं बालक देत सकल देखाय।
पूछेहु विना पूछेहु बनक थल देहिं विविध बताय॥
बालक बतावन व्याज प्रभु कर करत परस तुराय।
मुसकाय कबहुँ लजाय कबहुँ बताय आगू जाय॥
रचना स्वयंबर भूमि की लखि करत कौतुक नाथ।
जकिसे रहत ठगिसे रहत हरि हेरि मींजत हाथ॥
लपणहिं बतावत विविध विधि कोदंड मख संभार।
मानत मनहि माहि आय निज कर कियो कुलि करतार॥
कोउ कहत बालक प्रभुहिं निकट बोलाय पाणि उठाय।
तुम कतहुँ देखे अस नहीं अस मोहिं परत जनाय॥
अवधेश राज कुमार सुनियत साहिबी शिरमोर।
मिथिलेश राज विभूति देखो छुअति छादन छोर॥
प्रभु कहहिं कमला अतिहि चंचल भै अचंचल आप।
हमरे दृगंचल टरत नाहिं दिगंचलौ टरि जाय॥
इन भवन सम नहिं भुवन महँ कहुँ गगन मन नहिं देखि।
लक्ष्मी रमण गिरिजा रमण मोहत बिलोकि बिशेखि॥

दोहा—जाके भृकुटि बिलास ते, उपजत बनत नसान।
भक्ति बिवश सो जनकपुर, नाचत लखन भगवान॥
पद प्रत्यक्ष देखहु सबै, रघुपति भक्ति प्रभाव।
ऐसन भाग सनेह सों, कौन भक्त को गाव॥
पुनि आई मन महँ सुरति, कहि [illegible]

बीति गये युग याम इत, निरखत पुर लवलीन ॥
मुनि अनखैहैं अवशि अब, जेहैं जो न तुराय ।
लषण लाल चलिये भवन, अस्त होत दिनराय ॥
लषण सुनत प्रभु के वचन, चले नाथ के संग।
करी विदा बालकन की, राखत प्रेम प्रसंग ॥
यह अचरज देखहु सबै जाको डरहु डेराय।
सो कौशिक डर मानि मन, जात चले अतुराय ॥
सभे सप्रेम विनीति अति, सकुच सहित दोउ भाय ।
गुरु पद पंकज शीश धरि, बैठे आयसु पाय ॥
संध्या समय विचारि मुनि, आयसु दीन उदार ।
नित्यनेम संध्या करहु, श्रीअवधेश कुमार ॥
मुनि शासन सुनि कुँवर दोउ, संयुत मुनिन समाज ।
संध्यावंदन सविधि तहँ, किये युगल रघुराज ॥
करि संध्यावंदन विमल, मुनि समीप पुनि आय ।
राम लषण बैठे मुदित, गुरु पद शीश नवाय ॥

कवित्त।

शीशसौंपिपाणिपोंछिपीठहिअशीषदैकैपूछयोमुनिकौशिकनगरहेरआयेहाल
कहांकहांबागेकहांकहांअनुरागेअतियामुनिआगेकहैलघनमाल्यमनोविशाल
रघुराजमिथिलाधिराजकेमहलदेखेलेखेकौनन्मोकनैनिहारनकोबिकशाल
बीथिनबजारनअगारनहजारनमेंपुरनरनारिनकोआनंदहोकरिहाल ॥
जोरिपाणिबोलेरघुबीररणधीरदोऊकरतफनेसबसुभाईअतिवनीर ।
देखेहैंहजारनअगारनबजारननेभूमिदेखेसुभारनदृगौदीसंरनीनीर ॥
रघुराजरंगभूमिदेखेहैंलखपन्नरकौनदेखनोहैंगनभोननहांनिधिअतीर ।
शिष्यरावरेकेजबवेशनूकहाबेजोतोपैदिनरानसेबैठेवलसैवनदीर ८

दोहा—सुनि रघुनंदन के वचन, मन्द मन्द मुसक्याय।
मुनिन वृन्द मधि गाधिसुत, कह अनंद उर छाय॥
जो नहिं राखहु राम तुम, सकल जगत मरयाद।
तौ संहिता पुराण श्रुति, वृथा किये वहु वाद॥

चौपाई।

कौशिक मुनि की मति हुलसानी। कहन लगे पुनि कथा पु
मूल पुरुष निमि नृप ह्वै गयऊ। ताते जनक वंश यह भयऊ
सुनहु राम निमि कुल की गाथा। पैहौ मोद मुनिन के साथा
एक समय निमि भूप उदारा। यज्ञ करन को किये विचारा॥
कह्यो वशिष्ठहि वेगि वोलाई। यज्ञ करावहु गुरु सुखदाई।
कह वशिष्ठ सुन निमि नरनाहा। मख हित मोहिं वोल्यो सुरनाहा॥
मैं वासव कहँ यज्ञ कराई। तुमहिं करैहौं ऋतु इत आई॥
अस कहि गे वशिष्ठ सुरलोका। निमि नरेश के उपज्यो शोका॥
सुरपति सों वहु सम्पति पावन। गे गुरु वासव यज्ञ करावन।
तज्यो मोहिं गुरु लोभ वढ़ाई। यह कैसे हम से सहिजाई॥
अस गुनि कीन्ह्यो यज्ञ अरंभा। समुझि महीप गुरू कर दंभा॥
आधी यज्ञ भई जेहि काला। आयो गुरु दिवि ते रघुलाला

दोहा—यज्ञ करत निमि को निरखि, गुरु वशिष्ठ किय कोप।
दई शाप निमि भूप को, होइ तोर तन लोप॥

चौपाई।

निमि राजर्षि विनहिं अपराधा। पाय शाप करि कोप अगाधा॥
दीन्ही शाप गुरू कहँ घोरा। लोभी तन अव रहै न तोरा
गुरु चेला किय शाप प्रकाशा। मुनि नृप तन कर भयो विनाशा।
कछुक काल महँ पुनि रघुराई। मित्रावरुण वीर्य घट पाई॥
मुनि वशिष्ठ लीन्ह्यो अवतारा। निमि को देवन वचन उचारा॥

मि नरेश तुम धरौ शरीरा। प्रविशहु तेहि मिटिहै सब पीरा॥
मि कह नाहिं ह्वैहौं तन धारी। मैं रहिहौं सब भांति सुखारी॥
हे तन तजन हेत मुनिराई। हारि सुमिरत बहु करत उपाई॥
गुरु कृपा विवश तन छूटो। को मो सम शठ जो फिरि जूटो॥
। प्रसन्न भये निमि पाहीं। वास दियो तेहि पलकन माहीं॥
ळक निमेपन अरु उनमेपन। निमि वश रहत राम यह श्रुति भन॥
ग्रो धरयो निमि नृपति शरीरा। मथन कियोतेहि मुनि मति धीरा॥

दोहा—जेहि शरीर ते पुरुष यक, प्रगट भयो तेहि काल।
तेजवंत छविवंत अति, मनहुँ सत्य दिगपाल॥
तीन नाम ताके धरे, मुनिजन योग विचार।
सुनिये राज कुमार सो, मैं सब करौं उचार॥
भयो जन्म ते जनक सो, विन तन भयो विदेह।
भयो मिथिल सोइ मथन ते, मिथिला रच्यो सनेह॥
ताते जे यहि वंश में, होत नरेश प्रवीन।
मैथिल जनक विदेह तिन, कहत नाम जग तीन॥

ोरठा—कहे कथा यहि भांति, मुनि समाज मधि गाधिसुत।
विती याम युग राति अलसाने कौशल कुँवर॥
मुनिवर आलस जानि, कह्यो राम अभिराम सों।
शयन करहु सुखसानि, हमहुं शयन करिहैं लला॥
अस कहि उठे मुनीश पौढ़ि गये कुश सेज पर।
सुमिरि चरण जगदीश सुखित शयन कीन्हे तहाँ॥
युगळ वंधु तहँ जाय, लगे चरण चापन करन।
अति अचरज उर लाय, कहत देव देखत ह्गन॥

कवित्त।

जाकी पदरेणु चित्त चाहि के स्वयंभु शंभु।
शिर में धरन हेत नेति नेति ठाने हैं।

योगी जन जनम अनेकन वितावैं नाहिं पावैं,
करि योग याग युक्ति वहु आनै हैं ॥
भनै रघुराज आजहूं लौं अन्त पाये नाहिं,
नेति नेति वेद औ पुराणहूं वखानैं हैं।
ओई प्रभु विप्र चारु चापत चरण निज,
कोमल करन धन्य धन्य भगवानै हैं ॥

सवैया।

हैं नख दीरघ चारिहूं ओर कढी कितनी तरवान वेवाँई।
कोर कठोरनि कंटकसी रज पंक भरी उधरी सब ठाई ॥
रेखन रेख वसी हैं पिपीलका ते पद आपने अङ्क उठाई
कोमल कौलहू ते कर सो रघुराज मलैं डर सों दोउ भाई

दोहा—जेहि पद रज पावनहितै, तरसत मुनिवर देव।
सो प्रभु भक्त अधीन ह्वै, करत विप्र पद सेव ॥
चापत चरण निहारि सुख, मुनिवर कह अकुलाय
जाहु लाल करिये शयन, निशा सिरानी जाय ॥
वार वार जव मुनि कह्यो, चरण वंदि रघुवीर।
कियो शयन तृण सेज में, धर्म धुरंधर धीर ॥
लषन चरण चापन लगे, शरद कंज युग हाथ।
वैठत उड़त मराल युग, तरु तमाल जनु साथ ॥

अति कोमल हाथन सों रघुराज मलैं प्रभु पंकज पायन को।
डरपै कर मोर कठोर महा कछु पीर न होय सुखायन को ॥
पछितात मनै रहि जात कहूं हुलसात मलै भरि चायन को।
हरपात क्षणे विलखात क्षणे धनि राम के वंधु सुभायन को ॥
पद की रज लै कहुँ शीश भरै कवहूं पद पंकज शीश धरै।
मनमांहि विचार करै क्षणही क्षण को जग मोसम मोद भरै।
परिचारक लासन ओंघ अहै तिनको सुख लूटि हमैं अफरै।
भरतो रिपुसूदन श्रीरघुरान न आजु वरावरी मोरि करैं ॥

दोहा—लखि सेवा लघु बंधु की ह्वै प्रसन्न कह बैन।
लाल पौढ़िये सेज पर, जाति व्यतीती रैन॥
रघुनायक आयसु सुनत, चरण बंदिलघु बंधु।
कियो शयन प्रभु सों विलग, होय न अँग सनबंधु॥

चौपाई।

यहि विधि शयन किये दोउ भाई। रैन चैन भरि शयन सोहाई॥
शशि कर बिमल विभासित तारा। वहत मंद मारुत सुखधारा॥
पादप पुहुपन की झरि लाई। रही सुगंध भूमि महँ छाई॥
कहुँ कहुँ बोलत मंजु पपीहा। सोवत और विहंग निरीहा॥
छिटकी चंद्र चन्द्रिका चारू। चमकत नव पल्लव हरहारू॥
चरहिं अभीत जंतु वन चारी। जिमि सुराज लहिं प्रजा सुखारी॥
कुमुद प्रफुल्लित मुकुलित कंजू। जिमि नयअनय मनुज मनरंजू॥
वलित वियोग विथित चकवाका। चोरउलूकहु भये उडाका॥
प्रविशत तम शशि कर हटि जाई। कलिप्रभाव जिमि हरिगुणगाई॥
परी सनंक विश्व महँ कैसो। योग विवश इन्द्रिन गति जैसी॥
विरही दुखित सुखित संयोगी। जिमि विपयी अरु हरि रसभोगी॥
नखतउअत कोउ अथवत जाहीं। पुण्य पाप फल जिमि जगमाहीं॥

दोहा—सोवत रघुकुल तिलक निशि, मध्य मुनीन समाज।
मनु रवि शशि तारावली, भली सुछवि रघुराज॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राऽधिकारि श्रीरघुराज सिंहजूदेव जी सी. एस. आई. कृते रामस्वयम्वरे नगर दरशनो नाम सप्तदश प्रबन्धः॥ १७॥

सोरठा—सुख सोवत रघुनाथ, लषण सहित तृण सेज महँ।
सकल मुनिन के साथ, रही याम बाकी निशा॥
दोहा—सुनि प्रभात आगम हरपि, लाल शिखा धुनि कीन।
मनु नकीव दिननाथ के बोलत परमी प्रवन॥

चौपाई ।

जहँ तहँ उठि सुमिराहिं हरि योगी। विगत जानि निशि विलखहिं भ
गावहिं कोउ कहुँ भैरव रागा । रवि वंदीजन युत अनुरागा
कीन्हे कलरव सकल विहङ्गा । चटकीं कली सुमन बहु रङ्गा
प्राची दिशि प्रगटी अरुणाई । रवि आगम अनुराग जनाई॥
कोकी कोक मिलन बहु लागे । मूक उलूक चूक ग्लानि भागे
शीतल मंद सुगंध समीरा । वहत सुरत श्रम हरत शरीरा॥
मुकुलित कंज प्रफुल्लित होहीं । सकुचत कुमुद दिवाकर द्रोही॥
शरण चरण उड़ि चले मराला । गगन पंथ मंडित इव माला
भये तेजहत झलमल तारा । चंद मंद द्युति भो भिनसारा॥
चले पंथ पंथी निज काजा । मज्जन लगी मुनीन समाजा॥
झरि झरि फूल बिछे महि माहीं । उडाति पराग सुरभि चहुंघाहीं
चुअत चारु चहुँ कित मकरंदा । पियत पुहुपरस मत्त मलिंदा ।
दोहा—चले धेनु गण वन चरण, वेनु वजावत गोप ।
द्वार द्वार मिथिला नगर, नौमत वजति सचोप ॥

छन्द चौबोला ।

निशा सिरानी जग सुखदानी यहि विधि भयो प्रभाता ।
चहर पहर चहुंकित सुनि चायन जग्यो राम लघु भ्राता॥
कछु अँगिराय उठ्यो सथरी पर सुमिरि राम कहि रामा।
राम चरण पंकज शिर नायो लषण धर्म धृत धामा ॥
लषण कमल कर परशि पाय पद कछु कौशिक ते आगे।
जगे जगतपति सुमिरि गुरू पद गुरुहि जगावन लागे ॥
उठहु नाथ रवि लसत उदयगिरि भयो भोर भव माहीं ।
मुनिजन जात सकल मज्जन हित शयन काल अब नाहीं।
जगे मुनीश मनहिं मन सुमिरत राम चरण जलजाता ।

नयननि खोलि लखे रघुपतिमुखयह मुद मननसमाता।
चूमि वदन शिर सूंघि पीठ कर फेरत कह मुनिराई।
जाहु नहाहु खाहु कछु खाजन यश भाजन दोउ भाई॥
सुनि मुनि वचन अनंदन रघुनंदन बंदन कीन्हे।
सज्जन सहित सुमज्जन करि मन संध्यावंदन दीन्हे॥
प्रात कर्म करि धर्म धुरंधर वसुंधराधिप वारे।
आये पुनि अपने निवास महँ केसरि तिलक सँवारे॥
ऐंछि पोंछि कच कुंचित मेचक भूषण बसन सुधारे।
कियो जाइ गुरु वंदन कर रघुनंदन शर धनु धारे॥
कोटिन दई अशीष गाधि सुत मंगल प्राण पियारे।
पूजाकरन लगे कौशिक मुनि राम रूप उर धारे॥
रहे फूल नाहिं तेहि औसर महँ चेलन चूक विचारी।
जानिअनेक हेतु कुलकेतुहिं रामहिं कह्यो हँकारी॥
तात जाय तुम जनक बाटिका सुमन सुगन्धित लावो।
तहँकी सकल कथा कहि हमसों महामोद मनछावो॥
सुनि गुरु आयसु रघुनायक तहँ सहित लषण धनु पानी।
चले कुसुम तोरन चित चोरन थोरन आनँद आनी॥
वाम पाणि दोउ दोन विराजत दहिने कर शर फेरैं।
तीर भरे तूणीर कन्ध युग मंद मंद दृग हेरैं॥
वाहुमूल यक लसत शरासन वदन मदन मद हारी।
पीत वसन तन विमल विराजत पग नूपुर झनकारी॥
मंद मंद गमनत गयंद गति दशरथ नंदन बांके।
वङ्क भृकुटि अतिशय निशंक मन रघुकुल कलशप्रभाके॥
चलत पंथ सत पंथ प्रचारक क्षीरधि मंथनकारी।
मनहुँ लेत मन मोल सुछवि दे मिथिलापुर नर नारी॥

रामस्वयंवर।

अति अभिराम अराम राम लखि लहि सुखधाम ललामा।
कह्यो लषन सों ललित वचन अस यह वन मन विश्रामा॥
यह विदेह वाटिका सोहावनि सुख छावनि सबही की।
आनँद उपजावनि मनभावनि हठि हुलसावनि हीकी॥
यहि विधि करत बंधु सन बातन गये वाटिका द्वारे।
द्वारपाल चित चकित निहारे सुंदर राजकुमारे॥
जोहि कुँवर दोउ मोहिगये मन सोहि रहे दोउ भाई।
रामहि लखत सकल नर नारी राम लखत फुलवाई॥
जो विकुंठ को वन निःश्रेयस नित प्रति विहरन वारो।
सोई चकित चहूँ कित चितवत जनक वाटिका द्वारो॥
बोले मंजुल वचन राम तहँ द्वारपाल कछु सुनिये।
आये फूल लेन फुलवाई जानदेहु भल गुनिये॥
द्वारपाल बोल्यो कर जोरे हरि लीनो मन मोरा।
यह विदेह की फूल वाटिका जाहु चले चितचोरा॥
सोरठा—दशरथ राजकुमार, प्रविशे फुलवारी हरषि।
क्षणक्षण विपुल वहार; सदा विहारवसंत जहँ॥

कवित्त।

गुच्छकलशासेत्योंवितानकशासेवासेपुहुपअवासेवहुरंगके प्रकाशें
कलपलतासे लतावृन्दनविलासेझुकेअजवाकितासेभूमिलोरनकेआशें
शिशिरतरासे रितुपतिकीहवासेहरे किशलैनिकासेफूलेहीरनहरासे हैं।
भनैरघुराजकल्पवृक्षउपमासेफले अतिअनयासेतरुकरततमासे हैं॥
दोहा—मधु ग्रीषम वरषा शरद, सुखद शिशिर हेमन्त।
निज गुण निज थल प्रगट ऋतु सब थल बसत वसन्त॥
षटऋतु के मंदिर बने, षटऋतु प्रगट प्रभाउ।
तामें अधिक प्रभाउ करि, सोहि रह्यो ऋतु राउ॥

कवित्त।

पल्लवलसत पिकवल्लभ केपन्नासमशाखाभूमिलोरैंफलफूलनकेभाराहैं।
मंजुकुंज महा मनोरंजनमुनीशनकी भौंरनकेपुंजनकोगुंजनअपाराहैं॥
बिछेवसुधामें झरेफूलन कीसेजहोसी पवनप्रसंगपरिमलकोपसाराहैं।
चैत्ररथकामवननंदनकीनाकीछवि कहैं रघुराजरामकामकोसमाराहैं॥
तालनतमालनकेतैसेहिंनतालनके रुचिर रसालनकेजालमनभायेहैं।
हेम आलवालनकेरजतदेवालनकेआलैलोकपालनकेलोकनलजायेहैं
दिल देववालनकेदेखेतेबिहालहोतषट्ऋतुकालनके फूलफलछायेहैं।
औरमहिपालनकेवालनकीबातैंकोनरघुराजकौशलेशलालनलोभायेहैं

दोहा—राजत राजत रुचिर तरु, मनहुँ चंद की जोति।
कनक लता लहरें ललित, मनु रवि दोत उदोति॥

कवित्त।

कंचन कियारिन में फटिक फरश फावें,
तामें झरें मालती सुमन मनु तारा हैं।
बदन कुरंगन के बिविध बिहंगन के,
मुखन मतंगन तुरंगन फुहारा हैं॥
केते कुंजभौन लताभौन लोने लोने लसैं,
बल्लिन बितान त्यों निशान हूं अपारा हैं।
भनै रघुराज नवपल्लवित मल्लिका के,
अमल अंगारा हैं मुनारा हैं दुआरा हैं॥
कीरन की भीर कामिनोन ते सहित सोहैं,
कूजि रहे कुंज कुंज मुनि मन हारने।
कोकिला कलापें चित्त चोरत अलापें पर
मनकी कलापें थापें थिरता अपारने॥
भनै रघुराज केकी कूकें सुनि चूकें चित्त,

करत चकोर चारि ओर हू विहारने ।
पिक की पुकारें त्यों पपीहा की पुकारें,
हिय हारें हर हारें बेशुमारें देव दारने ॥

छन्द गीतिका ।

वर बाग मध्य तड़ाग चारिहु भाग कनक स्वपान हैं।
मणि सरिस निर्मल नीर परम गँभीर गगन समान हैं॥
फूले कमल कल अमल भल मकरंद मधुप लोभान हैं
कह्लार इन्दीवर सुउत्पल पुंडरीक अमान हैं ॥
विकसित विमल अरविन्द झरत मरन्द मुदित मलिंद हैं।
गुंजन मही मन रंजनी श्रम गंजनी जन वृन्द हैं ॥
जिन पक्ष स्वच्छ विशाल मंजु मराल वस सब काल हैं।
बोलत रसाल उताल उड़त निहाल कर सुरपाल हैं ॥
वक चक्रवाक कराकुलादिक विविध रंग विहंग हैं ।
बोलत मधुर नाहिं खग विधुर सुभ धूरि धूसर अंग हैं ॥
बहु पीन मीन अदीन तहँ सुख भीन जल संचरत हैं ।
कुलि कमठ पीठि कठोर चारिहु ओर चरि सुख भरत हैं॥
बहु रंग कुसुम पराग उड़त प्रसंगपवनाहिं पाइ कै ।
मिलि सलिल बहु विधि रंग तरल तरंग रचत सोहाइ कै
छितराइ पुच्छन गुच्छ नचत मयूर मोरिन संग में ।
मनु देव करत विहार नंदन विपिन आनँद दंग में ॥
शीतल सुमंद समीर सुरभित वहत सकल सरोवरे ।
तेहि वश उड़त झूने सु सीकर परम ओत
ते विंदु तृण लगि लसत अति
रवि कर निवश लगि दलनि
सर निकट गिरिजा

मरकत कलश विलसत विमल दिनकर वसत मनु मंदरे ॥
बहु रतन खचित प्रदेश मंदिर बने वेश सुहावने ।
चहुँ ओर विलसत कनक खंभ सुरंभ थंभ लजावने ॥
बहु द्वार छज्जा छजित फावित फटिक फरश अपार हैं ।
आवरन देवन रूप वेद विधान विविध अगार हैं ॥
तहँ घाट हाटक के अनूपम नारि मज्जन के बने ।
मुनि मनोरंजन ताप भञ्जन नहिं प्रभंजन आमने ॥
नहिं पुरुप तहँ कोउ जात माली रहत एक विश्वास को ।
सब नारि रक्षण करहिं उपवन तरु तड़ाग अवास को ॥
जेहि देव तकि तरसत रहत निन्दत सुरेश अराम को ।
अभिराम ताको कहि सकत आराम देत जो राम को ॥

सोरठा--लखि मिथिलेश अराम, लपण राम आराम लहि ।
कहे वचन अभिराम, बागमान के धाम चलि ॥

सवैया ।

कहो महीपति माली सुनो गुरु पूजन के हित फूल उतारन
आये इते हम बन्धु समेत उतारें प्रसून जो होइ न वारन ॥
कैसे कहे बिन फूल चुनें मिथिलेश की वाटिका के मनहारन ।
वस्तु बिरानी को पूछे बिना रघुराज जू लेव न वेद उचारन ॥
राम के बैन अराम को पालक कान परे गृह बाहर आयो ।
देखि अनूपम भूपकुमार रह्यो तकि कै पलकैं न लगायो ॥
पायँन में परि पाणि को जोरि पग्यो प्रभु प्रेम सु बैन सुनायो॥
श्री रघुराज जू रावरो बाग न बावरो मोहिं बिरंचि बनायो ॥

दोहा--लेहु फूल फल दल विमल, सुंदर राजकिशोर ।
जो बरजे सोइ बावरो, विश्व विलोचन चोर ॥

सवैया ।

वाटिका में युग राजकुमार निहारत फूलन टोरत बागें ।

दोना लिये अति लोना उभै कर छोना मृगेशसेजोवनजोरैं
कौशल भूप के बांकुरे बीर कहै रघुराज लता अनुरागें ।
फूलैं फलैं तरु ताही क्षणै हरि कोमल कौल करैं जहँ लागें
वीनत वंजुल मंजु प्रसूनन कुञ्जन कुञ्जन गुंजनि भौंरैं ।
मल्लिका मालती माधवी मालन फूल प्रवालन जालन तों
बागकी पालिनी मालिनी जेते विहालिनी होतीं चितै चितव
चाखतीं रूपसुधा भल भाषतीं श्रीरघुराज सुराजकिशोरें
तुम श्यामल गौर सुनो द्वउ लालन आये कहां से उपायन
मिथिलेश की वाटिका में विहरो हियरो हरो हेरि सुभायन
इत कौन पठायो दया नहिं लायो सुफूलन तोरो उपायन
रघुराज कहूँ गड़ि जैहैं लला मृदुपानि की पांखुरी पायँन
काम कला जित कोशलनाथ वचो मम संसृणु हे भवभा
तानि हरे कुसुमानि दलानि चिनोखि न पश्यसि मामिहपा
श्रीरघुराज तवेन्दुमुखे मम चित्त चकोरमवेहि विभावन
त्वत्पद सेवनमद्य विना नहिं मे शरणं क्वचिदस्ति जनाव

दोहा—सुनत मालिनी गण वचन, दशरथ राज कुमार ।
मंद मंद मुसक्याइ किय, नेकु नयन सतकार ॥

सवैया ।

कहुँ लेत प्रसून प्रमोद भरे ललिते लतिकान के झोरन में ।
कहुँ कुंजन में विसराम करैं अवनीरुह छांह के छोरन में ॥
वर वाटिका ठोरन ठोरन में रघुराज लखैं चहुँ ओरन में ।
चितचोरन राजकिशोरन को मन लागि रह्यो सुम तोरन में ॥
सुर सिद्ध महर्षि सुरर्षि सबै जिनके पद पूजत सेव करैं ।
सुरपादप फूलन को जिन पै अज शंकर हू वरषैं बगरैं ॥
रघुराज सोई निज भक्त अधीन विदेह की वाटिका में विहरैं ।
मुनि कौशिक शासन मानि गुरो कर फूलन तोरि के दोन भरैं

दोहा—चित चोरत तोरत कुसुम, इत अवधेश किशोर।
उत विदेह रनिवास में, कियो पुरोहित शोर॥

चौपाई।

जनक पट्टमहिषी छविखानी। नाम सुनैना परम सयानी॥
सतानंद तेहि बचन उचारा। कालिह स्वयम्वर होवनहारा॥
ताते आजु जानकी जाई। करै गौरि पूजन चित चाई॥
सुनत पुरोहित की वर वानी। मैथिल महाराज महरानी॥
सखिन बोलि सब साजु सजाई। गिरिजा पूजन सियहि पठाई॥
कनक थार भरि सुमन सोहावन। हरद दूब दधि तंदुल पावन॥
धरि धरि शीशन सखी सोहाई। लिहे चारु चंदन चित चाई॥
कनक कुंभ जल भरि धरि शीशा। आगे चली सुमिरि जगदीशा॥
सखी सहस्रन सजे शृँगारा। लीन्हे चमर छत्र छवि सारा॥
पानदान लीन्हें कोउ नारी। पीकदान कोउ पाणि पियारी॥
अतरदान कोउ गहे दुलारी। लिये गुलाबदान कोउ झारी॥
लिहे बाल उर माल रसाला। कोउ बीजन कोउ दरपन माला॥

दोहा—छरी हजारन संग में, रतन जड़ित सखि पाणि।
जैविदेह नृप नंदिनी, बोलि रहीं वर वाणि॥

चौपाई।

महा विमल यक नवल पालकी। बनी हाल की रतनजाल की॥
कीन्ही सीता सुखित सवारी। लिय उठाइ वाहकी सुनारी॥
पहिरे अंबर अंग सुरंगा। भूषण भूषित सुंदर अंगा॥
मची तहां नूपुर झनकारी। सोहि रही सिय सजी सवारी॥
चली गौरि पूजन मन भाई। सिय छवि यक मुख किमि कहिजाई॥
गावहिं मङ्गल गीत सयानी। सहित ताल सुर सातहुँ सानी॥
कोउसखि तहां प्रेम रस बोरा। करहिं मनोहर सोहर शोरा॥

रामस्वयंवर।

कोउ बिदेह कुल बिरद उचारैं। कोऊ राई लोन उतारैं॥
कोउ सिय भाल दिठोना देही। कहि युगयुग जोवहि बैदे
जरी रतन कर छरी अमोलैं। आगे फरक फरक सखि बो
पहिरे पीत निचोल अमोला। घेरदार घांघरो सुगोला
यहि विधि गिरिजा पूजन हेतू। चली जनक कुल कीरति केतू॥
दोहा–राजमहल सों बाग लों, अंतहपुर विस्तार।
मोट कोट कञ्चन बन्यो, नाहिं तहँ पुरुष प्रचार॥
सीय चलत बाजन बजे, महा मनोहर शोर।
बाल बजावहिं बिबिध विधि, माचि रह्यो चहुँ ओर॥

कवित्त।

दासीसंगखासीछबिरासीचपलासीचारुआनँदबिभासीरनिवासकीनिवासि
चन्द्रचद्रिकासोलसैंकमलाकलासीकलकनकलतासीसबैसीयकीसुपासिनी
भनैरघुराजसियप्रेमकोपियासीरहैंसर्वदाहुलासीजेप्रकासीमंदहासिनी
रतिसीसुरम्भासीतिलोत्तमासीमैनकासीमायासीमयासीमंजुमिथिलामवासिनी
दोहा–सखी सकल गावहिं मधुर, सुंदर चरण बनाय।
बीण बेणु मिरदंग डफ, ऊँचे सुरन मिलाय॥

पद।

जय जय मिथिला राजकुमारी।
जय बिदेहनंदनी अनंदिनि चंद मंद दुतिकारी॥
निमिकुल कमल दिवाकर की दुति रमा रमन मनहारी।
श्री रघुराज दिगंतनलौं निज कीरति लता पसारी॥
जय जय धरनिसुता सुकुमारी।
शील सरित करुणा की आकरि मंजुल मूरति धारी॥
जाके पद बंदत बिरंचि शिव मुनि मानस संचारी।
श्री रघुराज सखी समाज सुख स्वामिनि सिया हमारी॥

सिय छवि को कहि सकै उचारी ।
जेहि मुख सम सर करत कलानिधि, घटत बढ़त हिय हारी॥
हँसनि छटनि शशि छटनि लजावति, द्विगुनी दुति उजियारी ।
पिक कोकिल जेहि मधुर बैन सुनि, लज्जित भे वनचारी ॥
खंजन कंजन मीन कुरंगन, दृग छवि छीन निकारी ।
केतेन वास दियो जल भीतर, केतेन विपिन मँझारी ॥
किमि कहि जाइ कनक लतिका जड़, सिय भुज सरिस विचारी।
तारन सहित पूर्णिमा रजनी लखि लजाति तन सारी ॥
चरण चारु नख अवलि विमंडित विन जावक अरुणारी ।
वसी विश्व की कोमलता तहँ करि कंजन सों रारी ॥
श्री रघुराज कहौं पटतर केहि उपमा कविन जुटारी ।
महा मनोहर मूरति मुद कर वार वार वलिहारी ॥
जै जै जनक लली सुखरासी ।
मिथिला नगर क्षीर निधि संभव कांति मती कमलासी ॥
स्वेच्छाचार विहारिनि तारिनि उमा गिरा जेहि दासी ।
वर्णत वेद विश्व ठकुराइनि पूरण ब्रह्म कृपासी ॥
सरल सुभाव प्रभाव विदित जग जेहि कीरति कलिकासी ।
श्री रघुराज आज्ञु को यहि सम विरद विशाल विकासी ॥
दोहा—यहि विधि गावहिं सहचरी, सानुराग वहु राग ।
मानहुँ कूकत कोकिला, विरचहिं विश्व विराग ॥

छन्द हरिगीतिका ।

कोइ वेणु वीण मृदंग डफ मुरचंग पटह उपंगहैं ।
कोइ ललित सलिल तरंग सहित उमंग लिय सारंग हैं ॥
कोइ कर किये करतार सरस सितार सुरसिंगार हैं ॥
कोइ मंजु मुरज अमोल ढोलन तबल अमल अपार हैं ॥

यहि विधि अनेकन बाज बजत न लहत कवि कहि पारं
सखि चलहिं रचहिं अनेक गति करि नूपुरन झनकार हैं
सखि गावतीं अह्लादिनी अह्लादिनी वर रागिनी।
गुणकली रामकली भली सुरकली सरस सुहागिनी॥
यक याम आयो दिवस तहँ सुर सुखद समय विचारिकै।
चढ़ि चढ़ि विमानन विविधि आनन सीय गवन निहारिकै॥
हिय हरषि बरषहिं कुसुम सुरभित कहहिं जै जगदंबिका।
जेहि भजत शंकर अंबिका सो जाति पूजन अंबिका॥
घन गगन छाया करत ताके ओट देखत देव हैं।
सिय राम मिलन विचारि फूलन बरषि ठानत सेव हैं।
सिय सहचरी छवि की भरी सुर सुंदरी तिन देखिकै।
पछितांहिं मनहिं सिहाहिं भाग सोहाग धनि धनि लेखिकै
सिय वामभुज दृग भृकुटि फरकहिं सुभग सगुन जनावहं
तैसहि सखिन को सगुन मंगल मोद अवधि न पावहीं।
मणि नालकी महँ जानकी चहुँओर आलिन वृन्द है।
मनु विमल तारागण विराजत मध्य पूरण चंद है।
यहि विधि बजावत बाज गावत गीत सखिन समाज है।
सुर मधुर छावत क्षिति चहूं कित हरष भरि रघुराज है॥
गिरिजा भवन आराम आई नवलि निमिकुल चंदिनी।
अनयास होत हुलास पुरिहै आस हिमगिरि नंदिनी॥
मिथिलेश जू की लाड़िली आगमन गुणि तहँ मालिनी।
हरबर चलीं भर भर सकल सजि वसन रूप रसालिनी॥
बहु विरचि भूपण कुसुम के भरि फूल फल दल थारने।
अति चारु उपवन द्वार चलि आगे धरयो करि वारनें॥
सिय सहित सखिन समाज यहि विधिगौरि गेह सिधारिकै।

मज्जन कियो सजनीन युत सरसित दुकूलन धारिकै ॥
पुनि पहिरि पट भूषण अदूषण शीश पूषणनाइकै ।
गवनी सुगौरी गेह पूजन पूजिकीन बोलाइकै ॥
सोरठा-तहँ बहु बाजन शोर, झनकारी नूपुरन की ।
रही माचि चहुँओर, दियो मदन मन दुंदुभी ॥
श्यामल राजकिशोर, कह्यो लपण सों बैन वर ।
लषहु लाल यहि ओर, आवत इत मिथिलेश धौं ॥

सवैया ।

बाजि रहे बहु बाजन बेश सुआवतसी बढ़ि भीर जनाई ।
देखन नेसुक नैनानि नेरे चली वहि ओर कछू नियराई ॥
फूलन तोरि चुके भरि दोनन कौतुक देखि गुरू पहँ जाई ।
श्री रघुराज सबै कहि देव महामुनि सों करि कै सेवकाई ॥
यों कहिकै प्रिय बंधु सों राम चले गिरिजा मणि मंदिर ओरे ।
दूरहि ते दोउ देखि सखीगण ठाढे भये मनमें भये भोरे ॥
श्रीरघुराज कह्यो मुरिकै लखि सुंदरी वृन्द अनंद हिलोरे ।
आगेन जात बने अब तात सखीन को व्रात देखात करोरे ॥
कैधौं शची सुरदारन लै मिथिलेश को बाग निहारन धाई ।
कैधौं उतारि तरैयन को जू जोन्हैया लसै प्रगटाइ जोन्हाई ॥
श्री रघुराज किधौं कमला परिचारिका संग रही छबि छाई ।
शक्तिन लै किधौं बाग बिलोकन गौरिही मंदिर ते कढ़ि आई ॥
मेरे बिचार में आवै यही मिथिलेश की हैं रनिवास की बासिनी ।
सारी सबै जरतारी सजी उजियारी करैं मन मोद हुलासिनी ॥
श्रीरघुराज लला सुनिये सखि प्यारी सबै निजस्वामि सुपासिनी ।
है मिथिलेश कुमारी यही पगुधारी सुगौरि के पूजन आसिनी
जैबो न लायक लाल उतै परदारन के बिच धर्मबिचारो ।

ाये इतै मुनि शासन लै नहिं जानी रही
ीति है धर्म धुरीनन की रघुवंशिन की
ीठि परै नहिं संगर में नाहिं दीठि परै
पंकटहू परिकै जिनके मन धर्मते टारे टरैं
सं मुख भाषत वज्र की लीक तनो तजे
ज के दुवार में याचक जाय न पावैं नकार
ज महामति श्रीरघुराज मही महँ मानव
ऐ ची कहौं नहिं काची कछू जग में सब
सो ज ते अरु आजुलौं यों रघुवंशिन
सूर घुराज परे कबहूं नहिं साँकरहू में
श्री प्रशंस करौं नहिं तात विचारिये जू सहजै
वंशी न मानहुँ लक्षण लाल विलक्षण लक्षण हैं
हास हू में पुनि रोखहू में है प्रतीति महा मन
धोर घुराज विकार जनै नहिं प्रेमवती
श्रीर की रीति सो जीतीचहै करि ठीक
नीति हेत अनेकन भूप अनूप सरूप बनाइकै
जेहि हेत कियो मिथिलेश प्रणै जोमहेश
जेहि ौन स्वयंवरमें दुहिता विजयी तेहि
लहै ारि महा मनहारि गुनो यह सोई
सुकु सजाइ सबै जननी हित पूजन के
साजु सौन के दीन्ही पठाइ ।
संग राज सयानी अली सिगरी सजी सोहैं
श्रीरघु को बंदति मंदिर में यह बाग प्रभान
गौरि ही लखि नेसुक ताकि लखीनहिं
आवत शेष महेश गणेश न भाषि
शारद

श्रीरघुराज सुनो सहजै मन मेरो पुनीत सोऊ लखि लोभा।
छोड़ि कहौं छलछंदनको अस आजुलौं क्षोणि में चित्तनक्षोभा
लक्ष्मण लाल सुनो रघुराज बढ़े उर लाज कढ़े मुख बाता।
आकसमात अमात न आनँद मानद होइगो कौन विख्याता॥
या क्षण दक्षिण बाहु विलोचन क्यों फरकै कछु जानिनजाता
कीन्ह्यो विचार मनै बहु बारन सो सब कारन जानै विधाता॥

दोहा-अस कहि रघुपति लषण सों, कियो कुंज विश्राम।
तरु छाया सीरी घनी, कुसुम गुच्छ अभिराम॥
उत मंदिर अंदर गई, पूजन राजकुमारि।
खडी रहीं बाहर सखी, चमर छत्र कर धारि॥

चौपाई।

वृद्ध वृद्ध द्विजवधू सिधाई। पूजन साजु सबै लै आई॥
तहाँ जानकी वेद विधाना। षोडश विधि लै वस्तुनि नाना॥
पूजा करी सहित अनुरागा। विप्र वधू जस कह्यो विभागा॥
इतै एक सखि चली अकेली। टोरन लगी कुसुम कर वेली॥
सहजहि तहँ मालिनि इक आई। देखी रही लषण रघुराई॥
सखी पाणि पङ्कज गहि बोली। अपने उर को आशय खोली॥
कहि न सकों डरवश तोहिपाहीं। विना कहे मन मानतनाहीं॥
कोउ सुंदर युग राजकिशोरे। आय बाग महँ फूलन तोरे॥
इतनी वयस सिरानि हमारी। अस शोभा नहिं नैन निहारी॥
देखत बनत कहे न सिराई। नैननि सों न कढें दोउ भाई॥
कहि न सकों देखन के लायक। नाम लषण लघु बड़ रघुनायक॥
मालिनि वचन सुनतसखि काना। देखन हित तेहि मन ललचाना॥

दोहा-तू देखाय देहि सखी, मोहिंमहीप किशोर।
यह उपकार अपार मैं, अवशि मानिहौं तोर॥

रामस्वयंवर ।

चौपाई ।

मालिनि तासु पकरि कर कञ्जन । चली लखावन मुनि मन रञ्जन॥
लतनि ओट कहुँ कुंजन ओटू । चली चलावत चख की चोटू॥
किये मंद नूपुर झनकारी । जाति कुसुम तोरन मिस प्यारी॥
रुकति कहूं पुनि चलति सयानी । राजकुँवर दरशन ललचानी॥
मांलिनि सों पुनि पुनि फिरिभापति । तू तोनहिंकछुछलउरराखति॥
कौन कुंज महँ राजकुमारा । मालिनि वेगि वताउ अवारा॥
परत पुहुमि पग परम हुलासी। कबै विलोकहुं वागविलासी॥
मनोभिरंजन कुंज निवासै । विलसत इह वाटिका विलासै॥
कुसुमाहरन शील शुभ रूपौ । नयन महासुखदायक भूपौ॥
कब लखिहौं युग राज किशोरा । कहुमालिनि सुंदर केहि ओरा॥
यहि विधि दरशन उदधि उमंगा । उठति वचन मुख तरल तरंगा॥
दूरिहि ते मालिनि मन भाई । दिय वताय अंगुली उठाई ॥
दोहा—देखु सखी यह कुञ्ज में, सुंदर युगुल किशोर ।
हरचो मोर चित चोर चित, हरि लैहैं हठि तोर ॥

सवैया

सीय सखी मृगशावक नैनी सुनैन उठाय लखी तेहि ओरैं
मंजुल वंजुल कुञ्जन में चित चोर उभय अवधेश किशोरैं
श्री रघुराज रुकी सो जकी पलकै ठमकी ठगि कै हग ठोरैं
चञ्चलासी परी चौंध चखैं मन भूलिगयो तहँ मोर औ तोरैं॥
कौन कहै कछु कौन सुनै पुनि जोहन ही तेमनोजियजीवति।
अंग जहां के तहां हीं रहे सब दीठि की सूजी मनो छवि सीवति
श्रीरघुराज विलोकतही अभिलापन इंदु उज्यारीसी ऊवति।
ठाढ़ी महासुख वाढ़ी अली वह छैल छली मुख पानिप पीवति॥
आयो इतै सुरनायक धों सुरनायक के तौ अनेकन आँखी।

आयो इतै रतिनायक धौं रतिनायक अंग बिनै श्रुति साखी।
आयो इतैं रमानायक धौं रमानायक चारिभुजा मुनि भाखी॥
श्रीरघुराज विचारि किये इत प्रेम को रूप दियो विधि राखो॥
है सुख को सुख साँचो सोहावन काम यही छवि ते छवि पायो।
शील सुधा सुखमा सुकुमारता पायो शशी इनको कछु ध्यायो॥
देख्यो नहीं न सुन्यो अस रूप सुभूप कुमार को जो दृग आयो।
जानकी जौन रच्यो रघुराज सोई रघुराज को रूप बनायो॥
श्री की यथा श्रीअहै सिय मेरी तथा यह साँचो सिंगार सिंगारो।
कीरति की जिमि कीरति जानकी त्यों यश कोयश याहि निहारो॥
वा छवि की छवि या सुख को सुख जोरी भली विरची करतारो।
या उन के सम वा इन के सम श्रीरघुराज न और विचारो॥
आइ अकेली निहारी महीं यह आनँद सिंधु नरेश दुलारो।
जाइ जवै उत भाषिहौं हाल सबै मनिहै हमरो अपकारो॥
मीठो पदारथ बाँटिकै खाइये धर्म सुवेद पुराण उचारो।
ल्याऊं लेवाइ सियै इतहीं रघुराज मनोरथ पूजै हमारो॥
दोहा—कहा करौं मालिनि सुनै, केहि विधि सिय पहँ जाउँ।
परी प्रेम वेरी पगन, किमि त्यागौं यह ठाउँ॥

सवैया।

नैन चहैं पलकैं विसराइ निरंतर या सुख देखन हीको।
पाणि चहैं परसैं पद पंकज त्यों हियरो मिलिबो चहै ही को॥
श्रीरघुराज कियो मनकोवश नेह के बंधन बांध्यो है जीको।
काह करौं अब कैसेचलौं न तिलौभर त्यागत पाउँ महीको॥

बरवै।

नैना बाणन मारयउ राज कुमार।
कैसे जाउँ सिया जहँ गौरि अगार॥

रामस्वयंवर ।

लैचलुलैचलुमालिनिमोहिंपहुँचाउ ।
अबनहिंबल मेरेतनलाग्यो घाउ ॥
असकहिबायलसीसखिगिरिगै भूमि ।
उठीआहिकरिप्यारीडगरीघूमि ॥
पुनि पुनि चित चाहन को चितवति जाति ।
पुनि आवति पुनि जावति पथ न सिराति ॥
कहुँ लतिकन महँ अरुझति अरुझी नेह
भै बिहाल बैकल सी सुधि नहिं देह ॥
उतरि परे कहुँ कंकन टूटी माल ।
तनक न तनहि सँभारति भई बिहाल ॥
लरखराति कुंजन महँ गहि तरुडारि ।
पुनि चितवति चितचोरन चखन उघारि ॥
सियहि देखावन की रुचि राजकुमार ।
जस तस कै गमनति सो तन न सँभार ॥
कहुँ तमाल तरु भेटति भुजनि पसारि ।
कहुँ इंदीवर अंबुज रहति निहारि ॥
जल थल नभ तरु खग मृग देखति जौन ।
श्यामरंग सब जानति तीनहुँ भौन ॥
मालिनि तेहि कर कर करि चली लेवाइ ।
कहुँ बिहँसाति कहुँ हुलसाति कहुँ बिलखाइ ॥
बदति बिलोकति बहुरति बारहि बार ।
बादीगिरि जादू किय राजकुमार ॥
रूपमाधुरी फाँसी लियो फँसाय ।
होय दई का करिये कछुन बसाय ॥
यहि बिधि भ्रमत भ्रमत सो मन पछिताति ।
आई जहां सहेली अति अकुलाति ॥

दोहा—तासु रूप निरखी सखी, आति विवरण तन स्वेद ।
पकरि पाणि पूछन लगी, भयो काह तोहिं खेद ॥

कवित्त।

ठाढ़ी तूजकीसी त्यों थकीसी मुख मीसी मंद
खीसी त्यों अनंद कीसी बैकल सी दीसी है ।
पीसी है मनोज की सी छूटिगै छतीसी छटी;
सुरति उड़ीसी भरी भाग की नदीसी है ॥
घाउ की लगीसी विसे बीसी त्यों घसीटी प्रीति,
त्यागे कुल कानि ही सी औचक उचीसी है ।
रघुराज नेह नीति रुचिर रचीसी पची,
तची विरहानल सो ऊधम मचीसी है ॥

सवैया।

एरी अली तोहिं कैसो भयो नहिं पूछेहु पै कछु उत्तर देती।
आनँद भीजी सनेह में सीझी चितै कछु पाछे उसासनलेती॥
श्री रघुराज कहे कहँ रीझी भई तन छीझी अजो दशा एती
काह लखी अरु काह चखी सखी बेगि बताउ दुराउ न हेती

दोहा—सखी सखिन के बचन सुनि, लखी पाछिले ओर ।
मन पियूप फल सो चखी, कही गिरा रस बोर ॥

कवित्त।

पूछती कहा है उतै कौतुक महा है,
नहिंजात सो कहा है अबै जोन लखि पाईरी ।
विधि के सँवारे राजकुँवर पधारे प्यारे,
विश्व मनहारे धारे विश्व सुंदराई री ॥
साँवरो सलोनो दूजो दुति को दिमाक वारो.
दृग ते टरै न टारो मति अकुलाई री ।

कहे ना सिराई रघुराज देखे बनि आई,
आजुलौं न देखी जौन आजु देखि आई री ॥
नीलमणि मंजुताई नीरद की श्यामताई,
अतसी कुसुम कोमलाई हठि आई है ।
केसर सुगंधताई बिज्जु दीपताई सोन,
जुही नहिं पाई पट पीत पियराई है ॥
भौंहन कमान कसि प्रीति खरसान चोखे,
नैन बाण मारे फूटि गाँसो अटकाई है ।
रघुराज कैसो राजकुँवर अनोखो अरी,
हौं तौ इतै घायल ह्वै घूमि घूमि आई है ॥
श्रद्धा अनुराग भरि प्रेमही को नेम करि,
नैनन के नवल सुटाबन में जाइले ।
अति प्रतिकूल जग सुख के दुकूल त्यागि,
सारी अभिलाषही की तनको ओढाइ ले ॥
रघुराज तीर्थराज महाराज के कुमार,
भारती की धार हार मानिक मिलाइ ले ।
कलमष कलक कटि जे हैं कोटि जन्मन के,
सितासित शोभा की त्रिवेणी में नहाइ ले ॥

पद ।

सखीरी जो जैहै वहि ओर ।
कहौं बनाइ बनाइ कछू नहिं राजकुँवर चितचोर ॥
जो न मानिहै सीख सयानी पुनि न चली कछु जोर ।
श्री रघुराज हाल होइ सोई जौन भयो अब मोर ॥
कौन के राजकुँवर दोउ आये ।
रूप माधुरी मोहे साधुरी तिय गण कौन गनाये ॥
औचक ही यक बार निहारयो तूरत सुमन सोहाये ।

मगन भई रघुराज विलोकत नहिं विसरत विसराये ॥
लखी हौं जब ते राजकुमार।
तबते इन आँखिन अस दीसत श्याम भयो संसार ॥
कहो तबहिंलौं हमहिं बावरी मानहुँ मोहिं गवाँर।
श्रीरघुराज लखी जबलों नहिं वा मूरति मनहार ॥
दोहा–ऐसे सुनि सजनी वचन, देखि दशा पुनि तासु।
उदित इंदु अभिलाष हिय, कियो हुलास प्रकासु ॥

चौपाई।

सिय समीप यक सखी सिधारी। बीजमंत्र सम दियो उचारी ॥
यक सखि कछु कौतुक लखि आई। जनकलली तोहिं चहत सुनाई ॥
सुनन योग सजनी की बानी। चलु चलु सुन जो कहत सयानी ॥
सिय सुनि सखी वचन सुख पाई। मंद मंद मन महँ मुसक्याई ॥
पूजि गौरि मिथिलेश दुलारी। मंदिर ते बाहर पगु धारी ॥
मधुरअली तेहि सखि कर नामा। मधुर वचन ताको रसधामा ॥
कहत भई मिथिलेश कुमारी। कहु कौतुक तू कौन निहारी ॥
कैसी भई दशा सखि तेरी। तोहिं विभ्रम है अस मति मेरी ॥
सो सखि सिय छवि नखशिख हेरी। सुधि करि राज कुँअर छविढेरी।
नयन मूँदि गुनि सुंदर जोरी। ईश आश पुजवै अब मोरी ॥
बहुरि बाल बोली बरबानी। बुधिवर वदति विशेष बयानी ॥
हौं वाटिका विलोकन काजू। गई विहाय सखीन समाजू ॥
दोहा–बनी कुंज लोनी लता, फूले फूल अपार।
लखे कुसुम तोरत तहां सुंदर युगल कुमार ॥

सवैया।

साँवरोसुंदर एक मनोहर दूसरो गौर किशोर सुखारी।
का कहिये मिथिलेश लली वह मूरति पै मन है बलिहारी ॥
श्रीरघुराज बनै नहिं भाषत राखत ही में बनै छवि प्यारी।

नैन विना रसना रसना विन नैन कहौ किमि जाय उचारो ।

दोहा–मधुरअली के वचन सुनि, विमला अली तुराइ ।
जनक लली सों बिहँसि कह, भली बानि हुलसाइ ॥

सवैया ।

हौं सुनी आजु महीपति मंदिर कौशिक संग महासुकुमारे ।
राजकुमार उभै कोउ आये निजै छवि मारहु को मद मारे ।
काल्हि निहारि गये नगरी नर नारि लखे जिन तेई उचारे ।
श्री रघुराज स्वरूप की माधुरी आजुलों ऐसी न नैननिहारे ।
जे उनको चितये भरि नैनन धोखेहु वे जेहि नैन निहारे ।
ते सिगरे विगरे निज बानि द्रुतै तिनपै तनहू मन वारे ॥
श्री रघुराज सबै नर नारिन कीन्हे वशै निज राजकुमारे ।
या मिथिलापुर में विचरे निज रूप की मोहनी का पनडारे ॥

दोहा–ह्वैहैं तेई अवशि ये, और न दूसर होइ ।
राम लषण अस नाम जिन, कहत सखी सब कोइ ॥

सवैया ।

सुनिकै विमला बतियां सिगरी हरषी सुसखी निरखी सियको ।
उतकंठित वेश विलोकन को कब आनँद औध भरो नियको ।
रघुराज सखीन समाज निहारति को कहै सोय गुणो हियको ।
अवलोकन की अभिलाषउठो पिय छोड़िउतैहाठि होइयको ।

दोहा–पुनि नारद के वचन की, सुधि आई तेहि काल ॥
दुसह विरह दारुण विथा, जान्यो मिटि है हाल ॥

चौपाई ।

जब मोहिं कह्यो जगतपति बोली । लीला करन हेत सब खोली ॥
देव दुसह दुख देखि दयाला । रावण विवश त्रिलोक विहाला ॥
हरन हेत अवनी कर भारा । लैहौं कौशलपुर अवतारा ॥
तुम अब बसहु जनकपुर जाई । वेदवती कहँ लियो निकाई ॥

है उत्पति धरणी ते प्यारी। अवशि करहु मिथिलेश सुखारी॥
तदपि दुसह दुख होत वियोगू। यदपि धरचों शिर नाथ नियोगू॥
जगती ते लै जन्म तुरंता। इत बसि चह्यों मिलैं कब कंता॥
विरह विवश दुख सह्यो न जाई। प्रभु पठयो नारद मुनिराई॥
कही देवऋषि सों मैं बाणी। कब मिलिहैं मोहिं सारँग पाणी॥
मुनि कह जनक वाटिका माँहीं। जगत जननि लखिहै प्रभु काहीं॥
यह सुधि सकल सीय कहँ आई। दरश लागि लालच अधिकाई॥
अब प्रगट नहिं भाउ जनाई। कौनेहुँ मिसि देखों पिय जाई॥
दोहा–नैन मूंदि यहि भाँति तहँ, सीता करति विचार।
लखिविलंब सखि शशिकला, कीन्ह्यो वचन उचार॥

पद।

चली सियदेखन फुलवारी।
गौर श्याम दोउ कुँवर सलोने आये मनहारी॥
लसत कर पल्लव कर दोना।
चाप चारु शर सुभग विराजत कटि निषंग सोना॥
मुकुट मंडित मणिमयमाथे।
सिंह ठवनि चितवनि अति बांकी दोऊ बंधु साथे॥
हँसनि हठि हेलिनि हिय हारी।
रूप स्वरूप लख्योन सुन्यों अस मारहु मद गारी॥
चुनत फूलन तरु तरु माहीं।
वीर धीर रघुवीर नाम अस इन सम कोउ नाहीं॥
कहत रघुराज राजढोटा।
पुनि देखन को नहिं मिलिहैं अस जस सुंदर जोटा॥
दोहा–सुमिरत प्रीति पुरातनी, करत जानकी ध्यान।
लसी सखी तब माधवी, बोली वचन प्रमान॥

पद ।

जनक तनया तजि गौरी ध्यान ।
लखि लीजै लुकि राज लाड़िलो अस सुंदर नहिं आन ॥
खंजन कंजन मृगन मीनगण लोचन लखत परान ।
मंजु मयंक मरीचि मंद परि तकि माधुरि मुसक्यान ॥
कोटि मदन मद कदन वदन छवि होनो जासु समान ।
घटत बढ़त दिन प्रति तारापति सोच यही पियरान ॥
सकल सुकृत फल कोटि जन्म को देहि जो गौरि इशान ।
तौ रघुराज राज ढोटा दोउ करहिं नैन थल थान ॥

दोहा—जनक लली सजनीन की, जानि उदित अभिलाख ।
पाय मोद मुसक्यानि मन, गहि तमाल की शाख ॥
पल्लव डार बिलोकि कछु, कुंज विलोकन व्याज ।
चली चारि पद और तेहिं, चितवन सखिन समाज ॥
कहुँ किशलै कहुँ कुसुम कहुँ, कहुँ कलिका कहुँ कुंन ।
कहुँ कमल कहुँ केतकी, कहुँ कुरंग करंज ॥
कहुँ विहंग कहुँ तुङ्ग तरु, कहुँ कहि लतन प्रसंग ।
कहुँ मलिन्द मकरंद कहुँ, कहुँ पराग वहुरंग ॥

चौपाई ।

देखत कराति सखिन सों बातें । लपण लाल लालशा अपातें ।
लाज विवश प्रगटति नहिं भाऊ । खग मृग निरखति करतिदुराऊ ।
मंद मंद गमनति सुकुमारी । चतुर सखी सब संग सिधारी ।
माचि रही नूपुर झनकारी । बरसत रस बाटिका मँझारी ।
पनी कुंज प्रविशहिं कढ़ि भामिनि । मनहुँ सघन घन दमकति दामिनि ।
रहीं लटित लतिका लहराई । ललना लुकहिं लपटि [illegible] ।
तहँ सियकी सखि सोहहिं कैसी । शशी जोन्ह घन जलधर [illegible] ।
गावहिं मधुर सुरन सुकुमारी । मनु मराल पिक शिखी [illegible] ।
परत पुहुमि पद संयुत ताला । मनहुँ लतन सिखवें गति [illegible] ।

परो पुहुमि बहु रंग परागा। जानि मनहुँ अपनी बड़ भागा॥
रचि तरुतंभ चूनरी धारी। देन जाति महि प्रभुहि कमारी॥
प्रभुहि लखन उमग्यो अनुरागा। उदै इंदु मनु पूर विभागा॥
दोहा–यदपि लाज वश सिय चलति, मंद मंद मुसक्यात।
तदपि प्रीति वश चरण गति, अधिक अधिक अधिकात॥

चौपाई।

फैलि रहीं सखि कुंजन माहीं। मनहुँ चँदेनी चारु सोहाहीं॥
मधुर अली कर कर गहि सीता। प्रभु दरशैं बिलंब हित भीता॥
चितवत चहुँकित कुंजन माहीं। चली चतुर चिन्तति प्रभु काहीं॥
वसन सुरंग सखी सब संगा। मनहुँ उदधि अनुराग तरंगा॥
शोचति मन मिथिलेश कुमारी। कौन हेत नहिं परैं निहारी॥
जे पल तहँ दरशन बिन जाहीं। ते पल अलप कलप ते नाहीं॥
को कहि सकै दरश उतसाहू। होहिं यदपि शारद अहिनाहू॥
लतनि लतनि तरु तरु आरामै। हेरति सिय रामै अभिरामै॥
फूलन फूलन निज प्रभु नेही। नैन दीठि अलि किय वैदेही॥
लखी न जब प्रभु राजकिशोरी। भई चंदविन यथा चकोरी॥
मधुर अली पहँ सैन चलाई। पूछो लाज विवश नहिं गाई॥
मधुर अली अंगुली उठाई। लताभवन सो दियो बताई॥
दोहा–चली चटक चित चाह चुभि, चतुरि चितै चहुँओर।
मनहुँ दृगंचल चंचलनि, रचन चहति चित चोर॥

चौपाई।

उतै सुनो नूपुर धुनि जबहीं। लख्यो लषण लाखन सखि तबहीं॥
कह्यो राम सों मंजुल बानी। इतै लखिय लाखन छविखानी॥
वन विहरन आवैं सखि वृन्दा। मानहुँ उये अनेकन चन्दा॥
लषण वचन सुनि सहज सुभायक। लता भवन ते कढिरघुनायक॥

सिय मन की गति गुणि रघुनाथा । खड़े लपण कंधहि धार हाथा ।
सिय देखन उमग्यो अनुरागा । सकल वियोग जनित दुख भागा ।
जो विकुंठ महँ दियो निदेशू । हृदय सकल सुधि कियो रमेशू ॥
वाम पाणि टेके धनु धरणी । चितवत दृग कहँ सिय वर बरणी ॥
मनहुँ मदन मातंग पराजी । खड़ो शृगाल सिंह रुचि राजी ॥
आवनि जानि जानकी केरी । निज दरशन लालशा घनेरी ।
जो सुख भयो राम मन माहीं । यक मुख वरणि जाय सो नाहीं ।
हेरत हती उतै सिय रामै । इत रघुपति सिय लोक ललामै ।

दोहा—दोहुँन के अभिलाष वश, नैन चतुर यक वार ।
मिले धायप्यासे सुछवि, रहे वियोगित चार ॥

सवैया ।

दोहुँन की रही प्रीति सनातन दोहू तहां पलकैं दृग त्यागे
ह्वैगो वियोग कछू दिन दोहुँन देखन कारज में अनुरागे ॥
वै प्रगटे अवधेश के मंदिर वै मिथिलेश किये वड़भागे ।
दोहुँन के दृग दोहुँन में परि दोहुन की छवि पीवन लागे ॥

दोहा—दोहुन के चख में परयो, चपलासी सो चौंध ।
उन्हैं विसरिगो जनकपुर, उन्हैं विसरिगो औध ॥
चारु चार नैनन मिलत, मंजु अली तहँ जोइ ।
कला रचत कर कमल गहि, कह्यो वचन मुद मोइ ॥

पद ।

अवलोकिय सखि राजकुमारौ ।
ललित लतान लये विलसंतौ कृत सुंदर श्टङ्गारौ ॥
द्रोण कलित कल कंज करौ कुसुमानि चेतु मभिसारौ ।
मंजुल वंजुल मंडित मालौ चित्त नयन गति हारौ ॥
नव नीरद नव कनक शरीरौ जगत यशो विस्तारौ ।
निश्व विदित वृन्दारक वृन्द सुंवदित मधुराकारौ ॥

ललनानन्द विमल विधु वदनौ कोटिमार सुकुमारौ।
अभिरामा रामे रमणीयौजन रघुराजाधारौ ॥

कवित्त।

दोहुँनकेबांकेनयनदोहुँनकोदेखिथाके,दोहुँनकेहीनउपमाकेशोभसाकेहैं।
कंजमीननाकेभरेप्रेमकेसुधाकेमंद, करनमृगाकेनगिराकेनउमाकेहैं ॥
भनैरघुराजअनुरागकेमजाकेमढ़े,काकेसमताकेएकएकछविछाकेहैं ॥
मेरेमनसाकेगुनेकहौंनमृपाकेबैन, शीलकरुणाकेकछुअधिकसियाकेहैं

सवैया।

कौन कहै सिय नेह की नीति प्रतीति त्यों प्रीतिकी पूरणताई।
श्रीरघुनायक आनन इंदु में नयन लगाइ चकोर लजाई ॥
श्रीरघुराज सुकोटिन वार निछावरि चातिक मेह मिताई।
मानौ लजाइ पराइ गये निमि त्यागि दृगंचल चंचलताई ॥
देखतहीं सिय की सुखमा उपमा हरि हेरि कहूँ नहिं पाई।
केती करी कविताई कवीनन कौन अनूठ कहौं समताई ॥
श्रीरघुराज विचारि रहे मन आजु लों ऐसी न आँखिन आई।
ज्यों छवि भौनमें होन प्रकाश सुदीपशिखा विधि वारी बराई ॥
जो कहौं विश्व को सुंदरताई समेटिकै सीय की मूरति राची।
जो निज मोहनी रूप कहौं सम तौ मति में रहै लाजही माची ॥
श्रीरघुराज गुनै मन में न कोविदन सों उपमा कछु बाची।
है छवि की छवि शील भरी महा माधुरी की महा माधुरी सांची ॥
दोहा-कहत बनत नहिं सिय सुछवि, पटतर परै न हेरि।
रहे मौन अनमिप दृगनि, फिरै न फेरे फेरि ॥
सोरठा-पुनि कछु दृगहि लजाय, लता ओट निज रूप करि।
सिय मुख कंज लोभाय, चंचरीक रवि चारु चख ॥
नहिं छन छगहि अघाय, पियत मधुर मकरंद छवि।

दोहा—परचो लतापट दीठि जब, सी उठी अकुलाय ।
मनहुँ महानिधि नयन की, दीन्हीं तुरत गँवाय ॥

सवैया ।

जानि लतान वितान को अंतर मंजु अलीकरकंज उठाई ।
बोली विदेह लली सों भली विधि नैन नचाय कछू मुसकाई ॥
श्रीरघुराज विलोकिये वीर सुवल्लिन बीच महा छवि छाई ।
साँवरो राज किशोर खरो चित चोर चितै तजि दे अकुलाई ॥
होतहीं ओट लगी चित चोट भये लला पल्लव कोट कराले ।
मंजु अली की सुनी बतियां तव ह्वै कै निहाल विलोकत हाले ।
ज्यों निधि जाइ हेराइ कहूं पुनि पाइ समाइ न मोद विशाले ।
त्यों रघुराज ललीन समाज में लाज लुकाइ लखी लली लाले ।
जे पलको परो ता क्षिण अन्तर तै पल भे विधि वासर पूरे ।
पाये वहोरि महानिधि लोचन ह्वै गये चंद चकोर से रूरे ॥
देखि सखीगण सीय दशा अनुराग भयो वपु तासु विहूरे ॥
जोरी भली रघुराज वनी तरुणी गण लै तकि कै तृण तूरे ॥
नयन हजारन एकही वारन राजकुमारन के तन लागे ।
मानो अपार मलिंद मरंद सुपीवन अंबुज पै अनुरागे ॥
कौन कहे पलकैं परिबो थिरता अति मैं तनहूं मन जागे ।
श्रीरघुराज विलोकैं सदा सजनीन के वृन्द विरंचि सों मांगे ॥
पूरन पूरण इंदु उदै लहि ज्यों विकसैं विलसैं कुमुदाली ।
ज्यों पुनि पूषन प्रात प्रकाशहि पाइ प्रफुल्लित हैं कमलाली ॥
श्रीरघुराज को आनन त्यों ललनानि के आननमें करीलाली ।
देखें जकी उसी रूप की माधुरी चित्र की पूतरी सोहवनाली ।
तिय को दशा कौन कहै तहँ की अभिलाप कीमूरतिह्वैगई हैं ।
वर राजकिशोर की साँवली सूरति आँखिन में मनो पैठई हैं ॥

रघुराज कहै प्रभु प्रेम भरी यहै सत्य विचारहि येकई है।
अब जानन पैहै कहूँ इत ते पलकानि कपाटन को दई है॥

दोहा–सीय समेत सखीन की, देखि दशा रघुराज।
कुञ्जभवन महँ गवन किय, विप्रलंब सुख काज॥

सवैया।

शारद इंदु उदै जिमि जोहि लखैं चहुँ ओर ते चाइ चकोरी।
पौन प्रवेग वसात शशी घनी मेघ घटानि दुराइ वहोरी॥
श्रीरघुराज सखीन समाज त्यों चौंकि परी चितई चहुँ ओरी॥
हाइ दई यह कैसी भई सिगरी कहैं चोर कियो कोउ चोरी॥

दोहा–प्रेम विवश तहँ जानकी, मूँदे नैन विशाल।
यथा वचावत योग रत, करि समाधि निज काल॥

सवैया।

पूछहिं एक ते एकन आली कहां बनमाली भये दृग खाली।
हाइ दई यह कैसी भई इन नैनन में उपजी दुख जाली॥
श्रीरघुराज नरेश के लाडिले देहु देखाइ कृपाल कपाली।
श्याम घटा छविके बरसेबिन आलिन की अब सूखतसाली॥

दोहा–प्रेम विवश सीतहि निरखि, सकैं न कहि सकुचाय।
रहत बनत नहिं बिन कहे, रहीं सबै अकुलाय॥

कवित्त।

कोई कहैंजोरीबानि बदन में पीरीपरी कहांगये जिनपै लगीरी नैन पूतरी॥
शीरीप्रेमवेलिवईनेहकोहरीरीहोति,बाढ़तजरीरीविरहानलकीलूतरी॥
रघुराजआजुसुखबीरीकोखवायवह अवधछलीरीछल्योरीतिभअनूतरी
प्रीतिकीअमीरीसखीकहहिंअरीरीमरीघायलसीलोटैंजैसेलोटनकबूतरी

सोरठा–निरख्यो सखिन विहाल, बूड़त वारिधि विरह के।
दोऊ दशरथ लाल, लताभवन ते प्रगट भे॥

सवैया

अरविंद के कानन ते कढ़िकै जिमि हंस के सावक ह्वै सरसे ।
पुनि ज्योहीं तुपार अपारहि ते युत वासरनाथ प्रभा बरसे ॥
प्रगटे घनश्याम घटानि ते ज्यौं रजनीपति ह्वै हिय के हरसे ।
तिमि कोशल लाल दोऊ रघुराज लता गृह ते कढ़िकै दरसे ॥
जैसे चकोरहि चंद मिलै पपिहा को पयोद मिलै जिमि स्वाती
ज्यों जल बाहर आइ परै पुनि जाइ परै दह मीन की जाती ॥
सूखत साली यथा बरसै घन धार सुधा की मुये मुख आती ।
त्योंहीं सखीन समाज की आज लखे रघुराज भै शीतल छाती

दोहा—जनक लली सो तेहि छणै, मधुर अली कह बैन ।
लखहु रूप जो ध्यान धरि, खोलि लखहु सो नैन ॥

सवैया ।

कान में वाणि परी सखि की जबसों सपनो सो भयो सियक
खोलि बिलोल बिलोचन कंज विमोचन शोच बिलोक्योतहां
श्री रघुराज हियो हुलसाय लजाय रुपाय रही मन माहीं ।
वा सुख क्यों मुख सों कहि जाय जो जानती जानकी दूसरना

दोहा—आपुस में भापन लगीं, भूपकुमार अनूप ।
पगीं प्रेम सिगरी सखी, रँगीं राम के रूप ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

महाशोभ सीमा उभै बंधु बीरा । हरैं हेरि ही की सहेलीन पीरा ।
न इंदीवरो देह की दांज पावे । गोराई लखे पीतकंजो लजावै ॥

छंद गीतिका ।

राजति रतन चौतनी शीशन सुभग तन सित श्याम ।
मनु सितासित घन घटन शिर दिनकर युगुल अभिराम ॥

शिर सजत सुंदर श्याम चीकन काक पक्ष नवीन।
विच विच सुमन के गुच्छ स्वच्छ सुतार छवि किय छीन॥
जनु सजल नीरद में लसति सुंदर बलाकन माल।
मनु उभय दिशि घेरयो विधुंतुद पर्व लहि उडपाल॥
अध इंदु उपमा हरत सोहत भूरि भाल विशाल।
तेहि मध्य केसर रेख युगुल विशेष लसति रसाल॥
मनु श्वेत श्याम घटानि में युग दिपति दामिनि रेख।
जिमि कमल कोसहि ओस कन श्रम विंदु वदन अशेख॥
युग श्रवण मकराकार कुंडल सकल शोभासार।
मनु मदनवापी मीन युग खेलत करत संचार॥
अलकें हलकि लटकें कपोलन मोल जिय जनु लेहिं।
मनु चंद मंडल भुजग पियत पियूष सुख अवलेहिं॥
भ्रुकुटी विकट लगि श्रवण सोहत काम धनु छविछीन।
जनु हद्द सुखमा रेख विश्व विरंचि निज कर कीन॥
पुनि कहति कोउ अवलों न ऐसे लखे नैन विशाल।
जिन सैन शर लगि कौन अस जो होत नाहिं विहाल॥
कोउ होत हाल विहाल लखि कोउ होत हाल निहाल।
कोउ तजत जग जंजाल अतिहि उताल ह्वै कंगाल॥
नहिं सोनिमा सुखमा सरोजनि वसी इन दृग आय।
इनकी कटाक्षन लगे को नहिं घूमि घायल जाय॥
कोउ कहति इनके अधर वसत अमोल अमल पियूष।
जेहि एक वारहु पान कीन्हे रहति नाहिं पुनि भूप॥
सखि गोल लसत कपोल मंडल मुकुर सुछवि पराजि।
अस विमल वस्तु लखी न कबहूँ पटतरी किमि छाजि॥
अति चारु चिबुक सुनासिका मधि लसति विमल बुलाक।

शुक मुकुत गहि मुख चहत मनु लघु आम फल छुत छा
मृदु माधुरी मुसक्यानि मुख की मढ़ति मही मरीचि।
अवलोकि उर आनंद की उठतीं अनेकन वीचि॥
सखि श्याम गौर सुवदन शोभा सदन वरणिन जाय।
निज गर्व कदन विचारि मदनहुँ रहत रदन देखाय॥
कल कंबु कंठहि मुकुत कंठी युग लरनि मधि हीर।
मनु वंधु विधु गुनि कंबु भुजनि पसारि मिलत अधीर॥
यह श्याम सुंदर तन लसत चौलर सुहीरन हार।
दिनकर सुता मधि करत मंडल मनहुँ सुरसरि धार॥
भुज दंड सुंदर कलित अंगद लसहिं सुठि सित श्याम।
लखि फणी मणिधर सिखे कुंडल करण मनु छवि छाम॥
मणि चटक कटक सुपानि निकटहि देखि अटकत चेत।
जनु कियो रक्षण वंधु रवि निज किरणि हिमि भै हेत॥
इन पाणि पंकज परस प्यारी भाग वश जेहि होइ।
तन ताप दाप न व्याप तेहि सम जगत में नहिं कोइ॥
पट पीत कटि तट कंध लौं छहरत सुछोनी छोर।
मनु दमकि दामिनि श्याम सित घन करति पुहुमि हिलोर।
मृगराज भरि उर लाज किय वनवास लंक निहारि।
पद लहन सम सरि तपत पंकज सहत आतप वारि॥
कोमल चरण कमलन विनिंदक कठिन पुहुमि पयान।
तापर उपानह हीन लखि किमि रहे सखिन अपान॥

दोहा—पुनि कोउ बोली सखी, वाढ्यो प्रेम दराज।
मोर काज अब कछु नहीं, लखब छोड़ि रघुराज॥

पद।

आली लखो वनमाली सलोना।
जालिम जुलुफ विपुल व्याली सम मोहिंडसी किमिजाईतोना

हरि लीन्ह्यों हिय राजकुँवर यह मंजुल हँसनि कुसुम कर दोना।
ठाढ़ो लताभवन के द्वारे जिमि कंदर कढ़ि केहरि छोना ॥
नैन सैन हनि हरयो चैन सब मैन है न सम कोउ अरु झोना ।
लागी लगन साँवली सूरति शपथ मोरि अब कोउ वरजो ना॥
श्री रघुराज राज ढोटा पर तन मन वारि भई अब मौना ।
लोकलाज कुलकाज बिसरिगो आजुहि होनी होइ सो होना ॥

दोहा–जनकलली अनमिष चितै, श्यामल राजकुमार ।
धरयो ध्यान मीलित दृगनि, ठाढी गहि तरुडार ॥
प्रेम विवश भै जानकी, मधुरअली जिय जानि ।
पकरि पाणि पंकज बिहँसि, बोली मंजुल बानि ॥

सवैया ।

देर भई गहि शाख तमाल की ठाढ़ी अहै पग पीर न जोवै ।
ध्यान धरे गिरिजा वपु को मिथिलेशलली तू वृथा क्षण खोवै ॥
पूजन कीजै बहोरि उतै चलि मांगियो जो मन में कछू होवै ।
देखि ले साँवरो राजकुमार खरो रघुराज महा मुद मोवै ॥

दोहा–सखी वचन सुनि सकुचि सिय, दीन्ह्यो दृगन उघारि ।
सन्मुख ठाढ़े कुँवर लखि, करी मनहि बलिहारि ॥

सवैया ।

नख ते शिखलों लखि राजकिशोर [illegible] न परैं पलकैं ।
मिलिहैं मोहि नाथ [illegible] हिये भलकैं॥
रघुराज [illegible]
छवि [illegible]

विधि कैसी करौं इनहीं के गरे मम हाथन सों जयमाल परै ॥
चाप महेश को होय हरू अवधेश को लाडिलो पाणि सों टौरै।
वा दिन देव देखाउ हमें जयमाल धरौं इनके गल ठौरै ॥
श्री रघुराज सदा निरखौं हरषौं यहि औसर जो चित चौरै।
साँवरो होइ हमारो पिया अरु देवर होइ लला लघु गौरै ॥

सोरठा–मन महँ करति विचार, परी प्रेम परवश सिया।
चलति नैन जलधार, चंदकला बोली वचन ॥
वचन सयुक्ति बनाय, सीतहि सरस सुनाइ कै।
मधुर अली इत आय, सुनै कछुक चाहति कहन ॥

सवैया ।

ह्वैगे विलंब बैठी इतही अब अंब गये बिन कोप करैगी।
पूजन बाकी अहै जगदंब को लंब भये रवि बेला टरैगी ॥
श्रीरघुराज निहारि लई मन की उपजी नहिं फेरे फिरैगी।
आउब कालिह यही बेरिया इत गौरि कृपा सब पूरी परैगी ॥

दोहा–अस कहि सखि मुसक्याइ मृदु, नैन नचाय नवाय।
सियहि चितै चितई सखिन, राज कुँवर दरशाय ॥
चंदकला के वचन सुनि, मातु भीति उर आनि।
चली पलटि पग जानकी, गूढ गिरा जिय जानि ॥

सवैया ।

देखै बहोरि बहोरि कुरंगन त्यों हीं विहंगन भृङ्गन सीता।
ता मिसि राजकुमार विलोकति होत अघाउ न चित्त पुनीता ॥
लालच लागी विलोकन की इत त्यों उत है जननी ते सभीता।
खेलत चंग से चित्त चली ज्यों बँधी रघुराज के प्रेम के फीता ॥
दूर सिधारत जानि कै जानकी पाटी तहाँ अपनो मन कीन्ही।
प्रेम तरंगन रंग अनेकन त्यों मति की लिखनी करि दीन्ही ॥

नेहकी स्याही जलै अनुराग को श्रीरघुराज पिया निज चीन्ही।
श्रीरघुवीर की यों तसवीर बनाइ सिया हिय में धरि लीन्हो॥
दोहा—दूर दरश तिमि जानि कै, रचि रचि रुचि रघुवीर।
चित मिथिलेश कुँवारि की, रची रुचिर तसवीर॥

चौपाई।

बहुरि बहुरि सिगरी सखि देखें। बिछुरनि जानि महा दुख लेखें॥
करहिं परसपर वचन बखाना। अस सुंदर नहिं आन जहाना॥
देखि भूप सुत साँवल गोरा। अब न चहत चित चितवन ओरा॥
करहिं विरंचि सिद्ध यह योगू। साँवल कुँवर जानकिहि योगू॥
प्रण मिथिलेश विचारि बिसूरें। केहि विधि राम शम्भु धनु तूरें॥
को सखि जाय नृपहि समुझावे। प्रण परिहरि सिय व्याह करावे॥
अपर कह्यो भल भापहु सजनी। लखहु होत का बीते रजनी॥
मोरे मनहिं गौरि विश्वासा। करिहैं पूरि हमारी आसा॥
कोउ कह सबै सखी जुरिआई। भूप द्वार बैठहिं बरिआई॥
की नृप श्याम कुँवर सिय व्याहैं। लेइ कि तिय बध अब नरनाहैं॥
कोउ कह चलहु सुनै नहिं कहहीं। ऐसहि होइ यथा चित चहहीं॥
श्याम कुँवर छवि सुनत सुनैना। सोऊ प्रण करिहैं कछु भैना॥
दोहा—जननि जनक संमतहि ते, होत सुता को व्याह।
जो जननी वारण करी, प्रण तजिहैं नरनाह॥

चौपाई।

गौरि गेह गवनी जब सीता। प्रभु कह लषणहिं वचन पुनीता॥
लखी लखा मिथिलेश कुमारी। हम तो अस नहिं सुछवि निहारी॥
कालि स्वयंवर होवनहारा। धौं केहि देइ सुयश करतारा॥
जागी कौन भूप को भागा। का पै देश कियो अनुरागा॥
सुनत लषण बोले मृदु बानी। रीति हमारि नाथ अस जानी॥

जहां रहत कोउ रघुबंसी। तहँ न होत दूसरो प्रशंसी
लषण वचनसुनिमृदुमुसकाई। राम कह्यो बेला बड़ि आ
तोरि प्रसून चुके भरि दोना। चलहु कालिह होई जो होन
अस कहि चले गुरू पहँ रामा। हिय वरणत सिय छवि अभिराम
मिलन देखि सियरघुपतिकेरो। देव पाय उत्साह घनेरो
पूरण जाति काम तेहि वारा। लगे बजावन विबुध नगारा
चढ़े विमान कुसुम झरिलाये। राम लषण मुनिवर पहँ आये

दोहा–गुरु समीप सुम दोन दोउ, धरि पद कियो प्रणाम।
कौशिक कह्यो विलंब करि, किमि आये इत राम॥

कवित्त।

धरि धनुबाणजोरिपाणिबाणिबोलेरामसरलस्वभावछलछंदनाहुआन है
गयेमिथिलेशफूलबाटिकामेंफूलहतफूलनकेलेतलख्योकौतुकमहान
भनेरघुराजआईजनकदुलारीतहां पूजनकेकाजगौरीसहित इसान है
सखिनसमाजदेख्यौंविभवदराजआजऐसोनाउमाकोनारमाकोसुन्योकान

दोहा–सकल जानि मुनि योगबल, रामहि दियो अशीश।
होइ मनोरथ पूर तव, कृपा करहिं जगदीश॥

चौपाई।

करि पूजन मुनि सविधि सुखारी। भये मूलफल कंद अहारी
बहु विधि व्यंजन सुखद बनाये। युगुल बंधु कहँ बोलि जिमाये
जो अघाइ नाहिं यागन भागा। सो अघान लहि मुनि अनुरागा
करि भोजन कर चरण पखारी। मुनि समीप बैठे धनुधारी
कहन लगे मुनि कथा पुरानी। यद्यपि रही रामकी जानी
सुनियत मनुज कहत सब कोई। होत प्रभात स्वयंवर होई
कीन्ह्यो नृप विदेह प्रणभारी। भंजै धनु सो लहै कुमारी
सहै शंभु कोदंडकठोरा। तासु कथा सुनु गाधिकिशोरा
दक्ष यज्ञ वध पूरब काला। शंकर कीन्ह्यो कोप कराला

यही धनुप गहि देवन भाख्यो। सुर नहिं यज्ञ भाग ममराख्यो॥
ताते यही धनुप शर मारी। करिहौं नाश सकल असुरारी॥
सुनत शंभु के वचन कराला। डरे देव संयुत दिगपाला॥
दोहा–कियो प्रसन्न पुरारि को, दियो यज्ञ कर भाग।
शांत कोप शंकर भये, तब कीन्ह्यो धनु त्याग॥

चौपाई।

निमि नरेश के छठयें वंसा। देवरात भो नृप अवतंसा॥
देवरात कहँ शंभु बोलाई। दियो धनुप तेहि भवन धराई॥
थाती सम शिव धनुप धरो है। सोइ धनुकरनृप प्रणहि करोहै॥
मिथिला देश माहँ यक काला। परचो अवर्ष कराल अकाला॥
मुनिजन कह्यो जनक पहँ जाई। निज कर करहु कृपी नृपराई॥
मिटै अकाल प्रजा सुख पावैं। नृप चाल्यो तब हल वसुधा मैं॥
हल चालत महि कढ़ी कुमारी। सीतानाम महा छविवारी॥
राख्यो भवन सुता सो राजा। एक समय पूजन के काजा॥
भूमि पखारन कह्यो नरेशा। शिव धनु रह्यो धरो तेहि देशा॥
सोई अयोनिज सीय कुमारी। धनु उठाइ कर भूमि पखारी॥
भूपति लखि अचरज मन माना। तबते यह कठोर प्रण ठाना॥
जो कोउ शंभु शरासन तोरी। तेहि ब्याहिहौं अयोनिज छोरी॥
दोहा–यह प्रण सुनि मिथिलेश को, आये भूप अपार।
तौन स्वयंवर भोरहीं, ह्वैहै राजकुमार॥

चौपाई।

यह सब कथा कही मुनिराई। संध्या समय जानि दोउ भाई॥
गुरु कौशिक शासन शिर धरिकै। संध्या कियो वेद विधि करिकै॥
पुनि साधारण अंबर धारी। बैठे तरु छाया सुखकारी॥
तब पूरब दिशि भयो प्रकाशा। ह्वै ग मनहुँ फटिक की आशा॥

किरणि हजारन छई दिशाना । मंद परी नखतावलि नाना
ज्यो मयंक मयूप पसारी । दिशि सुंदरी विंदु मनहारी
अरुण राग राजत चहुँ ओरा । मनु माधि रजत थार चित चोरा
विरहिन को दुखदायक पूरो । संयोगिन सुखदायक रूरो
दियो दिवाकर ताप मिटाई । जोन्ह भूमि मंडल पसराई
चितै चकोर कुमुद हरपाने । मुकुलित कमल मनहुँ सकुचाने
उदित निशाकर लखि रघुराई । सीता वदन सुछवि सुधि आई
कह्यो लपण सों प्रभु मुसक्याई । लखहु मयंक महा सुखदाई
सोरठा—शशि मंडल अवलोकि, कछु सिय मुख मंडल सरिस ।
कह्यो बुद्धि थिर रोकि, पावै किमि सम सरिस सो ॥

कवित्त ।

जल तेजनमतापैघटतबढ़तरोज बंधुविपवारुणीकोसाहितकलंकहै
वासरमलीनरोगयक्षमातेदीनपुनि पाइपूर्णमासीपर्वराहुतेसशंकहै ॥
मध्यश्यामताई विरहीजनको दुखदाईपरिपरिवेशनहिं ठहरैनिशंकहै
रघुराजसियमुखसमकिमिभापैंमुखभापत मयंकसमसोईमतिरंकहै

दोहा—सिय सुधि आवत प्रभु हिये, कीन्ह्यो प्रेम पसार ।
कह्यो चंदही सों वचन विरही जन अनुहार ॥

सवैया ।

रेविधु कोकन शोक प्रदायक तूजग जाहिर पंकज द्रोही ।
काम को मीत करै अति शीत कियो गुरु को अपकारहैकोही ॥
भापत श्रीरघुराज सुने सिय के मुख की सरि तोहिं न सोही ।
नीक न लागत मोहिं मयंक वड़ो विरहीजनको निरमोही ॥

दोहा—सीय प्रेम वश प्रभुहि लखि लपण कह्यो वर बैन ।
चलिय नाथ गुरु निकट अब, वहुत वितीतति रैन ॥
सुनत वचन असअनुज के, चले राम मुनि पास ।

बैठि निकट शिर नाइ के, सुनन लगे इतिहास ॥
विश्वामित्र बिलोकि तहँ, अलसाने कछु नैन ।
कह्यो लाल कीजै शयन, बैठन अवसर हैन ॥
सुनि मुनि शासन बंधु दोउ, किये शयन सुखपाय ।
सपन्योहूं में सिय सुरति, बिसरै नहिं बिसराय ॥
उतै सीय गै गौरि गृह, राजकुँवर धरि ध्यान ।
जोरि पाणि पंकज करी नति तति वेद विधान ॥

छंद मनोहरा ।

जै प्रिया पुरारी शैल कुमारी नहिं बिकरारी मनहारीयशविस्तारी ।
षटमुख महतारी वर तपधारी दैत्य बिदारी दुखहारी जग संचारी ॥
कृत भव रखवारी धर्म प्रचारी सुजन निहारी उर भारी दायाकारी ।
देती फल चारी अधम उधारी स्वामिहमारी गतिसारी शक्तिनधारी॥

छंद हरगीतका ।

जैजै हिमाचल दिव्य कन्या विश्व धन्या सुखमई ।
जै शंभु चन्द्रानन चकोरी काहि तैं नहिं गति दई ॥
जैजै गजानन जन निशुंभनि शुंभ रण संहारिनी ।
दुख हारिनी सुख कारिनी उपकारिनी जन तारिनी ॥
जै शंभु भामिनि वसन दामिनि काल यामिनि कोप में ॥
कैलास वासिनि जग प्रकाशिनि करति जन हित चोप में ॥
भव भव विभव संभव पराभव अभव भव सब कारिनी ।
दुर्लभ सुलभ तोहिं सहज सब ब्रह्मांड स्ववश विहारिनी ॥
दोहा—पतिव्रता पति देवता, जहँ लगि हैं जग नारि ।
तिनमें तुमहिं शिरोमणि, भाषत वेदहु चारि ॥

छंद चौपैया ।

सेवत तोहिं प्रीति बहु दिन बीते नहि मांगी कछु माता ।
सब कारज साधो मो मन भाओ तैं चारि फल दाता ॥

रानी कह्यो जाउ सँग माहीं। करवाओ भोजन सिय काहीं॥
गईं सङ्ग लै सखि वैदेही । करवायो भोजन पुनि तेही ॥
दोहा–पौढ़ायो परयङ्क पर, अली असन करवाय ।
लगी चरण चापन हुलसि, मंत्रन दीठि झराय ॥
फुलवाई वरण्यो कछुक, तुलसी कृत अनुसार ।
अर्थ भाव धुनि युक्ति वश, भयो विमल विस्तार ॥
जे बांचैं समझैं सुनैं, यह फुलवारि विहार ।
तिन रसिकन सज्जनन को, मम प्रणाम बहु वार ॥

सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवर ग्रंथे पुष्पवाटिका वर्णनो नाम अष्टादश प्रबन्धः ॥ १८ ॥

दोहा–राम लषण कौशिक सहित, कियो रैन सुख शयन ।
मनहि भयन उर चयन भरि, मीलित मंजुल नयन ॥
चारि दंड जब रहि गईं, रजनी अति अभिराम ।
ब्रह्म महूरत आइगो, जगे लषण युत राम ॥
कह्यो लषण सों राम तब, आजु तुरंत नहाय ।
प्रात कृत्य निर्धारि सब बैठैं गुरु ढिग आय ॥

चौपाई ।

आज राजमंदिर महँ प्यारे । सुता स्वयंवर होत सकारे ॥
नृप मिथिलेश नरेश बोलैहैं । गुरुहि बोलावन सचिव पठैहैं ॥
लषण स्वयंवर कौशिक जैहैं । हमहुँ तुमहुँ गुरु संग सिधैहैं ॥
निरखि स्वयंवर सकल तमासा । हमहुँ तुमहुँ बहु लहव हुलासा ॥
अस कहि सज्जन के सुखदायक । मज्जन करन चले रघुनायक ॥
लषण लगे मज्जन बहु योगो । विकसित कमल कोक संयोगो ॥
अरुण किरणि कढ़ि पूरुब आशा । कीन्ह्यो रजनि जनित तम नाशा ॥

गगन भये दुति झलमल तारे। मनहुँ समर करि रवि सों हारे॥
विकसित कमल कुमुद सकुचाने। शशि मलीन लखि मनहुँ लुकाने॥
बोलि उठे विहंग बिन खेदा। रवि लखि पढ़हिं विप्र जनु वेदा॥
पूरण प्रभा प्रभात परेखी। पुरुष सिंह परिमल पथ पेखी॥
पुहुमि पटल पुहुमी परिपूरी। पग पग परी पराग प्रचूरी॥

दोहा—मज्जन कीन्ह्यो बंधु दोउ, दीन्ह्यो अर्घ प्रदान।
निर्धारी संध्या सकल, करिकै तिलक विधान॥

चौपाई।

पहिरि वसन आये निज वासा। धारयो विमल विभूषण वासा॥
दियो किरीट दिवामणि भासो। गहि कोदंड चंड रिपु नासो॥
कंधन धरे निषंग विशाला। कसि कम्मर बांधे करवाला॥
पीतांबर तन सोहत कैसे। मेदुर घन रवि आतप जैसे॥
कह्यो लषण सों प्रभु मुसक्याई। आजु स्वयंबर लखब सिधाई॥
बोले लषण कंज कर जोरी। सुनहु नाथ विनती कछु मोरी॥
होत स्वयंबर जनक सुताको। देखत बल बीरज यश जाको॥
पै अचरज लागत मन माहीं। हरि सनमुख शृगाल नहिं जाहीं॥
उये शशी सोहत नहिं तारा। तहां गवन तसनाथ तुम्हारा॥
रघुनायक बोले मुसक्याई। उहां न लषण किहेहु लरिकाई॥
सानुकूल जापर विधि होई। रंगभूमि पैहे यश सोई॥
अस कहि गवने गुरू समीपा। पुरुष सिंह सुंदर कुलदीपा॥

दोहा—करि मज्जन पूजन सविधि, जहां रहे मुनिराय।
जाय नाय शिर पांय प्रभु, बैठे आशिष पाय॥

चौपाई।

उतै उठे मिथिलेश प्रभाता। कियो विचार बुद्धि अवदाता॥
आजु सुखद शुभ योग सोहावन। सतानंद कहँ चही बोलावन॥

अस विचारि मिथिला महराजा। मज्जन पूजनादि करि काजा॥
सतानंद कहँ पठयो धावन। ल्यायो तुरत पुरोहित पावन॥
करि प्रणाम बोले मिथिलेशू। बोलि पठावहु सकल नरेशू॥
रंगभूमि महँ सकल प्रकारा। करहु स्वयंवर कर संभारा॥
सीय स्वयंवर सुनि चित चाये। देश देश के भूपति आये॥
यथा योग मंचन बैठावहु। यथा योग्य सतकार करावहु॥
पौर जानपद सभ्य सुजाना। विविध देश वासी जन जाना॥
आवहिं देखन सकल स्वयंवर। सुर विमान चढ़ि देखहिं अंबर॥
नगर देहु डौंड़ी पिटवाई। नारि वृद्ध शिशु देखहिं आई॥
कौशलेश दशरत्थ कुमारे। कौशिक मुनि के संग सिधारे॥

दोहा—विश्वामित्र समीप चलि, मुनि समेत दोउ भाय।
मेरी विनय सुनाय तिन, ल्यावहु आसु लेवाय॥

चौपाई।

सुनि मिथिलेश निदेश मुनीसा। एवमस्तु कहि दियो असीसा॥
उठि तहँ ते सचिवन बोलवायो। जनक राज कर हुकुम सुनायो॥
सचिव सपदि सब कियो विधाना। सतानंद शासन परमाना॥
सकल नृपन शासन पठवाये। रंगभूमि सुंदर सजवाये॥
देश देश के सकल महीपा। सजे समाज सहित कुल दीपा॥
भूषण वसन विविध विधि धारे। भूप अनूप रूप शृंगारे॥
निज निज सब साहिबी समेतू। चले स्वयंवर देखन हेतू॥
बंदी विरदावली बखानैं। भरे गर्व मन शक्र समानैं॥
मोछन पर सब फेरहिं हाथा। चहुँकित चितै कँपावहिं माथा॥
कहहिं परसपर वचन विशाला। परिहै कौन कंठ जयमाला॥
कोउ कह आजु शंभु कोदंडा। दोरदंड बल करब त्रिखंडा॥
कोउ कह हमहिं विलोकिकुमारी। किमि जयमाल और गर डारी॥

दोहा–कोउ निज भुजनि निहारि नृप, भरे घमंड अखंड।
अति निर्भर बरबर बदत, को हम सम बरिबंड॥

छन्द भुजंग प्रयात।

चढ़े मत्त मातंग पै भूप केते। मनो आजुही स्वर्ग को जीति लेते॥
महा सानवारे बड़ी सैनवारे। चले आवते झूमते बीजवारे॥
कोऊ पंथ भूमैं तुरंगैं नचावैं। सुनारीन के वृन्द शोभा देखावैं॥
कोऊ स्यंदनै में बनाये सुवेशा। दिहे क्रीट मुक्ता गुथे केश केशा॥
कोऊ पालकी पै महीपै सवारे। धनेशै लजावैं सुअंगै सुधारे॥
कोऊ बैल के यान पै बैठि आमे। चढे तख्तनामै कोऊ तामजामै॥
प्रतीहार बोलैं छरी पाणि धारे। छजैं छत्र चौंरें चलैं ओर चारे॥
तुरंगैं मतंगैं सतांगैं अनेका। मच्यो शोर भारी थकै एक ठेका॥
उड़ी धूरि पूरी नभै पंथ जाई। रही भानु के भास को भूरि छाई॥
अनंतै किताके लसैं ते पताके। अरूझें मनो भानुके यान चाके॥
भई भोर भारी पुरी चारि ओरा। बजैं वेश बाजे मच्यो मंजु शोरा॥
सबै देशवासी पुरी के निवासी। गये रंगभूमै लखैं के हुलासी॥
युवा वृद्ध बालौ नरो नारि जाई। परै जानि ऐसो न होती समाई॥
जहां रंगभू को बनो तुंग द्वारा। तहां होत भूरे पयानो पवारा॥
बने वेश बांके बड़े ऐंडवारे। जुरे रंगभूके सबै भूप द्वारे॥
प्रतीहार धाये विदेहैं जनाये। महाराज भू के सबै भूप आये॥

दोहा–जनक बोलाये सचिव सब, दियो निदेश सुनाय।
यथा योग सब नृपन कहँ, बैठावहु तुम जाय॥

चौपाई।

मंत्री सचिव मुसाहिब धाये। लगे सबन बैठावन चाये॥
रहीं मंच अवली जो आगे। बैठाये राजन बड़ भागे॥
तिनमहँ बड़पन के अनुसारा। भे आसीन भूमि भरतारा॥

तिन पाछे मंचावलि माहीं । बैठाये सब सज्जन काहीं ॥
तृतिय मंच अवली जो भाई । पौर जानपद दिय बैठाई ॥
अति उतंग मंदिर चहुँ ओरैं । बैठि नारि नर वाल करोरैं ॥
रंगभूमि महँ अति उत्कर्षा । भयो महा मानव संघर्षा ॥
कसमस परत कढ़त जन काहीं । अंग अंग दीसैं जनु जाहीं ॥
सिय प्रताप महिमा प्रगटानी । नहिं संकेत परयो कोहु जानी ॥
पूरुव पश्चिम दक्षिण ओरा । बैठे भूपति मनुज अथोरा ॥
राज प्रकृति उत्तर दिशि पाहीं । जनकासन ढिग बैठत जाहीं ॥
फटिक तुंग मंदिर तेहि पाछे । तहँ रनिवास विराजत आछे ॥

दोहा–रंग भूमि के मध्य में, रह्यो विमल मैदान ।
कनक खंभ झालर मुकुत, तान्यो विशद वितान ॥

चौपाई ।

रंगभूमि यहि विधि जब भरिगै । राम दरश लालश हिय अरिगै ॥
पुर चारण महँ जे पुरवासी । राम रूप देखे छवि रासी ॥
ते आपुस महँ अस वतराहीं । युगल कुँवर आये कस नाहीं ॥
जिनहिं लखे वहि दिन पुरवागत । को अस जोन उन्हैं अनुरागत ॥
कोउ कह जनक वोलाये नाहीं । यह समाज किमि रच्यो वृथाहीं ॥
कोउ कह हम तो अति ललचाये । उनहीं को इत देखन आये ॥
कोउ कह उत विदेह लखि आये । दीठि लगन भै नाहिं वोलाये ॥
कोउ कह तुम जानहु नहिं हेतू । मन महँ जनक कियो अस नेतू ॥
नृपन वोलि उत्तर दै देहीं । पुनि रामहि व्याहैं वैदेही ॥
कोउ कह धनुष भंग विन कैसे । प्रण तजिहैं भूपति नहिं ऐसे ॥
वा दिन जे न लखे रघुराई । ते पूछहिं कैसे दोउ भाई ॥
तिनहिं देहिं उत्तर जे देखे । उन विन सकल वृथा मम लेखे ॥

दोहा–यहि विधि सिगरे नारि नर, कहैं परसपर वैन ।
कौशलनाथ कुमार के, लखन लालचो नैन ॥

चौपाई ।

यहि विधि राज समाज विराजी । सचिवप्रधान सुमति कृत काजी॥
देखि स्वयंवर सव संभारा । जाय जनक सों वचन उचारा॥
नाथ सभा महँ धारिय पाऊ । आये सकल भूप भरि चाऊ॥
रंगभूमि महँ जुरी समाजा । तुव आगमन चहत सव राजा॥
सुनि विदेह भूपण पट धारे । रंगभूमि कहँ सपदि सिधारे ॥
शासन भेजि दियो रनिवासा । वैठि झरोखन लखैं तमासा ॥
नृप विदेह महिपी छविखानी । नाम सुनैनाशची समानी ॥
सो निज संगहि सीय लेवाई । वैठो झीन झरोखन जाई ॥
[मं]त्रिन युत मिथिला महराजा । गयो रंगमहि सहित समाजा ॥
उठी समाज विदेह विलोकी ।कोउ उरहरपित कोउ उर शोकी॥
नृप विदेह को जेठ कुमारा । लक्ष्मीनिधि जेहि नाम उचारा ॥
रंगभूमि महँ पितु सँग आयो । मनहुँ वीर रस रूप सोहायो ॥
दोहा—सुहृद प्रकृति सरदार भट, परिचर सहित समाज ।
सिंहासन आसीन भो निमिकुल को शिरताज ॥

चौपाई ।

सतानंद उत चलि मतिधामा । विश्वामित्रहि कियो प्रणामा ॥
कौशिक आशिप दियो अनंदे। युगल कुँवर गौतम सुत वंदे ॥
गाधिसुवन वोले मति सेतू । कहहु आगमन कर मुनि हेतू ॥
सतानंद तव वचन सुनायो । तुमहि विदेह नरेश वोलायो ॥
कोशलनाथ कुमार समेता । रंगभूमि कहँ चलहु सचेता ॥
मुनि समाज संयुत मुनिराई । चली स्वयंवर लखन तुराई ॥
देश देश के भूपति आये । रंगभूमि महँ नृप वैठाये ॥
अव वाकी आगमन तुम्हारा । जव जैहौ तुम सहित कुमारा ॥
तव शिव धनुप भूप मँगवैहैं । निज प्रण कहि भूपन दरशैहैं ॥
सतानंद की सुनि अस वानी । कौशिक मंजुल गिरा वखानी ॥

आप चलहु हम आवत पाछे । लै दोउ राज कुमारन आछे ॥
सतानंद मुनि उठे तुरंता । गये जहां मिथिलापुर कंता ॥
दोहा—कौशिक आवत कुँवर युत, कीन चहिय सतकार।
सबते ऊपर अवनि महँ, अवध भूमि भरतार ॥
चौपाई ।
इतै स्वयंवर देखन हेतू । विश्वामित्र कियो असनेतू ॥
राम लषण सों कह मुसक्याई । बैठहु इतै अबै दोउ भाई ॥
जबलगि नहिं मिथिलेश कुमारा । तुमहिं बोलावन कहँ पगुधारा ॥
उचित न तबलगि जाब तुम्हारा । तुम समान नहिं राजकुमारा ॥
प्रथम जात हम जहां विदेहू । जब बोलवैहैं तब चलिदेहू ॥
अस कहि मुनि समाज तहँराखी । चल्यो विदेह दरश अभिला
पहुँच्यो रंगभूमि के द्वारा । प्रतीहार तब जाय पुकारा
महाराज कौशिक मुनि आये । राजकुमारन नहिं लै आये
सुनि विदेह विस्मय उर आनी । चल्यो लेन मुनिकीअगुवानी
कियो जाय नृप दंडप्रणामा । दिय मुनीश आशिष तपधा
रंगभूमि लैगयो लेवाई । हरषे लखि समाज मुनिरा
सब मंचन ते मंच उतंगा । राजमंच जेहि शोभ अभंग
दोहा—कौशिक को बैठाय तेहि, कियो विविध सतकार।
पूंछ्यो कारण कौन नहिं, आये राजकुमार ॥
चौपाई ।
सुनि मुसक्याय कही तब बानी । अहो विदेह बड़े विज्ञानी
सतानंद मुनि गये बोलावन । आये हम तुव सदन सोहावन
वे तो अवध अधीश दुलारे । आवहिं किमि बिन गये कुमा
ति समान भूपति के बेटा । राजराज दशरथ दुलरा
तिन जायँ बोलावन । आवहिं राजकुँवर मनभाए
बोले हरपाई । भलो सिखापन दिय ऋषि

तुम नहिं कहहु कौन अस कहई। तुम सम नहिं ज्ञाता जग अहई॥
पुनि बोल्यो लक्ष्मीनिधि काहीं। आयो कुँवर तुरंत तहांहीं॥
कह्यो विदेह जाहु तुम ताता। आनहु अवध कुँवर अवदाता॥
लक्ष्मीनिधि पितु शासन पाई। चढ्यो तुरंग चल्यो अतुराई॥
कौशिक एक शिष्य पठवायो। राजकुमारन कहि बोलवायो॥
जहँ अवधेश कुमार उदारा। आयो लक्ष्मीनिधि सुकुमारा॥

दोहा–तजि तुरंग अति दूर ते, पगन चल्यो महि माहिं।
चलि आगू लेत भये, राम लषण तेहि काहिं॥

चौपाई।

मिले परस्पर राजकुमारा। मनहुँ चंद रवि अगिनि उदारा॥
पूछि परस्पर तिन कुशलाई। लक्ष्मीनिधि बोल्यो शिर नाई॥
रंगभूमि आये सब राजा। भगिनि स्वयंवर होत दराजा॥
आप पधारहु पिता बोलायो। हय गय रथ वाहन पठवायो॥
प्रभु कह जबते गुरु सँग लागे। हय गय रथ वाहन सब त्यागे॥
चलिहैं पगन पुहुमि पर प्यारे। रंगभूमि जहँ पिता तिहारे॥
कौशिक शिष्य कह्यो पुनि आई। राजकुँवर बोल्यो मुनिराई॥
गुरुशासन सुनि दोउ रघुराजा। चले सहित सब मुनिन समाजा॥
विश्वामित्रहि उते विदेहू। कह्यो नाय शिर सहितसनेहू॥
कहौं काह जानौ मुनिराई। जेहि विधि शिव दिय धनुपधराई॥
जौन भांति कोपे ईशाना। भाग न पायो यज्ञ विधाना॥
यह कोदंड विरंचि करतारा। दीन्ह्यो हरकहँ योग विचारा॥

दोहा–सोइ धनु लै कोप करि देवन कह्यो महेश।
खंड खंड करि अंग सब, देहौं महा कलेश॥
तब अस्तुति करि देवता, कियो प्रसन्न पुरारि।
यज्ञ भाग हर को दियो, आपनि विपति विचारि॥

पूर्व पुरुष यक मम भये, देवरात महराज।
धरवायो हर तिन भवन, सोई धनुष गुनि काज॥
करषत महिहल कनक मय, प्रगटी सुता अनूप।
तासु स्वयंवर होत पुनि, जुरे बहुरि सब भूप॥

चौपाई।

जब प्रगटी सीता सुकुमारी। मैं राख्यो निज भवन कुमारी॥
धरचो धनुष जहँ तहँ यक कालैं। मैं बोलाय भाष्यों सिय बालैं॥
पूजन हेत पखार कुमारी। मैं नहाइ आवतो सिधारी॥
अस कहि मज्जनकरि जब आयो। कौतुक देखि महा भ्रम छायो॥
धनु उठाइ बायें कर सीता। धरचो और थल परम पुनीता॥
मम पूजन हित भूमि पखारी। यह लखि हृदयशंकभयभारी॥
रैन समय जब शयनहि कीन्हा। शंकर मोहिं सपन अस दीन्हा॥
जो कोइ लेवैधनुष उठाई। साजै गुनि खींचै बरिआई॥
जो तोडै कोदंड हमारा। सुता दिह्यो तेहि बिनाहिंबिचारा॥
सपन देखि जाग्यो मुनिराई। मम महिषी तब कह्यो बुझाई॥
तासु बिवाहन योग भई है। करहु रीति सोइ प्रीतिमई है॥
मैं सपनों भाष्यों तेहि पाहीं। कौतुक लख्यो जो नैनन माहीं॥

दोहा—महिषी को संमत समुझि, रच्यो स्वयंवर नाथ।
देश देश के भूप सब जुरे एकही साथ॥

चौपाई।

तब मैं बंदी जनन बोलायो। तिन मुखअसप्रणनृपन सुनायो॥
जो शंकर कोदंड कठोरा। राज समाज आज इत तोरा॥
तेहि गल परी आज जयमाला। व्याहो सो अनूप मम बाला॥
यथा लगी मुनि आजु समाजू। रही ऐसही तबहुँ दराजू॥
तहँ रावण मंत्री इक आयो। नाम प्रहस्त जासु जग भायो॥

बाणासुर बलिराज कुमारा। महा बली जेहि बाहु हजारा॥
पूर्वकाल वर बाज बजायो। सहसवाहु कृतिवास रिझायो॥
औरहु रहे सकल भूपाला। सुनत मोर प्रण ओज विशाला॥
लगे सवाँरन क्रीट अनेका। तमकि उठे एकन ते एका॥
कोउ नरनाह मंद मुसक्याहीं। कोऊ सम्हारत खड्गन काहीं॥
उठि उठि पुनि पुनि बैठहिं भूपा। छाया निरखि बनावहिं रूपा॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। पूजन धनुष जननि पठवाई॥
दोहा-सविधि शरासन पूजि सिय, सखी सहस्र समेत।
जननि भवन को गवन किय, भूपति भये अचेत॥

चौपाई।

राज समाज सुनत प्रण मोरा। निरखि शम्भु कोदण्ड कठोरा॥
कसि कसि कम्मर अंबर बेगी। उठे उठावन भूपति रेंगी॥
कोउ नृप गये धनुष नियराई। देख्यो धनुष भुजग भयदाई॥
आयो भागि कहन असलाग्यो। धनुष न होइ व्याल विषजाग्यो॥
और गयो कोउ तासु समीपा। भयो अंध सो तुरत महीपा॥
धर्‌यो धनुष कहँ पूछनलागा। सकल समाज हास रस जागा॥
अपर गयो कोउ तहां भुआला। लख्यो चाप वपु बाघ विशाला॥
बैठ्यो बहुरि मंच निज आई। कह्यो जनक दिय बाघ वँधाई॥
कोउ पुनि गयो अघी नरनाहा। छूतहि चाप भयो तन दाहा॥
धर्‌यो धनुष कोउ मधिमहँजाई। सको न तिल भरि चाप डोलाई॥
पुनि भूपाल गयो कोउ नेरा। शंभु स्वरूप शरासन हेरा॥
करि प्रणाम बैठ्यो पुनि आई। कहिन सक्यो काहु ते भय पाई॥
दोहा-करि सम्मत सत भूमिपति, जाय एकही बार।
लगे उठावन शंभु धनु, उठ्यो न एकहु बार॥

चौपाई।

बाणा सुर तब उठ्यो प्रकोपी। धनुष उठावन को चित चोपी॥

देखि परयो शिव गौरि स्वरूपा । कियो प्रणाम दैत्य कुलभूपा
चल्यो सभा ते सदन तुराई । मम प्रभु को धनु सवनि सुनाई
तव प्रहस्त कह वचन कराला । लंकनाथ को दीजै वाला
नातो वरवस हरि लै जैहै । जग भरि जुरी काह करिलैहै
तव हम बोले अमरष वयना । रेप्रहस्त बोलत तोहिं भय ना
जो वरवस हठि हरी कुमारी । सीता ताहि मारि हठि डारी
रावण सचिव सुनत अस वाता । गयो भवन मोहिं धिरै अघाता
पुनि यक नाम सुधन्वा राजा । मोहिं कह्यो करि कोप दराजा
धनुष सहित कन्या मोहिं दीजै । ना तो अवशि आज फल
सुनि मम भट अति अनुचितवाणी । धाये तापर काढि कृ
भूप भाग लै सैन्य घनेरी । बहुरि लियो मिथिलापुर

दोहा—भयो वर्ष भरि युद्ध तहँ, भई क्षीण मम सैन ।
ध्यायो देव महेश हम, तव पायो पुनि चैन ॥

चौपाई ।

द्वै रथ भो संग्राम हमारा । समर सुधन्वै मैं हति
भागी फौज चले हम पाछे । मारे गये वीर बहु
पुरी सुधन्वा की संकासी । दई कुशध्वज को सुख
यहि विधि पूरुब भयो हवाला । भयो स्वयंवर नहिं तेहि
होत स्वयंवर सो अब नाथा । आय आप मोहिं कियो सन
इतना कहत जनक नृप केरे । प्रतीहार दूरहिं ते टे
महाराज भूपति शिरताजा । आवत अवध कुँवर रघुरा
सुनिविदेह अति आनँद पाई । रामहि लेन चल्यो अतुर
द्वार देश ते चलि कछु दूरी । देख्यो राम लषण छवि
निरखि राम मिथिलेश महीपै । कियो प्रणाम सिधारि समी
मुनि मंडली महीपति वंदे । राम लषण लखिभये अनं

लक्ष्मीनिधि अरु लषण उदारा । किये विदेह प्रणति सुकुमारा ॥
दोहा–राम लषण कर कमल गहि, चल्यो विदेह लेवाय ।
जनु शृंगार वसंत को, वात्सल्य रस आय ॥

छंद हरिगीतका ।

सोहत महीप विदेह संग कुमार दशरथ राज के ।
करतार संग मनो दिवाकर निशाकरछवि छाजके ॥
मिथिलाधिराज कुमार लक्ष्मीनिधि विराजत संग में ।
मनु अमर गण सैनाधिपति करतार संग उमंग में ॥
पाछे लसति मुनि मंडली तहँ तेज तरणि अखंडली ।
देखत सबै नर नारि अनमिष सरस सुठि शोभा भली ॥
हल्ला पर्यो मिथिला नगर युग राजकुँवर सभा गये ।
जे रहे रक्षक भवन के ते श्रवण सुनि धावत भये ॥
जे संच बैठे मंच नृप अरु नारि नर सब देश के ।
उचि उचि विलोकत छकत छवि मुखकहतसुतअवेधशके ॥
तहँ राजमंडल मधि विमंडित कुँवर कौशल पाल के ।
वार्‌यो मदन महताव युग मनु विविध बीच मशाल के ॥
कोउ कहत कोशलनाथ के नंदन महा रण बांकुरे ।
जग साखि मुनि मख राखि लिय सुकुमार कोशल ठाकुरे ॥
मनु मुदित मंदहि मंद गमनत मत्त मातंगज नती ।
चहुँ ओर हेरत नैन फेरत हरत जनु राजन रती ॥
प्रभु आगमन गीर्वाण सुनि गावत गोविंद गुणान को ।
गदगदे गन डहडहे मन गवने गगन ले यान को ॥
गंधर्व किन्नर सिद्ध चारण सुर हजारन अप्सरा ।
आये स्वयंवर लसन अंबर सजि विमान परंपरा ॥
दोउ बंधु तुसना सिंधु लसत निषंग कंधन में कसे ।

आने अखंड अनीह अनन्त अनामय आदि अजो अवि
शुद्ध सतोगुण शांत स्वरूप सदा अहै सच्चिदानंदहि रा
धारणा ध्यान में धारण योग सनातन श्री रघुराज सुधा
जे हरिभक्त अनन्य रहे ते लखे करुणा वरुणालय नाथ
दीन सहायक सेवन लायक दायक दास के शीश पै हा
श्री रघुराज विकुंठ के नायक भायक भाव के आनँदम
शुद्ध सतोगुण हैं पर तत्त्व विचारि कै नावत भे सब मा
जो हरि हेरत ही सिय के हिय होत भयो हठि हाँस हु
सो कवि कौन कहै सिगरो नहिं कै सकैं शेश अशेश
मैं मति मंद कहौं केहि भांति सो जूगुन क्योंकरै भानु
जानहिं राम सिया हिय की सिय जानति राम की अ

दोहा—राजत राज समाज मधि, कौशल राजकिशोर ।
सुंदर श्यामल गौर तन, विश्व विलोचन चोर ॥

छन्द हरिगीतिका ।

यहि विधि कहत सब नारि नर लखि लषण संयुत
ल्याये लेवाइ विदेह सहित सनेह अति अभिराम
चहुं ओर नैनन फेरि पुनि हँसि हेरिबोले राम ।
मिथिलाधिराज गुरू हमारे बैठ कौने ठाम ॥
बोले विहँसि मिथिलेश जो अति मंच तुंग विशाल
कमनीय निर्मित नागरद तापर गुरू तव लाल ॥
दास कहि लषण रघुनायकहि लै जाय अति सुख
गुनि पद कमल शिर नाय दिय बैठाय दोनों भा
पुनि कह्यो कौशिक सों जनक सब रंगभूमि देखा
[illegible] पतिन की पृथक पृथक परम्परा दरशाय
निज आनमा [illegible] दिय पयान बता

ग्मीनिधि अरु लषण उदारा । किये विदेह प्रणति सुकुमारा ॥
हा–राम लषण कर कमल गहि, चल्यो विदेह लेवाय।
जनु शृंगार वसंत को, वात्सल्य रस आय॥

छंद हरिगीतका ।

सोहत महीप विदेह संग कुमार दशरथ राज के ।
करतार संग मनो दिवाकर निशाकरछवि छाजके ॥
मिथिलाधिराज कुमार लक्ष्मीनिधि विराजत संग में ।
मनु अमर गण सैनाधिपति करतार संग उमंग में ॥
पाछे लसति मुनि मंडली तहँ तेज तरणि अखंडली ।
देखत सबै नर नारि अनमिप सरस सुठि शोभा भली ॥
हल्ला परचो मिथिला नगर युग राजकुँवर सभा गये ।
जे रहे रक्षक भवन के ते श्रवण सुनि धावत भये ॥
जे संच बैठे मंच नृप अरु नारि नर सब देश के।
उचि उचि विलोकत छकत छवि मुखकहतसुतअवेधशके॥
तहँ राजमंडल मधि विमंडित कुँवर कौशल पाल के ।
वारचो मदन महताब युग मनु विविध वीच मशाल के ॥
कोउ कहत कोशलनाथ के नंदन महा रण बांकुरे ।
जग साखि मुनि मख राखि लिय सुकुमार कोशल ठाकुरे ॥
मनु मुदित मंदहि मंद गमनत मत्त मातंगज नती ।
चहुँ ओर हेरत नैन फेरत हरत जनु राजन रती ॥
प्रभु आगमन गीर्वाण गुनि गावत गोविंद गुणान को ।
गहगहे गन डहडहे मन गवने गगन लै यान को ॥
गंधर्व किन्नर सिद्ध चारण सुर हजारन अप्सरा ।
आये स्वयंबर लखन
दोउ

वनमाल उर मणि माल कटि करवाल द्वालन में गसे।
आजान बाहु उदग्र विक्रम दुराधर्ष सहर्ष हैं।
उत्कर्ष कीरति वर्ष वर्ष सुनैन जन सुख वर्ष हैं॥
दुर्जन दुरासद वरसभासद विश्व रचासद शाह हैं।
जिनके नवल नागर कुँवर धनि अवध शाहनशाह हैं।
श्रम विंदु मुख अरविंद मनु मकरंद विंदु सोहावने।
उडु वृन्द नृप युग उदित इन्दु सुइंदिरा मन भावने॥
रघुराज राजकुमार लखि अवनीप कुल शिरताज को।
भे भूमि पति वश लाज जिमिगजराज लखि मृगराज॥
निज काज गर्व दराज मनहुँ पराज ह्वैगो आज है।
...स गाज हत तृणराज तरु तस आज भूप समाज है॥

दोहा—जाकी जैसी भावना, रही मनहिं तेहि काल।
ताको ऐसे लखि परे, दोउ दशरथके लाल॥

सवैया।

जे नृप आये शरासन तोरन गर्व भरे रणधीर महाने।
ऐसे विचार ...ये मन में जितिहै कहु को हमरे समुहाने॥
आँखिन में ...कि रघुराज सुवीर शिरोमणि वेष देखाने।
वीर रसै की ...ी मनो मूरति रोष बिसारि लखे ललचाने॥
क्षितिनाथ छटे कुटिलै कितवै दगाबाज समाज जे आये॥
कपटी कलि मू...त क्रूर महा करि माया कुमारिको ...
रघुराज लखे र...ायक ते महा भीम भयावन दंड ...।
शिर काटन चा...र ज्यों अबहीं करवाल कराल ...।
सीय स्वयंवर मे...जन दानव मानव के वर वेष बनाये।
आये उठावन श...कोदंड अखंड बली भुज दंड ...।
ते रघुराज लखे ...को महाकाल को रूप ज्यों ...

नैन कराल विशाल भुजा बचिहैं नहिं आज दिगंत पराये ॥
जे मिथिलापुर वासी महा सुखरासी रहे छवि पीवन आसी।
रूप उपासी सबै दुखनासी विलोकन और के ओर निरासी ॥
ते रघुराज की मूरति खासी विलोकि सुधासी चखे हैं मिठासी।
नेह की फाँसी परे निरखैं निज नैनन नीके निमेष निकासी ॥
नारि विलोकहिं साँवली सूरति मूरति माधुरी की मनु भाई।
प्रीति मई रसरीति छई अनुराग की आभ अनूप निकाई ॥
श्रीरघुराज मनों झुलफैं की जँजीरन की कुलफैं खोलवाई।
जानि दृगंचल चंचल चोर अचंचल कैदियो बेरी भराई ॥

दोहा—कोटि मदन मद कदन वपु, शोभ सदन सुकुमार।
कहैं सखी केहि पटतरिय, निउछावरि शृङ्गार ॥

सवैया।

पंडित ब्रह्म विज्ञानी बड़े ते विराट स्वरूप सो लागे निहारन।
शीश विलोचन कानहुँ आनन पाद औ पाणि परेखे हजारन ॥
रोमनि रोमनि अंड अनेकन थूलहु सूक्षम विश्व को कारन।
श्री रघुराज स्वयंभु औशंभु सुरेश गणेश औ शेश अपारन ॥
बैठे रहे निमिवंशी सबै तहँते निरखे नवनीरद श्यामै।
लागे सगे सन्बंध जगे अनुराग रँगे अतिशय अभिरामै ॥
श्रीरघुराज विचारैं मनै प्रन टारैं हमैं मिथिलेश बुझामै।
जाति के जाय सबै झुरिकै अब ब्याहैं विशेषिकै जानकीरामै ॥
देखतही नृपरानी सुनैनै पयोधर मैं भयो क्षीर श्रवाऊ।
तैसही पांचहि वर्षके देखत रामहि श्री मिथिलाधिप राऊ ॥
श्रीरघुराजको चूमत सो सुख दंपति को प्रगट्यो शिशु भाऊ।
कोशलपाल के कौशिलाके नहिं लाल हमारे हैं लाल सुभाऊ ॥
योगिन जोहे जबै रघुनाथ परंपद दायक पूर्ण प्रकाशी।

आने अखंड अनीह अनन्त अनामय आदि अजो अविनाशी।
शुद्ध सतोगुण शांत स्वरूप सदा अहै सच्चिदानंदहि राशी।
धारणा ध्यान में धारण योग सनातन श्री रघुराज सुपासी॥
जे हरिभक्त अनन्य रहे ते लखे करुणा वरुणालय नाथै।
दीन सहायक सेवन लायक दायक दास के शीश पै हाथै॥
श्री रघुराज विकुंठ के नायक भायक भाव के आनँदगाथै।
शुद्ध सतोगुण हैं पर तत्व विचारि कै नावत भे सब माथै॥
जो हरि हेरत ही सिय के हिय होत भयो हठि हाँस हुलासै।
सो कवि कौन कहै सिगरो नहिं कै सकैं शेश अशेश प्रकासै
मैं मति मंद कहौं केहि भांति सो जूगुन क्योंकरै भानुहिं भा
जानहिं राम सिया हिय की सिय जानति राम की अन्तरआ

दोहा–राजत राज समाज मधि, कौशल राजकिशोर।
सुंदर श्यामल गौर तन, विश्व विलोचन चोर॥

छन्द हरिगीतिका।

यहि विधि कहत सब नारि नर लखि लषण संयुत राम।
ल्याये लेवाइ विदेह सहित सनेह अति अभिराम॥
चहुं ओर नैनन फेरिं पुनि हँसि हेरिबोले राम।
मिथिलाधिराज गुरू हमारे वैठ कौने ठाम॥
बोले बिहँसि मिथिलेश जो अति मंच तुंग विशाल।
कमनीय निर्मित नागरद तापर गुरू तब लाल॥
अस कहि लषण रघुनायकहि लै जाय अति सुख छाय।
मुनि पद कमल शिर नाय दिय बैठाय दोनों भाय॥
पुनि कह्यो कौशिक सों जनक सब [illegible] देखाय।
पृथिवी पतिन की पृथक [illegible] प [illegible]॥
निरमाण निज अनुमान [illegible]

कीन्हो भली रचना रुचिर अस कहत भे मुनिराय ॥
मिथिलेश मुनि पद नाय शिर अस कह्यो वचन वहोरि।
अब देहु शासन शंभु धनु आवै विनय अस मोरि ॥
बोले महा मुनि मुदित मन मँगवाइये हर चाप।
पूजन करावहु सीय कर आसन विराजहु आप ॥
करिकै प्रणाम मुनीश को नृप बैठ आसन जाय ॥
शासन दियो सब सचिवगण भट प्रवल विपुल बोलाय ॥
ल्यावहु शरासन शंभु को तर धरहु विसद वितान।
सीता करै पूजन सविधि नहिं होइ आन बिधान ॥
सुनि नृपति शासन सचिवगण धाये भटन लै संग।
जनवाय दिय रनिवास महँ मिथिलेश कथित प्रसंग ॥
जबते अवधपति कुँवर आये बीच सकल समाज।
तबते सबन को भयो बदन विलोकनो यक काज ॥
कोउ कहत सुनियत काम सुंदर अंग सुनियत हीन।
सोइ कुकवि बुद्धि बिहीन समता जौन इनकी दीन ॥
कोउ कहत पुनि अस बुधि विशारद सुखद शारद चंद।
इनको बदन लखि भयो भारद यथा पारद कंद ॥
कोउ कहत रतनारे नयन हिय हेरि हारे कंज।
ये भरे शील सनेह नित वै भरे जड़ता गंज ॥
कोउ कहति चितवहु चतुरितुम चित चोरि चखनि चितौनि।
जेहि होत हृदय दुशाल नहिं अस कामिनो कहु कौनि ॥

दोहा—अमल कपोलन में लसें, कुंडल मंडल लोल।
बिमल आरसी में मनहुँ, कल कृत हंस कलोल ॥

छंद गीतिका।

सुंदर अधर मन हरत जिन प्रतिबिंब बिंब बिचारिये।

आने अखंड अनीह अनन्त अनामय आदि अजो अविना
शुद्ध सतोगुण शांत स्वरूप सदा अहै सच्चिदानंदहि रासो
धारणा ध्यान में धारण योग सनातन श्री रघुराज सुपासो
जे हरिभक्त अनन्य रहे ते लखे करुणा वरुणालय नाथै।
दीन सहायक सेवन लायक दायक दास के शीश पै हाथै॥
श्री रघुराज विकुंठ के नायक भायक भाव के आनँदगाथै।
शुद्ध सतोगुण हैं पर तत्व विचारि कै नावत भे सब माथै॥
जो हरि हेरत ही सिय के हिय होत भयो हठि हौंस हुलासै।
सो कवि कौन कहै सिगरो नहिं कै सकैं शेश अशेश प्रकासै
मैं मति मंद कहौं केहि भांति सो जूगुन क्योंकरै भानुहिं भासै
जानहिं राम सिया हिय की सिय जानति राम की अन्तरआसै

दोहा–राजत राज समाज मधि, कौशल राजकिशोर।
सुंदर श्यामल गौर तन, विश्व विलोचन चोर॥

छन्द हरिगीतिका।

यहि विधि कहत सब नारि नर लखि लपण संयुत राम।
ल्याये लेवाइ विदेह सहित सनेह अति अभिराम॥
चहुं ओर नैनन फेरि पुनि हँसि हेरिबोले राम।
मिथिलाधिराज गुरू हमारे वैठ कौने ठाम॥
बोले विहँसि मिथिलेश जो अति मंच तुंग विशाल।
कमनीय निर्मित नागरद तापर गुरू तव लाल॥
अस कहि लपण रघुनायकहि लै जाय अति
मुनि पद कमल शिर नाय दिय वैठाय दोनों
पुनि कह्यो कौशिक सों जनक सव रंगभूमि
पृथिवी पतिन की पृथक पृथक परम्परा
निरमाण निज अनुमान ते सो किय

मनु शंभु गिरि गिरिनील पै यक बार पावस काल में।
लहि भानु आतप उदै वासव धनुप बूंदन जालमें ॥
कोउ कहत ये दोउ अवधपति के कुँवर हैं रण बांकुरे।
आजानु बाहु विलोकि इन अब को लखेनिय ठाकुरे ॥
दोउ पुरुप सिंह विराजमान मुनीश के दोहुँ ओर हैं।
कटि छाम वृपभ समान कंध अनूप भूप किशोर हैं ॥
दोहा-नव योवन मुख अरुनिमा, अति निशंका रणधीर।
इनके सन्मुख नृप भये, जिमि बिन फर के तीर ॥

कवित्त।

कंधननिपंगराजैंहाथनधनुप भ्राजैं बाम बामकरनदराजैंछविछाजैंहैं ॥
आयेमुनिकाजैंकरिबैठेहैंसमाजैंमध्यजैसेगजराजनमेंउभै मृगराजैंहैं ॥
धन्यरघुराजैकियेराखीहैअहिल्यालाजैदीननेवाजैरंगभूमिआयेआजैंहैं।
देखिरघुवंशशिरताजैचहैंभाजैंभूप तजिकैतवाजेंजिमिलवालखिबाजैंहैं॥
दोहा-पीत वसन अभिराम तन, सोहत दोनों भाय।
जलद पटल सित इयाम जनु आतप रह्यो सोहाय ॥
पीत यज्ञउपवीत वर, कन्ध नाभि परयंत।
मनहुँ कनक मरकत शिला, कनकरेख विलसत ॥

सवैया।

यद्यपि बैठे हजारन भूप हजारन भाँति शिंगार सँवारे।
तद्यपि जेते रहे नर नारि विलोचन में पलकानि नेवारे ॥
श्रीरघुराज सुखारे सबै अवधेश कुमार न दीठि पवारे।
ज्यों मकरंद के पीवन को अरविंद पै जात मलिंद कतारे॥
दोहा-कहहिं परस्पर नारि नर, देखे किते कुमार।
पै नहिं देखे अस कतहुँ, नख शिख ते मनहार ॥

कवित्त।

कोऊनिजबंधुकोऊदेखेदीनबंधुकोऊ शत्रुसेनिहारेकोऊमित्रसे निहारेहैं।

देखत दशन दाडिम कली कल कुंद की छवि वारिये ॥
अति चारु चिबुक विचारु सखि मन मोर उपमा अस कहै।
मानहुँ छलकि शशि ते सुधा यक बिंदु अध चूवन चहै ॥
कोउ नारि कहति विचारि देखहु कुँवर सुंदर साँवरो।
दै बोल मोलहि हरत मन पुनि करत जन गण बावरो ॥
कोउ कहहि निशिकर बदन ते निकसति हँसनि छाजित छटा।
बैठी अटा पर छन छटा सी करति कुलि कामिनि कटा ॥
कोउ लिहे शुक कर ताहि लखि सखि कहति बचन विचारिकै।
निज नासिका ते तुव सुछवि लिय राजकुँवर प्रचारिकै ॥
कोउ कहति भामिनि भृकुटि विकट विलोकि श्रवण समीपलौं।
ये साफ सैफ करैं कतल नहिं क्षमै तिय सजनीपलौं ॥
कोउ कहति भाल विशाल में रघुलाल के चंदन लसै।
मनु विश्व छवि धरि इन्दिरा नवहीर मंदिर में बसै ॥
मेचक रुचिर कच कंठ चहुँ कित ऐंचि पोछे चीकने।
मनु सजल सावन श्यामघन निशि नाथ को घेरे घने ॥
पुनि कह्यो कोउ नर निरखि कौशलपाल लालन को तहां।
अब लेहु लोचन फल सकल भल भई पुण्य उदै महा ॥
चौकोर की मणिगण जडित चौतनी क्रीट प्रकार है।
सो लसत माथे मनहुँ हाथे रच्यो निज करतार है ॥
जो नीलमणि गिरि फटिक गिरि पै उदै युगपत भानु द्वै।
अस होहिं कौनौं काल तो नेसुक सकैं उपमा न छ्वै ॥
जिन कंठ की नहिं पाय सरि लजि कंबु सागर में बसैं।
तिन कंठ रेखा रुचिर त्रै छवि रेख जनु विधि कृत लसैं ॥
गज मुक्तमाल विशाल उर त्यों लाल माल रसाल हैं।
तिमि तुलसिका दल माल मालति कुसुम के बिच जाल हैं ॥

मनु शंभु गिरि गिरिनील पै यक वार पावस काल में।
लहि भानु आतप उदै वासव धनुप बूंदन जालमें॥
कोउ कहत ये दोउ अवधपति के कुँवर हैं रण बांकुरे।
आजानु वाहु विलोकि इन अव को लखेत्रिय ठाकुरे॥
दोउ पुरुप सिंह विराजमान मुनीश के दोहुँ ओर हैं।
कटि छाम वृपभ समान कंध अनूप भूप किशोर हैं॥
दोहा—नव योवन मुख अरुनिमा, अति निशंका रणधीर।
इनके सन्मुख नृप भये, जिमि विन फर के तीर॥

कवित्त।

कंधननिपंगराजैंहाथनधनुप भ्राजैं वाम वामकरनदराजैंछविछाजैंहैं॥
आयेमुनिकाजैंकरिवैठेहैंसमाजैंमध्यजैसेगजराजनमेंउभै मृगराजैंहैं॥
धन्यरघुराजैकियेराखीहैंअहिल्यालाजैदीननेवाजैरंगभूमिआयेआजैहैं।
देखिरघुवंशशिरताजैचहैंभाजैंभूप तजिकैतवाजैंजिमिलवालखिवाजैहैं॥
दोहा—पीत वसन अभिराम तन, सोहत दोनों भाय।
जलद पटल सित श्याम जनु आतप रह्यो सोहाय॥
पीत यज्ञउपवीत वर, कन्ध नाभि परयंत।
मनहुँ कनक मरकत शिला, कनकरेख विलसत॥

सवैया।

यद्यपि वैठे हजारन भूप हजारन भाँति शिंगार सँवारे।
तद्यपि जेते रहे नर नारि विलोचन में पलकानि नेवारे॥
श्रीरघुराज सुखारे सवै अवधेश कुमार न दीठि पवारे।
ज्यों मकरंद के पीवन को अरविंद पै जात मलिंद कतारे॥
दोहा—कहहिं परस्पर नारि नर, देखे किते कुमार।
पै नहिं देखे अस कतहुँ, नख शिख ते मनहार॥

कवित्त।

कोऊनिजबंधुकोऊदेखेदीनबंधुकोऊ शत्रुसेनिहारेकोऊमित्रसे निहारेहैं।

कोईलखेमालकसेकोईलखेवालकसे कोईपेखेपालकसेविश्वरखवा
भनैरघुराजजाकेजैसेरह्योभावहीमेंताकोतैसेजोहिपरे अवधदुलारे
मरमनजान्योकोईकीन्ह्योंजोचरित्ररामवरपिप्रसूनदेवदेतभेनगारे

दोहा—उतै गये सब सचिव भट, धनुप लेन के काज ।
दै वलि पूजन विविध विधि, वंदे सहित समाज ॥

चौपाई ।

मंजूषा आयसी कठोरा । वड़ि शृंखलालगींचहुँ ओरा
जव सीता टारयो धनु काहीं । पितुनिदेश धरिदिय तेहिमाह
पूरव भयो स्वयंवर जवहीं । ल्याये मंजूपा भट तवहीं
यहू काल महँ तही प्रकारा । लागे करन सचिव उपचारा
वैदिक ब्राह्मण वहुत वोलाये । विविध भाँति स्वस्तैन पढ़ाये
गौरि गणेश सविधि पुजवाये । मंगल हेत महेश मनाये
मंजूपा महँ आयस केरे । अष्ट चक्र वर लगे करेरे
वली मल्ल जे पांच हजारे । शत शत सिंधुर के वलधारे
गहे चक्र कर खीचन लागे । आनन अरुण जोर अति जागे
औरहु मनुज हजारन आई । लगे चक्र चालन वरिआई
मंजूपा सो टरै न टारी । सकल वीर अतिशय हिय हारी
मंत्री सभ्य विप्र वर ज्ञानी । कीन्ही विनय जोरि युग पानी

दोहा—शिव शासन लै जनक नृप, सभा मँगायो तोहि ।
रंगभूमि गमनहुँ धनुप, ओर आपनी जोहि ॥

चौपाई ।

अस कहि दियो महेश दोहाई । लगे चलावन चक्र चलाई ।
जे महेश वोले जन जवहीं । चली धनुप मंजूपा तवहीं ।
महा मल्ल जे पंच हचारा । लै गवने जन ओर अपारा ।
भयो कोलाहल नगर मझारी । देखन हित धाये नर नारी ॥

आयसशैल सरिस मंजूपा । तेज तासु प्रगट्यो जनु पूपा ॥
यहि विधि जस तस के भट भारे । ल्याये रंगभूमि के द्वारे ॥
दिये विदेहहिं खबरि जनाई । द्वार धनुप मंजूपा आई ॥
धरैं तहां जहँ होइ रजाई । कह्यो विदेह वचन निदुराई ॥
तन्यो वितान जौन थल पाहीं । बनी जहां वेदी महि माहीं ॥
नाना वरण चौक रचि लेहू । अर्चित मंजूपा धरि देहू ॥
तैसहि किये सचिव सब जाई । धरी धनुप मंजूपा ल्याई ॥
बली मल्ल जे .पांच हजारे । धरि मंजूपा अनत सिधारे ॥

दोहा–अभिमानी भूपति सकल, लगे वजावन गाल ।
कायर कुमती कूर तब, देखत भये बिहाल ॥

चौपाई ।

गाधिसुवन कहँ जनक लेवाई । गयो जहां धनु दियो धराई ॥
विश्वामित्र संग दोउ भाई । चले मत्त गज गवन लजाई ॥
मुनि कहँ मंजूपा दरशाई । जेहि विधि सुंदर चौक पुराई ॥
रचना विविध विशेप बनाई । गाधिसुवन कहँ सकल देखाई ॥
हर कोदंड जानि तप धामा । कियो महामुनि धनुप प्रणामा ॥
मुनि कह अब विलंब नहिं कीजे । सिय आगम अनुशासन दीजे ॥
कह्यो विदेह नाथ नहिं देरी । लेहु सकल रचना मुनि हेरी ॥
मुनिकह भल रचना नृप कीना । लेखा लै लजाय तुम दीना ॥
भूप विदेह मुदित मन भयऊ । मुनि आसन लेवाय पुनि गयऊ ॥
विरचित गज रद कनक खंगा । जहँ तहँ लगे रतन बहुरंगा ॥
बैठे लै मुनि अवध कुमारे । निज आसन विदेह पगु धारे ॥
निरखे सब नृप अवधकुमारा । भेमलान निमि शशि लखितारा ॥

दोहा–जे हरिभक्त नरेश तहँ, प्रभु लखि कियो प्रनाम ।
जानि जगतपति राम कहँ, सिय लक्ष्मी छवि धाम ॥

छन्द पद्धरी ।

अस कियो नृपन ते तिन उचार । अब चलहु सबै निज निज अगार॥
तोरिहैं राम हठि शंभु चाप । बहु बलकि वृथा मुख लेहु पाप॥
नहिं गुनहु भूप सुत राम काहिं । बैकुंठ नाथ हरि विष्णु आहिं॥
भूभार हरण अवतार लीन । पद कमल भजहुरे मन मलीन॥
यह जनक लली इंदिरा माय । प्रगटी विदेह के भवन आय॥
जो नहिंहु तोरिहैं धनु विशाल । सिय राम गले मेलिहै माल॥
सम्बंध नित्त इन को विचारि । घर चलहु रोष रंजहु विसारि॥
हम भये धन्य प्रभु दरश पाय । नाहिं लाभ अधिक याते जनाय॥
अस भाषि भूप जे भक्तिवान । प्रभु चरण वंदि कीन्हे पयान॥
सुनि अपर भूप जे गर्व गेह । तिन बैन कहे मुख भरे तेह॥
शिव चाप भंग बिन कौन भूप । यह ब्याहि सकै दुहिता अनूप॥
कोउ यंत्र मंत्र वश यदपि आय । हर चाप लेइ छल बल उठाय॥
इत तदपि न पैहैं होन ब्याह । हम समर सजे साजे सनाह॥
लै जान न पैहै कुँवरि ब्याहि । मम दोरदंड का ओज नाहि॥
यक बार लड़ब किन काल होय । लै जाव कुँवरि रिपुखूदि सोय॥
का करी जनक करि घोर रोष । नाहिं रही सुधन्वा समर घोष॥

दोहा--यहि विधि बलगत बहुत नृप, अभिमानी मति अंध ।
नाहिं जानत अज्ञान वश, राम सिया सम्बंध ॥

छन्दपद्धरी ।

सुनि वचन कुमति भूपन अपार । किय मुनित्रिकाल ज्ञाता उचार॥
जनि वृथा बजावहु गाल भूप । नहिं जानि परे कछु राम रूप॥
जानहु सुजानकी जगतअंब । रामहि विचारु सज्जनालंब॥
जग पिता पितामह सत्य राम । त्रैलोक्य नाथ आनंद धाम॥
इनको महेश ध्यावत हमेश । महिमा अशेशकहिसकन शेष॥

करि दरश नाथ के विवश भाग। देखहु चरित्र जो होन लाग ॥
नहिं मृग मरीचि कीहरतिप्यास। कत कूप खनहु सुरसरित पास ॥
भरि नयनलखहु रघुकुलकुमार। तजि देहु और जगकी झवार ॥
नहिं तुमहिं वरजि कारज हमार। हम गये आज फल पाय चार ॥
अस कहि मुनीश सब भये मौन। दृग लखन लगे प्रभु शोभ भौन ॥
तहँ देव सीय आगम विचारि। वरषहिं प्रसून हरषहिं निहारि ॥
पुनि करत भये दुंदुभि धुकार। अपसरा नचन लागीं अपार ॥
कल करहिं गगन गंधर्व गान। गुनि रंगभूमि सिय को पयान ॥
अवसर विचारि भूपति विदेह। निज सचिव बोलि बोल्यो सनेह ॥
रनिवास जाय दीजे जनाय। सिय मातु देहिं सीतहि पठाय ॥
सिय धनुप पूजि जब फिरी फेरि। तब हम सुनाइहैं प्रणहि टेरि ॥

दोहा–शिव धनु पूजन हेत सिय, आवे इत अतुराय।
सुमति सचिव शासन सुनत, दिय रनिवास जनाय ॥
पति अनुशासन सुनि तहां, हुलसि सुनैना रानि।
चतुर सखीन बोलाइ कै, बोली मंजुल बानि ॥
धूरजटी के धनुप को, पूजन साज लेवाय।
जाहु जानकी लै अबहिं, शुभ शृङ्गार बनाय ॥

चौपाई।

सुनत सुनैना की सखि बानी। सियहि शिंगार सदन महँ आनी ॥
प्रथम सखी मज्जन करवाई। सुरभित अँग अँगराग लगाई ॥
सारी सुरँग सखी पहिराई। सुभग अंग आभरण सजाई ॥
अरुण कंज पद सुंदर नीके। फीक महाउर लागत सीके ॥
मनहुँ कमल महँ छयो परागा। दल अरुणिमा अरुण रँग लागा ॥
जिन पद पंकज मुनि मन भृंगा। रहत निरंतर तजत न संगा ॥
जे पद कमल भाग्यवश ध्यावत। उर आवत त्रैताप मिटावत ॥

नख मणि लसत आँगुरिन माहीं । अंगुलीय संयुत दरशाहीं ॥
कुमुदबंधु जनु रवि जन जानी । बैव्यो पकरि रूप बहु ठानी ॥
कमल बंधु कमलन हित भाये । करि बहु रूप छोड़ावन आये ॥
कनक कड़े झालरि बड़ हीरा । जनुघेरे रवि तारन भीरा ॥
अति कोमल सुंदर अरुणारे । सीय चरण जग रक्षणहारे ॥

दोहा–सीय चरण बरणन करत, कवि नहिं पावत पार ।
विदित वेद महँ जिन बिरद, मो सम अघिन अधार ॥

छंद ।

यहि भाँति सिय शृंगार करि लै चलीं अली लेवाय ।
पहिरे सुरंगित अंग अंबर अंगराग लगाय ॥
भूषण विभूषित रतन गण कीन्हे सकल शृंगार ।
जिनको निहार हि हारि हिय गिरिजा गिरा बहु बार ॥
कंदर्प दारा दर्प दरनी सेव करनी सीय ।
बरनी श्रुतिन की बेशबरनी नैन हरनी तीय ॥
थिर चंचलासी चन्द्रिकासी चपल चखनि चलाय ।
चालैं दुहूं दिशि चारु चामर चतुर चंचल चाय ॥
कोई छबीली क्षपाकर सम लिहे छत्र विशाल ।
कोउ पीक दानहु पानदानहुँ अतर दानहुँवाल ॥
कोउ लिये झारी कनक थारी व्यजनवारी कोय ।
कोउ लिये माल विशाल कर उरमाल कोउ मुदमोय ॥
चामीकरन की छडी मणिगन जडी लीन्हे पानि ।
बोलत चली आगे अली सोधत गली छवि खानि ॥
गहगहे गावत गीत मंगल किये मंडल मंजु ।
कोउ बाल बिरद बखानती गति ठान गज गति गंजु ॥
यहि भाँति प्रविशी रंगभूमि विदेह कन्या आय ।

मनु नखत मंडल में अखंडल पूर्ण चन्द सोहाय ॥
उठि उठि सबै देखनलगे भापत परसपर बैन।
मिथिलाधिराज लली भली आवत चली चित चैन ॥
अभिमान अक्षनि अंध अवनिप सीय को अवलोकि।
मूछैं मुरेरत नैन फेरत वाहु दंडन ठोंकि ॥
नर नारि सिय लखि कहहिं यहि हित यह स्वयंवर होत।
अनरूप सोई भूप जाकर पूर्वपुण्य उदोत ॥
सज्जन सुशील सुजान हरिजन जानि सिय जगदंब।
कीन्हे प्रणाम अकाम मन कहि जयति जगदवलंब ॥
कुमती कुपति अति कुटिल कामी कहहिं आपुस माहि।
टोरे न टोरे धनुप कन्या लेब बरबस ब्याहि ॥
कोउ कहहिं हम ये रंड दंड समान दलि कोदंड।
नव खंड सुयश अखंड करि व्याहब वलनि भुज दंड ॥
कोउ कहहिं अवहीं हरहु दुहिता करहु कस वकवाधि।
बैठे रहैं मिथिलेश मंदिर ठानि अचल समाधि ॥
जे रसिक साधु सुजान भूपति सुनत वचन कठोर।
ते देत उत्तर उमागि अमरप घोर करि तहँ शोर॥
तुम्हरे हियेहु की आँखि फूटी लेहु वदन निहारि।
नहिं मिलति खर को धेनु टोरहु तार पाणि पसारि॥
हम सब लरब सिय हेत हठि वर रहैं बैठि विदेह।
सिय ओर ताकत मारि बाणन करब छाती वेह॥
तव भयो कोलाहल महा तेहि रंगभूमि मझार।
मुनिजन सभासद जाय कीन्हे मौन भू भरतार॥
दोहा–सिय कोलाहल सुनि डरी, खड़ी समाज मझार।
चितवति चहुँकित चकित चित, कहँ हैं राजकुमार॥

कवित्त ।

उभैपाणिअलकउठायमिथिलेशललीहेरोचारिओरकहांसाँवरोकुमारहै।
जहांजहां भयोदृष्टिपातमैथिलीकोमंजुतहांतहांबैठोजोजोभूमिभरतारहै।
सोसोसबजोहिजोहिमोहिमोहिमंचनपैगिरिगोननेकुरह्योतनकोसँभारहै।
रघुराज राम पद कंज लागेनैनजायकीन्हेमनौराजनसमाजखेलवारहै।
कोईभूमिपालरहेदंतनसेदाबिढालकोईकरवालनकोछोड़ेतेहिकालहैं।
कोईमोहवारिधमेंबूड़िउतरानलागे कोई गिरे मंचनतेवपुपविहालहैं॥
दुमेदभुवालनकेहालकोकहांलोकहौंछूटीढालटूटीमालवंदभयेगालहैं।
मानोमोहनीकोरूपधारयोहैविदेहबाल,रघुराजमनमुसक्यातरघुलालहैं

दास देखे स्वामिनी सी दुष्ट काल यामिनी सी,
सखी वर भामिनी सी देव जगदंबा सी ।
मातु दुहिता सी दासी कलपलता सी दैत्य,
भूप कालिका सी मुनि आनँद कदंबा सो ॥
सज्जन कृपा सी योगी जन अजपा सी,
सुर नारि कमला सो शठ मूरति त्यों संबा सो ।
रहे जस आसी तिन्हैं तौन विधि भासी,
लखे माता सी लषण रघुराज अवलंबा सी ॥

घनाक्षरी ।

शिरतेचरणलगिप्यारीकीसमारीभली सोहतीनवलसारीजनककुमारीतन
परमप्रकाशीआभआँनदकीरासीफूलींकलपलतासीमध्यफुल्लितकुसुमवन
भैनरघुराजमनोसावनकेसंध्याकालचारुचपलासीलसैंअरुणसघनघन
रजोगुणमंडल्केभीतरविराजैमनोंसतोगुणमंडलअखंडलरसिकमन॥

दोहा—गज गामिनी सुभामिनी, मधुरअली जेहि नाम ।
सो लेवाइ गवनी सियहि, शंभु शरासन ठाम ॥

छन्द चौबोला।

चाप समीप गई वैदेही सखिन समाज समेतू।
राजन लषण व्याज निरख्यो तहँ उभै भानु कुल केतू॥
लागी पूजा करन धनुप की मन रघुपति पद लागा।
धूप दीप नैवेद्य आदि सब दीन्ह्यो सहित विभागा॥
जेहि दिशि बैठ भान कुल नायक तेहि दिशि ह्वै सिय ठाढ़ी।
कर सों पूजति शंभु शरासन हिये राम रति बाढ़ी॥
कर सों फेरति धनुप आरतो मन सों प्रभुहि उतारै।
मानहुं सबकी लगी दीठि गुनि आरति मंत्रनि झारै॥
देत प्रदक्षिण धनु को सीता जब प्रभु सन्मुख आवै।
करन बात आलिन के व्याजे तहां कछुक रुकि जावै॥
यहि विधि चारि प्रदक्षिण दे के कियो प्रणाम पुनीता।
मनहीमनविनवति महेश को समुझि पिता प्रण सीता॥
जय महेश करुणा गुण सागर यह कोदंड तुम्हारा।
सुनत कौन की विनय दीन गुनि कियो न आसु उधारा॥
आशु तोप गौरी पति शंकर जन हित औघड़दानी।
रामहि परसत करहु तूल सम धनुप धूरजटि ज्ञानी॥
बार बार विनऊँ महि शिर धरि शंकर दीन दयाला।
हरहु धनुप गुरुता तुरता करि लग्यो काम यहि काला॥
अंतरहित ह्वै कह्यो आय शिव सीता कानन बानी।
नहिं अभिलाप असत्य रावरी लेहु सत्य यह जानी॥
कछु आनँद उर मानि जानकी पूजि धनुप तेहि काला।
चली बहुरि जननी समीप कहँ लै सखि वृन्द विशाला॥
मधुर अली सहजा को कर गहि बात करन के व्याजे।
पुनि पुनि चितवति चारु चखन सों लपण राम रघुराजे॥

राम लखत सीता की छबि को सीयराम अभिरामै।
उभै दृगंचल भये अचंचल प्रीति पुनीति मुदामै॥
जनक नगर नर नारि निहारहिं सिय मूरति मनहारी।
कहहिं परस्पर वचन सरस अति केहि पटतरिय कुमारी॥
गौरि शंभु अरधंग अंग विन पति रति देखि दुखारी।
शची पुलोमा दानव कन्या छाया है रवि नारी॥
किमि पटतरी उरग दुहितन को जन्म विपिनते जिनको।
प्राकृत नारि रोग रिपु व्याकुल सुरतिय पलक न तिनको॥
ताते सत्य सत्य हमरे मन ऐसेहि होत बिचारा।
त्रिभुवन की ईश्वरी इंदिरा लियो आय अवतारा॥
पै जब भई प्रगट कमला वह क्षीरधि मंथन काला।
विप वारुनी संग प्रगटे तहँ पिता पयोधि कराला॥
जनक पिता लक्ष्मीनिधि भ्राता क्षमा जननि सिय केरी
यह समता अनरूप रूप नहिं और कहीं कहँ हेरी॥
कोउ कह जो अस होइ बहुरि अब सुधा समुद्र महाना
विप्रलंभ संयोग असुर सुर होयँ रूप धरि नाना॥
छवि रजु कच्छप मदन बसै अथ मंदर ह्वै शृङ्गारा।
प्रेम रूप धरि त्रिभुवननायक मथैं सहित श्रम भारा॥
प्रीतिमयो मूरति कमलाको जो निकसै सुखदानी।
तौ समता कछु यहि मूरति की परति मोहिं जिय [illegible]।
कोउ कह बिना रमा के अस केहि कहियत सुंदर[illegible]।
धन्य भाग्य हमरे भूपति को घर बैठी श्री आई॥
कोई कह्यो सत्य सखि भाषसि होत कुलाल हमहुँ।
समुझि विदेह कठिन प्रण मन में नहिं संदेह [illegible]॥
दोहा—देव असुर अतिशय बली, दानव मानव भूप।

तूरि चाप ले जायँगे, हमरी सिय को दूरि ॥
काहि देखि पुनि वसव इत, परी भागि महँ धूरि।
जनक नरेश प्रजानि की, सीता जीवनि मूरि ॥
सुनि अपरा बोली वचन, तोहिं कहत नहिं लाज।
को अस समरथ तूरिहै, शंभु शरासन आज ॥
पै मन की मन में रहै, कहत बनै नहिं वीर।
को समुझावै नृपति को, ब्याहैं सिय रघुवीर ॥
सुनि द्वितीय बोली हुलसि, ऐसहि उठत उछाह।
धनुपभंग लखि लखव पुनि, सिय रघुवीर विवाह ॥
गहगहाय सिगरी तहां, बोलीं एकहि वार।
तेरो वचन विचार विन, सत्य करै करतार ॥
यहि विधि पुरनारिन वचन, सुनत सकुचि सुख मानि।
गई जननि ढिग जानकी, सुमिरत शंभु भवानि ॥

छंद चौबोला।

नर नारी पुनिपुनि छवि देखहिं राजकुमारन केरी।
परिहरि नैन निमेप नेहवश उपजी प्रीति घनेरी ॥
समुझि मनहि मिथिलेश भूप प्रण नहिं उर शोचसमाई।
बार बार विनवैं विरंचि पहँ फेरु जनक जडताई ॥
हे विरंचि तैं विश्व विधायक जो कछु सुकृति हमारी।
दशरथ को डावरो साँवरो व्याहै जनककुमारी ॥
जो विदेह प्रण त्यागि आज्ञु विधि राम जानकी व्याहैं।
तो हम सब धन भवन द्विजन कहँ देव सहित उत्साहैं ॥
यज्ञ करब अरु कूप खनाउब बाग लगाउब धाता।
वेद विहित वहु धर्म चलाउब राखु हमारी बाता ॥
बैठि विदेह कंठ प्रण फेरै देहु गिरै समुझाई।

हरि हर विधि वासव सूरज शशि गौरि गणेश गोसाईं।
हर कोदंड प्रचंड करौ मृदु कमल नाल की नाईं॥
कोउ कह अब नाहिं और भाँति सखि बनत विधान बनाये।
चलहु घेरि बैठहिं विदेह कहँ आतमघात लगाये॥
की व्याहैं अभिराम राम कहँ सीता कुँवरि हमारी।
की पुरवासिन प्राणघात फल लेहिं कठिन प्रणधारी॥
यहि विधि कहैं सकल पुर नारी रामै नैन निहारी।
महाकठिन सुधि करि विदेहप्रण पुनि पुनि होहिं दुखारी॥
लाग्यो ठट्ट विमान गगन में देखत देव तमासा।
बाज बजावत सुम बरसावत भरे लंकपति त्रासा॥
पापी पुहुमी पतिन छोड़ि कै को अस तौनि समाजा।
जो नहिं चहत जानकी व्याहै तोरि धनुष रघुराजा॥

दोहा–अवसर जानि विदेह तहँ, बंदीजनन बोलाय।
सतानंद अभिमत सहित, शासन दियो सुनाय॥
निमिकुल को बिरदावली, बंदीवर तुम जान।
ऐसो मैं कीन्ह्यो प्रणै, सो नाहिं तुमहिं छिपान॥
ताते जाय समाज मधि, ऊंचे स्वर गोहराय।
प्रगट अर्थ करि मोर प्रण, दीजै नृपन सुनाय॥
सुनि वसुधाधिप के वचन, बंदी बंदि विदेह।
[illegible]े सुनावन प्रण नृपन करि उर में संदेह॥
[illegible] समाजहि मध्य में, द्वै बंदी वर जाय।
[illegible] भये पुकारि कै, दोऊ भुजा उठाय॥
[illegible] नरनाह सब, करि कोलाहल बंद।
[illegible]थिलेश को, यह प्रण सुनहु स्वछंद॥

कवित्त रूप घनाक्षरी।

विदित पुरारि को पिनाक नवखंडन में,
परम प्रचंड त्यों अखंड ओज पारावार।
वड़े वडे वीर वरिवंड भुज दंडन सों,
खंड महिमंड जस जान चाहैं पैरि पार॥
आज लों न देखे तीर केते वली बूडे वीर,
गुरुता गँभीर नीर पीर पाय माने हार।
वाहु वल विरचि जहाज रघुराज आज,
पावै पार सोई शिरताज भूमि भरतार॥
उदित उदंड जो हजार भुजदंडन सों,
दिग्गजन जीत्यो शैल फोर्‌यो वलिको कुमार।
राजत अचल अखंग शिव समेत तौल्यो,
कर में कमल सो निशाचर को सरदार॥
दोऊ महा मानी वीर शंभु के शरासन को,
नाय शिर आसन को गवने गमै लचार॥
कोटिन कुलिश सो पुरारि को पिनाक आज,
तोरि रघुराज सिय व्याहैं विनहीं विचार।
पूरव स्वयंवर जो होन लाग्यो एक वार,
जुरे सवै इतै द्वीप द्वीपन के महिपाल॥
राजन को वाहु वल पूरण सो राकापति,
ग्रस्यो तेहि शंभु धनु विधुंतुद विकराल।
रघुराज वहुरि विदेह सोइ सीता हेत,
विरच्यो स्वयंवर में कम्मर करो भुवाल॥
तोडै जो पुरारि को पिनाक नाक
मेटिहैं विदेह क

रठा–यहि विधि बाहु उठाय, सुमति विमति बंदी उभै ।
प्रण मिथिलेश सुनाय सब राजन को जात भे ॥

छंद तोटक ।

नि के मिथिलेश महा प्रन को । नृप मोद भरे धनु तोरन को ॥
ज दंड उमेठि उठे तुरिते । धनु की न गुनै गुरता गिरिते ॥
ोउ मोछन पे नृप ताउ दये । कोउ भूप शरासन सौंह गये ॥
ोउ बाहु सकेलत धाय परे । कोउ मंदहि मंद मिजाज भरे ॥
ोउ आपुस में झगरो करते । इक एक उठावहु क्यों डरते ॥
लिके सब चाप उठावहु ना । यक बार समीपहि आवहु ना ॥
ेनमें कोउ मल्ल महीप रह्यो । द्रुत जायमँजूपहि पाणि गह्यो ॥
रि जोर महा अति शोर कियो ।मनु खोलिशरासन ऐंचि लियो ॥
ारिगो मुँह के भर भूमि तहां । चलि बैठ पराय लजाय महां ॥
ोउ देखि महीप मँजूप डरयो । नहिंजायसक्यो लहिलाजफिरयो ॥
ोउ सर्प सरूप लख्यो धनु को । अति कंपित अंगकियो तनुको ॥
स बोलि उठ्यो नृप चाप नहीं । मिथिलाधिप को यह सांप सही ॥
ोउ के दृग सिंह स्वरूप लग्यो । धनु देखतही निज भान भग्यो ॥
शिव भक्त रहे महि नायक जे । भव रूप लखे भव भायकजे ॥
हिं चाप समीप महीप गयो । शिरनाय समाजहि त्यागि दयो ॥
रि के जन जे नृप ज्ञान भरे । महि में शिरदै परणाम करे ॥

दोहा–मंजूषा हर चापकी, सके खोलि नृप नाहिं ।
बिन खोले ही यह दशा, का पुनि खोले माहिं ॥

छंद तोमर ।

भे कोपवान महीप । जुरि खड़े धनुष समीप ॥
सब करत मनहि विचार । अब करिय का उपचार ॥
दशसहस भूप बलीन । धनु भंग मद्द लवलीन ॥

नहिं सकत धनुष निकारि। मंजूष कर पट टारि॥
कोउ करहि अतिशय जोर। पुनि गिरहिं महि तेहि ठोर॥
कोउ रह्यो नृप अति पाप। जीवन दियो संताप॥
हरि हर लियो वहु द्रोह। सो भरो अतिशय कोह॥
मंजूष निकट सिधारि। धनु चह्यो छुअन उघारि॥
सो भयो भसम तुरंत। जिमि अनल चूर्ण उड़ंत॥
अचरज गुने सब लोग। मुनि कहे अघकर भोग॥
तहँ भूप दशौ हजार। गे सिमिटि सब इक बार॥
मंजूप खोलन लाग। तन जोर अतिशय जाग॥
यह देखि सभ्य सुजान। सब कहे असन प्रमान॥
एकै उठावै जोय। जयमाल लायक सोय॥
पै भूप मानै नाहिं। अमरष भरे मनमाहिं॥
नाहिं हिलत सो मंजूप। जिमि मटनि झूरो रूप॥

दोहा—तूरन की वातैं कहा, सब भूपन वल जागि।
मंजूपा ते धनुप के, ऐंचन की अव लागि॥
मंजूपा खोलन लगे, करि वल एक हि वार।
उठी पटल नाहिं उपरकी, हारे दशौ हजार॥
जैसे कामी के वचन, कोमल सरस अवात।
वसैं सती मन में नहीं, उपर उपर उड़ि जात॥

सवैया।

ज्यों ज्यों करें नरनायक जोर हटैं पुनि आसन बैठहिं आई।
स्वेद भरे मुखहारे हिये वल पौरुप कीरति देह गमाई॥
त्यों त्यों सबै मिथिलापुर के जन राजन को हँसैं हेरि ठठाई।
श्रीरघुराज मनावें विरंचि दलै शिव के धनु को रघुराई॥

दोहा—कीरति वल विक्रम विगत, नृपन देखि करि हास।
कहहिं लोग भे भूप जिमि, विन विराग संन्यास॥

छप्पै ।

बुधि बल विक्रम विजै बड़ापन सकल विहाई ।
हारि गये हिय भूप बैठि शीशन औंधाई ॥
हँसहिं सबै पुरलोग बलगि यश आपन खोये ।
पंजा प्रथम डबोरि नीच शिर कारि अब रोये ॥
जे तजि विचार पहिले मनुज करत काज अतुराय कै ।
ते इन मतिमंद महीप सम सरवस जात गँवाय कै ॥

दोहा–धनु तोरन जोरन सुगुन, रह्यो एकही ओर ।
मंजूषा ते खैंचिबो, कठिन परो यहि ठोर ॥

सोरठा–निरखि दशा तेहि काल, राजन की सुसमाज माधि ।
भये विदेह विहाल, भट विहीन अवनी गुणी ॥
सतानंद को बोलि, मंद मंद बोले वचन ।
लियो भूप बल तोलि, कह्यो देव का करिय अब ॥
दोउ वंदी तेहि काल, बोले वचन पुकारि कै ।
सुनहु विदेह भुवाल, राज समाजहि लाज भय ॥

छप्पै ।

प्रण राउर सब नृपन सुनाये भुजा पसारी ।
तमकि तमकि बहु भूप आय कीन्हे बल भारी ॥
सके न कोई मंजूषा की पटल उघारी ।
खैंचब ऐंचब साजि प्रतिचा काह विचारी ॥
अब जस अनुशासन रावरो होई यहि क्षण तस करें ।
धौं धरो रहै दुरधर्ष धनु धौं लै तेहि धामहिं धरें ॥

दोहा–भूरि भूप निज भवन गे, भूरि रहे शिर नाय ।
भूरिन चितवत सामुहे, काको कहिय बुझाय ॥

छप्पै ।

सुमति विमति के वचन सुनत मिथिलेश रिसाई ।

सिंहासन पर खड़ो भयो नैनन अरुणाई ॥
बोल्यो वचन कठोर शोर करि भूरि भयावन ।
छत्र वंश क्षिति छाम जानि मन बहुरि बढ़ावन ॥
धरवाय देहु धनु धाम में, धाम धाम धुनि आम करि ।
अब उरवीतल उर्वीश कोउ, गरवी होइ न गर्व भरि ॥

कवित्त ।

देव दैत्यदानवहूंमानवस्वरूप धरि खासेखंडखंडके अखंडबलवारेहैं।
केतेचक्रवर्तीगुणगर्वबशवर्तीनरविदितरणाजिरकेकर्तीशत्रुभारेहैं ॥
आयेसुनिभेरोप्रणकीरतिकुँवरिलेनदोरदंडओजनिजनैननिनिहारे हैं॥
भनैरघुराजआजराजनकोकाजलेखेउर्वीनिरवीरभईजानमेंहमारेहैं ॥
दिग्गजनकाननलोंकोरतिकरनहाररराजनसमाजमें न कोईवीरसाचाहै।
जाहुजाहुसबैभूपभौनकोभलेहीचलेमोदितमजेमेंमौजकीजिपौड़िमाचाहै
रघुराज आज वसुधामें कोईवीरहोतोपूरतहमारोप्रणधर्मकोनकाचाहै
तातेअसलागैभैयाधनुपतोरैयावीरकुवँरिवरैयान विरंचि विश्व राचाहै
जानतोजोऐसोपूर्वठानतोनकैस्योप्रण नयो निरमाणरंगभूमिकोनकरतो
आनतोनयेतोउपहासनृपमंडलमेंछानतोजोमंत्रिनकोमंत्रअनुसरतो॥
रघुराजआजपहिचानतोप्रवीरजोपै खानतोनगर्व कूप भूपनाहिंगिरतो।
प्राणकोपयानतोनमानतोदुसहदुख प्रणकोपयानजानिजीवजसजरतो

दोहा—तजहु आस अब व्याह की, जाहु भवन नरनाह ।
लिख्यो न प्रण पूरे विना, वैदेही को व्याह ॥

कवित्त ।

शेशभारखाईकैउतारैंफनहूंतेभूमिकमठवराहछोड़िभागैक्षितिजेहको।
भानुसितभानुतारामंडलप्रतीचिउवैं सोखैसिंधुवाड़वतरणितजैतेहको
रघुराजआजकहैमिथिलाधिराजसवराजनसमाजमध्यवचनअछेह को।
कुँवरिकुँवारिरहैकीरतिकलंकदहै छूटैवरुदेह प्रणछूटै ना विदेह को॥

सवैया।

पूरुब जो जनत्यों जगती में नहीं है कहूं बर बीर प्रतापी।
क्षत्रिन की करि क्षै भृगुनाथ नहीं पुनि क्षत्रिनको क्षिति थापी॥
श्रीरघुराज सुनो सब राज प्रने करतो नहिं सत्य अलापी।
क्यों धरतोऽपहास शिरै करि पूरण पुण्य कहो त्यों न पापी॥

दोहा—ते विदेह के वचन शर, भूपहि रहे लजाय।
गये न सहि यक लषण सों, भभकि उठ्यो फणिराय॥
अरुण नयन फरकत अधर, लषण लसत भुजदंड।
श्वास लेत भुजगेश सम, अमरष उठ्यो उदंड॥

सवैया।

बैठ्यो दुजानु मनों मृगनायक श्रीरघुनायक केदृग देखे।
कंपत गात न आवत बात अघात अमर्ष उठ्यो उर शेखे॥
श्रीरघुराज कमानसीभौंह लखें तिरछोंह विदेह विशेखे।
राम की भीति सों भाखि सकें नहिं राखिसकें नहिं रोप अलेखे॥

दोहा—तहँ विदेह के वचन शर, भये लषण हिय पार।
जोरि पाणि पंकज प्रभुहि, कीन्ह्यो विनय उदार॥
सुनहु दिवाकर कुल कमल, हौं तिहरो लघु भाय।
जन्म पाय रघुवंश महँ, अस कसकै सहिजाय॥
ठाढ़े मध्य समाज में, जस जस वदत विदेह।
तस तस राउर दास को, दहत रुपानल देह॥

छंद झूलना।

कहत नहिं उचित मिथिलेश यहि देशमहँआपकोअनुपरतनृपेसें
वदत सुत वीर ते विगत भयवन्तुमतीरनीभर सजननर्दिभूप तेसें
सुनो रघुराज हौं रावरो दास नहिं रावरो नेप कारि कहौं रेसें।
जासु आयसु करहु मिलिन्दहुकरहुसहसेंकोनुकन्तृपनिनारिवेसें॥

छंद नाराच।

इक्ष्वाकु वंश को जहाँ जो होइ एक पूतरो।
अयोग्य बात के सुने विशेष देत ऊतरो॥
सु अंशुमान वंश को निशान भ्राजमान है।
अजान सो विदेह के जबान को बखान है॥
कहौं प्रशंस नाहिं मैं कुलावतंस हंसकी।
स्वभाव के प्रभाव की सुरीति शत्रु ध्वंस की॥
करौ निदेश नाथ नेकु नैन ते निहारिकै।
उठाय भूमि फेंकिहौं पताल ते उखारि कै॥
उठाय अंड तौलिहौं सु कंदुकैसमानही।
निदेश होइ फोरि देहुं कुंभ केप्रमानही॥
सुमेरु को वसेरु मैं सकौं उजारिआसुहीं॥
दुखंड मूल सों करौं गिरीन्द्र वे प्रयासुहीं।
पुरान या पुरारि को पिनाक ना कठोर है।
उठाय लै चढ़ाय धाय जाउँ छोनि छोर है॥
सुनो दिनेश वंश वीर यों करौं विचार को।
उठाय चाप तूरि जाहुँ आपने अगार को॥
मनोभिलाष जो कछू अशेष आप जानते।
करो हमेश पूरि दास को न हेत आनते॥
विदेह ना कहैं अयोग और भूप के भ्रमे।
शृगाल हैं भुआल ये इन्हैं न लाज ते श्रमे॥
कहौं कहा निदेश नेकु नाथ को जो पावतो।
महेश चाप खंडि खंड खंड में फिरावतो॥
कहौं मुखे करौं न जो धरौं न चाप हाथ में।
असत्य ना वदौं सदौं अहौं सुनाथ साथ में॥

प्रचंड दोरदंड ये उदंड ओज के भरे।
कृपा अखंड पाय कै घमंड शत्रु के हरे॥
कितेक बात बापुरो पिनाक रामदास को।
उठाइबो चढाइबो न नेकु काम त्रास को॥
अबै न वीर ते वसुंधरा बिहीन ह्वै गई।
कही वृथा बिदेह बात शोचि नाभलै लई॥
मुनीश राम शासनै जो नेकु आज पावतो।
समाज ते समेत मैं बिदेह को देखावतो॥
जबै प्रवीर लक्ष्मणै सकोप भो समाज में।
सकान भीति मानि भूप बूड़ि सिंधु लाज में॥
प्रकोपवंत देखि कै अनन्त को तुरन्तही।
भगे विमान गीरवान लै बिचारि अन्तही॥
भई प्रकंपवान बार बारही वसुन्धरा।
ससिंधु राजसिंधुरा सवंध शैलकुंधरा॥
कहैं गँधर्व सर्व देव सिद्ध भूत चारने।
तजे चहैं फणीश ज्वालमाल लोक जारने॥
परे विरंचि थान देवतान के परामने।
प्रलय प्रवर्तमान होति विश्व को न सामने॥
महर्षि सिद्धहूं लगे कल्याण को मनावने।
क्षमा करन्त जय अनन्त लोक के बचावने॥
विचारि विश्व को निहाल दीन को दयाल जो।
कराल कोप को न काल हाल विश्वकाल जो॥
चलाय नैन सैन बन्धु को नेवारिलेत भो।
प्रजानि देवतानि को मिटाय भीति देत भो॥
सोरठा–मन्द मन्द मुसक्याय, रघुनंदन रणधीरमणि।

नयनन सैन चलाय, कीन्ह्यो वारण वन्धुको ॥
दोहा--प्रभु नयनन की सैन लखि, लषण वन्दि पदकञ्ज।
भये मौन छविभौन तहँ, कारि महीप मद गञ्ज ॥

कवित्त।

अरुण नयन जवलपण वखाने वैन सियहियप्राचीसुखसूरप्रगटानेहैं॥
लोकपालमानेमोदसुकविवखानेयशमिथिलानगरवासीवीरवरजानेहैं॥
रघुराजमंदमंदमृदुमुसक्यानेमनविश्वामित्रपाणिपीठिफेरेसुखसानेहैं॥
मिथिलाधिराज सकुचानेत्योंडरानेभूपवहरीससानेजलखगसेसकानेहैं

दोहा--लपण वचन की धाक सों, पर्यो समाज सनांक।
जिमि सिंधुर गण वाक में, परे सिंह की दांक ॥

चौपाई।

विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी। बोलत भे अवसर जिय जानी ॥
सुनहु विदेह भूप मतिमाना। जो अव तुम कछु वचन बखाना॥
सो अनुचित रघुकुल मणि आगे। इनके वैन वाण सम लागे ॥
लषण कही सोऊ लरिकाई। वदन वदत कहुँ वीर वड़ाई ॥
जो अनुशासन होइ तुम्हारें। धनु समीप अव राम सिधारें ॥
करहिं यतन तूरन की येऊ। और न जाहिं भूप तहँ केऊ ॥
अथवा पुनि जेहि होइ घमंडा। तेई करै जोर वरिवंडा ॥
कोशलपाल कुँवर सुकुमारे। सवके पाछे चहत सिधारे ॥
अवै लेहिं करि भूप अघाऊ। रहै न पुनि पाछे पछिताऊ ॥
मख कौतुक देखन चित चाये। मेरे संग कुँवर दोउ आये ॥
धनु दरशन परसन अभिलाखा। येऊ अपने चित करि राखा ॥
जो राउर अव होय रजाई। धनुप समीप जायँ रघुराई ॥

दोहा--सुनिक विश्वामित्र क, वचन विदेह विचारि।
बोल्यो पद वंदन करत, नैन वहावत वारि ॥

चौपाई ।

का कहिये मुनि नहिं कहि जाई । कोमल कुँवर धनुष कठिनाई ॥
प्रण परिहरे न होत प्रबोधा । हारि रहे जगती के योधा ॥
जो मम भाग विवश रघुराजू । तोरहिं शंभु शरासन आजू ॥
तो पुनि इनहिं छोड़ि मम बाला । काके गल मेली जयमाला ॥
तुम जानहु हमरी गति सिगरी । जानहु सोऊ बात जो विगरी ॥
नाथ तुम्हारि अनुग्रहताई । करिहि अवशि रघुराज सहाई ॥
ताते कहहु कृपा करि नाथा । चाप समीप जायँ रघुनाथा ॥
राम धनुष भंजे मुनिनाहा । तौ देखी सिय राम विवाहा ॥
मिटै मोर परिताप कराला । जिमि रवि उदे नाश तममाला ॥
अस कहि मुनि सों पुनि मिथिलेशू । दीन्ह्यो वंदिन विदित निदेशू ॥
द्वीप द्वीप के सकल महीपा । अब नहिं गवनहिं धनुप समीपा॥
अब अवधेश कुँवर तहँ जैहैं । निज भुज बल सबको दरशैहैं ॥
दोहा-प्रभु शासन सुनि तेसही, वंदी किये विधान ।
परी सनंक समाज कोउ, कहत न कानौ कान ॥

सवैया ।

भूपति वैन विचारि मुनीश मनै मन श्रीजगदीश सम्हारी ।
मंजुल मंदहि मंदहि वैन कह्यो रघुनंदहि नैन निहारी ॥
श्रीरघुराज सुराज समाज में लाज भई सब के हिय हारी ।
टाल टरौ यहि काल तुम्हैं मिथिलेश कलेशको देहु नेवारी ॥
सोरठा-सुनि कौशिक के बयन, प्रेम लपेटे निपट मृदु ।
उठे सहज छवि अयन गुरु पद पदुम प्रनाम करि ॥

कवित्त ।

उठे भे सहज सुभाय सौंगिरिनके कुलकुमुदकमलदिवाकर उदै भये ।
अभिमानीभूपतिउलूकदीनहूँकछुकसबकोकगणनागरन अकमलदृगये ॥

ह्वैगईव्यतीतत्योंविदेहदुचिताईनिशाकोककोकनदपुरवासीसुखसोंछये।
रघुराज परम प्रताप तापपाय देव दीहदुखतोमतम तुरतविदाभये॥
उतरिचलोहैमंदमंद उच्चमंचहीते मंदरतेमानोकढ़िआयो मृगराजहै।
मानौमहामत्त मंदचलतमतंगमगमूर्तिमानमंज्योमानौ वीररसराजहै॥
भूमि भरतारनकोतारनसोतेजहरि आवतउदैगिरितेमानौदिनराजहै।
काजकरिवेकोमनलाजभरीनैननमेंराजनसमाजमध्यराजैरघुराज है॥

सोरठा–प्रजा निमेष नेवारि, रघुनंदनआनंद कर।
देखि सबै नर नारि, लगे मनावन इष्ट निज॥

सवैया।

जो कछु पूरुव पुण्य उदै मम संचित औ क्रियवानहु होई।
जो जप यागहु योग विरागहु भागहु में हमरे शुभ जोई॥
तौ यह साँवरो कौशलपाल कुमार महा सुकुमार सदोई।
जानकी को वर होइ हरी हर को धनु तोरि महा मुद मोई॥
हे करुणाकर देव गजानन तू विघनै निधनै करि दीजे।
आप त्यों आपके बाप प्रताप सो आपहो आप हरू धनु कीजै॥
श्रीरघुराज सुराजकिशोर के पंकज पाणि में जोर धरीजै।
कंज मृणाल सों टूटै तड़ाकहि नाथ झड़ाकहि यायशलीजै॥

दोहा–छटो छवीलो साँवरो, कौशल राज किशोर।
मत्त मतंगज गवन करि, चलो जात धनु ओर॥
झांकि झरोखन ते तहां, जनक राज पटरानि।
सखी सयानि बोलाय ढिग, बोली विस्मित बानि॥

सवैया।

येही सखी अवधेश कुमार वड़ो सुकुमार लगे शुचि लोना।
कौशिला वारा तथैव हमारो विलोकिकै कोई करै नहिं टोना॥
तू चलिकै रघुलाल के भाल विशालमें दै दै सुनील डिठोना।

काज कियो मुनि को रघुराज पै मोहिं तोलागै मराल सो छोना।
ऐसो सुनी सखी कानन में कहुँ कानन में निशिचारिन मारी।
कौशिक को मख राख्यो सही महाभीम निशाचर युद्ध सँहारी।
झूठो लगै सजनी सिगरो मोहिं देखि प्रसूनहुँ ते सुकुमारो।
श्रीरघुराज क्यों काज कियो सकै हंस को शावक शैल उखारी
कौलहूं ते अति कोमल पाणि चुवै मुख दूध सो बाल सुभाऊ।
कौशिक संगहि कानन के हित कैसे बिदा करी कौशल राऊ॥
कौशिला क्यों हिय कीन्ह्यो पषाण महीसुर कारजयों जरिजाऊ
श्रीरघुराज हों आज लखी महि शंकर रक्षहिं कंकर पाऊ॥
कौन समाज में श्री रघुराजहि ल्यावो शरासन भंग करावन।
चूमन लायक है यहि आनन मो मन होत कलेऊ करावन॥
काहे दया मुनि के उपजै मिथिलेशै कोऊ नहिं जात बुझावन।
सो धनु तोरन जात लला जो छुयो नहिं बाण बली अरु रावन॥
कोई कहै नाहिं कंत बुझाय भली हठि रावरी है यह नाहीं।
जानकी योग मिल्यो वर भागन छोड़ प्रणै नहि देहिं बिवाही॥
जे न करैं लहि औसर कारज ते जन पाछे परे पछिताहीं।
श्री रघुराज कहौ तुमहीं सति बाल मरालकी मेरु उठाहीं॥
तीरथ जाय सुपात्र को पाय न दान को देइ भरो अभिमानैं।
संगर शत्रु को पाय न मारत आरत पाय करै नहिं त्रानै॥
श्री रघुराज सुता वर योग जे पाय न व्याहत वेद विधानै।
तू समुझाय कहै पिय को जन चारि कहावत औनि अजानै॥

दोहा—तैहीं जाय बुझाय कहु, कंतहि वचन हमार।
ना तो मैंहीं लाज तजि, कैहों चलि दरबार॥
सुनि जानकि जननी वचन, बोली सखी सुजानि।
देवि मोरि बिनती सुनो, मन की तजहु गलानि॥

चौपाई।

युवावयस मृदुगात अनोखो। कोशलपाल बाल चित चोखो।
महाभीम भूपति बल वारे। राज कुँवर सम कौन निहारे।
बैठे शीश नवाय नरेशा। सके उठाय न धनुप महेशा।
लघु छोटो छोहरा छबीलो। चलो जात जिमि गज गरबीलो।
लखि लघु करहु न भ्रममहरानी। तुरिहैं धनुप परै अस जानी।
सूक्षम रूप जीव श्रुति गावै। निज तेजहि तन पालत जावै।
दीप शिखा अतिशय लघु होई। करै प्रकाश भवन भरि सोई।
बसत विष्णु बैकुंठहि माहीं। तासु तेज पालत जग काहीं।
साधारण बालक नहिं रानी। जानि परत पूरण गुणखानी।
चितवत बनत न तेज अपारा। मानहुं सत्य विष्णु अवतारा।
है अयोनिजा तोरिकुमारी। तासुयोग वर यही निहारी।
यह जानहु विधि की करतूती। बैठे भूप गँवाय सपूती।

दोहा–रावण बाणादिक सुभट, छुये न परम प्रताप।
अवध कुँवर तजि कौन अब, तोरहिं शंकर चाप॥

कवित्त।

मानोसत्य बानीमहरानीबड़ज्ञानीतुमकामलैकुसुमधनुविश्ववशकीन्हों।
लगैलघुमंडलदिवाकरउदोतकालपरमप्रकाशजगतमहरिलीन्होहै॥
मंत्रलघुहोतवशहोतसुरसर्वताकेअंबुनिधिकुंभजअँचैकेपुनिदीन्होहै॥
जन्हुकरिगंगपानप्रगटकिय कानन तेरघुराजरामैबलहीनकसचीन्होहै॥

सोरठा–सुनत सखिन की बानि, रानी उर धीरज धरचो।
मनहिं महेश भवानि, लगी मनावन विविध विधि॥
चाप समीपहि जात, जनक नंदनी प्रभुहि लखि।
अतिशय जिय अकुलात, प्रेम विवश भूली सुरति॥

सवैया।

हे करुणाकर शंभु सुजान करी तुम्हरी अबलों सेवकाई।

आय परचो अब काम सोई परे पूरण कीजिये मोरि सहाई ॥
श्रीरघुराज के पंकज पाणि तिहारे शरासन की गुरुताई ।
मूलहु ते पुनि फूलहु ते तिमि तूलहु ते न लहै अधिकाई ॥
योग प्रदायिनि भोग प्रदायिनि रोगहु शोग नशायिनि जानी ।
तू करुणा कृपा छोह की मूरति मोहिं दई जयमाल निशानी ॥
ताकी करौं सुधि आयो समै अब श्रीरघुराज मनोरथ दानी ।
साँवरे को परे भाँवरी है अवलंब तुहीं जगदंब भवानी ॥
जय शिव नंदन दोष निकंदन वंदन योग हमेश उदारे ।
जय गणनायक जय वरदायक शुद्ध सतोगुण के अवतारे ॥
आप के बाप को चंड कोदंड करौ लघु दंड सो मोहिं निहारे ।
श्रीरघुराज को राज समाज में देखे पिता धनु खंड के डारे ॥

दोहा—मनहिं मनावति जानकी, गौरि गणेश पुरारि ।
देखि राम शोभा सुखद, यकटक रही निहारि ॥
भरे विलोचन प्रेम जल, पुलकावली शरीर ।
निरखि अवनि पुनि पितु जननि, पुनि निरखति रघुबीर ॥
श्याम राम अभिराम छवि, लोयन लागत लोभ ।
परम कठिन पितु प्रण समुझि, पुनि उपजत चित क्षोभ ॥

कवित्त ।

विधिकतदीन्होजन्मदीन्होजन्मभलोकीन्होकाहेगुनिविरचीविदेहकीकुमारिहै
विरचीविदेहकीकुमारीसोऊभलोभईपितुप्रनकसककरवायोहमनारिहै ॥
पितुप्रणभलोकरवायोक्योंबोलायोराजगनजेतेबोलायेतोनविनतीहमारिहै
रघुराजशंकरशरासनतोरावैपरे साँवरे कुँवरहोनोंभाँवरी हमारि है ॥
महाराजमिथिलाधिराजजानजेरोतिनासहितसमानेसगनकेमनानको।
रघुराजज्ञानीमुनिसम्भ्रमकभानदकोदनजुझावकोउचितप्रमानको॥
लाभतेविहीनभनहानितेविहीनपरिमानतेविहीनकरकोनअवमानको।

टूटै नहिंवरुधनुछूटैवरुयहतन रहौंगीकुवांरीकीवरौंगीरघुभानको॥
सुहृदसचिवगुरुगणकपुरोहितहू वेद वुध बदैजोसभीतस्वामिकाजमें॥
धर्मकोअधर्मजोयन्यायकोअन्यायहोयउठतउपद्रवविशेषतेहिराजमें॥
कुलिशकठोरकयलासपतिकोकोदंडडोल्योनाडोलायेभूपमंडलीदराजमें
रघुराजरामैदेतसोईधनुतोरिवेकोगाजपरैऐसी निरदइन समाज में॥
कहांकिशलैतेअतिकोमलकमलकरकहांकोटिकुलिशकोदंडयाकठोरहै
गड़नचहतिपायँपाँखुरीपुहुपहूँकीऐसेसुकुमारकोनयोगऐसोजोर है।
रघुराजपंकजकी जोर नहिं वेधैहीर धरौंकिमिधीरपावैपीरमनमोरहै।
अवध किशोरपगसेवन केपाइवे में शंभु धनुसत्यअव तोरईनिहोरहै।
सकलसभाकीभईभोरीमतिमोरीवारशंभुधनुलागीअबआशएकतोरिहै
जड़ता जननपैपवारेनानिहोरैमुख हरूहोइहेरिरामैकीरतिनथोरीहै।
देखत सकल सुर मुनि रघुराज आज जनकैनिवारैनहिंकरिवरजोरीहै
पाऊंदुखद्वन्दकीअनंदछलछन्दछोड़िहौंतोभईभानुकुलचन्दकीचकोरीहै

सोरठा—यहि विधि करत विचार, धरत धीर नहिं जानकी ।
लखि अवधेश कुमार, कोटि कलप वीतत पलक ॥

कवित्त ।

लखिरघुवीरकोनिहारतिधरणिओरमानौकहैमातुमोहितैंहौंअवन्याहिदे
सूचनिकरतिरामैडाढ़तेउठाईधरा चापकौनवातपितुप्रणनिरवाहिदे ।
भूमिभारहारहेत लीन्ह्योअवतारनाथमानौंगोभरोसमेरोशोकमारढाहिदे
रघुराजराजसुतकीजेनाक्षमासोक्षमाभूपनकीदाप कोप्रतापहीतेदाहिदे

सवैया ।

लोयन लोल ललोहैं ललीके मनोज मनो मन में मुद छाकी ।
डोल वनाय मयंक को मंडल ढीली उभे सफरी छवि साकी ॥
श्रीरघुराज सु श्यामकुमारे विदेहसुता मन की गति थाकी
झांकि कै प्रीति सों झीने झरोखनि झारिकैझाकीझकाझ

कवित्त ।

गुरुजनलाजरजनीकोपायकंजमुखमुकुलितरुकिगैमलिंदीसिपवानीहै ।
श्रोणनैनकोनहीलोआंसुकोनिवासहोतजैसेसोनभौनकोनराखतअदानीहै
अतिअकुलानीउरपूरणप्रतीतिआनोपूरुवकीप्रीतिजानीपुनिसकुचानीहै
रघुराजठानीप्रणसुमिरिभवानीमनजानिकीसीजानकीशैंजानिकीहौंजानीहै

दोहा-जापर जाकर होत है, सांचो सरस सनेह ।
सो ताको हठि मिलत है, यामें नहिं संदेह ॥
जो तन मन ते राम पद, ह्वैहैं मोर अधार ।
तो तेई पद दासिका, करिहैं राजकुमार ॥
तहँ तेहि क्षण सिय के हिये, जो दुख होत महान ।
तौन भानुकुल भानु सब, जानत राम सुजान ॥

सवैया ।

गुरुलोग की लाज गड़े गड़े गौनत जात अड़े अड़े चैनन सों ।
मन मोद मढ़े मढ़े वीर रसै नहिं बोलैं बढ़े बढ़े बैनन सों ॥
रघुराज खुशी सो यथा खगराज विलोकत व्यालहि सैनन सों ।
चितयो तिमि चाप चढ़े चढ़े लाल बड़े बड़े बारिज नैनन सों ॥

दोहा-भंग होत अरधंग धनु, जानि लषण तेहि काल ।
कह्यो लोकपालन मनहि, सजुग होहु यहि काल ॥

छंद ।

दिशा दिग्गजसवैहोहुसुगपतसजगकरहुधारणधरणिधीरधरिजोर सों ।
कोल कूरम धरैं कमठ अहिपति गहैं शेश भूको बहैंभोरनहिबोरसों।
आपने आपने लोक दिगपाल यहकालथिरहोयँजगराखिचहुँओर सों।
त्रिपुर हर चंड कोदंड खंडनकरनचहतचितआजरघुराजयहिठोरसों
भाषि अस लषण संकल्प को सुरन सब बैठि तहँ आपहू सावधानें।
चरण ते चापि ब्रह्मांड मंडल सबल प्रबल अहिपतिकमंडलप्रमानें॥
गगन मग थम्हि रहे सूर तारा शशी सिद्ध भागे भभरिचपलजानें ।

परचो खरभर भुवन भगे भरभर अमरचरितरघुराजकोकोउनजा

दोहा—सकल महीपन के लखत, चाप समीपहि जाय।
अचल नीलमणि शृङ्ग सम, ठाढ़े सहज सुभाय॥

चौपाई।

चाप समीप महीप अपारे। रामहि ठाढ़े सहज निहा
भरे हर्ष बिसमय सब कोई। निश्चय परति न कोउ कहँ जोई
कौशिक अरु सीताअरुदेवा। जानत धनुषभङ्ग कर भेवा
जनक रानि अरु भूप विदेहू। क्षण आनँद पुनि क्षण संदेहू
पुरजन सकल नारि नर जेते। लागे देव मनावन तेते
तूरहिं शंभुचाप रघुराई। सविधि करब हम सकल पुजाई
अस कहि लखतमौनजनकैसे। स्वाति बूंद घन चातक जैसे
सिय हित शोच भूपविकलाई। अंध महीप गर्व गरुआई
रानि सुनैना कर पछिताऊ। हरचो हेरि धनु कह रघुराऊ
प्रबल मल्ल जे पाँच हजारे। ठाढ़े धनु समीप बलवारे
ते सब रामहि वचन उचारे। खोलहु मंजूषा सुकुमारे
पाणि ठेंगि मंजूषा काहीं। रघुनायक चितयो गुरु पाहीं

दोहा—सहज सुभाव दुराव नहिं, तेज कोटि दिनराउ।
कह्यो वचन रघुराउ मृदु, सुनहु विनय मुनिराउ॥

चौपाई।

हे गुरु अस मानस कछु मेरो। करौं यतन धनु ऐंचन केरो
धनुप उठाय चढ़ावन काहीं। चढ़ति चोप नेसुक चित माहीं
पूछि लेहु मिथिलेश नरेशै। यतन करन कहँ देहु निदेशै
सुनि मिथिलेशै कहमुसक्याई। तुव निदेश चाहत रघुराई।
नृप कह भली कही रघुनाथा। सैंचन चाप लगावहिं हाथा।
अस कहिठाढ़भयोमिथिलेशा। सुमिरण लाग्यो रमा रमेशा।
बोले विश्वामित्र पुकारी। गहहु राम धनु पटल उपारी।

यतना सुनत सबै पुरवासी । ठाढ़े भये लखन के आसी ॥
भूप क्रूरमति कहहिं घमंडी । यह बालकका हरधनु खंडी ॥
द्विज सज्जन अरु भूपविज्ञानी । किये प्रणाम जोरि युग पानी ॥
ठाढ़ि भई तहँ सकल समाजा । काह करन चाहत रघुराजा ॥
नव किशोर वय तन घनश्यामा । अभिरामहु ते अति अभिरामा ॥

दोहा–संमत सहित विदेह को, सुनि गुरु आयसु राम ।
गुरु समेत मुनि जनन को, किय करकमल प्रणाम ॥

कवित्त ।

सहजसुभायकरकमललगायमनजूपाकोउघारिदीन्ह्योझमकिझड़ाकदै ।
नातेऐंचिशंभुकोशरासनप्रयासनहिंसाजतप्रतिञ्चाकोनकड़केकड़ाकदै ॥
रघुराजकौतुकसोंऐंच्योचापकाननलौंचंचलासीचौंधपरीचखनचड़ाकदै ।
अवधकिशोरबाहुजोरकोनथोरोसह्योटूटिगोत्रिनेत्रधनुतड़ाकितड़ाकदै ॥

दोहा–टूटत हर कोदंड के, भयो भयावन शोर ।
मनहुँ सहस पविपात यक, बार भयो तेहि ठोर ॥

कवित्त सिंहावलोकन ।

कारामेहरंग व्योम भानुकेतुरंगभाजे,
भाजेभयेभीतिके अरुझे जाय तारामें ।
ताराटूटि टूटिपरे अवनि अपारापारा,
विद सेविराजें राजैं परिगे सभारामें ॥
भाराभरे टाजहीके दीमें सबैमानिहारा,
हारागयेदोरनके कानके नकारामें ।
कारागार द्वारके केवाँरा खुले नन्दिन,
देवपति माने रघुराजेरलकारामें ॥
चौंकिज्योनारिसुरोचिन्तवनचारो ओर,

चन्द्रचूड़ चेत्यो चितचखन उचाय कै ।
गगनतेगिरे गीरवाण जे विमाननमें;
छोणिको छुअत असवचै अकुलाय कै ॥
रंगभूमि भूपतिसमाज नरनारि जेते,
एकै वारगिरिगे प्रचंड शोर पाय कै ।
रघुराज लषण विदेह मुनि ठाढेरहे,
रामजवतूरयो शंभुचापकोचढ़ायकै ॥
हाल्यो कैलास हाल्यो महा मेरु मंदरहूं,
हाल्यो विंध पर्वत हिमाचलहूँ चाल्यो है ।
हाल्यो इन्द्रलोक तैसे हाल्यो है विरंचि लोक,
हाल्यो है ब्रह्मांड शब्द शेश शीश हाल्यो है ॥
रघुराज कौशिल किशोर शंभु चाप तूरयो,
हहलि हहलि उठे महल पताल्यो है ।
हाल्यो भुव लोक त्योंही हाल्यो ध्रुवलोक त्योंहीं,
हाल्यो विश्व एक हरि हाथ नाहिं हाल्यो है ॥
कैधौं उनचासौ पौन फोरि कै कढ़े हैं मेरु,
फाटिगो सुवर्ण शैल ताही को तड़का है ।
वामन वहुरि कैधौं फोरयो फेरि ब्रह्म अंड,
मारि पग दंड सोई रव को भडाका है ॥
ग्रहन को सूर शशि तारागण भारा पाय,
टूट्यो शिशुमार कैधौं गगन पडाका है ।
कैधौं रघुराज रणधीर अवधेश ढोटो,
भंजो धूरजटि धनु धुनि को धडाका है ॥
चिकरत दिग्गज पराने पुहुमी को छोड़ि,
गिरिगे पतंग से विहंग आसमान के ।

टूटि टूटि गिरिगे उतंग शृङ्ग शैलन के,
गैलन बटोही भाग वासी भे मकान के ॥
वंदी करि तरल तुरंग तुंग तोयनिधि,
ह्वै गये तड़ाग से न वेग मारुतान के।
रघुराज बाहुबल वारिध में बूडे वीर,
शंकर जहाज चाप चढ़े जे अज्ञान के ॥

छंद बरवै।

ऐंचतगहतउठायचढ़ावतचाप।लख्योन कोउरघुलालहिकलाकलाप॥
प्रभुकेरह्योमूठिमहँ एकैखंड । परोखंड यकमहिमहँ महा उदंड ॥
सोऊ खंडहि फेक्यो महि रघुनाथ। सहज सिंहसम ठाढ़े झारतहाथ॥

छंद हरगीतका।

धनु भंग कीन्ह्यो रंगभूमि समाज मधि रघुवीर
रव भयो घोर अघात बहु निरघात सम प्रद पीर ॥
जे रहे जहँ ते गिरे तहँ जनु फूटिगे युग कान ।
गंधर्व किन्नर सिद्ध चारण चढ़े बहुरि विमान॥
द्वै दंड भरि ब्रह्मांड खलभल मचि रह्यो तेहि काल ।
अस विश्व में नहिं रह्यो कोउ सुनि होइ जो न विहाल ॥
पुनि सम्हरि सब करि स्वस्थ चित्त विचार किय असुरारि
शंकर शरासन राम तूरयो भुवन सोइ झनकारि ॥
चढ़ि चढ़ि विमानन सुखित आनन गगन आय अपार ।
यक बार दीन्हे दुंदुभी कहि जयति अवध कुमार ॥
जय रमा रमण रसाल कीन निहाल मिथिला पाल ।
हरिलीन सुर दुख जाल हाल दयाल दशरथ लाल ॥
धनु भंग शोरहि व्याज भरिगो सुयश भुवन अपार ।
यम वरुण धनद सुरेश मगन अनंद पारावार ॥
निरगुन रह्यो असगुन धनुप तेहि सगुनकरत रमेश ।

फूटि गयो असगुन घट चटकभे मनहिं मुदित महेश ॥
बाजे अनेकन दुंदुभी मचि रह्यो दिशनि धुकार ।
गंधर्व गावन लगे सर्व अनंद पाय अपार ॥
नाचन लगीं अपसरा चन्द्रानन विमानन बीच ।
हिय में हरषि वरषहिं सुमन सुर आय आय नगीच ॥
शीतल सुगंध समीर लाग्यो वहन दशहु दिशान ।
सुरभित सलिल सूक्षम सुबूंदन वरषिरह मघवान ॥
आतप निवारत सघन घन सुर मधुर गरजत मंद ।
बाजन बजावत अति सोहावन देव दून अनंद ॥
प्रभु पर बरषि पुनि पुनि पुहुप नहिं अमर उरहि अघाउ ।
देखत सुछवि निज नाथ की कहि जयति रघुकुल राउ ॥
अस्तुति करत रघुनंद की बृन्दारकन के बृन्द ।
आनंद कंद गोविंद जयति मुकुंद रघुकुल चन्द ॥
समरथ सुशील सुजान साहेब सकल भुवनाधार ।
सुर मुनि कलेशन शेख राखन लेत हौ औतार ॥
इत धनुष शोर कठोर सुनि जे गिरे पुर नर नारि ।
ते उठि निहारे नैन देखे धनुष भंग पुरारि ॥
ह्वै गयो सपनो सो सबै जो रही मन महँ आस ।
भै सिद्ध सकल समाज मध्य प्रसिद्ध विनहि प्रयास ॥
देखे परे पुहुमी पिनाक द्विखंड तेज अपार ।
तिनके निकट ठाढ़े सहज अवधेश राज कुमार ॥
पानी पर्‌यो जिमि धान सूखत मृतक वदन पियूष ।
संजीवनी विद्या लहे उलहत विटप जिमि सूप ॥
तिमि सकल पुरजन भये ठाढ़े किये जय जयकार ।
मिथिलेश सुकृति सराहि पुनि जे कहहिं अवध कुमार ॥

गहगहे बाजे दुंदुभी डफ डिंडिमी करनाल ।
करताल वेणु उपंग पटह मृदंग ढोल रसाल ॥
गावन लगीं पुरनारि मंगल गीत चारिहु ओर ।
तेहि समय बढ्यो उछाह अति जनु भुवन लागत थोर ॥
तहँ शंख धुनि चहुँओर पूरी झाँझ की झनकार ।
पुलकावली प्रति अंग नैनन बहति आनँद धार ॥
मिथिलानिवासिन वदन ते अस कढ्यो एकहि बार ।
तूरयो चटक गहि चंद्रचूड सुचाप राजकुमार ॥
दोहा-कहो सुनैना जौन सखि, राम तूरिहैं चाप ।
सो उठि पुलकि प्रणाम किय, मिली रानि उठि आप ॥

छंद गीतिका ।

पहिरे रही जो वसन भूषण जड़ित रतन अपार ।
सो दियो ताहि उतारि रानी तनक तन न सम्हार ॥
गुरुजनन को वंदति सुनैना कहति बारहिं बार ।
पूरण मनोरथ भयो मेरो पूर पुण्य तुम्हार ॥
तहँ सूत मागध सुकवि वंदी विरद करहिं बखान ।
तूरयो महेश कोदंड दशरथ कुँवर सींक समान ॥
नर नारि आपुस महँ मिलैं नहिं कथा कहत सिराय ।
हरषहि पुलकि बरषहि सुमन विहँसहि न मोद समाय ॥
मिथिला निवासी नारि नर सज्जन महाजन जाय ।
प्रभु की निछावरि करहिं मणिगण बचे देहिं लुटाय ॥
कोउ प्रेम वश परिहारि सो लाजहिं बाहु मीजहिं पानि ।
अति पीर होती होइगी ऐंच्यो धनुष कर तानि ॥
कोउ चरण शिर धरि करहि वंदन जानि देव कुमार ।
कोमल कमल कर धनुष तूरयो कौन विधि सुकुमार ॥

देती डिठोना भाल कोउ नहिं लगै लालैं डीठि।
कोउ वृद्ध तिय कहि कौशिला के ठोकती प्रभु पीठि॥
तेहि समय जो सुख जानकी के भयो राम निहारि।
सो कौन कवि जग बापुरो जो कहै सकल उचारि॥
यकटक लगी चितवन चखन जिमि चितव चंद चकोर।
जिमि लहत चातक स्वाति बुंद विहाय विंदु करोर॥
तोरयो शरासन शंभु को जब अवध राज किशोर।
भूपति चमूपति लगत इमि चुप बैठ मानहुँ चोर॥
उड़िगै वदन की लालिमा फेफरी परी अधरानि।
यक एक देखत कहत नहिं मनु भई सरबस हानि॥
मुद के महोदधि मगन भे मिथिलेश गदगद कंठ।
को कहै तिनको हिय हरष मानहुँ लहे वैकुंठ॥
नहिं वचन मुख सों कढ़त नैनन वह्यो नोर प्रवाह।
मम धर्म प्रण की कटी बेरी रही जो पग माह॥
पुनि सुमति विमति बोलाय वंदी कह्यो बैन विदेह।
कहि देउ सकल महीप कहँ अब जाहिं निज निज गेह॥
देखन लषण लोयन ललकि रघुलाल को तेहि काल।
मनु आपहीं तोरयो धनुष अस भयो हर्ष विशाल॥
मिथिलापुरी तेहि काल में ह्वै गई आनँद रूप।
प्रभु चरण वंदे वार वारहिं रहे भक्त जे भूप॥
मिथिलेश तब चलि गाधिसुत के चरण कीन प्रणाम।
अस कह्यो तुम इत ल्याइ रामहि कियो पूरण काम॥
तोरयो शरासन शंभु को प्रण पूर कीन्ह्यो मोर।
छायो सुयश क्षिति छोर लों धनि अवध भूप किशोर॥
यह सकल नाथ प्रताप तुव नहिं और कछु निहोर।

जो तूरिहै धनु ताहि व्याहौं रह्यो अस प्रण मोर ॥
सो शंभु धनु भंज्यो सहज यह साँवरो रघुलाल ।
अब होय नाथ निदेश तो मेलै सुता जयमाल ॥
तब महा मुनि मुसक्याय बोले पुण्य राउर भूरि ।
शिव चाप तृण फल फूल सम क्यों सकैं राम न तूरि ॥
अब देहु आयसु जानकी जयमाल मेलै जाय ।
पुनि अवधपुर ते आसुही लीजै बरात बोलाय ॥
सुनि वचन कौशिक के विमल नृप सतानंदहि आनि ।
जयमाल हित शासन दियो अवसर सुखद जिय जानि ॥

दोहा—शतानंद आनंद भरि, गये तुरत रनिवासु ।
कह्यो जानकी जननि सों, अब कीजै अस आसु ॥
सजि शिंगार गावत मधुर, संग सहस्रन बाल ।
सियहि पठावहु राम के, मेलै गल जयमाल ॥

सवैया।

सुनिकै मुनि के मुख ते निकसी सरवस्व मनो सिय लाभ लह्यो।
उतसाह औ लाज समान भरी सुख सों मुख सों नहिं जातकह्यो।
रघुराज सो लाज उठै नहिं देति विलोकन को जियरो उमह्यो ।
करि लीन्ही जो मूंदरी कंकन सी कर कंकन सो अँगुरीन रह्यो ॥

दोहा—उठी सीय आनंद भरि, पहिरि पीत पोशाक ।
डगरी सँग सगरी सखी, नूपुर बजे झनाक ॥

चौपाई।

चली जानकी लै जयमाला । पहिरावन को दशरथ लाला ॥
सोहहिं सुंदरि संग हजारन । सुरदारन सम किये शिंगारन ॥
महा भीर सब राज समाजा । खैर भैर मचि रह्यो दराजा ॥
कुमति कुपति संमति करि लीन्हे । सियहि न त्यागब बिन युध कीन्हे
अस सुधि पाय सुनैना रानी । सायुध पठई सखिन सयानी ॥

वल्लभ कुंत कटार कृपानी। कसे नारि कम्मर मरदानी॥
मुख्य मुख्य सजनी मधि माहीं। तिनके मधि सिय लसति तहांहीं॥
सायुध सखि मंडल चहुँ ओरा। गावहिं मंगल मंजुल शोरा॥
मनहुँ समर संभव गुनि देवी। आय भई सिय स्वामिनि सेवी॥
डरपे कुमति कुपति अविवेकी। टरिगे टारि टेंक जो टेंकी॥
बाहेर जाय यूथ सब बांधे। रण हित आयुध कांधन कांधे॥
यह सुधि सकल लषण जब पाई। चल्यो सिंह सम जहँ रघुराई॥
ठाढ़ो भयो निकट प्रभु केरे। पंचानन सम भूपन हेरे॥

दोहा—विश्वामित्र विचारि चित, गयो विदेह समीप।
कह्यो अभागी भूप सब, चाहत होन प्रतीप॥
बोले जनक सरोष तब, कौशिक करहु न शंक।
तारागण का करि सकत, पूरण उदित मयंक॥

चौपाई।

गारी देहिं नृपन नर नारी। मंगल माहिं अमंगल कारी॥
प्रथम उठ्यो नहिं धनुष उठाये। बैठे शीश नवाय लजाये॥
अब केहि हेत करैं शठ रारी। बरबस चाहत हरन कुमारी॥
कोउ कह करहु शंक नहिं कोई। देखब सबै जौन अब होई॥
आवति सिय मेलन जयमाला। यह उछाह लखि होब निहाला॥
सुनत जनक भूपन उतकर्षा। कियो हर्ष महँ परम अमर्षा॥
चतुरंगिनी सैन्य सजवाई। दियो द्वार महँ ठाढ़ कराई॥
शासन दियो सरोष विदेहू। मारेहु नृपन बचैं नहिं केहू॥
करन चहत असमंजस पापी। इनकी मीच लषण कर थापी॥
राज समाज लाज नहिं लागी। दरशावत मुख बहुरि अभागी॥
भूपन कहैं न कोउ समुझाई। बसहु जीव लै निज घर जाई॥
सुमति विमति बंदी दोउ धाये। कुमती भूपन [illegible]॥

दोहा–काज तुम्हारो कौन इत, बैठे बृथा समाज।
होन मीच भाजन चहौ, परत लषण शर गाज॥

चौपाई।

इतै सखीन समाज पुनीता। आई रंगभूमि महँ सीता॥
मानहुँ संग शक्ति समुदाई। कढ़ि कमला क्षीरधि ते आई॥
आवति सिय लखिउठी समाजा। किये प्रणाम भक्त सब राजा॥
पुर नर नारि जानकिहि देखे। धन्य धन्य निज भागहि लेखे॥
जब प्रथमहिं पूजन हित आई। रज रंजित ग्रीपम शशि भाई॥
पहिरावन जयमाल सिधाई। तब शारद मयंक छबि छाई॥
सीय नयन दोउ बंधु देखाने। जिन लखि मदन शृँगार लजाने॥
मनहुँ नीलमणि रजत पहारा। श्याम गौर क्षिति छटा पसारा॥
उठतीं सुछवि अभंग तरंगा। क्षण क्षण नव नव होति प्रसंगा॥
परे खंड द्वै धनु मद्दि माहीं। राम लपण मधिखडेतहांहीं॥
झुके सकल देखन नरनारी। केहिविधिसिय जयमाला डारी॥
मंद मंद सिय आवति कैसे। मिलन प्रीति मनु प्रेमहि जैसे॥

दोहा–राम रूप नख शिख निरखि, अनमिख नयन लगाय।
रही ठमकि मन अचल करि, देह दशा बिसराय॥

सवैया।

सोहि रही नख ते शिख लों मृदु केसरि रंग की सुंदरि सारी।
भाल विशाल में लाल सो बिंदु करें पग में घुँघुरू झनकारी॥
रामे बिलोकि रही रघुराज विदेह लली तनहूं मन वारी।
कै कुज अंक मयंक मनो लसै सोनजुही के निकुंज मँझारी॥
शोच सकोच बिमोच भयो सुख दोहुँन के सरसान समाने।
दोहुँन की जुरीदीठि निशंक मयंक दिनेश मनो दरशाने॥
श्रीरघुराज भरे दृग लाज हिये दोउ प्रेम पयोधि नहाने।

दोऊ विचित्र छके छवि में लिखे चित्र से जानकी राम सोहाने ॥
दोऊ निमेषन नेवर जानि कै नैनन ते करि दीन्ही विदाई।
प्रीति के पाश में दोऊ फँसे पद कंज दोऊ के गहे थिरताई॥
लाज को काज अकाज भयो रघुराज उछाह की भै अधिकाई।
राम को भूलि गयो धनु भंग सिया पहिरावन माल भुलाई॥
अंगुली सो गहि अंगुली कोमल मंजुअली मुख सों मुसक्याई।
मंजुल बाणी कही सुख सानी सुनेसुक नैनन सैन चलाई॥
आई इतै पहिरावन को जयमाल विशाल रसाल तुराई।
सो पहिराय चली रघुराज सदा निरख्यो यह सुंदरताई॥
मंजुल युक्ति भरे सखी बैन सुने सिय नेसुक नैन नवाई।
नेसुक ही सखि ओर लखी मुसक्याइ कै मंदहि मंद लजाई॥
मदहिं मंद उभै कर सों रघुराज चितै जयमाल उठाई।
वासव चाप के बीच मनो चपलाचमकै घनश्याम निराई॥
चारिहुओर लसै सखिमंडल मध्य विदेहलली छविछाई।
सामुहे श्रीरघुराज खड़े दोउ राजकुमार समीप सोहाई॥
मानहुं सेत औ श्याम घटा ढिग बीजुरी की प्रगटी बहुताई।
मध्य मेंपूरण चन्द उदै भयो चंद्रिका मंडल मंडि महाई॥
औसर जानि कही सहजातहँ येहो विदेहसुता सुनो मेरी।
या छवि देखन तेरेई भाग विरंचिवई विरची सुखढेरी॥
श्री रघुराज को आजु अहै वलि तेरे समान न मैं जग हेरी।
मेलौ गले जयमाल लली रघुलाल के हाल करो कस देरी॥
आली गिरा सुनिकै रस शालो चहै पहिरावन को जयमालै।
सीय विचारै मनै मनही में परी परिपूरण प्रेम के जालै॥
कोमल श्रीरघुराज के अंग कठोर महा कुसुमानि की मालै।
हाय कहूँ गड़ि जाय गरे पछिताय रहौं हिय पाय कशालै॥

सोरठा–तहँ विलंब जिय जानि, मंद मंद बोले लषण।
अब अनुग्रह खानि, बितत महूरत अति सुखद॥
सिय सुनि देवर बैन, सकुचि रची रति राम के।
लखि लषणै भरि नैन, द्रुत जयमाल उठाय कर॥
दई प्रभुहि पहिराय, विविध रंग जयमाल गल।
सो छबि कही न जाय, मरकत गिरि मनु धनु उयो॥

सवैया।

जा क्षण में मिथिलेश लली जयमाल दई प्रभु को पहिराई।
देखन लागी मनोहर मूरति नयन निमेष विशेषि विहाई॥
श्रीरघुराज समाज सबै ह्वै निहाल लखैं दोहु को टकलाई।
श्याम घटा क्षण ज्योति छटा ज्योंचटापट दीन्हीं रुमाल ओढ़ाई॥

दोहा–राम गले जयमाल लखि, भे सब लोग निहाल।
माच्यो जयजयकार तहँ, बार बार तेहि काल॥

छन्द हरिगीतिका।

सुर चढ़ि विमानन विविध आनन जयति राम पुकारहीं।
अभिराम लखि सिय राम छबि सुरद्रुम प्रसून पवारहीं॥
भेरी बजावत सुयश गावत शीश नावत रामहीं।
सुरदार नाचहिं गतिन राचहिं हिय हुलास बढ़ावहीं॥
छायो भुवन मंडल विनोद विशोक देव समाज हे।
को कहि सकत यक मुख लह्यो जस सुख जनक महराजहै॥
मिथिलानगर नर नारि आनँद मगन अभिमत पाय कै।
फूले फिरहिं चहुँ ओर चायन जगत दुख बिसराय कै॥
तहँ यूथ यूथहिं नारि मिलि मिलि गीत मंगल गावहीं।
यक यकन धनु तोरन कथा पुनि पुनि बोलाय सुनावहीं॥
सब बात दीन बनाय विधि अस कहत शीश नवावहीं।

पुलकित शरीर अधीर तन निरखहिं खरे सिय रामहीं।
तहँ जनकपुर नर नारि प्रमुदित सुमिरि गणपति भारती
चहुँओर ते सिय राम की लागे उतारन आरती ॥
करपूर कंचन थार धरि दधि दूब तंदुल डारिकै।
सिय राम की आरति उतारहिं दीठि दोष निवारिकै
कोटिन मदन मद कदन देखहिं राम बदन सोहावनो
सुख सदन मानस फँदन दाडिम रदन इन्दु लजावनो
दुख दुसह दारुण दरन सब सुख भरन सिय मुख हेरहीं
रति रंभ गौरि गिरा गुमानहिं वारि दिय अस टेरहीं।
चहुँ ओर चमकहिं आरती सिय राम बीच बिराजहीं।
रवि शशि निकट लखि तारगण मनु भ्रमत जोरि समा
ह्वै रह्यो तहँ अति खैर भैर अनंद सकल समाज में।
यक छोड़ि हरि विमुखी नृपति जे विघन कारक काज
महिदेव वेद पढ़ें मढ़ें सुख स्वर उचार विधानते।
नभ ते झरति कुसुमावली विरदावली कवि गान ते ॥
मागध विदूपक वृन्द वंदी ह्वै अनंदी आयकै।
रघुकुल विरद निमिकुल विरद गावत समाज सुनायकै
अम्बर अवनि आसन दशो दिलस्यो सुयश जग छाय
दिग्गजन हरि गज गिरिन हर गिरि भरयो भुवन बना
युग युग युगुल पंचक भुवन यक बार परम उछाह भो
शंकर कोदण्ड दुखंड किय रघुनाथ सीय विवाह भो॥
मानी महीपति तुरत तमके तेग चमके पानि में।
नाहिं जके आपुस महँ बके सिय तके दीठि खोभानि मैं
का भयो हर कोदंड खंडे का परे जयमाल के।
का भयो जनक सुता बरे नहिं मिटे आखर भाल के॥

हमरे सुअक्ष प्रत्यक्ष देखत कौन कुँवरि विवाहिहैं ॥
लक्षण विपक्ष विपक्ष करि रण सिंधु को अवगाहिहैं ॥
अस कहि उछाहन सजि सनाहन बोलि वाहन पासुही ।
यक एक नरनाहन कहे मतिमंद आहन आसुही ॥
अब का करहु आयुध गहहु जो चहहु कुँवरि छड़ावनो ॥
वर वीर अहहु न बैठ रहहु न कहहु समर बचावनो ॥
अस कहि उठे खल सकल भल गलबल करत खलभलपरो।
अनभल न आपन गुनत छल बल करन चह तेहिअवसरो ॥
हल्ला सुनत नर नारि शंकित सकल बैन उचारहीं ।
अब काह चाहत होन बात बनाय ब्रह्म बिगारहीं ॥
ये दई मारे प्रथम हारे कहत बहुरि न लाजते ।
इनको प्रयोजन कौन इत अब टरहिं मंगल काज ते ॥

दोहा—सुमति विमति बंदी युगल, बोले जनक बोलाय ।
कुत्सित राजन को चरित, कहो कौशिकहि जाय ॥

चौपाई।

सुमति विमति बंदी दोउ आये । विश्वामित्रहि सकल सुनाये ॥
मुनि सकोप बोले तब बानी । नृपन नगीच मीच मड़रानी ॥
कहौ अभागिन भूपन काहीं । ह्वै हैं हव्य हुताशन माहीं ॥
सुमति विमति दोउ तुरत सिधारे । सब भूपन कहँ वचन उचारे ॥
सुनहु नरेश मुनीश निदेशा । गमनहु अपने अपने देशा ॥
सुयश वीरता गर्व बड़ाई । धनुष उठावत दियो गवाँई ॥
राज कुमार शंभु धनु तोडा । मधि समाज भूपन मदमोडा ॥
सजहु समर हित अब केहि हेतू । वृथा करहु यम सदन निकेतू ॥
नृपन वचन सुनि लषण रिसाने । फरकि उठे भुज नैन ललाने ॥
दंतन दरत अधर है ज्वासू । बोलिसकत नहिं रघुपति त्रासू ॥

अरुणोहैं दृग तकि तिरछौंहैं । दहत नृपन जनु वंकित भौंहैं
चहत मनहि प्रभु शासन देहीं । क्षण महँ देखि मोर वल लेहीं

दोहा–भस्म करों क्षण महँ नृपन, वढ़ि वढ़ि बहुत वतात ।
अबै न देखे वीर मुख, चहकारे ऐंड़ात ॥
चहकारे नट भाट के, जे आवत संग्राम ।
ते भागत रण छोडि की, बांधि जात परिणाम ॥

चौपाई ।

खर भर होत सखी डरपानी । राम लषण लखि सियमुसक्यानी
मधुकैटभ मुर भौम प्रचंडा । हिरणकश्यप कनकाक्ष उदंडा
सहे न जोर जासु भुज दंडा । तिन सन्मुख नृप करत घमंडा
सायुध सखी खड़ी वढ़ि आगे । कहहिं भूप का करत अभागे
प्रथम हनव हमहीं हथियारन । समर कौन करि सकै निवारन
डरे नर्म सखि सिय मुसक्याती । कुपितलषणलखि लजिपछिताती
प्रगटत लछिमन कोप कराला । राम कह्यो हँसि वचन विशाला
अजा महिष खर लखि पंचानन । सुन्यो न कोप करत कहुँकानन
लखो लषण कौतुक धरि धीरा । काह करत वढ़ि नौवढ़ वीरा
राम वचन सुनि लषण लजाने । लषण लगे महि मृदु मुसुक्याने
गगन गिरा भै राजन काहीं । निज निज भौन भूप सब जाहीं
जो कुचाल करिहैं यहि ठोरा । हनिहैं तिन्हैं यक्ष वरजोरा

दोहा–सुनि अकाशवाणी तहां, डरे भूप मतिमंद ।
लेले निज निज साहनी, चले चुपहि तजि फंद ॥

चौपाई ।

भक्त भूप भल भापन लागे । भले अभद्र भौन कहँ भागे
लखि वीरता होति है हांसी । गे घर वठ वुधि विक्रम नासी
आये वदन देखाय ललाई । गे गृह मुख लगाय कारिखाई

र्म छोड़ि जो बिनहिं विचारा। करत काज मतिमंद गँवारा॥
ही दशा तिनकी हठि होती। जस इन भूपन भई उदोती॥
ोउ कह रण विचार कछुकरते। लपण रोप पावक महँ जरते॥
हे समर नृप वृथा अभागा। पन्नगारि सम होत न कागा॥
शकन करत सिंह समताई। गज न होत खर देह बढ़ाई॥
भु विमुख नहिं संपति पावै। भजे विना हरि नहिं भ्रम जावै॥
ोउ कह लोभिन लाज न होई। धर्म छोड़ि लह कीरति कोई॥
हि विधि साधु परसपर भाखत। हरि पद पंकज महँ चितराखत॥
च्यो कोलाहल गे जब भूपा। माच्यो मंगल शोर अनूपा॥
दोहा- इते मयंक कला सखी, सियहि कह्यो मुसक्याय।
परसि कंज पद राम के, चलहु भवन सुख छाय॥

चौपाई।

ुनि सखि वचन विदेह कुमारी। नहिं परसति पद पाणि पसारी॥
े पद गौतम तिय कहँ तारे। परसब उचित न जान हमारे॥
ूरुब भाउ होत पद परसे। यहि अवसर में चहौं न उर से॥
मिथिला अवध महा सुख होई। पूरुब भाउ भये कहँ सोई॥
यदपि नित्य सनबंध हमारा। पै जेहि हेतु लीन अवतारा॥
सो लीला किमि पूरण होई। सकी न भूमि भार हरि कोई॥
अस विचारि परसति पद नाहीं। राम जानिअसमन मुसक्याहीं॥
पूर्व भावकी उपजी भीती। ताते करी अलौकिक प्रीती॥
नैनन सैनन सों रघुराई। दई जानकिहि जान रजाई॥
मनही मन पद वंदन करिकै। साँवलि सूरति हिय महँ धरिकै॥
चली सीय जननी ढिग काहीं। गावत मंगल सखी सोहाहीं॥
दोहा-जयमाला पहिराइ कै, गई सीय रनिवास।
राम लपण आवत भये, विश्वामित्रहि पास॥

चौपाई।

परे चरण महँ दोनों भाई । मुनि लीन्ह्यो निज अंक ल
पीठि पोंछि शिर सूंघि सुखारी । बोले वचन महा तप
जीवहु युग युग सुंदर जोरी । यहि विधि पुजवहु आशा
कियो बंधु दोउ मोहिं सनाथा । देहुँ काह कछु है नहिं ह
प्रभु शिर नाय कह्यो कर जोरी । नाथ कृपा कीरति भै
यह सब भयो प्रसाद तुम्हारे । कृपा छोड़ि बल नाहिं ह
तेहि अवसर विदेह तहँ आये । विश्वामित्र चरण शिर
दीन अशीश मुनीश महोसै । रहहु मोद महँ कोटि व
जोरि कमल कर कह्यो विदेहू । तुव प्रसाद मिटिगो सं
टूट्यो शंभु धनुप मुनिराया । राम लह्यो यश राउर दा
रही नाथ निमिकुल मरयादा । सब सुख हेत तुम्हार प्रसा
अब आगे जस शासन देहू । करौं तौन विधि बिन सं

दोहा-निमिकुल रघुकुल महँ तुम्हीं, अहौ सयान प्रधान ।
तुम्हें विदित गति भुवन की, हम सब मनुज अयान ॥

चौपाई।

जेहि विधि नाथ सिखापन होई । तेहि विधि हमकरिहैं सब क
सुनत विदेह वचन सुखदाई । बोले बिहँसि वचन मुनि
धर्म धुरंधर निमिकुल राऊ । त्रिभुवन विदित प्रताप प्रभ
तुम्हरी पुण्य सिद्धि सब काजा । उदित सुयश मानहुँ उडरा
जानहु सकल रीति मिथिलेशू । का हमसों अब लेहु निदे
तदपि उचित जस मोहिं देखाई । पूछे ते अब देतहुँ न
यह चरित्र शुभ मंगल काजा । नहिं जानत कोशल मह
टसिदलबिमटसकलसुतकरनी । सहित असीस मोरि सुत भ
पठवहु चारि चार के हाथा । सुनत होइ रघुवंश मन

ते करहु सब व्याह तयारी। तुम समान दोउ भूपति भारी॥
के बरात आवें नरनाहा। करें उछाहित राम विवाहा॥
ह्यो पिनाक अधीन विवाहू। मिटयो सकल दुख दारुण दाहू॥

दोहा–करहु जाय मिथिलेश अब, यथा वंश व्यवहार।
यथा वेद विधि लोक विधि, होइ सुखी संसार॥

चौपाई।

लहै लोक अब लोचन लाहू। भरे भूरि भल भुवन उछाहू॥
मुनि पति वचन सुनत मिथिलेशू। मोदे मगन नहिं लेश कलेशू॥
शीश नाय वोल्यो कर जोरी। अब अभिलाप यहोमुनि मोरी॥
आयसु देउ तो पत्र लिखाऊं। आसुहि अवध नगर पठवाऊं॥
व्याह समाज साज सजवाऊं। भूसुर साधु सभ्य बोलवाऊं॥
सचिवन शासन सकल सुनाऊं। विश्वकरमा कहँ बोलि पठाऊं॥
इत ते अवध नगर पर्यंता। मारग शोधन करहु तुरंता॥
सुनि विदेह के वचन सोहाये। विश्वामित्र कहे सुख पाये॥
ऐसहि करहु महीप उदारा। कीन्ह्यो निज अनरूप विचारा॥
परम सुजान अहो मिथिलेशू। का हम करहिं तुमहिं उपदेशू॥
सुनि मुनि वचन भूप शिर नाई। बैठहु राज महल महँ जाई॥
सतानंद कहँ लियो बोलाई। आनेहु ओरहु सचिव तुराई॥

दोहा–राम लषण संयुत इतै, ऋपि सुख सिंधु नहाय।
कीन्ह्यो वास निवास चलि, भये अस्त दिनराय॥
कार्तिक शुक्ल एकादशी, भयो भंग भव चाप।
रघुकुल कमल पतंग तहँ, प्रगट्यो प्रबल प्रताप॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृते रामस्वयंवरे धनुर्भंग एकोनविंशः प्रबंधः॥ १९॥

दोहा–विश्वामित्र निदेश लहि, जनक जाय दरबार।
बोलि महाजन मंत्रि मुनि, सभ्य सुहृद सरदार॥

चौपाई।

राजमहल महँ भई समाजा। सिंहासन बैठो महरा
सतानंद तेहि अवसर आये। उठि भूपति आसन बैठा
सचिव सुहृद सरदार सोहाये। राज काज अधिकारहि अ
प्रकृति महाजन पुरजन प्यारे। राज रजाय पाय पगु
करि विदेह कहँ वंदन बैठे। मानहुँ सुधा सिंधु महँ
भूपति करि सबको सत्कारा। सतानंद सों वचन उच
ईश प्रताप ताप भे दूरी। आप कृपा पति रहिगै
दशरथ कुँवर कियो धनु भंगा। जासु निछावरि अहँ अ
इहँ लगि सुधरि गयो सब काजू। अब दीन्ह्यो निदेश मुनि
कोशलपुर पठवहु अब चारा। लिखि पत्रिका चरित यह सारा॥
लै बरात कौशल महराजा। आवहिं करन पुत्र कर काजा॥
कीरति विभौ प्रताप बड़ाई। दशरथ की नहि लोकलुकाई॥

दोहा–ऐहैं सहित समाज इत, लै बरात अवधेश।
हँसी हमारी होइ नहिं, सोई मोर निदेश॥

चौपाई।

भुवन विदित निमिकुल मरयादा। प्रगट सबन मम रोष प्रसादा॥
मुनि आयसु मंत्रिन कहँ देहू। करहिं काज सब बिन संदेहू॥
उत वशिष्ठ इत आप सुजाना। सकल भाँति हो उभै समाना॥
नेत करन की है गति तोरी। जामें जाय बात नहि मोरी॥
सो सब करहु उचित मुनिराई। लेहु विश्वकर्महि बोटवाई॥
विरचहु मंडप लोक उजागर। बोलि शिल्पि वर रचना नागर॥
करु पुर अमरावती समाना। यथा योग्य सब वस्तु निधाना॥

ाँधहु थल थल तुङ्ग निसाना। द्वार द्वार तोरण विधि नाना॥
ाजमार्ग कीजै विस्तारा। सब थल रहै सुगंध प्रचारा॥
म कलश कल कोट कँगूरे। करु मंदिर चंदिर सम रूरे॥
मला तीर होइ जनवासा। रचहु तहां बहु विमल अवासा॥
ंचित कीजै वस्तु अतूलैं। जामें अवध अवधपति भूलैं॥

दोहा—और कहाँ लगि मैं कहौं तुम्हैं मुनीश बुझाय।
लोक वेद जानत सकल, सब को देहु रजाय॥

चौपाई।

सतानंद बोले तब बानी। धर्म धुरंधर भूप विज्ञानी॥
तुव प्रताप सपरो सब काजा। यश दिगंत फैली महराजा॥
अस कहि सतानंद सुख छायो। राज काज मंदिर महँ आयो॥
विशुकरमहि आवाहन कयऊ। मुनि तप बल प्रगटत सोभयऊ॥
तेहि मिथिलेश निदेश सुनायो। शासन मानि सोऊ शिर नायो॥
पृथक पृथक पुनि वस्तु विधाना। कह्यो विश्वकरमहि मति माना॥
राम सिया ब्याहन के योगू। मंडप रचहु दिव्य सब भोगू॥
द्वार बजार कोट गृह नाना। अमरावत सम करु निरमाना॥
घाट बाट के ठाट ठटावो। बीथिन बीथिन, बाग बनावो॥
पुनि सब मंत्रिन तुरत बोलाई। विश्वकरमा आधीन कराई॥
निपुण शिल्पि वर जे महि केरे। आये सुनि सुनि ब्याह घनेरे॥
ते विश्वकरमा के अनुसारा। दीन्ह्यो बितारि सबन अधिकारा॥

दोहा—अपने अपने काम में, लागे सकल तुराय।
विश्वकरमा विरचनलग्यो, मंडप वित्त लगाय॥

चौपाई।

सतानन्द एकान्तहि जाई। बैठ्यो सुमिरि सीय प्रभुताई॥
जानत सीय प्रभाव मुनीशा। वन्दन कियो नाय पद शीशा॥

स्वामिनि उपर कृपा करु मोरे । निमिकुल लाज हाथ अब तो
अनुभव महँ सिय कह्यो मुनीसे । सिद्धि सुयश संपति बिस
आठौ सिद्धि नवो निधि काहीं । दियो निदेश बोलि मन माहं
पूरण करहु धान्य धन जाई । कौनौ वस्तु न न्यून देख
सिधि निधि ऋधि सिय शासन पाई । परिपूरण प्रगटी प्रभुत
राज रजाय शिल्पि बर धाये । अवध प्रयंत सुपंथ बन
योजन योजन महँ हित वासा । विरचे विविध विलास निव
नदी पुलिन विच पुलन बँधाये । मारग सम विस्तार कराये॥
खोदि अवनि वन सवन कटाई । वसन वरात वास बनवाई॥
चारि निवास मुख्य बनवाये । तहँ बजार विस्तार कराये॥

दोहा–रही न कौनौ वस्तु की, चाहत की कछु हानि ।
सकल संपदा पूर तहँ, अवध सरिस सुखदानि ॥

चौपाई।

वापी कूप तड़ाग अनेका । निर्जल महि विरचे सविवेका॥
दोउ दिश पंथ लगाये वृक्षा । तुक्ष रुक्ष नहिं गुक्षन स्वक्षा॥
कहहिं शिल्पिवर आपुसमाहीं । अस मिथिलेश निदेश कराहीं॥
जवते तजहिं अवध अवधेशा । तवते जेहि जेहि वसहिं प्रदेशा॥
तहँ तहँ अवध सरिस सुख होई । रचैं न न्यून शिल्पि वर कोई।
चारु चारि थल मुख्य निवासा। और पंथ महँ सकल सुपासा।
पृथक पृथक सबके गृह सोहे । यथा योग जिनके जस जोहे।
अन्नागार वाजि गज शाला । राजमहल ढिग बने विशाला।
यहि विधि सकल पंथसजवायो । पुनि जनवास निवास बनायो।
राज निवास विलास अनूपा । रहें सुखी जहँ कोशल भूपा।
सभा सैन के अयन अनेका । पूजन मज्जन गृह सविवेका।
पृथक पृथक सब कर्म अ''''रा । वर्मे सुभट मंत्री सरदारा।

दोहा—रच्यो मध्य मंदिर महा, राज सभा विस्तार।
कमला सरि के तीर में, मनु पुर द्वितिय अपार॥

चौपाई।

गज शाला बहु बाजिन शाला। रथ ऊँटन के भवन विशाला॥
धनागार बहु अन्न अगारा। विविध भाँति विरचे सुख सारा॥
बाग तड़ाग सोहावन लागे। जलकीनहर सकल महि भागे॥
विविध रंग के फूल लगाये। हौद फटिकके अति छवि छाये॥
थल थल कंचन लगे फुहारा। कोट चहूंकित तुंग दुआरा॥
कलित हेम अति सुभट कपाटा। हाटक कलश कँगूरन ठाटा॥
विविध भाँति के तने विताना। झालरिझूलि झलकविधिनाना॥
कनकदंड लगि तुङ्ग महाना। फहराहिं चंपक वरण निशाना॥
कमला तीर सघन अमराई। जहँ बसंत ऋतु रहत सदाई॥
कीन तहां जनवास विचारा। विरचे थल थलविविध अगारा॥
रचन लगे रचना यहि भाँती। सकल शिल्पिवर सुघरसुजाती॥
विश्वकरमा सब शोधन करतो। जहँ जस उचितसुछवितस धरतो॥

दोहा— मिथिला ते अरु अवध लगि, दियो पंथ बनवाय।
तिमिजनवास विलास वर, सकल सुपास रचाय।

चौपाई।

जब दै सतानंद को शासन। बैठे विमल विदेह सिंहासन॥
सुभगाक्षर लेखक विद्वाना। राज प्रशस्ति जाहि सब ज्ञाना॥
तबहि महीप समीप बोलायो। कनक विचित्र पत्र बनवायो॥
दै सब कारज करन निदेशा। लग्यो लिखावन पत्र नरेशा॥
बद्यो विनोदित वचन विदेहू। पंडित मोर वचन सुनि लेहू॥
सावधान ह्वै थिर मति करिकै। लिखहु पत्र ललिताक्षर भरिकै॥
पठवन चहौं पत्र अवधेशै। बुध समाज बहु कौशल देसेशै॥

अक्षर लिपि प्रशस्ति अरुअर्था । होइ हँसी नहिं देखत व्यर्था ॥
यहि विधि लिखहु विप्र विज्ञानी । दशरथ भूप बिज्ञ गुणखानी ॥
निमिकुल कमल दिवाकर बैना । सुनि पंडित पायो अति चैना ॥
कह्यो जोरि कर यथा निदेशू । लिखिहौं तेहि विधि तजि अंदेशू ॥
कौशलपाल यदपि बड़ राजा । पै इत नहिं कछु न्यून समाजा ॥

दोहा--अस कहि लाग्यो लिखन सो, दशरथ भूपति पत्र ।
कनक कलित कागद ललित, करि मानस एकत्र ॥

अथ पत्रिका !

श्री श्री श्री श्री श्री सकल भूमंडलाखंडल विधि कमंडल निस्सरित सरितवत् दिग्गज गंडमंडल कुंडलाकार सुयशधारक धर्मधुरंधर धरा धर्मप्रचारक रणधीर वीराशिरोमणि हंसवंशावतंस रघुकुल कमल विमल दिवामणि प्रताप ताप तापित दिगन्त दुरितदुअन सब काल दिग्पाल जाल मुकुटमणि नीराजित चरण चारु नखचंद चक्रवर्ती चक्रचूड़ामणि महिपाल माल मंडित अखंडित अवनि उदंड महाराजाधिराज राजराज राजित अवध अवधेन्द्र दशरथ जू चरण समीप महीप मंडल मौलिमणि मंडित चरण सज्जन सुख ढरन भक्तजन कंठाभरण उत्तमाचरण चारिवरण धर्मशिक्षा करन ज्ञान विज्ञानानंद संदोह भरन वेद वेदांतोच्चरण वैराग्यानुराग प्रचंड चंडकर किरण क्षरण निमिकुल कुमुद कलानिधि महाराजाधिराज नरेन्द्रशिरोमणि सीरध्वज करकमल कलित सानंदन अभिवंदन विलसै रावरो कृपा पारावार धार बार बार पाय अपार संसार जनित दुख संहार भये हे महोदार अवध भूभरतार ब्रह्मर्षि मुनि कुशिक कुमार संग परम सुकुमार मारहू के मदमार धर्म धराधार बलागार श्यामल गोराकार मनोहार रघुकुलसरदार रावरे कुमार नर नारि नृपिन उजारि ताड़का संहारि कौशिक मख करि रखवारि गौ

तम गेहिनि उधारि जनकपुर पगु धारि रुचिर रचना निहारि मम पन विचारि रंगभूमि सिधारि सकल महीपन को मद गारि दिगन्त यश वितान विस्तारि हियनहारि मोहिं शोचसिंधुते उबारितमारिकुल कीरति वगारि पङ्कज पाणि पसारि पुरारि पिनाक तिनुकाहीं सो तोरि दये मो हिय सुख न समात क्षण क्षण उछाह उदधि उमगात पुरजन परिजन व्रात अभिलाष यों जनात रघुकुल जलजात रवि दरश ह्वै जात संहित चतुरंगिनी सुभट विख्यात जनकपुर प्रविसात लगन नगिचात ताते मानस त्वरात पत्र यह जात कृपावसात तात लै बरात वेगहीं पगु धारिये हरिप्रबोधिन्यांनिशानन्ने ॥

सोरठा–यहि विधि पत्र लिखाय, चतुर चारि चारन दियो ।
तरल तुरंग चढ़ाय, पठयो अवध विदेह नृप ॥

छंद चौबोला ।

चारौ चारि चतुर चित चायन लै चीठी चटकीले ।
चले चटक चितवन के चोपी दशरथ भूप रँगीले ॥
बहुरि पुकारि कह्यो मिथिलापति कह्यो प्रणाम हमारो ।
कौशलनाथहि कह्यो बुझाय तुराय नाथ पगु धारो ॥
करि प्रणाम धावन सुख छावन कटि फेटो सत कीन्हे ।
चंचल चले चटक बाजी चढ़ि अवध पंथ गहि लीन्हे ॥
लग्यो काम जहँ जहँ मग शोधन तहँ तहँ किये पुकारा ।
करहु शीघ्रता सकल शिल्पिवर शासन जनक भुआरा ॥
लै अधिकारी कहे शिल्प सब सिद्धि सकल यह काजा ।
जब चाहैं तब पगु धारैं इत लै बरात महराजा ॥
यहि विधि देखत कहत चार ते जात तुरङ्ग धवाये ।
दिवस द्वैक महँ चले दिवस निशि कौशलपुर नियराये ॥
मिथिला ते करु कौशलपुर लगि भो यक नगर समाना ।

चंदिर सम अति सुंदर मंदिर थल थल भे निरमाना॥
युग योजन ते लखे अवधपुर महल अनेक उतंगा।
सेत शरद जलधर समान वर मनहुँ हिमाचल शृंङ्गा॥
करि प्रमाण धावन घोरन को अतिशय चपल धवाई।
सरयू सलिल पियायो वाजिन पहुंचि अवध अमराई॥
लाग बाग चहुँ ओर नगर के द्वादश योजन माहीं।
लिखन चित्र लायक विचित्र अति चितऊवन कहुँ नाहीं॥
कनक कोट अति मोट शैल सम गुरिज सुरिज सम सोहैं।
परिखा पूरण सलिल विशद अति देवहु दुर्गम जोहैं॥
त्रय त्रय योजन पर दरवाजे राजे तुंग अपारा।
कनक कँगूरे भ्राजत रूरे पूरे रतन कतारा॥
चढ़ीं तोप रिपु सैन लोप कर वोप आरसी कीनी।
सावधान ठाढे रक्षक सब तक्षक तेजहि छीनी॥
मंदिर विविध बने देवन के पुर बाहर प्रति बागे।
सड़क स्वच्छ दोउ दिशन वृक्ष युत गच्छत घाम न लागे॥
फबैं फूल फल सकल रितुन के शाखा भूपर लोरैं।
वन विचित्र नंदनहुँ चित्ररथ निज महिमा मद मोरैं॥
केकी कीर कपोत कोकिलन कलरव चहुँकित छायो।
सीर समीर धीर अति सुरभित वहत सदा मन भायो॥
पहुँचि अवध उपवन विदेह के धावन सरयु नहाये।
दे चंदन करिके रवि वंदन पहिरे वसन सोहाये॥
करिके कछु भोजन मन मोजन करि वाजिन श्रम दूरी।
साजु साजि पुनि चढ़े तुरंगन चले मोद भरि भूरी॥
कनकदंड बहु रतन खचित कर लघु लघु लगे पताके।
[illegible] लिख्यो तिन महँ विदेह कर सूचक पावन ताके॥

राजमहल की डगर बतायो पूछत पथिकन काहीं।
निमिकुल नाथ निशान निहारत पथिक खड़े ह्वै जाहीं॥
कुशल पूछते बहु विदेह की कहैं सहित उतसाहू।
सूधी राजभवन कहँ लागो चले पंथ यह जाहू॥
यहि विधि पूछत जनक चार तहँ गये नगर दरवाजे।
जनक नरेश निशान निहारत द्वारपाल छवि छाजे॥
किये न चारिहु चारन बारन कुशल उचारन करिकै।
जानि जनक के जान दिये तिन बड़े जान मुद भरिकै॥
अवध नगर कीन्हे प्रवेश ते मिथिलापति के धावन।
जात त्वरात चले यद्यपि ते निरखत नगर सोहावन॥

दोहा—जा दिन दूत विदेह के, कीन्हे नगर प्रवेश।
दशरथ कौशिल्यालखे, ता दिन सगुन अशेश॥

छंद चौबोला।

आकसमात प्रसन्न भयो मन उर उपज्यो उतसाहू।
जानि परत अस कहन चहत कोउ होत राम कर ब्याहू॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा औरहु दशरथ रानी।
वाम अंग फरकत निरखैं निज मिटिगै मनहिं गलानी॥
दक्षिण भृकुटि नैन भुज फरकत दशरथ के तेहि काला।
तैसहि भरत शत्रुसूदन के सूचत सुख अन हाला॥
नीलकंठ पक्षी गृह आयो लगीं विमल दश आशा।
बासर परम सोहावन लागत कोमल भानु प्रकाशा॥
लाग्यो वहन मंद मारुत तहँ स्रवै सुरभि पय धारा।
नभ ते भई कुसुम की बरषा बाजन लगे नगारा॥
खसें फूल देवन प्रतिमा ते क्षेमकरी यहरानी।
बोलि उठे विहंग बहु रंगन तति कुरंग दरशानी॥

लखि शुभ सूचन सगुन कहहिं सब जुरि जुरि जनन समा
कौन अनूपम आनँद आवत अवध नगर महँ आजू॥
राम विरह व्याकुल कौशिल्या बोलि सुमित्रहि कहेऊ।
जबते मुनि लै गे लालन को तबते सुधि नहिं लहेऊ॥
लषण मातु बोली प्रबोधि तेहि आजु खबरि कछु ऐहै।
सगुन होत सिगरे सुखदायक यह निरफल नहिं जैहै॥
बाकी रह्यो याम भरि बासर तब अजनन्दन भूपा।
बैठ्यो आय सभा सिंहासन भूषण बसन अनूपा॥
पुरजन परिजन सज्जन सिगरे बैठ राज दरबारे।
सुहृद सखा सरदार सचिव सब जगती पतिहि जोहारे॥
तहँ सुयज्ञ जाबालि कश्यपहु मार्कंडेय पुराने।
बामदेव अरु मुनि वशिष्ठ तहँ आये सभा सुजाने॥
उठि भूपति प्रणाम तिन कीन्हे वर आसन बैठाये।
जोरि पाणि पंकज विनीत ह्वै सादर वचन सुनाये॥
आज सगुन बहु लखे नाथ हम जानि परै फल नाहीं।
चढ़े स्वप्न महँ सेत शैल पर देखे इन्दु तहांहीं॥
कछुक काल लगि मुनि बिचारि तहँ भाष्यो अवध भुवा
लै चीठी अतिशय मन मीठी खबरि कही कोउ हाले॥
यहि विधि करत वशिष्ठ भूप के सभा सुखित संवादा।
आये चारि चारु मिथिला ते राजद्वार मरयादा॥
दशरथ द्वारपाल देखे तिन छरी विदेह निशानी।
सादर कुशल पूछि मिथिला की बैठाये सन्मानी॥
तुरत जाय अवधेश सभा महँ ऐसे वचन सुनाये।
धावन चारि पत्र लै आये श्रीमिथिलेश पठाये॥
सुनि मिथिलेश पत्र की आवनि लहि नृप मोद महाई।

कह्यो द्वारपालहि विदेह के ल्यावहु दूत लेवाई ॥
द्वारपाल धाये तुरंत तहँ कहे जाय तिनपाहीं।
भूप शिरोमणि तुमहि बोलायो चलिय सभा सुख माहीं ॥
ते विदेह के धावन पावन पाये परम अनन्दा।
निरखि अवधपुर राजभवन सब करत विचार सुछन्दा ॥
धौं अलकावति धौंअमरावति ब्रह्म सदन धौं आये।
करिकै कृपा विकुंठ धनी यह सरिस विकुंठ देखाये ॥
धन्य अवधपुर धनि सरयू सरि धनि दशरथ महराजा।
धन्य धन्य रघुकुल जगपावन जहँ प्रगटे रघुराजा ॥

दोहा—अस विचारि ते चारि वर,चार चतुर चित लाय।
चढे चन्द्रशाला चटक, चहुँकित चितवत चाय ॥

छन्द चौबोला।

सभा द्वार पहुँचे जब धावन दशरथ सभा निहारे।
सिंहासनासीन कोशलपति सुनासीर मद गारे ॥
लोकपाल सम भूमिपाल सब बैठे उभै कतारे।
ढालन सों ढालन करि चालन करवालन कर धारे ॥
बैठे रघुवंशी रिपु ध्वंशी जगत प्रशंशी प्यारे।
कलँगी सो कलँगी बिलँगी नहिं सान सूरता वारे ॥
अचल अचल इव मौन बैन भट प्रभु मुख रुखहि निहारें।
इष्टदेव सम रघुकुल नायक अपने मनहिं विचारें ॥
छाजत छत्र क्षपाकर शिर पर प्रगटत परम प्रकाशा।
चारि चमर चालत परिचारक खड़े चारिहूं आशा ॥
आतपत्र दुहुँ ओर लसत युग रवि शशि वदन बनाये।
राम पिता पद सेवन हित मनु दिनकर निशिकर आये ॥
वंदी वदत खडे विरदावलि नचत अप्सरा भावें ॥

गान करहिं गंधर्व गर्व भरि बाजन सर्व बजावैं ॥
कनक छरी बहु रतन भरी कर धरे खरे प्रतिहारा ।
निरखत नयन नरेश वदन बर कारज करत इशारा ॥
बैठ बशिष्ठ कनक सिंहासन भूप दाहिने ओरा ।
मार्कंडेय आदि मुनिनायक राजत तेज अथोरा ॥
सनमुख खड़ो सुमन्त सचिव बर नृप शासन अभिल
भ्रकुटि विलास बिचारि काज सब करत राज रुख राव
यहि विधि मिथिलाधिप के धावन पावन भूप निहारे ।
धर्मधुरंधर अवध अधीशै धरामरेन्द्र विचारे ॥
कनक मुद्र कछु रतन लिये कर यथा राज मरयादा ।
चारो चतुर चार चलि सनमुख भरे भूरि अहलादा ॥
पुलकित तन करिकै प्रणाम सब दंड सरिस महि माहीं
दीन्हे नजारि निछावरि कीन्हे कोशल नायक काहीं ॥
जोरि पाणि पंकज पुनि बोले अतिशय मंजुल बानी ।
महाराज मिथिलाधिराज इत पठये हमहिं विज्ञानी ॥
कह्यो रावरे को उराव भरि मिथिला राव जोहारा ।
बहुरि अनंदन वंदन भाष्यो भानु वंश भरतारा ॥
कह्यो कुशल पूछन को बहु विधि अपनी कुशल सुनावन
दीन्ह्यो बहुरि विचित्र पत्र यह रघुकुल मोद बढ़ावन ॥
अस कहि चतुर चार लै खत कर धर्यो चरण के आगे।
ठाढ़े रहे मौन चारो चर अवलोकन अनुरागे ॥
धावन जानि विदेह भूप के राज राज रघुराजा ।
मोद महोदधि मगन महीपति भये समेत समाजा ॥
लै विदेह को छिप्र पत्र कर दशरथ शीश लगाये ।
मानहुँ मिले विदेह आय इत अस आनँद उर छाये ॥

कह्यो राजमणि पुनि दूतन सों संयुत सकल समाजा।
अहैं कुशल कुल सहित सहानुज श्रीमिथिला महराजा॥
लही खबरि बीते बहु बासर नहिं पत्रिका पठाई।
प्राणहुँ ते प्रिय मित्र हमारे कौनि चूक चित लाई॥
सत्य कहहु धावन विदेह के सब विधि कुशल विदेहू।
भक्ति ज्ञान वैराग्य योग विद राखत सरस सनेहू॥
दूत गहे पुनि पद वशिष्ठ के बोले वचन सुखारे।
कियो दंड सम प्रणत आपको स्वामी जनक हमारे॥
दियो अशीश मुनीश मोद भरि पूछी जनक भलाई।
दूत कह्यो मुनि कृपा रावरी सब विधि ते कुशलाई॥

दोहा-अजनंदन पूछो बहुरि, ये हो दूत सुजान।
तुम जानौ कछु खबरि मुनि, कौशिक केहि अस्थान॥

चौपाई।

दूत जोरि कर कियो बखाना। यह कस पूछहु भूप प्रधाना॥
यह वृत्तांत विदित संसारा। देखिय रवि कहँ दीप उज्यारा॥
जो ताडुका विश्व उत्पातिनि। मानहुँ महा काल की नातिनि॥
पुनि सुबाहु मारीच प्रचंडा। दशकंधर के भट बरिबंडा॥
विध्वन्सक कौशिक मख केरे। तिनको जान हाल सब हेरे॥
कहत मोहिं लागत अति लाजा। हासी कर पूछ्यो महराजा॥
तुमहिं विदित कसनाथ न होई। नहिं जानत अस जग नहिं कोई॥
जबते रावर युगल कुमारा। लेगे मांगि मुनीश उदारा॥
तबते जे चरित्र तिन कीन्हे। ते जाहिर जग का कहि दीन्हे॥
दूतन वचन सुनत अवधेशा। कह्यो आनि आनंद अदेशा॥
जबते मुनिलै गये कुमारे। मम राखन हित प्राण पियारे॥
तबते दूत खबरि नहिं पाई। केहि विधिविपिनबसे दोउ भाई॥

दोहा–सुनत दूत भूपति वचन, कहे वचन मुसक्याय ।
खत बांचे मिथिलेश का, सिगरो परी जनाय ॥

चौपाई ।

दूत वचन सुनि अवध भुआला । लग्यो पत्र बाँचन तेहि काला ।
जब बाँच्यो मिथिलेश जोहारा । उभै पाणि पंकज शिर धारा ।
सकल पत्रिका जब नृप बाँची । जानी राम लषण सुधि साँची ।
हरष बिवश कछु बोलि न आयो । तन पुलकावलि दृगजल छायो ।
षट मीठी चीठी महँ देखी । मान्यो ईश्वर कृपा विशेखी ।
प्रथम भयो ताडुका सँहारा । मुनि मख राखि निशाचर मारा ।
तीजे गौतम नारि उधारा । चौथे जनक नगर पगु धारा ।
पचयों शंभु चाप कर भंगा । सीता व्याह छठौं रसरंगा ।
ये खत महँ षट लिखी मिठाई । बाँचि भूप रहिगे सुख छाई ।
करतबिचार बाल वय थोरी । केहि विधि किय ऐसी बरजोरी ।
केहि बिधि लाल ताडुका मारे । डरे न ताके वदन वगारे ।
द्वादश वर्ष बाल पै साँचा । किमि मारे सुबाहु मारीचा ॥

दोहा–जानि परै नहिं कौन बिधि, तारी शिशु मुनि नारि ।
विश्वामित्र प्रभाव यह, और न परै विचारि ॥

सवैया ।

छोहरा द्वादश वर्ष को मेरो सुकोमल कौलहुते कर दोऊ ।
तापर कोई रह्यो घर को नहिं एक रह्यो लषणै शिशु सोऊ ॥
शंभु कोदंड प्रचंड बड़ो न उठाय सक्यो रँगभूमि में कोऊ ।
श्रीरघुराज कियो किमि भंग जे दूतहू आये कहैं सति वोऊ ॥

दोहा–बालक को न बड़ापनो, विश्वामित्र प्रभाव ।
मेरे सुत के करन सों, कियो सकल मुनिराव ॥
राम विवाह विदेह कुल, भयो बड़ो उत्साह ।

ताते कहौं वशिष्ठ सों, चलहु आसु मुनिनाह ॥

चौपाई।

अस गुनि लै खत उठ्यो महीशा। धर्‍यो वशिष्ठ चरण महँ शीशा॥
विधि सुत पाणि पत्रिका दीन्ही। जोरि कंज कर विनती कीन्ही॥
यह सब नाथ तुम्हारी दाया। रंगभूमि रघुपति यश पाया॥
बाँचिय खत विदेह कर आयो। तुव प्रताप मम शिशु यशपायो॥
लै खत पुलकि मुनीशहु बांचे। लहि सुख सिंधु राम रति राँचे॥
प्रेम मगन कछु बोलि न आया। जस तस कै बोले मुनिराया॥
धन्य धरा तुम दशरथ राऊ। जासु राम सुत प्रगट प्रभाऊ॥
भये न हैं नहिं होवन हारे। तुम सम भूप भानु कुलवारे॥
अब दूसर नहिं करहु विचारा। तिरहुत चलहु बजाय नगारा॥
राज समाज समाज दराजा। लै बरात गमनहुं महराजा॥
कालिह सुदिन सुंदर शुभ योगा। सजन बरातहि देहु नियोगा॥
दशरथ कह्यो न मैं कछु जानों। आप रजाय सिद्ध सब मानों॥

दोहा–सिगरे सचिवन बोलि अब, दीजे नाथ निदेश।
उचित सकल उपदेश करि, पूजहु गौरि गणेश॥

अस कहि गुरु पद पंकज वंदी। बैठ्यो सिंहासनहिं अनंदी॥
महा मोद मंडित महराजा। निरखि भई सब सुखित समाजा॥
पत्र विदेह सुनन अभिलाषे। सचिव सुमंत जोरि कर भाषे॥
दोउ मूरति मंगल महराजा। उत मिथिला इत अवध दराजा॥
मंगल मूल मोद की खानी। परै विदेह पत्र पहिचानी॥
सुनन योग जो होइ हमारे। समाचार सुनि होइँ सुखारे॥
सुनत सचिव विनती नरनाथा। दियो विदेह पत्र तेहि हाथा॥
कह्यो सचिव दल बाँचि सुनावहु। सकल समाज महा सुख छावहु॥
तब सुमंत दल बाँचन लाग्यो। सकल समाज सुनन अनुराग्यो॥

राम लषण की सुनि प्रभुताई। बुधि विक्रम वीरता बड़ाई॥
सकल सभासद भये सुखारे। नयनन आनँद आंसु पनारे॥
भये रोमांचित सवन शरीरा। कहहिं जयति लक्ष्मण रघुवीरा॥

दोहा–फैलत फैलत बात सो, फैली पुर परयंत।
यक एकन पूछन लगे, नर नारी बिहसंत॥

चौपाई।

राम विवाह सुने तुम काना। पठयो पत्र विदेह सुजाना॥
सो कह हमहुँ सुनी यहि भाँती। ईश करै द्रुत होहिं बराती॥
यहि विधि यक एकन लगिकाना। पूछहि प्रजा न मोद समाना॥
पूछत पूछत बगरी बाता। राम विवाह उछाह अघाता॥
खेलत रहे सरयु के तीरा। युगल बंधु लै बालक भीरा॥
भरत शत्रुहन सखन पठावैं। प्रथम जे आवैं ते जित जावैं॥
एक सखा तब पत्र जनायो। खबरि सहित पुर ते लै आयो॥
सुनत खबरि धाये दोउ भाई। राज समाज पिता ढिग आई॥
करि वंदन अतिशय अतुराने। लपटत अक्षर वचन बखाने॥
पिता विदेह पत्र किमि आयो। सुनन हेत हमरो चित चायो॥
अबहीं देहु मँगाय सुनाई। कौन देश हमरे दोउ भाई॥
कहां विदेह दूत जे आये। तिनसे मिलब हमहुँ सुख छाये॥

दोहा–सुनत कुमारन के वचन, दीन्ह्यो पत्र मँगाय।
कह्यो जाय रनिवास में, दीजै लाल सुनाय॥

चौपाई।

पावत पत्र त्वरा उठि आई। बांचन लगे खोलि दोउ भाई॥
बांचि सकल मिथिलापति पाती। पुलके युगल बंधु सुखमाती॥
पिता पाणि गहि बोले बाता। तात चलब हठि हमहुँ बराता॥
जनक जनकपुर कब पग [illegible]। राम लपण लखि कब सुखभरिहौ॥

नृप हँसि कह चलिहौ तुम लाला । तीन बंधु तुमहीं सहिबाला ॥
कह वशिष्ठ उत गये जनैहैं । सहिबाला धौं दूलह ह्वै हैं ॥
मुनिहि नौमि नृप दूत बोलाई । बोले बैन नैन जल छाई ॥
भैया सति सति देहु बताई । निज नैनन देखे दोउ भाई ॥
यदपि लिखी मिथिलापति पाती । सो लखि मोरि जुड़ानी छाती ॥
कियो जनक भूपति व्यवहारा । निज कुमार सम गुन्यो कुमारा ॥
पै नाहिं आवत मन विश्वासू । जस जग बालक सुयश प्रकासू ॥
होव विवाह सनातन धर्मा । अचरज लागत सुनि शिशु कर्मा ॥
दोहा–ताते मिथिलानाथ के, धावन परम सुजान ।
सत्य सत्य वृत्तांत सब, मोसों करहु बखान ॥

कवित्त ।

डरत हुतो जो भौन प्रेत परछाहीं जानि,
ताड़का भयंकरी सो कौनविधि मारयो है ।
जात जो सहमि सुनि राक्षस कहानो कान,
मुनि मख राखि सो निशाचर सँहारयो है ॥
फटिक फरश खेले कबहूँ न नारी कड़ी,
गौतम की गेहनी सो शिला ते निकारयो है ।
भनै रघुराज सांची भाषौ तिरहूत दूत,
भूतपति धनु मेरो पूत तोरि डारयो है ॥
पूरुब कहो जू कैसे जोहि जान्यो मिथिलेश,
कवि धौं जनायो है कवित्त पढ़ि दोहरा ।
कैसे रंगभूमि जाय नेक ना डेराय मन,
मही के महीपन को मोरयो कैसे मोहरा ॥
भनै रघुराज दूत लागत अचर्ज मोहिं,
तोरिबो पिनाकी को पिनाक सुनै शोहरा ।

जनक उछाह्यो व्याह छोटी छमा छोहरी को,
कौशिक गयें जो लै हमारो छोटो छोहरा ॥
दोहा–अवध भूप के वचन सुनि, अति विस्मय उर आनि।
जोरि कंज कर दूत दोउ, बोले मंजुल बानि ॥

कवित्त ।

महाराज सुनहु महीप मणिरावरेकेडावरेमेंजैानएक साँवरोकुमारहै।
तोरयोशंभुधनुषसरोपरंगभूमिमध्यमोरयोमहिपालनकोमदवेशुमारो
रघुराजसकलसमाजकेनिहारतहीमिथिलाधिराजैकियोपनतेउवारहै।
पूषनप्रतापतीनोंभुवनप्रकाशकीन्ह्योकैसेकरैंएकमुखसुयशउचारहै॥
मारे ताडुकाकोजाको देवहूडेरातेहुतेगयोपंथहीमेंपरितासुभरमेंटाहै।
राखिक्रतुकौशिककीसाखिजगमारेदुष्टलावनकोकरैजैसेबाजझरपेटाहै।
रघुराजराजमणितारयोनारिगौतमकीरंगभूमिभूपनखलनखरखेटा है।
दीपकलैपाणिमेंपतंगकोपरेखैकौनविश्वमेंविदितआपहीकोबरबेटाहै॥
दोहा–तुमहिं लग्यो अचरज सुनत, सो सतिअवध भुवार ।
दीप करत उजियार घर, नीचे रहत अँध्यार ॥
धन्य धन्य तुम अवधपति, को नृप आप समान ।
जिनके पूत सपूत दोउ, राम लषण बलवान ॥

चौपाई ।

चलहु नाथ अब सहित बराता । देखहु पूत सपूत विख्याता ।
मंत्री बंधु सुभट सरदारा । चले संग सब सैन्य अपारा ।
सुनिदूतन के वचन नरेशा । कह्यो वचन करि प्रेम विशेशा ।
तुम नीके निज नैन निहारे । तबते कुशल कुमार हमारे ।
जबते गये लषण रघुराई । तबते आज साँचि सुधि पाई ॥
…प कहह दोउमुनिमोहिअनुकूला । सोइ मोकहँ मुद मंगल मूला ॥
… कुशल दोउ भाई । तिन्हें देखि अब कोउ न देखाई ॥
…तो बोलायो । सो मुनिभांति आनँद उरआयो ॥

हैं विदेह के सकल कुमारा। उनहीं को सब विभौ हमारा॥
नहिं कौशल मिथिला कर भेदू। जस विदेह वरणत विधि वेदू॥
आज करौ इत रैन निवासा। मैं चलिहौं रवि होत प्रकासा॥
पुनि अवधेशसुमंत बोलाये। हरे कान महँ बैन सुनाये॥

दोहा–लाख लाख के आभरण, वसन तुरंग मँगाय।
चारिहु दूतन देहु द्रुत, पठवहु नाग चढ़ाय॥

चौपाई।

सुनि सुमंत शासन नृप केरा। ल्याय विभूषण वसन घनेरा॥
धरचो चारिहू चारन आगे। कहे भूपमणि अति अनुरागे॥
दूत देत सकुचत मन मोरा। जो कछु देहुँ लगै सब थोरा॥
तुम पुत्रन की खबरि जनाई। हम जनु गये फेरि सुत पाई॥
आज भयो अस मोद अपारा। बहुरि जन्म जनु लहे कुमारा॥
उऋण जन्म भरि हैं हम नाहीं। और कहा कहिये तुम पाहीं॥
पान फूल सम यह कछु जोई। लीजे दूत सनेह समोई॥
देखि दूत पट भूषण भूरी। वाणी कही धर्मरस पूरी॥
महाराज अब माफ करीजे। यही इनाम हमारहि अब दीजे॥
धर्म धुरंधर ध्रुव अवधेशा। हमरे शिर पर आप निदेशा॥
रंगभूमि महँ जबते नाथा। तोरचो शंभु धनुष रघुनाथा॥
तबते गई विवाहि कुमारी। यह लीन्हो हम सत्य विचारी॥

दोहा–जस हमार मिथिलेश प्रभु, तैसहि प्रभु अवधेश।
पै कन्या धन लेत महँ, हमको परत भदेश॥

चौपाई।

अस कहि दूत मूंदि निज काना। दिय बहोरि पट भूषण नाना॥
फेरि सुमंतहि वचन सुनाये। का बाकी जो हम नहिं पाये॥
समधी राउ राम जामाता। लहे लाभ अस कोन अघाता॥

जबते लखे लषण अरु रामा। तबते लगत न कोउ अभिराम
पुनि देखे कोशलपति आई। सचिव गये सब भांति अघाई
अब पूरहु इतनी अभिलाषन। सम समधी निरखहिं यकआसन
मिथिला नगर उछाह अघाता। कब देखहिं अवधेश बराता
सुनि भुवालमणि दूतन बानी। आनँद विवश भरे दृग पानी
कह्यो सुमंतहि दशरथ भूपा। दूतन डेरा देहु अनूपा।
सकल भाँति कीजे सतकारा। लहैं सकल सुखसों भिनसारा।
प्रभु निदेश अस सुनत सुमंता। दूतन चल्यो लिवाय तुरंता।
अति अनुपम अवास दिय वासा। जहां भयो सब भाँति सुपासा॥

दोहा–करि भूपति दूतन विदा, कियो सभा बरखास।
भरत शत्रुहन संग लै, गये आपु रनिवास॥

चौपाई।

कौशल्या के सदन सिधारे। तहँ सब रानिन भूप हँकारे॥
बै आसन आसीन भुवाला। राम मातु कहँ बोलि उताला॥
बोले वचन अमी रस बोरे। नहिं समात आनँद उर मोरे॥
धावन चारि विदेह पठाये। राम खबरि को खत लै आये॥
आई यह आनँद की पाती। सुनिकै सकल जुड़ावहु छाती॥
अस कहि भरतहि कह्यो सुनावहु। महा मोद मातन मन छावहु॥
भरत बाँचि पत्रिका सुनाई। सो सुख यक मुख किमि कहिजाई॥
राम विजय युत राम बिवाहू। सुनि रनिवास उछाह अथाहू॥
पुनि तिय लागीं मंगल गावन। एक एक सों कछु न बतावन॥
भरयो भवन सुख जब न समाना। उमड़िचल्योजनुमिसिकलगाना॥
राम मातु उत तुरत सिधाई। रंगनाथ के मंदिर आई॥
करि पूजन बहु विधि सन्मानी। पुरवहु सब [illegible] सारँग पानी॥

दो०–उत सुमित्रा केकयी, प्रेम मगन मन [illegible]

ब्याह साज साजन लगीं, बोल्यो कुलगुरु काहिं ॥

चौपाई।

द्रुत वशिष्ठ रनिवास सिधाये। राजा रानिन लखि सुख पाये ॥
नृप रानिन युत कियो प्रनामा। आशिष दीन मुनीश ललामा ॥
रंगनाथ को पूजन करिकै। कौशिल्या आई मुद भरिकै ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा। गुरु सों बोलीं वचन विचित्रा ॥
हमहिं भयो सुख कृपा तुम्हारे। हिय न होत परतीत हमारे ॥
द्वादश वर्ष वैस मम वारे। कौन भाँति ताड़का सँहारे ॥
केहि विधि भे मुनि मखरखवारे। डरे न रजनीचरन निहारे ॥
कमलहु ते कोमल कर जाको। हर धनुभंगसजत किमि ताको ॥
लाल करी मुनि वड़ी ढिठाई। भै विन राज समाज मँझाई ॥
तव बोले मन विहँसि मुनीशा। कृपा सकल जानहु जगदीशा ॥
रघुकुल के बाँकुरे कुमारे। कालहुके रण जीतनहारे ॥
रानी कछु न करहु संदेहू। अव विवाह कारज मन देहू ॥

दोहा--कही कौशिला केकई, गुरु जस देहु वताय।
ब्याहचार तस वेद विधि, करैं विशेप वनाय ॥

चौपाई।

तव गुरु कह्यो सुनहु महरानी। कुलदेवन पूजहु सुखदानी ॥
इतै गीत मङ्गल कर चारा। होई सहित निधान अपारा ॥
ब्याहचार औरो सब जेते। मिथिला महँ ह्वैहैं अब तेते ॥
तव दशरथ गुरु निकट सिधारे। वंदि चरण अस वचन उचारे ॥
नाथ सभा महँ सचिव बोलाई। देहु त्वराय रजाय सुनाई ॥
काल्हि पयान जनकपुर होई। सजै वरात चलै सवकोई ॥
सुनि नृप शासन ब्रह्म कुमारा। गयो राज कारज आगारा ॥
वोल्यो सचिव सुमन्त प्रधाना। आये मंत्रीगण मतिमाना ॥

दियो सुनाय नरेश निदेशा। कालिह कूच है तिरहुत देश
राम विवाह बरात सोहावन। साजहु सकल साज छबि छा
मंत्री सुभट बंधु सरदारा। रघुकुल के सब राज कुमा
साज साजि मातंग तुरंगा। शकट पालकी तखत सतां
दोहा–साज साजि आवें सबै, सजें विख्यात बरात।
गोधूली बेला विमल, चलिहै नृप अवदात॥
जे जे जेहि अधिकार में सावधान सब होइ।
करी जो आलस काज में, दंडनीय है सोइ॥
अस निदेश नरनाथ को सचिवन सकल सुनाय।
भरि हुलास निज वासको गवन कियो मुनिराय॥
छाय गयो सिगरे नगर, राम विवाह उछाह॥
घर घर मंगल गान तिय, लगीं करन भरि चाह॥

छंद चौबोला।

कौशिल्या केकई सुमित्रा औरहु दशरथ रानी।
पूजन लागीं रंगनाथ को ईश गणेश भवानी॥
इष्टदेव कुलदेव देव बन ग्रामदेव कहँ पूजें।
कुशल लखहिं दुलहिन दूलह कहँ मन अभिलाषा पूजें
कारज करहिं नारि सब निज निज गावहिं मंगल गीता॥
राम जानकी व्याह गान सुर दश दिशि करहिं पुनीता।
व्यंजन विविध प्रकारन के रचि जाको जैसो योगू।
ते देवन कहँ देहि तौन विधि पढ़ि पढि मंत्रन भोगू॥
फूली फिरत राम की माता नहिं सुख उरहि समाता।
द्वार द्वार देवन को विनवति कहि कहि मंजुल बाता॥
गुरुजन को अभिवंदन करती सहज स्वभाउ सयानी।
दृग भरि देखन दुलहिन दूलह तुम्हरी पुण्य महानी॥

महल महल मचि रह्यो अवधपुर चहल पहल तेहि रजनी।
कोउ गावै कोउ आवै जावै धामै धामै सजनी॥
धूम धाम पुर धाम धाम महँ काल्हि बरात पयाना।
आपु सजहिं औरेन कहँ साजहिं पट भूषण विधि नाना॥
दीपावली देव आलै महँ भौन बजारन माहीं।
करत बरात तयारी भारी नींद नयन महँ नाहीं॥
करहिं बिनयपुरजन देवन सों सपदि होइ भिनसारा।
चले बरात राम ब्याहन हित आसु बजाय नगारा॥
परी खरभरी ताहि शर्वरी करैं हर्वरी लोगू।
कहैं हर्परी मेटि कर्बरी कब प्रभु करी सँयोगू॥
राम बिवाह प्रमोद पौर जन देहिं द्विजातिन दाना।
करहिं जनकपुर जान तयारी नारि करहिं कल गाना॥
बाजि रहे घर घर बहु बाजन धरे कलश प्रति द्वारा।
नौबत झरत राजमंदिर महँ नादहि निकर नगारा॥
गायक गण गावहिं गुण गर्वित मंजुल राग सहाना।
अति उत्कर्ष हर्ष वश लेते तीन ग्राम कीताना॥
करहिं नर्तकी नर्तक नर्तन सर्तन करि विधि नाना।
विरदावली वदत बंदीजन करि रघुबंश बखाना॥
कहुँ रथ चक्र होत घर घर रव नदहिं मत्त मातंगा।
कहुँ हय हेखन शोर मच्यो अति कोउ नहिं हीन उमंगा॥
आये जे विदेह के धावन पृथक पृथक तिन काहीं।
सन्मानी रानी मुद मानी लिये कछुक तिन नाहीं॥
पृथक पृथक पुनि अवध प्रजा सब दूतन को सत्कारें।
लेत कोहू की कछुक वस्तु नहिं अपनी धर्म विचारें॥
बढ़ी उमंग अयोध्या बासिन क्षण क्षण शंभु मनामें।
सोदिन वेगि देखाउ कृपा करि लखें लषण अरु रामै॥

कहि आनन मोदहिं निज नैननि होत सभा निशि

दोहा—ब्रह्म मुहूरत जानि कै, उठ्यो सो कोशल पाल।
प्रात कृत्य निरवाहि कै करि मज्जन तत्काल॥
अर्घ प्रदानादिक कियो, रंगनाथ पद बंदि।
पहिरि विभूषण बसन वर, बैठ्यो सभा अनंदि॥

छंद चौबोला।

मंत्रिन प्रजा महाजन सुभटन सरदारन कुलवारे।
पौर जान पद सभ्य सुजानन कोशलपाल हँकारे॥
आये सकल सभा मंदिर महँ दशरथ राज जोहारे।
सहित समाजन यथा योग्य तिन प्रतीहार बैठारे॥
राम सुमन्त को पठै तुरन्तहि गुरु वशिष्ठ बोलवायो।
राम काज को काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो
पद अरविंदन वंदन करिकै कनकासन बैठायो।
आज जनकपुर चलन चाय चित चारु निदेश सुनायो
कनक रजत के रतन खचित युत हौदन त्यों अंबारी।
झूलैं जरतारिन की झूलैं दश हजार गज भारी॥

युगल दन्त के चारि दंत के भूषण कनक समारे।
चलें दुरद विहद कद के मिथिलै संग हमारे ॥
पंचलक्ष अति स्वच्छ साज के गच्छे दक्ष सवारा।
मन्मथ कृत मनु तीन लक्ष रथ पथ पर रहहिं तयारा ॥
अहलादे दश लक्ष पयादे जादे नख शिख सोहे।
चलहिं विख्यात बरात संग महँ जिन लजात सुर जोहे ॥
वृषभ शकट अरु ऊँटजूट बहु खच्चर खेचर खासे।
रतन जाल की विविध पालकी तिमि नालकी कलासे ॥
पुहुप विमान समान विमानहु महा यान मनहारी।
तामजाम अरु तखत रमानहुँ चलै समान तमारी ॥
चलहिं धनिक सब अवध नगर के अर्ब खर्ब धन लीने।
खाली रतन विभूषण संयुत बड़ लघु नवल नगीने ॥
साजि साजि सब साजु समाजन चलहिं अवधपुर वासी।
औरहु जाति ज्ञाति सनबंधी लेहु बोलि छवि रासी ॥
रघुकुल के सब राजकुमारन-सुकुमारन बोलवाई।
लेहु बरात संग करि सादर नेउतो भवन पठाई ॥
देवलोक ते गंधर्वन को अरु अपसरन बोलाई।
मही मंगला मुखिन सुखिन को दीजे प्रथम चलाई ॥
जे प्रिय गायक लायक सब विधि नाटक करम सुजाना।
नर्तक अरु नृत्यकी अनेकन करनाटकी महाना ॥
औरहु जगके विविध गुणीजन संगहि करहिं पयाना।
पंडित शास्त्र अखंडित मंडित संसदि सपदि चलाना ॥
कवि कोविद बन्दीजन सज्जन सुहृद सखा अति प्यारे।
परिजन पुरजन गुरु जन लघुजन चलैं स्वरूप सँवारे ॥
देहु सुमन्त वसन भूषण वर यथा योग्य सबकाहीं।

कौनहु वस्तु हीन नहिं कोई रहै बरात सदाहीं ॥
शिविका अश्व नाग रथ वाहन वाहन हीन न दीजै।
चलहि बजार अनेक संगमहँ कौनहु वस्तु न छीजै॥
शिविर अनेकन भाँति रंग वहु कनक रजत जरतारी।
तिमि नेपथ्य वितान विशद वहुरवि शशि सम दुति भारी॥
राजासन अरु विविध सुखासन गुल गुल गिलिम गलीचे।
फटिक फरश इव वृहद फरश वहु सुरभित सलिलन सींचे॥
सभा साज सब सुखद सजावहु करन हेत व्यवहारा।
भोजन भाजन चलैं विविध सब होन हेत ज्यौनारा॥
चारिहु कुँवरन के विवाहकी सामग्री लै चलिये।
कौन समय केहि भाँति ईश गति जानि न जाय अतुलिये॥
जवते चलै बरात अवध ते आवत अवध प्रयंता।
तबते विमुख जाय नहिं कोऊ संत असंत अनंता॥

दोहा—एक यान गुरु हेत वर, एक हमारे हेत।
अति उत्तम सब साज युत, आनहु द्वार निकेत॥
मार्कंडेय मुनीश वर कल्पांतायुप सोय।
देहु तिन्है स्यंदन विशद, मारग श्रम नहिं होय॥
कात्यायन जाबालि मुनि, वामदेव मतिमान।
रथ दीजे सब कहँ वृहद, आगे करहिं पयान॥
औरहु ऋषि मुनि द्विजन गण, आगे करहिं पयान।
चलहिं महाजन मध्य में पुनि मम गुरु को यान॥
वीच वीच सेना सकल, निज निज वृन्द बनाय।
चलहिं सकल सत पंथ गुनि, पंथ पयान सोहाय॥

छन्द चौबोला।

सबके आगे सुतर सवार अपार शिंगार बनाये।

धरे जमूरक तिन पीठिन पर सहित निसान सोहाये ॥
फेरि चले वाजी मंडल करि सजे सवार प्रवीरा।
शत्रुशाल तिनके मधि सोहै चढ़ि वाजी रणधीरा ॥
गज मंडल पुनि चलै अखंडल बँधे हौद अंबारी।
शत्रुंजै गज में सवार ह्वै भरत चलैं शुभकारी ॥
पुनि पैदर की भीर चलै सब बृन्दन बृन्द बनाई।
वरण वरण के यूथ यूथ सब सायुध सजे सोहाई ॥
जौन वरण को यूथ वरण सोइ तहँ तहँ रहै निशाना।
गजमंडल पीछे रथ मंडल तहँ तुम होहु प्रधाना ॥
तिनके पीछे पुरवासी सब सहित महाजन नाना।
सभ्य सभासद औरहु जन सब चलहिं बजार महाना ॥
गुरु वशिष्ठ अरु हम तिनके अनु लै परिचर प्रतिहारा।
नहिं गति मंद न गति द्रुत चलिहैं यहि विधि चलन विचारा
चलहि निषाद राज सैना के पीछे लै निज सैना।
शोधन करत सकल मनुजन को कोउ थकि कहौं रहैना ॥
ऊंट जूट वड़वा वृषभादिक शकटादिक भरि भारा।
चलहिं निषाद राज के सँग में बालक वृद्धहु दारा ॥
यहि विधि चलै वरात जनकपुर बीचहि चारि मुकामा।
यतनकरहु यहि विधि सुमन्त सब चतुर सचिव तुव कामा॥
अहै महूरत शुभ गोधूली चलन वरात हुलासा।
तातें आज तीर सरयू के होय सुपास निवासा ॥
यहि विधि शासन दै सुमंत को उठन लगे महराजा।
आयेचारि विदेह दूत तहँ त्वरा करावन काजा ॥
कोशल पाल कमल पद वंदे कहे कमल कर जोरी।
गवन विलंब अब नृप राउर आलस जनी न थोरी ॥

तब पुनि कह्यो विहँसि गुरु सों अस अवविलंब नहिं काजा।
जस जस मोहिं त्वरावत धावन तस तस लागति लाजा ॥
दूतन सों पुनि कह्यो अवधपति गोधूली शुभवेला ।
चली वरात जाय सरयू तट रहिहै अब नहिं झेला ॥
जाहु दूत दीजै विदेह को आसुहि खबरिजनाई ।
चौथे दिवस दरश करिहें हम मिथिलापुर महँ आई
सुनिकै दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता ।
गये दान मंदिर दशरथ इत बोल्यो विप्रन पूता ॥
हय गय भूमि कनक पट भूषण धेनु धाम धन वेसा
किये दरिद्र हीन जग याचक राम लषण उद्देसा ॥
फेरि गीत मंगल करवायो संयुत वेद विधाना ।
कौशिल्या केकयी सुमित्रा नृप रानी तहँ नाना ॥
रंगनाथ को पूजन करिकै गौरि गणेशहु पूजी ।
करिकै सकल शिगार सहचरी रति रंभा जनु दूजी ॥
वृन्द वृन्द युवती तहँ गावत मंगल गीत सुरीली ।
चलीं मृत्तिका लेन सरयु तट आनँदरली रँगीली ॥
बन्यो कनक को महा मनोहर मंडप रतन जड़ीलो ।
मनों मदन को सदन अनूपम सुर मुनि चित्त गड़ीलो
ले विधि युत सरयू तट ते मृदु गावत मंगल गीता ।
ले आईं मंडपहि मृत्तिका परिचारिका पुनीता ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा कियो व्याह को चारा ।
इष्टदेव कुलदेव पूजि सब आनँद भयो अपारा ॥
दोहा–शोर भेर माच्यो अवध, सुंदर सजी बरात ।
गोधूली वेला सुभग, आई मुनि आदान ॥

छन्द चौबोला ।

लै गुरु सकल पुरोहित जन को भूपति सदन सिधारे ।
सुमिरि गौरि गिरिपति गणपति हरि सुंदर वचन उचारे ॥
महाराज सुदिवस आयो अब करहु विजै मिथिला को ।
दधि दुर्वा तंदुल घृत थारन दरस परस करि याको ॥
सुनि वशिष्ठ के वचन भूपमणि गुरु पद वंदन कीन्ह्यो ।
सकल पुरोहित औरेन विप्रन हेमदान बहु दीन्ह्यो ॥
दधि दुर्वा तंदुल कर परस्यो रंगनाथ कहँ ध्यायो ।
लखिहौं राम चारि दिन बीते अस गुनि सुख न समायो ॥
उठ्यो चक्रवरती आसनते मंद मंद पगु धारयो ।
पढ़त स्वस्तयन विप्र मंडली स्वर युत वेदन चारयो ॥
कनक कलश धरि शीश सहस्रन आगे सधवा नारी ।
करहिं मंगलामुखी गान बहु मंगल सुरन सवाँरी ॥
रति रंभा मैनका उर्वसी सरिस चलीं नृप आगे ।
जय जय शोर चारिहूँ ओरन करहिं पौर अनुरागे ॥
नारी बरषि बरषि लाजा सुम गावहिं मंगल गीता ।
बिज्जु छटासी चढ़ीं अटा में कनकलता छबि जीता ॥
गुरुवशिष्ट आगू पगुधारे पाछे कौशल भूपा ।
सोहत मनहुँ देव गुरु संयुत देव अधीश अनूपा ॥
यहि विधि चारु चक्रवरती नृप चारु चौक पगु धारा ।
भरत शत्रुहन सजे खड़े तहँ सुंदर युगल कुमारा ॥
प्रथम वशिष्ट चढ़ाये स्यंदन दश स्यंदन नृप राऊ ।
लगी तोप तड़पन तेहि अवसर परयो निसानन घाऊ ॥
भयो सवार भूप निज रथ में मनिगन अमित लुटाई ।
आठ आठ घोड़े रथ जोड़े दोरन सान सजाई ॥

छाजत छत्र क्षपाकर की छवि चमर चलैं चहुं ओरा ।
शारदवारिदचलहिं चारि दिशि मनु मधि अत्रि किशोरा ॥
भरत शत्रुसूदन सुमंत को कह्यो बोलाय नरेशा ।
सैन चलावहु जौन भाँति हम प्रथमहि दियो निदेशा ॥
करि अभिवंदन दिगस्यन्दन पद तीनहुँ गये तुरंता ।
रिपुहन हयगण भरत नागगण रथगण रह्यो सुमंता ॥
चली बरात अवधपुरते तव करि दुंदुभी धुकारे ।
नौमत झरत चली नागन महँ रव करनाल अपारे ॥
सकल अवधपुर नारि मनोहर गावहिं मंगल गीता ।
दूलह दशरथ लाल राम दुलहिन वैदेही सीता ॥
छैल छबीले राजकुँवर सब शत्रुशाल के संगा ।
क्षण क्षण क्षिति महँ नचत चलावहिं चंचल चारु तुरंगा ॥
मुकुट कनक कुंडल हिय हारन पीत पोशाक सँवारे ।
पटुका पाग छोर छहरें क्षिति झरें मुकुत जनु तारे ॥
कहूँ धवावें कहूँ कुदावें वाजिन राजकुमारा ।
झमकावें असि कला देखावें रिपुहन पाय इशारा ॥
चमकावें नेजा अति तेजा मेजा कहूँ मिलावें ।
रेजा रेजा किये करेजा जिन शत्रुन संग्रामे ॥
बजैं निसान वृन्द वृन्दन महँ फहरें वृन्द निशाना ।
राजकुमार देव सम सोहत रिपुहन जनु मघवाना ॥
यहि विधि चल्यो तुरङ्गम मंडल सुतर सवारन पाछे ।
राखे अभिलाष अपन मन राम लखन कब आछे ॥
नव यौवन की उमगि अलौकिक मिथि पौरि सुख लाहीं ।
गौर बदन मदन शोभा जनु आनन अमित उछाहीं ॥

दोहा—छैल छबीले छपल सब, शत शत सुभट अगार ।
शिविकादिक के डोलनि, [illegible] ॥

छन्द चौबोला।

वाजी मंडल के पीछे पुनि मंडल चल्यो गयंदा।
मनहुँ पवन पुरवाई पावत उदे श्याम घन वृन्दा॥
वारन वदन सदन्त विराजहि हाटक बँधे मोहाले॥
मनहु द्वैज शशि श्याम मेघ माधि उभै नोक छबि माले।
तुंग वितुंड शुंड फटकारत सांकर लिहे पुरटकी॥
मनहु श्याम घन मंडल में छवि क्षण क्षण में क्षण छटकी॥
जडित जवाहिर हौद हेम के लसैं अमित अंबारी।
मनहुँ विंध्य मंदर शृङ्गन में सुर मंदिर छविकारी॥
झेलन की झनकार मची तहँ घन घंटा घहनाने।
नदत नाग माते मग जाते दिगदन्ती सकुचाने॥
रघुवंशी सोहत अरिध्वंसी सिंधुर सजे सवारा।
औरहु भूरि भूमि के भूपति केते राजकुमारा॥
ढालें करवालें कर लीन्हें कसी कमर महँ ढ्राले।
झूमत झुकत मुच्छ कर फेरत उरमाले उर माले॥
मन्द मन्द सब चलत पंथ महँ हँसत बतात बराती।
एक एक सब लोकपाल सम राजत राज सजाती॥
टूटत पंथ तरुन की शाखा लागत हौद दरेरे।
मत्त मतंग गंड मंडल मंडल मिलिंद करि घेरे॥
शत्रुंजय गजेन्द्र गज मंडल माधि में भ्राजत भारी।
राजकुमार सवार भरत तेहि राजत जन मनहारी॥
प्रमुदित मनहुँ मयङ्क उदित उदयाचल कर पसराई।
सकल शैल शृङ्गन पर सोहत तारा गण समुदाई॥
गजमंडल के पाछे सोहत रथमंडल नहिं दूरे।
वरण वरण वाजिन की राजी राजि रह्यो मग रूरे॥

सुभट शूर सरदार सभ्य जन सज्जन सुकवि सुजाना ।
चढ़े सकल स्यंदन गमनत पथ भूषण भूषित नाना ॥
पुनि रणधीर भीर प्यादन की सायुध चली अपारा ।
चमकहिं तेगअनी कुन्तनकी सिंधु तरंग अकारा ॥
रथमंडल पीछे पुनि सोहत परिकर भूपति केरो ।
कनक दंड कर जड़ित हजारन रतनन होत उजेरो ॥
हाटक के छोटे सोंटे कर पंचानन आननके ।
धरे कन्ध सोहत अति सुंदर अवध जनन ज्वानन के ॥
सोहत वल्लभ विविध प्रकारन छरी हजारन हाथा ।
पीत वरण पहिरे पट भूषण चले जात प्रभु साथा ॥
जे सेवक कौशल नरेश के गमने राम बराता ।
कडे करन कठुला कंठन में कुंडल कान सोहाता ॥
युग स्यंदन सवार सोहत तहँ दिगस्यंदन मुनिराई ।
मनहुँ देवनायक सँग सोहत वाचस्पति सुखछाई ॥
चारि चमर चहुँ ओर विराजैं छत्र क्षपाकर छाजै ।
अंशुमान इव आतपत्र युग विशद विजन बहु भ्राजै ॥
विविध किता के परम प्रभा के फहरैं विपुल पताके ।
जिन ताके छाके सुरमानस अरुझाते रवि चाके ॥
कोशलपति पीछे पुनि गमनत राजत राज निषादा ।
लीन्हे भीर निषाद भटन की हय चढ़ि विगत विषादा ॥
ऊट जूट ठट्टन शकटन की भरे साज के भारे ।
खच्चर वृषभ अनेक जाति के लै सब साज सिधारे ॥
यहि विधि चली बरात जनकपुर अवध नगर ते भारी ।
कुशल कहहिं लखि राम लषण को पूजी आश हमारी ॥
—उड़ी धूरि तहँ झूरि, पूरि रही अति दूर लौं ।
भरी गगन लों भूरि, भूलि गये पथ गगन चर ॥

छन्द गीतिका।

बाजन अनेकन बाजहीं दश दिशन छाय अवाज।
तंबूर ढोलहु ढक्क डिंडिम पणव पटह दराज॥
मंजीर मुरज उपंग वेणु मृदंग सलिल तरंग।
बाजत विशाल कहाल त्यों करनाल तालन संग॥
झल्लरी झर झर झांझ सांझ सोहावनी झनकार।
रहि पूरि ध्वनि शंखन असंखन सैन वारापार॥
बहु विधि विपंची सुर प्रपंची रची धुनि मनहारि।
बहु बिगुल मुगुल बजावहीं जनु चुगुल सुरन उचारि॥
ध्वनि धरणि धौसनि की छई नौमत झरत मग जाति।
झिझिन झनक श्रुति प्रिय अनक बाजत रबाबहु जाति॥
जांगरे करत अलाप विरद कलाप भूप प्रताप।
अतिशय मिजाजी चढ़े बाजी करत अरि उर ताप॥
बंदी विदूषक वदत बहु विधि सुयश युक्ति समेत।
यह भानु कुल कीरति उदै जो स्वाति पंथ सपेत॥
हिम शैल सित हर शैल सित सित क्षीरनिधि सित चंद।
भुवि भरत भरत सुगगन साभिस्यो सुयश रघुकुल चंद॥
निकसी बरात अघात दल करि सकै कौन बखान॥
कंपति धरणि शिर तेगिरानि की शेश डरनि सकान॥
लै लै विमानन विविध आनन विबुध वृन्द हँकारि॥
नभ विबुध पति आयो विलोकन जक्यो विभव निहारि॥
मन महँ कहत शतबाजि मख करि लहत जन पद मोर।
अब देखि दशरथ साहिबी मोहिं लगत स्वर्गहुं थोर॥
त्रैलोक शासन करन समरथ अहैं दशरथ आन।
कहु कौन अचरज ताहि जेहि जगदीश सुत रघुरान॥

अब चलहु संगहि संग बरषत सुमन मन हरषात ।
मोहिं आज आये काम नैन हजार लखत बरात ॥
यहि विधि सुभाषत देवपति लै देवगण नभ आय ।
सुरभित सलिल कन झारि मृदु बरषत कुसुम समुदाय ।
जब कढ़ी कोशल नगर ते मैदान माहिं बरात ।
तब भयो देवन भोर मानहुं सिंधु द्वितिय देखात ॥
उठतीं अनेकन तरल तुंग तरंग तरल तुरंग ।
मातंग गण शिशुमार कच्छप नाव रथ बहु रंग ॥
राजत रतन भूषण रतन जल राम दरश उमंग ।
लघु बृहद मीन अनन्त पैदर शंख शंख सुढंग ॥
वाड़व अनल दशरथ प्रताप जलेश कौशल राय ।
उड़ती मरालन की अवलि सुनिशान गन फहराय ॥
बहु ऊंट जूट सुवृपभ खच्चर विविध जल चर जीव ।
चहुँ ओर बाजिन शोर सत्य हिलोर शोर अतीव ॥
अतिशय अपार बरात सिंधु विख्यात विश्व सोहाय ।
लखि राम पूरण बिधु वदन केतनो अधिक अधिकाय ।
सोरठा--यहि विधि चली बरात, रघुपति ब्याहन जनकपुर ।
सरयू तट नियरात, भूपति कह्यो सुमंत सों ॥

छंद कामरूप ।

अब आज अधिक न जात बनत मुकाम सरयू तीर ।
यह पाहिल बास सुपास सब कहँ जइ जुरि सब भीर ॥
सुनु सचिव मन अभिलाप पूरण कियो मोर मुकंद ।
साधक सकल गुरु की कृपा ह्वैहें अनेक अनंद ॥
तुम जाहु सेननिवास करवावहु सुपास समेत ।
हम चलब पाछे गुरु सहित जहँ सिबिर सरिस निकेत ।

अस कहि बिदा करि सचिव कहँ पुनिकह्यो गुरु पहँ भूप ।
यह साहिबी मन ल्याइबी निज कृपा फल अनुरूप ॥
शिशु लह्यो सुयश अथाह होत बिवाह परमउछाह ।
सोकृपा राउरि मूल और न मोहिं क्षिति महँ छाह ॥
देखहु शकुन सब होत सुंदर शुभ जनावत जात ।
दिशि बाम चारा नीलकंठ विहंग लेत देखात ॥
यह शकुन सूचत सकल शुभ मुद अधिक आगे होव ।
शुभ खेत दक्षिण ओर बायस लखे जन मुद मोव ॥
पाये नकुल को दरश सब चल दल विटप की छांह ।
शीतल सुमंद सुगंध लगत सुपीठ पवन प्रवाह ॥
धरि कुंभ शिर भरि सलिल बालक अंक लीन्हे नारि ।
देखी परी बहु पंथ महँ यह सगुन लेहु विचारि ॥
लोवा दरश बहु बार दीन्ह्यो आय चारिहु ओर ।
सुरभी पियावति वत्स सन्मुख लखे सुंदर ठोर ॥
फिरि फिरि सुआये दहिन दिशि मृगमाल यात्राकाल ।
मनु दियो सकल बताय शुभ तुव कृपा फलहि कृपाल ॥
थहरान क्षेमकरी सुमस्तक उपर सूचक छेम ।
श्यामा सुवामा बैठि तरु पर लखे जन भरि प्रेम ॥
गुरु गवन करते भवन ते देखे सबै दधि मीन ।
कर लिहे पुस्तक विप्र युग अध्वनि सुधर्म धुरीन ॥
अति बिंदु सूक्षम सलिल बरषे किये मृदुलगराज ।
छाया किये घन गगन शुभ दरशाउ जनु सुर राज ॥
अंबर उड़त हंसावली भंय बिमल तारा जोति ।
अति मन प्रसन्न प्रजानि के निशि तम न भूरि उदोति ॥
यह सकल राउर की कृपा फल सुनहुँ ब्रह्म कुमार ।

व्रतबंध व्याह बखान कहँ दुर्लभ रहे सुत चार ॥
फरकहिं भृकुटि भुज नैन दक्षिण दिसत अधिक अनंद।
अचरज न कछु जहँ आप मंगल रूप करुणा कंद ॥
अवधेश के सुनि बैन लहि अति चैन मृदु मुसक्याय।
पुलकित सजल दृग कंठ गद्‌गद कहत भे मुनिराय॥
धनि धरा में अवधेश तुम जेहि राम लषण कुमार।
भल करहिं अपने ते अमर मंगल प्रमोद अपार ॥
अवधेश धर्म धुरंधरन को कछु न दुर्लभ होय।
मिलते अमित सुख संपदा बिन चाह अवधिहि गोय॥
जस आप तस मिथिलेश जस मिथिलेश तस पुनि आप।
नहिं तृतिय आज समान कोउ यह सत्य मम सल्लाप॥
मुनि भूप के अस करत संभाषण खड़े मग माह।
आई वहीरि विशेषि सरयू तीर सहित उमाह ॥
डेरा सुमंत देवाय सबको सहित सुथल सुपास।
भोजन सकल पहुँचाय सबकहँ जाय जाय निवास॥
उज्वालि लाखन दीपका निज नैन सबकहँ देखि।
आयो महीपतिमणि निकट बिनती करी सुख लेखि॥

दोहा—महाराज सबको भयो, सरयू तीर सुपास।
नाथ पधारो सिविर कहँ, कीजै रैन निवास ॥

छन्द गीतिका।

सुनि सचिव वचन अनंद दायक सहित गुरु महिपाल।
करि भरत भरतानुजहि आगे गयो सिविर विशाल॥
सब सैन डेरा परे सरयू तीर तीरहि भीर।
युगयोजनहि लौं संधि नाहिं कढ़ि जाय भारी तीर॥
सबके उछाह प्रवाह उर कब लखब राम विवाह।

अवधेश हमहिं निदेश अस मिथिलेश दीन बोलाय।
जबते चलहिं कोशल नगरते कोशलेश त्वराय॥
तबते सुभोजन पान सामग्री दियो तुम जाय।
जो लगै खर्च बरात को सो लिह्यो सकल उठाय॥
लघु मनुजहूँ को संच कियहु विसंच रंच न होय।
अब होय हमरे शीश शासन नाथ तुम सम दोय॥
सुनिसचिव वचन विचारि भूप विदेह को व्यवहार।
मिथिलेश केर निदेश जस तस हमहुँ को स्वीकार॥
अस कहि वशिष्ठ चढ़ाय स्यन्दन चढ़्यो स्यन्दन आप।
बाजत भये तेहि समय बाजन विविध सुरन कलाप॥
पूरुब कियो जेहि भाँति बरणन तौन रीति बरात।
गमनी सुमिथिला पंथ गहि करि धूरि धुंध अघात॥
मानहु मही निज कुँवरि व्याह विचारि अति सुखमाति।
मिसि रेणुके विधि लोकको विधि को निमंत्रण जाति॥
सर नदी नारे परत जे मग रहे जल भरि पूरि।
आगे चलत ते लहत जल पाछे चलत ते धूरि॥
पाषाण परहिं जे पंथ महँ ते होत रेणु समान।
युग कोस को विस्तार भरति बरात करत पयान॥

दोहा--जहँ ते चली बरात मग, जहँ पुनि रह्यो निवास।
तहँ लों हय गय रथ मनुज, भरे चलत सहुलास॥

छन्द गीतिका।

रघुवंश कुल को जब बरात गई सुगंडक तीर में।
करि पान सुधा समान मेटे प्यास निरमल नीर में॥
आये वशिष्ठ समेत रघुकुल केतु जब तेहि वास में।
तब विनय कीन विदेह सेवक रानमणि मुनि पास में॥

मिथिलाधिपति रचवाय राख्यो आप उतरन मंदिरे ।
उतरौ तहाँ चलि अवधपति जनु रच्यो निज कर इंदिरे ॥
सुनि भूप मुदित पधारि कीननिवास विमल अवास में ।
सैनिक सकल सरदार राज कुमार वसें सुपास में ॥
सब पृथक पृथक बसे सुभोन भयो न कोहु को साँकरो ।
परिजन स्वजन पुरजन महाजन सहित निज निज चाकरो ॥
गज वाजि ऊँटन अनडुहन के भिन्न भिन्नहि थान है ।
मिथिलेश परिचर करत भे व्यवहार भोजन पान है ॥
जेहि वस्तु की रहि चाह जाको मुखन ते न बखानहीं ।
दीन्हे बरातिन पूरि निकटहु दूरि सबन समानहीं ॥
सब करहिं जनक बखान पंथ महान लखि सनमान को ।
सबको भयो अस भान कीन पयान निजहि मकान को ॥
संध्या उपासन कियो सांझहि गंडकी तट जाय कै ।
बैठ्यो बहुरि अवधेश आलै सभा सुखद लगाय कै ॥
आये अनेकन राज राज कुमार नृप दरबार में ।
सब कहत कोउ न विदेह सम नृप भयो यहि संसार में ॥
वर ज्ञान मान विराग मान सुजान वृंद प्रधान है ।
पायो नरेन्द्र समान समधी सत्य यह अनुमान है ॥
पुनि कह्यो सचिव सुमंत काल्हि कहां अराम मुकाम है ।
नृप कह्यो जहँ जहँ जनक सेवक कहहिं तहँ विश्राम है ॥
अतिशय त्वरा लागी लखन की लषण की प्रिय राम की ।
परसों पहुँचि मिथिला पुरहि निरखब सुछवि अभिराम की॥
सुनिकै सभासद अभिलषित निज निज अयन गमनत भये।
भूपति सभा बरखास्त करि किय शयन अति आनँदमये ॥
असवार युगल हजार लागे भ्रमण चहुँदिशि शयन के।

लगि रामदरशन आश नींद न निकट आई नयन के॥
पथश्रम सुधाकर सुधाकरनि पसारि सकल निवारि कै।
कीन्ह्यो विलास अकाश कुमुद विकास महि विस्तारिकै।
लीन्हे अखंडल तार मंडल करत गगन पयान है॥
मनुजात संग वरात के शशि राम दरश लोभान है।
शीतल सुगंध समीर वहत सुधीर जनु वनि धावनो॥
अवधेश को मिथिलेश पै द्रुत जात खवरि जनावनो।
वीती तृयामा याम त्रय वाकी रह्यो जव याम है॥
वाजे नगारे कूंच के जन जलद जागन काम है।
सुनि दुंदुभीन धुकार खरभर परी हरवर सैन में।
नर वर उठे हरि हर सुमिर मज्जन किये अति चैनमें॥
आगे सवार कराय गुरु गमन्यो नरेश प्रभातही।
चतुरंगिनी सुखरंगिनी गमनीवरात सुहातही॥
आगे सुतर पुनि वाजिमंडल नाग मंडल पुनि लसै।
मंडल अखंडल पैदरन को देव वृंदन को हँसै॥
पुनि खास सेवक वृंद सोहत तासु मध्य महीप है।
जिमि विष्णु के ढिग ब्रह्म राजत तस वशिष्ट समीप है॥
तादिन रथन मंडल लिहे नृप अनुविभात सुमन्त है।
सिविका सुखासन आदि वाहन तासु अनुग अनन्त है॥

दोहा—ऊँट जूट अनड्डह शकट, भरे साजु ते भूरि।
चल्यो निषाद अधीश लै, निज दल सहित न दूरि॥

छंद चौबोला।

उतै दूत जे गये अवधपुर लै विदेह की पाती।
जोरि पाणि कीन्हे पद वंदन आय तीसरी राती॥
दूत विलोकि विदेह विनोदित कहे कुशल सव आये।

कहहु कुशल कोशल भुआल की कब ऐहैं सुख छाये॥
दूतन कही खबरि तहँ की सब नृप रनिवास उराऊ।
प्रीति रीति पुनि लै बरात को बरण्यो चलनि त्वराऊ॥
पुहुमीपति यहि पुरहि पहुँचि हैं परसौं सहित बराता।
कही प्रणाम आपको बहुविधि दशरथ विश्व विख्याता॥
दशरथ दुनी दूसरो दिनकर विभौ सरिस सुरराजा।
का कहिये ता पर ताके सुत भये लषण रघुराजा॥
राउरि कुशल पूछि कोशलपति हमहिं बहुत सतकारे।
तेहि दिन दुपहर हमहिं बिदा करि साँझ आप पगु धारे॥
प्रथम वास सरयू तट ह्वै है दूसर गंडकि तीरा।
तृतिय वास इत ते युग योजन परौं मिलन मतिधीरा॥
नाथ कृपा हम पर कीन्हे अति दीन्हे अवध पठाई।
अति अभिराम रामपुर देखे सुखमा बरणि न जाई॥
आवन सुनत अयोध्याधिप को प्रेम मगन मिथिलेशू।
अगुवानी साजन के कारण सचिवन दियो निदेशू॥
इतै बरात चली रघुकुल की राम दरश अभिलाषी।
लषण राम को लखन कालिह हम चले परस्पर भाषी॥
आनँद विवश होत मग विभ्रम संभ्रमभीषण माहीं।
को बरणै दशरथ अनंद अब रामहि ब्याहन जाहीं॥
आठ पहर भे आठ युगन सम कब पहुँचें मिथिला को।
विश्वामित्र विदेह सहित कब देखहिं राम लला को॥
अति उत्साहित उठत आसुपद टमकति छनक न छाया।
हय गय रथ पैदर सम जाते तदपि न पंथ सिराया॥
जे याचत याचक जगती के जगतीपति पथ माहीं।
ते याचक पुनि होत अयाचक याचत पुनि जग नाहीं॥

धाय धाय देशन के वासी देखत आय वराता ।
पूछत प्रथमहि राम लपण को पिता कौन विख्याता ॥
जाके पूत सपूत बांकुरे तासु दरश अवहारी ।
तृण सों जिन त्रिपुरारि धनुप दलि ब्याहत ...
मारि ताड़का मुनि मख राख्यो गौतम की तिय तारी ।
सुनि नृप कहत यदपि सत पै मोहिं लगति हँसी अस .
मिथिला देश प्रवेश कियो नृप सँग वरात लै भारी ।
तवते हँसि हँसि हुलसि हुलसि जन देत माधुरी गारी ॥
मंगलगान करत युवती जुरि होहिं पंथ महँ ठाढ़ी ।
सदल दीप धरि कलश शीश पर वर देखन रति वाढ़ी ॥
ते लखि भरत शत्रुशालहु को सुंदर दूलह कहहीं ।
कोउ कह दोउ दूलह सहिवाले वर मिथिलापुर अहहीं ॥
अतिहि त्वरात प्रयात वरात गई जब कमला तीरा ।
तहँ ते जनक नगर युग योजन जनक सचिव तहँ धीरा ॥
जोरि पाणि बोल्यो सुमन्त सों इत सब भाँति सुपासा ।
अब मिथिलापुर है युग योजन करै वरात निवासा ॥
जाय सुमन्त कह्यो भूपति सों नृप कीन्ह्यो स्वीकारा ।
कमला तीर परे सब डेरा बन रसाल मनहारा ॥
तुंग मेरुमंदर सम सुंदर भूपति सिविर सोहाये ।
विमल विख्यात सोहात कनातन बड़ वितान छवि छाये ॥

दोहा—राखे तहँ बनवाय बहु, विविध निवास विदेह ।
निज डेरन तजि तहँ बसे, जानि जनक नृप नेह ॥

छंद चौबोला ।

[illegible]न शाला हय शाला अगणित शाला विविध विशाला ।
भो[illegible]न शाला मज्जन शाला शाला सैन रशाला ॥

सकल वरात निवास कियो तहँ सवकी भई समाई।
असन वसन पानादिक की तहँ प्रगटी पूरणताई॥
मिथिलाधिप के परिचर सिगरे अस कीन्ह्यो व्यवहारा।
मोदित-महा अयोध्या वासी अवध विलास विसारा॥
करि भोजन सुख शयन अवध नृप उव्यो रहे दिन यामा।
सभा मध्य मंडित धरणीपति भयो सुपूरण कामा॥
प्रचुर पठै परिचारक दल महँ खबरि वरातिन लीन्ही।
आवन को पुनि असन शयन की सवन खातिरी कीन्ही।
सबै वराती सुखी सकल विधि रंच बिसंच न पाये।
धामन आय धरणिपति को अस विस्तर वचन सुनाये॥
कोशलपाल तुरन्त सुमन्तहि बोलि कही अस वानी।
सजवावहु वरात आजुहिं ते काल्हि होन अगुवानी॥
सचिव काल्हि मिथिलाधिराज को मिलि मुनि राज समेतू।
सानुज कौशिल्या नंदन लखि मिटी विरह दुख जेतू॥
वन वन वागत वहुत दिनन ते कृश तनु ह्वै हैं प्यारे।
करत रह्यो ह्वै है को सोपति दूध वदन दोउ वारे॥
छोड़त रहे न क्षण भरि जिनको खेलत सांझ सकारे।
एक मास वीत्यौ विन देखे राम लपण सुकुमारे॥
कह्यो सुमन्त जोरि कर कंजन धन्य धरणि अवधेशा।
राम लपण जिनके कुमार जग उदित दिनेश निशेशा॥
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं सफल हमारे।
को अस जेहि नहिं राम प्राण प्रिय एकौ वार निहारे॥
करिकै विदा सभासद वृन्दन उव्यो भूप संध्यासो।
दिनकर निरखि अस्तगिरि गमनत दीन्ह्यो अर्घ हुलासी॥
हवनादिक करि नित्यनेम सब अतिथि पूजि श्रद्धालू॥

रंगनाथ को ध्यान धरयो कहि पुजवहु आश दयालू॥
सकल शोध लै भूप वरातिन कियो शयन महराजा।
देखे सपन आय कौशिक मुनि दिये लषण रघुराजा॥
पुनि जनु कौशिक अरु वसिष्ट मुनि बोले वचन उछाही।
जैहौं अवध अवधपति मोदित चारिउ कुँवरन व्याही॥
सीता राम विवाह विदित जग औरहु सुनहु भुआला।
द्वितिय औरसी नाम उर्मिला जनक भूप लघु वाला॥
तासु विवाह लषण को होई कुशध्वज लघु नृप भ्राता।
तेहि तनया मांडवि श्रुतिकीरति कीरतिछवि विख्याता
करिहैं भरत विवाह मांडवी श्रुतिकीरति रिपु शालू।
यहि विधि चारिहु कुँवर व्याहि जब चलिहौ . यमुन
तब मारगमहँ प्रवल विप्रसों ह्वैहै भीति महानो।
द्विज निजतेज गवाँय हारि हिय जैहै मानि गलानी॥
कुशल सहित कौशल पुर जैहौं कौशल नाथ उदारा।
ऐसो सपन देखि रजनी महँ नृप जगि कियो विचारा॥
जबते सपन लख्यो जगतीपति तबते नींद न आई।
जाय याम बाकी निशि गुरु पहँ दीन्ह्यो सपन सुनाई॥
कह वशिष्ठ कछु शंक करहु जनि देहु देवाय नगारा।
चलहु वरात साजि मिथिलापुर सपन भयो सुख . ॥
सजन सैन्य हित दिय निदेश नृप गमन दुंदुभी बाजे।
सैनिक सकल वाजि गज स्यन्दन अतिहि अनंदन साजे

दोहा—मिथिलापुर हल्लापरयो, ऐहै आजु वरात।
अगवानी हित जनक नृप, साजो सैन विख्यात॥

छन्द त्रिभंगी।

१. गज मत्त गरट्टन वाजिन ठट्टन सकल सुभट्टन साजि तैं

भट झट्टन पट्टन ले कर पट्टन इट्टन ह्वै चलि गाजि रहे ॥
बहु सजी अमारी हौदा भारी वर जरतारी की झूलैं ।
नद्दत बहु नागे जिनके आगे गिरिश विभागे नहिं तूलैं ॥
मिथिलेश मतंगा सजि सब अंगा परम उतंगा चलत भये ॥
निमिकुल सरदारा करि शृंगारा भये सवारा मोद मये ॥
अति चंचल वाजी बनि बनि राजी तुरकी ताजी सोहि रहे ।
राजस अति सादी उर अहलादी धृति मरजादी बाग गहे ॥
पैदरन कतारा शुभग सिंगारा देव अकारा छवि छाये ।
तन वसन सरंगा भरे उमंगा जुरि यकसंगा तहँ आये ॥
चामीकर स्यंदन वृन्दन वृन्दन चढ़े अनंदन भट भारे ।
धरि ढाल विशाला कर करवाला उन्नत भाला अनियारे ॥
निमि वंशिन वारे राजकुमारे सजे सिंगारे पगु धारे ।
नृप जनक हँकारे लहि सतकारे अमित हजारे सुकुमारे ॥
मिथिलापुर वासी आनँद रासी सजि सजि खासी शिर पागे।
कंचुक तन काँधे कम्मर बाँधे उर सुख धाँधे अनुरागे ॥
यक एकन भाषें उर अभिलाषें अब इन आँखें सफल करे ।
लखि राम विवाहा परम उछाहा को महि माहा सुख न भरे॥
कोशल महराजू सहित समाजू आवत आजू सुखसानी ।
इत ते सजि साजू निमिकुल राजू गमनत काजू अगवानी॥
अस कहि कहि पोरा ले सँग छोरा पश्चिम ओरा गमन किये।
भइ भीरहि भारी सहित तयारी पुर नर नारी हरषि हिये ॥
बहु चली पालकी रतन नालकी नवल नालकी कनक मई ।
मुनि वृन्द सँवारे वेद अकारे ऋचा उचारे पुण्य नई ॥
फहरात निशाना नद्दत निशाना गायक गाना करत चले ।
सबन मतिमाना हिय हुलसाना किये पयाना भाट भले ॥

रथ रतन सँवारो अति विस्तारो बाजिन चारो चारु महा।
राकाशशि छत्रा परम विचित्रा आतप पत्रा राचि रहा॥
तापर मिथिलेशा चढ्यो सुवेशा मनहुँ सुरेशा सोहि रह्यो।
लक्ष्मीनिधि प्यारो राजकुमारो तुरँग सवारो गैल गह्यो॥
वर सतानंद मुनि चढ़ि स्यंदन पुनि चल्योसंगगुनि ...
मुनि याज्ञवल्क्यवर धर्म धुरंधर औरहुतपधर मुदित मुनै।
पुर ते छवि भारी कढ़ी सवारी भै घहरारी चाकन की।
बहु बजे सोहावन बाजन पावन जिन धुनि छावननाकनकी॥
दोउ नृपन मिलापा मोद कलापा देव अलापा करत सबै।
देखन के आसी नाक निवासी गुनि सुखरासी ठानि जबै॥
सुर चढ़े बिमानन बहुविधि आनन दशहु दिशानन नभ आये।
बरषैं बहु फूला गत सब शूला मंगल मूला यश गाये॥
उतते अवधेशा इत मिथिलेशा नहिं कम वेशा महराजा।
दुहुँ पुण्यहु जागी जग बड़भागी सम अनुरागी छविछाजा॥
दश सुतर सवारे जनक हँकारे वचन उचारे तुम आवो।
मम अरज सुनावो नृपद्रुत आवो बेलम विहावो सुखछावो॥
द्रुत धावन धाये नृपदल आये वचन सुनाये दशरथ को।
कह जनक प्रणामा दरशन कामा चलियहियामागहि पथको॥
ठाढ़े सुखमानी हित अगवानी आँखिलोभानी दरशन को।
लै विशद बराता आवहु ताता अब क्षण आता हरपन को॥
सुनि मैथिल बैना भरि उर चैना सजल सुनैना अवध धनी।
कह वचन तुरंता सुनहु सुमंता नाहिं बिलवंता चलै अनी॥

दोहा—करहु शयन को शीघ्रहीं, दुतिया चंद अकार।
हम अरु गुरु मधि में रहब, अरु युग राज कुमार॥
आगे पैदर सुतर युत, पुनि बाजी रथ फेर।

पुनि मतंग मंडल चलै, करहु व्यूह बिन देर ॥
शासन पाय सुमंत तहँ, तैसहि सेन बनाय।
मिथिला ओरहि शीघ्र गति, दियो बरात चलाय ॥

छंद चौबोला।

योजन अर्ध गई जब सेना द्वितिया चंद अकारा।
देखा देखी उभै सैन की होत भई तेहि बारा ॥
जैसो व्यूह बनाय अवधपति चले मिलन के काजा।
तैसे व्यूह बनाय चल्यो उततेमिथिला महराजा ॥
इत ते महा महोदधि जावत उत रतनाकर आयो।
मानहु मिलत उमंडि सिंधु युग कोलाहल क्षिति छायो ॥
फहरनि नवल निशानन की छवि तुंग तरंग समाना।
राजी गज बाजिन की राजी महा जंतु विधि नाना ॥
मिलत युगल चतुरंगउमंगन विलसै मनहुँ अकाशा।
घन मंडल भल युगल अखंडल मिलत आय दोहुं आसा ॥
मानहु लै भारी तारा दल तारापति हुलसायो।
लेन हेत अगवानी आसुहि अंशुमान की आयो ॥
इत दिनकर सम दशरथ सोहत ग्रह सम सब रघुवंशी।
उत महीप मैथिल मयंकसम उडगण सम निमि वंशी ॥
जबते भई सैन्य की देखा देखी दूरहि तेरे।
तबते भये मंद गति दोउ दल यक एकन को हेरे ॥
द्वितिया चंद सरिस दोऊ दल ताते प्रथम सिधारी।
मिले कोन सों कोन चारिहूँ तब मंडल भो भारी ॥
भूमंडल सम सजी सैन्य मिलि निमिकुल रघुकुल वारी।
इत कोशलपति मिथिलापति को को बड़ छोट उचारी ॥
छैल छबीले राजकुँवर कोउ तरल तुरंग धवाई ॥

जनकहि करहिं प्रणाम हर्ष वश बाजी बेश नचाईं ॥
तैसहि कोउ निमि वंश रँगीले हरवर अर्व उड़ाईं ।
अभिवंदन करि अजनंदन को मिलहिं सैन निज जाई ॥
पीलवान गज सुखन उठावत हय झमकावत सादी ।
मन्द मन्द दुहुँ दिशि ते आवत दोउ दल के अहलादी ॥
बेला छोड़ि मनहुँ सागर युग बोरन चह संसारा ।
तिमि दोऊ चतुरंग विराजत सूझि न परत किनारा ॥
मिले तुरंगन सों तुरंग बर मिले मतङ्ग मतंगा ।
मिले पैदरन सों पैदर तहँ मिले सतांग सतंगा ॥
किये परस्पर अभिवंदन सब यथा योग्य व्यवहारा ।
मुदित बराती यथा घराती पूछि कुशल बहु बारा ॥
पगे प्रेम महँ बीर परस्पर हाथन हाथ मिलावें ।
हुलसि हुलसि हँसि हँसि रस के वश हांसी वचन सुनावैं ॥
प्रतीहार कहि फरक फरक तहँ किये कछुक मैदाना ।
इत ते कोशलपाल गयो तहँ उत मिथिलेश महाना ॥
गुरु वशिष्ठ अरु सतानंद मुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
चल्यो तुरंत कुँवर लक्ष्मीनिधि आय गयो तहँ सोऊ ॥
दशरथ जनक नयन जुरिगे जब दोउ अभिवंदन कीन्हे ।
दोऊ पङ्कज पाणि पसारि मिलाय लूटि सुख लीन्हे ॥
कियो प्रणाम विदेह वशिष्ठहि पूछ्यो कुशल सुखारी ।
सतानन्द को दशरथ वंदे ह्वै पग पानि पसारी ॥
भरत कुँअर रिपुसूदन संयुत जनकहि किय प्रनामा ।
लक्ष्मीनिधि कोशलपति वंदे कै अपनो गुन नामा ॥
पुनि वशिष्ठ के चरन गह्यो चलि गौतम सुअन सुजाना ।
[illegible] महाना ॥

सतानन्द के चरण गहे पुनि भरत शत्रुहन दोऊ ।
आशिष दीन्ह्यो गौतम को सुत भये मगन मुद ओऊ ॥
ोहा–पुनि लक्ष्मीनिधि मुदित मन, किये वशिष्ठ प्रणाम ।
आशिष दीन्ह्यो ब्रह्मसुत, होय पूर मनकाम ॥

चौपाई ।

छि परस्पर सब कुशलाई । उभै भूप मुद लहे महाई ॥
ह्यो विदेह बहुरि कर जोरे । तुम्हरी कुशल कुशल अब मोरे ॥
म तो कुशल रूप महराजा । धर्म धुरंधर पुण्य दराजा ॥
म सम भूप न होवन हारे । राम लषण अस जासु कुमारे ॥
वविधि मोहिं धन्य करिदीन्ह्यो । मिथिला नगर आगमन कीन्ह्यो ॥
टी फूटी मोरि मड़ैया । तिरहुत के सब लोग लोगैया ॥
न्हें जानबो अवध बसैया । सत्य कहौं करि धर्म दोहैया ॥
ुनि मिथिलापति वचन सुखारे । कह दशरथ दृग बहत पनारे ॥
नकराज तुम हौ सब लायक । कस न कहौ असवचन सोहायक ॥
ानवान विज्ञान स्वरूपा । निश्च विरागो भक्ति अनूपा ॥
ुनि शिरोमणिनिमिकुल भानू । कहँ लगि करिय आप गुण गानू ॥
ोपर कृपा कौन मिथिलेशू । सकल भाँति हरिलीन कलेशू ॥
दोहा–आये कौशिक संग में, मेरे युगल कुमार ।
लहे सुयश जग जो कछुक, तौन प्रताप तुम्हार ॥

चौपाई ।

कहँ मिथिलेश बसे दोउ भाई । कौन हेत ल्याये न लेवाई ॥
ुनत विदेह कह्यो कर जोरी । दोउ मरयादा राखी मोरी ॥
जग पालक बालक नृप तेरे । रिपु घालक मालक हैं मेरे ॥
ूत सपूतन की बड़वारी । सकें न शेश गणेश उचारी ॥
ाउर सुजन सहज जिन जाने । त्रिभुवन महँ तिन होत बखाने ॥

राजराजमणि वेगि पधारो। निज नंदन निज नयन निहारो॥
अस कहि दोउ नृप स्यन्दन फेरे। वैरख फिरे दोउ दल केरे॥
चली चारु जनवास वराता। सो सुख यक मुखनाहिंकहिजाता॥
दशरथ लक्ष्मीनिधिहि बोलाई। लियो आपने यान चढ़ाई॥
जनक बोलाय भरत रिपुशालै। निज रथ लियो चढ़ाय उतालै॥
उभै महीपन के युग याना। मिले बरोबर कीन पयाना॥
गुरुवशिष्ठ अरु गौतमनंदन। उभै ओर चढ़ि राजत स्यन्दन॥
दोहा—निमिवंशी रघुवंशी, अरि ध्वंसी रणधीर।
पूरण जगत प्रशंसी, मिले वीर सों वीर॥
चली सेन दोउ संग इक, मिलि जनवासे ओर।
मानहुँ पसरे सिंधु युग, करि वेला को वोर॥

चौपाई।

मिथिला विश्व प्रदै सुख पीरा। साधन अगणित सयन शरीरा॥
काम क्रोध मद लोभहुचारी। मत्सर मोह शत्रु पट भारी॥
अहंकार आदिकन समाजा। तेइ सब जे आये खल राजा॥
जीव जानकी तिनहि विहाई। दृढ़ता राम भक्ति मन लाई॥
नौधा भक्ति करी फुलवारी। गुरु कौशिक प्रभुलै पगुधारी॥
धनु भंगादिक प्रभु प्रभुताई। सिय जिय दृढ़ता भक्ति कराई॥
जनक विवेक जियहिं हरि पासा। पहुँचावन चह अति अनयासा॥
दशरथ प्रेम वशिष्ठ विज्ञाना। जनक विवेक आसु तेहि आना॥
परब्रह्म रघुपति सुखसीवा। जनक विवेक देत सिय जीवा॥
कौशिल्या प्रापति सुखदाई। अवध परमपद श्रुति सब गाई॥
सिय जिय चाहत करन पयाना। तेहि उत योग विवाह बखाना॥
मुक्ति सखीगण संग सिधेहैं। जगत जनकपुर पुनि नहिं ऐहैं॥
दोहा—अवध भवन कैंकर्यमें, रही मगन आनंद।
जहँ प्रभु जहँ तहँ ... रूप ...॥

चौपाई।

गर निकट ह्वै चली बराता। लखन हेतु पुरवासिन व्राता॥
थ यूथ मारग महँ ठाढ़े। नर नारी आनँद रस बाढ़े॥
नक नगर महँ फैली बाता। जनवासे कहँ जाति बराता॥
ये निवासहि लषण नहाई। प्रभु को दीन्ही खबरि जनाई॥
ता अवधपुर ते चलि आये। आपुस महँ पुरजन बतराये॥
ह्यो राम अतिशय सुख मानी। लषण परत हमहूं कहँ जानी॥
त सुनात शत्रुंजय नादा। मम मतंग मंदर मरयादा॥
जत विजय कर मोर नगारा। इत सुनि परत महा घहरारा॥
पैं चलहिं जनकपुर माहीं। देत सलामी मम पितु काहीं॥
लहु कहहुँ गुरु पहँ अतुराई। पिता दरश हित चलहि लेवाई॥
स कहि गे मुनि पहँ दोउ भाई। कहे बचन मृदु विनय सुनाई॥
नियत नाथ पिता पगु धारे। दरशन लोभी नयन हमारे॥

हा—दरशन करि आवहिं तुरत, जो आयसु गुरु देहु।
उचित होइ तौ आपहू, सहित कृपा चलिदेहु॥
कहे वचन कौशिक विहँसि,चलिहैं हमहुँ विशेषि।
आजु न कोउ तुव पितु सरिस, लिह्यो लोक त्रय लेपि॥

चौपाई।

द मंद उत भूपति दोऊ। दोऊ सैन वीर सबकोऊ॥
रखत नगर जात जनवासा। करत विविध विधि हास विलासा
रत शत्रुसूदन दोउ भाई। कह लरिकाई वश अतुराई॥
हु जनक नृप हमहिं बताई। केहि थल बसत लषण रघुराई॥
जकुँवर के वचन सुहाने। सुनत विदेह हरषि मुसक्याने॥
मि वदन बोले सुनु ताता। यहि पुर बसत युगल तव भ्राता॥
खिहो आजु अवशि निज भाई। कौशिक सहित लषण रघुराई॥

सुनि पुलके दोउ बंधु अपारा । कह्यो जनक सों अवध भुआरा।
सुंदर भयो पुरी निरमाना । अलका अमरावती समाना।
आपु सरिस हरिदास प्रधाना । बसैं सहित जहँ ज्ञान विज्ञाना।
है वैकुंठ सरिस पुर सोई । आवहिं सदा संत सब कोई।
यहि विधि करत परस्पर बाता । जातं चली जनवास बराता।
दोहा—धाय धाय देखैं सबै, मिथिलापुर नर नारि ।
बारहि बार बखानहीं, दशरथ भाग उचारि ॥

चौपाई ।

धन्य धन्य कौशिल्या रानी । धन्य धन्य दशरथ गुणखानी।
जाके राम सरिस सुत भयऊ । अब का भव वैभव रहि गयऊ।
अस सब कहहिंविविध विधिवानी । दशरथ भाग्य न जाय बखानी।
पुनि कोउ कहहि परम विज्ञानी । परच्योहमहिं सबको अस जानी।
जनक सुकृत मूरति वैदेही । जासु प्रभाउ विदित नहिं केही।
हम सब धन्य जनकपुर बासी । लखे भूप दोउ पुण्य प्रकासी।
कोउ तिय कहै सुनै सखि बानी । सुंदर जोरी जस मुनि आनी।
तैसहि युगुल कुँवर अति लोने । दशरथ सँग आये मिठलोने।
और हजारन राजकुमारे । तिनके सरिस न परे निहारे।
यहि विधि करहिं परसपर बाता । सुख न समात विलोकि बराता।
बरषहिं सुमनस सुमन अपारा । चढ़े विमानन देहिं नगारा।
दोहा—जय मिथिलापति अवधपति मच्यो गगन महि शोर ।
उपर अमर अधजन नगर, रह्यो न बाकी ठौर ॥

चौपाई ।

करत बराती हास विलासा। आये सकल सुखद जनवासा।
निरखे सब अनूप जनवासा । सत्य सत्य जनु स्वर्ग निवासा।
अवध जनकपुर ते अधिकाना । निरखि देवगन नित सोभाना।

यो राजमंदिर अति भारी। शक्र सदन सम जासु तयारी॥
ा मेरु मंदर सम तुङ्गा। चमकहिं मनहुँ हिमालय शृङ्गा॥
भा सदन अति बन्यो विशाला। सैन सदन सुंदर शशि शाला॥
ज्जन भोजन भवन विभागा। चहुँकित चारु तड़ाग सुबागा॥
ल कंचन की कलित कियारी। झरहिं फुहारन सुरभित वारी॥
रसि भूमि लतिका लहराहीं। फूलि फूलि परिमल पसराहीं॥
ता भवन वर लता विताना। फूल सकल ऋतु के फल नाना॥
जन कुंजन गुञ्जहिं भौंरा। कलरव करहिं विहँग चहुँ ओरा॥
न्यो चौक महँ वसन विताना। कनक रतन रंजित विधि नाना॥

ोहा—चारिहु भाइन के भवन, राज भवन विस्तार।
भिन्न राज कारज भवन, विस्तर कोशागार॥

चौपाई।

ाज शाला बहु वाजिन शाला। सचिवसदन भटसदन विशाला॥
ोहट हाट बनी हाटककी। मरयादा आमन फाटक की॥
कनक कपाटन कलित दुआरा। परिजन भवन परम विस्तारा॥
कमला तीर मनोहर वासा। योजन युगुल बन्यो जनवासा॥
ोरी सघन सुखद अमराई। शाखा क्षिति छ्वै छ्वै छवि छाई॥
अति उतंग चहुँ ओर देवाला। पुर इव गोपुर बन्यो विशाला॥
सचिव सभासद भट सरदारा। सबके पृथकहि पृथक अगारा॥
ामनी जब बरात जनवासा। लखे यथा सुरलोक विलासा॥
कहे जनक कोशलपति पाहीं। यदपि रावरे लायक नाहीं॥
तदपिनिवास करहु नृपराई। गुनि निज सदन सहित सँकराई॥
जो कछु बन्यो सो दिय बनवाई। नाथ देखावत लाजहि आई॥
कह्यो अवधपति हँसि सुख मोई। याते अधिक विकुंठहि होई॥

दोहा—भल रचना कीन्ही नृपति, दिय सुरलोक बनाय।
बसब इतै हम सब सुखी, आप बसौ गृह जाय॥

चौपाई ।

जनक वेगि अव गणक बोलाई । तनक चित्त दै लगन शोधाई ॥
गुरु वशिष्ठ गौतम मुनि काहीं । ज्योतिष के आचारज आहीं ॥
सतानंद आदिक मुनिराई । रचहु समाज आज उत जाई ॥
कारि सिद्धांत लगन महिपाला । फेरि करहु व्यवहार विशाला ॥
याचक बहु याचन विधि कीना । दान होत दाता आधीना ॥
तुम दाता विदेह महिपाला । हम राउर याचक यहि काला ॥
आये अमित नरेश कुमारा । अव सबको नृप आप अधारा ॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू । मिटिहै अवशि सकल [illegible] ॥
सुनत सयुक्ति अवधपति वानी । भूप विदेह महा मुद मानी ॥
बोल्यो मंद मंद मुसक्याई । का क्षति जहँ वशिष्ठ मुनिराई ॥
अस कहि माँगि विदा मिथिलेशा । वंदन कारि पुनि चल्यो [illegible] ॥
जायनिवास विदेह उदारा । पठयो विविध भाँति सत्कारा ॥

दोहा–सुमति सचिव गौतम सुअन, ल्याये सब सत्कार ।
दियो बरातिन वास वर, यथा योग आगार ॥

चौपाई ।

सुखी वरात वसी जनवासा । लहे सकल जनु स्वर्ग विलासा ॥
कनक कलश कोपर बड़ थारी । कूंड कुंभ मंजूषा झारी ॥
भरि भरि भोजन पान प्रकारा । सुधा सरिस पकवान अपारा ॥
पुहुप विभूषण रतन समेतू । विविधभाँति फल सुधा निकेतू ॥
विविध भाँति की बनी मिठाई । वस्तु अमित घृत पक्क सोहाई ॥
विविध भाँति के रुचिर अचारा । लेह्य चोष्य वर पेय प्रकारा ॥
भोजन योग वस्तु बहु ओरा । जे नरलोक माहँ शिरमौरा ॥
जौन वस्तु प्रिय देवन काहीं । दुर्लभ जे महि लोकहि माहीं ॥
सकल बरातिन बसन अपारा । रह्यो जौन जस लघु बड़ पारा ॥

नक रजत रंजित जरतारी। तन धारक पट मुकुत किनारी ॥
लखि भूपति देव सिहाहीं। खान पान धारण मनमाहीं ॥
था योग जस जौन वराती। अति उत्तम नृप कहँ सब जाती॥
ाहा–मंडप कुसुमन के विविध, पुहुप फरस विस्तार।
और पदारथ मोद प्रद, कहँ लग करौ उचार ॥

चौपाई।

रि भरि काँवरि सुघर कहारा। तिमि भरि शकटनऊंट अपारा॥
तानंद अरु सचिव लेवाई। कोशलपालहि नजर कराई ॥
ीन्हे पूरि वरातिन काहीं। रही कछुक अभिलाषा नाहीं ॥
ृपति हेत पदारथ जेते। सादर लै बांटे नृप तेते ॥
विश्व उदार शिरोमणि राऊ। लघु वड़ जान्यो एकहि भाऊ ॥
ततानंद अरु मंत्रि सुदावन। आये अवधनाथ ढिग पावन ॥
तिन आगे चिउरा दधि राखे। बोले वचन जनक जस भाखे ॥
ोरि पाणि युग नावत शीशा। जनक कह्यो सुनु अवधअधीशा ॥
दधि चिउरा उपहार हमारा। लेहु कृपा करि अवध भुआरा ॥
अवध विभव वासव नहिं तूलै। किमि सतकार करौं सुख मूलै ॥
जो कछु विभव नरेश हमारा। सो सब अहै विशेषि तुम्हारा ॥
सुनत विदेह वचन नृपराई। दधि चिउरा लै शीश चढ़ाई ॥

दोहा–सादर बोल्यो अवधपति, कहि प्रणाम मुनि मोर।
पुनि विदेह सों अस कह्यो, सकल अनुग्रह तोर ॥
अहहु महात्मा ज्ञानि वर, निमिकुल पंकज भानु।
यह प्रसाद सब रावरो, भव भागवत प्रधानु ॥
सतानंद अरु सचिव को, कहि सादर यहि भाँति।
विदा कियो दशरथ नृपति; करि प्रणाम मुद माति ॥
भोजन काल विचारिकै, उठन चह्यो महिपाल।

हल्ला परयो बरात में, यकबारहिं तेहि काल॥
रामलषण लै संगमें, दशरथ दरशन हेत।
आवत विश्वामित्र अब तुरित गाधि कुलकेत॥
उतै मध्य दिन शुभ समय, जानि गाधिकुल चंद।
चल्यो अवधपति मिलन हित, सहित लषण रघुनंद॥

कवित्त।

भोजनकरतरह्योभोजनविसारिधायोपानकोकरतजोईपानविसरा
सोवतरह्योजोवैसेहीसोउठिधायोआसुमज्जनकरतधायोनींकेनन्हा
करतहतोजोकामजौनजौनजोईजनपरतअवाजकानतोनहींभुलायो
सकलबरातमाहींचारोंओरशोरछायोरघुराजआयोआजरघुराज
रामसखाजेतेरहैंतेतेसबधायधाय नगरकढ़तरामलषणकोलीन
नामलैलैआपनेबतायनिजकामधामबापकोबतायकहैंआपहमैंन
मुनिमखराखिबेकोजबतेकढ़ेहोमीत हमकोनकाहेएकपातीपठै
रघुराजव्याहहोतह्वैगईबेलंदआँखेंमिथिलानिवासिनमिताईनईकीन्हे
खायोएकसाथअरुखेलेएकसाथहीमेंसाथसाथशैनकीन्हेसैरत्यागि
मातुपितुमानिएकभेदनहिंराखेनेकटारेनाहिंटेकनाविवेकना
अबदिनदशतेनिकरिअवधूतसंगमिलतमिजाजनाहिंकोशिककुमा
तूरिकेपुरानोधनुहाकोआजरघुराजभूलिगेहमारीसारीयारीप्या
दोहा—प्रेम लपेटे अटपटे, सुनि सखान के बैन।
मुनि सकोच वश नहिं भनत, विहँसत राजिव नैन॥
कीन्ह्यो शयन प्रवेश नव, राम लषण मुनि संग।
जुरे अवध वासी सकल, मच्यो महा मुद रंग॥

चौपाई।

[illegible] चरन कोउ आपनि शाला। केहि सहित [illegible] भुआला।
[illegible] सदन मदन छवि धामा। [illegible]

गदगद गर रोमांचित देहा। वचन कढ़त नहिं अधिक सनेहा॥
निरखहिं राम लषण मुख चंदा। विते कल्प मनु मिल्यो अनंदा॥
कह्योनृपहिकोउभरयोउमंगा। आवत राम लपण मुनि संगा॥
तात रहे भूपति ज्यौनारे। राम लषण कहँ लखन पधारे॥
भई भीर दशरथ के द्वारे। निकसत जन करि जोर निकारे॥
भरत शत्रुहन अति अतुराई। आय गये सुनि राम अवाई॥
आयो तहँ निषादपति आसू। वाढ्यो रघुपति दरश हुलासू॥
आये रघुकुल राज कुमारा। राम दरश लालसा अपारा॥
राम लषण की सुनत अवाई। गुरु वशिष्ठ आये हरपाई॥
गुरु वशिष्ठ अरु कौशल पाला। सहित निषाद भरत रिपुशाला॥

दोहा—चले लेन आगे कछुक, कौशिक की अगुवानि।
मनों महा सुख सिंधु में, हिले जन्म धनि जानि॥

चौपाई।

उत ते आये गाधि कुमारे। सहित युगल दशरत्थ दुलारे॥
इत ते करि वशिष्ठ मुनि आगे। राज समाज गई अनुरागे॥
विश्वामित्र वशिष्ठहि देखी। कियो प्रणाम महा मुद लेखी॥
पूछि परस्पर मुनि कुशलाई। वार हि वार मिले सुख पाई॥
तेहि अवसर आये दोउ भ्राता। गहे दौरि गुरु पद जलजाता॥
आशिष दै वशिष्ठ मुनिराई। लियो दुहुँन कहँ अंक उठाई॥
चूमि वदन सूँघ्यो पुनि शीशा। चिरजीवहु अस दीन अशीशा॥
निरखि गाधिसुत कोशलराऊ। गिरि गहि रह्यो गाढ़ युग पाऊ॥
दै अशीप मुनि चहत उठाई। उठत न भूप प्रेम अधिकाई॥
जसतस के मुनिनृपहि उठायो। पुनि पुनि मिलत नैनजल छायो॥
गदगद कंठ कढ़त नहिं वाता। खडो जोरि नृप कर जलजाता॥
पूछत कुशल पुलकि मुनि नाहा। वहत भूप दृग अंबु प्रवाहा॥

दोहा—धनुप यज्ञ पुत्रेष्टि करि, कौशिक यज्ञ कुमार।
आय आजुही जनु दियो, युगुल कुमार उदार॥

चौपाई।

जस तस कै नृप सुरति सम्हारी। बोल्यो वचन वहत दृग
नाथ कृपा फल मोहिं दरशायो। राम लपण मैं आजुहि
जो कछु कीरति सुगति बड़ाई। सुनियत राम लषण इत
सो तुव पद पंकज प्रभुताई। द्वितियभाँतिनहिं सजति
तुम समान को दीन दयाला। दीन्ह्यो मोहिं देखाय दो
तापर सुयश प्रताप बड़ाई। जनक वंश महँ व्याह
तुम सम सज्जन जे जग माहीं। तिन कहँ यहअचरज
अस कहि पुनिपुनि वंदतचरणा। दशरथ हर्ष जाय नहिं
राम लपण पुनि दोउ सुख साने। पिता चरण पंकज लपटाने
लिय उर ललकि लगायभुआला। तुलै न ब्रह्म मोद तेहि का
अज महेश ध्यावत जेहि काहीं। शेश वरणियश पार न
नेति नेति जेहि वेद बखाना। वेद विबुध मुनि कारक जाना

दोहा—ताहि गोद लै अवधपति, नैनन नीर बहाय।
कहत गाधि सुत को कृपा, गयो पूत मैं पाय॥

चौपाई।

गद्गद गर कछु बोलि न आवत।पुनि पुनि तन फल पनस
मनहुं विरंचि खेलावन हेतू। लियो अंक रवि शशि सुत
मनु वत्सल रस परम निशंका। कीन्ह्यो दास्य शिंगारहि
मनु कश्यप आश्विनी कुमारा। लीन्हे अंक अनंद अपारा
चूमत मुख सूंघत पुनि शीशा। गद्गद गर नहिं गदत
सुमनस सुमन वरपि झरि लाये। दून दुंदुभी दिशन बजाये
भरत शत्रुहन पुनि दोउ भाई। परे चरण रघुपति के

ाम दुहुँन उर लियो लगाई । बार बार दृग बारि बहाई ॥
ारत चरण किय लपण प्रणामा । सो दिय आशिप पूजे कामा ॥
ुिपुहन लपण चरण शिर नाये । परम प्रमोद बंधु दोउ पाये ॥
ुिपुहन भरत दौरि पुनि जाई । कौशिक चरण गहे हरपाई ॥
ाधिसुअन दिय आशिरवादा । सुखी रहौ ध्रुव भुव मरयादा ॥

दोहा–सखा सखा कहि दौरि पुनि, मिले निपादहि राम ।
मिलन देखि रविरथ रुक्यो भयो दून सो याम ॥

कवित्त ।

गुरुजनजेते रहे परिजनजेते रहे पुरजनजेते रहे मंत्री सरदार हैं ।
जेते संबंधीजेते खेलन प्रबंधी जेते और अनुबंधी रहे भूपन कुमारहैं॥
रघुराजताहीक्षणचरितकियोकृपाल मिलेसबहीकोजानेहमहींपियारहैं
काकाकहिबाबाकहिभाईकहिबंधुकहिमीतकहिसखाकहिहितूकहियारहै

दोहा–यहि विधि सब सों मिलि तहां, पितु मुनि बंधु समेत ।
जाय बितान तरे मुदित, बैठे कृपा निकेत ॥

चौपाई ।

कनक सिंहासन युगुल मँगाये । गुरु वशिष्ठ कौशिक बैठाये ॥
चापत चरण महीपति बैठ्यो । मानहुँ मोद महोदधि पैठ्यो ॥
निकट बैठ तहँ चारिउ भाई । राजकुमार समाज सोहाई ॥
देखत सुछबि लहत अहलादा । सायुध ठाढ़ो राज निपादा ॥
जबते राम लपण दोउ भाई । किये प्रवेश बरातहि आई ॥
तबते बिरह ताप दुखदाई । मिटी मेघ जिमि मारुत पाई ॥
सबके हिय नहिं हर्ष समाई । दशरथ दशा जाय किमि गाई ॥
जस तस के धरि धीरज राजा । बोल्यो कौशिक सों तजि लाजा ॥
गृह ते मोहिं बोलाय पठायो । प्रभु शासन शिर धरिइतआयो ॥
चारिहु कुँवर रावरे केरे । मैं नाहिं जानहुं हे मुनि मेरे ॥

उचित होय सो शासन दीजै। मोहिं अपनो सेवक गुनि ली
पालै पोषै जो जेहि काहीं। सो ताको पितु संशय ना
दोहा–राजराजमुनि के बचन, सुनि कौशिक मुसक्याय।
सुखसानी वानी कही, मनमानी मुनिराय॥
मखरक्षण हित माँगि मैं, ल्यायों युगुल कुमार।
तुमहिं समर्पण करत ते, लीजै अवध भुआर॥

चौपाई।

अस कहि राम लषण गहि हाथा। सौंप्यो नृपहि मुदितमुनिनाथा
दशरथ कह्यो न मैं अब लैहों। दीनवस्तु नहिं घर लैजैहों
राउर सुत रह राउर पासा। आप कृपावश मोहिं न आसा
मुनि मुसक्याय कही तब वानी। राउर सुत सब के सुखदानी
सबके निकट भिन्न सबही ते। कबहुँ न टरत हमारे हीते
को अस जग महँ भूप सुजाना। इनहिं छोड़ि लागे प्रिय आना
जगत महा प्रिय जग हितकारी। जे इन लखत तासु हृद नारी
धन्य धन्य तुम अवध अधीशा। पायो सुत दाया जगदीशा
अब यह शासन मम सुनि लीजै। चारिहु कुँवर संग महँ कीजै
भोजन भवन तुरंत सिधारी। असन करहु लै पुत्रन चारी
हम वशिष्ठ पुनि; आउब काली। करब विवाह उछाह उताली
अस कहि कौशिकमुनिसुखसेतू। गये वशिष्ठ समेत निकेतू
दोहा–उठ्यो भूप भोजन करन, संयुत चारि कुमार।
चले राजवंशी सकल, संग करन ज्योंनार॥

छन्द चौबोला।

भोजन करन लग्यो भुआलमणि भोजन शाला जाई।
आगे पुरट पटन बैठायो चारिउ भाइन काहीं॥
सिगरे राजकुमार और तहँ बैठे आसन में—

बैठ चक्रवर्ती चामीकर चौकी महँ मधि ठोरे ॥
कनक थार कंचन भाजन भल भरि भरि व्यंजन नाना।
प्याले पुरट विशाले जल भरि ल्याये सूद सुजाना ॥
कंठन कठुले कड़े करन में हीरन जड़े अपारे।
सूपकार शुचि पहिरि लसत युग पीतांवरन पखारे ॥
यथा योग पुनि यथा योग रुचि परुसे भोजन मीठे।
अमृत लगत आगे जिन सीठे कबहुँ न खात उबीठे ॥
दै वलि वैश्वदेव अचमन करि भोजन विधि निरधारी।
भापि सबै लक्ष्मीनारायण खान लगे सुख धारी ॥
भोजन करत जात भूपतिमणि लखत लपण अरु रामै।
पूछत कौन भाँति मख राखे कार निश्चर संग्रामै ॥
कौन भाँति ताडुका सँहारी लगी न डर लखि घोरा।
सुनियत गौतम नारि प्रगट भै परसि पाउँ पुनि तोरा ॥
कौन उपाय पुरारि पिनाकहि भंज्यो मध्य समाजा।
कहँ पायो इतनो वल लालन जहाँ बली सब राजा ॥
प्रभु मुसक्याय कह्यो पितु मैं नहिं जानहुँ कारण कोई।
आप प्रताप कृपा कौशिक की मोर जोर यतनोई ॥
कौन कलेऊ देत रह्यो तोहिं किमि सोये तृण सेजू।
चले चरण कोमल कठोर महि मुनि कसक्यो न करेजू ॥
वन वन आतप बात सहत वहु व्यथा न भै तन माहीं।
को सोपति सब भांति कियो तव घरके कोउ सँग नाहीं ॥
प्रथम लपण लरिकाई के वश कहे बैन अतुराई।
पिता अवध ते कढ़त महा मुनि विद्या युगुल पढ़ाई ॥
का कहिये विद्या प्रभाव पितु भूख प्यास नहिं लागी।
थाक नींद आलस्य अबलता हमरे तन ते भागी ॥

राम कह्यो सोपति सब जैसी कौशिक करी हमारी।
तस नहिं कीन्हीं अवध महल में त्रिसत साठि महतारी॥
जानि परो नहिं हमहिं विपिन दुख बरहुते सुख अधिकाने।
जिमि राखतीं पलक नैनन तिमि राख्यो मुनि भगवाना॥
सुनि भूपति करनी कौशिक की महामोद मन मान्यो।
बारहि बार सराहि पुलकि तन समाधान उर आन्यो॥
यहि विधि भोजन करत सुतन युत वदत वचन सुख साने।
करि आचमन उठे अवनीपति आनँद माहिं अघाने॥
धोय चरण कर पहिरि वसन कछु शयन सदन नृप गयऊ।
इते राम लै बंधु सखा सब बैठ प्रमोदित भयऊ॥
पूछन लागे कथा सखा सब भरत लाल करि आगे।
कहन लगे प्रभु चरित कियो जस सहज लाज रस पागे॥
हँसि बोल्यो कोउ राम बिवाहहु काहे जनक कुमारी।
जहँ चाहहु तहँ तुम पषाण ते लेहु प्रगट करि नारी॥
सुनत हाँस रस हँसे सखा सब प्रभु नेसुक मुसक्याने।
लषण कही तुम प्रगटत पेखे सब थल नारि पषाने॥
कोउ कह मारि नारि निश्चर को रसिक नाम किय हानी।
हरि हँसि कह्यो हते पापिनि के हानि भई सुखखानी॥
यहि विधि हास विलास करत प्रभु सखन संग युत भाई॥
धावन चलि तब खबरि जनायो मिथिलारान जनाई॥

दोहा—घटिका द्वै बाकी दिवस, जानि उठ्यो अवधेश।
सभा सदन बैठ्यो हुलसि, सुनि आवनि मिथिलेश॥

छंद चौबोला।

परिचर बोलि कह्यो कोशलपति सजहि [illegible] कोई।
आवत सभा देव निमिकुलमनि [illegible]

मंत्री सचिव सुभट सरदारन राजकुमारन काहीं।
कुल के सकल वृद्ध रघुवंशी ल्याउ लेवाय इहांहीं ॥
डेरन डेरन दौरि दूत सो शासन दियो सुनाई।
सजि सजि साज सबै रघुवंशी आये सभा सोहाई ॥
युगुल सिंहासन मणिन जटित तहँ सभा मध्य धरवाये।
तैसहि युगुल सिंहासन सन्मुख धरवाये छवि छाये ॥
तिनते लघु पुनि पंच सिंहासन सन्मुख सुभग सोहाये।
निमिवंशिन रघुवंशिन आसन यथा योग्य लगवाये ॥
राजकुमार सबै रघुकुल के जस जस आवत जाहीं।
यथायोग्य अपने अपने थल बैठत जात सोहाहीं ॥
सादर लै सुमंत बैठावत यथा राज मरयादा।
सचिव मुसाहिब नृप सरदारन बदत भूप धनि बादा ॥
जुरे सभा जित सब रघुकुल के दशरथ के दरबारा।
राज विभूति विराजि रही वर राज समाज अपारा ॥
तेहि अवसर आये रघुनंदन सँग सुंदर त्रै भाई।
माथे मुकुट मणिन के गाथे भाथे कंध सोहाई ॥
जगमगात जामा जरकस को कसि कम्मर रतनाली।
डारे ढालन में करवालन ढालन पीठि विशाली ॥
चरण वसन मणि जड़ित उपानहु वाम पाणि धृत चापा।
दक्षिण कर सुंदर शर सोहत प्रगटत परम प्रतापा ॥
कानन कुंडल मंडल मंडित आनन शशि मदगारी।
केसरि रेख विशाल भालमें श्याम अलक मनहारी ॥
पंच मणिन की अति विशाल उर लसत माल छवि जाला।
भुज अंगद कर कटक विराजत कटि कटिबंध विशाला ॥
मणि मंजीर हीर के मंडित पद पंकजन सोहाहीं ॥

मनु शृँगार रस धारि चारि वपु आवत वत्सल पाहीं।
चारि चारि चारहु के चामर चलत चाहि चहुँ ओरा।
उदैमान मनु युग रवि युग शशि भ्राजत भूप किशोरा॥
आये सभामध्य रघुनायक ठाढ़ी भई समाजा।
किये प्रणाम पिता के पद गहि आशिष दीन्ह्यो राजा॥
बैठे कनकासन महँ सनमुख सभा प्रभा महँ पूरी।
धावन धाय आय तेहि अवसर कह्यो जनक नहिं दूरी॥
पठयो बेगि सुमंतहि दशरथ ल्यावहु आसु लेवाई।
जाय सुमंत विदेह भूपसों कह्यो वचन शिरनाई॥
महाराज मिथिलेश कुँवर युत आसुहि धारिय पाऊ।
तुम्हरे दरश आश करि बैठ्यो सभा सु कौशलराऊ॥
सुनत विदेह बचन मंत्री के सपदि सैन चलवायो।
मैं आवत हौं आसु उतै अब अस कहि सचिव पठायो॥
गे अरगन बाजिन की राजी रथ यूथन तजि द्वारे।
चलो सुखासन चढ़ि मिथिलापति चहुँकित निमिकुल वारे।
सुनि नकीब को शोर जोर तहँ अवधनाथ सुखमानो।
करि चारिउ कुँवरन को आगे चल्यो लेन अगवानी॥
उत लक्ष्मीनिधि को आगे करि निमिकुल सहित समाजा।
मिलन हेत दशरथ के आयो वर विदेह महराजा॥
सभाद्वार लौं जाय अवधपति निमिकुल कुमुद मयंके।
करि प्रणाम सुखधाम प्रेम वश लियो भुजन भरि अंके॥

सोरठा--कियो विदेह प्रणाम, महाराज अवधेश को।
पूछि कुशल तेहि ठाम, मोद मगन दोऊ भये॥

छंद चौबोला।

दीनबंधु पुनि बंधु चारिहूँ कियो विदेह प्रणामा।

अजनंदन को पुनि किय बंदन नंदन जनक ललामा ॥
पंच कुमार चले आगे कछु पाछे भूपति दोऊ ।
सोछवि देखि मगन आनँद महँ दोउ कुल के सब कोऊ ॥
मनहुं ज्ञान अरु प्रेम रूप धरि संग पंच रस लीन्हे ।
मिलत परस्पर अति प्रमोद भरि निज अधिकारहि चीन्हे ॥
उभे उच्च सिंहासन में दोउ बैठे भूप समाना ।
लघु सिंहासन पंच विराजे पांचौ कुँवर सुजाना ॥
अपने दहिने दिशि बैठाये दशरथ निमिकुल राजे ।
आप विदेह बाम दिशि बैठे गुनि मरयादा काजे ॥
बैठ विदेह ओर निमिकुल के यथा योग सरदारा ।
दशरथ ओर बैठ रघुकुल के जेहि जस रह अधिकारा ॥
अतरदान अरु पानदान बहु रतन सुमन के हारा ।
ल्याय सुमंत ठाढ़ भो आगे धरि पन्ना के थारा ॥
कौशलपति निज पाणि पान दिय सहित सनेह विदेहै ।
पुनि निज हाथन अतर लगायो मिथिलापति के देहै ॥
पितु रुख लखि उठिकै रघुनंदन जनकहि अतर लगायो ।
निज कर लै विदेह को सादर प्रभु तांबूल खवायो ॥
पुनि उठि भरत पाणि अपने सों सुमन माल पहिरायो ।
लक्ष्मीनिधि के राम आय पुनि रतन माल गल नायो ॥
अतर लगायो भरत अंग महँ बीरा लषण खवाई ।
शत्रुशाल सिगरी निमिवंशिन किय सतकार बनाई ॥
प्रतीहार आयो तेहि अवसर मुख जय जीव सुनाई ।
विश्वामित्र वशिष्ट मुनिन की दियो सुनाय अवाई ॥
ोउ भूपति चले लेन अगवाई ।
कहँ द्वार देश लौं जाई ॥

विश्वामित्र वशिष्ठ चरण महँ पंच कुमारन डारी।
किये दंडवत दोउ नरनायक कहे नाथ पगु धारी॥
लै दोउ मुनिनायक नर नायक सिंहासन बैठारे।
सविधि दुहुँन को पूजि परसि पद कह धनि भाग हमारे।
लहि शासन निजनिज सिंहासन आसन किये भुआला।
मनहुँ विवेक धर्म ढिग आये ज्ञान विज्ञान विशाला॥
पाँचहु कुँवर बैठ कनकासन मुनि नृप के मधि माहीं।
युगल छत्र क्षिति नाथन माथे चमर चलत चहुँ घाहीं॥
निमिकुल रघुकुल को समाज लखि दोउ मुनि बैन उचारे।
धनि कौशलपति धनि मिथिलापति को नृप सरिस तुम्हारे।
कोटिन वर्ष व्यतीत लहे तन कबहुँ न अस मुद टेरे।
यथा दराज समाज आज हम सम समधो दृग देरे॥
कहहु विवाह उछाह लखन कब अब सब भव अभिलाषे।
दोउ नृप जब कहँ लगन शोधिये तब ह्वैहै शिव साषी॥
का पूछहु हमसे दोउ मुनिवर यह सब हाथ तुम्हारे।
निमिकुल रघुकुल तुव अधीन अब नहिं शिर भार हमारे॥
कह्यो वशिष्ठ काल्हि कौशलपति जनकनिवास सिधैहैं।
तहँ हम कौशिक सतानन्द मिलि लगन विचारि बतैहैं॥
यही कियो सिद्धांत उभै नृप सुखी भये सब लोगू।
माँगि विदेह विदा दशरथ सों चल्यो भवन बिन शोगू॥
द्वार देश पहुँचाय अवधपति संध्या करन सिधारे।
निज निज भवन गवन कीन्ह्यो पुनि नाहिं बंधु कुमारे॥
दो०—संध्या करि फिरे तहाँ, किये बिआरी आप।
[illegible]न शयन कीन्हे सुखो, बिनु पुनि नाहिं भार॥

छन्द चौबोला।

गये विदेह गेह दशरथ के सने सनेह सुखारी ।
कियो शैन भरि चैन रैन महँ संध्यादिक निरधारी ॥
ब्रह्म महूरत उठ्यो महीपति ब्रह्म निरूपण कीन्ह्यो ।
प्रातकृत्य करि कीन्ह्यो मज्जन सज्जन सँग मन दीन्ह्यो ॥
करिके ज्ञान विज्ञानहु साधन संध्या हरि विधि पूजा ।
मंडित भयो सभा मंदिर महँ कौन तासु सम दूजा ॥
सतानंद अरु सचिव सुदावन धावन पठै बोलायो ।
पुनि वशिष्ठ अरु विश्वामित्र बोलावन दूत पठायो ॥
गौतम याज्ञवल्क्य आन्यो तहँ भई मुनीन समाजा ।
आये जनक गनक सिद्धांत ज्ञान त्रिकालहु काजा ॥
सतानंद सों कह्यो जनक तब आसुहि दूत पठाओ ।
सांकासीनगरीको वासी कुशध्वज को बोलवाओ ॥
मम लघु भ्राता अतिशय ज्ञाता लै रनिवास सिधारे ।
सांकाशी शोभा लखि मन में पुहुप विमानहुँ हारे ॥
इच्छुमती सरिता चहुँ दिशिते घेरे दुर्गम दुर्गा ।
वस्यो कुशध्वज तेहि पुर जबते रक्षति दिन दिन दुर्गा ॥
सतानन्द देखन तेहि चाहौं यदि सुख शामिल होवै ।
करैं राम दशरथ वंधुन युत सिय विवाह हग जोवै ॥
सुनि विदेह के वचन पुरोहित चारण चारि बोलायो ।
वेगवंत दै चारि तुरंगम शासन सपदि सुनायो ॥
यथा वासवानुज बोलवावत वासव दूत पठाई ।
तथा चारि चारण पठवाय विदेह बोलायो भाई ॥
तरल तुरंग दूत चढ़ि धाये गये पुरी संकासी ।
करि वंदन कुशकेतु चरण गहि कहे वचन सुखरासी।

नृप मिथिलेश जेठ भ्राता तुव दै निदेश हम काहीं ।
आप बोलावन हेत पठायो त्वरा विवश खत नाहीं ॥
सुनि मिथिलेश निदेश शीश धरि लै सिगरो रनिवासा ।
सैन साजि चतुरंग चल्योचढ़ि स्यंदन परम प्रकासा ॥
आयो जनक नगर अति पावन जनकहि खबरि जनायो ।
सुनत अनुज आगमन अनंदित अवनीपति बोलवायो ॥
शीरध्वज महराज सभा महँ वीर कुशध्वज आयो ।
सतानंद पद वंदन कीन्ह्यो जनक चरण शिर नायो ॥
उठि अनुजहि मिलिदैआशिषबहु निज आसन गहि पानी ।
शीरध्वज महराज कुशध्वज बैठायो मुद मानी ॥
कुशल प्रश्न पुनि पूछि नेह भरि पाछिल कथा बखानी ।
आई अवध बरात जौन विधि लियो यथा अगवानी ॥
रनिवासहि रनिवास पठायो मुदित भये दोउ भाई ।
तेहि अवसर यक प्रतीहार कह कौशिक केरि अवाई ॥
मिथिलाधिप दोउ बंधु चले द्रुत सतानंद करि आगे ।
कौशिक पद पंकज गहि प्रणमे कर पंकज अनुरागे ॥
सतानन्द पुनि गाधिनन्द कहँ वंदे वृद्ध विचारी ।
तेहि औसर वशिष्ठ मुनि आये जनक निवास सुखारी ॥
सब मिलि वंदि वशिष्ठ ब्रह्मसुत ल्याये सभा मँझारी ।
कनकासन आसीन किये नृप युगुल महा तपधारी ॥
तैसे सतानन्द बैठाये हेमासन महराजा ।
कीन्ह्यो अति सत्कार बंधु दोउ भये मुदित मुनि [illegible] ॥
चरण पखारि सींचि सिगरे घर युग बधु तिमि करि [illegible] ।
युगुल बंधु तहँ युगुल मुनिन सों कह्यो न [illegible] ॥
दोहा–तुम सरवज्ञ कृपाल दोउ, बर [illegible] ।

शासन युग भ्रातन करहु करैं लगै नहिं वार ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ कह, देवहु आशिरवाद।
धर्म धुरंधर बंधु दोउ, कस न करहु मरयाद ॥
बोलि पठावहु अवधपति, लग्न शोधावहु आज।
व्याह करावहु सीय को, छावहु सुयश दराज ॥

छन्द चौबोला।

विश्वामित्र वशिष्ठ वचन सुनि अतिशय आनँद पाई।
जनक गणक गण बोलि तुरन्तहि शासन दियो सुनाई ॥
शोधि शुद्ध शुभ लग्न व्याह की विश्वामित्र वशिष्टै।
करिकै संमत सतानन्द को लिखहु होइ जो इष्टै ॥
जनक गनक गण सतानंद लै लग्यो विचार करावन।
इतै विदेह सनेह सहित पुनि बोल्यो बैन सोहावन ॥
किहेहु विनै कहिकै प्रणाम मम हम तुव दरशन आसी।
सुनि मिथिलेश निदेश सुदावन रथ चढ़ि चल्यो हुलासी ॥
इतै चक्रवर्ती प्रभात उठि करि नारायण ध्याना।
प्रात कृत्य करि मज्जन कीन्ह्यो दै सज्जन द्विज दाना ॥
सन्ध्या तरपण होम अतिथि पूजन हरि अरचन करिकै।
दै चंदन करि सुर द्विज वंदन बैठ्यो वसन पहिरि कै ॥
आयो सचिव सुदावन द्वारे द्वारप खबरि जनायो।
जानि विदेह मुख्य मंत्री नृप आसुहि पास बोलायो ॥
अभिवादन करिकै अमात्य वर कह्यो वचन कर जोरी।
नाथ विदेह विनै कीन्ह्यो अस दरशन की रुचि मोरी ॥
कौशल नाथ हुलसि हँसि बोल्यो देखन निमिकुल राजे।
हमरेहु अति बाढ़ी अभिलाषा काज अवशि उत आजे ॥
कह्यो सुमन्तहि देहु दुंदुभी हम विदेह पहँ जैहैं।

चारिहु कुँवर रहहिं जनवासे नहिं मम संग सिधैहैं॥
सुनत नरेश निदेश सुमंतहु दियो देवाय नगारा।
सजि आई चतुरंग चमू तहँ सुभट शूर सरदारा॥
चढ़ि स्यंदन गमन्यो दश स्यंदन अजनंदन महराजा
बाजे बाजन बिबिध सोहावन लस्यो निशान दराजा॥
जाय सुदावन कह्यो जनक सों आवत रघुकुल नाहा।
देखन को धाये पुरवासी भरि उमाह मन माहा॥
देखि देखि दशरथ को दृग भरि वंदन करत सराहै।
जासु सपूत पूत रघुपति सो तेहि सम को जग माहै॥
लोकपाल ललकत भुआल लखि त्यों सुरपाल सिहातो।
कौन हाल हेरहु महिपालन अस जन माल बतातो॥
दीनन संपति अमित लुटावत आवत मंदहि मंदा।
गयो विदेह महल के द्वारे करि पुरजन सानंदा॥
सुनत विदेह अवधपति आगम उठ्यो समाज समेतू।
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि लै गमन्यो निमिकुल केतू॥
द्वार देश ते लियो भूप कहँ कियो प्रणाम विदेहू।
कर गहि चल्यो लेवाय सभा गृह सादर सन्यो सनेहू॥
दै आसन दहिने सिंहासन पूछि सकुल कुशलाई।
बैठ्यो लहि निदेश निज आसन मिथिलापति मुद पाई॥
अतर पान मँगवाय सचिव कर बीरी खोलि खवायो।
लै सुगंध सब अंग लगायो किय सत्कार सोहायो॥
तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो शिर नायो नृप कार्डी।
लियो भूप बैठाय प्रीति भरि अपने अंकहि माडी॥
सानंदन कुशध्वज किय बंदन मिले अवधपति ताडी।
जनक अनुज सत्कार कियो पुनि सब रघुबंशिन काडी॥

विश्वामित्र वशिष्ठहि कीन्ह्यो कोशलनाथ प्रणामा।
दियो हुलसि ब्रह्मर्षि भूप को आशिष पूजे कामा॥
बैठि सहानुज सिंहासन महँ कह विदेह वर बानी।
निमिकुल कियो पवित्र राजमणि करिकै कृपा महानी॥
—अस कहि मणि माला विमल, गल मेल्यो मिथिलेश।
कह्यो जोरि कर सों करै, जो अब होय निदेश॥
उठ्यो फेरि कुशकेतु तहँ, लक्ष्मीनिधि हरषाय।
रतन माल रघुकुल जनन, सबन दियो पहिराय॥

छंद चौबोला।

लागे करन विदेह बड़ाई रघुकुल के रणधीरा।
को विदेह सम है वसुधापति वसुधा महँ मति धीरा॥
अवधनाथ बोल्यो विदेह सों जानि समय सुखदाई।
वसुधा महँ है विदित पुरोधा रघुकुलको मुनिराई॥
नाम वशिष्ठ विरंचि पुत्र यह नयकालज्ञ सुजाना।
परम पूज्य इक्ष्वाकुवंश को इनते गुरु नहिं आना॥
सकल कृत्ति को जाननवारो ऋषि वशिष्ठ भगवाना।
विन मोरि इक्ष्वाकुवंश को करै प्रशंस महाना॥
यथा वशिष्ठ पूज्य रघुकुल महँ तैसहि विश्वामित्रा।
वर ब्रह्मर्षि विज्ञान शिरोमणि पामर करन पवित्रा॥
सकल महर्षिन को संमत लै कौशिक अनुमति पाई।
तौ वशिष्ठ इक्ष्वाकुवंश को देइ यथा क्रम गाई॥
विश्वामित्र विनोदित भाष्यो शास्त्राचार समेहै।
कहैं भानुकुल को वशिष्ठ मुनि दूजो कौन बतैहै॥
विश्वामित्र [illegible] रे कह महर्षि यक बारा।
[illegible] वशिष्ठ उचारा॥

विश्वामित्र सहित ऋषि सम्मत गुनि करतार कुमारा।
कह्यो जनक सों सुनौ भूप अब भानुवंश विस्तारा॥
नारायण की नाभि कमल ते मम पितु भो मुख चारी।
पाय कृपा हरि की सिरजी सो सकल सृष्टि संसारी॥
भयो महामुनि पुनि मरीचि के कश्यप नाम कुमारा।
भयो ब्रह्म ते मुनि मरीचि तब अग्रज अहै हमारा॥
भानु भयो कश्यप को नंदन भानु पुत्र मनु भयऊ।
मनु नंदन इक्ष्वाकु भयो पुनि जासु सुयश जग छयऊ॥
यह कुल को है मूल पुरुष सो वस्यो अयोध्या नगरी।
अब लों जो अमरावति के सम नेकु कहूँ नहिं बिगरी॥
नृप इक्ष्वाकु कुमार भयो पुनि कुक्षि नाम महराजा।
भयो कुक्षि के पुनि विकुक्षि नृप सब भूपन शिरताजा॥
पुनि विकुक्षि के भयो बान नृप मही महान प्रतापी।
महाराज अनरण्य भयो पुनि बान पुत्र रिपु तापी॥
जो रावन रण गयो मारि नृप दियो शाप अति घोरा।
मेरे वंश माहँ ह्वै है कोउ सकुल करी वध तोरा॥
भयो फेरि अनरण्य पुत्र पृथु पृथु को पुत्र त्रिशंकू।
विश्वामित्र प्रभाव बसें अबलों दिवि दिपत निशंकू॥
धुंधुमार भो पुनि त्रिशंकु सुत धुन्धु दैत्य को मारो।
धुंधुमार के भयो फेरि युवनाश्व कुमार उदारो॥
भयो फेरि युवनाश्व भूप के मांधाता महराजा।
दशकंधर सों कियो समर जो प्रगट्यो सुयश दराजा॥
मांधाता को सुत सुसंधि भो तेजवन्त महिपाला।
पुनि सुसंधि के भये युगुल सुत सुनहु विदेह भुवाला॥
जेठो भो ध्रुवसंधि दूसरो जेहि प्रसेन [illegible]।

महा यशी ध्रुव जन्यो फेरि सुत भरत नाम वलधामा ॥
भरत भूप के भयो असित सुत राज करन जब लाग्यो ।
उठे शत्रु वरजोर चहूंकित राज छोड़ि नृप भाग्यो ॥
हैहे ताल जंघ शशबिंदु मलेच्छ भये रण शूरा ।
लीन्ह्यो यवन छोड़ाय अवधपुर असित वस्यो वनदूरा ॥
युगल नारि लै सचिव सहित नृप वस्यो हिमाचल जाई ।
गर्भवती नृप की दोउ रानी सवति होति दुखदाई ॥

दोहा-यक रानी को विष दियो, दूजी सवति विचारि ।
गर्भहानि सो जानि जिय, भगी भयाकुल नारि ॥
हिम गिरि में तहँ कहुँ निकट, रह्यो च्यवन अस्थान ॥
च्यवन चरण की शरण भै, कीन्हीं दशा वखान ॥
कालिन्द्री अस नाम रह, कमलाक्षी सुकुमारि ।
मुनि रक्षहु अब गर्भ मम, दाया दीठि पसारि ॥
कह्यो च्यवन मुनि विहँसि तेहि, राज प्रिया भय त्याग ।
तेरे गर्भहि में अहै, महाराज वड़भाग ॥
महा तेज वर विक्रमी, महा वलीन कुमार ।
जनिहै थोरे काल में, गरल करी न प्रचार ॥
कालिंदी जनि शोच करु, विष युत जनि सुत तोर ।
अवध राज करिहै अवशि मारि मलेच्छन घोर ॥

छन्द चौबोला ।

कालिंदी सुनि च्यवन वचन वर निज आश्रम महँ आई ।
मरण भयो तहँ असित भूप को लह्यो विषाद महाई ॥
गर युत जन्यो पुत्र अति पावन ताते सगर कहायो ।
मारि मलेच्छन अवध राज किय जगती महँ यश छायो ॥
भयो सगर के असमंजस पुनि औरहु साठि हजारा ।

खोजत वाजी कपिल शाप लहि भये सकल जरि छारा।
असमंजस असमंजस कीन्ह्यो सरयू बालक बोरे।
दियो निकारि पिता तेहि दोषहि रहे भवन दिन थोरे॥
अंशुमान इव अंशुमान भो असमंजस सुत ख्याती।
ताके भयो दिलीप महीपति सगर नरेश पनाती॥
ताके भयो भगीरथ भूपति जो गंगा महि ल्यायो।
डारि गंगजल साठि हजारन सपदि स्वर्ग पठवायो॥
भयो भगीरथ महाराज के नाम ककुस्थ कुमारा।
वृषभ भयो वासव तापर चढ़ि जीत्यो दैत्य अपारा॥
रघु महराज भये ककुस्थ के को जग तासु समाना।
दान वीर अरु धर्म वीर रण धीर महा बलवाना॥
रघु के भये पुत्र पुरुपादक तेजवंत बलवंता।
सोइ कलमाषहुपाद कहायो लहि गुरु शाप तुरंता॥
ताके भयो सूनु पुनि शंखन भयो सुदर्शन ताके।
अग्निवर्ण पुनि भयो तासु सुत शीघ्रगवन सुत जाके॥
शीघ्रगवन के पुत्र भयो मरुतासु प्रसुश्रुक भयऊ।
अंबरीष पुनि भयो तासु सुत नहुष तासु सुत ननेऊ॥
भयो ययाति नहुष को नंदन सुत ययाति नाभागा।
नृप नाभाग कुमार भयो अज महाराज बड़भागा॥
अज महराज कुमार विदित जग यह दशरथ महराजा।
जासु समान आज नहिं दूसर भुवि भूपन शिरताजा॥
आदिवंश अतिशय विशुद्ध यह धर्म धुरंधर भार्यो।
कहँ लों भाग कहौं दशरथ को यक मुख जाय न भाख्यो।
है इक्ष्वाकु भूप ते अब लों यहि कुल माहिं जितेऊ।
भये सत्यवादी भूपति सब वीर सुधर्म सनेहू॥

तिनके कुँवर राम लक्ष्मण दोउ आप नगर महँ आये।
राम शंभु धनु तोरि सभा महँ संकट सकल नशाये॥
ताते एक वात अब भापहुँ जो मानहुँ मत मोरा।
पैहौ परम अनन्द भूप वर जगै सुयश जग तोरा॥
वीरज शुक्ला सीता कन्या राम व्याह सो होई।
व्याहौ लपणै सुता दूसरी लहै हर्ष सब कोई॥
समकुल सम विभूति सम कीरति सम रति धर्म समाना।
रघुकुल निमिकुल सरिस आदि जग कहौ कौन कुल आना॥
यहि विधि सुनि वशिष्ट की वाणी सकल सभासद हरखे।
देव दुंदुभी दियो गगन महँ सुमन विविध विधिवरखे॥
सुनि मिथिलेश वशिष्ट वचन वर पुलकित हग जल छायो।
जोरि पाणि पंकज वशिष्ट के पद पंकज शिर नायो॥
भयों धन्य मैं सुनि तुव मुख ते यह रघुवंश वखाना।
रघुकुल समकुल कौन दूसरो जान अजानहु जाना॥
परंपरा जो अहै वंश की निमिकुल को मुनिराई।
सतानन्द को चहिय सुनावन ऐसो अवसर पाई॥
सो लै गनकन लगन शोधावत कैसे ताहि बोलाऊँ।
ताते राज समाज मध्य मुनि मैंहीं निज मुख गाऊँ

दोहा–निमिकुल को वरणन कछुक, सुनु मुनि महा प्रभाउ।
जाके जो भूपति भयो, कहत अहौं न दुराउ॥
शाखोचार विवाह में, होत उभै कुल केर।
ताते मैं वरणन करहुं, परी न मुनि कछु फेर॥

छन्द चौबोला।

त्रिभुवन विदित भयो निमि भूपति कृत विक्रम धृत धर्मा।
सकल सुजान प्रधान महायश क्षिति महँ अक्षय वर्मा॥

हमको देहु विदेह नेह युत तब होई भल तोरा ॥
हम नहिं दियो ताहि दुहिता धनु भयो युद्ध तब भारी।
आप प्रताप नाथ मम करते गयो सुधन्वा मारी ॥
लूटि तासु दल चलि पाछे तेहि जाय पुरी संकासी।
करि अभिषेक कुशध्वज को तहँ कियो भूप सुखरासी ॥
हम अरु अनुज हमार कुशध्वज ठानि प्रीति की रीती।
लषण उर्मिला व्याह करैंगे मानहु मुनि परतीती॥
कौन कुँवर अब लषण सरिस मोहिं मिली महीतल माहीं।
लषण योग उर्मिला कुमारी यामें संशय नाहीं ॥
राम सरिस हैं लषण लाल ऋषि परै न भेद विचारी।
तिमि उर्मिला और सीता महँ केहि विधि भेद उचारी ॥
देहौं देहौं देहौं लषणहिं मैं उर्मिला कुमारी।
मति संशय मानहु मन मुनिवर दीजै लगन विचारी॥
बरण्यो वंश डिठाई करिकै क्षमियो मम अपराधा।
तुम रघुकुल गुरु तथा हमारे बुद्धि पयोधि अगाधा॥
मुनि वशिष्ठ तहँ लगे सराहन निमिकुल की बड़ि महिमा।
सुनु महीप मिथिलेश तोहिं सम को महीप है महिमा॥
तब मिथिलाधिराज बोल्यो अस अवध राज सों बैना।
नाथ सनाथ कियो निमिकुल को अब बांछा कछु है ना॥
कहौं कौन विधि जान भवन ते पै जो उचित विधाना।
तौ करवाइय जाय कुमारन मंगल हित गोदाना ॥

दोहा–यतनो कहत महीप के, तेहि अवसर सुख छाय।
सतानंद लै गणक गण कह्यो जनक सों आय॥
सकल ज्योतिषिन ते सहित, शोध्यो लगन विचारि।
आयसु होय सुनाइये, सकल विचार उचारि॥

तिन तन ते मिथि भयो महीपति मुख्य जनक ..
भयो उदावसु तासुतनय पुनि कियो सुरन के कार
भयो नंदिवरधन तिनके सुत ताको तनय सुकेतू।
भयो सुकेत भूप को नंदन देवरात कुल केतू॥
देवरात नृप भयो महाबल सोई हर धनु पायो।
देवरात राजर्षि भयो सुत नाम वृहद्रथ गायो॥
भयो वृहद्रथ के नंदन पुनि महावीर अस नामा।
महावीर के तनय भयो धृति मानधर्म धृति धामा॥
सुधृति भूप के दृष्टकेतु भे तेहि हर्य्यश्व कुमारा।
भयो पुत्र हर्य्यश्व भूप के मरु अस नाम उचारा॥
मरु के भयो प्रतिधक नन्दन तासु कीर्तिरथ भयऊ
पुत्र कीर्तिरथ को जग जाहिर देवमीढ जग जयऊ
देवमीढ के भयो समिध सुत महिधृक समिध कुमार
भयो महीधृक के पुनि नंदन कीर्तिरात बलवारा॥
भयो महारोमा ताको सुत सुवरण रोमा ताको।
भयो ह्रस्वरोमा ताको सुत जानहु नाम पिता को॥
भये ह्रस्वरोमा के हम अरु कुशध्वज अनुज हमारो।
पिता ह्रस्वरोमा हमको मुनि दियो राज संभारो॥
मेरो करि अभिषेक पिता मम सौंपि मोहिं कुश[illegible]
गयो विपिन तप करि तन तजि तहँ गमन्यो [illegible]
युगुल बंधु हम धर्म रीति रचि राज काज सब
भ्रात भ्रात दोउ नेह नहे अति विषम रीति नाहिं
कछुक काल महँ भूप सुधन्वा संकासी को
घेरि सकल मिथिला नगरी को शासन घोर
कमलाशी सीता कन्या निज हर कोदंड कर

देन लग्यो जब विदा जनक नृप दशरथ को सुखछाई।
अवसर जानि कह्यो कौशिक तब वचन हिये हरपाई॥
निमिकुल रघुकुल दोउ अति पावन महिमा कही न जाई।
नहिं समान दोउ कुल के दूसर परै प्रत्यक्ष देखाई॥
यह समान सनबंध धर्म युत दोउ कुल दोउ अनुरूपा।
राम लपण सिय और उर्मिला व्याह उचित अति भूपा॥
निमिकुल ते अब अधिक और कुल अवधनाथ कहँ पैहैं।
तैसहि अब मिथिलेश महीपति रघुकुल तजि कहँ जैहैं॥
ताते मोर विचार होत अस कुशध्वज युगुल कुमारी।
होय विवाह भरत रिपुहन को अनुमति यही हमारी॥
तुव अनुरूप अनूप विश्व महँ दशरथ भूप कुमारा।
निरखत जिनको लोकपाल सब मानत हिय में हारा॥
सदृश त्रिविक्रम विक्रम जिनको अद्भुत देव अकारा।
रंगभूमि महँ राम बाहुबल को अस जो न निहारा॥
ताके अनुजन व्याहि देहु नृप दोउ कुशकेतु कुमारी।
करहु चारिहू राजकुमारन सनबंधी शुभकारी॥
राम जानकी लपण उर्मिला जेहि दिन होइ उछाहे।
ता दिन दोउ कुशकेतु कुमारी भरत शत्रुहन व्याहे॥
दूलह चारि चारि दुलहिन नृप निरखि जनकपुर बासी।
रघुकुल निमिकुल धन्य होइगो हमहुँ लहब सुखरासी॥
ऐसो अहै विचार हमारो पुनि जस तुव मन माहीं।
तुम सम सुमति कबहुँ नहि जग में समय चूकि पछिताहीं॥
सुनि कौशिकके वचन सभासद मुनिजन अति हरपाने।
साधु साधु सब कहैं गाधिसुत मुनिवर उचित बखाने॥
सुनत जनक पुलकित तन हरपित भरि आनँद जल नैना।

तब विदेह बोल्यो हरषि, दोउ ब्रह्मर्षि प्रधान ।
तिनहिं सुनावहु लगन मुनि, जो कछु होय प्रमान ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ सों, सतानंद तब जाय ।
लग्यो सुनावन लगन दिन, गुण गहि दोष विहाय ॥

छंद चौबोला ।

मघा नखत है आजु महीपति सो प्रशस्त नहिं ब्याहू ।
पूर्व फाल्गुनि काल्हि सोऊ नहिं उत्तम होत उछाहू ॥
उत्तर फाल्गुनि परसौं ह्वैहै सो प्रशस्त सब भाँती ।
शोध्यो लगन परम सुखदायक जुरिकै गणक जमाती ॥
कृष्ण पक्ष पंचिमी अहै तिथि मार्गशीर्ष शुभ मासा ।
कन्यादान होय तेहि वासर दोउ कुल लहैं हुलासा ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ लगन सुनि करिकै निमल विचारा ।
दोउ उतरा फाल्गुनी माहिं सिद्धांत लगन निरधारा ॥
कृष्णपक्ष शुभ मास मार्ग यह माधव रूप बखाना ।
अति शुभ कर उत्तरा फाल्गुनी होइ विवाह विधाना ॥
होय विवाह उत्तरा फाल्गुनि यह संमत सब केरो ।
सुनत अवधपति अरु मिथिलापति मान्यो मोद घनेरो ॥
निमिकुल रघुकुल सकल सभासद परिजन पुरजन जेते ।
राम लषण उद्वाह लगन सुनि भये प्रमोदित तेते ॥
कियो विदेह विनय दशरथ सों पितर श्राद्ध करिलीजै ।
पुनि गोदान कराय कुमारन ब्याह विधान करीजै ॥
अति हर्षित इक्ष्वाकुवंश मणि सुनि विदेह की बानी ।
कह्यो जनक सों वचन पुलकि तन देहु बिदा विज्ञानी ॥
पितर श्राद्ध गोदान कुमारन करवावहुं जनवासे ।
भयो लगन सिद्धांत सुखावधि देखन ब्याह हुलासे ॥

षोड़श विधि कीन्हे नृप पूजन अतिथि अनूपम चीन्हे ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ मिले दोउ मुनिजन कीन प्रणामा।
सिंहासन बैठाय देवऋषि दोउ बोले मति धामा ॥
तुव दरशन ते आजु भये मुनि सफल सुनैन हमारे।
तब नारद मुनि मोद भरे मन ऐसे वचन उचारे ॥
राम व्याह की लगन शोधिकै मोहिं करतार पठायो।
मार्ग मास उत्तरा फाल्गुनी वासर लगन सोहायो ॥
तीनों बंधु सहित रघुपति को ता दिन होइ विवाहा।
लगन देखावन व्याज मही इत आयों दरश उमाहा ॥
विधि निदेश तुमसों सब कहि अब राम दरश हित जैहौं।
चारिहु बंधुन को दरशन करि महा मोद नृप पैहौं ॥
अस कहि हरषि बरषि नैनन जल चल्यो देवऋषि आसू।
जहां सहित बंधुन रघुनंदन वर वरात जनवासू ॥
परिजन पुरजन सकल सभासद सुनि नारद की वाता।
कहन लगे सब जनक गणक गण हैं सति अपर विधाता ॥
जनकराज सों विदा होन को अवधराज चित चाये।
सहित समाज राज दोउ सोहत सुर दुन्दुभी वजाये ॥
फैलि गई यह बात सकल पुर परसों राम विवाहू।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारि कहैं सब काहू ॥
यह सनबंध महा सुखदायक जनक सुकृति वैदेही।
दशरथ सुकृत रूप रघुनंदन अपर कौन सम देही ॥
पूरुब हमहुँ पुण्य बहु कीन्हीं भये जनकपुर वासी।
इन नैनन सों राम व्याह अब देखब आनँदरासी ॥
जे जानकी राम छवि देखे तिन कहँ कछु नहिं बाकी।
हमरे भाग विवाह भयो यह गूंगन कृपा गिरा की ॥

नाय चरण शिर जोरि कंज कर कहकौशिक सों बैना।
तुम सम है ना लख्यों न नैना मतिअयना सुखदैना।
अब मोहिं भय ना चित चय चैना का मम सुकृत...
दोहा—धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश ।
विश्वामित्र वशिष्ठहैं, तहँ नहिं लेश कलेश ॥
धन्य धन्य मेरी भई, मुनिवर चारि कुमारि ।
पायो वर त्रयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि ॥
होय एकही संग मुनि, चार कुमारन व्याह ।
शोधि साधि सुबरी सकल, लखो अथाह उछाह ॥

छन्दचौबोला ।

मिथिलापति के कहत वचन अस सभा मध्य इक बारा
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हे जयजयकारा ॥
दीन्हें देव दुंदुभी दिवि महँ फूलन की झरि लाई ।
जयमिथिलेशजयतिकौशलपति यह धुनि दश दिशिछाई
पुनि विदेह सों कह वशिष्ठ मुनि सोई लगन महँ आई ।
पाणिग्रहणकरैंचारिउसुतचारिउवधुनसोहाई ॥
परसौं है उत्तराफाल्गुनिनखत विवाहन योगू ।
बुध वर कहत विवाह लगन शुभ माहि मुद मंगल भोगू॥
भग नामक जेहि देव प्रजापति यहि सम लगन न आना।
यह सुख निरखि कृतारथ हैहैं भूपति सकल जहाना ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ वचन सुनि दशरथ जनक सुखारी ।
प्रेम विवश पुलकित गल गद्गद सके न बैन उचारी ॥
तेहि अवसर विरंचिपठवायो नारदमुनि तहँ आये ।
उठी समाज देवऋषि देखत युगुल भूप सुख पाये ॥
दशरथ जनक परे चरणन में नारद आशिष दीन्हे ।

षोड़श विधि कीन्हे नृप पूजन अतिथि अनूपम चीन्हे ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ मिले दोउ मुनिजन कीन प्रणामा।
सिंहासन बैठाय देवऋषि दोउ बोले मति धामा ॥
तुव दरशन ते आजु भये मुनि सफल सुनैन हमारे।
तब नारद मुनि मोद भरे मन ऐसे वचन उचारे ॥
राम व्याह की लगन शोधिकै मोहिं करतार पठायो।
मार्ग मास उत्तरा फाल्गुनी वासर लगन सोहायो ॥
तीनों बंधु सहित रघुपति को ता दिन होइ बिवाहा।
लगन देखावन व्याज महीं इत आयों दरश उमाहा ॥
विधि निदेश तुमसों सब कहि अब राम दरश हित जैहों।
चारिहु बंधुन को दरशन करि महा मोद नृप पैहों ॥
अस कहि हरषि वरषि नैनन जल चल्यो देवऋषि आसू।
जहां सहित्त बंधुन रघुनंदन वर बरात जनवासू ॥
परिजन पुरजन सकल सभासद सुनि नारद को बाता।
कहन लगे सब जनक गणक गण हैं सति अपर विधाता ॥
जनकराज सों विदा होन को अवधराज चित चाये।
सहित समाज राज दोउ सोहत सुर दुन्दुभी बजाये ॥
फैलि गई यह बात सकल पुर परसों राम बिवाहू।
जहँ तहँ यूथ यूथ जुरि जुरि नर नारि कहैं सब काहू ॥
यह सनबंध महा सुखदायक जनक सुकृति बैदेही।
दशरथ सुकृत रूप रघुनंदन अपर कौन सम देही ॥
पूरब हमहुँ पुण्य बहु कीन्हीं भये जनकपुर बासी।
इन नैनन सों राम व्याह अब देखब आनँदरासी ॥
जे जानकी राम छबि देखे तिन कहँ कछु नहिं बाकी।
हमरे भाग बिवाह भयो यह गूंगन कृपा गिरा की ॥

नाय चरण शिर जोरि कंज कर कहकौशिक सों बै
तुम सम है ना लख्यों न नैना मतिअयना सुखदैना।
अब मोहिं भय ना चित चय चैना का मम सुकृत
दोहा–धन्य धन्य निमिकुल अहै, जहँ दायक उपदेश।
विश्वामित्र वशिष्ठहैं, तहँ नहिं लेश कलेश॥
धन्य धन्य मेरी भई, मुनिवर चारि कुमारि।
पायो वर त्रयलोकवर, निज निज वपु अनुहारि॥
होय एकही संग मुनि, चार कुमारन व्याह।
शोधि साधि सुघरी सकल, लखो अथाह उछाह॥

छन्दचौबोला।

मिथिलापति के कहत वचन अस सभा मध्य इक बारा।
परिजन पुरजन गुरुजन सज्जन कीन्हे जयजयकारा॥
दीन्हें देव दुंदुभी दिवि महँ फूलन की झरि लाई।
जयमिथिलेशजयतिकौशलपति यह धुनि दश दिशि छाई
पुनि विदेह सों कह वशिष्ठ मुनि सोई लगन महँ आई।
पाणिग्रहणकरैंचारिउसुतचारिउवधुनसोहाई॥
परसौं है उत्तराफाल्गुनिनखत विवाहन योगू।
बुध वर कहत विवाह लगन शुभ माहि मुद मंगल भोगू॥
भग नामक जेहि देव प्रजापति यहि सम लगन न आना।
यह सुख निरखि कृतारथ ह्वैहै भूपति सकल जहाना॥
विश्वामित्र वशिष्ठ वचन सुनि दशरथ जनक सुखारी।
प्रेम विवश पुलकित गल गद्गद सके न बैन उचारी॥
तेहि अवसर विरंचिपठवायो नारदमुनि तहँ आये।
उठी समाज देवऋषि देखत युगुल भूप सुख पाये॥
दशरथ जनक परे चरणन में नारद आशिष दीन्हे।

माँगन विदा चहे दशरथ जब चलन हेत जनवासे।
तब कौशिक वशिष्ठ सों भाष्यो मैथिल बैन सुधासे॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविध निबाही।
अहो शिष्य मैं पदरज धारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं॥
बैठहु युगुल राज सिंहासन युगुल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहो भुवाला॥
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नाहिं कछु करौं निहोरा॥
नहिं संदेह प्रभुत्व माहिं कछु तुव पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाष तिहारे॥
तुम प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुल नाथा।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर यक साथा॥
विश्वामित्र वशिष्ठ प्रसन्न भये दिय आशिरबादा।
उभै भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मरयादा॥
जय जयकार किये सिगरे जन नभ महँ बजे नगारा।
छूटी कुसुमावली गगन ते धनि मिथिलेश उदारा॥
यहि विधि तेहि समाज महँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं।
हुलसि अवधपति जोरि कंज कर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर जस आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई।
कियो महा सत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहि जनवासे बरणत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र वशिष्ठ कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पास पसारि सनेहू॥
कौशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।

वारहिं वार विदेह बोलैहैं निज निवास वैदेही ।
ऐहैं सीय लेवावन रघुवर ह्वै ससुरारि सनेही ॥
वारहिं वार विलोकव रामहिं लेव विलोचन लाहू ।
घर घर राम निमंत्रण होई अनुपम सुख सब काहू ॥
कोउ कह राम लपण जोरी जस तैसहि युग नृप ढोटा ।
आये दशरथ संग अवध ते सखि सुन्दर भल जोटा ॥
तव बोली कोउ तू नहिं जानति राम अनुज हैं दोऊ ।
जेठो भरत शत्रुसूदन लघु अस भाषत सब कोऊ ॥

दोहा–कोउ कह मैं अवहीं सुन्यो, भूपति मन्दिर माह ।
होई चारिहु कुँवारि को, चारिहु कुँवर विवाह ॥

छंद चौबोला ।

कोउ कह श्याम राम सम भरतहु रिपुहन लपण समाना ।
चीन्हे चीन्हे चीन्हि परत हैं अस सुंदर नहिं आना ॥
भरत केकईतनय कौशिला रामहि जन्यो पवित्रा ।
लपण शत्रुहन अहैं सहोदर दोहुन जन्यो सुमित्रा ॥
चारिहु कुँवर शील विद्या वल विक्रम विनय अगारा ।
भूप चक्रवर्ती दशरथ के चारिहु चारु कुमारा ॥
अंचल ओडि मनावहिं विधि सों सबै जनकपुर नारी ।
विघन निवारि विवाह करावहु जो कछु पुण्य हमारी ॥
युग युग जीवहिं चारिहु जोरी मिथिला अवध अधारा ।
पुण्य पयोनिधि जनक अवधपति को इनसम संसारा ॥
यहि विधि कहहिं परस्पर वाणी गावहिं मंगल गीता ।
देवी देव मनावहिं प्रतिदिन पुरजन परम पुनीता ॥
आये जे नृप भक्त स्वयंवर ते न गये निज गेहू ।
राम जानकी व्याह लखन को निरखे नगर [illegible] ॥

माँगन विदा चहे दशरथ जब चलन हेत जनवासे।
तब कौशिक वशिष्ट सों भाष्यो मैथिल वैन सुधासे॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविध निवाही।
अहों शिष्य में पदरज धारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं॥
बैठहु युगुल राज सिंहासन युगुल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहो भुवाला॥
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नाहिं कछु करौं निहोरा॥
नहिं संदेह प्रभुत्व माहिं कछु तुव पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाष तिहारे॥
तुम प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुल नाथा।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर यक साथा॥
विश्वामित्र वशिष्ट प्रसन्न भये दिय आशिरवादा।
उभै भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मरयादा॥
जय जयकार किये सिगरे जन नभ महँ बजे नगारा।
छूटी कुसुमावली गगन ते धनि मिथिलेश उदारा॥
यहि विधि तेहि समाज महँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं।
हुलसि अवधपति जोरि कंज कर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर जस आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई।
कियो महा सत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहि जनवासे वरणत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र वशिष्ट कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पास पसारि सनेहू॥
कोशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।

वारहिं वार विदेह बोलैहैं निज निवास वैदेही ।
ऐहैं सीय लेवावन रघुवर ह्वै ससुरारि सनेही ॥
वारहिं वार विलोकव रामहिं लेव विलोचन लाहू ।
घर घर राम निमंत्रण होई अनुपम सुख सव काहू ॥
कोउ कह राम लषण जोरी जस तैसहि युग नृप ढोटा ।
आये दशरथ संग अवध ते सखि सुन्दर भल जोटा ॥
तव बोली कोउ तू नहिं जानति राम अनुज हैं दोऊ ।
जेठो भरत शत्रुसूदन लघु अस भाषत सव कोऊ ॥

दोहा—कोउ कह मैं अवहीं सुन्यो, भूपति मन्दिर माह ।
होई चारिहु कुँवारि को, चारिहु कुँवर विवाह ॥

छंद चौवोला ।

कोउ कह श्याम राम सम भरतहु रिपुहन लषण समाना
चीन्हे चीन्हे चीन्हि परत हैं अस सुंदर नहिं आना ॥
भरत केकईतनय कौशिला रामहि जन्यो पवित्रा ।
लषण शत्रुहन अहैं सहोदर दोहुन जन्यो सुमित्रा ॥
चारिहु कुँवर शील विद्या वल विक्रम विनय अगारा ।
भूप चक्रवर्ती दशरथ के चारिहु चारु कुमारा ॥
अंचल ओडि मनावहिं विधि सों सवै जनकपुर नारी ।
विघन निवारि विवाह करावहु जो कछु पुण्य हमारी ॥
युग युग जीवहिं चारिहु जोरी मिथिला अवध अगारा ।
पुण्य पयोनिधि जनक अवधपति को इनसम संसारा ॥
यहि विधि कहहिं परस्पर वाणी गावहिं मंगल गीता ।
देवी देव मनावहिं अनिदिन पुरजन परम पुनीता ॥
आये जे नृप [illegible] ते न गये निज गेहू ।
[illegible] व्याह उछाह को [illegible] ॥

माँगन विदा चहे दशरथ जब चलन हेत जनवासे।
तब कौशिक वशिष्ठ सों भाष्यो मैथिल बैन सुधासे॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविध निवाही।
अहों शिष्य मैं पदरज धारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं॥
बैठहु युगुल राज सिंहासन युगुल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहौ भुवाला॥
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नाहिं कछु करौं निहोरा॥
नहिं संदेह प्रभुत्व माहिं कछु तुव पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाप तिहारे॥
तुम प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुल नाथा।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर यक साथा॥
विश्वामित्र वशिष्ठ प्रसन्न भये दिय आशिरवादा।
उभै भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मरयादा॥
जय जयकार किये सिगरे जन नभ महँ बजे नगारा।
छूटी कुसुमावली गगन ते धनि मिथिलेश उदारा॥
यहि विधि तेहि समाज महँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं।
हुलसि अवधपति जोरि कंज कर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर जस आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई।
कियो महा सत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहि जनवासे बरणत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र वशिष्ठ कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पास पसारि सनेहू॥
कौशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।

वारहिं वार विदेह वोलैहैं निज निवास वैदेही।
ऐहैं सीय लेवावन रघुवर ह्वै ससुरारि सनेही॥
वारहिं वार विलोकव रामहिं लेव विलोचन लाहू।
घर घर राम निमंत्रण होई अनुपम सुख सब काहू॥
कोउ कह राम लषण जोरी जस तैसहि युग नृप ढोटा।
आये दशरथ संग अवध ते सखि सुन्दर भल जोटा॥
तव वोली कोउ तू नहिं जानति राम अनुज हैं दोऊ।
जेठो भरत शत्रुसूदन लघु अस भाषत सब कोऊ॥

दोहा–कोउ कह मैं अवहीं सुन्यो, भूपति मन्दिर माह।
होई चारिहु कुँवारि को, चारिहु कुँवर विवाह॥

छंद चौबोला।

कोउ कह श्याम राम सम भरतहु रिपुहन लषण समाना।
चीन्हे चीन्हे चीन्हि परत हैं अस सुंदर नहिं आना॥
भरत केकईतनय कौशिला रामहि जन्यो पवित्रा।
लषण शत्रुहन अहैं सहोदर दोहुन जन्यो सुमित्रा॥
चारिहु कुँवर शील विद्या वल विक्रम विनय अगारा।
भूप चक्रवर्ती दशरथ के चारिहु चारु कुमारा॥
अंचल ओडि मनावहिं विधि सों सबै जनकपुर नारी।
विघन निवारि विवाह करावहु जो कछु पुण्य हमारी॥
युग युग जीवहिं चारिहु जोरी मिथिला अवध अगारा।
पुण्य पयोनिधि जनक अवधपति को इनसम संसारा॥
यहि विधि कहहिं परस्पर वाणी गावहिं मंगल गीता।
देवी देव मनावहिं प्रतिदिन पुरजन परम पुनीता॥
आये जे नृप भक्त स्वयंवर ते न गये निज गेहू।
राम जानकी व्याह लखन को निवसे नगर [illegible]हू॥

माँगन विदा चहे दशरथ जब चलन हेत जनवासे।
तब कौशिक वशिष्ट सों भाष्यो मैथिल बैन सुधासे॥
सानुज मोर धर्म प्रभु दोऊ दीन्ह्यो सविध निबाही।
अहों शिष्य मैं पदरज धारक प्रतिनिधि है कछु नाहीं॥
बैठहु युगुल राज सिंहासन युगुल मुनीश कृपाला।
मिथिला अवधराज तुम्हरी दोउ तुमहीं अहौ भुवाला॥
जैसो दशरथ को मिथिलापुर तस कोशलपुर मोरा।
कछु नहिं भेद जानिये मुनिवर नाहिं कछु करौं निहोरा॥
नहिं संदेह प्रभुत्व माहिं कछु तुव पद शीश हमारे।
मन भावै सो करहु नाथ दोउ जस अभिलाप तिहारे॥
तुम प्रसाद मम काज सिद्धि सब दोउ प्रभु दोउ कुल नाथा।
अस कहि बैठायो सिंहासन दोउ मुनिवर यक साथा॥
विश्वामित्र वशिष्ट प्रसन्न भये दिय आशिरवादा।
उभै भूप तुम जगत शिरोमणि सकल धर्म मरयादा॥
जय जयकार किये सिगरे जन नभ महँ बजे नगारा।
छूटी कुसुमावली गगन ते धनि मिथिलेश उदारा॥
यहि विधि तेहि समाज महँ आनँद छाय रह्यो मिति नाहीं।
हुलसि अवधपति जोरि कंज कर कह्यो जनक नृप काहीं॥
गुण सागर नागर जस आगर मिथिलेश्वर दोउ भाई।
कियो महा सत्कार मुनिन अस कौन करी नृपराई॥
राज समाज रावरे करते लहे परम सत्कारा।
देहु रजाय जाहि जनवासे बरणत सुयश तुम्हारा॥
विश्वामित्र वशिष्ट कह्यो तब तुम अस तुमहिं विदेहू।
हम सबको अपने वश कीन्ह्यो पास पसारि सनेहू॥
कौशलनाथ संग जनवासे हमहूँ करब पयाना।

करवैहैं चारिहू कुमारन सविधि विविध गोदाना॥
अभ्युदयिक करवाय श्राद्ध विधि सब विवाह के चारा।
कृत्ति तेल मायन करवैहैं व्याह विधान अपारा॥
मुनिवर वचन वचन दशरथ के सुनि मिथिलेश सुजाना।
भन्यो प्रेम वश कहौ कौन विधि इत ते राउर जाना॥
जस अभिलषित होय कीजै तस कारज अवशि विचारे।
उठ्यो अवधपति लै समाज सब उभै मुनीश सिधारे॥
करि कौशिक वशिष्ठ कहँ आगे चल्यो राय जनवासे।
सकल राजवंशी मंत्री भट गमने हिये हुलासे॥
दोहा--फहरत चले निशान बहु, बाजत विविध निशान।
देखत पुरजन भनत यश यहि सम किमि मघवान॥

छन्द चौबोला।

जनवासे आये कौशलपति बैठे मंदिर माहीं।
विश्वामित्र वशिष्ठ बोलि तहँ विनय करी तिन पाहीं॥
अभ्युदयिक प्रभु श्राद्ध करावहु अब न लगावहु देरी।
जो कछु कारज होय बतावहु सेवक गुनि गति मेरी॥
गुरु वशिष्ठ अरु गाधि तनय तब विधिवत् श्राद्ध कराये।
भोजन समय जानि कौशलपति चारिउ कुँवर बोलाये॥
चारिहु कुँवर सहित भोजन करि बैठे नृप परयंका।
राम लषण रिपुहन भरतहु को बैठायो निज अंका॥
लगे सिखावन कुँवर सोहावन बेटा यह श्वशुरारी।
कियो न चपलाई पर घर चलि ह्वैहै हँसी तिहारी॥
श्वशुर सास को वंदन करियो मोहिं सम गुन्यो विदेह।
विना बोलाये उतै न जइयो नहिं
बहुत हँसी करियो नाहिं - सु

मिथिलापुर की चतुर नारि देहैं जुरि जुगुतिन गारी॥
सुनत वैन पितु राम बंधु युत लज्जित शीश नवाये।
कर जोरे भोरे इव वैठे मनही मन मुसक्याये॥
यतनेही में प्रतीहार तहँ आसुहि खवरि जनायो।
मिथिलाधिप व्यवहार पठायो सुमति सचिव लै आयो॥
उठ्यो हरपि देखन कौशलपति सहित कुमार सिधारा।
एक एक वस्तुन के लागे पूरण प्रथित पहारा॥
वहु विधान पकवानन के तहँ दान विधानहुँ नाना।
लघु ते लै पर्य्यन्त वस्तु वड़ि वसन विभूपण नाना॥
निज निज अभिलापन अनुसारन पाये सकल वराती।
रही न कोहु के कछुक कामना तोपित भे सव भाँती॥
ऋद्धि सिद्धि निधि करि आकर्पण जगदीश्वरी सुसीता।
पठै दियो सिगरे जनवासे पूरण करन पुनीता॥
भोग विलास वरातिन को तहँ लहै कौन कहि पारे।
एक एक रघुवंशिन को थल लोकपाल लखि हारे॥
घटी घटी सुर नटी नटै तहँ वटैं न घट वट हर्पा।
भरि गुण गर्व सर्व गंधर्व गाय करते सुम वर्पा॥
महा मनोहर वाजन वाजत संयुत ताल वँधाना।
सवके डेरन वने जरी के विस्तर तने विताना॥
वाग तड़ाग नहर सुरभित जल वने विचित्र अगारा।
पूरण सकल अपूरव वस्तुन जो नहिं कवहुँ निहारा॥
जो जहँ चहत जौन मन में जन मिलत तौन अनयासा।
इन्द्र कुवेर वरुण देवन सम पावत भोग विलासा॥
बितत वासर रैन चैन महँ जागत शयनहु माहीं।
भूप विलास वरातिन भूल्यो कहहि जाव अव नाहीं॥

ब्याहि कुमार चारि कौशलपति वसैं इतै सब काला।
अस सुख कवहुँ न लहे जन्म भरि जस अब लहे विशाला ॥
भई सांझ भूपति संध्या करि बैठ्यो कुँवर समेता।
पूर्वचित्ति मेनका उर्वशी रंभा आदि सुचेता ॥
विश्वावसु तुंवुरु आदिक तहँ करन लगे कल गाना ।
साजि समाज विराजि विभूपण नचहिं अप्सरा नाना ॥
मन अभिलाषित भूप दीन तिन वसन विभूपण नाना।
भाइन सहित विलोकि राम छवि भूल्यो भान अपाना॥
शयन काल गुनि भूप कुमारन निज निज भवन पठाई।
महा मोद महँ मगन महीपति शयन किये गृह जाई ॥

दोहा–नाच गान व्यवधान महँ, खान पान सन्मान ।
मगन वराती जगतही, पाये पुलकि विहान ॥

सोरठा–वंदी वृन्द अपार, ब्रह्म मुहूरत जानिकै ।
अवध भूप के द्वार वदन लगे विरदावली ॥

छंद चामर ।

जैजै इक्ष्वाकु वंश वारिध को चंदिरै ।
धर्म को निशान ज्ञानवान मोद मंदिरै ॥
भानु वंश भानु भूप कोशलाधिराज हौ ।
राज के समाज के दराज शीश ताज हौ ॥
आपने सुवंश में विचारि राम व्याह को ।
अंशुमान आवतो भरे लखै उमाह को ॥
तजौ सुशेन चैन सो सनींद नैन खोलियो ।
प्रदान अर्घ कीजिये सुवेद मंत्र बोलियो ॥
दिनेश भीति मानि तारवृन्दहू विलाइगे ।
उलूक चूक हूक मानि मूक ह्वै पराइगे ॥

नरेश आप मित्र से प्रफुल्ल कंज वंद भे।
अरीन से अनेक केरवानि वृन्द मंद भे॥
सखा सुमंत्रि बंधु वर्ग देहु देव दर्शने।
स्वपक्ष रक्ष दक्ष आप चक्र ज्यों सुदर्शने॥
मुकुंद ध्यान टानि कै प्रभात कर्म कीजिये।
अनेक विप्र वृन्द को अनेक दान दीजिये॥

दोहा—अजनंदन आनंद भरि अभिवंदन हित द्वार।
वृन्दन के वृन्दन खडे, सचिव सुहृद सरदार॥
सुनि वंदिन के वर वचन, निशा व्यतीत विचारि।
जगतीपति जागत भये, नैनन नींदनिकारि॥
पितु के पूरुव कछु जगे, चारिहु राजकुमार।
राम दरश तिन आय किय, तीनिहुं बंधु उदार॥
रघुनंदन भ्रातन सहित, पितु दरशन किय जाय।
चरण वंदि आशिष लहे, गमने पाय रजाय॥
प्रात कृत्य निरवाहि सब, सुरभित सलिल नहाय।
अर्घ प्रदानादिक कियो, दिय द्विज दान बोलाय॥
रघुनन्दन चंदन दियो, गायत्री जप कीन।
नित्य नेम निरवाहि सब, बंधुन बोलि प्रवीन॥
वसन विभूषण पहिरिके, करि सुंदर शृंगार।
चले चारिहू बंधु तहँ, करन पिता दरबार॥
दशरथ इतै प्रभात को, नित्यनेम निरवाहि।
बैठ्यो सभा सुरेश सम, बोल्यो कुल गुरु काहि॥
मार्कंडेयादिक मुनिन, लियो तुरंत बोलाइ।
विश्वामित्रहि बोलि पुनि, बोल्यो कौशलराइ॥

चौपाई।

तैल चढ़ावन आदिक चारा। करवाई जस होइ विचारा।
पुनि करवाइय पुनि गोदाना। मंगल मंडित वेद विधाना।
सुनि नृप वचन परम अहलादी। विश्वामित्र वशिष्ठहु [illegible]
लगे करावन पावन चारा। बोलि चारिहू राजकुमारा।
पूजन गौरि गणेश कराये। ते निज रूप प्रत्यक्ष देखाये।
पूजन लेन व्याज सब देवा। आवहिं करन राम की सेवा।
करि वाचन पुण्याह सुखारी। लियो बोलि द्विज पंच कुमारी।
निकट पुरट घट चटपट धरिकै। सदल सदीप अमल जल [illegible]
नवल पीतपट भूषण नाना। विप्र कुमारी करि परिधाना।
लै हरिद्र दूर्वा तेहि वेला। प्रभु कहँ लगीं चढ़ावन तेला।
बैठ बरोबर तीनहुँ भ्राता। निरखत जन सुख लहत [illegible]
जस जस व्याह कृत्य तहँ होती। तस तस तिन तन [illegible]

दोहा—तेल चढ़ावहिं कन्यका, प्रभु को वदन निहारि।
तकि तकि छवि छकि छकि रहैं, जकि जकि मृदुल [illegible]

छन्द चौबोला।

शिर कंधन जानुनी पगन महँ फेरहिं पाणि कुमारी।
मनहुँ पूजि शशि नील रतनगिरि उतरहिं कुमुद सुखारी।
परिकर सचिवादिक अहलादित करहिं निछावरि आई।
मणि गण सुवरण वसन विभूषण पावहिं धाय धनाई॥
रतनालिका बीरमणि ठाढ़े राई लोन उतारें।
राम सुछवि लखि लखि दृग छकि छकि मानहुँ तन मन [illegible]
जासु प्रसाद गणेश आदि सुर हरें विघ्न करि मंगल।
सो प्रभु शिर नावत मंगल हित गणपति थापि कलश [illegible]
नभ महि बाजन बजत विविध विधि गावहिं देवन [illegible]

मच्यो हुलास महा जनवासे द्विज धन लहैं अपारा ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ राम को दिये तेल चढ़वाई।
भये अनंदित सकल वराती वहु धन दियो लुटाई ॥
चारि कुमारन को भूपति पुनि अपने निकट बोलाये।
गुरु वशिष्ठ गोदान करन को सविधि अरंभ कराये ॥
सुवरण शृंग सहित बाछरा कनक दोहनी वारी।
परे दुशाले पीठिन में जिन रजत खुरी छवि भारी ॥
पय श्रवनी निरखत मन हरनी बहु बरनी शुभ शीला।
ऐसी चारि लाख सुरभी तहँ मँगवायो इव लोला ॥
लाख लाख सुरभी यक यक सुत कर ते दान कराये।
लक्ष लक्ष मुद्रा हैमी पुनि तिन दक्षिणा देवाये ॥
याचक भये अयाचक जग के किये विप्र जयकारा।
धर्म ध्वजा फहरान भूप को विदित सकल संसारा ॥
धेनु दान करवाय कुमारन यक सिंहासन माहीं।
बैठ्यो लै पुत्रन कोशलपति वरणि जाय सुख नाहीं ॥
जैसे चारिहु लोकपाल युत राजत सभा विधाता।
तैसेहि चारि कुमारन ते युत दशरथ भूप विभाता ॥
तेहि अवसर धावन द्वै आये कहैं जोरि युग पानी।
केकय महाराज को नंदन नाम युधाजित जानी ॥
आवत काशमीर नृप नंदन आगे हमहिं पठाये।
खबरि देन हित रामराजमणि हम आये अतुराये ॥
सुनि आगमन युधाजित को तब कोशलपति हरषाये।
तेहि अगवानी करन भरत रिपुसूदन को पठवाये ॥
कछुक दूर ते भरत जाय निज मातुल को लै आये।
जोहि युधाजित अवधनाथ को बार बार शिर नाये ॥

उठ्यो भूप सादर ताको मिलि दै आसन अनुरूपा।
कह्यो युधाजित सों कुशली हैं कुल युत केकय भूपा॥
राम लषण अरु भरत शत्रुहन मातुल किये प्रणामा।
मिले युधाजित दै आशिष बहु सिद्धि होय मनकामा॥
कह्यो युधाजित पुनि दशरथ सों हमहि पिता पठवाये।
बार बार पूंछी कुशलाई भूपति तुमहिं उराये॥
हमहिं कह्यो तुम जाहु अवधपुर भरत सुतासुत मोरा।
लै आवहु तेहि लपण अनुज युत लखन हेतु यहि ठोरा॥
काशमीर ते चले प्रथम हम अवध नगर को आये।
द्वै दिन भे निकसे बरात को तातें तुमहिं न पाये॥
सुन्यो विवाह भागिनेयन को होत जनकपुर माहीं।
परम प्रमोदित चले बराबर आये हमहुँ यहांहीं॥
यहां प्रमोद पयोनिधि बाढ्यो रही भाग्य मम भारी।
राम विवाह विलोकि विलोचन ह्वैहैं हमहुँ सुखारी॥
दोहा—सुनत युधाजित के बचन, हरष्यो अवध भुआल।
बार बार सतकार करि, कीन्ह्यों ख्याल निहाल॥

छंद चौबोला।

दियो युधाजित को डेरा नृप भरत महल महँ जाई।
सकल भाँति सोपति भूपति किय करि सत्कार बड़ाई॥
रह्यो युधाजित चैन पाय अति अयन अनूपम माहीं।
भोजन समय चारि कुँवरन युत आन्यो नृप तेहि काहीं॥
हिलि मिलि भोजन करन लगे नृप ठानत हास विलासा।
कह्यो युधाजित सों कौशलपति अधिक मंद [illegible]।
पुण्यवान मिथिलापति कीन्यो [illegible] हमरो उपकारा।
रघुन सहित करि देत भयो अब चारिहु [illegible]

करहु युधाजित तुम उछाह युत दूसर व्याह हमारा।
वृद्ध जानि कीजै जनि मन भ्रम लेहु सुयश संसारा॥
कह्यो युधाजित आप कुमारन कियो सदारन जोई।
अभिलाषा यह अवशि रावरी पूरण करिहै सोई॥
यहि विधि हास विलास करत नृप करि भोजन सुखसाने।
उठि अचमन कीन्हे सुगंध जल शुभग वसन परिधाने॥
निज निज भवन शयन हित गमने आनँद मगन अपारा।
सांझ समय पुनि सहित कुमारन नृप बैठ्यो दरबारा॥
मंत्री सचिव सुभट सरदारहु कवि द्विज गण पशु धारा।
देव नटी गंधर्व सर्व युत करन लगीं नट सारा॥
राम लपण अरु भरत शत्रुहन सहित युधाजित आये।
पुत्रन को सनमुख केकैसुत निज समान बैठाये॥
ताही समै जनक पठवायो सतानंद मुनि आयो।
उठि आसन दीन्ह्यो अवनीपति चरण कमल शिर नायो॥
विश्वामित्र वशिष्ठ आदि मुनि मंडल भूप बोलायो।
यथायोग्य आसन दै सबको बार बार शिर नायो॥
गौतम तनय कह्यो भूपति सों विनती कियो विदेहू।
बीते चारि दंड यामिनि के व्याह लगन गुनि लेहू॥
गोधूली बेला महँ ह्वै है काल्हि द्वार को चारा।
महाराज लै चारि कुमारन करैं पवित्र अगारा॥
सुनत चक्रवर्ती अवनीपति मन अभिलपित सुबाणी।
गद्गद कंठ सुमिरि विकुंठपति कह्यो जोरि युग पाणी॥
अभ्युदयिक करि श्राद्ध यथाविधि कुँवरन तेल चढ़ाई।
तिमि गोदान कराय सुतन कर बैठे लहि शुचिताई॥
नहछू काल्हि कराय महामुनि सुंदर साजि बराता।

सुनि विदेह के बैन वर, पाय वशिष्ठ प्रमोद।
जनवासे गमनत भयो, लखि विनोद चहुँ कोद॥

छंद चौबोला।

फैलिगई यह बात चहूँकित रनिवासे जनवासे।
ह्वै है कालिह बिवाह राम को सुनि सब भये हुलासे॥
सेर भैर मचिरह्यो नगर महँ घर घर होति तयारी।
अवध लोग इत सजनि सजावत कालिह बरात सिधारी॥
यक यक रघुवंशिन के डेरन होन लगे नटसारा।
बैठे राम व्याह सुख भापत होत भयो भिनसारा॥
हल्ला परयो अमरलोकन महँ कालिह राम को व्याहा।
देव बरातो होन हेत सब साजे निज निज बाहा॥
रच्यो विरंचि हंस अति सुंदर शंकर साजे नन्दी।
इन्द्र सजायो ऐरावत कहँ पटमुख मोर अनन्दी॥
महिप अभद्र वेप नहिं साज्यो धर्मराज हरि दासा।
ऐसहि और देव सब वाहन साजे सहित हुलासा॥
जिनके वाहन अशुभ रूप के ते डरि नहिं सजवाये।
राम दरश हित होन बराती चढ़े विमानन चाये॥
नहिं जनवासे नहिं रनिवासे नहिं पुर के कोउ सोये।
करत तयारी महा सुखारी जागतही रवि जोये॥
दशरथ सुतन कराय बियारी शयन अयन पठवाई।
पौढ़े यदपि भूप पर्यंकहु तदपि नींद नहिं आई॥
बात कहत इव राति सिरानी लाग्यो होन प्रभाता।
द्वार देश महँ गावन लागे बंदी बिरद बिख्याता॥
भूपति उठि उछाह बश आतुर प्रात कृत्य सब करिकै।
दै दै दान बोलाय द्विजन को सुतन मोठि सुख भरिकै॥

कारि जलदी ज्योनार वार युत साधारण पट पहिरी।
बैठ्यो आय राज सिंहासन जेहि सुखमा अति गहिरी॥
बोलवायो वशिष्ठ कौशिक को सचिव सुमंत तुरंता।
दियो निदेश बरात सजावन सुमिरि चरण श्रीकंता॥
पुनि बोल्यो कौशिक वशिष्ठ सों नाथ महूरत भाखो।
तौन महूरत साधि चल्यो इत लै बरात सुख चाखो॥
विश्वामित्र वशिष्ठ महूरत शंकर भनित बनाई।
कह्यो भूप सों वचन विनोदित रहे याम दिनराई॥
नहछू करहु कुमारन को नृप कुलाचार विधि गाई।
अभिजित नाम महूरत में नृप चलै बरात सोहाई॥
धेनुधूलि वेला रेला सुख होय द्वार को चारा।
याम जात यामिनी लगन शुभ पाणिग्रहण सुख सारा॥
अर्द्धरात्रि लों सकल चार करि आय जाहु जनवासे।
होय विलंब कुमारन को नहिं सोवहिं सुखी सुपासे॥
कौशिक संमत युत बाणी वर सुनि वशिष्ठ की भाषी।
कह्यो तुरंतहि वचन सुमंतहि महा मोद मिति नापी॥
सुनत सुमन्त तुरन्त हजारन परिचारन बोलवायो।
डेरन डेरन रघुवंशिन के शासन सपदि पठायो॥
आवैं आज पहर दिन बाकी सजि समाज सरदारा।
सजे मत्तमातंग तुरंगहु पैदर सुरथ अपारा॥
धामन धायपुकारन लागे जस सुमन्त कहिदीने।
आवन लगे बराती सजि सजि शक्र सरिस सुख भीने॥
एक ओर बाजिन की राजी एक ओर गज वृन्दा।
एक ओर रथ के गथ पथ मदैं पैदर खड़े सनन्दा॥
नौमत झरन लगी चारो दिशि बाजे विविध नगारे।

हिंहिनाते हयवर घहनाते घंटा शंख अपारे ॥
दोहा–औरहु बाजन बजत भे मच्यो सुहावन शोर।
चढ़े विमानन देव नभ, बरषें सुम चहुँओर ॥
जानि समय शुभ भूपवर; राम सबंधु बोलाय।
नहछू करवावन लगे, वंशरीति दरशाय ॥

चौपाई।

समयपाय मिथिलापुर केरी। आई नाउनि सजी घनेरी ॥
अवध भूप पहँ खबरि जनाई। नहछू करन हेत हम आई ॥
सुनत जनकपुर नाउनि राजा। लीन बोलाय जानि बड़ काजा ॥
सजी शिंगारन नापित नारी। मनहुँ मनोजवधू छविवारी ॥
सज्जन वचन सुनत तेहि काला। मज्जन कीन चारि रघुलाला ॥
युगुल पीतपट अंबर धारे। बैठे कनक पटन छवि वारे ॥
मनहुँ दरश सावन घनमाहीं। चमकि रही चपला चहुँवाहीं ॥
मिथिलापुर की नाउनि आई। दूलह देखि दून सुखपाई ॥
युग श्यामल युग गौर कुमारा। हँसी करन लखि कियो विचारा॥
तिनमहँ चतुर एक छवि छाई। करि कटाक्ष बोली मुसक्याई ॥
दूलह जेठ कौन सिय केरो। पहिचानन चाहत चित मेरो ॥
युगुल गौर युग श्याम कुमारा। एकहि पितु के चारहु बारा ॥
सुनि नृप कह यह इहैं विवेका। एक मातु पितु होत अनेका ॥
दोहा–सुनत सुपरि नापित परनि, हँसि रस वश अनुरागि।
नख करतनि लै कंजकर, नखन छुआवनि लागि ॥

चौपाई।

नखकरतनि नख परश सोहाये। मनुढिग विधुन विधुंतुद आये ॥
कनक थार भरि नीर उरायनि। लागी देन महाउर नायनि ॥
भरि भाजन यावक बड़ भागी। चरण कमल कर धोवन लागी ॥

परत कमल पदतल अरुणाई । नाउनि यावक गई भुलाई
जिन पदसलिल विश्व अघ खोवै । धनि नाउनि ते पद कर धोवै
तरसत जिन पदरज कहँ देवा । नाउनि करति सुतिन पद सेवा
बसहिं स्वयंभु शंभु चित जेई । नाउनि करन मलति पद तेई
जे पद मुनि मानस सर बासी । ते नाउनि कर करत प्रकासी
जिनहिं न तुलति मुक्तिप्रदकासी । ते पद भे नाउनि कर दासी
भरचोकमंडल विधिजिनपद जल । सोइ सुरसरि ह्वै हरत विश्वमल
तेइ पद पंकज पाणि पखारति । नाउनिदशपितुपतिकुल तारति
पतितन पावन जिन पद पानी । धनि नाउनिधोवति निज पानी
दोहा–निज कर कठिन विचारि अति, प्रभु पद कोमल कंज ।
परसति पुनि डरपति हिये, क्षणक रंज क्षण रंज ॥

चौपाई ।

देति महाउर चित्र विचित्रा । युग पद पंकज विश्व पवित्रा
लसहिं चिह्न प्रभु पदतल जेते । नाउनि लिखति उपर पद तेते
जानि राम नाउनि चतुराई । दीन्ह्यो ज्ञान हरयो जड़ताई
जानि जगतपति सो बड़भागी । लीन्ह्यो नेग भक्तिरस माँगी
दीन्ही भक्ति ताहि रघुराई । चली भवन सो शीश नवाई ॥
जड़ित जवाहिर भूपण नाना । लगे देन नृप नेग महाना ॥
सो कह लह्यो नेग हम जैसो । अति दुर्लभ पावत कोउ ऐसो ॥
अस कहि प्रमुदित नापितरमनी । मंगल गीत गावती गमनी ॥
इत अपसर गण गावन लागा । राम व्याह मंगल शुभ रागा ॥
गावहिं मंगल राग सहाना । राम सुयश पावन कर काना ॥
गुरु वशिष्ठ नहछू कर चारा । करवायो जस वंश प्रचारा ॥
कंकण गुंजा गुच्छन केरे । कनक कलित लगि रतन घनेरे ॥
दोहा–पहिराये चारिहु वरन, अपने कर मुनिराय ।
जुटी मीत गुनि जलन जनु, इन्द्र वधूटी ...

चौपाई ।

नि बोल्यो दशरथ नृपराई । व्याह वसन पहिरावहु जाई ॥
ायो आपहु करन पोशाका ।भिन्न भवन चलिकै सुख छाका ॥
ाहि विधि करि नहछू कर चारा । सजन भवन गे राजकुमारा ॥
ाहँ परिचर पहिरावन लागे । सचिव सुमंत बतावन लागे ॥
हु मणि मंडित मौर प्रकाशी । करत मंद दिनकर रुचि राशी ॥
ो रघुराजहि शीश विराजा । मनहुँ नीलमणि गिरि दिन राजा
प्पण दुअनहन मौर सोहाना । मनहुँ शरद घन शिर युग भाना
ुरी तड़प उभैदिशि कैसी । मेदुर मेघ बकावलि जैसी ॥
ाक पक्ष बिच भाल सोहावत । जनु रण राहु जीति शशिआवत
ाल विशाल बीच अति लोना । लसत धात्रि कर दीन दिठोना ॥
ानहुँ मयंक मीत मन मानी । शृंगारहि लीन्ह्यो उर आनी ॥
ृकुटि बंक मनु मदन कमानू । तिलक रेख जनु शर संधानू ॥
दोहा—अमल कपोलन के उपर युग चख डोरे लाल ।
मनहुँ उछलि सर ते लसत, फँसे मीन युग जाल ॥

सवैया ।

को वरणै रघुनन्दन के दृग मीन औ खंजन कंजन जीते ।
सैन के सैफन कीन्हे कटा जिनमानिनि मान के दुर्ग अजीते॥
हैं रतनारे बड़े अनियारे सदा रघुराज के प्यारे सुनीते ।
नीति सों प्रीति सों प्रेम प्रतीतिसोंआनलोनारसरीतिसोंरीते॥
दोहा—कुंडल कानन में लसैं, मंजुल मकराकार ।
मनहुँ सुछवि युग वापिकन, झलकत झख शृङ्गार ॥

सवैया ।

पीत सुरंग दियो पहिराय चमाचम चारु मनोहर जागो ।
मंडित मोतिन जाल विशाल बिचैविच हीरन को सुम लागो ॥

घेरु बड़ो मनो फेरु सों फावित मेरु मयूखन सों दुति जागो।
तापर भावै विभाकर ज्यों मणि मौर कहै रघुराज सपागो ॥
कटि में पटुको छवि छाय रह्यो क्षिति छ्वै छवि छोरन की छहरैं।
पचरंग मणीन की ढालवँधी करवाल विशाल विभा भहरैं ॥
पद अंबर संवर शत्रु रचो जनु त्यों पदत्राण प्रभा लहरैं।
नव नूपुर ते पद पंकज में रघुराज भजे भव शोक हरैं ॥

छन्द गीतिका ।

हाटक कटक कर में चटक हीरन छटा छूटैं घनी।
नव रतन अंगद बाहु मूल अतुल बिच बिच बहु मनी ॥
माणिक सुपन्ना पदिक मोतिन जाल सोहत सेहरा।
मन मीन फाँसन हेत मनु मनसिज रच्यो कल केहरा ॥
वैकुण्ठपति के कंठ तेज अकुंठ कंठाभरन हैं ॥
मनु अंबु निधि सुत कंबु बंधुहि मिलत लंब सुकरन हैं॥
मणि इन्द्रनील सुपद्मराग विभाग कृत वल्ली भली।
मनु मेरु चारिहु ओर वारन कलित माल की अली ॥
हियरो हरति हेरतहि हठि हिय हार की हारावली।
मनु [illegible] देवहि दीपि शशि [illegible] दामनी ॥
जेहि भाँति बरन्यों रतन भूषन [illegible] के।
तेहि भाँति बरन्हुँ बंधु के सिंगार भूषण [illegible] के ॥
धारो रुचिर [illegible] बसन [illegible]।
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

गुरु कह्यो इनके डीठि मूठिहु लागती अस को कहै।
दुनिया भरे की डीठि इनके मूठि में सब दिन रहै॥
उत भूप पहिरयो पीत पट दीन्ह्यो मुकुट पुखराज को।
पुखराज के उर हार जामा जरकशी सुख साज को॥
कटि कसो पटुको पीत माला पहिरि पीत प्रसून को।
मिथिलेश को समधी सज्यो सुख दून देखत सून को॥
यक कर सहज करवाल तुलसी माल यक कर सोहई।
रघुराज पितु ऋतुराज सों राजन समाजन मोहई॥
देखन हिते चारिहु सुदूलह इन्द्र सम आवत भयो।
दूलह सजे देखत हगन सुख दून नृप पावत भयो॥
तब कह्यो वचन वशिष्ठ यहि क्षण भूप परछन कीजिये।
दूलह चढ़ाय तुरंग महँ पुनि गमन शासन दीजिये॥
तब तुरत तरल तुरङ्ग चारि सवाँरि साज मणीन की।
अनुपम सुछवि मोहरो लगाम ललाम दुमचो जीन की॥
पग में पुरट पैंजन परे हैकल सु हीरन के जड़े।
चामर सड़ाके अति प्रभा के गासिया मखमल मडे॥
पायर सुपन्ना के बने कलँगी कलित मनि गुच्छ की।
यदि जमै मंदर माथ सुरतरु ताहु की छवि तुच्छ की॥
चोटी गुही मोती अमल तिन जानु लों लर लरकती।
मनु शरद वारिद की घटा जलबिंद अवली ढरकती॥
साजे तुरंग निहारि चारि वशिष्ठ दूलह चारिहूं।
करवाय तिनहिं सवार छवि लखि मुनि तनहु मन वारिहूं॥
लै पाणि दधि अक्षत सगुन दीन्ह्यो त्रिकुटि टिकुली भली।
मानहुँ मयङ्क निशंक कीन्ह्यो अंक निज सुत बुध बली॥
दियो दधि अक्षतन बिंद विशाल भाल भुआल दै॥

लाग्यो उतारन आरती तेहि काल होत निहाल है॥
वरषहिं सुमन सुर देत दुंदुभि करत जयजयकार को।
बाजे बजाय बरात महँ जन लहत मोद अपार को॥
जेहि नाम शत्रुंजय महा सिंधुर नरेश मँगाय कै।
ता पर अरोहण कियो आसुहि अंबु अंबक छाय कै॥
दोहा—लस्यो नरेश सुनाग पै, मणिगण दियो लुटाय।
मनहु उयो उदयाचलै, दिनकर कर छिटकाय॥
होत सवार भुआर के परचो निशानन घाव।
गुरु कौशिक को युगुल गज, लिय चढ़ाय तहँ राव॥

छंद चौबोला।

वैरख फिरचो जनकपुर के दिशि तुंग व्योम फहराता।
बाजन बाजत विविध भाँति के चली सुचाय बराता॥
फहरि रहे गज वर निशान बहु मुख्य निशान समाना।
सुतर सवार चले चमकत पट चट पट सोहत नाना॥
किहे शृँगार मारमद मारत प्यार सवार अपारे।
जनु मन्मथ निरमे रथ के गथ पथ पर सजत उदारे॥
पैदर भूरि भार अति भावति पहिरे बसन सुरंगा।
मानहुँ कुसुम महीतल फूल्यो सब थल एकहि संगा॥
लसत अखंडल परिकर मंडल घन मंडल जनु सांझें।
चपला से चमकत निचोल चय घहरानि दुंदुभि झांझें॥
बकमाला मोतिन के माला धुरवा सिंधुर राजो।
इन्द्रचाप सम चाप अनेकन नचत मोर जनु बाजी॥
प्रेम प्रवाह बढ्यो परिपूरण सुख अँसुवा झरि लाई।
पावस रूप बरात विराजति जनकपुरी महि आई॥
रही धूरि नभ पूरि रही तहँ देव सबै अकुलाई

वरषि सलिल सुरभित कुसुमन सँग दीन्हे रजहि दबाई ॥
झूले झूल भूरि जरकस को चमचमाय रविकर से ।
महा मधुर बोलत नकीव बहु कोलाहल खग वरसे
सोहत तारा से सुकुमारा चहुँकित राजकुमारा ।
चारिहु बंधु मध्य पूरण विधु सजे सकल शृंगारा ॥
रतन अनेकन भूपण भावत मनहुँ कुसुम बहुरंगा ।
लघु वड़ सघन पल्लवित पादप गज वाजी लघु तुंगा ॥
फहरिरहे अतिलंब पताकें सूर्यमुखी चहुँओरा ।
मनु सरिता सर विमल विराजित सहित विहँग तेहि ठोरा ॥
उड़ति धूरि मनु कुसुम धूरि बहु सुरभि चहूकित छाई ।
आयो सैन्य साजि जनु ऋतुपति दशरथनाम धराई ॥
मंगल अवसर जानि सबै सुर निज निज वाहन साजे ।
लखत वरात विवुधगण गवने विविध बजावत वाजे ॥
दशरथभूप विलोकत जे सुर तिनहिं शक्र लघु लागे ।
लोकपाल युत स्वर्ग साहिवी नहिं समान छवि जागे ॥
कहहिं देव सब आज जनकपुर लोकपाल पुर जीतो ।
विभव सकल आयो मिथिलापुर भुअन रह्यो छवि रीतो ॥
इत वरात उत लखि विदेहपुर विशुकर्मा विधि देखी ।
अति विचित्रढब अति पवित्र सब निज करनी लघु लेखी ॥
आवत जानि वरात जनकपुर मंगल साजु सँवारी ।
यूथयूथ घट पुरट शीश धरि खड़ीं विलोकन नारी ॥
तिनहिं निहारि हारि हिय जातीं दिवि देवन की दारा ।
सुर सिहात लखि सकल वरातिन महा विभव विस्तारा ॥
कौतुक मानि तहाँ अति मन में बोल्यो वचन स्वयंभू ।
यह विभूति आई कहँ ते किमि तब समुझाये शंभू ॥
यह वैकुंठ विभूति जानिये नहिं करतूति तिहारी ।

पेखहु त्रिभुवनपति विवाह विधि धनि निज भागि..
जासु नाम सुखधाम जपत मुख लहत पदारथ चारी।
तासु विभूति अधिक नहिं एती जनि भ्रम करु मुख
अस कहि परम अनंदी नन्दी चढ़ि शंकर चलि आये।
लगे विलोकन राम रूप छवि राम चरण अनुरागे॥
घनन ओट करि गनन गगन महँ मगन मोद त्रिपुरारे
कह गौरी सों गिरा तोरि सति भै वस भागि हमारी॥

दोहा—देखे जात वरात सँग, दशरथ देवन व्रात।
हिये न हरष समात तहँ, उर अचरज अधिकात॥

छंद चौबोला।

करहिं वेद धुनि मंगल भूसुर देहिं अनेक अशीशा।
चारिहु दुलहिनि दूलह संयुत युग युग जियहु महीशा
कोउ दशरथ की भागि वखानत कोउ मिथिलेश न.
कोउ सीता की करत प्रशंसन कोउ रामहि जे जानै॥
चारिहु वंधु तुरंगन सोहत अंग अनंग लजावन।
यक जोरी मूरति मरकत सी युगुल पदिक छवि छा
जात नचावंत कछुक चलावत पुनि झमकावत वा
वाहन युत शिव सुअन लजावत भावत सखन समा
जस जस नचत तुरंग तरल गति तिल तिल मदि
तस तस छमछमात पेंजनि ध्वनि स्वरन ठाट बहु
सखा उछालत ऊरध वाजिन तेहि थल पुनि लै आ
जन समूह नहिं परस होत कोहु अद्भुत कला दे
म वंधु युग वीच विराजत चहुँकित सखा सोहाये।
न पाछे शत्रुंजय गज पर अवध नाथ अति भाये।
मतंग महीप उभै दिशि गुरु अरु कौशिक

जनु ऐरावत चढ्यो पुरंदर शुक्र बृहस्पति भ्राजैं ॥
देखि देखि दशरथ को सुर मुनि कहहिं कौन अस भागी।
त्रिभुवनपति को चल्यो विवाहन पूत प्रेमरस पागो ॥
जस जस झमकत नचत रचत गति राम वाजि अभिरामा।
तस तस दिल डरपत दशरथ को छूटै न पग कहुँ ठामा ॥
कोउ झमकावत कोउ सिखवावत कोउ दरशावत सोई।
कोउ मुरकावत कोउ बढ़िजावत रुकि जावत रचि कोई ॥
राजकुमार कला दरशावत पावत परम प्रशंसा।
सखा प्रमोदित परा मिलावत जहँ रघुकुल अवतंसा ॥
अहैं बरोबर-वयस सखा सब लहि समान सन्माना।
भूषण वसन समान सोहावन को समान तिन आना ॥
वृद्ध वृद्ध रघुवंशी कुल के पीछे सिखवत जाहीं।
करहु न चंचलता बहु लालन अवध नगर यह नाहीं ॥
वृद्धन वचन सुनत सकुचत अति दूलह भूप दुलारे।
मंदहि मंद चलावत वाजिन देतेसखा इशारे ॥
तनक बाग ऊंचो करि देते नभ उड़िजात तुरंगा।
चमकि चोजुरी सों पुनि बहुरत नहिं कंपत कछु अंगा ॥
चलत हंस गति कहुँ मयूर गति कतहुँ सेन गति लेहीं।
उच्चैश्रवा करत मद रद हद मानहुँ गरुड़ सनेही ॥
राम तुरंग नाम सुग्रीवहि सइब लषण को वाजी।
भरत अश्व को पुहुप बलाहक रिपुहन मेघ मिजाजी ॥
चारि चारि चारिहु कुँवरन के चलति चमर अति चारू।
छाजत क्षपानाथ से छत्रहु यक यक शिर प्रिय हारू ॥
झालरि झूलि रही रतनन की दलक झलक छवि छलकैं।
देखे तिनहिं परत नहिं पलकैं बिन देखे निय ललकैं ॥

खबर राजमंदिर महँ पहुँची आवत चली बराता ।
कह्यो विदेह बोलि लक्ष्मीनिधि जाहु लेन तुम ताता ।
जनक कुमार सुनत चढ़ि वाजी चल्यो लेन अगवानी ।
धरे पुरट घट शिर सधवातिय चलीं सहस छवि सानी ।
तेहि विधि औरहु बहु पुरनारी धरे कलश युत दीपा ।
गावत मंगल गीत सोहावन दूलह लखन समीपा ॥
सजनो सजो वृजी मिथिला की तिन मिलि रूप छिपाई ।
शची गिरा गौरी आदिक सब सुर तिय सुखित सिधाईं ।

दोहा—धरे शीश कंचन कलश, गावत मंगल गीत ।
दूलह देखन निकट ते, गमनीं परम पुनीत ॥
मिथिलापुर की कोउ सखी, बोली भरी अनंद ।
करहिं मंद सखि चंद को, नृप नंदन मुख चंद ॥

पद ।

ब्याहन आये दशरथ लाल ।
माथे मौर पीत अंबर तन राजित हिय बनमाल ॥
सुंदर तरल तुरँग झमकावत भावत अति यहि काल ।
श्रीरघुराज निछावरि याकी त्रिभुवन छवि तिहुँकाल ॥
धनि धनि सीता जनक दुलारी ।
जाके हित सुंदर बनरा यह बनि आयो मनहारी ॥
हम सीता बालकपन ते एक संगहि रही [illegible] ।
श्रीरघुराज आज अब यदि सम कोउ नाहिं [illegible]
गावहु मंगल गीत सखीरी ।
अस अवसर कबहूँ नहिं ऐहै पुनि [illegible] । नाहिं [illegible]
कोशलपति किशोर [illegible] [illegible] । नाहिं [illegible]
तेहि रघुपति [illegible]

अब कुलकानि सुरति नहिं आवै।
देखत बनत अवध बनराको और नहीं कछु भावै॥
बरबस चलि लगिहौं निशंक उर कोउ कितेक समुझावै।
श्रीरघुराज लगन के मनको को पुनि कै मुरकावै॥
बानिक वेष अवध बनरे की।
चंपक रंग विराजत बागो उर पुखराज सुछवि गजरे की॥
शीश मौर सेहरा सोहावन कुंडल कान बननि मकरेकी।
श्रीरघुराज राज अलबेलो मति गति हेरि हरत हियरेकी॥
दोहा—कोउ सखि जन संघर्षवश जस तस कै कढ़ि जाय।
पुनि आवनि चाहत लखन, बोली सजनि सुनाय॥

पद।

देखनरी चलु अवध दुलारो।
आयोबनि बनरा मिथिलापुर हौं ज्यों त्यों यक बार निहारो।
नैनन परत धस्यो हियरे महँ केहूँ निकसत नाहिं निकारो।
श्रीरघुराज साँवरी छवि पै हौं तुरंत तकि तन मन वारो॥
दोहा—लक्ष्मीनिधि के संग में, सोहत राजकुमार।
छटे छबीले छवि भरे, गमने पंच हजार॥
अगवानी आई निकट, रुकिगे सकल बरात।
लक्ष्मीनिधि वंदन कियो, नृप पूछी कुशलात॥
सुत विदेह को नेह वश, अवधनाथ हरपाय।
पाणि पकरि निज नाग में, लीन्ह्यो चटक चढ़ाय॥
नारिन शीशन पुरट घट, दीपावली सोहाय।
मनहुँ भई थिर बीजुरी, लै तारन समुदाय॥
रानि सुनैना सहचरी, तंदुल दधि भरि थार।
राम भाल टिकुली दई, सुमिरि महेश कुमार॥

रघुराज जौलौं चहै शारदा बखानै तौलौं,
आनै आनै होती छवि राम के तुरंग की ॥
सोरदा–वरणि लहै को पार, सो तुरंग की अंग छवि।
जापै राम सवार, दशरथ को रण बाँकुरो ॥

छन्द गीतिका।

रघुनाथ रूप निहारि तहँ त्रिपुरारि कहत विचारिकै।
देखिहौ दसै दूलह दृगनि नहिं पांच नयन उघारिकै ॥
अति अंग कोमल कठिन दृग कछु जाय जो ढिग गरमहू।
धरिहौं कहां यह अयश मिटिहै जन्म जन्मन शरमहू ॥
विधि जानि शिव अनुमान विहँसे आठ अपने नयन सों।
अभिराम राम स्वरूप देखत नहिं वृथा दृग चैन सों ॥
षटमुख कह्यो तब हरषि विधि सों आज हम तुमसों बड़े।
पितु पूत मिलि डेवढ़ द्विगुण सुख लहै नयनन को खड़े ॥
तब विहँसि वचन विरंचि कह हम संग लेव पनाति को।
तुलिहौ न तुम सकुटुंब तब जो सहस दृग जग ख्याति को॥
असकंद बोल्यो विहँसि तब अहिपति विभूषण मम पिता।
जेहि सहस मुख दृग सहस युग समता कहाकिमि भाषिता॥
यहि विधि विनोदित वचन मंजुल सुर परसपर भाखहीं।
सबते अधिक सुख शक्र तेहि ते दून शेषहि राखहीं ॥
रघुराज सहित समाज आज विराज दोउ कुल राज हैं।
भरि लाज उर सुरराज देखत चकित सब महिराज हैं ॥
गमनत बरात सोहात यहि विधि निकट शहर पनाह के।
आई जबै पुरलोग तब देखत भरे सु उमाह के ॥
जुरि सकल जन पूथन अनेकन त्यों वरूथन नारि के।
देखत बरात अघात नहिं बतरात वचन विचारि के ॥

महा मणिन के छत्र पुनि राका इंदुअकार।
पठवाये मिथिलेश के, चारि वरण हित चार॥
कोशल छत्र उतारिकैं, मिथिला छत्र लगाय।
मिथिलाके परिकर चले, दूलह संग सोहाय॥
अगवानी को चार करि, गमनी चारु वरात।
राजकुँवर दुहुँ ओरके वाजि नचावत जात॥
सोरठा--जापै राम सवार, सो वाजी को कहि सकै।
वेग मरुत अवतार, शीलवान मानहुँ शशी॥
मानहुँ मदन सँवारि, नजरि कियो रामहि तुरँग।
सकै को सकल उचारि, अंग अंग सुखमा सदन॥

कवित्त।

राजै सबै वाजिन की राजी वीच राम वाजी,
जाति कोसो ताजी महा मारुत मिजाजी है।
भानहूं के वाजिन को जोति लीन्ह्यो वेगि वाजी,
उच्चश्रवै पाजी करि वेगता विराजी है॥
रघुराज मानस को काजी मनमाजी गति,
पन्नगारि दांजी करै पतंग पराजी है।
नाकत त्रिलोक पै वचावत विचारि बुद्धि,
परिहै त्रिविक्रम के विक्रम में भांजी है॥
वेगके विवश नासा होत फर फर जाको,
[illegible]ोटो वोटी थर थर काँपतो है अंग की।
ज्वलन जरत अस परत पुहुमि पाँय,
[illegible]लसे समेटे गति मारुत के संग को॥
[illegible] राग रचित सो तड़िता तड़प इन,
[illegible] थिरत छवि हरत तरंग की।

रघुराज जौलौं चहै शारदा वखानै तौलौं,
आनै आनै होती छवि राम के तुरंग की ॥
[शा]रदा-वरणि लहै को पार, सो तुरंग की अंग छवि।
जापै राम सवार, दशरथ को रण वाँकुरो ॥

छन्द गीतिका।

रघुनाथ रूप निहारि तहँ त्रिपुरारि कहत विचारिकै।
देखिहौ दसै दूलह दृगनि नहिं पांच नयन उघारिकै ॥
अति अंग कोमल कठिन दृग कछु जाय जो ढिग गरमहू।
धरिहौं कहां यह अयश मिटिहै जन्म जन्मन शरमहू ॥
विधि जानि शिव अनुमान विहँसे आठ अपने नयन सों।
अभिराम राम स्वरूप देखत नहिं वृथा दृग चैन सों ॥
षटमुख कह्यो तब हरषि विधि सों आज हम तुमसों बड़े।
पितु पूत मिलि डेवढ़ द्विगुण सुख लहे नयनन को खड़े ॥
तब विहँसि वचन विरंचि कह हम संग लेव पनाति को।
तुलिहौ न तुम सकुटुंब तब जो सहस दृग जग ख्याति को॥
असकंद बोल्यो विहँसि तब अहिपति विभूषण मम पिता।
जेहि सहस मुख दृग सहस युग समता कहाकिमि भाविता॥
यहि विधि विनोदित वचन मंजुल सुर परसपर भाखहीं।
सबते अधिक सुख शक्र तेहि ते दून शेषहि राखहीं ॥
रघुराज सहित समाज आज विराज दोउ कुल राज हैं।
भरि लाज उर सुरराज देखत चकित सब महिराज हैं ॥
गमनत बरात सोहात यहि विधि निकट शहर पनाह के।
आई जबै पुरलोग सब देखत भरे सु उमाह के ॥
जुरि सकल जन यूथन अनेकन त्यों वरूथन नारि के।
देखत बरात अघात नहिं बतरात वचन विचारि के ॥

हमरे सुकृत फल सोय रांम विवाह मिथिलापुर भयो।
को आज हम सम धन्य महितल सफल लोचन कारि[illegible]
कोउ कहैं दूलह देखु सिय को मदन निउछावरि कर्यो।
नहिं राम सम कोउ भुवन सुंदर तोरि तृण धरणी धर्यो॥
यह श्याम वर सिय को सखी वर उर्मिला तन गौर है
कुशकेतु कन्या मांडवी वर श्याम तन चित चोर है।
श्रुति कीर्ति को यह गौर वरण विराजतो दूलह भलो।
अवधेश के नंदन अनोखे लखन हित आगू चलो॥
अस कहहिं युवती परसपर झुकि रहीं दूलह देखने।
भरि प्रीति गावहिं गीत मंगल मोद मगन अलेखने॥
सुर्य्यास्त समय बरात प्रविशो जनक नगर सोहावनो।
देखत बराती नगर सौभग इन्द्र नगर लजावनो॥
फहरैं पताके तुंग चहुँकित विविध रंग अनङ्ग से।
तोरण कनक तड़िता तड़प घट पुरट द्वार पतंग से॥
वर रंभ खंभ खड़े अनेकन द्वार द्वार विराजहीं।
अतिशय उतंग अवास हिमगिरि शृङ्ग शोभ पराजहीं॥
सींची गली सुरभित सलिल विस्तार बृहद बजार को।
द्रविनाधिपति सम वणिक बैठे करहिं वस्तु प्रचार को॥
शारद घटा ऊंची अटा छन छटासो युवती चढ़ीं।
अति हरषि बरषि प्रसून लाजा वर लखन चोपहि मढ़ीं॥
आई बरात बजार महँ नरनारि दूलह देखहीं।
दशरथ जनक अरु भाग्य अपना अधिक उरहि उरेखहीं॥
घर घर बजत बाजन विविध मिथिलापुरी ध्वनिमय भई।
देते बरातिन नारि नर करि युक्ति गारी रसमई॥
एहि भाँति देखत नगर दास विलास बहु विधि करत॥

मिथिलेश मंदिर जाय द्वार वरात सब ठाढ़ी भई ॥
तहँ भयो जन संघर्ष अति कसमस परत कढ़ि जात में।
मिथिलेश अस नहिं नात सकल वतात वात वरात में ॥
सोरठा–जब मिथिलापति द्वार, आई अवध वरात वर।
तेहि क्षण को सुखभार, वरणि पार किमि जाय कवि ॥
दोहा–मिथिला जन तिमि अवध जन, तिमि सुर सर्व अपार।
तिमि महिके वासी मनुज, प्रगट्यो पारावार ॥
जनक महल के द्वार को, चौक महा विस्तार।
भरत भोर जस जस मनो, तस तस बढ़त अपार ॥

चौपाई।

कनक खचित वर वसन बनाये। चित्र विचित्र रंग तिन भाये ॥
परिचर तहँ विदेह के ल्याये। डारि पाँवरे अति सुख छाये ॥
गोपुर ते अंतहपुर द्वारा। परी पोंद विस्तार अपारा ॥
जनक राज महिषी छविखानी। साजि सुआसिनि अतिहरपानी॥
रचि आरती कनक मणि थारा। पठई जहाँ द्वार को चारा ॥
द्वार चार थल रचो बनाई। मोतिन माणिक चौक पुराई ॥
कनक कुंभ करि वदन स्वरूपा। आवाहन करि मंत्र अनूपा ॥
थापित करत माहँ तेहि काला। भो प्रत्यक्ष गणनाथ विशाला ॥
गौरि अवाहन किय सनमानी। मूर्तिवंत भे प्रगट भवानी ॥
राम दरश लालश मन माहीं। समय समय सुर प्रगटत जाहीं ॥
उभै ओर आसन अति पावन। धरे पुरोहित शुचि छवि छावन ॥
गौतम सतानंद बड़ ज्ञानी। याज्ञवल्क्य आदिक मतिखानी ॥
दोहा–राजत भे मुनिमंडली, राम दरश अभिलाष।
द्वार चार करवावने, बैठ युत श्रुतिसाख ॥

चौपाई।

उज्ज्वालित आरती अपारा। लीन्हें पानि पुरट के थारा ॥

खड़ी सुआसिनि किहे कतारा। कनक कुंभ शिर सजत अ
भई भूमि थिर मनहु दामिनी। गावहिं मंगल गीत भा
सचिव सुदावन जनक पठायो। लक्ष्मीनिधि कहँ वचन सुना
महाराज अस दियो निदेशा। ल्यावहिं सुतन सहितअवधे
रहै चौक महँ खड़ी बराता। आवहिं रघुकुल वृद्ध विख्या
राम सखा सब संग सिधारे। देखैं दूलह द्वारन
सचिवसकल मिथिलेश निदेशा। राजकुँवर सों कह्यो अशे
जनककुँवर दशरथ पद बंदी। पितु रजाय सब कह्यो अनं
सुनिकोशलपतिअतिसुख पायो। तुरँगन ते कुँवरन उता
चारि सुखासन बरन चढ़ायो। सखा और कुल वृद्ध बोला
भये पालकी राउ सवारा। शोभा निरखि धनद हियहा

दोहा—सब तुरंग मातंग रथ, औरहु सकल वरात।
खड़ी करायो चौक महँ, बाजत बाजन व्रात॥

चौपाई।

परत पाँवड़े पाँयन मंदा। कारि आगे दूलह सा
राम भरत लक्ष्मण रिपुशाला। तिन पाछे दशरथ महिपा
चल्यो द्वार को चार करावन। जनु विधि लोकपालयुत पा
चढ़ीं अटा अंतहपुर नारी। लखि दूलहछवि तन मन
तै जनक इत दशरथ राऊ। रतन लुटाय न लहत अ
लूटहिं जन तेऊ लुटावैं। दर्प विवश नहिं मन मन
शरथ तुरत सुमंत बोलाये। सादर सुखद निदेश सुना
कुल गुरु कौशिक मुनिराई। दोउ आनहु पाउ हो
श्यप मार्कंडेय उदारो। कात्यायन
र मुनिन कहँ लेहु बोलाई। द्वारचार
पायो तुरत सुमंत लेआई। राम ल्याइ

ढि पालकी वशिष्ठ सिधारे। तिमि कौशिक तप तेज अपारे॥
हा–मुनि मंडल महिपाल मणि, मंडित भयो अपार।
रवि शशि अश्वनि तनय मनु, वेद सहित करतार॥

चौपाई।

हि विधि अन्तहपुर के द्वारे। लै दूलह नरनाथ पधारे॥
तानंद तहँ अवसर जानी। बोलवायो जनकहि मुदमानी॥
तहँ आरती उतारन काजा। वृजीं सुआसिनि सजी समाजा॥
तिन मधि तिनको रूप बनाये। शची गिरा गिरिजा सुख छाये॥
तेउ आरती उतारन आई। औरहु देवदार मन भाई॥
लै दूलह जब अवध महीपा। द्वारचार की चौक समीपा॥
आयो मुनि मंडल लै भारो। तब वशिष्ठ अस गिरा उचारी॥
धरहु सुखासन बरन उतारी। अवधनाथ आपहू पधारी॥
अस कहि पढ़नलग्यो स्वस्तैना। उतरि भूप युत कुँवर सचैना॥
चौक समीप कुँवर करि आगे। ठाढ़े भये भूप अनुरागे॥
तहाँ सुआसिनि परम हुलासिनि। सजीं सकल मिथिलापुर वासिनि॥
तोरहिं तृण लखि रूप अनूपा। भागि सराहत दशरथ भूपा॥

दोहा–ते उतारतीं आरती, सलिल डारतीं भूमि।
नयनन पलक निवारतीं, लेतीं मनु मुख चूमि॥
शची गिरा गिरिजा तुरत, राम समीपहि जाय।
लगीं उतारन आरती, अपनो रूप छिपाय॥
मंद मंद रघुनन्द तहँ, किय प्रनाम मुसक्याय।
दै आशिष ते विविध विधि, गवनीं तुरत लजाय॥

चौपाई।

उत आयो मिथिला को राजा। इत मुन युत कोशल महराजा॥
मिले बरोबरि भूपति दोऊ। जय जयकार किये सब कोऊ॥

कहहिं परसपर मुनिन समाजू। सम समधी देखे हम
भूरि भाग अस लखो न भूमैं। नहिं नल प्रथु ययाति
दोउ नृप कीन्हे मुनिन प्रणामा। कहे कृपा तव पुरयो
मुनि आशिष दै वचन उचारे। भये मनोरथ पूर
मिल्यो बहुरि रामहिं मिथिलेशा। जन्म जन्म कर मिट्यो
भरत लषण रिपुसूदन काहीं। मिल्यो विदेह विदेह
दशरथ चरण परयो कुशकेतू। मिल्यो अंक भरि रघुकुल
मिल्यो बहुरि पुनि चारिउभाइन। सो सुखयह यकमुख
उभै श्वशुर वंदे जामाता। अंबक प्रेम अंबु
तहँ वशिष्ठ दूलह यक ओरे। बैठाये आसन यक

दोहा—शीरध्वज निमिकुल कमल, कुशध्वज ताको भ्रात।
भवन और बैठत भये, यक आसन अवदात॥

चौपाई।

गौतम शतानन्द आदिक मुनि। बैठे जनक ओर दोउ
विश्वामित्र वशिष्ठ उदारा। बैठ राम ढिग गुनि अधिकार
लगीं गवाक्षन में सुखसानी। दूलह देखि सुनैना रानी
सिद्धि नाम लक्ष्मीनिधि रमनी। जनक पतोह छमा छबि
औरहु वृद्ध जनक कुल नारी। लखि दूलह तन मन धन
जो सुख भयो सुनैना काहीं। सकै भाषि कबि कोविद
मंजुल बाजन बजत अपारा। गायरहीं सुर नर मुनि
लाग्यो होन द्वार कर चारा। कियो वेद विधि मुनिन
पूजन भयो जौन तेहि देशू। लिय प्रत्यक्ष ह्वै गौरि गनेशू
करवाये मुनि वेद विधाना। माने आपन भाग्य
[illegible]तु थंभ पूज्यो भगवाना। जनुनिमिकुलयश[illegible]
[illegible] अवसर लक्ष्मीनिधि आयो। सारा [illegible]

दोहा—चाउर चंदन पाणि लै, उढयो सबंधु भुआल।
दिये कंध द्वै बंधु युत, दीन बंधु के भाल॥

चौपाई।

बंदन पीत विराजत भाला। जनु पहिरयो शशि केसरमाला॥
लक्ष्मीनिधि पुनि पाणि पसारी। मिल्यो मुदित तहँ दूलहचारी॥
पुनि विदेह भरि मोद उमंगा। सहस नाग दश सहस तुरंगा॥
ढाल ढाल करवाल विशाला। विविध भाँति भूपण मणिमाला॥
रतन गथित वर वसन सुरंगा। कटक मुकुट अंगद बहुरंगा॥
वस्तु अनेक मंजु मनहारी। दियो विदेह विभाग उचारी॥
दानि शिरोमणि भूप विदेहू। पुनि सिय वसै जासु नित गेहू॥
तेहि संपति कर कौन बखाना। मैं वरणौं किमि ताकर दाना॥
यहि विधि भयो द्वार कर चारा। भरयो भुवन आनन्द अपारा॥
दशरथ जनक समेत समाजू। को वरणै जस मोदित आजू॥
सतानंद तब वचन उचारा। सुनु वशिष्ठ गुरु गाधिकुमारा॥
आयो अब लगनहु कर काला। मंडपतर वर चलहिं उताला॥

दोहा—लै मुनि मंडल नृपति दोउ, करि आगे वर चारु।
चलहिं जनक रनिवास महँ, करहिं पूत परिवारु॥
नाऊ वारी महर सब, धाऊ धाय समेत।
नेग चार पाये अमित, रह्यो जासु जस हेत॥
उपरोहित निमि वंश को, सतानन्द मुनिराय।
लियो नेग वक्षि राम सों मम हिय बसो सदाय॥
विज्जु छटा सी कोउ सखी, बैठि अटा सुखछाय।
कहत सखी सों बैन वर, औरहु सखिन सुनाय॥

पद।

सखी लखु आये पुर दूलह चार।

अति सुकुमार मार ते सुन्दर दशरथ राजकुमार॥
पीत वसन शिर मौर विराजत उर हीरन को हार।
विहँसत वदन सदन शोभा को रुचिर रदन हिय हार।
राजकुँवर सँग छैल छबीले रघुवंशी सरदार।
श्रीरघुराज निछावरि तन मन होत द्वार को चार॥
दोहा—कोउ सखि पाछे परिगई, तेहि कोउ कहति पुकारि।
खरी कहां तू यहि घरी, अरी आव सुकुमारि॥

पद।

चलुरी चलु देखु सिया बनरो। यहराजकुमार हरत हियरो
शिर को पागो वागो पियरो। युग जुलुफ जुलुम करती [illegible]
जेहि डहरत डहर करत कहरो। चित चख चोरत चेटक नेहरो
सखि प्राण पियार सदा हमरो। रघुराज अनुज सोहहि [illegible]
आजु अली मिथिला महीप के द्वारे होत द्वार को चार
कौशल कंत जोरि भू भूपनि ल्यायो कुँवर अपूरब चार।
देखहि नयन मौन रसना बिन बिन दृग जीह न करै उचार
श्रीरघुराज लखन के लायक रघुनायक महराज कुमार।
दोहा—यहि विधि भाषहिं तिय सकल, वचन सरस रस बोर।
सिय बनरे मुख चंद के, कीन्ह्यो नयन चकोर॥
तहँ वशिष्ठ बोल्यो हरषि, सुनहु राज शिरताज।
दूलह सहित पधारिये, मंडफ तर सुख काज॥
सतानंद विनती करत, लगन गई अब आय।
ब्याह चारके हेत अब, चलिए राम युत भाय॥

चौपाई।

विश्वामित्र महामुनि पाहीं। [illegible]
और वसिष्ठ सहित मुनिराई। [illegible]

हि अवसर बहु बजे नगारे। नौवत झरन लगी प्रति द्वारे॥
ची नारि सब एकहि बारा। मंडपतर गवनी भरि थारा॥
घुकुल गुरु तहँ सहित सनेहू। कहे सुनहु महराज विदेहू॥
ागो सकल इतै को चारो। आपहु मंडप तर पगु धारो॥
हित कुमारन कौशलराई। कन्यादान चहत अतुराई॥
ाता और ग्रहीता दोऊ। दोहुँन सम दिगंत नहिं कोऊ॥
ोक लाभ लीजै महिपाला। धर्म सुयश तुव भयो विशाला॥
ब विदेह बोल्यो हुलसाना। निज घर माहिं विचार न आना॥
को दाता अरु कौन ग्रहीता। को आज्ञा पुनि देइ पुनीता॥
अवधभूप शासन शिर मोरे। भयो सकल दाया मुनि तोरे॥

दोहा–सतानंद कौशिक सहित, प्रभु करवावहु ब्याह।
यथा अवध आचार्य्य तुम, तथा जनकपुर माह॥

चौपाई।

अवध जनकपुर एकहि जानी। महामुनीश भेद मति मानी॥
अब विलंब केहि कारण कीजै। लै दूलह प्रवेश करिदीजै॥
लोक राम अभिराम विवाहा। मिलो जन्म बहु अस न उछाहा॥
सुनि दशरथ वशिष्ठ की बानी। सुमिरि गणेश महेश भवानी॥
रंग नाथ पद पंकज ध्याई। उठ्यो अनंदित कौशलराई॥
सतानन्द गुरु गाधिकुमारा। करि आगे मुनि और उदारा॥
पुनि आगे करि दूलह चारी। अन्तहपुर कहँ चल्यो सुखारी॥
परत पाँवड़े बसन नवीना। पढ़हिंवेद मुनि वृन्द प्रवीना॥
राम ब्याह गावहिं सब नारी। देहिं सुआसिनि अर्घ सुखारी॥
मणि दीपिका दिपै गृह माहीं। थल थल करहिं प्रकाश तहाँहीं॥
कक्षा तीनि विभूति अपारा। निरखत हरषत अवध भुआरा॥
गये खास रनिवास दुआरा। जहँ ते नाहिं पुनि पुरुष प्रचारा॥

दोहा–धवल धाम ध्रुव धाम इव, चामीकर के चारु।

हिमगिरि मन्दर मेरु जिन, जोहत मानत हारु॥

चौपाई।

चौक चंदशाला छवि माला। रजत कनक को वनी ...
चित्र विचित्र और सब शाला। लखि ललचत अमरावति ...
राम निरखि श्वशुरारि विभूती। मन महँ गुनी सीय ...
निरखि विदेह विभव अवधेशा। मन महँ करत अमित अँदेशा
धौं सुरपुर इत शक्र वसायो। ब्रह्म सदन धौं इत चलि आयो
किधौं विदेह भक्ति जिय जानी। हरिहर पुरी आय निरमानी
निज तपवल यह विभौअपारा। लह्यो विदेह दीन करतारा
यहिविधि देखतसुखअवगाहत। दशरथ वारहिं वार सराहत
गे ड्योढ़ी अन्तहपुर केरी। सजी नारि तहँ खड़ीं घनेरी
लिहे सहस्रन सखी मशाला। चलीं देखावत जनु सुरवाला
तहँ रनिवास पौर अधिकारी। जोरि पाणि जयजीव उचारी
करत प्रवेश नेग सो माँग्यो। दिय मणि माल राव अनुराग्यो।

सोरठा—करि आगे मुनिवृन्द, तिन पाछे करि वरन को।
नहिं समात आनन्द, अन्तहपुर प्रविश्यो नृपति॥

दोहा—लीन्ही परिकर करन ते, चमर छत्र वहु नारि।
चलीं चलावत चाय भरि, करि दूलह वलिहारि॥

चौपाई।

आये राम जवै रनिवासा। अन्तहपुर महँ भयो हुलासा॥
धाईं दूलह देखन नारी। देखि देखि जातीं वलिहारी॥
रहहिं जोहि जकि कढ़ै न वानी। चित्रपूतरी सी छविसानी॥
वहुरि परसपर कहहिं सयानी। निज कर विधि मूरति निरमानी॥
कहँ अनङ्ग वापुरो अनंगा। कहँ सुर विगत पलक रस भंगा॥
लखी आज लों अस छवि नाहीं। अवलों लोचन रहे वृथाहीं॥

जुहि आँखिन कर फल पायो। विधि वनाय दैपलक नशायो॥
वति यूथ अस भापहिं बातें। राम दरश नाहिं नयन अघातें॥
उ मुनिन दूलह युत भाये। मणि मंडित मंडप तर आये॥
हरि रहे पताक वहुरंगा। छवि सागर जनु तरल तरंगा॥
कनक इक्षु दंडन ते छायो। तापर विशद वितान तनायो॥
तन यतन युत जड्यो अमाना। जगमगात द्युति जाति दिशाना॥
दोहा–मोती माणिक की फवाति, झालरि झूलि अपार।
मनहुँ फँसावन मन विहँग, रच्यो जाल कर मार॥

चौपाई।

कनक खंभ कलशा विलसाहीं। मनहुँ भानासित भानु सोहाहीं॥
तहँ मणि दीप प्रदीपहि नाना। फटिक फरश विस्तार महाना॥
कनक वेदिका विमल विराजै। कनकाचल कंदर लखि लाजै॥
आपत पीत पुहुप वर नाना। अलंकार वेदिका विधाना॥
पुरट पालिका अगणित भारी। लसै जवांकुर की हरियारी॥
लसत अमोले कनक करोले। भरे सुरभि जल धरे अतोले॥
कनक थार कोपर रतनाली। धूप दीप भोजन मणि माली॥
शंख प्रकाश असंख उदोता। धरे सुवा श्रुक सुरसरि सोता॥
अर्घपात्र मंडित मणि मोती। लाजा भाजन सुछवि उदोती॥
कंचन थारी थार कटोरे। जगमगात चितवत चित चोरे॥
विछे पवित्र दर्भ महि माहीं। तहँ रतनासन चारि सोहाहीं॥
मग रोहन छवि नहिं कहि जाई। सहित स्वर्ग छवि मेरु लजाई॥
दोहा–दिपति दिव्य दीपावली, तारावली प्रमान।
रतन विहंग विराजहीं, छवि सुर वृक्ष समान॥
मंडप खंभन में लगे, मणिमय मुकुर विशाल।
जगमगात प्रतिबिंब बहु, वस्तु व्रात तेहि काल॥

चौपाई।

यहि विधि जनक महीप विज्ञानी । चारिहु वरन भूप युत
तहाँ जनक कौशल महराजै । सिंहासन दिय बैठन
निज निज आसन बैठ कुमारा । मंडप तर निज निज अ
तहँ कुशकेतु जनक दोउ भाई । बैठाये सिगरे मुनि
यथायोग्य आसन तिन दीन्ह्यो । वहु प्रकार सत्कारहु की
विश्वामित्र वशिष्ठ उदारा । याज्ञवल्क्य गौतम तप
वामदेव कश्यप कात्यायन । मार्कंडेय महामुनि चा
नारद सनकादिक सुख छाये । च्यवन वृहस्पति लोमश अ
शृङ्गीऋषि पितु सहित सिधारे । मुनि मरीच अंगिरा उद
तहँ ब्रह्मर्षि महर्षि समाजा । राम विवाह विलोकन का
मंडप तर सब आय विराजे । सतानंद मिथिलेश सभा
लखन राम जानकी विवाहा । विधि शिव वासव भरे उमाह

दोहा—सबै देव मुनि रूप धरि, मिले महर्षि समाज ।
बैठे स्वामी स्वामिनी, व्याह विलोकन काज ॥

चौपाई।

विद्याधर चारण गंधर्वा । किन्नर सिद्ध महोरग सर्वा ॥
आसमान महँ चढ़े विमाना । वरषहिं फूल वजाय निशाना ॥
सुर सुंदरी करहिं कलगाना । नचहिं अपसरा सहित विधाना ॥
रही गगनध्वनि चहुँदिशि छाई । तैसहि जनकनगर महँ भाई ॥
वाजन वाजत विविध प्रकारा । द्वार द्वार सोहत नटसारा ॥
राजमहल सुख जाय न गाई । थल थल नाचहिं नटी सुहाई ॥
भई एकध्वनि मिलिध्वनि भूरी । रही पुरी पुहुमी महँ पूरी ॥
शशि सूरज अश्विनी कुमारा । सबै देव बनि विप्र अकारा ॥
बैठे हते मंडपहि आई । जान्यो पृथक पृथक रघुराई ॥

यो प्रणाम सबनि मुसक्याई। दीन्हे तिन अशीश शिर नाइ॥
ानंद मिथिलेश सभ्राता। सबके धोय चरण जलजाता॥
चि भवन सब कियो पुनीता। दिये अशीश मुनीश सप्रीता॥
हा–पुनि मिथिलापति प्रेम भरि, धोयो दशरथ पाय।
गदगद गर पुलकित तनहिं, नैनन वारि बहाय॥

चौपाई।

ासन बैठे चारिहु भाई। शांति पढ़न लागे मुनिराई॥
तानंद आनंद बड़ाई। कह वशिष्ट कौशिकहि सुनाई॥
णपार्चन कराय अब दीजै। वेदी थापित पावक कीजै॥
ं अब गवनहुँ जहाँ कुमारी। करिहौं चढ़न चढ़ाव तयारी॥
अस कहि सीतानिकट सिधारयो। रानि सुनैनै वचन उचारयो॥
चारिहु भगिनि केर सुखदानी। चढ़ै चढ़ाउ आसु महरानी॥
रानि सुनैना सुनि सुख पाई। भगिनि सहित सीतहि नहवाई॥
रतन ग्रथित अंबर पहिराई। चितै चौंध चख गई समाई॥
पुरट पीठ सीतहि बैठाई। मणिन जड़ित भूषण पहिराई॥
नख करतनि नख माहिं छुआई। नाउनि तहँ यावक लै आई॥
जे पद लाल प्रवालहु तेरे। शिव अज उरपुर करत बसेरे॥
ते पद महँ नाउनि बड़भागिनि। यावक लगी देन अनुरागिनि॥
दोहा–अमर यतन करि जन्म बहु, लहे न जिन पद रेनु।
ते पद नाउनि कर लसत निज जन के सुर धेनु॥

चौपाई।

चितवत चारु चरण अरुणाई। नाउनि यावक देन भुलाई॥
जगा न जोवति यावक योगू। कियो महा उर नख संयोगू॥
यावक सहित लसत नख कैसे। उदित अमित अंगारक जैसे॥
इन्द्रनील मणि नूपुर भाये। मनु सरोज बहु पटपद आये॥

लघु अँगुरिन मुंदरी सोहाहीं। कंज कोश मनु रवि पराहीं
तेइ पुनि नखन निकट छवि देही। धरचो परिधि मनु शशिनकेही
सिय अँगुरी लखि कोमलताई। नव रसाल दल रहत लजाई
सियपद सम सरि करन सरोजू। सहि आतप तप ठानत रोजू
जब न भयो सिय चरण समाना। तब झारत केसर दल नाना
चह्यो नखतपति नख समताई। ताते विधि कालिमा लगाई
गुलुफ सुलुफछविकविजनकहहीं। नहिं गुलाब कलिका समलहहीं
धरचो चरणजल भरि जेहि थारा। भो जोहत यावक अनुहारा
दोहा-जिन पद लेश कृपा परत, पावत देव विभूति।
ते धोवति अपने करनि, धनि नाउनि करतूति॥

चौपाई।

नहछू चार मातु करवाई। भूषण वसन विमल पहिराई।
पुरट पीठ पुनि भगिनि समेतू। बैठाई सिय सजनि निकेतू।
सतानन्द सों पुनि कह रानी। चुक्यो चार इत को मुनिज्ञानी।
कहहु जबै मंडप तर ल्यावैं। तब मुनि कह जब हम बोलवावैं॥
अस कहि मुनि मंडप तर आयो दूलह देखि द्विगुण सुख पायो॥
राम करत गणनायक पूजा। लीन्ह्यों प्रगट मनोरथ पूजा॥
प्रगट गौरिसो पूजन लेहीं। राम बंधु युत कर धरि देहीं॥
गुरु वशिष्ठ तहँ वेद विधाना। अनल थप्यो वेदी मतिमाना॥
प्रगटचो परम प्रकाश हुताशा। ज्वाला बढ़ी दाहिनो आशा॥
जनक सबंधु वशिष्ट बोलायो। तासु पाणि मधुपर्क देवायो॥
गणपति पूजन आदिक चारा। करवायो गुरु गाधिकुमारा॥
सतानन्द सों दोउ मुनि गाये। बनत आसु अबसियहि बोलाये॥
दोहा-सतानन्द आनंद भरि, कह्यो सुनैनहिं जाय।
तहाँ जानकी जानकी, गई भरी अघ आय॥

चौपाई।

नक पट्टमहिषी जगजानी। कही सखिन सों मोदित वानी ॥
डप तर अब चलहि कुमारी। संग सखी सब साजु सवाँरी ॥
नत सखी लै सिय तहँ गमनी। मंगल गीत गाय गज गमनी ॥
लैं चारु चामर चहुँओरा। छजत छत्र छवि छ्वै क्षिति छोरा ॥
ोलहिं सखी नकीब सुखारी। जै जै जै मिथिलेश कुमारी ॥
ानदान आदिक सब साजू। संयुत सोहत सखी समाजू ॥
ाहित भगिनि सखिमंडल माहीं। सोहत सियछवि कहिनहिं जाहीं॥
ानहुँ मशालन मंडल भासी। दिपहि चारि महताब प्रकासी ॥
ेव सकल फूलन झरिल्याये। जै जै ध्वनि करि बाज बजाये ॥
तबहिं सीय मंडपतर आई। उठयो अनंदित कौशलराई ॥
उठि सुर मुनि मन महँ तेहि ठामा। जगदंबा कहँ कीन्ह प्रणामा ॥
सिय युततीनिहुँ बहिनि सोहाई। दिय सनमुख मुनिवर बैठाई ॥

दोहा—वेद पढ़न लागे सकल, सुर मुनि रूप मुनीश।
जोरी भली विलोकि तहँ, दीन्ही विविध अशीश ॥

चौपाई।

कुवँरिन पीछे बैठ विदेहू। सहित अनुज कुशकेतू सनेहू ॥
रानी तहां सुनैना आई। तिमिकुशध्वज रमनी छवि छाई ॥
निज निजपति दाहिनिदिशि बैठीं। मानहुँ मोद महोदधि पैठीं ॥
तेहि अवसर की छवि कवि गाई। सकत न मनहिं रहत पछिताई ॥
तहँ विदेह दोउ बंधु विज्ञानी। सहित सुनैना निज दोउरानी ॥
मुनि मंडल तहँ विमल विराजा। सिंहासन पर कौशल राजा ॥
दूलह चारि दुलहिना चारी। मंडपतर सुखमा भय भारी ॥
विश्वामित्र वशिष्ठ उदारा। चार करावहिं सुखित अपारा ॥
सतानन्द गौतम सुत तैसे। चार करावैं श्रुति कह जैसे ॥

एक ओर भल सखी समाजै । गावत मंगल गीत [illegible]
जै ध्वनि सकल नगर नभ भूरी । पुष्पावली पुहुमि गै [illegible]
तेहि अवसर अस को जग माहीं । राम व्याह जेहि आनँद [illegible]

दोहा—जड़ चेतन सुर नर मुनिहुँ, पशु खग कीट पतंग।
राम जानकी व्याह लखि, मगन मोद रसरंग ॥

चौपाई ।

तहँ दशरथ नृप प्रेम स्वरूपा । तिमि अनुराग विदेह निरू[illegible]
निष्ठा शांतिरूप छवि वारी । लसैं सुनैना कुशध्वज [illegible]
पार्षद रूप और मुनिराई । भक्तिरूप बहु नारि [illegible]
कौशिक गुरु वशिष्ठ मतिमाना । लसैं रूप दोउ ज्ञान विज्ञा[illegible]
सतानन्द ब्रह्मानँद सोई । मणि मंडप हरि मंदिर [illegible]
रतन अनेकन चौक पुराई । दिव्य भूमि सम रही सो[illegible]
वासुदेव सम श्रीरघुराई । संकर्षण लषणै दिय [illegible]
भरत रूप प्रद्युम्न समाना । रिपुहन तहँ अनिरुद्ध [illegible]
वैदेही लक्ष्मी मन भाई । संकर्षण तिय सरस्वति [illegible]
सो उरमिला रूप मन भायो । रतिको रूप मांडवी [illegible]
श्रुतिकीरति तहँ कांति स्वरूपा । लसैं शक्ति जनु चारि अनू[illegible]
विष्वक्सेन गरुल अति पावन । मंत्री युगुल सुमंत्र सु[illegible]

दोहा—पांच जन्य सम संख तहँ, शायक सरिस सुनाभ ।
सम सारंग शरासनै, कटि असि नंदक आभ ॥
कौमोदकी गदा सरिस, भुवा प्रकाश मदान ।
राम व्याह मंडप तहाँ, भयो बिकुंठ समान ॥

चौपाई ।

को कहि सकै बिवाह उछाहा । रह्यो भुवन भरि मोद [illegible]
[illegible] गीत मदा ध्वनि छाई । उमहि चल्यो जनु भुवन [illegible]

मैनि याम जाति जिय जानी। बोल्यो वचन वशिष्ट विज्ञानी॥
हु विदेह लगन अब आई। कन्यादान देहु सुख छाई॥
न सकल हमविधिवत कीन्हा। पावक प्रगट रूप हवि लीन्हा॥
क तनक अब होइ न देरी। पाणि ग्रहण यहि लगन निवेरी॥
त विदेह नेह भरि भारी। धरी कनक मणि मंडित थारी॥
हे महँ भरयो सुगंधित नीरा। लीन्ह्योनिजकर कुश मतिधीरा॥
कुम रंगित तंदुल धरिकै। लै जानकी अंक मुद भरिकै॥
पर धरि मणि महा विकाशी। चूड़ामणि जेहि नाम प्रकाशी॥
नि सुनैना गांठिहि जोरी। सो ढारति जल प्रीति न थोरी॥
य कर कंज कंज कर राखो। रामहि चितै देन अभिलाखी॥

दोहा–अंबक अंब अनन्द भरि, रोमांचित सब गात।
प्रेम विवश गद्गद गरो, कही राम सों बात॥

कवित्त।

वेदन बखान कोन सृष्टि गर्भाधान की,
सुशोभा शीतभान की अनेक उपमान की।
इंदिरा समान की सुगौरी धर्म सान की,
समान कुलमान की पतिव्रत प्रमान की॥
रघुराज दिनराज वंश दिनराज आज,
लीजै ललनानि की शिरोमणि जहान की।
पालिनी प्रजान की सुपालिनी अजान की,
है जानकी सी जानकी कुमारी मेरी जानकी॥

दोहा–धर्मचरी तुव सहचरी, सदा संचरी संग,
छाया सी माया विगत, दायामय सब अंग।
मेरे पंकज पाणि में, पंकज पाणि लगाय,
लेहु लाल अवधेश के,लली मोरि चित चाय॥

पढ्यो मंत्र यह पुनि नृपति, जानि सनातन नीति।
सो मैं लिखौं प्रत्यक्ष इत, रामायण की रीति।"

श्लोक।

इयंसीताममसुता सहधर्म्मचरीतव।
प्रतीच्छचैनाम्भद्रन्ते पाणिङ्गृह्णीष्वपाणिना॥
पतिव्रतामहाभागा छायेवानुगतासदा।
इत्युक्ताप्राक्षिपद्राजा मंत्रपूतजलन्तदा॥

दोहा—पढ़ि सुमंत्र यहि भाँति ते, छोड़ि दियो जल धार।
सुरपुर नरपुर नागपुर, माच्यो जय जयकार॥
ध्रू पुर लों अरु भूमि भरि, भूतल में एक बार।
बाजन बाजे विविध विधि, भो सुख पारावार॥
चढ़े विमानन देव सब, बरषे कुसुम अपार।
माने रावण भीत ते, आजहि भयो उबार॥
एक बार बोले सकल, जय जय दशरथ लाल।
जय जय जनक लली भली, हम सब भये निहाल॥
बजे नगारे गगन में, अनक झनक चहुँ ओर।
अनकि सनकि खल गण गये, तनक रह्यो नहिं जोर॥

चौपाई।

लगे बजावन बाज बराती। गाय उठीं तिय जुरी जमाती
मंगल मोद भयो मिथिलापुर। सुखसागर उमग्यो नहिं केति [illegible]
सुर मुनि सबै भये बिन भीती। रवि रथ रुक्यो गगनभरि प्रीती
दश दिशि निर्मल बही बयारी। शीतल मंद सुरभि सुखकारी।
दिशा प्रसन्न सब खल वृन्दा। तारन सहित रुक्यो नभ चन्दा।
[illegible]राहि वेद ध्वनि मुनिगण नाना। जनक दर्प को करै बखाना।
[illegible]नाहि अवध अधीश अनंदा। कहै जो कवि मिति सो मतिमंदा।

..हं हुलासित हव्य हुताशा। गुनी भूमि निज भार विनाशा॥
.न जानकी जोहहिं जोरी। तोरहिं तिय तृण प्रीति न थोरी॥
रहिं निछावरि मणिगण भूरी। परसहिं पाय प्रेम परिपूरी॥
हहिं परस्पर नारि करोरी। युग युग जियैं युगुल जग जोरी॥
.र मुनि पुरुप नारि सव लेखे। अस दुलहिनि दूलह नहिं देखे॥
हा–मुनि मंडप पितु मातु सखि, अवलोकन मिसि सीय।
निरखति हरपति राम छवि, कोटि काम कमनीय॥

चौपाई।

अंगुलीय मणि पिय परछाहीं। कवहुंक कर फेरत परि जाहीं॥
नकटक निरखि रहति वैदेही। नहिं कर टारति नाथ सनेही॥
लाज और अभिलाप समाना। मन मुसक्याहिं जानि भगवाना॥
गुरुजन लाज दरश अभिलाखा। समय विचारि सीय सम राखा॥
साधु साधु भापहिं सव देवा। नमो नमो कहि ठानत सेवा॥
जय जयध्वनिपुनिपुनिसुरकरहीं। राम सीय सुखमा दृग भरहीं॥
यहि विधि पाणिग्रहणतेहिकाला। करत भयो सिय को रघुलाला॥
राम वाम दिशि सिय वैठाई। सरवस पायो निमिकुल राई॥
राम निकट सिय सोहति कैसी। कनक लता तमाल ढिग जैसी॥
मनहुं श्याम घन दामिनि नेरे। सोहि रही हिय हरि सव केरे॥
देखि देखि छवि राम जानकी। जनक भोति भय राम जानकी॥
लोक रीति गुनि धरि उर धीरा। वोल्यो वचन परम गंभीरा॥
दोहा–लपण लाल आपहु इतै, सनमुख वैठहु आय।
करहु उर्मिला कन्यका, पाणिग्रहण हरपाय॥

चौपाई।

सुनि विदेह के वचन सोहाये। लपण लाज वश नयन नवाये॥
दीन्ह्यो सैनहिं शासन रामा। वैठ्यो लपण जाय तेहि ठामा॥

तहँ उर्मिला अंक बैठाई । लै कुश अक्षत निमिकु
पढ़िकै मंत्र सुता कर कंजू । धरि लक्ष्मण कर पंक
सलिल सुनैना कर ढरवाई । दई लषण उर्मिला
तेहि अवसर बाजे पुनि बाजे । सुमनस सुमन वरसि जय
साधु साधु ध्वनि चहुँदिशिछाई । जय उर्मिला राम लघु
यहि विधि पाणिग्रहण करवाई । बैठ लषण उर्मिला स
पुनि बोले निमिकुल राकेशा । मनहुँ प्रत्यक्ष धर्म कर
भरत चंद आवहु यहि ठोरा । पूरहु लाल मनोरथ मो
अस कहि उठ्यो समेत सुनैना । वंदि वशिष्ट चरण भरि नै
विश्वामित्र कंज पद वंदे । वंदे औरहु मुनिन अनंदे ।
दोहा—बैठायो कुशकेतु को, गाँठि जोरि युत नारि ।
लियो अंक सों मांडवी, तिमि संकल्प उचारि ॥

चौपाई ।

दई भरत मांडवी कुमारी । जनक अनुज कुशकेतु सुत
पुनि बाजे बाजे नभ माहीं । वरषैं फूल देव हरषा
साधुन मो जयध्वनि भय भारी । अति प्रमुदित मिथिलानर ना
पढ़ैं वेद विधि सहित मुनीशा । वार वार तेहि देहिं अशीशा
भरत मांडवी की भलि जोरी । दिये सनाम काम मद मोरी
पाणिग्रहण करि मांडवि केरो । बैठ्यो भरत सकुचि प्रभु नेरो ।
वहुरि वचन मिथिलेश उचारा । अब अवसर रिपुदमन तुम्हारा ।
पाणिग्रहण श्रुतिकीरति केरो । करहु महूरत मुनिन निरेरो ।
सकुचि शत्रुहन प्रभु रुख पाई । बैठ्यो कुशध्वज सनमुख आई ।
समेतू । दिय श्रुतिकीरति कहँ कुशकेतू ।
लजाई । बैठे निज आसन महँ जाई ।
नगारे । [illegible] अपार अगारे ।

-यहि विधि चारिहु बरन को, चारिहु बधुन सोहाय ।
पाणिग्रहण करवाय करि, प्रमुदित निमिकुलराय ॥
बैठ्यो आनँदरस मगन, सहित रानि लघुभाय ।
मानहुँ पैरत सिंधु महँ, गयो पार सो पाय ॥

कवित्त ।

जैसे दियो गौरी को हिमाचल गिरीशजू को,
हरिहि दियो ज्यों सिंधु इंदिरा सोहाई है ।
वासव को दीन्ह्यों शची हरपि पुलोमा जैसे,
च्यवनै सुकन्या शरजाति नृपराई है ॥
दक्ष दुहिता को दान दियो जिमि देवन को,
जिनते सुरासुर की स्टष्टि समुदाई है ।
रघुराज ताही विधि ताहू ते अधिक दियो,
जानकी को जनक लियो सो रघुराई है ॥

दोहा-दुलहिनि दूलह को तहां, गांठि जोरि बैठाय,
सुत कुटुंब सानुज जनक, लगे पखारन पाय ॥

कवित्त ।

पद्मरागजटितसुजातरूपथारधरिसलिलसुगन्धभरिजनक सुनैना है ।
पद अरविंदरघुनंदकेअनंदभरे धोवतकरन द्वंद नीर भरे नैना है ॥
जौनपदजलविधिधारयोहैकमंडलमेंशंभुजटामंडलअखंडलसचैनाहै।
स्वर्गमेंमँदाकिनीपतालभोगवतीनामरघुराजभागीरथीभूमेंज्ञानऐना है

दोहा-जासु नाम मुख लेतही, पाप पहार परान ।
सो जल सींचत जनक शिर, तेहि सम को जग आन ॥
जे पदरज पावन हितै, तरसत देव अशेश ।
राम जानकी पदकमल, धोवत ते मिथिलेश ॥
जे पदरज परसत तरी, गौतम मुनि की नारि ।
ते पद पोंछत पाणि निज, भाग्य न जाति उचारि ॥

चौपाई ।

पुनि वर वधू विभूषण नाना । जटित सूर्य्यशशिमनि [illegible]
अमित निचोल अमोल ललामा । दियो जनक सुख [illegible]
पारिजात पुहुपन की माला । पहिराई मिथिला [illegible]
पूजन किय वर वधू समेतू । षोडश विधि नृप [illegible]
जेहि विधि पूज्यो रामहि राजा । तेहि विधि तीनिहु बंधु [illegible]
साधु साधु मुनि देव बखाने । दानिशिरोमणि जनकहि [illegible]
सतानंद तब वचन उचारा । अब भाँवरी समय [illegible]
गुरु वशिष्ठ पावक प्रगटायो । कीन्ह्यों हवन महा सुख [illegible]
जनक कह्यो जब मम परिवारा । चरण पखारि लेय [illegible]
तब भाँवरी आदि विधि होई । ये दुर्लभ पै हैं प [illegible]
जनक वचन सुनि सब हरषाने । चरण पखारन को [illegible]
धोयो चरण मुदित कुशकेतू । लह्यो मनों भवसागर [illegible]

दोहा—निमिकुल के सब वृद्धजन, आय सहित निज नारि ।
भये परमपद योग्य सब, रघुबर चरण पखारि ॥
जे सुर मुनि को रूप धरि, बैठे रहे समान ।
चरण पखारे ते सबन, निमि बंशिन के ब्याज ॥

छन्द गीतिका ।

निज भाग धन्य निहारि सुर मुनि राम पायँ पखारि [illegible]
शिर नाय अस्तुति करत बहु विधि मधुर [illegible]
भाँवरि विलोकन हेत सब उमगे अमित अभिलाष [illegible]

ठाढ़े भये रघुबंशमणि तिमि जनक भूपति डावरी ॥
वेदी विभावसु जनक भूपहि मध्य करि मग रोहनैं ।
लागे फिरन फेरो फवित फटिकै फरश मनमोहनैं ॥
छावति छटा क्षिति गौरि सिय की जोन्ह फरश सुफावती ।
रघुनाथ मुख छवि इन्द्रनीलक भूमि बहुरि बनावती ॥
दम्पति परत प्रतिबिंब खंभन चमचमात मणीन के ।
मन मोहि निज छवि प्रगट भे बहु बपुप हरि लक्ष्मीन के ॥
गति मंद मंदहि चलत सुंदर हरत हिय नर नारि के ।
घनश्याम दामिनि से लसत दोउ इष्टदेव पुरारि के ॥
जगमगत दोहुन ज्योति मनु यक यक जितत सितश्यामहे ।
सित श्याम मिलि मिलि होत शोभा हरित अति अभिरामहे
मनु बीजुरी को बसन बिरचि दिनेश शशि यक संगहो ।
देते सुमेरु प्रदक्षिणा दक्षिणावर्त उमंगही ॥
जुरि युवति गावहिं गीत मंजुल राम सिय छवि छकित हैं ।
करि मदन रति निवछावरै तकि भाँवरै चित चकित हैं ॥
युग सखी सिय के संग की अस कहहिं हँसि हँसि कै तहां ।
धीरेचलहु कछु लाल है सुकुमारि जनक लली महा ॥
सुनि राम नैन नवाय रहत लजाय मृदु मुसक्याय कै ।
अरविंद पूरण चंद पेखत रहत ज्यों सकुचाय कै ॥
कोउ वर वधू पर फूल बरषहिं हेलि हास हुलास में ।
कोउ ओढि अंचल विधिहि विनवहिं रहहिंदोउ यहिवासमें ॥
जबलों परी त्रयभाँवरी तबलों सिया आगू चली ।
पुनि चारि भाँवरि देत में भे राम आगू छवि भली ॥
जब रही सिय पुरसर चलत तब अस भली सोहत रहीं ।
जनु जात आगे भान के सितभानु पूरनिमा लहीं ॥

जब भये दशरथ कुँवर आगे चलत जनक कुमारी।
तब लसत मानहुँ चन्द्रमा पीछे प्रयात तमारि के।
क्षिति पर झरत अनगन कनक कन जलज हीरन।
मनु वर वधू गुरु जानि पुहुमी पुहुप पूजहिं रति।
बहु रतन पूरित चारु चौक विराजती वसुधा मनो।
सजि वसन भूषण देन कन्या दान आई तेहि छनो।
यहि भाँति सप्तपदी कराय कुमार गौतम को सुनो।
वेदी निकट ठाढ़ो करायो राम सीता शशि मुनो॥
लाजा परोसन लाल लक्ष्मीनिधि करायो करन सों।
कीन्हे निछावर सकल जन वर वधू रतनाभरन सों।
तब कह्यो वचन वशिष्ट सीता राम एकहि आसने।
बैठहिं करावहु चार औरन बरन को अब या छने।
जेहि भाँति रघुपति भाँवरी लाजा परोसनहुँ भयो।
तेहि भाँति तीनहुँ बंधु भाँवरिचार विधिवत है गयो।
तब जाय रघुपति निकट लक्ष्मीनिधि कह्यो सुभाय के।
दीजै हमारो नेग जो हम कहहिं अब नित नाय के।

दोहा–मंद मंद रघुनंद कह, जो मागहु सानन्द।
हय गय मणि मानिक रतन, भूषण आयुध [illegible]॥
तो तुमको सब थोर है, जो कछु मेरे होय।
प्रीति रीति जस तुम करी, तस न किसी सन होय।
जनक कुमार बोल्यो हरषि, यही नेग मोहि देहु।
यह [illegible] मन माहिं [illegible]॥
[illegible]
[illegible]

पद।

राजत राम विदेह किशोरी।
भाँवरि भरत भट्ट भल भावत जगमगात जग जाहिर जोरी॥
मंडप मणि मंडित मन भावन मनु तारागण गगन करोरी।
चहुँकित छाय परत परछाहीं जनु दम्पाति प्रगटी चहुँ ओरी॥
गावहिं मंगल गीत सखी सब मुनिवर वेद पढ़ें सुख वोरी।
कोशलेश मिथिलेश विराजत मगन मोद मघवा मद मोरी॥
क्षीरधि सुधा मदन मंथक यदि रुचिर रमा रति कढ़े बहोरी।
धरि शिंगार वपु हरिहु वरे जो सम विरचत सकुचति मति मोरी।
कबहुँक श्यामछटाक्षिति छहरति कबहुँक अधिक गोरदुति गोरी
सुछवि सितासित गंग यमुन मधि मति मज्जति रघुराज हिलोरी॥
मणि मंडप में सिय राम लसैं मुनि मंडल मंडित मंजुल है।
सेहरा सुठि सोहि रह्यो शिर पै वनमाल विराजत वंजुल है॥
सिय लाज भरी पिय छांह चितै विय आनँद सिंधु भरें हिय में।
जिय जोहन को विय वानि गही विय वापुरो को किय योधियमें
मिथिलेश युतै अवधेश लसैं निज पूरुब पुण्य प्रभाव लसें।
शिव शक्र धनेश गणेश दिनेश लहे फल जो नहिं तौन चखें॥
मिथिलापुर नारि सँवारि शिंगारि खडी कल मंगल गान करें।
मुनि कौशिक और वशिष्ट सतानँद चार करावत मोद भरें॥
तहँ चारिहु राजकुमार कुमारिन संग सुभाँवरि देत सजें।
मनु मैन सुचारि स्वरूप बनाइ सबाम विराजि रह्यो सधजें॥
सुर सिद्ध विमान खडे असमान प्रसूननि वार्षे रहे उमदे।
नेउछावरि भूरि महीश मुनीश विमोहित रूपन प्राण छिदे॥
सुरदार नचें गति गान रचें बहु बाजन बाजि रहे कलदे।
गज वाजिन स्यंदन भीर भरी कहि कौन सके करिके बलदे॥

सिय राम विवाह उछाह बढ़ो बहु अंडकटाह अनंद मढ़ो।
रघुराज त्रिलोक तेही क्षण में सबके मुख ते जय शोर कढ़ो॥
दोहा--सबै कह्यो तहँ होत भो राम जानकी व्याह ।
रह्यो भुवन सुख सिंधु भरि, गान तरंग उमाह॥
नेग लह्यो मिथिलेश सुत, रह्यो मनोरथ जौन ।
राम चरण वंदन कियो, कियो गौन निज भौन॥

चौपाई ।

अवसर जानि सहित निज भ्राता । उठ्यो विदेह विनोद अघाता।
कौशलपति को पूजन कीन्ह्यो । हय गय वसन विभूषण दीन्ह्यो।
स्यंदन शिविका साजि अनेका ।भाजन विविध भाँति सविवेका।
दै यह अंगन अतर लगायो । मोद मूल तांबूल खवायो।
दियो अँगूठी रतन प्रधाना । बहुरि विनय वश वचन बखाना।
राख्यो सुरति जानि निज दासा । मोहिं सकल विधि राउर आसा।
मिथिलापुर निमिकुल परिवारा । और जहां लगि अहै हमारा।
सो विन संशय भूप तिहारा । कबहुँ और नाहिं किहेहु विचारा।
अस कहि रह्यो मौन कर जोरी । कह अवधेश गिरा रस बोरी।
आप सरिस हौ आप विदेहू । वसुधा विदित प्रताप सनेहू।
रघुकुल अवध राज सुत चारी । मोरि विभूति नरेश तुम्हारी।
सात द्वीप नव खंड प्रयंता । जहँ लगि शासन मोर दिगंता।
दोहा–तहँलगि राउर भूपमणि, सत्य सत्य मम बैन।
नहिं अन्यथा विचारियो, यह सुख वृथा कहै न॥

चौपाई ।

बोल्यो पुनि विदेह कर जोरी । परिचारिका दारिका मोरी।
भाग्य विवश तुम्हरे घर जाहीं । तजि खेलन जानै कछु नाहीं।
समय सम्हारब क्षमि अपराधा । अबलौं लही न कौनिहु बाधा।

इत ते उत सुख विभव महाना। पै शिशु भाव कछू नहिं ज्ञाना॥
राजरीति सब दिहेहु सिखाई। करैं न कछु बिन शासन पाई॥
अबलों कोउ नहिं आंखि देखाई। इनहिं कह्यो कछु माख जनाई॥
रहीं कुमारो प्राण पियारी। भई सकल सुतवधू तिहारी॥
मोर मान इन कर कुशलाई। बहुत कहांलगि कहौं बुझाई॥
प्रेममयी मिथिलाधिप बानी। सुनि बोल्यो दशरथ मतिखानी॥
पुत्रवधू पुनि आप कुमारी। को इनते अब मोहिं पियारी॥
जिमि मिथिला तिमि अवध अगारा।जानहुँ सब बिधि सुख उपचारा॥
नयन पूतरी सरिस कुमारी। बसिहै सदन सदा सुख भारी॥
दोहा-राजन देहु रजाय अब, जनवासे कहँ जाउँ।
निशा असन कुवँरन सहित, करन हेत ललचाउँ॥

चौपाई।

कह्यो विदेह आप पगु धारो। बाकी कछु कोहवर कर चारो॥
चार कराय सुतन पठवैहौं। अब नहिं कछू बिलंब लगैहौं॥
बालक नींद विवश अलसाने। किमि करिहौं बिलंब जिय जाने॥
सुनि मिथिलेश वचन अवधेशा। उठ्यो प्रमोदित सुमिरि गणेशा॥
मिलि मिथिलेशहि बारहि बारा। करि प्रणाम मुनि जनन उदारा॥
विश्वामित्र वशिष्ट समेतू। चल्यो भूप जनवास निकेतू॥
विविध भाँति पुनि बजे नगारा। दिग स्यंदन स्यंदन असवारा॥
भयो सुमंत सहित तेहि काला। चली संग चतुरंग विशाला॥
छरे छबीले राजकुमारे। रहे राम सँग चलन पियारे॥
तहांहजारन विमल मशाला। चलीं प्रकाश करत तेहि काला॥
इत भूपति जनवासे आयो। सतानंद उत वचन सुनायो॥
सखी करावहु सब यहि बारा। सेंदुर शीश वहोरन चारा॥
दोहा-सखी सयानी जाय तब, कह्यो वचन रस पूर।

करहु लाल निज पाणि सों, सियहि शीश सिंदूर ॥
सेंदुर गहत न सकुच वश, राम मंजु मुसक्याय ।
सखी वदन तकि रहि गये, नीचे नयन नवाय ॥
कर गहि विमला राम को, सेंदुर भाजन दीन ।
लाल शीश सेंदुर भरहु, भगिनि सुरति कसकीन ॥

कवित्त–सवैया ।

श्रीरघुराज सिया शिर में भरयो सेंदुर मंदहि मंद लजाई ।
गावन लागीं सखी सिगरी तहँ चारिहु बंधुन गारी सुनाई ॥
दूलह की छवि में छकि कै तकिकै जकिकै उपमा कहीं भाई ।
सावन सांझ की भानु छटा घनश्यामघटा रह्यो रेख सोहाई ॥
श्यामल पाणि पसारि सिया शिर सेंदुर देन लगे रघुराई ।
ता क्षण की सुखमा लखिकै सखि सो उपमा सखी एक सुनाई ।
श्रीरघुराज विलोकु नई मृदु मांग सों देवनदी दुति भाई ।
भारती धार लिहे यमुना मिलि सांची शिंगारि त्रिवेनी बनाई ॥

सोरठा–यहि विधि करि तहँ राम, सिय शिर सेंदूराभरन ।
तिमि त्रैबंधु ललाम, वधुन शीश सेंदुर भरे ॥
सप्तपदी करवाय, सतानन्द आनन्द भरि ।
करवायो सब चाय, जौन चार बाकी रह्यो ॥

दोहा–गौतम सुत वर करन सों, देव विसर्जन कर्म ।
करवायो विधिवत सकल, लोक रीति कुल धर्म ॥
वाम भाग पुनि वरन के, सकल वधुन बैठाय ।
मुनिवर कियो विवेक युत, तहँ अभिषेक बनाय ॥
काचित्सर सम्भर सखी, राम मवेक्षत दाह ॥
रूप [illegible] सुस्मिता, सुवरो वधू सुनाह ॥

पद।

सखि पश्य कोशलकान्त सुखद कुमार मति सुकुमाकरम्।
मैथिल निवास विलास विलसित मदन मनोपहारकम्॥
मणि मंडपे सीतायुतं सुखमाभरं सीतावरम्।
सुविवाह कर्म्म विधान मति कुर्व्वाण मद्भुतताकरम्॥
मणि मुकुट पीतांबर सुमध्य मुखारविन्द मनिन्दितम्।
मेदुर सुघन मस्तक दिवामणिमिवतड़िद्गण वन्दितम्॥
किञ्चित्कटाक्ष विकाश विक्षित जानकी सुखमासुखम्।
गुरु जन निकट लज्जावशङ्कृत मधो भावित शशि मुखम्॥
जनकात्मजार्पितदृष्टि कङ्कण कलित कर धृत चन्दनम्।
रघुराज सुखित समाज शोभित सानुजं रघुनन्दनम्॥

दोहा–सांगतार्थ तहँ करत भे, कुँवर चारि गोलक्ष।
पतिग्रह फल निरसन हितै, दीन्हे द्विजन प्रतक्ष॥

चौपाई।

ोली तहाँ सुनैना रानी। बोलि सखी जन सुखी सयानी॥
ं दुलहिन दूलह कहँ जावो। हिलि मिलि कोहबरचार करावो॥
ो सुनि उमगान्यो अनुरागा। सखिन यूथ जुरिकैं बड़भागा॥
ावहिं गीत मोद रस सानी। दुलहन सों अस गिरा बखानी॥
लहु लाल कोहबर सुखदाई। चारिहु बंधु उठे मुसक्याई॥
आगे आगे चलीं सुवासिनि। अर्घ देत हिय माहँ हुलासिनि॥
हँ लक्ष्मीनिधि की वर नारी। सिद्धि नाम तुरतै पगु धारी॥
ाम पाणि गहि चली लेवाई। जोरे गांठि चारिहू भाई॥
आगे दूलह दुलहिनि पीछे। उभै ओर सब सखी तिरीछे॥
जनक नगर की सखी सयानी। बोलहिं व्यंग भरी बहु बानी॥
चलहु कुँवर कछु धीरे धीरे। सुनियत वर के अहो अमीरे॥

तुमहिं कौन चंचल गति सिखई । जननी भगिनि किधौं कछुतिसई ।

दोहा—रघुनंदन बोले विहँसि, जहँ लक्ष्मी कर वास ।
तहँ चंचलता होति हठि, हाठि तहँ विषय विलास ॥

चौपाई ।

लक्ष्मीनिधि ठाकुर कहँ पाई । काके भवन विषे अब आई ।
जहँ चंचलता तहँ चपलाई । हम तो गहे अचंचलताई ।
ऊतर सुनत समुझि मुसक्यानी । चारिहु कुवँरि कोहवर आनी ।
कुँवरि सहित वर आसन माहीं । बैठाई वर दुलहिन काहीं ।
लक्ष्मी नारायण कुलदेवा । जनककरहिं दिनप्रति जिन सेवा ।
सोइ कोहवर मंदिर अति सुंदर । बन्यो उतंग कनक जनु मंदर ।
मोतिन झालरि तन्यो विताना । तहँ विभूति औरही विधाना ।
आगे सिद्धि सखी सब पाछे । सुरतिय सम पट भूषण आछे ।
नारायण पूजन करवाई । विप्र वधुन सब चार कराई ।
तहां सिद्धि अस गिरा उचारी । नेग देहु हमरो मनहारी ।
निगिभ वस्तु जो होइ तिहारी । सोई सवति मम होय सुखारी ।
तुम संसार सार रघुराई । मुनि उपकारकियो चित लाई ।

दोहा—सुनि सरहज के युक्ति युत, वैन मंजु मुसक्याय ।
प्रेमसुधा वरषत श्रवण, कहे वचन रघुराय ॥
जिनके कुल में कन्यका, वीरज मोल विकाय ।
पुहुमी ते प्रगटै सुता, तहँ को नेग वृथाय ॥

चौपाई ।

पटुका छोर पकरि सुकुमारी । हँसि बोली लक्ष्मीनिधि प्यारी ।
लेहु छोर [illegible] लहकौरै । करहु कुँवर कर कुँवरि सकौरै ।
मिसिरी [illegible] खवाई । कुँवरि खवैहै पुनि वरिआई ।
मुनिपत [illegible] । गुरु ते रावत वंश प्रतीता ।

सुनत राम बोले चित चाये । जूठ आजलों हम नहिं खाये ॥
सबको हम निज जूँठ खवावें । योगी वरवश तुम कहँ पावें ॥
कही सिद्धि पुनि गहि पट छोरा । मानहु लाल कहो सति मोरा ॥
बढ़ि बढ़ि बातें जनि बतराहू । कियो मुनिन सँग भगिनिविवाहू॥
आये व्याहन जनककुमारी । भेर चरणमहँ तुम बहु नारी ॥
तुम्हरे कुल महँ सुनियत प्यारे । पुरुषहु उदर गर्भ को धारे ॥
तब प्रभु हँसि अस वचन उचारा । नहिं मंथन ते वंश हमारा ॥
यदपि योगि जन ते तुव नेहू । तदपि वसहु भोगिन के गेहू ॥
दोहा—चलहु अवधपुर को अवशि, लै भगिनी नव आठ ।
निवसि निहंगन के निकट, काहे करहु उकाठ ॥

चौपाई ।

राम वचन सुनि कह सब आली । चतुर जेठ दूलह अति ख्याली ॥
देवनारि धरि सखी स्वरूपा । लषण राम को लखन अनूपा ॥
बैठीं सखिन मिली तेहि ठाईं । कराहिं चार नाइनि की नाईं ॥
तहँ शारदा राम ढिग जाई । राम पाणि गहि कछु मुसक्याई॥
दधि मिसिरी प्रभु कर उठवाई । लगी खवावन सियहि तहाँई ॥
प्रभु सकुचे नीचे करि नैना । बोले मंद मंद मृदु बैना ॥
मुखर करहु जग जग की आजी । बैठो रूप गोपि कहुँ लाजी ॥
गिरा सुनत हरिगिरा सोहाई । बैठी जाय दूरि सकुचाई ॥
सखि स्वरूप गौरी सिय नेरे । बैठी ताहि राम दृग हेरे ॥
करि प्रणाम बोले मुसक्याई । गिरि गिरीशनृप तजि किमिआई॥
कह्यो शचिहि पुनिप्रभुअसबानी । तुम हो त्रिभुवन की महरानी ॥
सहसनैन कर संग विहाई । तजि अमरावति कस तुम आई ॥
दोहा—देवनारि सुनि सुनि वचन, सकुचि सकुचि उठि जाय।
सखिन ओट लै लै सबै, बैठीं शीश नवाय ॥

चौपाई।

तहँ कमला शशिकला विशाखा। बोलीं वचन भरी अभिलाखा॥
हमरे कुल कर जो कछु चारा। हम करवैहैं सहित [illegible]॥
ये अजान जानहिं कछु नाहीं। कहँ ते आईं यह घर माहीं॥
अस कहि राम सिया ढिग जाईं। चार करावन लगीं [illegible]॥
प्रभु कर गहि मिसिरी दधिप्यारी। सिय मुख परस कराय सुखारी॥
पुनि उठाय सिय कर दधिलीन्हे। परस करावन सन्मुख [illegible]॥
सिय कर युत सखि कर रघुराई। निज कर करि दिय ऊंच उठाई॥
पर्‍यो सखिन शिरपर दधि पीछे। हँसन लगीं तिय ताकि तिरीछे॥
मधुरअली तब करि चतुराई। दै धोखो दधि दियो छुवाई॥
कह्यो राम सो पुनि मुसक्याई। चली न इत राउरि चतुराई॥
जो तुम्हरे कछु मन अभिमानू। हमहीं हैं बड़ चतुर सुजानू॥
खेलहु लला जुआ यहि ठाऊं। जीते चतुर धरायो नाऊं॥

दोहा—अस कहि रतन अनेक धरि, कनक थार भरि नीर।
लगीं खेलावन द्यूत सखि, सिय को अरु रघुवीर॥

कवित्त सवैया।

मुसक्याय सुनैनै नचाय तबै कह सिद्धि हरे हँसि कै बतिया।
न जुआ में लला लली जीतन पावैं लगाये रहे अपनो घतिया॥
सिय आजु न लाज को काज कछू छलछाजिछटे रघुराउतिया।
[illegible] बात जई मिथिलापुर की पछितात जई सिगरी रतिया।
[illegible] कोउ सिद्धि की बोलीतहां अबजानिहैं सत्य सखीबतिया।
[illegible] गे लाल लली ते इतै रघुवंशिन बात सबै बिगरी।
[illegible] कोशलनाथ सुतै यह विश्व में कीरतिहू बगरी।
[illegible] न की नाहिं न्याय की नीतिअनीतिभरी।
[illegible] हँसिकै लपणै दिय ऊतर मोद[illegible]

मिथिलापुर की हौ सुआसिनी तूं पै अनंग मवासिनीचित्तचये॥
जिनके घर मातु पिता न जनै सुत भूमि को फोरि कढ़ै अनये।
रघुराज कुलै सरितेऊ करैं हमतो यह देखि अचर्य भये॥
दूलह त्यों दुलही को जुआ सखियान लै सिद्धि खेलावन लागी।
लै मुकता मणि माणिक हीरन पाणि उछालन लागीं सोहागी॥
श्री रघुराज विदेहलली तहँ दोहुन की दुगुनो दुति जागो।
मानौ हजारन तारन को रवि चंद सुधारन लागे सुरागो॥
गावतीं गर्व गहे गुणको मृदु गीतन गोरी सुदै बहु गारिन।
हारे लला अब हारे लला अस भापतीं देतीं तिया बहु तारिन॥
जीती हमारी लली रघुराज मँगाओ द्रुतै अनुजा मुनि प्यारिन।
नातो विचारिकै नातो विदेह बोलाइहैं रावरेकी महतारिन॥
रूप छिपाये रहीं गिरिजा गिरा गोरिन गोहन में लगीं गावन।
जो वल ते मधुकैटभ जीत्यो जिते दिति के द्वै कुमार भयावन॥
सो वल आज कहां गयो लाल विदेह लली के समीप सोहावन।
आज लों हारे न तू रघुराज सो हारे गहौ सिय पावन पावन॥
आतुरी चातुरी भूलि गई सब मोहनी रूप को रीति परानी।
रावरे को ठगिवो रह्यो आवत वापुरे वावरे को पहिचानी॥
जानकी जानी हती न सुजान लगे जुआ खेलन जीतहीं जानी॥
चंचलता न चली रघुराज करी वलि सों जो छटी छल छानी॥
दोहा–रघुनंदन बोले विहँसि, होय भवानी जोय।
तेहि धोखो देनो भलो, आवत वन वपु गोय॥
हम सूधे क्षत्री विमल, नहिं जानैं छलछंद।
अपने ते वरतो वरन, यहि पुर सुता स्वछंद॥
चौपाई।
ी नागरी कोउ मिथिला की। करहु कला करि लला चलाकी॥

बाती मेरवन को इत चारा। करहु लाल लागै नहिं बारा।
प्रभु मुसक्यात न टारत बाती। गारी देतीं नारि सोहाती।
बाती मेरवन मिसि तहँ प्यारी। परसहिं प्रभु कर मृदु मनहारी।
विविध युक्ति के वैन सुनावैं। उतर न देत बंधु लजि रावैं।
बहुरि कह्यो बंधुन रघुराजू। नहिं ससुरारि लाज कर काजू
नट नागरी विदेह नगर की। आसिनिं अहैं सुआसिनि घर की।
यह सुनि अपर कह्यो मुसक्याई। भानु वंश की रीति सदाई।
तिय तौ तिय पूरुष भे वामा। नारीकवच धरायो नामा
देखहु सखि इन चारिहु भाई। नारिहु ते अति कोमलताई।
अवध पुरुष अस तौ कस नारी। मुनि मानस की मोहन वारी।
विहँसि राम तहँ गिरा उचारी। पूरुव कस नाहिं लिह्यो विचारी

दोहा—चारिहु बंधुन को हमैं, जानि लई ती नारि।
चारि कुमारिन व्याह पुनि, कीन्ह्यो काह विचारि॥

चौपाई।

अपर कही मिथिलापुरवासिनि। मंद मंद मुसक्याय हुलासिनि
क्षत्री भानु वंश कुल ऊँचो। जग में सुन्यो न नेसुक नीचो
यही विचारि कन्यका व्याहीं। कहिहै कोउ अनुचित यद नाहीं
पै इक्ष्वाकु वंश प्रभुताई। ललन कौन हेत [illegible]
व्याह्यो शृङ्गीऋषि भगिनी को। शांता नाम कही को नीको
तुमहिं न आज लगत रघुराजू। बाती मेरवन परिहै [illegible]
जीते काम बाम नाहिं जीते। जानकि जानिन जानहुँ [illegible]
आये रघुवंशिन के देवा। तुमसों लला करावन [illegible]
तिनको शिर नावहु सब भाई। इन्हे देवि कौशिला [illegible]
भरत विहँसि तब बचन बखाने। रंगदेव तजि देव न [illegible]
तिनके पर देवन बहुताई। ज्ञान विराग योग [illegible]

ते सेवन देवन को जाने। देवन रीति भवन महँ आनें ॥

दोहा–अपर सखी बोली विहँसि, नटनागर नृप लाल।
अहें वराये चारिहूँ, नन्दन अवध भुवाल ॥

चौपाई।

करि कटाक्ष कोउकह अस वामा। घर बाहरौ रमै सो रामा ॥
प्रभु कह सत्य कही मन भावनि। निमिकुलकी कीरतिअति पावनि॥
सुत पितु आजहु अरु परपाजा। जनक कहावत लगति न लाजा ॥
सुनि प्रभु वचन सबै मुसक्यानी। सकल कहें नृप सुत मतिखानी ॥
नट नागर नटखटो अनोखे। चंचल चारु चतुरता चोखे ॥
कहे वचन पैहौ नहिं पारा। सखी करावहु कोहवरचारा ॥
गाय गाय वर मंगल गाना। चार करायो सहित विधाना ॥
वेद रीति कुलरीति निवाही। कहै न वर जनवासे जाही ॥
तहँ रनिवास हाँस रस माचा। सबही कर अतिशय मन राचा ॥
जानि तहां अति काल सुनैना। आय जनक रानी कह वैना ॥
जनवासे अब कुँवर पठैयो। कालिह कलेऊ हेत बोलैयो ॥
सासु वचन सुनि सिद्धि सुखारी। कही गिरा रामहि मनहारी ॥

दोहा--अब जइये जनवास को, लाल होत अति काल।
कालिह कलेऊ के समय, देहौं उतरु रसाल ॥

छन्द कामरूप।

सुनि सिद्धि के अस वचन सुंदर रचन पाय हुलास।
चारिहु कुँवर प्रमुदित उठे करि विविध हास विलास ॥
दिय छोरि गांठी सिद्धि सुंदरि वधुन की सकुचाय।
चारिहु कुँवर दोउ सासु को सहुलास शीश नवाय ॥
गवने हरत मन दृगन फेरत मनहुँ सलिल हुलास।
छवि छोनि चारिहु छैउ तेहि क्षन जात हैं जनवास ॥

मणि पट विभूषण करहिं निउछावरि अली गण गेरि।
प्रभु सहित शील सनेह नैनन देत आनँद हेरि॥
गावहिं सुमंगल गीत भामिनि दमकि दामिनि रूप।
बाजन बजावहिं विविध विधि तालन तरल अनरूप॥
यहि भाँति चारिहु बंधु द्वारे आयगे सुख छाय।
तेहि काल मिथिलापाल संयुत लाल आयो धाय॥
मिलि राम बारहिं बार भरतहि लषण अरु रिपुशाल।
कर जोरि सब माँगे विदा शिरनाय दशरथ लाल॥
दिय कोटि आशिष लाय उर पुनि नयन अंबुबहाय।
नृप कह्यो का करिये कुँवर मुख जाय नहिं कहि आय॥
भेंट्यो बहुरि लक्ष्मीनिधिहु प्रभु मिले सहित सनेह।
चारिहु कुमार सवार भे उत गये गेह विदेह॥
आये सखा सब राम के निउछावरें मणि कीन।
बोले विहँसि ससुरारि प्रिय अति काल नहिं नित दीन॥
नहिं दीन ऊतर सकुच बश चढ़िकै तुरंग उतंग।
गवने कुँवर जनवास को सुंदर सखा सब संग॥
बाजे नगारे शोर भारे बांसुरी करनाल।
बरषे सुमन सुद मगन सुर चढ़ि गगन यान विशाल॥
बाजी उछालत नैन चालत चढ़े राजकुमार।
ते सखा राजकुमार गवने संग पंचहजार॥
फहरान [illegible] निशान आगे पुंज है असमान।
मनु [illegible] पवनहि पाय [illegible] नभ [illegible]॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रीझत मनहिं खीझत पलक लखि चारु चारिकुमार ॥
यहि भाँति चारिहु कुँवर आवत भये वर जनवास।
देखन वराती सबै ठाढ़े नहिं समात हुलास ॥
तजिकै तुरंग उमंग भरि यक संग चारि कुमार।
पितु की किये निछावरैं पद वंदि वारहिं वार ॥
अवधेश बोल्यो वचन जानि विलंब बड़ि तेहि काल।
बैठहु न इत यक क्षणहुँ अब कीजै बियारी लाल ॥
युग याम बीति गई निशा कहियो कि सानहि नेक।
करिकै कछुक भोजन त्वरित कीजै शयन सविवेक ॥
शिर नाय चले कुमार सब पितु की रजायसु पाय।
हिलि मिलि किये भोजन रजनि व्यंजन विशेषि निकाय ॥
कीन्हे शयन परयंक निज निज अरुण आलस नयन।
सुनिकै कुमारन शयन भूपति कियो चैनहिं शयन ॥
कौशल निवासिन सकल आनँद भयो जो तेहि रैन।
सहसहु वदन नहिं कहि सकत यक वदन वदत बनैन ॥
तहँ सकल कौशल नगर वासिन बढ़ी अतिशय प्रीति।
नहिं राम ब्याह किसा विती बरणत निशा गै बीति ॥

दोहा—सकल वराती जागते, लहे प्रमोद प्रभात।
वंदीजन विरदावली, गाय उठे अवदात ॥

चौपाई।

उठ्यो महीपति सुमिरि गोविंदा। करि सुरभी दरशन सानंदा ॥
देखि वदन घृत महँ युत हेमा। सरसव परसि निवाह्यो नेमा ॥
वैष्णव विप्र वेद विद आये। सादर भूप तिन्हैं शिर नाये ॥
छै छोनी क्षितिपति पढ़ि मंत्रा। तज्यो सेज जेहि तेज स्वतंत्रा ॥
प्रातकृत्य नृप सकल निवाहीं। बैठे राजसिंहासन माहीं ॥

लक्ष्मीनिधि आवत लखि राजा। उठ्यो अनन्दित सहित समाजा॥
लक्ष्मीनिधि तहँ कियो प्रणामा।आशिष दई भूप मति धामा॥
शीश सूंघि अंकहि बैठायो। चिबुक परसि बोल्यो कहँ आयो॥
लक्ष्मीनिधि कह हे महराजा। भेजहु कुँवर कलेऊ काजा॥
भूप कह्यो लैजाहु कुमारे। का पूछहु मिथिलेश दुलारे॥
सुनतसुखितलक्ष्मीनिधि भयऊ। राम निकट आसुहि चलि गयऊ॥
बिहँसि कह्यो चलिये रनिवासा। मातु बोलायो दरशन आसा॥
करन कलेवा बंधु समेतू। आसु पधारिय रघुकुल केतू॥
उठि रघुनन्दन चारिहु भाई। पिता चरण पंकज शिर नाई
चढ़े कुँवर सब तरल तुरंगा। चले सखा सब सोहत संगा॥
डगर डगर तेहि नगर मझारी। फैली सुधि आवत वर चारी॥

दोहा–पुर नर नारी लखन हित, बैठ अटा अरु द्वार।
कहहिं कलेऊ करन हित, आवहिं राज कुमार॥

चौपाई।

इत तुरंग झमकावत भावत। चारिहु कुँवर महा छवि छावत॥
जगर मगर मचि रह्यो वगर महँ। अगर तगर भर डगर डगर पहँ॥
झमकत झझकि बाजि मग डहरें। छोरन छूटि मुक्त क्षिति छहरें॥
तुरँग उड़ावत पेंच पाग को। छूटि जाति सुधि रहति बाग को॥
दरशावें बहु गति तुरंग की। छवि छावें क्षिति पट सुरंग की॥
सखा चपल कोउ खेलत नेजे। मनहुँ पठाय पवन इन भेजे॥
आवत जात न ते देखात हैं। यक यक ते ड़ेवढ़ बढ़ात हैं॥
छैल छबीले शक्र सान के। राम सखा सम पंच बान के॥
चलत बराबर प्रभु समान के। सन्माने करुणानिधान के॥
जेहि बाजी रघुपति सवार हैं। कढिन सकत छवि मुख हजार हैं॥
शील सुधानिधि वेग वायु को। मनहुँ लह्यो मन अवधि आयु को॥

झनकत पैंजनि परत पाउ के। परत चरण चौगुने चा[illegible]।

दोहा–सजे सजीले बाँकुरे, दशरथ राजकुमार।
हेरतही हठि हिय हरत, हलकत होरन हार॥

चौपाई।

पहुँचे सब जब मधि बजार में। नारी चढ़ि ऊँचे [illegible]
निरखि निरखिपलकनिनेवारहीं। राई लोनहि कर [illegible]
ओढ़ि ओढ़ि अंचल मनावहीं। मिथिलापुर पुनि कुँवर [illegible]
द्वार द्वार बहु हेम खंभ हैं। पुरट कलश युत यूप [illegible]
जनक नगरकी अति विचित्रता। भय प्रभु आगम पर [illegible]
द्वार द्वार जन जन जोहारहीं। यकटक चारिहु बर नि[illegible]
कहहिं प्रजा सब मोद झोक में। अस सुंदर नहिं कहुँ नि[illegible]
विप्र वेद पढ़ि पढ़ि अशीशहीं। लहैं अनंद निहारि [illegible]
नारि उतारहिं मुदित आरती। चिरजीवहु मुख कहति [illegible]
राम जाय मिथिलेश द्वार में। तजे तुरंगन सुख [illegible]
जानि सुनैना राम आमिनो। पठयो कलशन कलित [illegible]
मिल्यो आय मिथिलाधिराजहै। प्रभु प्रणाम किय सहित [illegible]

दोहा–मिलि विदेह आशिष दई, लेगे भवन लेवाय।
यथा योग्य भ्रातन सखन, सहित राम बैठाय॥
करत भये सतकार बहु, अंगन अतर लगाय।
दे चोरी पूंछी कुशल, प्रेम अंबु दृग छाय॥
प्रभु बोले कर जोरि के, आप कृपा कुशलान।

मनु व्यवहारहि व्याज ते, मोद मोल लै लीन ॥

छंद ।

तहां सुनैना की यक आई सहचरी ।
कुँवर बोलावन हेत महा मुद उर भरी ॥
लक्ष्मी निधि तहँ आसुहि कुँवर लेवाय कै ।
गये तुरत रनिवास पिता रुख पाय कै ॥
सखा सचिव सरदार रहे दरबार में ।
भयो मोद महँ मगन जनक व्यवहार में ॥
रामहिं आवत देखि सुनैना धाय कै ।
लै बलिहारी चूमि बदन सुख पाय कै ॥
मणि मंदिर महँ आसुहि राम लेवाय कै ।
तीनिहुँ अनुज समेत सखो बैठाय कै ॥
तोरयो तृण पुनि राई लोन उतारि कै ।
कियो आरती मंगल मंत्र उचारि कै ॥
तहँ लक्ष्मीनिधि नारि सिद्धि आवत भई ।
करन कलेऊ हेत विनय गावत भई ॥
उठे राम लै बंधु कलेऊ करन को ।
बैठे आसन माहिं महा मुद भरन को ॥
व्यंजन विविध प्रकार थार भरि ल्याय कै ।
सूपकार सुख पाय परोसे आय कै ॥
मणि माणिक अरु हेम कटोरे सोहहीं ॥
व्यंजन भरे अनेक मदन मन मोहहीं ।
सन्मुख बैठो सिद्धि सहित सखियान के ॥
गारी गावन हेत स्वरूप गुमान के ॥
रविकुल कैसे भयो क्षत्रिकुल जगत है ।

कश्यप द्विज को पुत्र भानु यश जगत है ॥
छाया को पुनि भयो सुवन मनु का कही ।
विना रूप की भानु संग महँ क्यों रही ॥
मूल अशुद्ध विचार होत यह वंश को ।
महिमा हेतहि कहत वंश यह हंस को ॥
मूल पुरुष भय इला नारि पुनि नर भई ।
आवत सोई रीति चली यह नहिं नई ॥
भे युवनाश्व महीप गर्भ उदरहि धरयो ।
मांधाता तेहि भये भूप नहिं सो मरयो ॥
मांधाता महराज बड़े दाता भये ।
सौभरि मुनि को बोलि सकल दुहिता दये ॥
जुरयो न क्षत्री जगत माहँ जिनको कहूं ।
ब्राह्मण को दिय सुता सुकीरति दिशि चहूं ॥
भे असमक महराज यशी संसार है ।
गुरु वशिष्ठ कृत विदित सकल उपकार है ॥
विप्र नारि दिय शाप सुकल्मष पाद को ।
मदयंती को तज्यो जो पाय विषाद को ॥
रानी में गुरु कियो सुगर्भाधान को ।
अजहुँ करत रघुवंश सुवंश गुमान को ॥
नदी कहावति सुता जासु कुल भूप की ।
जाको पानी लेत कीर्ति अनरूप की ॥
जो रघुकुल महँ होइ कछू अनरीति है ।
तो रघुवंशी गनत हमारी रीति है ॥
बड़े यशी रघु भये कहा कहिये सखी ।
साठि सहस दिय रानि द्विजे ह्वै दय मखी ॥

दोहा—पुरुष शक्ति ते हीन लखि, द्विज कहँ रघु महराज।
ले कुवेरते युगुल फल दियो पुंसता काज॥

छन्द।

भयो मातुपितु ते न जन्म अजताहि ते।
पायो नाम नरेश रहे द्विज चाहि ते॥
करन लग्यो अज व्याह कोऊ नृप बोलि कै।
कन्यादानहिं करत समय चित खोलि कै॥
विश्वावसु गंधर्व धारि द्विज रूप को।
माँगत भयो कुमारि वचन कहि भूप को॥
संकठ धरमहि जानि योग बल अज तहां।
निरमो द्वितिय कुमारि सुंदरी सो महा॥
सो दीन्ह्यो तेहि नृप जाहि आनत भये।
विश्वावसु को सत्य विप्र मानत भये॥
भगिनि सहोदर दियो ताहि गुन धर्म को।
कीरति प्रगट पुरान कियो जो कर्म को॥
कोउ बोली तहँ सखी सुनी यह कान में।
दशरथ भूप चरित्र लखी सुजहान में॥
दशरथ नृप की रानि लजोरी हं सबै।
समर सुरासुर माहिं कंत त्याग्यो कबै॥
जिन नारिन के लाज न होत शरीर में।
तिनको कौन प्रमाण रहसि जन भीर में॥
दक्षिण कोशल भूप स्वयंवर करत भे।
सुता कौशल्या देत भूप सब तुरत भे॥
राक्षस रावण नाम कुमारी हरत भो।
दशरथ नृप तहँ जाय बड़ो बल करत भो॥

ताकी हरी कुमारि कौशिला लाय कै ।
घर में किय पटरानि वड़ो सुख छाय कै ॥
गाय उठी कोउ सखी सुमित्रा यश सुनो ।
कीन्ह्यो सुंदर मीत नाम ताते भनो ॥
भरत मातु केकयी कहावत सुनु सखी ।
नाम लेत है प्रश्न लाज अतिशय लखी ॥
रघुपति भगिनी नाम जौन शांता कहीं ।
श्यामा सुंदर अंग भुवन जेहि सम नहीं ॥
विषय विलास विलोकि न राख्यो निज घरै ।
अंग भूप के भौन पठै दिय अवसरै ॥
तहँ यक मुनि पै मोहि गई मन भामिनी ।
मुनि को भयो विवाह भई वड़ि कामिनी ॥
भरत राम हैं श्याम लषण रिपुशालहूं ॥
गौर वदन नहिं जानि परै कछु हालहूं ॥
जो एकहि पितु होत वरण युग किमि भये ।
वर्ष सहस्रहि साठि बीति नृप के गये ॥
तव बोली कोउ सखी न शंका कीजिये ।
दशरथ रानी युवा हेत गुनि लीजिये ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा साँवरी ।
किय अपनी करतूति नाम की भाँवरी ॥
लाल भगिनि निज देहु व्याहि लक्ष्मीनिधे ।
लेहु जगत यश लूटि कोन चाही विधे ॥
जस सुंदर तुम लाल भगिनि तस होयगी ।
सरहज सिधि की सवति महा मुद मोयगी ॥
रघुवंशिन की होयँ और जे कन्यका ।

निमिवंशिन को ब्याहि करौ तिन धन्यका ॥
दोहा—यहि विधि मिथिलापुर युवति, गारी गावत जाहिं।
मंद मंद भोजन करत, सकल बंधु मुसक्याहिं ॥

चौपाई।

मंजु सुरन भरि राग सहाना। लेतीं तरल तान विधि नाना ॥
माच्यो महा मनोहर शोरा। मोहीं सखि लखि राज किशोरा ॥
तहँ मेवन के विविध प्रकारा। औरहु अन्न प्रकार अपारा ॥
दधि प्रकार अरु क्षीर प्रकारा। करहिं सराहि कुमार अहारा ॥
मन रंजन विरंज दुख भंजन। अरुचि विभंजन रसना मंजन ॥
कलिया अरु कबाब वर स्वादू। तिमि श्रीखंड करन अहलादू ॥
खरी खुरचनि मिष्ट मलाई। महा मधुर मोहनी मिठाई ॥
तिमि बताशफेनी वासौंधी। विविध वटो वट माडव औंधी ॥
विविध फलन के मंजुल सीरा। ओदन झलक मनहुँ बहु हीरा ॥
तिक्त अम्ल कटु लवण कषाये। मिष्ट मिष्ट बहु स्वाद बनाये ॥
भक्ष्य भोज्य अरुलेह्यचोल्यवर। पान पियूख समान स्वाद कर ॥
सुर पुर नर पुर नाग पियारे। जे दुर्लभ महि अहहिं अहारे ॥
दोहा—ते विदेह के सूदवर, विरचे विविध उछाहि।
सकल बंधु भोजन करत, स्वाद सराहि सराहि ॥

चौपाई।

यहि विधिभोजनकरिअभिरामा। किय आचमन बंधु युत रामा ॥
उठि चामीकर चौकिन जाई। बैठि धोय कर पद सब भाई ॥
मुकुटन शिरन सुधारत माहीं। आय सुनैना कह्यो तहाहीं ॥
कोशल मुकुट उतारहु लाला। मिथिला मुकुट देहु यहि काला ॥
अस कहि मणि मंडितधरिथारन। मुकुट चारि वर प्रभा पसारन ॥
पहिरायो चारिहु वर माथे। पद्मराग मरकत मणि गाथे ॥
अति अमोल लालन को माला। लालन गल पहिराय विशाला ॥

पुनि लेवाय लाई महरानी । बैठायो आसन [illegible]
बदी बिदेह बाम वर बानी । नेग कलेवा कर सुखदानी।
माँगहु जौन रहे अभिलाषे । तव प्रभु जोरि कञ्ज कर [illegible]
यही नेग जननी अब दीजै । लक्ष्मीनिधि सममोहिंकारि [illegible]
मैं सुत सेवक तू महतारी । देहु देवि रुचि यही हमारी।
दोहा–शील विनय रस के भरे, मधुर राम के बैन ।
सुनत जनकरानी युगुल भरिआये जल नैन ॥

चौपाई ।

पुनि पुनि लेती करन बलैया । भरयो कंठ कहि सकत न [illegible]
जसतस कै पुनि बचन उचारा । पूरेहु मोर मनोरथ [illegible]
कर्म विवश पावहुँ कहुँ योनी । विधिगति होइ होनि [illegible]
लालन नात हमार तुम्हारा । यही रहै सर्वदा विचारा।
एवमस्तु बोले रघुनंदन । सदा प्रणत जन पर [illegible]
सरवस पाय सुनैना रानी । गई अनत सिधि आगम जानी।
सखिन सहित तहँ सिद्धि सिधारी। बिहँसत मृदु बोरी कर धारी।
दीन्ह्यो चारिहु बंधुन बीरा । कही राम सों पुनि निज पीरा।
लालन दीजै नेग हमारो । जो सरहज को नात बिचारो।
प्रभु कह है अदेय कछु नाहीं । तुम सम कौन पात्र जग [illegible]
नर्म गिरा तब सिद्धि उचारी । लाल अनोखो प्रीति पसारी।
ललीं लेवाय अवधपुर जाई । देहो मोरि सुरति बिसराई।
दोहा–तुम्हैं कौन विधि देखिहैं, ह्वैहैं बिन जल मीन ।
देहु नेग वर मोहिं यह, जो जिय चहहु प्रवीन ॥

चौपाई ।

ताते ननँदि और ननदोई । इन नैनन ते बिलग न होई।
प्रीति प्रतीति पेखि रघुराई । बोले मंद मंद मुसकाई।

सदा भावना में हम दोऊ। प्रगट होव जानी नहिं कोऊ॥
सिद्धि सिद्धि होई अभिलाषा। मृषा वचन मैं कबहुँ न भाषा॥
जानी सिद्धि सिद्धि निज करनी। धन्य भाग बरनी बर बरनी॥
पुनि निमिवंशिन सुता सोहाईं। दूलह देखन हित जुरि आईं॥
जिन सारी सरहज सनबंधू। गारी देन बाँधि परबंधू॥
फटिक पूतरी धरि हरि आगे। वचन रचन करि कह अनुरागे॥
यह कौशलपुर केरि कुमारी। मिथिला महँ आई सुकुमारी॥
तुमहिं देखि वश लाज न बोलति। नहिं आशयउरकीकछुखोलति॥
भगिनि मनाय लेवाय जाहु घर। करहु समोप चूक साँवर बर॥
बिहँसि बैन बोले रघुराजू। हम जानो मिथिला नहिंलाजू॥

दोहा–रघुकुल में नहिं रीति यह, बरहि जो बरन कुमारि।
देवदार के तुल्य तुम, यहि छवि तुव अनुहारि॥

चौपाई।

व्यंग वचन सुनि सब मनभाई। चितै परसपर दिय मुसक्याई।
तामैं चतुर सखी यक भाषी। कहहुँ लाल जो होहु न माषी॥
होय जो देवनपति जगमाहीं। सो देवन गति चलै सदाहीं॥
हम मानव मानव गति जानैं। देवी देव देवगति ठानैं॥
लाल एक अति शोच हमारे। सुधरत राउर कृपा सुधारे॥
दियो मोद मिथिलापुर आई। जो अलभ्य अजरन श्रुति गाई॥
रहहु सदा नगरी यहि प्यारे। जीवन रहिहैं तुमहिं निहारे॥
तुम बिछोह रहि हैं किमि प्राना। देहु बताय उपाय सुजाना॥
सखि उर आल बाल अति भारी। प्रेम बीज को बोय सुखारी॥
दल अनुराग शाख सुखकेरी। फूल उछाह दरश फल ढेरी॥
अस तरु मिथिलापुरहि लगाई। उचित न अवध पयान जनाई॥
नेह पाश मन बिहँग फँसाई। दरश असन बिन दुखन देखाई॥

दोहा—सुनत सखिन के वचन प्रभु, कह्यो मंजु मुसक्याय ।
जो जाको जानत यथा, सो तेहि तस दरशाय ॥

चौपाई ।

अवधहु ते मिथिलापुर प्यारो । सदा विलास निवास हमारो ॥
जबहिं सुरति करिहौ मनभाई । तबहिं मिलब तुमको हम आई ॥
मिथिला अवध दूर नहिं प्यारी । जो जेहिजिय सों निकट विचारी ॥
दूर रहै जस बाढ़त प्रीती । तस नहिं निकट रहे अस रीती ॥
यहि विधि करत परस्पर बाता । राम वचन सुनि सुख न समाता ॥
कही सिद्धि सों पुनि प्रभु बानी । होती बड़िविलंब जिय जानी ॥
सांझ समय पितु दरशन हेतू । जैहैं मिथिलाधिप मति सेतू ॥
ताते हमको देहु रजाई । पेखहिं पितु जनवासे जाई ॥
सिद्धि कही मुख ते निकसै किमि । मीन दीन जल हीन होत जिमि ॥
प्रभु कह हम आउब पुनि काली । ह्वैहै सकल भाँति खुशिहाली ॥
रामहिं जात जानि तेहि जूना । सुन्यो सुनैना भो दुख दूना ॥
जनक पट्टमहिषी तहँ आई । भ्रातन सहित राम शिरनाई ॥

दोहा—जनवासे के जान की, माँगी विदा विनीत ।
राम वचन सुनि सासु तहँ, भै अनन्द ते रीत ॥

चौपाई ।

कहि न सकति कछुवचन विचारी । रहहु लाल की जाहु सिधारी ॥
दुविध जानि जानकि जननी को । प्रभुकह कालिहमिलन अहै ॥
हमरे पितु के देखन काजू । जैहैं सांझ जनक महराजू ॥
ताते मातु विदा अब दीजै । बालक जानि छोह अति कीजै ॥
भरे सुनैना नीर सुनैना । गद्गद कंठ कहत नहिं बैना ॥
जस तस के बोली महरानी । करहु लाल भल जो मन मानी ॥
बाहिदु बंधु बन्दि पद ताके । बाहेर आये आनि सुखा के ॥

लक्ष्मीनिधि तहँ सहित विदेहू। राम गवन लखि भये विदेहू ॥
रघुनंदन वंदन करि भूपै। चढ़ि तुरंग महँ चले अनूपै ॥
राम सखा सब आय जोहारे। हास विलासहि करत सिधारे ॥
निज निवास आये रघुराई। आनँदहूं के आनँद दाई ॥
पितहि प्रणाम कीन शिरनाई। दै आशिष बोल्यो नृपराई ॥

दोहा–सुनहुं राम अभिराम अब, करहु जाय आराम।
साँझ समय मिथिला नृपति, ऐहैं हमरे धाम ॥
सुनि पितु शासन बंधु युत, करि पुनि पितहि प्रणाम।
गये राम आराम हित, जहँ अभिराम अराम ॥

चौपाई।

सतानंद उत जनक समीपा। जाय कह्यो सुनिये कुल दीपा ॥
शिष्टाचार हेत जनवासे। चलहु अवधपति पहँ सजि खासे॥
भली कही अस कहि मिथिलेशा। बोलि सुदावन दियो निदेशा ॥
मंत्री सुहृद सुभट सरदारा। गज रथ पैदर अनुग सवारा ॥
सपदि सजुग सजि आवहिं द्वारा। जनवासे को गवन हमारा ॥
सुनत सचिव शासन सुखपाई। लीन्ह्यो बोलि सैन समुदाई ॥
लक्ष्मीनिधि संयुत मिथिलेशा। बंधु वर्ग सब और सुवेशा ॥
विप्र वेद विद मुनि सँग लीन्हे। चले राम दरशन मन दीन्हे ॥
द्वै धावन तहँ आसुहि धाये। अवधनाथ पहँ खबरि जनाये ॥
दरश हेत मिथिलापति आवत। सुनि दशरथ अतिशयसुखपावत
कियो सकल दरबार तयारी। लियो बंधु सरदार हँकारी ॥
राम बंधु युत लियो बोलाई। नर भूषण आये सुखदाई ॥

दोहा–महाराज नव खंडपति बैठ्यो सहित समाज।
राज मंडली नखत सम, चन्द सरिस रघुराज ॥

छन्द गीतिका ।

उत जनक राज समाज संयुत लसत वीरन मंडली ।
आयो मिलन अवधेश को नवखंड कीर्ति अखंडली ॥
प्रतिहार जै जै करत आगे शोर सरस सोहावनो ।
हल्ला परयो दशरत्थ के ज्योंहीं सुवीर हटावनो ॥
मिथिलेश आवन जानि कौशलनाथ चारि कुमार लै ।
कछु लेन आगे चल्यो सकल उदार वर सरदार लै ॥
चलि द्वार देशहि मिल्यो मुदित महीप सो मंडित महां ।
मिथिलाधिराज प्रणाम कीन्ह्यो भुजन भरि मोदित तहां ॥
सुर मुनि समान विलोकि समधी हर्षि फूलन वर्षहीं ।
नभ पथ विमानन ठट्ट सोहहिं लखन अति उत्कर्षहीं ॥
तहँ राम चारिहु बंधु कीन प्रणाम जनक महीश को ।
मिलि मुदित मिथिलानाथ हाथ पसारि दीन अशीश को ।
अवधेश को अभिवन्दि कुशध्वज मिल्यो कुँवरन जायकै ।
तेहि राज कुँवर प्रणाम कीन सलाज शीश नवायकै ॥
पुनि आय लक्ष्मीनिधि गह्यो पद कौशलेश नरेश को ।
अभिमतहि आशिप पाय मिल्यो दिनेश वंश दिनेश को ।
यहि विधि परस्पर मिलि सकल पुनि पूछि कुशल अनन्दसों ।
अवधेश चले लेवाइ जनकहि पकरि कर अरविन्द सों ॥
दोउ राज बैठे एक आसन दहिन दिशि मिथिलेश हैं ।
बाँयें सुकौशलराज राजत और वीर अशेश हैं ॥
आगे विराजत राम चारिहु बंधु लक्ष्मीनिधि युते ।
दहिने कुशध्वज और निमिकुल वीर इक एकन उते ॥
यहि भाँति युगुल समाज सोहति मनहुँ स्वर्ग सुरावली ।
रघुकुल सुनिमिकुल वीर बैठे वदहिं कवि विरदावली ॥

बहु भाँति शिष्टाचार वचन उचारि अवध भुआर को।
करजोरि बोल्यो जनक आपु समान यह संसार को॥
निमिवंश पावन कियो दीन्ह्यो सुयश मोहिं दराज है।
किमि करौं प्रति उपकार गुनि उपकार आवति लाज है॥
अवधेश बोल्यो सुनहुं तुम मिथिलेश राज ऋषीश हौ।
वर योग ज्ञान विराग भक्ति विवेक धर्म धुरीश हौ॥
तुम्हरे दरश हम भये सकुल पुनीत सकल प्रकार सों।
महिमा तिहारी भूरि महिमा कौन करैं उचार सों॥
हम दियो तुमको सौंपि चारिहु कुँवर तजि छलछन्द को।
लालन करन पालन करन तुम पिता देन अनंद को॥
कौशल नगर मिथिला नगर के आप एक अधीश हौ।
यामें न दूसरि बात कछु तुम विषै कर्म अनीश हौ॥
दशरथ वचन सुनि सब सभासद साधु साधु उचारहीं।
दशरथ सनेह विदेह लखि दृग वारि धारहिं ढारहीं॥
बोल्यो बहुरि निमिवंश भूषण कालिह महल पधारिये।
करिकै कृपा निज कुँवर युत मम भवन जूठन डारिये॥
कहि एवमस्तु भुआल आसुहि अतर पान मँगाय कै।
निज पाणि पंकज सों मुदित मिथिलेश अंग लगाय कैं॥
बीरो दियो निज हाथ सों एला लवंग समेतही।
तैसहि कियो सत्कार अवध भुआर पुनि कुश केतही॥
पुनि राम निज कर कियो लक्ष्मीनिधि परम सत्कार है।
माँगी विदा निज भवन गवन विदेह लहि सुखसार है॥
पहुँचाय द्वारहि देश लौं अवधेश चलि मिथिलेश को।
करि सविध चन्दन सहित नन्दन पाय मोद अशेश को॥

दोहा–सिंहासन बैठ्यो बहुरि, संयुत चारि कुमार।

वरणत नेह विदेह को, देह न रह्यो सँभार ॥
उत बरणत दशरथ सुयश, गमनत गेह विदेह।
राम शील शोभा निरखि, भये विदेह विदेह ॥
पुनि रामहिं बंधुन सहित, बोल्यो कौशल राय।
करि व्यारी कीजे शयन, रैन बहुत नहिं जाय ॥
कौशलपति नन्दन हरषि, अभिवंदन पितु कीन।
सानंदन उठि असन करि, नयन नींद रस लीन ॥
सामंतन करिकै विदा, तज्यो राउ दरबार।
शयन कियो निज अयन में, आनि अनंद अपार ॥

चौपाई।

रोज रैन दिन सव जनवासा। माच्यो हास विलास हुलासा ॥
नृत्य गीत वादन सब ठोरा। माचि रह्यो मंडित चहुँओरा ॥
जात राति दिन जानि न परहीं। महामोद मंगल जन भरहीं ॥
निशा सिरानि भयो भिनसारा। पूरब दिनकर किरणि पसारा ॥
वंदीजन गण द्वारहि आई। गावन लगे विरद सुरलाई ॥
नौमति झरन लगी सब ठोरा। भये दुंदभी के कल शोरा ॥
उठ्यो चक्रवर्ती महराजा। सुमिरि गरुड़गामी छवि छाजा ॥
प्रात कृत्य सब भूप निवाही। दीन्ह्यो दान समान उछाही ॥
रघुकुल तिलक उठे युत भाई। पूजन मज्जन करि सुख छाई ॥
सहित बंधु पितु के दरबारा। आये चारिहु राजकुमारा ॥
लक्ष्मीनिधि उत जनक पठाये। देन निमंत्रण के हित आये ॥
दशरथ निज गोदहि बैठाये। कह्यो लाल केहि काज सिधाये ॥

दोहा—जनक कुँवर बोल्यो विहँसि पितु पठयो मुदमोय।
भूपति भोजन रावरो, आजु महल महँ होय ॥

चौपाई।

प्रेम मगन नृप गिरा उचारो। कहियो पितहि प्रनाम हमारो ॥

पुनि कहियो अस सोइ सुखदाई। जो मोहिं राउर होय रजाई॥
लक्ष्मीनिधि तहँ वंदन करिकै। गयो महल मंडित मुद भरिकै॥
कौशलनाथ निदेश सोहावन। दियो सुनाय पिता कहँ पावन॥
सुघर सूपकारन तेहिं बारा। कीन्ह्यो जनक तुरंत हँकारा॥
दियो निदेश रचहु ज्यौनारा। त्रिभुवन व्यंजन विविधप्रकारा॥
सिगरे सूपकार सुनि शासन। लगे रचन ज्यौंनार हुलासन॥
ते करी अवधेश तयारी। महल पधारन हेतु सुखारी॥
सजे सकल सुंदर रघुवंशी। जे त्रिभुवन महँ विदितप्रशंशी॥
चारि कुमारन भूप बोलाये। चारि उतंग मतंग चढ़ाये॥
नाम जासु शत्रुंजय नागा। जेहि विलोकि दिग्गज मद भागा॥
तापर भयो भुवाल सवारा। जिमि ऐरावत शक्र उदारा॥

दोहा–राम लपण दक्षिण दिशा, वाम भरत रिपु शाल।
चारि चारु चामर चलत, सोहत छत्र विशाल॥

चौपाई।

सजी सेन सब बजे नगारे। फहरन लगे निशान अपारे॥
प्रतीहार बोलहिं यक ओरा। मंजुल करहिं जांगरे शोरा॥
धूरि पूरि नभ भूरि उड़ानी। चली सेन नहिं जाय बखानी॥
पुरवासी देखन सब धाये। देखि देखि धनि धनि मुख गाये॥
मनहुँ आज आवत सुखचारी। सहित चारि लोकप सुखकारी॥
देव समाज विनिंदक सैना। जोहत जन जकिकढ़त न बैना॥
जहँ तहँ कहहिं जनकपुर वासी। धन्य धन्य नृप अवध मवासी॥
भई खबर महलन महँ जाई। आवत अवधनाथ नृपराई॥
राज समाज साजि सब साजा। बैठरह्यो विदेह महराजा॥
समधी आगम मनहिं विचारी। आगू लेन चल्यो पगु धारी॥
द्वार देश अवधेश निहारी। कर गहि गज ते लियो उतारी॥

किये प्रणाम परस्पर दोऊ । वंदे यथा योग्य सब कोऊ ॥

दोहा–दीन वंधु वंदे जनक, सहित वंधु युत वंधु ।
शील सिंधु को राम सम, नागर नेह प्रबंधु ॥

चौपाई ।

सभा सदन दशरथ पगु धारे । सिंहासन यक अमल
बैठे तापर भूपति दोई । दहिने दिशि दशरथ मुदमोई ॥
कनकासन विस्तर यक आगे । लघु राजासन ते नग
तापर राम बैठ लै भाई । लक्ष्मीनिधिहि लियो बैठाई ॥
दहिने दिशि रघुवंश विराजा । बाँये दिशिनिमिकुल छबिछा
लाग्यो होन तहां नट सारा । नचन लगीं अप्सरा अपारा ॥
लागे गान करन गंधर्वा । बाज बजाय प्रमोदित
मिथिलापुर के नर्तक नाना । नचैं डगैं नहिं ताल बँधाना ॥
यद्यपि किन्नर अरु गंधर्वा । परम प्रवीण अप्सरा सर्वा
लेहिं तीनि ग्रामन की ताना । नाच गान महँ परम सुजाना
तदपि विदेह गुणीजन देखी । लेहिं आपने ते वर लेखी
तिनहिं सराहैं वारहिं वारा । अस नाहिं शक्रसदन नटसारा ॥

दोहा–राम दरश हित स्वर्ग तजि, चारण सिध गंधर्व ।
विद्याधर अरु अप्सरा, आये मिथिला सर्व ॥

चौपाई ।

जनक गुणी जन कला निहारी । तजि गुण गर्व रहे हिय हारी ॥
अवध नरेशहु करी प्रशंसा । दियो भूरि धन नृप अवतंसा ॥
पै न विदेह गुणीजन लीन्हे । अनुचितजानि विनयवड़िकीन्हे ॥
पुनि मिथिलापति परम सुजाना । आन्यो अतरदान अरु पाना ॥
निज कर कंजन अतर लगायो । पुनि तांबूल सप्रेम खवायो ॥
पुनि उठि राम समीप सिधारी । अतर लगायो वदन निहारी ॥

कियो रामकर जस सतकारा। तैसहि भ्रातन कियो उदारा॥
निज कर पंकज पान खवायो। मरकतमणि माला पहिरायो॥
पद्मराग मणिमाल विशाले। दियो जनक नृप कोशलपाले॥
पितु रुख जानि विदेह कुमारा। किय सब रघुवंशिन व्यवहारा॥
अतर पान भूषण पट नाना। यथायोग्य सबही सनमाना॥
दशरथ सरिस बरातिन पूजे। सबके सकल मनोरथ पूजे॥
दोहा—शत शत गज स्यन्दन सहस, दश दश सहस तुरंग।
दियो चारिहूं कुँवर को, तदपि न पूरि उमंग॥
अयुत अश्व यक सहस गज, कनक सँवारे साज।
रतन जाल की पालकी, दिय दशरथ निमि राज॥
चौपाई।
तेहि अवसर आयो कुशकेतू। उठी सभा युग भूप समेतू॥
करि वंदन भूपति शिर ताजे। कह्यो वचन पुनि भोजन काजे॥
रघुकुल तिलक विनयसुनि लीजे। भोजन हेत गवन अब कीजे॥
सुनि कुशकेतु वचन अवधेशा। चल्यो कुँवर युत लै मिथिलेशा॥
चले संग सब रघुकुल वारे। भोजन करन भवन ज्योनारे॥
भोजनभवन द्वार महँ जाई। कनक पीठ बैठ्यो नृपराई॥
चारि चारु चामीकर चौकी। बैठे कुँवर सुहात समौकी॥
तहँ सबंधु मिथिलेश सिधारे। निज कर दशरथ चरण पखारे॥
सो जल सींचि शीश महराजा। मान्यो अपने को कृतकाजा॥
प्रभु समीप पुनि गयो विदेहू। सजल नयन रोमांचित देहू॥
भरि जल भाजन सुरभित नीरा। कनक थार आगे धरि धीरा॥
प्रभु पदपंकज भूप पखारत। पुलकि गात लोचन जल ढारत॥
दोहा—जे पदपदुम पखारि विधि, भरयो कमंडल नीर।
तेहि शंकर निज शिर धरयो, मेट्यो भव भव पीर॥

चौपाई ।

जो जल परश करत यक वारा । तरे सगरसुत साठि हजारा ।
कलि कलमष वन विटप दवारी । दुरित दवानल सावन वारी ।
अधम उधारन कारण सोई । जेहि प्रभाव लखि कालिंदि रोई ।
सोपदकञ्ज सलिल मिथिलेशू । धरचो शीश महँ [illegible]
जोरि पाणि वोल्यो मिथिलेशा । भयों धन्य मैं कुल पुर देशा ।
जनक भाग सव देव सराहैं । इन सम आज कौन महि [illegible]
जो पदजल शिर धारण हेतू । योगी करत रहत नित नेतू ।
सो पद सलिल सहजहीं पायो । कौन जनक सम जग [illegible]
यहि विधि प्रभु पद कंज पखारी । भरत लषण रिपुहनहुँ हँकारी ।
धोयो चरण चारु सवही के । सींच्यो सलिल सदन सव [illegible]
तहँ लक्ष्मीनिधि अरु कुशकेतू । रघुवंशिन पद धोवन हेतू ।
लै चामीकर भाजन पानी । राम समान वरातिन जानी ।

दोहा–धोये रघुवंशिन चरण, प्रेम प्रभाव पसारि ।
पुनि कौशलपति सों कह्यो, चलहु नाथ पगु धारि ॥

चौपाई ।

अवधनाथ कहँ सहित कुमारा । रघुवंशिन तिमि और अपारा ।
भोजन मंदिर गये लेवाई । यथायोग्य सव कहँ वैठाई ।
मृदुल पटे पन्नन के प्यारे । वैठाये तिन राजकुमारे ।
जड़ित चंद्रमणि चौकी चारू । वैठायो कौशल भर्तारू ।
तेहि विधि रतनासन यक रूरो । वैठ विदेह प्रेम परिपूरो ।
लक्ष्मीनिधि वैठ्यो ढिग रामा । कुशध्वज वैठ जनक के वामा ।
एक ओर सव वैठ वराती । एक ओर सव लसं पराती ।
सूपकार तहँ अगणित आये । पारुस करन लगे सुख छाये ।
रहे जिते तहँ रघुकुल वारे । दीन्हे भाजन कनक अपारे ।

र कटोरे कनक करोले। चिमचा प्याले परम अमोले॥
विध रतन भाजन छविजाले। आगे थरे सुकौशलपाले॥
मि मणिभाजन परम अनूपा। चारिहु वरन दिये अनुरूपा॥
ोहा–यहि विधि भाजन धरि सकल, सूद सहित अनुराग।
मनरञ्जन व्यंजन विविध परुसन लगे सुभाग॥

चौपाई।

रुस्यो ओदन विविध प्रकारा। मोती भात सुनाम उचारा॥
सारि भात नाम शशि भातू। कनकभात पुनि विमल विभातू॥
जत भात पुनि ओदन कुंदा। सुघर भात प्रद अमित अनंदा॥
ारुण पीत अरु हरितहु वरणे। ओदन विविध कौन कवि वरणे॥
दल प्रकार अनेकन आने। वरण वरण के स्वाद महाने॥
ाप मूंग अरु चना सुगंधू। सोंध सरस अतिशय क्रतु रंधू॥
ुनि कृशरान्न प्रकार अपारे। अदरख लवण निंबु रस डारे॥
अरुचि विभंजन रुचिर विरंजू। बहु कबाब कलिया मनरंजू॥
ाय दधि मधु चिंचिनि रस बोरे। वट विधान तहँ धरे रसोरे॥
टी प्रकार विविध सुधदाई। विविध मसाले सुरभि सोहाई॥
बने विविध विधि शाक विधाना। विविध रंग नहिं जाय बखाना॥
विविध भाँति की बनी मिठाई। सरस सवाद सुधा समताई॥

दोहा–फेनी खाझे घेवरो, बावर विविध प्रकार।
गोरस की बरसहकुली, सरस समोसे सार॥

चौपाई।

मन मोहन मोहनी मिठाई। बासोंधीं खुरचन सुखदाई॥
पयमोदक दधिमोदक केते। मधुमोदक बहु सिता समेते॥
कुंडलिनी वर स्वाद सोहाई। लवण सिता करि भेद बनाई॥
पायस चंद्र किरण सम सोहे। चन्द्राकार विविध वट जोहे॥

दधि वटिका गोविंद वटिका हैं। मूंग माष वटिका सरस
तिमि कूष्मांडवटी सुखदाई। आर नालवट लवण
मीठी लवण विविध विधि पूरी। तिमि माडव रोटी रस
करनिरमित सहकुली महानो। वेलन विरचित स्वादहि
तिमि नवनीत पूरिका लोनी। पूरी रजतवरण अरु
विविध फलन के विविध अचारे। विविध फलन के रस मह
लेह्य पदारथ स्वाद विभेदा। चोख्य पदारथ हारक
विविध भाँति मेवन पकवाना। कौन करै कवि सकल

दोहा–रुचिर स्वाद वहु रैतुवा, घृत के विविध विधान।
अगर तगर परिमल कलित, केसरि वरण समान॥

चौपाई।

पान विविध विधि सरस सोहाये। द्राक्षारस मृगमदहि मिला
तिमि नारंग रसहि अरुणारे। मधुरस मिश्रित मिश्री
श्वेत पीत केतकि जल केते। अरु मल्लिका सुरभि जल
वहुअंगूर पूर रस पूरे। तिमि उसीर के नीवु
वहु प्रकार घनसारहु वारी। चंदन वारि महा सुख
रस रसाल के विविध प्रकारा। जंवु निंवु के अंवु
पके मिष्ट कदली फल जाती। पिंड खजूरादिक वहु भाँ
पके वड़े वदरी फल खासे। तिमि सरदा फल स्वाद
कुमकुम जल कस्तूरी वारी। फल तरवूज दिये तिन
वने अनेक अन्न पकवाना। वरिल इडर हर स्वादु
तिमि रसाज कतरे वड़ कतरे। मूँग मुँगोरे मोटहु
छन्न पत्र दधिवटी समेतू। साफ वाफ दधि स्वाद

दोहा–दधि पय मिश्रित प्योसरी, सदित रसालन वोर।
तिमि श्रीखंड अखंड रस, ठंढ स्वाद शिरमौर॥

चौपाई।

विध पंच पकवान अपारे। दधि ओदन जे देवन प्यारे॥
कूर पुंगल औ पुलिहोरा। चारि पानि चिञ्चिनि रसबोरा॥
रिवल्लभ अरु रमाविलासे। रसकोरे बोरे रस खासे॥
धुर तिक्त कटु अम्ल कषाई। लवण सहित बहु वस्तु बनाई॥
व्यञ्जन सुरपुर महँ होवैं। नाग नगर जे व्यञ्जन जोवैं॥
यञ्जन पाकशास्त्र महँ जेते। सूपकार ल्याये सब तेते॥
गस्वामिनिसियजेहि घर राजे। बैठे जगपति भोजन काजे॥
हँ व्यञ्जन के विविध विधाना। को अस कवि जो करै बखाना॥
ोहि विधि परुसे दशरथ काहीं। तेहि ते न्यून बरातिन नाहीं॥
ूपकार मिथिलापति केरे। परुसि पदारथ आसु घनेरे॥
ाम रूप अवलोकन लागे। कोटिन जन्म दुरित तन भागे॥
हँ अवधेश आचमन कीन्हे। पुनि बलिवैश्व मंत्र पढ़ि दीन्हे॥

दोहा—मनहिं अर्पि लक्ष्मीपतिहि, नारायण मुख भाषि।
पंच कौल प्रथमहि लिये, मौन मोदमिति नापि॥
जैसी विधि दशरथ करी, तैसी करी विदेह।
पुनि लागे भोजन करन, दोउ नृप सने सनेह॥

चौपाई।

राम बंधु युत अति अनुरागे। भोजन करन लगे सुखपागे॥
दधि चिउरा विदेह कर लीन्हे। कोशलपति आगे धरिदीन्हे॥
कह्यो जोरि कर तिरहुत मार्हीं। याते और पदारथ नाहीं॥
और सकल रावरी विभूती। हमरे तो यतनी करतूती॥
हम नहिं तुमहिं जेंवावन लायक। लेहु कृपा करि रविकुल नायक॥
कह्यो अवधपति सुनिय विदेहू। जो करि कृपा आज तुम देहू॥
सो सादर हम शिर धरि लेहीं। अस दाता पैहैं पुनि केहीं॥

इतै राम संयुत सब भाई। लक्ष्मीनिधि सो करत हँसाई॥
कहि न सकत गुरुजन के आगे। सैनहि हँसी करत सानुरागे॥
लक्ष्मीनिधि सों सैन चलाई। कहहिं देहु मोदक युग लाई॥
देत रमानिधि ऊतरहेरे। ये मोदक कौशलपुर केरे॥
यहि विधि रचत अनेकन हासी। भोजन करत कुँवर सुखरासी॥

दोहा–तहँ गारी गावन लगीं, मिथिलापुर की नारि।
बाजन विविध बजाय कै, सातहु सुरन सुधारि॥

गारी–हंसीगति छंद।

सुनिये कौशलपति भूपा। तिहरो यश जगत अनूपा॥
धरणी महँ रही सुधन्या। अज भूपति की यक कन्या॥
तेहि भूप स्वयंवर कीन्हा। यक मुनि कहँ सो वरि लीन्हा॥
मुनि भवन गई चलि प्यारी। जननी पितु लाज बिसारी॥
कोउ कहो गाय पुनि गारी। तुवभाम होत तपधारी॥
रघुकुल चलि आई रीती। तिय लेहिं पुरुष कहँ जीती॥
हम सुने कान बहु वारा। तुव महिपिन मीत अपारा॥
निशिचर की हरी कुमारी। तुम व्याह्यो काह विचारी॥
केकयी तुम्हारी रानी। तेहि नाम तासु गति जानी॥
तुम बूढ़े अवधभुआला। किमि जनमें चारिहु लाला॥
हम तुव घर की गति जानी। नहिं कोनहुँ लोक लुकानी॥
तिय खीर खाय सुत जनतीं। अपनो करतब तब मनतीं॥
दुइ लाल श्याम दुइ गोरे। यह होत महा भ्रम मोरे॥
ऐसिहु हम सुनी कहानी। जब पुरुष शक्ति भै हानी॥
तब मुनि ते राखत वंसा। यह रघुकुल केरि प्रशंसा॥
अब सुनहु विनय अवधेशा। अति ठनत करत निदेशा॥
जो होइ भगिनि घर मारी। तो देहु विदेह सिधारी॥

सुनियत दशरथ राऊ । तुम्हरे कुल परम प्रभाऊ ॥
पान यज्ञ को नीरा । सुत जनै पुरुप मतिधीरा ॥
विधि बहु गारी गावैं । मिथिलापुर वाम ललावैं ॥
कहैं नारि समुदाई । यह दीजै नेग मँगाई ॥
कुल के कुँवर कुँवारे । सब किये भरोस तिहारे ॥
यक कन्या नृप दीजै । यह अनुपम यश ॥
सुनत मृदुल नृप गारी । मुसक्यात लहत सुख

।—मंद मंद भोजन करत, सुनि सुनि गारी राय ।
कुँवर उतर कछु देत नाहिं, दोउ नृप निकट लजाय ॥

चौपाई ।

ह विधि करि भोजन अवधेशा । करि आचमन तज्यो तेहि देशा॥
सकल निमि रघुकुलवारे । उठि कुमार कर चरण पखारे ॥
वन कियो भूप शिरताजा । तहँ आयो मिथिला महराजा ॥
जकर बीरी नृपहि खवायो । लक्ष्मीनिधिरामहि पुनि ल्यायो॥
तर लगाय खवाये बीरा । यथा योग्य पाये सब बीरा ॥
गी विदा जान जनवासे । कह्यो वचन तब जनक हुलासे ॥
हि विधि कहौं जान अवधेशा । जान कहत जिय होत कलेशा ॥
शल नायक वंदि विदेहू । गमन्यो वर्णत जनक सनेहू ॥
म प्रणाम कीन मिथिलेशै । आशिप दियो विदेह अशेशै ॥
गि विदा गवने जनवासे । चढ़ि रघुनंदन स्यंदन खासे ॥
ाजु चतुर्थी कर्म विधाना । ताकर सब साजहु सामाना ॥
तानंद कह जनक हुलासे । बर आनन पठयो जनवासे ॥
ौतम सुत चलि अवध भुवाले । कह्यो चतुर्थी कर्महि हाले ॥
ाउ कह्यो मम गुरु पहँ जाहू । तिन युत कुँवरन कहँ लैजाहू ॥
ौतमसुत वशिष्ट पहँ गयऊ । विश्वामित्रहि आनत भयऊ ॥

इतै राम संयुत सब भाई। लक्ष्मीनिधि सो करत
कहि न सकत गुरुजन के आगे। सैनहि हँसी करत
लक्ष्मीनिधि सों सैन चलाई। कहहिं देहु मोदक युग
देत रमानिधि ऊतरहेरे। ये मोदक कोशलपुर
यहि विधि रचत अनेकन हासी। भोजन करत कुँवर सुखर

दोहा–तहँ गारी गावन लगीं, मिथिलापुर की नारि।
बाजन विविध बजाय के, सातहु सुरन सुधारि॥

गारी–हंसीगति छंद।

सुनिये कौशलपति भूपा। तिहरो यश जगत अनू
धरणी महँ रही सुधन्या। अज भूपति की यक कन्य
तेहि भूप स्वयंवर कीन्हा। यक मुनि कहँ सो वरि लीन
मुनि भवन गई चलि प्यारी। जननी पितु लाज विसार
कोउ कहो गाय पुनि गारी। तुवभाम होत तपधारी
रघुकुल चलि आई रीती। तिय लेहिं पुरुष कहँ जीत
हम सुने कान बहु बारा। तुव महिपिन मीत अपार
निशिचर को हरी कुमारी। तुम ब्याह्यो काह विचारी
केकयी तुम्हारी रानी। तेहि नाम तासु गति जान
तुम बूढ़े अवधभुआला। किमि जनमें चारिहु लाल
हम तुव घर की गति जानी। नहिं कौनहुँ लोक लुकान
तिय खीर खाय सुत जनतीं। अपनो करतब सब मनत
दुइ लाल श्याम दुइ गोरे। यह होत महा भ्रम मो
ऐसिहु हम सुनी कहानी। जब पुरुष शक्ति भै हानी
तब मुनि ते राखत वंसा। यह रघुकुल केरि प्रशंसा
अब सुनहु विनय अवधेशा। अति लजत कहत
जो होइ भगिनि घर माहीं। तौ

औरहु विप्र वृन्द जुरि आये। पढ़न लगे स्व
उतारि पालकी ते वर चारो। अन्तःपुर कहँ
तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आयो। मिलि कुँवरन ति
मंगल गान करत कल कामिनि। अर्घ देत गवनी
कौशिक सतानन्द गुरु तीने। मंगल पढ़त
मंडप तर दूलह सब आये। मिली सिद्धि

दोहा–चारि चारु आसन अमल, बैठे दूलह चार।
सतानन्द कौशिकहु गुरु, लगे करावन चार

चौपाई।

गौरि गणप पूजन करवाये। पुनि चारिहु वर
वरन वधुन मज्जन करवाये। पट भूषण
पुनि बैठाये आसन माहीं। सविध कराये
सकल चार चौथी कर कीन्हे। अन्तहपुर
तेहि अवसर आई महरानी। अपर दया वपु
कह्यो मुनिन सों वचन त्वराई। भयो असन
चौथी कृत्य शीघ्र करवाई। भोजन करें
सूखि गये कुँवरन मुख कैसे। शरदातप लहि
मुनि कह कृत्य भई विधि लाई। असन करावहु
लै रानी सब कुँवरन काहीं। असन करायो
करि भोजन रघुकुल कर चंदा। बैठे आय
तहां सिद्धि लै सखिन सिधारी। दीन्ह्यो अतर

दोहा–जोरि कह्यो कर राम सों, सुनहु प्रानपति
हमरे कुल की रीति यह, चलि आई सब

चौपाई।

चौथी छूटि जाति जेहि वारा। तेहि दिन हरदी
दुलहिनि दूलह सरहज सारी। होरी खेलहिं

माचार सब दियो सुनाई । सम्मत कीन्ह्यो दोउ मुनि

दोहा–तहँ वशिष्ठ चारिहु कुँवर, लीन्हे आसु बोलाय ।
रतन जालकी पालकी, दूलह लिये चढ़ाय ॥

चौपाई ।

ाधिसुवन अरु आपहु आसू । चढ़े एक रथ सहित हुल
च सहस सँग राजकुमारा । छटे छबीले तुरँग सव
गणित परिकर विविधनकीवा । चले संग बोलत जय ज
ारि चारि चामर अति चारू । करैं कुँवर शोशन संचा
ाकाचन्द्र छत्र छवि छाजे । मुरछल विविध विशाल विरा
ाहि विधि चारिहु कुँवर सोहाये । जनक भूप रनिवासहिं
ूलह आवनि सुनत सुनैना । कलश साजि कामिनी सुनैन
ठई मंगल हित अगवानी । गावत चलीं सुमंगल व
द्वार देश महँ दूलह लीनी । देखि महा छवि आनँद भीनी
मुकुट जड़ाउ रतन के खासे । मुकुत झालरैं झलक विलासे
तन नारंग रंग वर वागे । कटि फेटे अति सुंदर लागे
छहरति सुछवि छोर द्वै छोनी । मुकुता मणि माणिकअतिलोनी

दोहा–परे परतलें कंध में, जगति जवाहिर जोति ।
हीरन की हारावली, हिमकर किरण उदोति ॥

चौपाई ।

लसत कंठ पन्नन के कंठे । मनु बुध वहुत रूप धरि वै
युगल युगल श्रुतिजलज सोहाहीं। मनु उड़ सेत श्याम घन म
भुज अंगद कर कड़े विराजैं । मणि मंजीर कमल पद भ्र
चारिहु वरण अनूपम शोभा । देखि सकल नारिन मन लो
लेहिं सकल दूलह वलिहारी । तिनुका तोरहिं पलक ने
तहँ वशिष्ठ कौशिक मुनि आये । सतानन्दहू संग सिध

पग धारिये फागु निवास लला दरशाइये तो ।
सुनतीं नट नागरी रावरे की नट नागरी ठाढ़ीं
रघुराज जू ठाढ़े इतै चकितै बिन हारही हार
सो सहचारिनी की सुनि बानि दियो हरि हेरि
कोई सुजान सखा कह्यो नर्म कहूं रघुवंशिन
तू कहै कैसे वृथा अरी बैन इतै पिचकारिन व
हैं रघुराज सखा विजयी विजै पायके जैहैं

दोहा–सोसुनिकै सिय सहचरी, चली चतुर मुसक्य
खबरि जनाइ सिद्धि को, आवत राम सभा

सवैया ।

नर्म सखान समाज समेत चले रघुनन्दन बंधुन लौं
फागु को मंदिर चंदिर चारु चितै अति चौड़ासा च
ठाढ़े भये यक ओर सखान लै श्रीरघुराज महा मुद
शारद वारिद मंडल में मनु द्वै रवि द्वै शशि भासदि
देखी सखी सब राजकिशोरन चित्त के चोरन सो अ
बाज बजावन लागीं अनेकन गावन लागीं धमारि सु
आये लला अब आये लला अब जान न पावें सखान
श्रीरघुराज को धाय धरो झुकि झारिकै झोरिन सं
तहँ गोरी कही कड़िकै न रुकोगी जबलगि आप को
मोहिं आनि किशोरी को कै बरजोरी बनाइहौंलोगे
तुम चोरी करो चित की रघुराज लला जो कहूं भगि
झिटि झारिकै झोरी तुम्हारी मुखे तो जिया नर्मा फेरि
श्रीरघुराज सखानि समान ने कोई नर्मा कहि बैन
देख्यो नहीं रघुवंशिन के और ठौरि कै दखे न कहूं प
कोशलनाथ को नंद किये कहीं को अब सो दमेन

ते सजहुँ आप हित होरी। यह सुख देखन की रुचि
द्धि वचन सुनिकै सुखदाई। बोले मंजु वचन रघु
ब जो जो तुम्हरे मन भावै। सो सो करिय न कछु रहि
नहिं कहो तौ बाहर जाई। होरी वसन पहिरि सब
र्म सखन लै अपने संगा। आवैं करन फागु रस रं
ही सिद्धि यह भली विचारी। सजि आवहु करि फागु तय
म देखब बल सकल तिहारे। जैहो जनवासे हठि
ठे राम सब बंधु समेतू। बाहर आये रघुकुल के
वन जाय सब सखन बोलाये। होरी होन हाल सब गाये
र्म सखा सुनि भरे उमंगा। सजे श्वेत अंबर सब अंगा

दोहा—जनक पठाये विविध विधि, भूषण वसन सपेत।
यथा योग्य बखशत भये, सब कहँ रघुकुल केत॥

सवैया।

मंडित हीरन ते बर क्रीट, झलाझल झालरैं मोतिन केरी।
त्यों झलकैं हलकैं हिय हीरन, हार हिमाचल की छवि फेरी॥
राजतके जरतारी बने, बर बागे चमाचम चारुता ढेरी।
श्रीरघुराज की माधुरी मूरति, काको हियो हरि जात न हेरी॥
फेटे कसे कटि में चटकीले, मजीले महीप लला हैं अनोखे।
चौलड़े त्यों मुकुताहल माल, सुतारावली छवि छीने अदोखे॥
खेलन फागु सजे रघुराज, सुराज कुमार महा चित चोखे।
अंगनि अंग उमंग भरे, जिन जोहत होत अनङ्ग के धोखे॥

दोहा—होरी मंदिर में उतै, सिद्धि सजाई साज।
लै सीता सँग गवन किय, संयुत सखिन समाज॥

सवैया।

परिचारिनी चारि कही चलिकै सब खेलन होरी तयारी भई।

पग धारिये फागु निवास लला दरशाइये तौ।
सुनतीं नट नागरी रावरे की नट नागरी ठाढ़ीं
रघुराज जू ठाढ़े इतै चकितै तिन हारही हार
सो सहचारिनी की सुनि बानि दियो हरि हेरि
कोई सुजान सखा कह्यो नर्म कहूं रघुवंशिन
तू कहै कैसे वृथा अरी बैन इतै पिचकारिन
हैं रघुराज सखा विजयी विजै पायकै जैहैं

दोहा–सोसुनिकै सिय सहचरी, चली चतुर
खबरि जनाई सिद्धि को, आवत राम

सवैया।

नर्म सखान समाज समेत चले रघुनन्दन बंधुन
फागु को मंदिर चंदिर चारु चितै अति चौड़ासो
ठाढ़े भये यक ओर सखान लै श्रीरघुराज महा मुद
शारद वारिद मंडल में मनु द्वै रवि द्वै शशि भासहि
देखी सखी सब राजकिशोरन चित्त के चोरन सो
बाज बजावन लागीं अनेकन गावन लागीं धमारि
आये लला अब आये लला अब जान न पावैं
श्रीरघुराज को धाय धरौ झुकि झारिकै झोरिन
तहँ गोरी कही कढ़िकै न रुकौगी जबैलगि आप को
मोहिं आनि किशोरी की कै बरजोरी बनाइहौंछोरी
तुम चोरी करो चित की रघुराज लला जो कहूं भगि
झिलि झारिकै झोरी जुमोरी मुखै तौ सिया सखी फोरि
श्रीरघुराज सखानि समाज ते कोई सखा कढ़ि बैन
देख्यो नहीं रघुवंशिन के अँगै हारी के हठे न गहे
कौशलनाथ की सौंह किये कहाँ को अब जो इमसे

गाय बजायकै आई बजाय मचाय कै फागु न पाइहौ पारो ॥
यतनो सुनिकै सिगरी सखियां भरे कंचन की पिचकारिन को।
सुगुलालन को उठी मूठि चहूँकित गाय धमारिन गारिन को ॥
धन धाई धरो धरो भापत यों रघुराज पै दै करतारिन को।
हरदी की करी जरदी ललकारि लख्यो मिथिलापुर नारिन को॥

कवित्त घनाक्षरी।

आईसजि सीता सेत भूषण वसन सेत,
संगकी सहेली सेत सेत सुखमाछई।
सेत पागे सेत वागे सेत कटि फेटे लागे,
रघुराज प्यारो आयो फागु के उछाहई ॥
होरी होरी करि ललकारि हल्ला कियो होरि,
चली पिचकारी त्यों अबीर की अँध्यारई।
लाल लाल लाली लाल सखा लाल सखी लाल,
अंग लाल रंग लाल लालमयी ह्वैगई ॥

रूप घनाक्षरी।

मणि अँगनाई मध्य मंडित मढ़ो है फागु,
राजतीं रँगोली रहीं लीला रस लूटि लूटि।
कुंकुमानि कुंकुम गुलाल घनसार मेले,
कंचन कलश नहवावैं रंग जूटि जूटि ॥
रघुराज मानिक प्रवाल हीर मोति मंजु,
छहरैं छमा में छाय छोरन से छूटि छूटि।
सुंदरी सुकिन्नरी सी उर्वशी परी सी हेम,
वल्लरी सी व्योम ते परी हैं मनौ टूटि टूटि ॥

घनाक्षरी।

मुरजमृदंगढोलबाँसुरीसुरोलीबाजैंगायरहींगानवारीतानकेतरेरी में।

ह्वैगईझिलाझिलीमिलामिलीसखीसखानचमकचहूँघाभईवादलेकीदेरीमें
सहजा सहजसहजोरीकरिरघुराज देख्योजोनवनत वनावतचितेरीमें॥
धोखेधोखेधसिधसिधायकैसुरोरीधुरिधरचोरघुवीरकोअवीरकीअँधेरीमें
वारिकै अनेकन अनंग छविरघुराजआनँदउमंगनसोंअंगनजमकिगे॥
एककरकंजसोंकरखिकटिफेटोचटदूजेकरकंजकरकरिकै तमकि गे।
कौशलेशकुँवरकहूँनजानपैहौभागिभागमानियानिबोलिदर्पसोंदमकि गै
छायकैछटाकोइयामघनकीघटामेंमनौचरचिचरित्रचारुचपलाचमकिगै

दोहा–सहजा सहजोरी करी, होरी में ललकारि।
बरजोरी रोरी मलत, राम छुटे झिझकारि॥
चलत अनत अस मुख भनति, एहो राज किशोर।
कर सों छूटे का भयो, छुटे न चित चितचोर॥

कवित्त घनाक्षरी।

छूटेसहजासेरामदेखिकैसिधारीसिद्धिसियतेसहितलैकैसखिनसमाजहै।
इतैधायेचारौबंधुसखनकेवृन्दलीन्हे छायगोगुलालनभमंडलदराजहै॥
वादलेकी ह्वैगईवसुंधराविराजमानआसमानभरीगानवाजनअवाजहै।
सखा गहि लेवैंसखीसखीगहिलेवैंसखाभ्रातनसमेतझूलोफिरैरघुराजहै॥
राच्यौमहाफागुरँगकेसरिकोकीचमाच्योअगरतगरधूरिपूरीचहुँओरहै
छहरैंसुछोनीसुममल्लिकाधमिल्लनतेचमकेंसुचामीकरवछरोसीगोरीहै॥
चलैंपिचकारीत्योंसुगन्धभरीवारीवैस सखनसखीनवरावरबरजोरीहै।
फटिकफरशखेलैंफागुअनुरागभरेकौशलकिशोरमिथिलेशकीकिशोरीहै
सहितगुलालरोरीवादलेकीमूठिमारिलाटकेसखनमुखकहूँझिलिआवैहै
काशमीर रंगनचलायपिचकारीचारुराजदुलहैटेकासिफेटेनैहटावै है॥
चातुरीचमकिचपलासीकरिचातुरीकोआतुरीसोंपकरिसखानलयनावैहै
नारीकोवनायबेपर्वेदोदैकै छोरिकैरघुराजकौशलेशकुँवर देखावैहै॥
अवध किशोरचितचोरचारोओरधायरोरीझोरीझोरनोरिललितनमानको

गाय बजायकै आई बजाय मचाय कै फागु न पाइहौ पारो ॥
यतनो सुनिकै सिगरी सखियां भरे कंचन की पिचकारिन को।
सुगुलालन को उठी मूठि चहूँकित गाय धमारिन गारिन को ॥
धन धाई धरो धरो भाषत यों रघुराज पै दै करतारिन को।
हरदी की करी जरदी ललकारि लख्यो मिथिलापुर नारिन को॥

कवित्त घनाक्षरी।

आईसजि सीता सेत भूषण वसन सेत,
संगकी सहेली सेत सेत सुखमाछई।
सेत पागे सेत बागे सेत कटि फेटे लागे,
रघुराज प्यारो आयो फागु के उछाहई ॥
होरी होरी करि ललकारि हल्ला कियो हेरि,
चली पिचकारी त्यों अबीर की अँध्यारई।
लाल लाल लाली लाल सखा लाल सखी लाल,
अंग लाल रंग लाल लालमयी ह्वैगई ॥

रूप घनाक्षरी।

मणि अँगनाई मध्य मंडित मढ़ो है फागु,
राजतीं रँगोली रहीं लीला रस लूटि लूटि।
कुंकुमानि कुंकुम गुलाल घनसार मेले,
कंचन कलश नहवावैं रंग जूटि जूटि ॥
रघुराज माणिक प्रवाल हीर मोति मंजु,
छहरें छमा में छाय छोरन से छूटि छूटि।
सुंदरी सुकिन्नरी सी उर्वशी परी सी हेम,
वल्लरी सी व्योम ते परी हैं मनौ टूटि टूटि ॥

घनाक्षरी।

मुरजमृदंगढोलबाँसुरीसुरोलीबाजैंगायरहींगानवारीतानकेतेररी मैं

हैगईझिलाझिलीमिलामिलीसखीसखानचमकचहूँघाभईबादलेकीढेरीमें
सहजा सहजसहजोरीकरिरघुराज देख्योजोनवनत वनावतचितेरीमें॥
धोखेधोखेधसिधसिधायकैसुरोरीधुरिधरच्योरघुवीरकोअवीरकीअंधेरीमें
वारिकै अनेकन अनंग छविरघुराजआनँदउमंगनसोंअंगनजमकिगे॥
एककरकंजसोंकरखिकटिफेटोचटदूजेकरकंजकरकरिकै तमकि गे।
कौशलेशकुँवरकहूँनजानपैहौभागिभागमानिवानिबोलिदपेसोंदमकि गे
छायकैछटाकोश्यामघनकोघटामेंमनौचरचिचरित्रचारुचपलाचमकिगे

दोहा—सहजा सहजोरी करी, होरी में ललकारि।
बरजोरी रोरी मलत, राम छुटे झिझकारि॥
चलत अनत अस मुख भनति, एहो राज किशोर।
कर सों छूटे का भयो, छुटे न चित चितचोर॥

कवित्त घनाक्षरी।

छूटेसहजासेरामदेखिकैसिधारीसिद्धिसियतेसहितलैकेसखिनसमाजहैं।
इतैधायेचारोंबंधुसखनकेवृन्दलीन्हे छायगेगुलालनभमंडलदराजहैं॥
वादलेकी हैगईवसुंधराविराजमानआसमानभरीगानबाजनअवाजहैं।
सखा गहि लेवेंसखीसखीगहिलेवेंसखाभ्रातनसमेतझूलेफिरैरघुराजहैं॥
राच्योमहाफागुरँगकेसरिकोकीचमाच्योअगरतगरधूरिपूरीचहुँओरहैं
छहरेंसुछोनीसुममल्लिकाधमिल्लनतेचमकैंसुचामीकरबल्लरीसीगोरीहैं॥
चलैंपिचकारीत्योंसुगन्धभरीनारीवेम मखनसखीनवराबरवरजोरीहैं।
फटिकफरशसेलेफागअ ... ानिधिदेशकीकिशोरीहैं
सदित ९। ... नमुनकहूँलिलिआरैहैं
५' ... दारहैं॥
... रनारहैं
... नारेहैं॥
... निरननरको

घेरि घेरिगोरिनकोगेरिगेरिकुंडनमेंबोरिबोरिरंगनबजायबेशबाजको ॥
हँसिहँसिहुलसिहुलसिहोरीहोरीकहि हेलिनहरायहेरिहरपिदराजको ।
मसलिगुलालकरिलालसुखमालछोनिबालनकोछोड़तेदेखायरघुराजको
सियतेसमेतसिद्धिहेरिहारहेलिनकीहोरीहोरीकहिकियोहल्लाचहुंओरते
मारिपिचकारिनउड़ायकैगुलाललालघेरिलीन्होचारौलालवालमालजोरते
सिद्धिजूसहर्षकरिवर्षकुसुमावलीकोअतिउतकर्षकह्योकौशलकिशोरते
रघुराजआजलालबालकोबनायबेपहाहाकोखवायछोड़िहौंजूयहिठोरते
सिद्धिपाणिपंकजपकरिकररघुराजलपणललाकोगह्योसियबरजोरी सो
मांडवीत्योंउर्मिलागह्योहैशत्रुशालजूकोखड़ीश्रुतिकीरतिविचारीनहिंजोरीसो
सहजाविशाखाचन्द्रकलाचटकीलीचट भरतसुजानगहिलीन्होनहिंचोरीसो
चमकीचलीतेचारिकुँवरलेवायगायबनकबनाईहैविशेखिबरगोरी सो ॥
एक एकसखनकोद्वैद्वैसखीगह्योधायलैचलींसुचायभरीगारीसुखगायगाय।
रामचारोभाइनकोसखनसहाइनकोकरनलोगाइनकोबेसमनमाहँलयाय
चामीकरचौकिनमेंचारोचितचोरनकोसिद्धिबैठायनयनकज्जलदियोलगाय
फबितप्रफुल्लितसुशारदसरोजनमेंबैठीरघुराजमनौअलिअवलीहै आय
रघुलालभालमेंदियेहैटिकुलीविशालमानोकियोअंकमेंमयंकलैअवनिजात
घेरदारघाँघरोनवीनजरतारीसारीरचीरुचिकंचुकीदेखायमुखमुसक्यात
दामिनीसीदामिनीसुभामिनीसँवारिशशिकहतीकुँवरहोतकामिनिकिक्योंलजात।
तबलेनछूटौगेछबीलेछैलरघुराजजबलोंगहौगेनहीसीयपदजलजात ॥

सोरठा-प्रभु बोले मुसकाय, जानि परी यह रीतिइतं ।
सुता व्याहि सुखछाय, बहुरि पुरुष को तिय रचहु ॥

चौपाई ।

यहि विधि फागुसरससुखभयऊ । हास विलास हुलासहि छयऊ ॥
माँगि विदा प्रभु शिविर सिधाये । सखन बंधुयुत राम नहाये ॥
बदलि बसन पितु सभा सिधारे । सुखी भये निहारे ॥

पितुहि वंदि बैठे सब भाई। अस्ताचलहि गये दिनराई॥
कह्यो भूप तहँ अति सुखछाई। संध्या करहु जाय सब भाई॥
पर्‌यो परिश्रम खेलत हरदी। मुखमें देखि परत है जरदी॥
करहु असन करि शयन सकारे। बहुत निशा बीतै नहिंप्यारे॥
पितु शासन सुनि उठे कुमारे। संध्या कर्म सकल निरधारे॥
सखन बंधु लै किये बियारी। किये शयन निज अयनसिधारी॥
जानि समय तजि सभा नरेशा। कियो शयनशुचिसुमिरि रमेशा॥
किये शयन सब सुखी बराती। वरणि जनक कीरति न सिराती॥
नहिं बिसंचकर खोजहु खोजे। मते महा मोदहि जन मोजे॥

दोहा–रघुपति व्याह उछाह में, बीते बहु दिन रैन।
जानि परे क्षण एक सम, पाय महा चित चैन॥

चौपाई।

नित प्रति कुँवर जाहिं रनिवासा। होत महा सुख हाँस विलासा॥
नित प्रति मिथिलानगर भुवारा। करहिं नवीन राज सत्कारा॥
भूल्यो अवध बरातिन काहीं। कहहिं जाब मिथिला ते नाहीं॥
यहि विधि बीति गयो बहु काला। नित नित नवनवमोद विशाला॥
को कहि सकै समग्र उछाहू। इतै जनक उत कौशलनाहू॥
जहँ त्रिभुवनपति दूलह भयऊ। दुलहिन रमा महा सुख छयऊ॥
शेश शारदा सकैं [illegible] मम कौन बुद्धि की करणी॥
एक [illegible] सुमिरि हिय रामा॥
[illegible] ासन बैठाये॥
[illegible] ति खानी॥
[illegible] सुख सों रीते॥
[illegible] सिद्धि यहि काले॥
[illegible] त बरात।

उचित अवध को गवन अब, सो तुम साधहु तात ॥
उभैमहीपति मोदरस, मगन भये यहि काल ।
जानत नहिं बासर वितत, नित नव हर्ष विशाल ॥

चौपाई ।

सुनत गाधिसुत की वर बानी । बोले ब्रह्मतनय विज्ञानी ॥
सत्य कह्यो कौशिक अवदाता । चलब अवध अवउचित बराता॥
कौशिल्यादिक जे महरानी । लिखहिं पत्रिका मोहिं हुलसानी॥
आसु बरात अवधपुर आवै । दुलहिन दरश चित्त ललचावै ॥
ताते सतानंद बोलवाई । हम अब जतन करब मुनिराई ॥
अस कहि युगुल शिष्य पठवाये । सतानंद कहँ आसु बोलाये ॥
उठि बशिष्ठ कहँ मिलि मुनिराई । कौशिक बार बार शिर नाई ॥
माँगि बिदा दशरथ पहँ आयो । भूपति चलि आगे शिर नायो ॥
दै आसन पूछी कुशलाई । गाधिसुवन बोल्यो सुख पाई ॥
बहुत काल बीत्यो महराजा । पाये मोद सिद्धि सब काजा ॥
चलन चहौं अब हिमगिरि काहीं । इहां रहे सुधरत तप नाहीं ॥
जब करिहौ सुमिरन नृप मोरा । तब देखिहौ मोहिं तेही ठोरा ॥

दोहा—नरपति तुम्हरे नेह वश, बनत न हमसों जात ।
है न सकत कछु भजन तप, रहत बनत नहिं तात ॥

चौपाई ।

सुनि कौशिक के वचन सोहाये । अवध नरेश अतिहिं बिलखाये ॥
सजल नयन गद्गद कह बानी । नाथ देतदुख तव बिलगानी ॥
कहिन सकौं कछु जस मन होई । सो करिये मोहिं अनुचर जोई ॥
अस कहि नृप षोडश उपचारा । करि मुनि कर पूजन सतकारा ॥
रामहि बंधुन सहित बोलाई । दीन्हीं मुनि की बिदा सुनाई ॥
गुरु को गवन सुनत रघुराई । चारिहु बंधु चरण लपटाई ॥

मुनि कहँ करि प्रणाम बहु बारा। जोरि जलज कर वचन उचारा॥
अबे न जाहु अवध पगु धारो। पुनि गमनब मन जहाँ तुम्हारो॥
मुनि कह अब कीजै सोइ काजा। जेहि हित प्रगट भये रघुराजा॥
जाहु अवध जब मोहिं बोलैहौ। तहां अवशि मम दरशन पैहौ॥
अस कहि बार बार मिलि रामै। आशिष दियो पूरि मनकामै॥
मिल्यो महीपतिकहँ मुनिराई। पुनि चारिहु बंधुन हिय लाई॥

दोहा–कौशिक चल्यो हिमाचलय, लोचन बारि बहाय।
फिरचो कुमारन सहित नृप, कछुक दूरि पहुँचाय॥

चौपाई।

गयो विदेह गेह मुनिराई। सुनि मिथिलेश गह्यो पद आई॥
मांगी विदा मुनीश महीपै। जब सुमिरब तब रहब समीपै॥
विमनस जनक कहत नहिं बानी। बुद्धि सनेह विवश विलखानी॥
गद्‌गद गर भरि नैननि नीरा। कह्यो करहु जो मन मतिधीरा॥
कौशिक गयो बहुरि रनिवासै। जोहि जानकी पाय हुलासै॥
माँगि विदा मुनि दई अशीशा। पुनि आयो जहँ जनक मशीशा॥
लै इकांत महँ मुनि अस भाख्यो। भूप बरात बहुत दिन राख्यो॥
विदा करहु अब कौशल नाथै। दूलह दुलहिन करि यक साथै॥
जानहुँ सकल भूप विज्ञानी। कहँ लगि तुमसों कहौं बखानी॥
जनक कह्यो जस होति रजाई। सोइ कीन्हे मुनि मोरि भलाई॥
मुनिजबआशिषवचन उचारचो। जनकनयनजल चरण पखारचो॥
चल्यो मुनीश नयन भरि नीरा। गयो महीप महल धरि धीरा॥

दोहा–सुमिरत सीता राम पद, दशरथ जनक सनेह।
बरणत व्याह उछाह सुख, हिमगिरि बस्यो अछेह॥

इति सिद्धि श्री साम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी सी एस आई कृते रामस्वयंवरे विवाह प्रकरणे विंशति प्रबन्धः॥ २०॥

दोहा—अब बरणों कछु करुण रस, सिय को अवध पयान ।
मिले आय भृगुनाथ मग, तासु विवाद बखान ॥
तुलसिदास प्रभु अस लिख्यो, धनुष भंगके अन्त ।
परशुराम अरु राम को भयो विवाद अनंत ॥
श्रीमत्‌रामायण विमल, आदि सुकविकृत जोय ।
रामस्वयंवर ग्रन्थ में, तासु रीति सब होय ॥
कहुँ कहुँ गोस्वामी रचित, रामायण की रीति ।
सैली मुख्य विचारिये वाल्मीकि कृत नीति ॥
ताते मिथिला नगर ते, अवधै चली बरात ।
तब मारग में मिलत भे, भृगुपति कोप अघात ॥
ताते मैं कहिहौं कछुक राम राम संवाद ।
रामायण की रीति सों, दायक अति अहलाद ॥
वर्णत नेकहु करुण रस, मोहिं न होत उछाह ।
पै प्रसंग बश कहत कछु, सीय बिदा दुख माह ॥

छंद चौबोला।

विश्वामित्र गये जब हिम गिरि मांगि विदा दोउ राजै ।
मुनि वशिष्ट तब लगे विचारन कौन उचित अब काजै ॥
आयो सतानन्द तेहि अवसर मुनि वशिष्ट ढिग माहीं ।
अति सत्कार सहितदे आसन कुशल पूंछि तिन काहीं ॥
गोतम सुत सों कह्यो वचन पुनि सतानन्द तुम ज्ञाता ।
बीत्यो बहुत काल मिथिलापुर निवसे बिसद बराता ॥
दशरथ सने विदेह नेह अति दीन्हे गेह भुलाई ।
जनक विदेह देह की सुधि नहिं नित आनँद अधिकाई ॥
मिथिलावासी अवध निवासी आनँद मगन अघाता ।
करै बिदा को होय बिदा को कहै कौन यह बाता ॥

कौशिल्या केकयी सुमित्रा जे दशरथ महरानी ।
बार बार लिखतीं पाती मोहिं दुलहिन लखन लोभानी ॥
सकल भूमि मंडल को कारज करै कौन यहि काला ।
दशरथ बसत नगर मिथिला महँ होते प्रजा विहाला ॥
तातें जाय जनक समुझावहु करें कुमारि विदाई ।
उचित न अब राखब बरात को चलैं अवध नृपराई ॥
हम समुझैहहिं कौशल भूपै तुम विदेह समुझाओ ।
अब चारिहु नव वधू विदा कर सुंदर सुदिन बनाओ ॥
सुनि वशिष्ठ के वचन यथोचित सतानन्द मुनि भाख्यो ।
कहत सुनत यह वचन दुसह पै उचित विचारहि राख्यो ॥
हम अब जाय बुझाय जनक को करिहैं विदा तयारी ।
तुम समुझावहु अवधनाथ को होहिं न जात दुखारी ॥
तब मुनि गौतम सुवन विदा करि दशरथ निकटसिधारयो ।
बैठि इकांत शांतरस संयुत बैन अचैन उचारयो ॥
अवध तजे बीते अनेक दिन मिथिला बसत तुम्हारे ।
सुवन विवाह भये मंगल युत श्रीपति विघ्न निवारे ॥
भूमि खंड नव को अखंड कारज नरेश तुव हाथा ।
तातें अब पगु धारि अवध को कीजै प्रजा सनाथा ॥
पुत्रवधू अरु पुत्रन को लै चलहु अवध नरनाहू ।
सहित पट्टरानी परछन करि लेहु अपूरब लाहू ॥
सुनि वशिष्ठ के वचन चक्रवर्ती नरेश सुख पायो ।
सकल सत्य जो नाथ कह्यो तुम हमरेहु मन यह आयो ॥
पै विदेह के नेह विवश नहिं माँगत बनत विदाई ।
प्रीति रीति करि जीत लियो मोहिं मिथिलेश अति सुखदाई ॥
काह करौं केहि भाँति कहौं सुख निशिदिन जिमि जाऊं ।

कैसे सरस सनेह विरस करि अति अनरस उपजाऊं ॥
जो विदेह करिकै मन साहस सुता विदा करि देवैं ॥
तौ हम पुत्रवधू पुत्रन लै अवध नगर चलि देवैं ॥
यतना कहत भूप के आँखिन आँसुन वहे पनारे।
मुनिवर कह्यो विदेह योग यहि तुम जेहि भाँति उचारे ॥
पै न विदेह सनेह रावरो कवहुँ भंग पथ पैहै।
तुम ऐहौ मिथिला वहु वारहिं सो कोशल पुर जैहै ॥
रीति सनातन व्याह अंत में होती सुता विदाई।
मरयादा ते अधिक रहे इत लहि सत्कार महाई ॥
महरानी कौशिल्यादिक तुव लिखती वारहिं वारा।
दुलहिन दूलह देखव केहि दिन लागीं ललक अपारा ॥
तातें चलहु अवधपुर भूपति अव परछन सुख लूटो।
पुत्रवधू अरु पुत्र राखि वर और काज महँ जूटो ॥

दोहा–सुनि गुरु की वाणी विमल, कह्यो भूप करजोरि।
जौन होय रुचिरावरो, सोइ अभिलाषा मोरि ॥

छंद चौबोला।

सतानंद उत जाय जनक पहँ लै इकांत मिथिलेशै।
कह्यो शांत अति दांत वचन वर सहित ज्ञान उपदेशै ॥
महाराज उतरे पनसागर अवधनाथ कहँ आनी।
चारि कुमारन चारि कुमारी व्याहि दई छविखानी ॥
मंगलमय सव भयो विघ्न विन व्याह उछाह अपारा।
करत वरातहि विते वहुत दिन नित नित नव सत्कारा ॥
यदपि विदेह सनेह रावरो कौशलपति सों भारी।
नित नित देखत नहिं अघात दृग राम रूप मनहारी ॥
अधिक प्रमाणहुं ते वरात अव राख्यो इत मिथिलेशू।

चलन चहत अब अवध अवधपति सकुचत कहत कलेशू॥
ताते सुदिवस पूछि कुवाँरिन विदा करो महराजा।
अब इतनै अवशिष्ट आपको सकल सजावहु साजा॥
पुनि दुहितन को आनि लेव इत कुँवर लेवावन ऐहैं।
पूरण शशि मुख लखि रघुपति को हम सब अति सुख पैहैं॥
अब नहिं राखब उचित बहुत दिन मिथिला नगर बराता।
करहु विदा शुभ पूँछि महूरत तुम त्रिकाल के ज्ञाता॥
सतानन्द के वचन सुनत नृप राम वियोग विचारी।
रह्यो दंड द्वै कछुक कह्यो मुख नयन बहावत वारी॥
जस तस कै धरि धीरज नृप उर ह्वै अनन्द सों छूँछो।
कह्यो वचन सुनि करहु यथा मन मोहिं काह अब पूँछो॥
अनुचित कछुन विवाह अन्त में होती सुता विदाई।
नहिं नव वधू बसति नैहर में रीति सदा चलि आई॥
राम रूप दरशन की बिछुरन दुसह दुखद मोहिं होई।
मैं विदेह दशरथ सनेह महँ कियो देह सुख जोई॥
केहि विधि मुख कहिजाय महामुनि राम इतै ते जाहीं।
सुता विदा करि देहु भले तुम रघुपति गवनैं नाहीं॥
प्रेम विवश मिथिलेश जानि मुनि पुनि पुनि बहु समुझायो।
देव जानि अरु देवहुती मनु कहि इतिहास सुनायो॥
कह मिथिलेश करहु जस भावै सतानन्द तुम ज्ञाता।
सुनि भूपति के वचन उठ्यो मुनि बोल्यो सचिव विख्याता॥
सचिव सुदावन आदि गये तहँ दिय शासन मुनिराई।
वधुन विदा की साज सजावहु काल्हि सुदिन सुखदाई॥
चारि नालकी रतन जालकी दासी दास अनेका।
बसन अमोल विविध विधि भूषण आनहु सहित विवेका॥

सजे गयंद कनक स्यंदन बहु वाजिन वृन्द मँगायो।
शिविर सुशारद बारिद के सम बाहेर खड़े करायो॥
और सकल बहु मोल वस्तु रचि शकटन सपदि भरायो।
न्यून कौनहूं वस्तु होय नहिं गणकन वेगि बोलायो॥
सतानंद को शासन सुनिकै सचिव सकल सुख पाये।
जेहि विधि दियो निदेश महा मुनि तेहि विधि साज सजाये॥
गौतम सुवन कह्यो गणकन सों शोधिय सुदिन बिदा को।
रचहु लगन अनुकूल सकल ग्रह हरैं वधूनि व्यथा को॥
कहे सकल दैवज्ञ शोधि शुभ घरी कालिह सुखदाई।
युग युग जियें युगुल जोरी सुनि ऐसो लग्न बनाई॥
अन्तहपुरहि जाय गौतम सुत बिदा खबरि खुलि गाई।
हहरि उठयो रनिवास सकल सुनि जनु सुख दियो गमाई॥
रानि सुनैना बिलखि कह्यो तब अबै न जाय बराता।
सुख समुद्र कुंभज कस होवहु समय सुखद उत्पाता॥

दोहा–फैलत फैलत फैलिगै, खबरि नगर चहुँ ओर।
करत कालिह भूपति बिदा, चलन चहत चितचोर॥

छंद चौबोला।

पुरजन सकल नारि नर नित प्रति वर जोहन जनवासे।
जुरि जुरि जात जोहि जगपति छवि नाहिं अघात छवि प्यासे॥
ते सुख खबरि बरातिन के सुनि अवध चलत अवधेशा।
सूखन चहत प्रमोद पयोनिधि जाने मानि कलेशा॥
सीय स्वभाव शील गुण सुधि करि बिलखहिं पुर नर नारी।
राम रूप बरणत अघात नहिं बहत बिलोचन वारी॥
नहिं सिय सम धन्या कन्या जग वर नहिं राम समाना।
पूरुब पुण्य लहे लोचन फल सो सुख सकल पराना॥

हाय बहुरि कब लखब राम छवि कब मिथिलेश कुमारी।
कब कोशलपति सकल साहिबो जो इन नयन निहारी॥
बसी बरात यदपि बहु वासर पाये मुद मन माने।
पै अभिराम राम अवलोकत नयन अबै न अघाने॥
हे विधि बसै बरात बहुत दिन सीय विदा नहिं होई।
भयो सकल सपने कैसो सुख बसब कौन सुख जोई॥
रेविधि परमानन्द देखाय चहत बिलगावन काहे।
नहिं दाया आवति तेरे उर का पैहै जिय दाहे॥
यहि विधि कहहिं विकलपुरजन सब कोउ तिन महँ समुझावैं
आनहिं आसु सीय मिथिलापुर राम लेवावन आवैं॥
युग युग जीवैं सुखमा सीवैं राम जानकी जोरी।
नहिं हमार अस भाग आनकर नित नव प्रीति अथोरी॥
राम सदा मिथिलापुर ऐहैं जनक अवधपुर जैहैं।
दिन दिन दून दून सुख देखब सुर समता नहिं पैहैं॥
अस कहि विविध सभ्य समुझावहिं पै न धरहिं कोउ धीरा।
मिलहिं बरातिन सों चलि पुरजन नयन बहावत नीरा॥
यथा जनकपुर वासिन को दुख अवध निवासिन तैसो।
दोउ दिशि के भे विकल नेह वश को समुझावै कैसो॥
मिलि मिलि कहत अवधपुर के जनतजेहु न सुरति हमारी।
तैसहि कहत जनकपुर वासो बिछुरन दुसह तिहारी॥
जाहि यथा संपति संपस घर सो पट भूषण नाना।
सीय देन हित जाय राजगृह देत बनाय विधाना॥
कोउअस रह्यो न मिथिलापुर महँ जो नहिं दायज दीन्ह्यो।
कोउ अस रह्यो न जौन बरातिन जाय भेंट नहिं कीन्ह्यो॥
सिगरे नगर सनंक गई परि सीय विदा दुख भारी।

वरणत सीय स्वभाउ चुकत नहिं जुरि समाज नर नारी ॥
सुता व्याह पुनि बिदा होत हठि जानहि जग की रीती ।
तदपिराम सिय लषण लखब कब अस कहि बरणहिं प्रीती॥
इन आँखिन दरशाय महा सुख हरहु बिरंचि बहोरी ।
देखन को तुम चतुर चारि मुख चूक बड़ी यह तोरी ॥
हाट हाट अरु बाट बाट बहु घाट घाट पुरवासी ।
कहत एक सों एक बात यह सीय बिदा दुखरासी ॥
अंचल ओढ़ि बिरंचि मनावहिं रंचक दिन नहिं बीतै ।
होय ब्रह्मरजनी सी रजनी पठवैं जनक न सीतैं ॥
खान पान अस्नान भान नहिं ध्यान ठानि अस बैठे ।
जनकपुरी पुरजन जनु बरवश शोकासिंधु महँ पैठे ।
और कछुक दिन रहैं अवधपति होय अनंद बधाऊ ।
अथवा छोड़ि राम कहँ कछु दिन जाहिं अवध कहँ राऊ ॥
तहँ कोउ सज्जन कहहि जनन कहँ राम प्राणते प्यारे ।
अवधप्रजा किमि धरहि धीर उर बिन रघुराज निहारे ॥

दोहा—जस तुमको लागत इतै, राम अवध नहिं जाहिं ।
तैसहि अवधप्रजा सकल, बिन देखे बिलखाहिं ॥

छंद चौबोला ।

जबते सतानंद अंतहपुर सीय बिदा सुख भाषे ।
तबते सब रनिवास हुलास निराश बिरंचिहि माषे ॥
दुखसानी बानो रानी कहि करती बिदा तयारी ।
सियहि बिलोकि बिलोचन ते सब बिलखि बहावहिं बारी ॥
पुनि पुनि मिलहिं अली कहिदृग भरि बिलखि बिदेहकुमारी॥
बिलखत सियहि देखि ढाढ़स करि नैन निवारहिं बारी ।
जाके जौन पियारि वस्तु वर देहि जानकिहि ल्याई ॥

सरवसु देन चहैं चित चाहित प्रेम विवश अकुलाई।
सीयमातु कुशकेतुकामिनी सिद्धि समेत बोलाई ॥
बैठि सिखावहिं जोहिं जानकिहि पतिव्रत धर्म बताई ।
इष्टदेव गुरुदेव कन्त कह मानेहु धर्म विचारी ॥
दोउ कुल की मरयाद कन्यका हाथे बसति कुमारी ॥
रीति सनातन ते चलि आई कन्या पति घर जाही ।
गौरि गिरा इंदिरा शची निज निज पिय पास सोहाही ॥
नहिं बेटी बिलखहु चित में कछु पठै तिहारो भाई ।
परछनही के पाछे आछे लैहैं भूप बोलाई ॥
दशरथ सरिस श्वशुर जग में नहिं जनक जनक सम पाई ।
कंत भानुकुलकमल दिवाकर तोहिं सम द्वितिय न जाई ॥
रह्यो सदा पति को रुख राखत परिहरि सब सुख प्यारी ।
पति शासन अनुसार काज सब कीन्ह्यो धर्म विचारी ॥
वेद कहत अस सुनहु कुमारी नारी धर्म प्रधाना ।
संतन के मुख सुने सकल हम तैसो करहिं बखाना ॥
दासी सरस करै पति सेवा सुखी सखा सम करई ।
पत्नी सरिस पतिव्रत धर्म निवाहै जग यश भरई ॥
सोपत करै भगिनि सम सिगरो वात्सल्य जननो सों ।
सो नारी नरलोक शिखामणि है पतिव्रत करनी सों ॥
सासु ससुर को पूजन करियो जनक जननि सम मानी ।
नातो जाको जौन होय कुल सो मानेहु जिय जानी ॥
चारिहु भगिनि मिली रहियो नित कबहुँ न होय विरोधू ।
सब सासुन को मान राखियो किह्यो न कबहूं क्रोधू ॥
प्रीति रीति उर राखि देवरन मान्यो बालक भाऊ ।
कुलवंतिनी नारि रघुकुल की राख्यो शील स्वभाऊ ॥

परदुख दुखी सुखी परसुख सों सबसों हँसि मुख भाख्यो ।
यथायोग सत्कार सबन को करि सनेह सुठि राख्यो ॥
गृह कारज आरज के कारज सब दिन रह्यो सम्हारे ।
रघुकुल की निमिकुलहूं की अब है कर लाज तुम्हारे ॥
ह्वै हौ लली सोहागिल पिय की आगिल ते हम कहहीं ।
भागवंतिनी तिय श्रीमन्तिन दोउ कुल दुखी न रहहीं ॥
पुनि उरमिला मांडवी अरु श्रुतिकीरति लियो बोलाई ।
जननि सिखापन देइ विविध विधि अंबक अंबु बहाई ॥
रहियो सबै सिया के संमत करियो सिय सबकाई ।
दोउ कुल पतिव्रत धर्म उजागर रहै सुयश जग छाई ॥
गुरुजन की गुरुता सखिजन को नेह देह भरि चाही ।
सरबसु प्रीतम प्रेम नेम करि क्षेम लहै जग माही ॥
तन धन धाम काम बामन को पिय अराम जेहि होई ।
प्रीति प्रतीति नीति सोई करि गहै रीति हठि सोई ॥
मानवती न गुमानवती नहिं सानवती ह्वै कबहूं ।
पिय परचर्य्या किह्यो कुमारी कुमन होइ पति तबहूं ॥

दोहा–आंखिन में अँसुवा भरे, सुनि जननी की सीख ।
कहति न सिय कछु सकुच वश लही नीति की भीख ॥

चौपाई ।

इते राउ सुदिवस जिय जानो । बोलि वशिष्ठहि बोले बानी ॥
विदा करावन कुँवर पठाओ । अवध गवन दुन्दुभी बजाओ ॥
[illegible] गति सुख पाये । राम सहित सब बंधु बोलाये ॥
[illegible] नास पधारो । बधू विदा करि सुदिन न टारो ॥
[illegible] पजत पीरा । मनहीं मन बिलखत रघुबीरा ॥
[illegible] रजाई । चले [illegible] सब भाई ॥

पंच सहस्र सखा अनियारे। चढ़े तुरंगन राजकुमारे ॥
उदासीन पुर देखत जाहीं। तेहि अवसर उछाह कहुँ नाहीं ॥
सकल जनकपुर प्रजा दुखारी। सीय विदा गुनि ढारहिं बारी ॥
देखन कुँवर नेह वश धावैं। राम विलोकत बारि वहावैं ॥
इनके दुरघट दरशन होही। भयो सबनपर विधि अति कोही॥
पृथक् पृथक् प्रभु प्रजा जोहारैं। रामचंद मुखचंद निहारैं ॥

दोहा–पग पग महँ घेरहिं प्रजा, चारिहु राजकिशोर।
अनमिख निरखहिं मुखन को, जैसे चंद चकोर॥

चौपाई।

कहहिं परसपर दुख भरि वानी। हाय होति अब दरशन हानी ॥
कब पुनि दरश लहब इन केरे। अवध जात अब कुँवर सवेरे ॥
वसे नीड छवि नयन पखेरू। अब दुर्लभ अस मिलव बसेरू ॥
जबलगि रही जनकपुर सीता। नित नव मंगल मोद पुनीता ॥
यदपि जनक सिय बहुरि बोलैहैं। पुनि पुनि राम लेवावन ऐहैं ॥
पै अस लगत आज मनमाहीं। यासे अधिक हानि कछु नाहीं ॥
दशरथ पाहिं कहौ कोउ जाई। यदपि करी मिथिलेश विदाई ॥
तदपि सकल मिथिलापुरवासी। राखहिं एक दिवस सुख आसी ॥
कोउ कहजाय कहौ मिथिलेसै। आजु सुदिन नहिं गवन भदेसै ॥
कोउ जोतिपिन जाय धन देहीं। बरजहु विप्र विदा वैदेहीं ॥
देवी देवन बंदें पुजाई। रहैं चारि दिन चारिहु भाई ॥
नारी जुरि जुरि देखि उचारैं। विदा करावन कुँवर पधारैं ॥

दोहा–बोलि पुत्र पति बंधु कहँ, बहु विधि कहैं बुझाय।
जाय कहौ मिथिलेश पहँ, विदा बंद ह्वै जाय ॥

चौपाई।

पूजि कोऊ परजन्य मनावैं। बरसहु आजु राम नहिं जावैं ॥

कहै नारि कोउ विगत उछाहू । लेहु आजु लगि लोचन
हत दूषण नर भूषण प्यारे । जात अवध चित चोरि ह
कहौ कुमारन को चलि कोऊ । रहिहैं काल्हि दया वश
कोउ सखिप्रेम विवश पुनिभाखै । वरवस पकरि राम कहँ राखै
जाहिं अवधपुर राउ भलाई । रहै मौन मिथिलापुर साई
हमहीं राखव दूलह चारी । जव लगि पूजि न आश
कोउ सखि कहहि न करहु खभारा । सुदिवस आज
तव लगि जाय बुझाय सुनैनै । राखव कुँवरन भूपति ऐनै ॥
कोउ कह अस सुख अव कव होई । लखी रामसिय पुनि धनि सोई॥
लखत पलक जिन कलप समाना । तिन विछुरे रहिहै किमि प्राना॥
कोउ कह सखि साँवरोसलोना । तेहिविन लखे हमहिं काहोना॥

दोहा—अलक पाश पसराय मन, लियो विहंग फँसाय ।
हाय दई यह निरदई, का करिहै घर जाय ॥

चौपाई ।

यहि विधि सुनत नारि नर वानी । चले जात रघुपति छविखानी ॥
अति विमनसकछु कहत नवानी । प्रीति रीति नहिं जात वखानी ॥
दौरि दूत तेहि अवसर आये । मिथिलापति कहँ खवरिजनाये॥
आवत राजकुँवर मन भाये । सोहत सखा संग छवि छाये ॥
उठे भूप आये चलि आगे । राम दरश कहँ अति अनुरागे ॥
आवत देखि विदेह कुमारा । उतरि तुरंगन ते यक वारा ॥
किये प्रणाम नाम निज लीन्हे । भूप यथोचित आशिष दीन्हे ॥
सभा भवन महँ गये लेवाई । सिंहासन आसीन कराई ॥
यथा योग्य सव सजन महीपा । वैठाये रघुनाथ समीपा ॥
तेहि अवसर लक्ष्मीनिधि आये । चारिहु वंधुन कहँ शिर नाये ॥
उठे राम संयुत सव भाई । चलि मिलि निज समीप वैठाई॥

कुशल प्रश्न पूछ्यो सब भाँती । राम देखि भै शीतल छाती ॥

दोहा–सुरभि एल तांबूल लै, नृप कीन्ह्यो व्यवहार ।
यथा राम तिमि सब सखन, मानि कियो सत्कार ॥

छन्द गीतिका।

तेहि काल श्रीरघुलाल वचन रसाल कह कर जोरि कै ।
नैननि नवाय सुछाय जल मानहुँ सबन चित चोरि कै ॥
तुम अवधपति सम मम पिता हम अहैं बालक रावरे ।
जो भयो कछु अपराध तौ प्रभु क्षमिय गुनि निज डावरे ॥
प्रभु छोह मोह सदैव रखियो आपने शिशु जानिकै ।
हम अहैं लक्ष्मीनिधि सरिस अस सुरति रखियो मानिकै ॥
अब चलन चाहत अवध को अवधेश संयुत साहनो ।
मोहिं विदा मांगन हित पठायो बात है दिलदाहनी ॥
आवन चहत आपहु इतै माँगन विदा अब आपसों ।
हमरो सकल सिधि काज ह्वैहै आप कृपा प्रताप सों ॥
जो नाथ देहु निदेश तौ जननी चरण वंदन करौं ।
अब जाय अंतहपुर सपदि निमि कुल निरखि आनँद भरौं॥
सुनि प्राणप्यारे के वचन बिलख्यो विदेह महीप है ।
गदगद गरो कछु कहि न आवत बचन परम प्रतीप हैं ॥
अँशुवानि ढारत जोरि कर बोल्यो वचन मिथिलेश है ।
तुम जाहु अस किमि कहै मुख दृग ओट होत कलेश है ॥
यद्यपि अवध मिथिला सकल निमिकुल सुरघुकुल रावरो ।
तुम आइहो मिथिला अवध हम जाब नित नित साँवरो ॥
यद्यपि सकल थल रावरे को रूप मोहिं लखात है ।
तद्यपि लला तुम जाहु अस नहिं बदन सों कहिजात है ॥
जस होइ राउर मन प्रसन्न निदेश जस अवधेश को।

सो करहु सुरति न छाँड़ियो निज जानि यह मिथिले
अब सासु चलि रनिवास महँ कीजै नयन शीतल ल
तुम अहौ सबके प्राणधन जानत न कोउ तिहरी कल
सुनिकै बिदेह निदेश सहित सनेह तिन शिर नाइ कै।
संयुत सकल बंधुन चले मिथिलेश कुँवर लेवाइ कै॥
प्रभु जाय अंतहपुर सबंधुन चरण बंदे सास के।
मिथिलेश महिषी चूमि मुख बैठाय सहित हुलास के॥
रनिवास में फैली खबरि आये करावन बर बिदा।
सब नारि धाईं दरश हित जेहि देखि मनसिज शरमिदा॥
कुशकेतु की महिषी तहां चलि रतन निउछावरि करी।
पुनि सिद्धि आई सखिन संयुत रति लजावति राति भरी॥
प्रभु उठि सबंधु प्रणाम कीन्ह्यो दर्भकेतु प्रिया पदै।
मिथिलेश महिषी निकट बैठायो दियो आनँद हृदै॥
बैठाय सन्मुख सिद्धि को औरहु सुनिमिकुल अंगना।
बोले बचन श्रुति सुधा ढारत होइ रस जेहि भंग ना॥
अब अवध कहँ अवधेश गमनत कह्यो मोहिं बोलाइ कै।
मिथिलेश अरु रनिवास पहँ तुम बिदा होवहु जाइकै॥
ताते बिदा अब देहु जननी सहित आशिरबाद है।
तुम्हरी कृपा दश दिशहु मंगल हमहिं अति अह्लाद है॥
जनि सुरति मोरि बिसारबो जिय जानि बालक आपने।
फिरि आइबो हम दरश हित आनन्द अद्भुत थापने॥
जनि [illegible] मानति जननि मन हम सदा तुम निकट हैं।
अब सुमति करौ आईहैं नाहिं [illegible] निकट हैं॥
[illegible]
[illegible]

हैं जनक साँचे जनक हमरे जननि सोतै जननि है।
नहिं कवहुँ मोर विछोह ह्वैहै जानु साँची भननि है॥
दोहा–सुनत सुनैना राम के, बैन नयन जल ढारि।
बोली आनँद अयन सों, कोटि मैन छवि वारि॥
अव न जाहु प्यारे कतहुँ, इतहीं करहु निवास।
दरश ओट को चोट लगि, करिहैं प्राण प्रवास॥
दरश देहु नितहीं हमैं, करहु कलेऊ आय।
चारिहु बंधु विशेषि ते, अंगन खेलहु धाय॥
इत मृगया खेलहु विपिन, राजकुमार बोलाय।
तुम हो जीवन प्राण मम, किमि वियोग सहि जाय॥
धन्य भाग मेरी भई, तुम सम पायो पूत।
सकल सुकृत फल दरश तुव, होत अनन्द अकूत॥
वसि विदेह पुर कछुक दिन, कीजै अवध पयान।
अवध नगर मिथिला नगर, लालन तुम्हैं समान॥
कौशिल्या केकय सुता, और सुमित्रा मात।
सोपत नहिं मोसे अधिक, करिहैं साँची बात॥

कवित्त।

जतनसोंराखेधरिरतनअनेकजातिरोजरोजभूषण अदूषण गढ़ैहों मैं।
कारीगर निपुण बोलाय देश देशन ते वसनअनेकरंगअंगपहिरैहों मैं॥
रघुराज कौनहूंविसंचनाहिंहोनपैहै खासेखासेखुशीखेलखूबखेलवैहों मैं।
केवाजनिकीजमोरिसेवासवभाँतिलीजमीठमीठमेवालैकलेवाकरवैहोंमैं

दोहा–लाल तुम्हैं देखे विना, किमि रैहैं तन प्रान।
वार वार विनती करौं, अव जनि करहु पयान॥

चौपाई।

प्रभु जननी सनेह वश जानी। भरि आयो नयननि महँ पानी॥

धारि धीरज पुनि दोउ कर जोरी । कह्यो वचन विनती असि
मातु रजाय शीश महँ मोरे । नहिं विसंच मोहिं सन्निधि
तोर सनेह विलोकि अघाता । नहिं ऊतर आवत कछु
जो कछु उचित करौ अब सोई । करिहौं मैं जो आयसु ह
कबहुँ न तोहिं वियोग हमारा । तैं जननी हम तोर
भोजन देहु भूख अति लागी । अब जनि और कहौ बड़भागी
सुनत लाल के वचन सुनैना । उठी आसु उर आनँद ऐना
मन रंजन व्यंजन लै आई । राम सहित बंधुन बैठाई ।
लगी करावन भोजन हाकी । लै पकवान नाम छवि छाकी ॥
इमि कराय भोजन महतारी । सुरभित जल कर चरण पखारी॥
बैठायो पुनि आसन माहीं । जुरीं सकल रनिवास तहाँहीं ॥

दोहा—लै अपने कर कमल सों, बीरी विमल बनाय ।
चारौ भाइन को हुलसि, दीन्ही सिद्धि खवाय ॥

चौपाई ।

उतै अवधपुर करन पयाने । भूप चक्रवरती अतुराने ॥
सहित वशिष्ट सुवृन्द समाजा । गमन्यो विदा होन हित राजा ॥
अवधनाथ की जानि अवाई । लियो द्वार ते निमिकुल राई ॥
ल्याय सभा मंदिर बैठायो । करि सत्कार बहुरि अस गायो॥
तन धन धाम सकल परिवारा । मोर अवधपति सकल तुम्हारा॥
जो कछु भयो होइ अपराधा । क्षमहु क्षमा के उदधि अगाधा ॥
जो शासन करु कौशल राऊ । करौं शीश धरि बिन छलछाऊ॥
तब वशिष्ट बोले मृदु बानी । सुनहु जनक भूपति विज्ञानी ॥
राउ सकोच सनेह तिहारे । विदा न माँगि सकत दुख भारे ॥
करन चहत अब अवध पयाना । बिते बहुत दिन जात न जाना ॥
कुँवरि बिदा करि सुदिवस आजू । देहु रजाय सुनाय समाजू ॥

अस को करी प्रीति की रीती । जस तुम नेह निवाही नीती ॥

दोहा–सुनि वशिष्ठ मुनि के वचन, जानि अवधपुर जात ।
नृप विदेह के नेह वश दुख नहिं देह समात ॥

चौपाई ।

सजल नयन गर गदगद भयऊ । नृपति हुलास बीति सब गयऊ ॥
वदन वचन कछु बोलि न आयो । मानहुँ सरबस जनक गँवायो ॥
पुनि धरि धीरज भूप विज्ञानी । बोल्यो वचन जोरि युग पानी ॥
शील सिंधु प्रभु कौशलराई । किमि तिनकी विछुरनिसहिजाई॥
दीन जानि मोहिं दीन बड़ाई । किमि निकसै मुख तासु विदाई॥
तुम त्रिकाल ज्ञाता मुनिराई । मोरे शिर पर आप रजाई ॥
बहुरि विदेह सनेह बड़ाई । दशरथ सों असि विनय सुनाई ॥
तुम समरथ कौशलपुर राऊ । शील सिंधु जग प्रगट प्रभाऊ ॥
जानेहुं मिथिलापुरी हमारी । मोहिं भल पग पाँवरी तिहारी ॥
जासु राम अस पुत्र प्रधाना । सकै कौन करि विरद बखाना ॥
अनुग जानि अब कृपा करीजे । करौं सकल शासन जो दीजे ॥
सौंपहुँ नाथ कुमारी चारी । पालब लघु सेवकी विचारी ॥

दोहा–धोपे अनधोपे कछुक, जौन चूक परि जाय ।
क्षमा करब निज बालगुनि, मोर मान सुधि ल्याय ॥

चौपाई ।

परिचारिका दारिका चारी । सौंपों तुमहिं अबै अति वारी ॥
नहिं जानहिं कछु लोक सुभाऊ । सिखयहु रीति न किहेहु दुराऊ॥
इनपर कोउ कीन्ह्यो नहिं कोपा । रहीं काज तजि खेलन चोपा ॥
कटुक वचन इन परे न काना । सकल कुटुंब परम प्रिय माना ॥
रहीं मातु पितु प्राण पियारी । बंधु कुटुंबन दून दुलारी ॥
करौंविनय तुवपद शिर धरिकै । राखेहु मान मोरि सुधि करिकै ॥

चौपाई ।

बोले राम जोरि युग पानी । जननितेअधिकजननि सुखदानी॥
देहु मातु अब मोहिं रजाई । अवध अंब अवलोकहुँ जाई ॥
छोह मोह राख्यो सब भाँती । तैं न विसरिहै मोहिं दिन राती ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा । यदपि मातु मम प्रीति पवित्रा ॥
सबते अधिक मातु तैं मोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौं तस तोरे ॥
जब करिहै सुमिरण मोहिं माता । तबहिं आइहौं मृषा न बाता ॥
यदपि प्रबोध्यो बहु विधि रामा । राम बिछोह भई तन छामा ॥
मुख सों नहिं कहि आवति बानी । निकरत नयन निरन्तर पानी ॥
कर जोरे काँपत सब गाता । निरखति राम वदन जलजाता ॥
प्रभु जान्यो मोहिं करत पयाना । तजिहै अवशिजननि प्रियप्राना॥
दीन्ह्यो भक्ति ज्ञान अवदाता । पोंछि नयन बोली तब माता ॥
तुम सर्वज्ञ सकल गुण आगर । प्रेम नेम जानहुँ नय नागर ॥

दोहा–रहौं न देखन की दुखी, दरशन दीजै आय ।
होहु ओट इन नयन के अस कस कै कहि जाय ॥

चौपाई ।

चरण बंदि पुनि चारिहु भाई । सिद्धि समीप गये अतुराई ॥
उठी जनक सुतवधू सयानी । कर गहि कही प्रीति बश बानी ॥
नेह लगाय नरेश किशोरा । अब मति जाहु अवध की ओरा॥
दरश विना किमि रही शरीरा । बिछुरत होत दुसह तन पीरा ॥
लाल प्रीति की रीति न जानौ । सहजहि प्रेम पंथ मन मानौ ॥
अब नहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥
प्रभु मुसक्याय कही मृदु बानी । यदपि न गमनत बनत सयानी ॥
पितु शासन शिर पर सब भाँती। काह करौं अब मति अकुलाती ॥
देहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जनि शोच करहु मनभाई ॥

भरी सनेह बिदेह सुबानी। सुनि कह राउ नयन भरि पा
पुत्रबधू पुनि आप कुमारी। इन से अधिक न परै निहारी
करिय बिदेह न कछुक खभारा। जिमिमिथिला तिमिअवधअगारा
सब सोपति करिहैं सब सासू। हौं पैहौं नित निरखि हुलासू
पुत्रबधू पुत्रन ते प्यारी। तापर पुनि मिथिलेश दुलारी॥
धन्य भाग हमरे घर जातीं। अधिक न इनते कोउ दरशातीं॥

दोहा--अपनो जानि सनेह करि, राखेहु सुरति हमारि।
कौन अधम जो रावरी, देहै सुरति बिसारि॥

चौपाई।

सतानंद तेहि अवसर आये। तेहिं बशिष्ठ कहि बचन बुझाये॥
आयो बिदा मुहूरत अबहीं। परिछन होइ जनावहु सबहीं॥
बर दुलहिनि पालकी चढ़ाई। द्वारदेश महँ ठाढ़ कराई॥
परिछन करैं जनक महरानी। दै दधिबिंदु उतारहिं पानी॥
बर ह्वै बिदा बाहिरे आईं। करहिं गवन आगे सब भाई॥
पाछे चलहिं पालकी चारी। अस अनुमति मुनि अहै हमारी॥
सुनत बशिष्ठ बचन सहुलासू। गौतम सुवन जाय रनिवासू॥
बोलि सुनैनहि दियो बुझाई। रानि चारि पालकी मँगाई॥
दूलह दुलहिनि सपदि चढ़ाई। मंगल गान मनोहर गाई॥
कनक थार आरती उतारी। पढ़ि शुभ मंत्र उतारयो वारी॥
कीन्ह्यो सब बिधि परिछन चारा। लियो बहोरि उतारि कुमारा॥
कनक पीठ महँ बर बैठाई। बिबिध बसन भूषण पहिराई॥

दोहा--मणि माणिक मुकता मुकुट, बर हीरन के हार।
नख शिख के भूषण सकल, दियो अमोल अपार॥
अति अनुपम पट बिबिध बिधि, ग्रंथित रतन अनेक।
दीन्ह्यो चारिहु कुंवर को, सन गुनि [illegible]॥

चौपाई ।

बोले राम जोरि युग पानी । जननितेअधिकजननि सुखदानी॥
देहु मातु अब मोहिं रजाई । अवध अंब अवलोकहुँ जाई ॥
छोह मोह राख्यो सब भाँती । तैं न विसरिहै मोहिं दिन राती ॥
कौशिल्या केकयी सुमित्रा । यदपि मातु मम प्रीति पवित्रा ॥
सबते अधिक मातु तैं मोरे । जस लक्ष्मीनिधि हौं तस तोरे ॥
जब करिहै सुमिरण मोहिं माता । तबहिं आइहौं मृषा न बाता ॥
यदपि प्रबोध्यो बहु बिधि रामा । राम बिछोह भई तन छामा ॥
मुख सों नहिं कहि आवति बानी । निकरत नयन निरन्तर पानी ॥
कर जोरे काँपत सब गाता । निरखति राम वदन जलजाता ॥
प्रभु जान्यो मोहिं करत पयाना । तजिहै अवशिजननि प्रियप्राना॥
दीन्ह्यो भक्ति ज्ञान अवदाता । पोंछि नयन बोली तब माता ॥
तुम सर्वज्ञ सकल गुण आगर । प्रेम नेम जानहुँ नय नागर ॥

दोहा-रहौं न देखन की दुखी, दरशन दीजै आय ।
होहु ओट इन नयन के अस कस के कहि जाय ॥

चौपाई ।

चरण बंदि पुनि चारिहु भाई । सिद्धि समीप गये अतुराई ॥
उठी जनक सुतवधू सयानी । कर गहि कही प्रीति बश बानी ॥
नेह लगाय नरेश किशोरा । अब मति जाहु अवध की ओरा ॥
दरश बिना किमि रही शरीरा । बिछुरत होत दुसह तन पीरा ॥
लाल प्रीति की रीति न जानो । सहजहि प्रेम पंथ मन मानो ॥
अब नहिं करहु लाल निठुराई । जाहु दगा दै प्रीति लगाई ॥
प्रभु मुसक्याय कही मृदु बानी । यदपि न गमनत बनत सयानी ॥
पितु शासन शिर पर सब भाँती॥ काह करों अब मति अकुलाती ॥
देहौं दरश बहुरि मैं आई । तुम जनि शोच करहु मनभाई ॥

[illegible] [illegible] नातो यह होई। तुम सरबज्ञ हम हैं न
[illegible] कबहुं नहिं बिछुरनिमोरी। ऐहौं अवशि प्रीति लखि
यह सम्बंध सनातन केरा। तुमहुं अवधपुर करहु न

दोहा—सिद्धि सुनत प्रभु के वचन, पुनि बोली कर जोरि।
पालब सब अपराध क्षमि, ननदि चारिहूं मोरि॥

चौपाई।

इन कबहूं अपमान न जाना। लहीं दुलार भवन विधि नाना॥
कबहुं न फूल छड़ी कोउ मारी। कटुक गिरा नहिं जननि उचारी॥
मान सकोच दुलार बड़ाई। लगी रावरे कर रघुराई॥
पालब सकल अनुचरी जानी। इतना कहत ढरयो दृग पानी॥
सिद्धि प्रीति नहिं जाय बखानी। बोले राम मनोहर बानी॥
अवध जनकपुर भेद न काऊ। उभै अमान समान प्रभाऊ॥
सोपति सुख सकोच सब दूना। सिद्धि कबहुँह्वैहै नहिं ऊना॥
लियो बोलाय जबै मन भावै। औब फेरि हम बिदा करावैं॥
दरश परश ह्वै है यहि ब्याजू। ह्वै हैं सिद्धि सिद्धि तव काजू॥
नाथ बुझावहिं बारहिं बारा। रुकति न सिद्धि नयन जल धारा॥
जस तस के कछु धीरज दैके। गवने नाथ बिदा तेहि ह्वै के॥
गे कुशकेतु नारि ढिग नाथा। बोले वचन नाय तेहि माथा॥

दोहा—चारिहु बंधुन की अहौ, जननी युगुल समान।
कोशिल्यादिक मातु महँ, मोहि न भेद देखान॥

चौपाई।

राखेहु सुरति मातु सब काला। चारिहु बंधु तुम्हारे लाला॥
सुनि कुशकेतु दार प्रभु बानी। प्रीतिविवशअतिमतिअकुलानी॥
बोली [illegible] करन युग जोरी। राखेहु सुरति लाल अनिमोरी॥
यदपि सनातन ते चलिआई। है बिवाह [illegible]

तदपि न बुद्धि फुरत कछु मोरी। भै गति भुजग छछूँदरि केरी॥
प्रीति विवश प्रभु वंदन कीन्हे। वाहेर चलन हेत मन दीन्हे॥
नारि सकल अन्तहपुर वासी। औरहु मिथिला नगर निवासी॥
यथायोग्य करि सवको वंदन। लै आशिष सवसों रघुनंदन॥
दे धीरज पुनि आउव आसू। प्रीति विवश दृग ढारत आँसू॥
चले वाहिरे वंधु समेतू। मनहुँ चोराय सबन कर चेतू॥
मनि भूषण सुंदर पट नाना। दियो सिद्धि नाहिं चित्त अघाना॥
सुंदरि मनि मुंदरि यक ल्याई। दियो राम अंगुलि पहिराई॥

दोहा–सो मुंदरी मनि में लिखे, अस आखर रस भीन।
कवहुँ न सिधि सुधि छोड़ियो, लाल प्रवीन प्रवीन॥

चौपाई।

पुनि कुशकेतु भूप की रानी। रतन विभूषन पट वहु आनी॥
चारिहु वंधुन दियो समाना। भेद भाव मन में नहिं जाना॥
नगर नारि रनिवास निवासिनि। जे आईं दरशनकी आसिनि॥
जिनके जौन वस्तु वर नीकी। दीन्ही वरन जानि जिय फीकी॥
कहहिं नारि सब वचन उचारी। काह देन गति अहै हमारी॥
राखेहु मन हमरो सँग अपने। छोड़ेहु कवहुँ न सुंदर सपने॥
वार वार मिथिलापुर आई। दीजै दरश चूक विसराई॥
तव सवको करिकै सनमाना। जानि सुनैना सिद्धि समाना॥
वैठे सभा जहां दोउ राजा। भ्रातन सहित गये रघुराजा॥
राम विरह तिय नैननि नीरा। वहि वहि भयो उदधि गंभीरा॥
कहहिं परसपर नारि दुखारी। सीय विदा ते यह दुख भारी॥
भयो शोक रनिवासा। लागी वहुरि दरश की आसा॥

रघुराज को, सिगरी उठी समाज।
ंदि प्रभु, वैठे शील दराज॥

चौपाई।

तहाँ जनक सब सचिव बोलाये। ल्यावहु दाइज वचन
सचिव आसु लै आवन लागे। जिन लखि शक्र धनदमद .
गल हैकल शिर सुवरण शृङ्गा। पीठ पाटवी झूल
दियो सुरभि शत सहस अनेका। कामधेनु ते लघु नहिं
वरन अनेकन विमल दुशाले। झूलत झव्वे मुकुत विशाले
देश देश के निरमित पागे। मणि शिर पेच कलंगी लागे
ग्रंथित रतन अनेकन वागे। कटि फेटे मणि ज्योतिनजागे।
चरण वसन बहु बरनअमोले। मानहुँ मदन पाणि के तोले॥
कोटि कोटि यकयकवरकाहीं। देत पोशाक न जनक अघाहीं॥
दियो लक्ष दश मत्त मतंगा। कनक साज सज्जित बहुरंगा॥
जिनहिं देखि ऐरावत लाजा। भये गर्बगत दिशि गजराजा॥
कोटि एक पुनि दियो तुरंगा। जिन लखि उच्चश्रवा मद भंगा॥

दोहा--कनक साज साजे सकल, मारुत वेग प्रमान।
देश देश के वरन बहु, जल थल चलत समान॥

छन्द चौबोला।

तनक बनक नहिं न्यून कनक के स्यंदन झनक अपारे।
वृन्दन वृन्दन युगल बीस वर लक्ष मनोज सँवारे॥
दीन्ह्यो स्यंदन रघुनन्दन को आनन्दन मिथिलेशा।
नहे तुरंग अनंग सभाजित जीते जंग हमेशा॥
राजत जातरूप के भाजन रतन अनूप जड़े हैं।
निज अनुरूप भूप दीन्ह्यो बहु देखन देव अड़े हैं॥
पन्ना पदिक लाल माणिक के पुष्पराज गोमेद्र।
नीलक लसुन प्रवाल पिरोजन भूषण सहित विभेद्र॥
इंद्रनील मणि पद्मराग के मरकत मणि आभरणा।

नख शिख के त्रय सत युग त्रिसत पृथक् पृथक् जिन बरणा
दीन्ह्यो चारि कुमारन को नृप औरहु मणि बहुताई ।
पंच सहस्र महीप कुमारन रघुपति सखन बोलाई ॥
नृप समान दीन्हे पट भूपण हयगय रथन मँगाई ।
पुनि यक यक गजमुक्तन माला पृथक पृथक पहिराई ॥
एक एक चिन्तामणि नामक दीन्ह्यो मणि सुखदाई ।
चिन्तामणि नामक मणि कें पुनि यक यक हार मँगाई ॥
जनक पाणिपंकज निज चारिहु कुँवरन दिय पहिराई ।
गजमुक्तन को महाहार यक जेहि बिच बिच छबि छाई॥
चन्द्रकांति औ सूर्यकांति मणि लगीं तेज समुदाई ॥
सोकर हार धारि मिथिलापति दशरथ को पहिराई ॥
जोरि पाणि पुनि विनय कियो अस सुनहु भानुकुल भानू।
हम नहिं दीन तुम्हारे लायक कहँ महि कहँ परिमानू ॥
अक्षोहिणी एक मिथिला की जाति कुमारिन संगा ।
लाखन अभिलाखन गमनत सँग दासी दास सुभंगा ॥
तिनकर पोपण पालन लालन राउर हाथ महीपा ।
हम सेवक रावरे सदा के आप भानु हम दीपा ॥
फेरि सुदावन सचिव बोलि नृप शासन दियो सुनाई ।
रहै न बाचि बराती कोउ अस बिन भूपण पट पाई ॥
सकल सुदावन आदि सचिव तहँ पट भूपण बहु ल्याई ।
जनक चौक महँ बिबिध चौतरन दीन्हे शैल बनाई ॥
दिह [illegible] बहु मनुजन जाहि जौन जस भायो ।
[illegible]जन जो पट भूपण नाहिं पायो ॥
[illegible]न धनी धनद कीजोरी ।
[illegible]न्हे करि कीरति चहुँ ओरी ॥

इन्द्र वरुण यम धनद आदि सुर देखि विदेह विभूती ।
लज्जित भये वृथा माने मन निज निज कर करतूती ॥
अवधनिवासी सकल सराहत जनक उदार सुभाऊ ।
ज्ञानी कहत अचर्य करो जनि यह सिय कृपा प्रभाऊ ॥
दाइज दियो विदेह जौन सो दशरथ भूप उदारा ।
सो सब भाटन भिक्षुक दीनन दीन्ह्यो विनहि विचारा ॥
अधिक अधिक सो बढ्यो घट्यो नहिं सियमहिमा अधिकानी
जहां प्रत्यक्ष रमा तहँ केहि विधि संपति जाय वखानी ॥
भू नरेन्द्र नागेद्र सुरेन्द्रहु दानवेन्द्र जग माहीं ।
जनक विभूति देत दशरथ लखि मन महँ सकल सिहाहीं ॥
कनक रतन पट हयगय स्यंदन भाजन वस्तु अनेका ।
दियो विदेह जाहि जस भायो विसरयो बुद्धि विवेका ॥
यहि विधि दै दाइज मिथिलापति कौशलपति सों भाख्यो ।
हमरे काह देन को प्रभु जो रह्यो सो आगे राख्यो ॥

दोहा–तेहि अवसर गौतम सुवन, बोल्यो वचन विचारि ।
गमन मुहूरत आइगो, कन्या चलैं सिधारि ॥
गवन करैं वर चारहूं, यही मुहूरत माहिं ।
पुर बाहर परखाहिं पितै, नृप अन्तहपुर जाहिं ॥
करि विधि मंडप मोचनो, समधिनि सों रचि फाग ।
पुत्रवधू लै संग में, गवन करैं बड़भाग ॥
एवमस्तु दशरथ कह्यो, राम चारिहू भाय ।
चले तुरंगन में चढ़े, पिता श्वशुर शिरनाय ॥

छंद चौबोला ।

लक्ष्मीनिधि को पानि पकरि कै उठे अवधपति आसू ।
विधि मंडप मोचनी करन को चले हरषि मिथिलाभू ॥

परिचारिका सुनैना की तहँ ड्योढ़ी ते चलि लीन्ह्यो।
अवध चक्रवर्ती को मंडप के तर आसन दीन्ह्यो॥
सुरभित तैल अनेक मसाले ताम्बूलन युत ल्याई।
वृद्ध वृद्ध कुल नारि पाणि निज दियो लगाय खवाई॥
फेरि कह्यो कर जोरि भूप सों मंडप बंधन छोरो।
नेगन में निज भगिनि देहु नृप जनि उदार मुख मोरो॥
नृप उठि मंडप को बंधन तहँ निज कर छोरयो एकू।
कह्यो बहुरि मुसक्याय सुनहु मम वचन विचारि विवेकू॥
हम लेने कौशल ते आये नहिं दीबे के हेतू।
जो जो देहौ सो लै कै हम जैहैं बहुरि निकेतू॥
दीन्ह्यो पुत्रवधू अति सुंदरि सो पुत्रन को भागा।
हम न अवधपुर जाब छूछ कर कछु हाथे नहिं लागा॥
जो मिथिलेश भगिनि होवै कहुँ तौ नेगनतर दीजै।
ना तो चलै सुनैना रानी यही निबाह करीजै॥
सुनि कुल वधू वृद्ध नृप वाणी कही सुनैनै जाई।
अवसर जानि चार करिबे हित सो बाहर कढ़िआई॥
कनक थार लै पाणि रंग भरि धरि काजर टिकुली को।
दियो भाल महँ टीको॥
रयो सहित उमंगा।

लालन पालन अब इनको सब कीन्ह्यो बाल विचारी ॥
तुम्हरे कर सौंपहुँ नरनायक ई चारिहू कुमारी ।
ये अदान जानती नहीं कछु पालेहु भूल विसारी ॥
अपनी अरु सिगरी सासुन की सेवा सब करवायो ।
कोहु सों कबहुँ विरोध होइ नाहिं निज कुल रीति सिखायो ।
सुनत सुनैना बैन अवधपति जोरि पाणि कह बानी ।
प्राणहुँ ते प्रिय पुत्रवधू मम सपने दुख नहिं रानी ॥
जस मिथिलापुर तस कौशलपुर भेद कछू न विचारो ।
को नहिं करत पतोह छोह जग यह संदेह विसारो ॥
शासन देहु जाहुँ कौशलपुर पुनि ऐहौं बहु बारा ।
मिथिलापति को अहै अवधपुर मिथिला नगर हमारा ॥
अस कहि करि प्रणाम समधिनि को भूपति बाहर आयो ।
चलन हेत मिथिलापति सों पुनि जोरि पाणि अस गायो ॥
शासन देहु बिलम्ब होति बड़ि तुम अवलम्ब हमारे ।
मोद कदम्ब मिलनि राउरि मोहिं बिसरी नाहिं बिसारे ॥
कह्यो विदेह सनेह विवश ह्वै पहुँचैहौं कछु दूरी ।
यह कुल रीति नाथ बरजो जनि तुव बिछुरनि दुख मूरी ॥
नृप प्रणाम करि चल्यो चढ्यो रथ बाजे विविध नगारे ।
मिथिलापति सों कह वशिष्ठ सब सुदिवस शुभग विचारे ॥
यही मुहूरत महँ कन्या सब चलैं भवन ते राजा ।
द्विती मुहूरत नहिं शुभदायक करहु आसुही काजा ॥

दोहा—सुनि वशिष्ठ के बैन वर, कुशध्वज सहित विदेह ।
लक्ष्मीनिधि को संग लै, गे अंतहपुर गेह ॥

चौपाई ।

बोले वचन बोलाय सुनैना । अब बिलम्ब कर का

बीतत बिदा मुहूरत अबहीं। उचित सनेह करब नहिं सबहीं ॥
चढ़ैं पालकी सकल कुमारी। साजहु साजबिलम्ब बिसारी ॥
इतना सुनत सखी सब धाईं। पट भूषण सिय को पहिराईं ॥
तीनिहु भगिनि सहित सिय ल्याई। बार बार दृग बारि बहाईं ॥
सीय पिता पद लखि लपटानी। सो दुख अब किमिजाय बखानी॥
बार बार पितु मिलति जानकी। गई छूटि मरयाद ज्ञान की ॥
रहे कहावत परम बिज्ञानी। तौन ज्ञान गति सकल भुलानी ॥
बढ्यो बिलोचन बारि प्रवाहा। लहत न नृप दुखसागर थाहा ॥
कहि न सकत मुख ते कछु बानी। तेहि अवसर धीरता परानी ॥
भाषत सीय बहोरि बहोरी। छाड़ेहु पिता सुरतिनहिं मोरी ॥
मच्यो कोलाहल सब रनिवासू। तेहि क्षण भयोसकल सुख हासू॥

दोहा–लीन लाय उर जनक सिय, तनक रह्यो न सम्हार।
डूबी धीर जहाज जनु, प्रेमहि पारावार ॥

चौपाई।

जस तस कै धरि धीरज राजा। बोल्यो बिलखत मंद अवाजा ॥
निमिकुल की सिगरी मरयादा। रक्षण किहेहु बिहाय बिषादा ॥
अमल श्वशुरकुल सुता सिधारी। जस इत तस उत पितु महतारी॥
कीन्ह्यो सासु श्वशुर सेवकाई। पतिव्रत धर्म कबहुँ नहिं जाई ॥
राख्यो सब सों शील सनेहू। क्रोध लोभ कीन्ह्यो नहिं केहू ॥
ल्याउब हम इत बारहिं बारा। किहेहु न नेसुक मनहिं खभारा॥
करिहैं मोसे अधिक दुलारा। ज्ञानिशिरोमणि श्वशुर तिहारा॥
पति रुख राखि किह्यो सब काजा। सदा प्रसन्न रहैं महराजा ॥
इतना कहत गरो भरि आयो। जनक निकरि तब बाहर आयो॥
मिली सीय कुशकेतुहि जाई। तन ते धीरज गयो पराई ॥
लीन्ह्यो लाय सीय उरमाहीं। रह्यो धीरता लेशहु नाहीं ॥

हाय सुता मम प्राण पियारी । लहब बहुरि कब नोइ निहारी ॥

दोहा–जस तस के धरि धीर कछु, चल्यो विकल कुशकेत ।
लक्ष्मीनिधि के चरण महँ, गिरी सोय बिन चेत ॥

चौपाई।

कहि भैया सिय रोवन लागी । को अस जेहि न धीरता भागी ॥
सखी सीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई ॥
कहति न मुख लक्ष्मीनिधि बाता । सीय सनेह शिथिल सब गाता ॥
जस तस के धरि धीर सुनैना । अवसर उचित कहे अस बैना ॥
कन्या कोड के घर नहिं होई । सुता सनेह करै जनि कोई ॥
सुता होय तो होय न नेहू । नेह होय विधि राखै गेहू ॥
यहि विधि करत अनेक प्रलापा । बाल वृद्ध सुनि करहिं विलापा ॥
नहिं सिय तजति भ्रात के चरणा । सो दुख जाय कौन विधि बरणा ॥
भगिनि सनेह विवश सिय भ्राता । रोदन करत कहत नहिं बाता ॥
कर गहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनी बाहर दुख जानी ॥
मातु अंक महँ सिय लपटानी । मनहुँ करुण रस सरि उमगानी ॥
लियो सुनैना गोद उठाई । धरि धीरज बहु बात बुझाई ॥

दोहा–रोवहिं सब नारी विकल, भरी सीय अनुराग ।
मानहुँ सिगरे भवन में, छायो राग विहाग ॥

चौपाई।

तहँ कुशकेतु भूप की रानी । कहत बुझाय परम प्रिय बानी ॥
जनि मानहुँ दुख मनहिं कुमारी । येहु सनातन रीति [illegible]नारी ॥
कन्या अवशि सासुरे जाती । पुनि माइके आशि मन [illegible] ॥
हिमगिरि मैना गौरि कुमारी । शंभु ब्याह कैलाश सिधारी ॥
देवहुती मनु भूप दुलारी । कर्दम भवन गयी तपधारी ॥
नृप शर्य्याती सुता सुकन्या । गयी च्यवन मुनि गृह भै धन्या ॥
देवयानि पुनि शुक्र कुमारी । भूप ययाति [illegible]

शांता दशरथ सुता सोहाई। शृंगीऋषि राख्यो घर ल्याई॥
देव दैत्य सब नर मुनि नाना। दिये सुता करिब्याह विधाना॥
जेहैं संगै महँ अनवैया। लैहैं आसु आनि तव भैया॥
यहि विधि कहत प्रबोधहि बानी। बहत जात नैनन सों पानी॥
सीय दुसह दुख देखि विदाई। भये विकल रुकि गे दिनराई॥
दोहा–गृह तारन संयुत रुक्यो, महाचक्र शिशुमार।
देखत विबुध विमान चढ़ि, बहत नयन जलधार॥
चौपाई।
होत विदा सिय धीरज भागा। प्रगट्यो प्रजा परम अनुरागा॥
पुरवासिनो नारि सब आई। सियहि दिये पट भूषण ल्याई॥
औरहु निमिकुल की सब नारी। दीन्हे पट भूषण मनहारी॥
अस कोउ तहँ नहिं होतविचारो। सियहि देहिं घर वस्तु न सारी॥
आय मिलें सिय कहँ पुरनारी। रोदन करहिं नेह वश भारी॥
सिय महिमा तेहि क्षण प्रगटाई। मिली सकल पुरनारिन जाई॥
यह चरित्र जान्यो कोउ नाहीं। जानी सबै मिली हम काहीं॥
चारिहु भगिनिमिलतियहिभाँती। दुखित चढ़निशिविकाकहँजाती॥
नारि वृन्द सब विकल सिधारे। रहैं न कोहुके अंग सम्हारे॥
मिलति परस्पर यहिविधिसीता। द्वार देश लौं गई पुनीता॥
धरि धीरज तहँ परम सयानी। आई आसु सुनैना रानी॥
शिविका आनि रतनमयचारो। दिय चढ़ाय चारिहू कुमारी॥
दोहा–दधि टीको दै भाल में, सगुन सकल धरवाय।
करि परछन की रीति सब, दिय पालकी चलाय॥
चौपाई।
चलत पालकी नगर मँझारी। कीन्ही प्रजा कोलाहल भारी॥
पशु विहंग मिथिलापुर केरे। रोदन करत जानकी हेरे॥

हाय सुता मम प्राण पियारी । लहब बहुरि कब मोद निहा
दोहा-जस तस कै धरि धीर कछु, चल्यो विकल कुशकेत
लक्ष्मीनिधि के चरण महँ, गिरी सीय बिन चेत ॥
चौपाई।
कहि भैया सिय रोवन लागी । को अस जेहि न धीरता भागी
सखी सीय कहँ लई उठाई । माच्यो रोदन शोर महाई
कढ़ति न मुख लक्ष्मीनिधि बाता । सीय सनेह शिथिल सब गाता
जस तस कै धरि धीरि सुनैना । अवसर उचित कहे अस बैना।
कन्या कोहु के घर नहिं होई । सुता सनेह करै जनि कोई॥
सुता होय तो होय न नेहू । नेह होय विधि राखै गेहू॥
यहि विधि करत अनेक प्रलापा । बाल वृद्ध सुनि करहिं विलापा॥
नहिं सिय तजति भ्रात के चरणा। सो दुख जाय कौन विधि बरणा॥
भगिनि सनेह विवश सिय भ्राता । रोदन करत कढ़त नहिं बाता॥
कर गहि कोउ तहँ सखी सयानी । लै गवनी बाहर दुख जानी॥
मातु अंक महँ सिय लपटानी । मनहुँ करुण रस सरि उमगानी॥
लियो सुनैना गोद उठाई । धरि धीरज बहु बात बुझा
दोहा-रोवहिं सब नारी विकल, भरी सीय अनुराग ।
मानहुँ सिगरे भवन में, छायो राग बिहाग ॥
चौपाई।
तहँ कुशकेतु भूप की रानी । कहत बुझाय परम
जनि मानहुँ दुख मनहिं कुमारी । लेहु सनतातन
कन्या अवशि सासुरे जाती । पुनि माइके अ
हिमगिरि मैना गौरि कुमारी । शंभु व्याह
देवहुती मनु भूप दुलारी । कर्दम भवन
नृप शर्य्याती सुता सुकन्या । बसी च्यवन मु
देवयानि पुनि शुक्र कुमारी । भूप ययाति न

दोहा-रघुनन्दन वंदन कियो, जनक लियो उर लाय।
प्रीति रीति तेहि कालकी, वरणि कौनि विधि जाय ॥

चौपाई।

पुनि विदेह कौशलपति काहीं। वारहिं वार मिले मुद माहीं ॥
समधी समधी नेह समाने। भरे कंठ नहिं वचन वखाने ॥
जस तस कै विदेह धरि धीरा। बोल्यो प्रेम गिरा गम्भीरा ॥
यह मिथिलापुर की ठकुराई। आपनि जानब गुनि सेवकाई ॥
नहिं कछु मोर रावरो सिगरो। करब माफ जो हमसे बिगरो ॥
दशरथ कह्यो सनेह तुम्हारा। यह हमरे शिर महँ बड़भारा ॥
कौशल मिथिला उभै तुम्हारा। सेवक सिगरे मोर कुमारा ॥
तहँ जनक मिलि वारहिं वारा। चले भवन दृग वह जलधारा ॥
मिथिलापुर पुरजन सुखरासी। मिले सकल कौशलपुर वासी ॥
नहिं वहुरत कोउ भवन वहोरे। सिगरे बँधे प्रेम के डोरे ॥
जस तसकै सब किये पयाना। करत अवधपति कीरति गाना ॥
उत कौशलपुर चलो वराता। वजे दुंदुभी शोर अघाता ॥

दोहा-राम बंधु युत अवध पति, सकल वराती लोग।
जनक सुयश वरणत चले ह्वै गो दुसह वियोग ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई. कृत रामस्वयम्वर ग्रंथे जानकी विदा वर्णनो नाम एकविंशतम प्रबन्धः ॥ २१ ॥

दोहा-जनक शील सत्कार गुनि, सम्पति सहज सुभाउ।
वरणत पुनि पुनि अवधजन, हिय नहिंहोत अघाउ ॥

छंद कामरूप।

बाजे विविध विधि दुन्दुभी मुरचंग मुरज मृदङ्ग।
नौमत वजत गज पर वृजत तूरज उपङ्ग अभङ्ग ॥
फहरत पताके वहु किता के आतपत्र अपार।

चढ़े विमान देवयुत दारा। सिय विलोकि वह आँसुन धार
तेहि छण को अस त्रिभुवन माहीं। भयो जाहि सियलखि दुखनाहि
पाले सीय विहंग कुरंगा। रोवत चले पालकी संगा
सतानन्द तहँ आसुहि आये। लाखन स्यंदन शकट मँगाये।
भरि भरि शकटन साजु अपारा। दियो चलाय संग यक बारा।
अक्षोहिणी साहिनी साजी। चलीं संग महँ हय गय राजी॥
चले संग नाना नर याना। चढ़ीं सखी सजि विविध विधाना॥
चले सकल पुरजन पहुँचावन। बाल वृद्ध करि मारग धावन॥
बार बार सब ईश मनावैं। जल्द जनक जानकी बोलावैं॥
यहि विधि सिय बरात महँ आई। बजे मुरज दुन्दुभि सहनाई॥

दोहा--दशरथ के तहँ मिलन हित, ससुत सबंधु विदेह।
मुनिन सहित आवत भये, भरे अछेह सनेह॥

चौपाई।

आवत जानि विदेह महीपा। रुके अवधपति नगर समीपा
तहँ विलोकि कौशलपति काहीं। वाहन तजे विदेह तहांहीं
अवधनाथ तहँ सहित कुमारा। मिले कछुक चलि प्रेम अपारा
राम सबंधु आय शिर नाये। जनक ललकि उर माहँ लगाये।
कह्यो जनक सों प्रभु करजोरी। राखेहु बाल मानि सुधि मोरी।
प्रेम विवश नहिं बदत विदेहू। मूर्तिमान जनु राम सनेहू॥
जस तसके धरि धीरज राऊ। बोल्यो बैन न प्रेम अघाऊ॥
यदपि मोहिं तुम दीन बड़ाई। पै मोहिं रुचत चरण सेवकाई॥
आपन जानि न देव बिसारी। करव चूक सब माफ हमारी॥
प्रभु कह भूप हमार तुम्हारो। होइ नाहिं बियोग युग चारो॥
जानहु सकल भाँति मम रीती। काहे करहु वियोग विभीती॥
जनक कह्यो हम सर्वस पायो। लोक शिरोमणि मोहिं बनायो॥

चक्रवर्ती कियो अवधपयान।
रत थल थल देत बहु बिधि दान॥
; छण छण लेत सुधि क्षितिनाह।
; क्षुधित होंहिं न श्रमित कोउ मगमाह॥
सचिव तहँ सब सैन आगे जात।
चे प्रथमहिं तिन बतावत जात॥
प्रसन्नता तहँ करै सैन निवास।
; वस्तु अगणित बने विविध अवास॥
थला नगर ते जब चली अवध बरात।
कह्यो भूपति उर न मोद समात॥
र तुरंत दीजे अवधपुर पठवाय।
: सब भाँति ते उत देंहिं सुभग सजाय॥
ऊ द्वार द्वारन देहु तुङ्ग बँधाय।
रग गलिन गलिन सुगन्ध सलिल सिंचाय॥
ार के प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय।
ात विदेह पुर ते वर वधून लेवाय॥
त पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आसु।
तयारी करहिं भारी सहित विविध हुलासु॥
छ लेहु वशिष्ठ से परिछन सुदिन जेहि द्यौस।
त्र माहँ लिखाय भेजो सहित आनँद हौस॥
स्वामि शासन सचिव कीन्ह्यो सपदि सकल विधान।
के तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान॥
शल नगर घर घर सुचर वर जाय तिमि रनिवास।
जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास॥
विधि मिथिल र ते, गवनो जबै बरात।

घर्घर करत रथ चक्र चहुँकित झांझ की झनकार ॥
आगे अनेकन ऊंट जूट सुजांगरेन अलाप ।
पुनि चले सादी अमित लाखन खनत महि परिटाप ॥
पैदर अनंतन वृन्द सायुध वसन अंग सुरंग ।
पुनि चले परिचर वेत्र झरझर हाथ एकहि संग ॥
मणि जड़ित सोंटे विविध वल्लभ मुकुत झालर दार ।
औरहु अनेकन खास सेवक हिये हीरन हार ॥
तिन मध्य में सुंदर युगुल स्यंदन विराज अनूप ।
यक में चढ़े गुरु ब्रह्मसुत यक माहँ कोशल भूप ॥
नरनाह पाछे वनक आछे सजत गजन सवार ।
रघुवीर भरतहु लषण रिपुहन सहित सब सरदार ॥
मंडित अतिहि मातंग मंडल चले रघुकुल वीर ।
पुनि चलीं चारिहु पालकी मिथिला नगर की भीर ॥
पुनि सभ्य सुह्रद महाजनो बहु वाणिक वलित वजार ।
रथ शकट वँड़वा वैल लादे साजु अमित हजार ॥
यहि भाँति मिथिला नगर ते कौशल नगर की ओर ।
गवनी बरात बतात सुख मिथिलेश यश चहुँ ओर ॥
तहँ धूरि पूरी गगन उड़ि छपि गयो भास्कर भास ।
टूटत सुहौदन के दचक तरु वृन्द मग अनयास ॥
सरि सरन प्रथमहिं जात जेजन लहत जल भरिपूर ।
जे मनुज गवनत सैन पाछे पावते भरि धूर ॥
सुर वृन्द विविध विमान चढ़ि वरसत गगन ते फूल ।
जय यश करत कोउ आजु नहिं यह भुवन दशरथ तूल ॥
गंधर्व गावत मोद छावत चढ़े विविध विमान ।
सुर सुंदरी नाचहिं नवल ले माधुरी सुख तान ॥

यहि भांति दशरथ चक्रवर्ती कियो अवधपयान।
याचक अयाचक करत थल थल देत बहु विधि दान॥
करिकै पतोहन छोह छण छण लेत सुधि क्षितिनाह।
नहिं तृपित होहिं न क्षुधित होहिं न श्रमित कोउ मगमाह॥
मिथिलेश के बहु सचिव तहँ सब सैन आगे जात।
जे वास के थल रचे प्रथमहिं तिन बतावत जात॥
जहँ होय नृपति प्रसन्नता तहँ करै सैन निवास।
भरि पान भोजन वस्तु अगणित बने विविध अवास॥
यहि भाँति मिथिला नगर ते जब चली अवध बरात।
मंत्री सुमंतहि कह्यो भूपति उर न मोद समात॥
अब चारि चार तुरंत दीजे अवधपुर पठवाय।
वर अवधपुर सब भाँति ते उत देहिं सुभग सजाय॥
तोरन पताके द्वार द्वारन देहु तुङ्ग बँधाय।
सब राजमारग गलिन गलिन सुगन्ध सलिल सिंचाय॥
कोशल नगर के प्रजन घर घर देहु खबरि जनाय।
आवत बरात विदेह पुर ते वर वधून लेवाय॥
तेहि भाँति पुनि रनिवास महँ जाहिर करावहु आसु।
परछन तयारी करहिं भारी सहित विविध हुलासु॥
तुम पूछि लेहु वशिष्ठ से परिछन सुदिन जेहि द्यौस।
सोइ पत्र माहँ लिखाय भेजौ सहित आनँद हौस॥
सुनि स्वामि शासन सचिव कीन्ह्यो सपदि सकल विधान।
चढ़िकै तुरंग तुरंत धाये चारि चार प्रधान॥
कौशल नगर घर घर सुचर वर जाय तिमि रनिवास।
दीन्हे जनाय बरात आवत पंथ चारि निवास॥
दोहा-यहि विधि मिथिला नगर ते, गवनी जबै बरात।

यक योजन में भयो तव, मारग में उत्पात ॥

छन्द कामरूप।

लखि परचो पश्चिम दिशि महा तहँ धूरि धुंधाकार।
मूंद्यो दिवाकर भास चहुँकित ह्वै गयो अँधियार ॥
लागी चमंकन तड़ित चहुंकित शोर भो अति घोर।
अतिशय भयानक श्याम घन मंडल उव्यो चहुँ ओर ॥
अतिशय प्रचंड अखंड तहँ करि शोर झोरि झकोर।
लाग्यो वहन तहँ पवन झंझा पुहुमि ठोरहि ठोर ॥
सवके गये दृग मूँदि व्याकुल शयन भे तेहि काल।
यक संग सकल विहंग विस्वर उठे वोलि विहाल ॥
करि सैन दक्षिण ओर धावन लगे वहु मृग माल।
वहु काक गृद्ध उलूक वोलत अशुभ अति तेहि काल।
सवके हृदय कंपन लगे पशु वहत दृग जलधार।
अति भीति भै डोलन लगी तहँ धरणि वारहिं वार ॥
यह देखि अति उत्पात कौशलनाथ भै उर आनि।
वोल्यो वशिष्ठहि नाय शिर कर जोरि विह्वल वानि ॥
उत्पात अति दरशात नाथ जनात सव कर घात।
खग व्रात वोलत अशुभ पय मृग वृन्द दक्षिण जात ॥
सन्मुख चितै नहिं जात आगे चरण नाहिं उठात।
अव काह होत देखात सकल वनाय वहुरि नशात ॥
मन मोर कम्पत वार वार न वुद्धि पावत पार।
अस जानि परत मुनीश सव कर होत अव संहार ॥
सुनि अवधपति के वैन ब्रह्म कुमार कह्यो विचारि।
खग वृन्द सूचत भीति पै मृग वृन्द देत निवारि ॥
ताते परत अस जानि ह्वैहै भीति मरन ।
पाछे अनंद विशेषि ह्वैहै सत्य यह

बोलत विहंग भयावने फल तासु सूचत भीति ॥
मृगमाल दक्षिण जात ताते होइ पाछे प्रीति ।
इतना कहत मुनि के तहाँ पुनि बह्यो पवन प्रचंड ।
टूटन लगे तरु वृन्द चहुँकित भयो शोर अखंड ॥
उड़ि उड़ि परत पाषाण मानहु धरणि उलटी जाति ।
बढ़ि अंधकार अघात भादों रजनि सी दरशाति ॥
वर्षति भयंकर भसम पुनि सूझत न दशहु दिशान ।
अति गाढ़ भो अँधियार खोजेहु मिलत नहिं कहुँ भान ॥
मातंग तरल तुरंग स्यंदन भये गति अवरुद्ध ।
नैननि तजत जलधार वारहि वार तजि गति शुद्ध ॥
सैनिक सकल ठाढे विकल मुख वचन बोलत हाय ।
अब प्रलय जग महँ होन चाहत बचब नाहिं देखाय ॥
तहँ मुनि वशिष्ठादिक महर्षि सशंक हप विहाय ।
लागे पठन स्वस्तैन मंगल चित्त महँ अकुलाय ॥
अति भयो भूपति मनहि शंकित कहत का धौं होत ।
विधि बात सकल बनाय कस अब करत शोक उदोत ॥
उत्पात अति अवलोकि [illegible] चारिहु भाय ।
आये [illegible] राय ॥
[illegible] कोह के नेत ।

देखिपरे भृगुपति विकट, सिगरी सेन नगीच ॥

छंद भुजंगप्रयात।

जटा जूट जाके लसै शीशमाहीं। त्रिपुंड्रौ सजे भाल में सर्व
अनेकानि रुद्राक्ष की लम्बमाला। बँधी त्यों जटा जूटमें ज्योति
लसै कुंडलो कर्ण रुद्राक्ष केरे। मुखै तामरे वाल भै होत
करालै सुलालै दिपैं नैन दोऊ। सकैं ना चितै विश्व में वीर क
चढ़ी वंक भ्रू सर्पिणी सी करालैं। फरक्कैं उभै नासिकावेध हा
तजै श्वास कोपाधिकै वार वारै। मनो ज्वाल के जाल तेविश्वज
चढ़ी सर्व अंगानि में भस्म भूरी। मनो शृङ्ग कैलास को भास पूरं
लिहे चंड कोदंड दोर्दंड भारी। कसे कंध में तूण द्वै भीतिकारी
बृहद्व्याघ्र चर्माम्वरै पृष्ठ माहीं। कसो कालसोंखङ्गत्योंलंकपाहीं
महाकोप सों कम्पते ओठ दोऊ। डरैं देवता दैत्य देवेश सोऊ॥
महाकाल सों कंध में है कुठारा। कियो वार वारै सुक्षत्री सँहारा॥
महातेज सों अंग देखे परै ना। लखे सैन के धीर कोऊ धरै ना॥
कहैंवीर केते किधौं भानु आयो। कोऊ भाषते कोपि धौं शम्भुधायो
कोऊ वीर वोले अहै धर्मराजै। कोऊ भाषते सत्य है दैत्यराजै॥
तहाँ मारकंडेय आदी ऋषीशा। कहे रेणुका नंद हैं विप्र ईशा।
सुने राम को नाम क्षत्री अपारा। चले भाजि धारे महाभीतिभारा॥
कियो क्षत्रि निर्वंश एकीस वारा। कहौ कारनै कौन जो पावँ धारा॥
डरे देवताहू चढ़े जेविमानै। कहा होन चाहै सवै यों वखानै॥
खडे सैन को रोकि कै राम आगे। भगे क्षुद्र क्षत्री महा भीतिपागे॥
मिट्यो भूरिसों धूरिकोधुंधकारा। भयो भास आशागयोअंधकारा॥
परयो पेखि प्रत्यक्ष सो पर्शुरामा। महाकाल सों भीति भै तीनजामा
सवै देव आये लखै को तमाशा। चहैं राम कल्याणदूजीनआशा॥
परी भर्भरी सभंरो सेन माहीं। मची दर्र्री मोचु है शंक नाहीं॥

हा वीर जे शंक मानें न नेको। महा भीरु ठाढ़े रहे नाहिं एको॥

दोहा–आयो यहि विधि परशुधर, महाभयंकर रूप।
कालानल सम तेज तन, लहे भीति अति भूप॥

कवित्त।

दुराधर्ष समर सहर्ष उतकर्ष ओज,
अतिहीं अमर्ष भरो कंध में कुठार है।
विक्रम विदित त्यों त्रिविक्रम को अंश विप्र,
क्षत्री कुल छेद्यो क्षिति यकइस वार है॥
रघुराज राज राज सहित समाज देखै,
शंकर को शिष्य हिमाचल के अकार है।
कर्ता शत्रु भीर भग्न पेखि भागे भीरु नग्न,
आग्नि सों उदग्र जमदग्नि को कुमार है॥
है है राज वाहुन की समिध सरोस करि,
कीन्ह्यो रण यज्ञ स्रुव विरचि कुठार है।
जाकी चाप भीति निज रीति छोड्यो क्षत्री कुल,
क्षिति में क्षमा की छपा भयो भिनुसार है॥
रघुराज कोशलेश साहनी के आगे खड़ो,
भृगुकुल कमल दिवाकर अकार है।
कोपित अपार मानों नैनन सों करैं छार,
बीर विकरार बोले बैन वार वार है॥
हौंतो तप तपत महेन्द्र शैल बैठो हुतो,
आपुई ते कै लि
में

उपज्यो नवीन गुरुद्रोही को हमार है ।
कीन्ह्यो जो अकाज छाड़ि देइ सो समाज आज,
कौन रघुराज कोशलेश को कुमार है ॥

दोहा—परशुराम के वचन सुनि, अकुलान्यो अवधेश ।
जान्यो अब सबको भयो, नाश सत्य यहि देश ॥

चौपाई ।

उतर्‌यो रथ ते दशरथ राजा । लियो बोलाय मुनीश समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कश्यप जावाली । मार्कंडेय सुधर्म सुचाली ॥
वामदेव कात्यायन आदी । और मुनीश धर्म मरयादी ॥
करि आगे मुनि वृन्द महीपा । भूप गयो भृगुनाथ समीपा ॥
लख्यो परशुधर वदन प्रकासा । मानहुँ श्वेत वरण कैलासा ॥
कालानल सम महा भयावन । हेरतहीं हिय भय उपजावन ॥
पसरत ज्वालमाल बहु ओरा । मनु वृपराशि भानु अति घोरा ॥
चितै सकत साम्हूं नहिं कोई । कहत सबै अब कार्यो होई ॥
धर्‌यो कंध महँ तेज अपारा । दमकत दामिनि सरिस कुठारा ॥
महा भयंकर शंकर रूपा । डर्‌यो देखि अति जिय महँभूपा ॥
मुनिजन निरखि परशुधर काहीं । आपुस महँ सिगरे बतराहीं ॥
किधौं पिता वध सुधि मन करिके । आयो पुनि अमरप उर भरिके ॥

दोहा—सहसबाहु के पुत्र जब, पिता वैर सुधि कीन ।
लियो काटि जमदग्नि शिर, महा पाप रस भीन ॥

चौपाई ।

यहो राम धरि कंध कुठारा । दशो हजार एकहो बारा ॥
सहसबाहु सुत कियो विनाशा । पुनि क्षत्रिन पर कोप प्रकाशा ॥
किय निक्षत्र क्षिति एकइस बारा । अब धौं काह करन पगु धारा ॥
अबहुं निक्षत्र करन मन चाहत । निरखत मनहुं सेन सब दाहत ॥

चलौ करैं भृगुपति की पूजा। वचन उपाय और नहिं दूजा ॥
अस कहि सब मुनि किये प्रणामा। बोले सकल राम हे रामा ॥
कृपा कियो भल दरशन दीन्हा। हम सब काहि धन्य अतिकीन्हा॥
अस कहि अर्घ्यपाद्य आचमना। दीन्हे मुनिजन अमरप शमना ॥
पुनि पूजन पोड़श उपचारा। रामहिं कियो वशिष्ठ उदारा ॥
दशरथ बहुरि चरण शिरनायो। त्राहि त्राहि अस वचन सुनायो ॥
मुनिजन मधुर वचन मुख भापे। क्षमा करावन मन अभिलाषे ॥
दशरथ बहु दीनता देखाई। वार वार चरणन शिर नाईं ॥
दोहा–जस जस सरल वचन सुनत, जस जस पूजन होत।
तस तस भृगुपति के उरहिं, द्विगुणित कोप उदोत ॥

कवित्त।

बोल्योघोरघनसोंघमंडभरिवैनराममेरोनामधारिकौनरामकहवावतो।
साँचोगुरुद्रोहीमोरकोहीनहिंजान्योमोहितोरिकैपिनाकअवबदनछिपावतो
कहांरघुराजआजराजराजजेठोसुतमोकोआज्ञुअर्जुनसोंपूरोशत्रुभावतो।
होइभुजदंडबलधारिकैकोदंडशरतजिकैसमाजअबक्योंनकढ़िआवतो
दोहा–रेदशरथ मम गुरु धनुप, निज सुत पाणि तुराय।
क्षमा करावत चूक निज, मीठे वचन वताय ॥
मैं क्षत्री कुल विदित अरि,नाइयों यकइस बार।
सपनेहुँ दया न उर बसी, जरों कोप के भार ॥
रेदशरथ अति रिस लगति, सुनि तेरो सुत काज।
उलटि देहुँ अबहीं अवनि, जहँ लगि तेरो राज ॥
शम्भु शरासन भंग सुनि, निर्भय सानि बरात।
ब्याहन आयो जनकपुर, जानि सदन यह बात ॥
हौं निक्षत्र कीन्हो क्षमा, पूरुब यकइस बार।
क्षमा सुरन को दै क्षमा, छांड्यो कोप अपार ॥

बहुरि देवायो मोहिं सुधि, तुव सुत तोरि पिनाक।
शम्भु शपथ करि कहत हौं, बची न भागेहु नाक॥
भयो अबहुँ नहिं भोथरी, मोर उदंड कुठार।
उपज्यो अमरप दून अब, करौं सकुल संहार॥

चौपाई।

अस सुनि परशुराम की बानी। जान्यो भूप मीच नजिकानी॥
सैनिक सकल कहन असलागे। भयो मरन अब बचब न भागे॥
तहां तुरंत सुमंत कुमारा। जाय राम सों वचन उचारा॥
कहा करत ठाढ़े सब भाई। आयो एक विप्र अनखाई॥
धरे कंध महँ घोर कुठारा। लीन्हे चाप बाण विकरारा॥
आपन नाम परशुधर भाषै। बार बार भूपति पर माषै॥
चाहत करन सैन संहारा। जानि परत अब नाहिं उबारा॥
गुरु वशिष्ठ आदिक मुनिराई। बारहिं बार कहैं समुझाई॥
नहिं मानत रोके दल ठाढ़ो। जानो परत बीर बर गाढ़ो॥
सुनत राम नेसुक मुसकाई। उतरे सिंधुर ते अतुराई॥
लषण भरत रिपुहनहिं हकारी। चले सहज धनु शायक धारी॥
पूछ्यो लषण जाय प्रभु पाहीं। परयो काह खलभल दल माहीं॥

दोहा—सुनत लषण के वचन मृदु, प्रभु बोले मुसकाय।
जानि परत धनु भंग सुनि, भृगुपति आयो धाय॥

चौपाई।

यह सुनि चले चटक सब भाई। आये जहँ भृगुकुल दिनराई॥
निरखे नरपति निपट बिहाला। खड़ो परशुधर रूप कराला॥
पिता समीप ठाढ़ भे जाई। हर्ष विषाद न कछु उर ल्याई॥
गुरुवशिष्ठ बोल्यो तब बानी। क्षमिय नाथ यह चूक महानी॥
तुव प्रसाद रघुकुल कुशलाई। क्षमा करहु गुनि बालकताई॥
जेठो राजकुँवर यह आयो। भाइन सहित सपदि शिर नायो॥

तेहि क्षण रघुपति कियो प्रणामा। तथा बंधु लै लै निज नामा ॥
राम रूप छवि राम निहारे। प्रथमहि मोहि अमर्ष बिसारे ॥
पुनि सुधि करि शंकर अपराधा। कियो राम पर कोप अगाधा ॥
युगल विलोचन किहे ललौंहैं। रामहिं तके तनक तिरछौंहैं ॥
कहन चहे कछु अनरथ बानी। पै मति गति छवि निरखि भुलानी
उरते उठति कढ़ति मुख नाहीं। मनहीं मन भृगुपति पछिताहीं ॥

दोहा–पुनि सम्हारि भृगुनाथ तहँ, ऐसो कियो बिचार।
कौन पाप को फल प्रगट, कियो दया संचार ॥

कवित्त।

करत विचारवारवारकंध धैकुठारभरोकोपभारजमदग्निकोकुमारहै।
शत्रुहैहमारयहकीन्ह्योपूरोअपकारतिनहिंविचारकरौंआसुहीसँहारहै ॥
नैन मेंनिहारतअकारहियोहारतहैरघुराजरूपकोटि मारमदमार है ॥
ज्वलतअमर्षभारपरीजनुवारिधारकैसोसुकुमारकौशलेशको कुमारहै

दोहा–मारन लायक नहिं सुवन, नरभूपण जग माहिं।
जो शरणागत होय मम, अभै करौं यहि काहि ॥
अस बिचारि भृगुनाथ करि, लै कुठार धनु हाथ।
बोल्यो बहुरि वशिष्ठ सों, तनक कँपावत माथ ॥

वित्त।

बहुरि देवायो मोहिं सुधि,
शम्भु शपथ करि कहत है
भयो अवहुँ नहिं भोथरी,
उपज्यो अमरप दून अब,

चौपाई ।

अस सुनि परशुराम की बानी । जा
सैनिक सकल कहन असलागे । भ
तहां तुरंत सुमंत कुमारा । जा
कहा करत ठाढ़े सब भाई । आ
धरे कंध महँ घोर कुठारा । लीन
आपन नाम परशुधर भाषै । बार
चाहत करन सैन संहारा । जानि
गुरु वशिष्ठ आदिक मुनिराई । बारहिं
नहिं मानत रोके दल ठाढ़ो । जानो
सुनत राम नेसुक मुसकाई । उतरे
लषण भरत रिपुहनहिं हकारी । चले
पूछ्यो लषण जाय प्रभु पाहीं । परयो

दोहा–सुनत लषण के वचन मृदु, प्र
जानि परत धनु भंग सुनि, भ

चौपाई ।

यह सुनि चले चटक सब भाई । आये
निरखे नरपति निपट विहाला । खड़ो
पिता समीप ठाढ़ भे जाई । हर्ष
गुरुवशिष्ठ बोल्यो तब बानी ।
तुव प्रसाद
जेठो

जानिहोप्रवीर तोहिं विश्व में विख्यात है।
सत्य हीं वतात अव काहे को डेरात,
पूछिलेरे निज भ्रातन सों खडो तेरो तात है॥
दोहा—सुनि भृगुपति के वैन अस, दशरथ कँप्यो डेराइ।
जोरि पाणि पीरो वदन, अति दीनता देखाय॥
धरि धरणी में शीश निज, आँखिन आँसु वहाय।
गद्गद गर वोल्यो वचन, सुनहु क्षमा उर लाय॥

चौपाई।

कीन्ह्यो क्षिति निक्षत्रि वहु वारा। राउर सुयश विदित संसारा॥
विप्र वंश भूपण भृगु रामा। करी कौन तुमसों संग्रामा॥
सुन्यो नाथ मैं कथा पुरानी। वृथा तौन मैं सकौं न मानी॥
करि निछत्र क्षिति यकइस वारा। कीन्ह्यो घोर कोप संहारा॥
करी प्रतिज्ञा वासव पाहीं। अव आयुध धरिहौं कर नाहीं॥
अस प्रण करि कश्यपहि वोलाई। दै धरणी सिगरी मन लाई॥
गये महेन्द्र शैल तप हेतू। वसे आजु लगि विरचि निकेतू॥
मम अभागि वश मुनि अपराधा। आये करन मोर कुल वाधा॥
राम राम रघुकुल कर प्राना। तेहि विन काकर लगी ठिकाना॥
भृगुकुल कमल दिवाकर आपू। शरणागतन देहु संतापू॥
सुध दूध मुख वालक जानी। क्षमहु नाथ सुत खोरि महानी॥
करन हेत मम कुल संहारा। आये कंधहि धरे कुठारा॥
दोहा—जो दासन ते होत कहुँ, छोटहुँ वड़ अपराध।
तौ समरथ करते क्षमा, जे प्रभु क्षमा अगाध॥

चौपाई।

देहु अभै मम पुत्रन काहीं। वनाति वात औरी विधि नाहीं॥
विते वर्ष प्रभु साठि हजारा। लह्यो कृपा वश चारि कुमारा॥

दीन जानि अब कृपा करीजै । सेवक सुतन अभै करि दं
जस जस दीन वदत अवधेशा । दरशावत निज कठिन कले
तस तस अमरष बढ़त राम के । गुनत अमित अपराध राम
भूप दीनता भृगुपति क्रोधू । सह्यो न लपण विचारि विरो
फरकि उठे भुजदण्ड प्रचंडा । कह्यो भरत सो वचन उदंडा
का कहिये कछु कहो न जाई । पितहि राम कहँ रहैं डेराई ।
विप्र वदत बहु बढ़ि बढ़ि बाता । सुनि सुनि उपजत क्रोध अघाता
केहि हित पिता दीन अति होहीं। यह द्विज होइ कबहुँ न छोहीं ॥
यह पूरो क्षत्री कुल द्रोही । शासन देहु अवशि अब मोही ॥
देहुँ देखाय बनाय तमाशा । पूरहुँ सकल युद्ध की आशा ॥

दोहा–लपणहि कोपित जानि कै, मंद मंद कह राम ।
विप्र वचन सहिबो सदा, यही सयानो काम ॥

कवित्त ।

जेठबंधुभीतिमानिवानिनहिंबोलैकछुकोपानलज्वालनसोंजरतशरीरहै
पीसत रदन हद कंपत अधरपुट वार वारपाणिसोंसम्हारैधनुतीरहै।
रघुराजरामानुजअतिहिअनोखोचोखोरोपोभृगुरामैभईसाहसकीपीरहै
ताकत तनक तिरछौहैं कैललौहैंनैनबाँकुरोलपणलालवीररणधीरहै॥

दोहा–परशुराम तजि राम को,चितै लपण की ओर ।
बोले बैन सरोप अति, गहे कुठार कठोर ॥

कवित्त ।

देखिये वशिष्ठयहराजकोकुमारखोटोमेरेओरदेखतअनैसेनैनकरिकारि
कबहूँ सुनीन प्रभुताईमोरिकाननेंमेंशठलरिकाईन्शरीरैधनुधरिधरि।
मोहिउपजावैकोपलोपनिजचाहैहोनचेगहीवुझावोरघुराजछोदभारिभारि
नातोकहौंआजुमेंसमानमेंपुकारिमेरेकोपकोकृशानहैहैकोटहीतोनारिनारि

दोहा–सहि न गयो तब लपण सों, लगे बैन जनु बान ।
 कह्यो वचन विहँसत वदन, सदनहि निडर मदान ॥

कवित्त।

जैसोकोपकीजैतैसोदोपनहिंमेरेजानहानिलाभकाभयोपुरानधनुतोरेते
छुवतहीं टूटयोनहिंजोरपरयोरामैनेकुअवैनानशानकछुसुरिजईजोरेते
केते तोरि डारे,धनुखेलतशिकारनमेंकवहूंनकीनऐसोकोपऔरछोरेते
रघुराज राजनकीरीतिनहिंजानोविप्रकरौकहुँजायतपजानोकेहेथोरेते

दोहा—भाष्यो भृगुपति रिसि भभकि, रे बालक मतिहीन।
बोलत वचन सम्हारि नहिं, तोहिं मीचु विधि दीन॥

कवित्त।

बालक विचारि तेरेवधकोवचायदेहुँऐसोविप्रहौंनजसजानैजड़मोहिरे।
सुने रघुराज सुत क्षत्रिन निक्षत्र कर परमकठोरमोरपरशुलेजोहि रे॥
सोच वश करेकाहेमातुपितुहूंकोआज जाययमपुरमेंबसेरोकरैमोहिरे।
ना तो कहेदेतहौंकुठारकंठदेतविनाहेतसेतमेतकाहेकालकौरहोहिरे॥

दोहा—अति गर्वित भृगुपति वचन, सुनत लषण मुसक्याय।
कहे वचन जनु अनल महँ, घृत आहुति परिजाय॥

कवित्त।

जानी हमजानीविप्रतूतोवीरमानीवड़ेफरसोउठायकेदेखावोवारवारहे।
अब रघुवंशिन के रणमेंनदेखेमुखफूंकि कै उड़ावनतूंचहत पहारहे॥
मारिमारिछोटेक्षत्रीबाढयोगर्वगाढ़ेतोहिंभयोभरभेटानाहिंवीरवलवारहे
जादिननिक्षत्रकीन्ह्योरामशितिमंडलमेंतादिनरह्योनरामचन्द्रअवतारहे

दोहा—जो तू यक इसवार छिति, कियो क्षत्रि बिन विप्र।
तौ वाइसहूं वार अब, करै न काहे छिप्र॥

कवित्त।

जपतपयोग याग यम हूं नियमव्रत ब्रह्मचर्य्यशमदम विप्र धर्म होइरे।
छोड़िनिजधर्मधर्योछत्रिनकोधर्मधनुवाणफरसीकोधारिआयोकोपमोइरे
होंतौरघुराजसुतब्राह्मणविचारिवचोनातौपुनिचीन्हनपैरोमुखधोइरे।
विप्रवध अघनालगावैमोहिं वारे मुख डरैंरघुवंशी नाहिंकालहूंकोजोइरे

दोहा--भृगुपति सों लषणहिंजुरत, अति अनरथ उर जानि ।
सैनानि बरज्यो भूपमणि, क्षत्रि धर्म पहिचानि ॥
शत्रुशाल तब लषणसों, कह्यो वचन करजोरि ।
मैं तोषौं रण विप्र को, यही अरज है मोरि ॥

कवित्त ।

बोल्यो भृगुनाथ कौन तूहै शत्रुशाल अहौं,
काको पुत्र हैरे अवधेश को कुमार हौं ।
तू है राम छोटो बंधु हौं तौ रामचन्द्र दास,
काहै तेरे मन में तौ युद्धको तयार हौं ॥
काहे काल आयो कहो काल कोबोलायो कौन,
मेरे कर काल मैंही काल के अकार हौं ।
भाजै रे समाज छोड़ि कैसे रघुराज भाजै,
डरै नहिं मोहिं कहा जाति को गँवार हौं ॥
दोहा--सरल वाणि बोले भरत, सुनहुं विप्र शिरताज ।
तुम दोऊ मानहुं कहो, होइ न कछुक अकाज ॥

कवित्त ।

विप्रन को दान दीबो पदरज लीबो,
शिर छत्रिन को धर्म वेद कहै इतनोई है ।
ताते जौनकहौ सेवकाई करैं रावरे की,
आपहू क्षमा कै जाहु सुयश बड़ोई है ॥
चलत अधर्म पथ कबहूं न रघुराज,
दोऊ विधि हानिहीं हमारी परेजोई है ।
हारे अपकीरति है मारे हाठि पाप लागी,
जाहु राम युद्धको करैया नहिं कोई है ॥
हाथजोरि माथनाइ भाषों भृगुनाथ सुनो,

द्विज सो न मोरेकुल होती शूरताई है।
देखि के कुठार धनु बाण पाणि रावरे के,
लपण कह्यो सो क्षमो जानि लरिकाई है॥
तेहि को अनुज शत्रुशाल कछु जाने नाहिं,
छमाकीबो बाल चूक पूरी साधुताई है।
रघुराज हमहूं हमारेपिता दास तेरे,
विप्र इष्टदेव मोहिं धर्मकी दोहाई है॥

दोहा—नाथ तुम्हारे वचनहीं, हमको वज्र हजार।
वृथा बाँधिआये धनुष, शायक खड्ग कुठार॥

कवित्त।

भरतभनीकोसुनिभृगुपतिभाष्योअसवरजौवशिष्टराजपुत्रनकोकाहेना।
भानुवंशकेकलंकबोलतनिशंकवैनहोतकालअंककफेरिवाँचिहेजू चाहेना।
शुनिरघुराजकुलतेरहीसकोचकछू देतोनरकाय कछुदयाकेउमाहेना।
यातोकहैंमीठेवैनढीठेदोउबंधुयाकेबोलतकटुकचलसिंधुममथाहेना॥

दोहा—कह वशिष्ठ भृगुनाथ सुनु, कीजे क्षमा अगाधु।
बाल दोष गुण गहत नहिं, ज्ञानवान जे साधु॥
कह्यो राम रघुकुल गुरू, कहि प्रताप बल मोर॥
वेगि बुझावहु बालकन, टारहु औरे ठोर॥
नातो कहत पुकारि मैं, दिह्यो न मेरो दोष।
चाहत चलन कुठार अब, निकरि जई सब रोष॥

कवित्त।

बहुरिलषणबोल्योसुयशतिहारोसिप्रतुमसेनअधिकनहिंदूसरोकहैयाहै।
कहतअघानेजोनहोहुपुनिभाषोखूबरवनातिहारीकहोकोनरोकनेयाहै
भाटहीसोभाषोनव [illegible] नातोनहिंरहैफेरिकोरातिगनैयाहै
तेनभभारिभगैयाहै॥

दोहा–यह अचरज कवते भयो, तिहरोचाकर काल।
जहँ चाहौ तहँ भेजि के, वीरन करौ विहाल॥
लपण वचन सुनि परशु धर, धर्यो परशु कर घोर।
कह्यो पुकारि उठाय भुज, दोष नहीं अब मोर॥
धरत परशु धरके परशु, शत्रुशाल धनु धारि।
बढ़ि आगे बोल्यो वचन, रिस वश सुरति विसारि॥
सोरठा–अब विलंब केहि काम, करहु जो करतव होइ कछु।
परशु उठत यहि ठाम, रही न भुज भुज मूल ते॥

सवैया।

दीन्ह्यो बचाइ विचारि कै विप्र लिहे कुलहराकर सांस न लेहूं।
मारिकै क्षुद्रन क्षत्रिन को अबै विप्र भरो तुव दर्प है देहूं॥
गाढ़ो पर्यो कबहूं नहिं संगर बाढ़ अबै द्विजदेव हौं गेहूं।
आयजुरे रघुराज सों धोखे बचौगे नहीं शिवलोक बसेहूं॥

दोहा–इत पाछे करि राम को, ठाढ़े तीनहुँ बंधु।
परशुराम ठाढ़े उतै, धरे परशु निज कंधु॥
जानि युद्ध जिय होत तहँ, भूपहु ब्रह्म कुमार।
खडे भये तव बीच में, कीन्हे वचन उचार॥
मेरे आगे मोर सुत, हतौ न भृगुकुल भान।
मोहिं मारि पुनि कीजिये, जो कछु तुव अनुमान॥

सवैया।

बोल्यो वशिष्ठ सुनो भृगुनायक आप तो दीह दया उरछाइये।
जो लरिका लरिकाई करे तो क्षमा करिकै मन ते बिसराइये॥
श्रीरघुराज खड़े शरणागत आसु अभै करिकै अपनाइये।
आप क्षमा से क्षमाधर हैं नहिं बालक बातन में चित ल्याइये॥

दोहा–सुनि वशिष्ठमुनि के वचन, तनक जुड़ाने राम।

पुनि लपणहि विहँसत निरखि, भये कोप के धाम ॥

सवैया ।

राम कह्यो रघुराजहि देखि कै आगे खड़ो गुरुद्रोही हमारो ।
भाइन के वल दर्प भरो यह भीतर वाहेरहूं अतिकारो ॥
कै पितु को वछियासम आगे अहै घतमें चहै घात हमारो ।
तौ लौं नहीं उऋणे गुरु को जवलौं नहिं देत हौं कंठ कुठारो ॥
लक्ष्मण वोल्यो ततक्षणहीं पितुको उऋणै भये अर्जुन मारी ।
फेरिकै हाथे हमारेई माथे लियो ऋण कासों कहौ तो उचारी ॥
लेहु अवै हम खोलेखजाने विलंव करो कत जो वलभारी ।
हैं करजी के नहीं गरजी रघुराज यही अरजी हैं हमारी ॥

दोहा–लपण वचन सुनि कटुक द्विज, कंधहि धरयो कुठार ।
द्विजगण मुनिगण तहँ सकल, कीन्हे हाहाकार ॥
लपण उतर आहुति सरिस, भृगुपति कोप कृशानु ।
सलिल सरिस वोल्यो वचन, वढ़ि कछु रघुकुल भानु ॥

सवैया ।

रावरे के अपराधी हवैं नहिं वंधु कियो धनुभंग तिहारो ।
दीजे यथोचित दंड उदंडन होत जो ठंढ है कोप अपारो ॥
हैं रघुराज न जानत हैं छल और कछू नहिं कीजे विचारो ।
आप तौ पाणि कुठार लिये प्रभु आगेधरो यह शीश हमारो ॥
मैं तुव सेवक हौं मुनिनायक कोप को काम कछू नहिं जाने ।
क्रोध हरै मति क्रोध हरै तप क्रोधहीं पाप को मूल वखाने ॥
ये सिगरे शिशु जानैं नहीं कछु रावरी देव वरावरी माने ।
वैठो इतै करसों चहौं मींजन ठाढ़े रहे वहु पाउँ पिराने ॥

दोहा–जो वोलाय कोऊ गुणी, ज्यरवाऊं धनु आज ।
तौ तो कछु अपराध नहिं, क्षमा करहु भृगुराज ॥

चौपाई ।

निग्रह और अनुग्रह दोऊ । सेवक पर करते सब कोऊ ॥
नहिं मम बंधुनकर अपराधा । देहु दंड मोहिं जो कछु साधा ॥
भरत लषण रिपुहन ये तीना । मोर बंधु अपराध न कीना ॥
करहु बंधवध मोपर स्वामी । मैं तुम्हार सेवक अनुगामी ॥
कहहु करहुँ मैं जेहि रिस जाई । तुम समरथ सब विधि भृगुराई ॥
सुनत रामके वचन सोहाये । भृगुपति नेसुक मनहि जुड़ाये ॥
साधु साधु द्विज मुनिजन भाषे । उत्तर देत राम जय राषे ॥
मुनिबोले तहँ दशरथ राऊ । राम राम यह सरल स्वभाऊ ॥
दया न आवति सुनि अस बानी । क्षमहु नाथ जो होइ नशानी ॥
रघुकुल कर रघुनाथ अधारा । तुम्हरे कीन्हे होत उबारा ॥
सप्तद्वीप नवखंड अखंडा । सँचिहु शासन मोर प्रचंडा ॥
सो सब द्विज सेवन प्रभुताई । नहिं भुजबल वश हम कहुँ पाई ॥

दोहा—सुनि दशरथ के वचन मृदु, दै अनाकनी राम ।
बोले रघुपति सों वचन, सुनहु राम अभिराम ॥

चौपाई ।

बिशुकरमा युग धनुप बनाये । अतिउत्तम देवन दरशाये
पूजित भये भुवन दोउ चापा । अतिदृढ़ रिपु दायकसंतापा
सके चढ़ाय चाप नहिं दोऊ । हारे बल करिकै सब कोऊ
तेहि अवसर त्रिपुरासुर वीरा । भयो दैत्य अतिशय बरजोरा
दीन्ह्यो देवन महाकलेशा । गयेदेव सब जहांमहेशा
हर कहँ आरत वचन सुनाये । बचैं तुम्हारे देव बचाये ।
कह शितकंठ कोदंड न मोरे । हनौं कौनविधि रिपु बरजोरे ।
वह धनुप देव सब दीन्हे । जौन राम तुम खंडन कीन्हे ।
द्वितिय विष्णु कर चापा । नाम तासु शारंगहि थापा ॥

दियो जो शिवकह नाम पिनाका । उभै समान विदित सब नाका ॥
लैपिनाक हर त्रिपुर सँहारे । हरिहु अनेकन दानव मारे ॥
जेहि विधि मिल्यो सारँगो मोहीं । सो बुझाइहौं पाछे तोहीं ॥

दोहा–मैं बाँधे सोई धनुष, जासु नाम शारंग ।
जेहि विधि गयो पिनाक उत, सो सुनु कथा प्रसंग ॥

चौपाई ।

हरि हर युगुल देव बलवाना । विक्रम ओज प्रभाव समाना ॥
आपुसमहँ सब सुर बतराहीं । कौन बली दोउ देवन माहीं ॥
कोऊ करै महेश बड़ाई । कोऊ कहै विष्णु अधिकाई ॥
लरें देव निश्चय नहिं होई । गये पितामह पहँ सब कोई ॥
कहे पितामह सों अस बानी । हरि हर महँ केहिअधिक बखानी॥
अभिप्राय देवन की जानी । नहिं निश्चय कछु मन अनुमानी॥
जाय शंभु सो कह करतारा । दानव त्रिपुर कहौ केहि मारा ॥
विष्णु कहैं हमशर ह्वै लागे । मरे तबहिं खल त्रिपुर अभागे ॥
शंभु कह्यो शरबिना चलाये । काके लग्यो जाय कारे घाये ॥
विधि पुनि बहुरि विष्णु पहँआयो । कहै त्रिपुर सों को जयपायो ॥
विष्णु कह्यो हम त्रिपुर विदारे । मृषा शंभु निज विजय उचारे ॥
यहि विधि विधि उपजाय विरोधू । चह्यो लड़ावन कियो न बोधू ॥

दोहा–विष्णु कहत त्रिपुरासुरहि, हममारे ह्वै बान ।
मरयो त्रिपुर हमरे बलहि, अस भाषत ईशान ॥

चौपाई ।

भयो विरोध क्रोध वश दोऊ । हरि हर लरें लखें सब कोऊ ॥
मच्यो विष्णु शंकर संग्रामा । महाभयंकर दिन वसु यामा ॥
निजनिजविजय आस दोउ कीन्हे । मानहुँ जगत जारि दोउ दीन्हे ॥
माच्यो त्रिभुवन हाहाकारा । मनु संसार होत संहारा ॥

चौपाई।

निग्रह और अनुग्रह दोऊ। सेवक पर करते सब कोऊ
नहिं मम बंधुनकर अपराधा। देहु दंड मोहिं जो कछु साधा
भरत लषण रिपुहन ये तीना। मोर बंधु अपराध न कीना
करहु बंधवध मोपर स्वामी। मैं तुम्हार सेवक अनुगामी
कहहु करहुँ मैं जेहि रिस जाई। तुम समरथ सब विधि भृगुराई।
सुनत रामके वचन सोहाये। भृगुपति नेसुक मनहि जुड़ाये॥
साधु साधु द्विज मुनिजन भाषे। उत्तर देत राम जय राषे॥
पुनिबोले तहँ दशरथ राऊ। राम राम यह सरल स्वभाऊ॥
दया न आवति सुनि अस बानी। क्षमहु नाथ जो होइ नशानी॥
रघुकुल कर रघुनाथ अधारा। तुम्हरे कीन्हे होत उबारा॥
सप्तद्वीप नवखंड अखंडा। सौंचेहु शासन मोर प्रचंडा॥
सो सब द्विज सेवन प्रभुताई। नहिं भुजबल वश हम कहुँ पाई॥

दोहा–सुनि दशरथ के वचन मृदु, दै अनाकनी राम।
बोले रघुपति सों वचन, सुनहु राम अभिराम॥

चौपाई।

विशुकरमा युग धनुप बनाये। अतिउत्तम देवन दरशाये॥
पूजित भये भुवन दोउ चापा। अतिदृढ़ रिपु दायकसंतापा
सके चढ़ाय चाप नहिं दोऊ। हारे बल करिकै सब कोऊ
तेहि अवसर त्रिपुरासुर घोरा। भयो दैत्य अतिशय ब[illegible]
दीन्ह्यो देवन महाकलेशा। गयेदेव सब जहांमहे[illegible]
हर कहँ आरत वचन सुनाये। बचैं तुम्हारे देव बचा[illegible]
कह शितकंठ कोदंड न मोरे। हनौं कौनविधि रिपु [illegible]
तब वह धनुप देव सब दीन्हे। जौन राम तुम खंडन [illegible]
दीन्हे द्वितिय विष्णु कर चापा। नाम तासु शारंगहि थापा

छितिमंडल दीन्ह्यो सकल, कश्यप को करि दान ॥
पुनि महेन्द्र गिरि को गयो, तहँ तप कियो अभंग।
आयो आसुहि कुपित अब, सुनि पिनाक कर भङ्ग ॥

घनाक्षरी।

तातेकहौंसत्यरामभेरोनहिंदूजोकामपितापितामहतेकोदंडयहमेरोहै।
लीजियेधनुपशरसाजियेचढ़ायगुनहोइजोघमंड भुजदंडवलढेरो है ॥
विक्रम विलोकिरावरेको रघुराजहमशस्त्रलैउछाहसोविसारिअवसेरोहै ॥
छोड़िछलछंदशुद्धवीरताअनंदपुनिद्वंद्वयुद्धहोइगोहमारोअरु तेरो है॥

दोहा-प्राण पियारे राम को, परशुराम के संग।
द्वंद्व युद्ध तहँ होत गुनि, दशरथ भयो विसंग ॥

कवित्त।

भरत दरतरद कोपत्योंकरतहदवोल्यो भृगुनाथसोंनऐसोहोनपावैगो।
रामवंधु ठाढ़ेतीन बाँकुरे समरगाढ़ेयुद्धकेउछाहबाढ़ेजासोंभलभावैगो
तासोंयुद्धकीजैनिजवलदेखरायदीजैलीजैसोखमानिएकैयुद्धहेतआवैगो।
जिअतहमारेतीनौंभाइनकेरघुराजरामहीकीसौंहकौनरामसौंहजावैगो।

दोहा-लपणलालरिपुशाल दोउ, गहि गहि कर कोदंड।
तमकि तमकि ठाढ़े भये, महावीर वरिवंड ॥

कवित्त।

जोरिहाथमाथनायलपणउचार्योवैनभलीभृगुनाथकहीसवनिरधारौंगो
मोहिकोरजायदेहुकौतुकविलोकिलेहुकरौंनहिंनेहुहौंतोविप्रतनहारौंगो
जातिरघुवंशीकीकहाइरामदासवंधुरघुराजआजमृपावानीनाउचारौंगो
छीनिकेकोदंडतोरिदंडज्योंअरंडहीकोद्वंद्वयुद्धदैकैद्विजदर्पकोउतारौं गो

दोहा-वढ़त लपण कहँ जानि प्रभु, सैननि वंधु नेवारि।
भृगुनायक सों कहत भे, मनहुँ अनल महँ वारि ॥

सवैया।

सेवक स्वामि को संगर होत न वालक जानें कहा चतुराई।

तवहि विष्णु कीन्ह्यो हुंकारा। शंभु धनुप जड़ भयो
भये अचल शंकर रणमाहीं। चलो चलायो चापहु
देवन सहित तहाँ करतारा। ठाढ़ भयो दोउ देव मझ
विधि सुर संयुत अस्तुति कीन्हे। दोउकर कोप शांत करि
हर थंभित भे हरिहुंकारा। भयो शम्भु धनु जड़हु
तब विधि सुर ऋपि कहे हुलासी। शिव ते वली बिकुंठ बिलासी
शम्भु विष्णु गे निज निज लोका। भये देव सब परम अशोका
रणमहँ जडता तासु निहारी। भे उदास धनु महँ त्रिपुरारी

दोहा—देवरात मिथिला नृपति, रह्यो राजऋपि सोइ।
ताहि बोलाय महेश दिय, महा धनुप जड जोइ॥

चौपाई।

देवरात सों कह्यो पुरारी। थाती धरहु नरेश हमारी।
जब यांचव दीन्ह्यो तुम तवहीं। येकर कारज अहै न अबहीं।
विष्णु सुन्यो शिव धनु दै डारा। भृगुकुल कमल रिचीक हँकारा।
सोइं धनुप दियो धरि थाती। मुनि रिचीक को गुनिरिपु घाती
कह्यो जबै माँगें तब देहू। नहिं करियो कछु मुनि संदेहू।
अहै रिचीक पितामह मोरा। भो जमदग्नि तासु पुनि छोरा।
जनक मोर जानहु तेहि रामा। भयो भुवन महँ अति
दियो रिचीक ताहि धनु सोई। त्रिभुवन विजै करन बल
शस्त्र छोड़ि लै पितु संन्यासा। बैठ्यो आश्रम तजि सब
बरबस हर्यो सहस भुज गाई। मैंहूं आय खबरि जब
काट्यो अर्जुन के भुज शीशा। तासु सहस दश पुत्र
मरे वैर पिता कहँ मारे। तब हम दशा हज
गयो न गदि पितु वध कर कोपा। यकइस बार कियो

दोहा—मैं कश्यप को बोलि पुनि, कीन्ह्यो यज्ञ

टढ़ोजानिशंकामानिचौथचन्द्रमाकोराहुग्रसैनहिंधावैपर्वपूरण निहारिकै
देखियोहमारोविप्रविक्रमविदितविश्वअवलौंबचायोवूढोब्राह्मणविचारिकै

दोहा—विप्रवंशप्रभुता प्रगट, लोकहु वेदन माहिं।
अभै होत तेई अवशि, जेहिं द्विज देखि डेराहिं ॥

कवित्त।

विप्र ज़ानि जोपै रावरे की नहिं भीति मानै,
तौ तो विश्व वीर कौन जाको जोहि डरिहैं।
क्षत्रीकुल जन्म पाय चाप कर ल्याय रघु,
वंशी कहवाय कालहू सों धाय लरिहैं ॥
तुमहिं न मूझै कछु रघुराज वूझो हमैं,
समर डेरानो ताहि शूर न उचरि हैं।
भूधर टरैंगे ध्रुव धाम ते टरैंगे धरिणी हूँ,
टरिजाय भले हम नहिं टरिहैं ॥
विप्र मानि अवलों मनायों शिर नायों तोहिं,
क्षमा नहिं कीन्ह्यो जौन भयो अपकारो है।
लषण भरत शत्रुशाल कोनिवारयो हम,
नातो देखिलेते बलदर्प जो तिहारो है ॥
हम रघुराज हैं न देव द्विजराज जानो,
सुनो जोनहोई सत्य काज सो हमारो है।
राजन समाज गर्व गारि त्रिपुरारि जूको,
चाप तूरि डारो हम चाप तूरि डारो है ॥
करै जोन भावै तोहि अब न बचाय राखै,
केते क्षिति क्षत्री हीन धारिकै कुठार है,
देते पुनि कश्यप को भूमि यज्ञ दक्षिणा में,
पितु को उऋणह्वै लै करिकै विचारि है ॥

वीर को वेष विलोकि कै रावरो वारहि वार करैं अतुराई ।
जो कछुशासन दीन्ह्यो हमैं सो धरचों शिर में सब काज [illegible]
आपहू कीजै क्षमा क्षमादेव करै रघुराज सदा सेवकाई ॥
बोले प्रकोपित ह्वै भृगुनंदन रेरघुनंदन तै छलछाई ।
भाइन को वरजै न उतै अरजै इत मोसे करै मुसक्याई ॥
वाम है तेहूं यथा तुव वंधु करै किन आँखिन ओटहि भाई ।
नाहि तौ देत हौं कंठ कुठार वच्यो अवलौं गुनि बालकताई ॥

दोहा–बोले सहजहि लषण तव, नेसुक मुख मुसकाइ ।
मूँदहु आँखी विप्रवर, कतहुँ कोऊ नहिं आइ ॥
तव रघुपति कह लषण को, नेसुक नयन तरेरि ।
ठाढ़ होहु कहुँ अंत चलि, कहहु कटुक हर वेरि ॥
लषण ठाढ़ भे हटि कछुक, खड़े भरत जेहि ठाम ।
राम कह्यो तव राम सों, वचन वाण इव वाम ॥

कवित्त ।

टोरिमेरेगुरुकोकोदंडतूघमंडभरिभाइनभरोसेनहिंभीतिमेरीआनत
मीठेमीठेवैनवोलिदेतमोहिंधोखोधूत आपनेकोजगतसपूतजनुमान
मोरधनुतोरनाचढ़ायोचढ़ैरघुराज काहेकोकरतअसवोरतागुमानतो
तानतोधनुपतौवखानतोजगतमोहिंजानतोसोमानतोनमानतोसोजानत

दोहा–द्वंद्व युद्ध दे मोहि अव, करि प्रसन्न रण माहिं ।
जहँ चाहे तहँ जाय पुनि, मोर देत कछु नाहिं ॥
नाहिं तं नहि तेरो पिता, नहिं तेरे कोउ वंधु ।
नहि तेरो गुरु वाचिहै, लखे कुठारहि कंधु ॥

कवित्त ।

टेतगुरुनामरामभोहिभईवामअति [illegible] लघामअवकदियो सँभारिकै
टपन [illegible] पइनकोहमारोगुनिभे [illegible] नमानिहमहूँभनेप्रचारिके ।

दोहा–हम क्षत्री तुम विप्र हो, ताते देत बचाय।
नातो यहि छण यमपुरे, देतो तुरत पठाय ॥

कवित्त।

देखि राम रूप साजे शायक प्रचंड धनु,
भयो भृगुराम बिना विष को भुजंग है।
ह्वै गो तेजहीन अतिदीन त्यो मलीन मुख,
छीनि ज्यो क्षितीश क्षितिदर्प भयो भङ्ग है ॥
मान्यो अतिशंक दुति बासर मयंक कैसी,
कम्पत शरीर करै कौन अब जंग है।
देखि दिनराज रघुराज को बढ़त तेज,
दीपसी बुझानी रणरंग की उमंग है ॥
छूटि परयो करते कठोर सो कुठार तहां,
शीरीभई अनख सुपीरी मुख झाय गे।
मंद मंद हेरै नैन बोलि नहिंआवै बैन,
हिय हहरानो हठि दुव्वहूं हेराय गे ॥
रघुराज बांकुरो समर रघुबीर बल,
भानु के उअत सान सूरसी सुखायगे।
क्षितिकी निक्षत्रताई कीरति कमाई जौन,
राम बीरताई बारिबुल्ला सी बिलाय गे ॥
द्वन्द्व युद्ध जानि देव चढ़िकै विमान दौरि,
आये आसमान करि आगे करतार को।
मर्कत महीधर सों अचल निहारि खड़े,
साजे धनु तीर बीर कौशल कुमार को ॥
कहा करो चाहैं रघुराज रघुराज आज,
जके सब जोहैं कछु आवै ना बिचार को।

कैसेकै निक्षत्रि क्षिति होत जौपै क्षत्रो होत,
गोय निज खोरि मेरो कहै अपकार है ।
काट्यो जो गणेश दंत ताको सुम जोरि देहु,
टूटो तौं पिनाक हम जोरिहैं अवार है ॥
दोहा—मोहीं गुरु द्रोही कहत, तोहीं कहत न कोय ।
काटि दन्त गुरु सुअन को, यशी जगत में होय ॥
आये चढ़ि रण करन को, बीर बापुरे मारि ।
पर्‍यो न गाढ़ो समर कहुँ, अब तो परी निहारि ॥

कवित्त ।

ऐसोभाषिमाषिरामरामहाथहीसोचापशायकछड़ायअतिचटकचल
चंचलासोंचमक्योचहूँघाचौंधभर्‍योचखभयसबचकितचितैअचर्यआ
खैंचतमें ऐंचतमेंचपलचढ़ावतमेंबाणकेलगावतनकाहूकोदेखायो है
देखिरघुराजकाजभृगुकुलदिनराजठाढ़ोसोथकोसोजकोबदनसु
गहत सारंगहाथतहांभृगुनाथजूकोदेखिपरेरघुनाथरूपमहाकाल
कंप भयोहियमेंसशंकिगयोएकबारदियोतजिदर्पदेखिदशरथल
तेजहीनश्रीहतअतीवदीनदेखोपर्‍योछोड़िदियोकरतेकुठारविक
ज्योहंसबंशहंसदिनहिमकरहीसो हालह्वैगयोहैजमदग्निजूकेबा
ऐंचतधनुपभृगुनाथजूकेहाथहीसोंखैंचिकैचढ़ावतमेंसाजतमेंबा
ठाढ़सबैसैनवारेकोईनानिहारेबीरधोखोअसह्वैगयोमुनीशकोपम
दामिनि सी दमकदिगंतनमेंछायगईआयगईहारभृगुकुल के प्र
थकोसोजकोसोदबकोसोभयोभृगुनाथदेखिरघुनाथतेजश्रीपमब
साज्योहैशरासनमेंशायकअनलपुंजबोलेरघुनायकप्रकोपिच्योि
खड्गलैकुठारलैविचारतो तुम्हारहायविक्रमदेखाओजैसीमतिहु
[illegible] वसुंधराविचार्‍योविप्रक्षिप्रक्षत्रिबलकोविलोकैबं
[illegible] पाविश्वामित्रनातोमानित्यागतोनतीरजोकरैयप्रा

दोहा-हम क्षत्री तुम विप्र हो, ताते देत बचाय।
नातो यहि छण यमपुरै, देतो तुरत पठाय॥

कवित्त।

देखि राम रूप साजे शायक प्रचंड धनु,
भयो भृगुराम विना विष को भुजंग है।
ह्वै गो तेजहीन अतिदीन त्यो मलीन मुख,
छीनि ज्यो क्षितीश क्षितिदर्प भयो भङ्ग है॥
मान्यो अतिशंक दुति वासर मयंक कैसी,
कम्पत शरीर करै कौन अब जंग है।
देखि दिनराज रघुराज को बढ़त तेज,
दीपसी बुझानी रणरंग की उमंग है॥
छूटि पर्‌यो करते कठोर सो कुठार तहां,
शीरीभई अनख सुपीरी मुख झाय गे।
मंद मंद हेरै नैन बोलि नहिंआवै वैन,
हिय हहरानो हठि हुव्वहूं हेराय गे॥
रघुराज बांकुरो समर रघुवीर बल,
भानु के उअत सान सूरसी सुखायगे।
क्षितिकी निक्षत्रताई कीरति कमाई जौन,
राम वीरताई वारिबुल्ला सी बिलाय गे॥
द्वन्द्व युद्ध जानि देव चढ़िकै विमान दौरि,
आये आसमान करि आगे करतार को।
मर्कत महीधर सो अचल निहारि खड़े,
साजे धनु तीर वीर कौशल कुमार को॥
कहा करो चाहै रघुराज रघुराज आज,
जके सब जोहैं कछु आवै ना विचार को।

सिंहके समीप जैसे सुरभी सकानी त्यो,
बिलोके बीरमानी जमदग्नि जू के बार को ॥

दोहा–भयो जगत जड़ इव सकल, नेसुककोपत राम
सर्व यक्ष गन्धर्व सुर, भयभभरे तेहि याम ॥

चौपाई ।

धनु शायक साजे रघुबीरा । बोल्यो वचन मंजु रण
बिप्र बिचारि बचायो तोहीं । देखत दया लागि अति
पै यह वैष्णव धनुको शायक । कबहुँ न मोघ होन के लाय
सहसन पर पुर जीतनवारो । वृथा न जैहै बाण हमार
उभै लोक गति तप करि पाई । जौन कहौ सो देहुँ नशाइ
इतना कहत वचन तेहि काला । राम रूप तहँ भयो कराल
परशुराम तहँ रह्यो निहारी । बपुष बिराट देखायो भारी
अगणित बिधि हर शक्र धनेशा । अगणित यम बहु रूप जलेश
रोम रोम प्रति अंड कटाहा । देखि परे रघुपति तन माह
अगणित अवनि समुद्र अनेका । द्वीप खंड सब सहित
लोक लोकपति देव अपारा । देखि पर्‌यो बहु बिधि
पशु पक्षी अरु कीट पतंगा । सुर नर मुनिवंदुव व

दोहा–चौदह भुवन अनेक बिधि, देखे राम शरीर ।

मास भयो महा अपराधा । प्रभु माया कीन्ही मोंहिं बाधा ॥
अस विचारि भय मानि मुनीशा। गिरयो दंड सम करि पद शीशा॥
पुनि उठि जोरि पाणि भृगुराई । ठाढ़ो कछु न सकै मुख गाई ॥
देखत रघुपति रूप बिराटा । भाँति अनेकन अद्भुत ठाटा ॥
प्रभु बिराट वपु किय संहारा । परशुराम तब वचन उचारा ॥
पाहि पाहि त्रिभुवन के स्वामी । मैं द्विज दीन सदा अनुगामी ॥
पौरुष विक्रम तेज हमारा । नाथ सकल सो अहै तुम्हारा ॥

दोहा–क्षमासिंधु अब क्षमहु सब, भयो जो कछु अपराध ।
मैं सेवक हौं रावरो, कियो उपाधि अगाध ॥
अस कहि प्रेमाकुलित द्विज, बहत नैन जलधार ।
पुलकित तन गद्गद गरो, करि नहिं सक्यो उचार ॥

चौपाई।

धन्य भाग पुनि आपन मानी । मिले मोंहिं प्रभु सारँगपानी ॥
सहज रूप लखि बढ़्यो उछाहू । नलिन नैन सुंदर युग बाहू ॥
श्याम शरीर मनोहर अंगा । मरकत मणि दुति उठै तरंगा ॥
मंद मंद रघुनन्दन काहीं । करि वंदन मुनि कह्यो तहाँहीं ॥
मैं निक्षत्र जब क्षिति करिलीन्ही । बोलि तुरत कश्यप कहँ दीन्ही॥
कश्यप कह्यो वचन हम काहीं । बसियो नहिं हमरी महि माहीं ॥
हमहुँ प्रतिज्ञा तहँ अस कीन्ही । नहिं बसिहौं जहँ लगिमहि दीन्ही
तबमैं गयो महोदधि पाहीं । माँग्यो थलनिज निवसन काहीं॥
बूड़ो रह्यो जहां लगि वारी । दियो महोदधि शैल उघारी ॥
तब महेन्द्रगिरि कुटी बनाई । कियो वास अबलों रघुराई ॥
ताते करिकै कृपा कृपाला । हनहु स्वर्ग गति मोरि विशाला॥
तपकरि त्रिभुवन की गति पाई । सो तिहरे पद देत चढ़ाई ॥

सिंहके समीप जैसे सुरभी सकानी त्यो,
बिलोके वीरमानी जमदग्नि जू के वार को ॥

दोहा-भयो जगत जड़ इव सकल, नेसुककोपत राम।
सर्व यज्ञ गन्धर्व सुर, भयभभरे तेहि याम ॥

चौपाई।

धनु शायक साजे रघुवीरा। बोल्यो वचन मंजु
विप्र विचारि बचायो तोहीं। देखत दया लागि अति
पै यह वैष्णव धनुको शायक। कबहुँ न मोघ होन के
सहसन पर पुर जीतनवारो। वृथा न जैहै बाण हमारो
उभै लोक गति तप करि पाई। जौन कहौ सो देहुँ नशाई
इतना कहत वचन तेहि काला। राम रूप तहँ भयो कराला।
परशुराम तहँ रह्यो निहारी। वपुष विराट देखायो भारी।
अगणित विधि हर शक्र धनेशा। अगणित यम बहु रूप जलेशा।
रोम रोम प्रति अंड कटाहा। देखि परे रघुपति तन माहा।
अगणित अवनि समुद्र अनेका। द्वीप खंड सब सहित विवेका।
लोक लोकपति देव अपारा। देखि पर्‌यो बहु विधि संसारा।
पशु पक्षी अरु कीट पतंगा। सुर नर मुनिसंयुत सब अंगा।

दोहा-चौदह भुवन अनेक विधि, देखे राम शरीर।
एक परशुधर अरु लख्यो, गुरु वशिष्ठ मतिधीर ॥

चौपाई।

तेहि क्षण वैष्णव तेज विशाला। भृगुपति तन ते कढ़्यो
राम रूप महँ गयो समाई। औरेन कहँ नहिं पर्‌यो
चारण सिद्ध यक्ष गंधर्वा। देव दैत्य ठाढ़े जे
प्रभु कौतुक कछु पर्‌यो न जानी। बहु विधि रहे मनहिं
परशुराम कहँ उपज्यो ज्ञाना। सत्य सत्य रघुपति

हरन हेत अवनी कर भारा। कोशल नगर लीन अवतारा॥
दीन्ह्यो मोहिं प्राण कर दाना। होइ तुम्हार सदा कल्याना॥
विधि शिव इन्द्र आदि सब देवा। ठाढ़े लखत न जानत भेवा॥
अधिक समान रहित रघुवीरा। व्यापक विश्व महा रणधीरा॥
प्रतिद्वन्द्वी नहिं कोउ रण माहीं। मैं मतिमंद विचारयो नाहीं॥

दोहा—त्रिभुवन नायक आपसों, नहिं हारे की लाज।
अति कृपाल समरथ सबल, संत सुहृद रघुराज॥

चौपाई।

अब नहिं करहु विलंब दयाला। तजहु अमोघ बाण बिकराला॥
सुमिरत तुव पद कमल तुरन्ता। जाय महेन्द्र गिरीश अनन्ता॥
सुमिरण करिहौं तुमहिं गोसाईं। मोर शरीर रहो जवताईं॥
जेहि जेहि योनि कर्म वश जाऊँ। तहँ तहँ अमल कमल पद ध्याऊँ
जनि विसारियो त्रिभुवन सांई। पाल्यो कमठ अंड की नांई॥
दीन हीन गुण महा मलीना। मोहिं सनाथ रघुनायक कीना॥
अस कहि रह्यो चरण लपटाई। जय कृपाल कोमल रघुराई॥
भृगुपति वचन सुनत रघुनायक। लागी दया तज्यो निज शायक॥
हनी स्वर्ग गति भृगुपति केरी। दीन जानि किय कृपा घनेरी॥
को दयालु रघुपति सम आना। विप्रहि दियो प्राण कर दाना॥
पुनि प्रभु परशुराम पद परसे। बोले वचन सुधा जनु बरसे॥
मोरे पर करियो द्विज दाया। मेरी कुशल तुम्हारी छाया॥

दोहा—सुनि रघुपति के वैन अस, भृगुपति नाचन लाग।
गावत मुख माधव सुयश, भरो भूरि अनुराग॥

छंद दंकड।

सर्वपर सर्वहत सर्वगत सर्वरत सर्वमत पूज्य आनंदकारी।
अखिलनायकअमलअखिलदायकसुयशअखिलभायकवपुपमोहहारी

दोहा–वसिहौं जाय महेन्द्रगिरि, जपिहौं तिहरो नाम।
सुमिरण करिहौं दिवस निशि, राम रूप अभिराम

चौपाई।

जै मद मोह नाग पंचानन। जै पदकमल शुद्ध कृतका
जै मुनि मानस सरसि मराल। जै जै विश्व विनाशक का
जै जै सुंदर त्रिभुवन वाल। जै हृदि राजित वर वनमा
जै विरंचि वैरंचिनि अंतह। तव पद कमल भजतिहिंस
कृपया परिपालय रघुनन्दन। दीनानुग्रह सुरकुल चंदन
जै वेदोद्धर मीनाकार। जै जै कोशल भूप कुमार
जै जै कमठाकार मुरारे। क्षीराम्बुधि मंथक दनुजारे
धरणी धारक कोलाकार। जय जय कनककशिपु संहार
प्रह्लादा भयदायक देव। बटु वामन पावन वलिसेव
मनकरकृत राजन्य विनाश। धर्मधुरंधर परम विकाश
जै जै रघुकुलकमल दिवाकर। जय वसुदेवकुमार दया कर
जय हलधर हिमकरसंकाश। जय जय बुद्ध सुकरुणावास

दोहा–करकराल करवाल धर, म्लेच्छच्छवन मुकुंद।
पाहि पाहि यामि ह हरे, कौशल्योदधि चंद॥

चौपाई।

शरणागत मैं नाथ तिहारो। क्षमा करहु निज कोप
तुम ब्रह्मण्य देव रघुराया। दियो भुलाय
मैं नहिं कोप सहन के लायक।
जाउँ महेन्द्रशैल कहँ आसु। भजौं निरन्तर
अच्छे मधुसूदन संहारी। करहु देव द्विज
जान्यों जान्यों अब प्रभुताई। कियो मोह वश
को शारंग चढ़ावन हारो। को पिनाक कर

हरन हेत अवनी कर भारा। कोशल नगर लीन अव
दीन्ह्यो मोहिं प्राण कर दाना। होइ तुम्हार सदा कल्य
विधि शिव इन्द्र आदि सब देवा। ठाढ़े लखत न जानत
अधिक समान रहित रघुबीरा। व्यापक विश्व महा रण
प्रतिद्वन्द्वी नहिं कोउ रण माहीं। मैं मतिमंद बिचारयो

दोहा–त्रिभुवन नायक आपसों, नहिं हारे की लाज।
अति कृपाल समरथ सबल, संत सुहृद रघुराज

चौपाई।

अब नहिं करहु बिलंब दयाला। तजहु अमोघ बाण बिक
सुमिरत तुव पद कमल तुरन्ता। जाय महेन्द्र गिरीश अ
सुमिरण करिहौं तुमहिं गोसाईं। मोर शरीर रहो ज
जेहि जेहि योनि कर्म बश जाऊँ। तहँ तहँ अमल कमल प
जनि बिसारियो त्रिभुवन सांईं। पाल्यो कमठ अंड की
दीन हीन गुण महा मलीना सनाथ रघुनायक
अस कहि रह्यो चरण ल र
भृगुपति वचन सुनत निज इ
हनी स्वर्ग गति य कृपा
को दयालु पी प्राण कर
पुनि न सुधा जनु
मोरे

पति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाण
दशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दु:
दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णच
कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचित
रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर बीर बिशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँव
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल ज
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो य
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सु
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर वाँ

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाण
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरनकरन अशरण शरण दुअ

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णच कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचि रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लपणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित

दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँव
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल ज
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक य
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सु
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ट निकट

दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंक
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आ
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बौ

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशतमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित

दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य

करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल ज

मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये

बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो

वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा। आये राम निकट

चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना

मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन

राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक प

विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु

तेहि अवसर निज काज बिचारी। लियो वरुण को राम

दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ

दियो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक बन

अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ठ निकट

दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।

कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद

बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव

मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि के

पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित ते

परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम

राउर तेज उदे लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज

गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी ॥

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चि

दोहा--तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य

करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल

मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये

बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो

वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट

चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना

मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये

राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक

विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन

तेहि अवसर निज काज बिचारी। लियो वरुण को राम

दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ

दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन

अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट

दोहा--पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।

कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंक

बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव

मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि

पुनि भ्रातिविहलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित

परसि पिता पद कियो प्रनामा। बोले वचन राम

रावर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज

गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बो

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दा[illegible]

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमद्दाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर बीर विशाला ॥
जय जय भरत लपणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ।
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँव
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल ज
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सु
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक बन
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ठ निकट
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम
राउर तेज उदे लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बाँ

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरनकरन अशरण शरण दुअन दा॰ ॥

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तव मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर बीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुसाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रहो विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
सत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित

दोहा--तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँव
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल ज
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये इ
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो य
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक य
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले बचन नाथ सु
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट

दोहा--पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंक
बोले वचन भरे अह्लादा। मिटी भीति तुव आदि
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यदि विधि कोटि
पुनि अतिविह्वलपितु ढिगरामा। आये बंधु सहित
परसि पिता पद कियो प्रनामा। बोले बचन राम
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर वौ

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर बीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट [illegible]
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम[illegible]
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम [illegible]
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग [illegible]
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती [illegible]
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि ज[illegible]

ृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर

दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति

करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर।

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका

मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि

बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर

वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम

चूमहिं बदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी

मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये

राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक

विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर

तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को

दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन

दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं

अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ

दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि

कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से

चौपाई।

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः॥ २२॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता। जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आनन॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरेआनँद रस॥
जय जय रघुपति दीन दयाला। धर्म धुरंधर बीर विशाला॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला। जय रघुकुल भट [illegible]
सैनिक सकल कहन अस लागे। रामहि निरखि राम[illegible]
लगे सराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम [illegible]
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई। जनक सुता ढिग अ[illegible]
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू। जानत हती[illegible]
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई। अब जनि ज[illegible]

गुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा-तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
ुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल जानकी
थिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी
ाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक बारा।
द्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा
ुमहिं वदन लेहिं वलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी
ानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे
ाम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक ...
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे
ेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी
देय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लैहौं मैं दंडक वन आई
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई
दोहा-पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशतमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट म
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग अ
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि ज

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा-तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक वारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दियं जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा-पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु बसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट म
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम
रनुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग अ
दो निकट सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती ८
रनुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जानि ज

गुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥

दोहा-तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लैहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥

दोहा-पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रवन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
वस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अव संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जव भृगुपति गमन्यो शिर नाई
अंधकार तव मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन
वरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लपणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अव भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक स[illegible] जाई ॥
रहो विकल सुनि भृगुपति कोपू । जान[illegible] ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अ[illegible]

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी । आयो समर करन चित चोपी ॥
दोहा--तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय ॥
चौपाई ।
सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटि गे शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुर वासी नर नारी । राम गवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाश ते छूटे । द्रव्य लुटाये निरधन लूटे ॥
राम हाथ सों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यश गावहिं ॥
विविध भाँति के बाजन बाजे । हैवर गैयर गन बहु गाजे ॥
तेहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुण को राम हकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले बचन नाथ सुखसंगा ॥
दियो अगस्ति हाथ तुम जाई । लेहौं मैं दंडक बन आई ॥
अस कहि कीन्हो वरुण बिदाई । गये वशिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पानि सप्रेम ।
कहे बचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम ॥
चौपाई ।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई । प्रभु परसे पद पंकज नाई ॥
बोले बचन भरे अहलादा । मिटी भीति तुव आशिरवादा ॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा । पालहु महि मिलि कोटि बरीसा ॥
पुनि अतिविह्वलचितु दशरथ राना । आये रघुनंदन जेहि थाना ॥
परसि पिता पद कियो प्रनामा । बोले बचन राम अभिरामा ॥
राउर तेज उदै टरि भाना । तोर कृपा द्विज देव सुजाना ॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमद्राजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा बिवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही निकट सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा—तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
वाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक वारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं वलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के वाजन वाजे। हैवर गैयर गन वहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। वोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा—पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरो कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
वोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि वरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये वंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। वोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदे लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज वुझाना॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता। जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला। धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला। जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे। रामहि निरखि राम अब भागे ॥
टग तराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति चतुराई। जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही निकट सुनि भृगुपति कोपू। जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई। अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा-तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं बदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्हो वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा-पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
बोले वचन भरे अह्लादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि बरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज बुझाना॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा बिवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरे आनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर बिशाला ॥
जय जय भरत लपणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि ... रहु न

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुसाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकट सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब नहिं जननि करहु दुचिताई॥

दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय ॥

चौपाई ।

सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटि गै शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुर वासी नर नारी । राम गवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं वलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाश ते छूटे । द्रव्य लुटाये निरधन लूटे ॥
राम हाथ सों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे । हैवर गैयर गन बहु गाजे ॥
तेहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुण को राम हकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई । लेहों मैं दंडक बन आई ॥
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई । गये वशिष्ठ निकट रघुराई ॥

दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम ॥

चौपाई ।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई । प्रभु परसे पद पंकज जाई ॥
बोले वचन भरे अहलादा । मिटी भीति तुव आशिरवादा ॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा । पालहु यहि विधि कोटि वरीसा ॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा । आये बंधु सहित तेहि ठामा ॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा । बोले वचन राम अभिरामा ॥
राउर तेज उदे लखि भाना । दीप सरिस द्विज तेज बुझाना ॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू । उठहु गवन कर बाँधहु नेतू ॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन द्वारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु बसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सों हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी । आयो समर करन नित चोपी ॥
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा राम को, राम गयो शिर नाय ॥
चौपाई ।
सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटि गे शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुर वासी नर नारी । राम गवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक वारा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं वलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाश ते छूटे । द्रव्य लुटाये निरधन लूटे ॥
राम हाथ सों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यहगावहिं ॥
विविध भाँति के बाजन बाजे । हैवर गैयर गन वहु गाजे ॥
तेहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुण को राम हकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई । लेहौं मैं दंडक बन आई ॥
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई । गये वशिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम ॥
चौपाई ।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई । प्रभु परसे पद पंकज जाई ॥
बोले वचन भरे अहलादा । मिटी भीति तुव आशिरवादा ॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा । पालहु यहि विधि कोटि वरीसा ॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा । आये बंधु सहित तेहि ठामा ॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा । बोले वचन राम अभिरामा ॥
राउर तेज उदै लखि भाना । दीप सरिस द्विज तेज बुझाना ॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू । उठहु गवन कर बाँधहु नेतू ॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी ॥

दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरैं, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता। जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला। धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला। जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कहन अस लागे। रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
रघुशाल तहँ अति अतुराई। जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रही विकल सुनि भृगुपति कोपू। जानत रही होत दल लोपू ॥
रघुशाल बोल्यो शिर नाई। अब जनि जननि करहु दुचिताई॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक वारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि वरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज बुझाना॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बाँधहु नेतू॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी

दोहा–असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा–करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कदन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
डग भगादन रघुपति काहीं । राज डाँडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ आनि अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रहा रिक्त मुनि भृगुपति कोपू । जानत दती दीन दृढ लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपो । आयो तमर करन नित चोपो ॥
दोहा-तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय ॥
चौपाई ।
सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटि गे शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुर वासी नर नारी । राम गवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाश ते छूटे । द्रव्य लुटाये निरधन लूटे ॥
राम हाथ सों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन वाजे । हैवर गैयर गन बहु गाजे ॥
तेहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुण को राम हकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । वोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई । लेहौं मैं दंडक वन आई ॥
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई । गये वशिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा-पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम ॥
चौपाई ।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई । प्रभु परसे पद पंकज जाई ॥
बोले वचन भरे अहलादा । मिटी भीति तुव आशिरवादा ॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा । पालहु यहि विधि कोटि वरीसा ॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा । आये बंधु सहित तेहि ठामा ॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा । बोले वचन राम अभिरामा ॥
राउर तेज उदै लखि भाना । दीप सरिस द्विज तेज बुझाना ॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू । उठहु गवन कर बाँधहु नेतू ॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु बसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सों हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता। जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला। धर्म धुरंधर बीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला। जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कहन अस लागे। रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुसाल तहँ अति अतुराई। जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रहा निकट सुनि भृगुपति कोपू। जानत हतो होत दल लोपू ॥
शत्रुसाल बोल्यो शिर नाई। अब जनि जननि करहु दुचिताई॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक वारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हेवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज बिचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण विदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।
मार्कंडेयादिक ऋपिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि वरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदे लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज बुझाना॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बाँधहु नेतू॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज लाडिलो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुसाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रह्यो विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

नृपकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपो॥
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक वारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के वोरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि वरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज बुझाना॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बाँधहु नेतू॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुबाणधारी ॥
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥
इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र
कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते
रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला ॥
सैनिक सकल कहन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लग सरादन रघुपति काहीं । राज छाडिहो सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आशुहि जाई ॥
रही विकट मुनि भृगुपति कोपू । जानत हती होत दल लोपू ॥
रघुसाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई ॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी । आयो समर करन चित चोपी ॥
दोहा–तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय ।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय ॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी । मिटि गे शंका सकल जानकी ॥
मिथिलापुर वासी नर नारी । राम गवन सुनि भये सुखारी ॥
बाजन लागे निकर नगारा । जय जय शोर मच्यो यक बारा ॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा । आये राम निकट रणधीरा ॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी । कहहिं करी सेना रखवारी ॥
मानहु काल पाश ते छूटे । द्रव्य लुटाये निरधन लूटे ॥
राम हाथ सों दान करावहिं । रामसुयश यक यक यहगावहिं ॥
विविध भाँति के बाजन बाजे । हैवर गैयर गन बहु गाजे ॥
तेहि अवसर निज काज विचारी । लियो वरुण को राम हकारी ॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा । बोले वचन नाथ सुखसंगा ॥
दियो अगस्ति हाथ तुम जाई । लैहों मैं दंडक बन आई ॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई । गये वशिष्ठ निकट रघुराई ॥
दोहा–पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम ।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र ते क्षेम ॥

चौपाई।

मार्कंडेयादिक ऋषिराई । प्रभु परसे पद पंकज नाई ॥
बोले वचन भरे अहलादा । निज भाँति तुम आशिर्वादा ॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा । जीवहु कहि निमि कोटि बरसा ॥
पुनि अतिविह्वलपितु ढिगजाना । आये बंधु सहित नृप थाना ॥
परसि पिता पद किये प्रनामा । बोले बचन गहन अभिमाना ॥
राउर तेज हरे द्विज माना । दीन मलिन छिन तेज बुझाना ॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू । रहहु मगन उर करहु चेतू ॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी ।
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दारी
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम ।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम ॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः ॥ २२ ॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम ।
वस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम ॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम ।
महि विचरण की गति रही, कीन्ह्यो भजन अकाम ॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद ।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद ॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सों हठि जाय ।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय ॥

चौपाई ।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता । जौंन चरित कीन्ह्यो भगवंता ॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई । जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई ॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन । भये प्रसन्न देव मुनि आनन ॥
वरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस । जय जय करहिं भरेआनँद रस ॥
जय जय रघुपति दीन दयाला । धर्म धुरंधर वीर विशाला ॥
जय जय भरत लपणरिपु शाला । जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कदन अस लागे । रामहि निरखि राम अब भागे ॥
लगे सराहन रघुपति काहीं । राज छांडिहौ सम कोउ नाहीं ॥
शत्रुसाल तहँ अति अतुराई । जनक सुता ढिग आसुहि जाई ॥
रहो विकल सुनि भृगुपति कोपू । जानत हतो होत दल लोपू ॥
शत्रुसाल बोल्यो शिर नाई । अब जनि जननि करहु दुचिताई॥

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥
दोहा—तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥
चौपाई।
सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गै शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
वाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं वदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यहगावहिं॥
विविध भाँति के वाजन वाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले बचन नाथ सुखसंगा॥
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥
दोहा—पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥
चौपाई।
मार्कंडेयादिक ऋषिराई। प्रभु परसे पद पंकज जाई॥
बोले वचन भरे अहलादा। मिटी भीति तुव आशिरवादा॥
मुनिजन दीन्हे प्रभुहि असीसा। पालहु यहि विधि कोटि बरीसा॥
पुनि अतिविह्वलपितु लखिरामा। आये बंधु सहित तेहि ठामा॥
परसि पिता पद कियो प्रणामा। बोले वचन राम अभिरामा॥
राउर तेज उदै लखि भाना। दीप सरिस द्विज तेज बुझाना॥
गयो भागि भार्गव कुल केतू। उठहु गवन कर बाँधहु नेतू॥

जयति रघुराज दिनराजकुलकमलरविविप्रकृतकाजधनुवाणधारी
भूपदशरथसुअन सकलभुवनाभरन करन अशरण शरण दुअन दा
दोहा—असकहि पदपंकज परसि, परम प्रमोदित राम।
गयो महेन्द्राचल चटक, सुमिरि राम अभिराम॥

इति सिद्धि श्रीसाम्राज महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारि श्रीरघुराज सिंह जू देव जी. सी. एस. आई विरचिते रामस्वयंवरग्रंथे परशुराम संवादे द्वाविंशत्तमः प्रबन्धः॥ २२॥

दोहा—करि प्रणाम श्रीराम को, परशुराम तप काम।
बस्यो महेन्द्र महीधरै, सुमिरत प्रभु वसु याम॥
रही राम की दिव्य गति, हरि लीन्ह्यो तेहि राम।
महि विचरण की गति रहो, कीन्ह्यो भजन अकाम॥
परशुराम जो राम सों, कीन्ह्यो वृथा विवाद।
द्वापर युग में तासु फल, लह्यो महा अपवाद॥
नारी हित कीन्ह्यो समर, भीषम सो हठि जाय।
भई पराजय कुयश जग, मन महँ रह्यो लजाय॥

चौपाई।

कथा प्रसंग सुनहु अब संता। जौन चरित कीन्ह्यो भगवंता॥
प्राण दान प्रभु कर सों पाई। जब भृगुपति गमन्यो शिर नाई॥
अंधकार तब मिट्यो दिशानन। भये प्रसन्न देव मुनि आनन॥
बरषहिं सुमनस सुमनस सुमनस। जय जय करहिं भरेआनँद रस॥
जय जय रघुपति दीन दयाला। धर्म धुरंधर बीर बिशाला॥
जय जय भरत लषणरिपु शाला। जय रघुकुल भट मंडित माला॥
सैनिक सकल कहन अस लागे। रामहि निरखि राम अब भागे॥
लगे सराहन रघुपति काहीं। राज लाडिलो सम कोउ नाहीं॥
शत्रुशाल तहँ अति अतुराई। जनक सुता ढिग आसुहि
रहो विकल सुनि भृगुपति कोपू। जानत हती होत
शत्रुशाल बोल्यो शिर नाई। अब जनि जननि

भृगुकुल कमल पतंग प्रकोपी। आयो समर करन चित चोपी॥

दोहा—तुव प्रीतम को तेज लहि, निज गति दिव्य गँवाय।
करत प्रशंसा राम की, राम गयो शिर नाय॥

चौपाई।

सुनि गमने भृगु राम जानकी। मिटि गे शंका सकल जानकी॥
मिथिलापुर वासी नर नारी। राम गवन सुनि भये सुखारी॥
बाजन लागे निकर नगारा। जय जय शोर मच्यो यक बारा॥
वृद्ध वृद्ध रघुकुल के बीरा। आये राम निकट रणधीरा॥
चूमहिं बदन लेहिं बलिहारी। कहहिं करी सेना रखवारी॥
मानहु काल पाश ते छूटे। द्रव्य लुटाये निरधन लूटे॥
राम हाथ सों दान करावहिं। रामसुयश यक यक यह गावहिं॥
विविध भाँति के बाजन बाजे। हैवर गैयर गन बहु गाजे॥
तेहि अवसर निज काज विचारी। लियो वरुण को राम हकारी॥
दिय जलेश कर प्रभु शारंगा। बोले वचन नाथ सुखसंगा।
दिह्यो अगस्ति हाथ तुम जाई। लेहौं मैं दंडक वन आई॥
अस कहि कीन्ही वरुण बिदाई। गये वशिष्ठ निकट रघुराई॥

दोहा—पद पंकज परसे पुलकि, पंकज पाणि सप्रेम।
कहे वचन तुम्हरी कृपा, लहे विप्र से क्षेम॥

चौपाई।

तुव भुज पालित दल चतुरंगा। चले अवध मुख आनँद रंगा॥
हम सब कुशल प्रताप तुम्हारे। विकल होहिं अब विकल निहारे॥
गये राम कुशली गुनि रामे। उठ्यो भूप आशुहि तेहि ठामे॥
सहित बंधु रघुनाथ निहारी। लियो अंक भरि भुजा पसारी॥
नहिं समात आनंद अपारा। नैनन वहति नीर की धारा॥

दोहा—गद्गद गर नहिं कहत कछु, निरखत वारहिं बार।
मानत नृप आजहि भये, मेरे चारि कुमार॥

चौपाई।

सूंघ्यो शीश अंक बैठाई। फेरयो पीठ पाणि पसराई॥
जाय गह्यो गुरु पद पुनि राजा। कह्यो कृपातुव सिधि सब काजा॥
मिले चारि बालक पुनि मोहीं। कहौं शपथकरि यश सब तोहीं॥
मुनि कह धर्म धुरन्धर आपू। करत सिद्धि सब काज प्रतापू॥
कहौ न तेहि अचरज अस कोई। जाके राम सरिस सुत होई॥
कालहु करी न ता पर कोहू। जासु राम सिय पूत पतोहू॥
गवनहु गेह वजाय निसाना। देखहु परछन हर्ष निधाना॥
लखे राउ रामहि टक लायो। मनहुँ राहुमुख विधु कढ़ि आयो॥
तेहि अवसर जे दूत पठाये। ते कौशलपुर ते द्रुत आये॥
कह्यो भूप से मंजुल वानी। अवध प्रजा दरशन अकुलानी॥
इत विलम्ब नहिं होइ महानी। रोजहि कढ़ति अवध अगुवानी॥
दूत वचन सुनि भूप तुरंता। बोल्यो वचन हकारि सुमंता॥

दोहा—चलवावहु सैना सकल, आशु अवध की ओर।
सुनि सुमंत शासन दियो, भयो दुन्दुभी शोर॥

चौपाई।

चली सेन कछु वरणि न जाई। मनहु उठी पूरव मेघवाई॥
चढ़ि रघुनंदन स्यंदन माहीं। चले सबंधु अवधपुर काहीं॥
नृप गुरु चढ़ि चढ़ि निजरयाना। किये प्रमोदित अवध [illegible]॥

चली जनकपुर ते जिमि सैना। तेहि विधि चलीभली भरिचैना॥
कियो पन्थ दिन चारि बसेरा। लहे जनक सत्कार घनेरा॥
जनक सचिव कीन्हे सेवकाई। कोहु न विदेश निवास जनाई॥
यहि विधि तहँ बरात हुलसानी। आय अवधपुर कहँ नजिकानी॥
योजन भरि महँ परिगो डेरा। जानि काल्हि दिन परछन केरा॥
जनक सचिव सब जे सँग आये। माँगी विदा नृपहि शिर नाये॥
देनलगे नृप संपति नाना। लिये न मनअनुचितअनुमाना॥
करि नृप की सिगरी सेवकाई। गये जनक पहँ माँगि बिदाई॥
कह्यो तुरंत सुमंतहि भूपा। परछन सुदिवस काल्हि अनूपा॥

दोहा–धेनु धूरि वेला विमल, होई नगर प्रवेश।
दूत भेज जनवाइयो, सब रनिवास निवेश॥

चौपाई।

तुरत सुमंत दूत पठवायो। खबरि नगर रनिवास जनायो॥
सजत बरातिन सुखित अपारा। निशा सिरानि भयो भिनसारा॥
प्रात कर्म करि भोजन कीन्हे। अवध प्रवेश करन मन दीन्हे॥
दुपहर भीतर भई तयारी। त्वरा अवधपुर देखन भारी॥
होत प्रभात: कुमारन काहीं। कह्यो भूप बेलमौ अब नाहीं॥
करि मज्जन भोजन अति आसू। सजे कुँवर सब सहित हुलासू॥
सुभग रंग नारंग पोशाका। जेहिलखिसुरनरमुनि मनछाका॥
लसैं मणीन मौर शुभ सीसे। रतन विभूषण अगणित दीसे॥
कटि कृपाण धनु कंध सोहाई। युग तूणीर महा छबि छाई॥
काम विनिन्दक सकल कुमारा। बरणि कौन कवि पावत पारा॥
तेहि दिन नृपहु पीत पट धारे। गवन हेत गज भये सँवारे॥
करि बहु विनय वशिष्ठहु काहीं। भूप चढ़ायो सिंधुर माहीं॥

दोहा–भये अनङ्ग समान सब, कुँवर तुरंग सवार।
बजे नगारे निकर तहँ, बार बार तेहि बार॥

चौपाई ।

सजी सैन सुंदर चतुरंगा । चले वराती भूपति संगा ॥
आगे सुतर सवार अपारा । सोहि रहे गन्धर्व अकारा ॥
तिनके पाछे पैदर जाती । निज निज यूथ वरण बहु भांती ॥
लसहिं गजन पर विविध पताका । मनुतिनमहँअरुझत रविचाका ॥
बहु नागन पर नौवत बाजै । तिनके गुरु गैयर गन गाजै ॥
तिमि बाजहिं विशाल कर नाला । तूरज भेरो शोर रसाला ।
पीछे चले पैदरन केरे । तिन पीछे असवार निवेरे ॥
चढ़ि तुरंग जागरे अलापैं । मनहुँ सात सुर सुरपुर थापैं ॥
छाय रहीं ध्वनि वाचन केरी । अंवर अवनि दिशान वनेरी ॥
तहँ परिकर अगणितगति सीछे । चले सवारन के पुनि पीछे ॥
कनक छरी वल्लभ बहु सोटे । गवने सुंदर जोटे जोटे ॥
परिचर वृन्दहि मध्य सिधारे । पंचसहस वर राजकुमारे ॥

दोहा–राजकुमारन मध्य में, सोहत चारि कुमार ।
तिनके पीछे गज चढ्यो, गवन्यो अवध भुवार ॥

चौपाई ।

तहँ वसिष्ठ आदिक मुनिराई । चढ़े वितुंडन आनँद छाई ॥
रघुवंशी सरदार अपारा । सजे मतंगन भये सवारा ॥
तिनके पीछे चलीं पालकी । चारि वधुन की रतन जाल की ॥
चलो जनकपुर सैन अपारा । दासी दास अनेक उदारा ॥
[illegible] शकट पालकी मद्दाफा । परे जरी के जिन महँ साफा ॥
तिनके पीछे चली बजारा । वनिक वणिक धनिधनकअपारा ॥
करहिं परस्पर सकल वराती । देखो कौशलपुरी देखाती ॥
[illegible] रचो जनकपुर नाईं । अस वरात पुर नेरे आई ॥
[illegible] सुने जनकपुर ग्रामा । [illegible] देखन आसी ॥

चले लेन आशुहि अगुवानी। सकल पुण्य फल आपन जानी॥
खरभर पर्‍यो नगर महँ भारी। कोउ गवने कोउ करत तयारी॥
जानि अर्ध योजन रजधानी। नृप सुमंत सों गिरा बखानी॥

दोहा--चलैं इहाँ ते अब सचिव, दुलहिनि दूलह संग।
वाजी पीछे पालकी, बजत बाज बहुरंग॥

चौपाई।

पृथक पृथक सिगरी महरानी। पटईं कलश चलीं अगवानी॥
कलश शीश धरि गावत नारी। भूपण वसन सुरंग सँवारी॥
हरद दूब दधि तंदुल थारा। शिर धरि चलीं चारु शृङ्गारा॥
करहिं भामिनी मंगल गाना। बाजन बजहिं अनेक विधाना॥
राजत रजत कनक कलशावलि। तिन महँ दिपति दिव्यदीपावलि॥
प्रमुदित पुरजन वृन्दन वृन्दा। आगू लेन चले सानन्दा॥
कोउ मतंग कोउ चढ़े तुरंगा। चले धनिक कोउ चढ़े सतंगा॥
बृहत् वृपभ वहलन महँ नाधे। चढ़ो सुखासन कोउ जन कांधे॥
कोउ पैदर आये नर नारी। बाल वृद्ध उमहे सुख भारी॥
अवध प्रजा निरखन अभिलापण। आये अगवानी कहँ लाखन॥
इत बरात उत पुरजन रेला। मानहु तजे सिंधु युग वेला॥
आवत झिले अवधपुर वासी। दूलह दुलहिन देखन आसी॥

दोहा--यदपि रह्यो मैदान बहु, कसमस पर्‍यो अघात।
चली अवधपुर पंथ तब, मंदहि मंद बरात॥
मिलहिं बरातिन पौरजन, प्रथमहि यही बताय।
दुलहिन दूलह दुहुन को, दीजे द्रुतहि देखाय॥

चौपाई।

कहहिं कहाँ सुंदरि सुकुमारी। मिथिलापुर की राजकुमारी॥
कहँ रघुनायक रूप सलोना। कौन समय परछन अब होना॥

भरत लषण रिपुहन कहँ प्यारे । धौं तुरंग धौं नाग सवारे ॥
कहँ नरेश कौशलाधिराजा । जाहि न तुलत आज सुर राजा ॥
महा डोल दुलहिन के चारी । देहु बताय होहु उपकारी ॥
हरषि बराती हाथ उठाई । दुलहिन दूलह देत बताई ॥
पाछे धाइ मिलैं जे आई । ते पूंछहिं देखे रघुराई ॥
नगर नारि नर नागर नीके । अभिलाषी देखन सिय पीके ।
झुकहिं झिलहिं झझकहिं झपिझाकहिं तरल तमक तिरछेतु किताकहिं ॥
लुकहिं लजहिं ललकहिं लरखाहीं । चितवहिं चकित चुभे चुहुँ चाहीं ॥
जिनहि प्राण प्रिय जानकि जानी । पौरदशा किमि जाय बखानी ॥
भयो अवध आनन्द अगारा । कसमस परत करत संचारा ॥

दोहा–नारि वृन्द कलशावली, कौशिल्या की आय ।
खड़ी भईं तहँ राम के, आगे अतिहि सोहाय ॥

चौपाई ।

पुनि केकेयी केरि पठाई । कलशावली सोहावनि आई ॥
भेजी सुभग सुमित्रा केरी । आईं कलशावली घनेरी ॥
औरहु रानिन केरि पठाई । कलशावली समीपहि आई ॥
कामिनि कनक कुम्भ धरि केती । गावत मंगल गीत सचेती ॥
पुरवासिनी अनेकन आई । संग मंगलामुखी सोहाई ॥
गावहिं ब्याह गीत सुरलाई । महा मनोहर ध्वनि रहि छाई ॥
बाजन बजहिं अनेकन भाँती । नाचहिं बार वधू सुखमाती ॥
नचहिं परिचरी पट फहराई । अधिक अधिक आनँद उमगाई ॥
कौशल्यादि तीन महरानी । तिनकी पठईं सखी सयानी ॥
सुंदर दधि अक्षत को टीको । दीन्ह्यो राम भाल महँ नीको ॥
मनु नखतन ने आशु रिसाई । चल्यो शुक्र शशि मंडल धाई ॥
लखन भरत रिपुहन के भाला । दधि टीको दीन्हों सब बाला ॥

दोहा–पुनि दुलहिनि पालकि पटन, नेसुक नारि उघारि।
दधि टिकुलो देती भई, मंजुल पाणि पसारि॥

चौपाई।

दै टिकुली गावत गज गामिनि। आगे चलीं भरी सुख भामिनि॥
आई अगणित पुरजन नारी। करहिं निछावरि मणिगण वारी॥
दुलहिन दूलह को नजिकाई। लेतीं दोउ कर रोग वलाई॥
प्रविसे पुरजन दल महँ जाई। राम चरण परसहिं सुख छाई॥
इतर जाति सव कराहिं प्रणामा। आशिष देहिं विप्र तपधामा॥
तहँ कौतुक कीन्ह्यो भगवंता। मिल्यो प्रजन करि रूप अनंता॥
जाने सवै मिले हम काहीं। पर्‍यो जनाय भेद कोहु नाहीं॥
मंद मंद तव चली वराता। पुरजन करत परसपर वाता॥
हमहिं मिले रघुनन्दन आई। पूछी विविध भाँति कुशलाई॥
को जग राम समान सनेही। कहहु प्राण प्रिय आज न केही॥
पुनि पुरजन नरनाथ जोहारे। कृपादृष्टि नृप सवन निहारे॥
शील सनेह सवन कहँ तोपे। गवने मंद मंद चित चोपे॥

दोहा–नगर निकट यहि भाँति चलि, आई विमल वरात।
सचिव सुमंत वोलाय कै, कही भूप अस वात॥

चौपाई।

वृहद् विमान आशु वनवायो। दुलहिन दूलह ताहि चढ़ायो॥
तहां तुरंत सुमंत सिधारा। विमल विमान विशद विस्तारा॥
वाहक दश शत ताहि उठाये। आशु सुमंत संग महँ लाये॥
मंडप कनक जटित रतनाली। वनी चहूंकित होरन जाली॥
चातक कीर कपोतहु मोरा। निर्मित रतन करत कल शोरा॥
रतन वृक्ष वहुरंग सोहाये। माणिक फल मुकता सुभ भाये॥
मुक्तन झालरि झूलत झापी। रतन कलश रवि सरिसप्रतापी॥

भरत लषण रिपुहन कहँ प्यारे। धौं तुरंग धौं नाग सवारे॥
कहँ नरेश कौशलाधिराजा। जाहि न तुलत आज सुर राजा॥
महा डोल दुलहिन के चारी। देहु वताय होहु उपकारी॥
हरषि वराती हाथ उठाई। दुलहिन दूलह देत वताई॥
पाछे धाइ मिलैं जे आई। ते पूंछहिं देखे रघुराई॥
नगर नारि नर नागर नीके। अभिलाषी देखन सिय पीके।
झुकहिं झिलहिं झझकहिं झपिझाकहिं तरल तमक तिरछेतुकिताकहीं।
लुकहिं लजहिं ललकहिं लरखाहीं। चितवहिं चकित चुभे चुहुँ पाहीं॥
जिनहि प्राण प्रिय जानकि जानी। पौरदशा किमि जाय बखानी॥
भयो अवध आनन्द अगारा। कसमस परत करत संचारा॥

दोहा–नारि बृन्द कलशावली, कौशिल्या की आय।
खड़ी भईं तहँ राम के, आगे अतिहि सोहाय॥

चौपाई।

पुनि कैकेयी केरि पठाई। कलशावली सोहावनि आई॥
भेजी सुभग सुमित्रा केरी। आई कलशावली घनेरी॥
औरहु रानिन केरि पठाई। कलशावली समीपहि आई॥
कामिनि कनक कुम्भ धरि केती। गावत मंगल गीत सचेती॥
पुरवासिनी अनेकन आई। संग मंगलामुखी सोहाई॥
गावहिं व्याह गीत सुरलाई। महा मनोहर ध्वनि रहि छाई॥
बाजन बजहिं अनेकन भाँती। नाचहिं बार वधू सुखमाती॥
रचहिं परिचरी पट फहराई। अधिक अधिक आनँद उमगाई॥
कौसल्यादि तीन महरानी। तिनकी पठईं सखी सयानी॥
सुंदर दधि अक्षत को टीको। दीन्ह्यो राम भाल महँ नीको॥
मनु असुरन ते आशु रिसाई। वस्यो शुक्र शशि मंडल आई॥
लषन भरत रिपुहन के भाला। दधि टीको दीन्हों सब बाला॥

मध्य चौक महँ धरयो विमानू । उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र वल्लभ कर धारिनि । कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला । आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन । झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी । बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई । परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्ही । यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो । कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा । उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा–महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक ।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई ।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी । लाखन सखी सजी छविखानी ॥
वजैं मनोहर बाज सोहावन । नाचहि सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन । ओली भरी रतन सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा । गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हि स्वस्त्ययन विप्रन नारी । रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा । संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई । आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई । मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी । गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई । निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा । दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध सबके चख माहीं । मनु चपला चमकी चहुँ वाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना। मनहुँ मदन निज कर निरमाना॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई। ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई। दियो विमानहिं निकट धराई॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई। पुरुपन को निज हाथ हटाई॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी। दियो चढ़ाय विमानहिं भारी॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी। सखी सुथल निज निज बैठारी॥

दोहा–रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि।
बोले विविध नकीव तब, को सुख कहै उचारि॥

चौपाई।

तेहि विमान के चारिहु ओरा। सखि मंडल सोहत नहिं थोरा॥
नृप शासन लहि उठ्यो विमाना। बाजन बजे विविध विधि नाना॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा। फरक फरक माच्यौ मग शोरा॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा। सिंधुर चढ़ो लसत महराजा॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत। लोकपाल युत विधि समभावत॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी। देखन झुके झुंड नरनारी॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा। भर भर रोकत मनुज अपारा॥
आगे करि सिय राम विमाना। परछन लखन भूप हुलसाना॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू। कहै को दशरथ सुख संदोहू॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई। वामदेव विधि वासव होई॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी। वरपहि सुम आरती उतारी॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता। राम सीय लै नाम पुनीता॥

दोहा–आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुर के द्वार॥

द्वार चौक अंतहपुर केरी। अति विस्तार अनूप निवेरी॥
दियो चौक ते पुरुप हटाई। नारि वृन्द सोहत तहँ आई॥

मध्य चौक महँ धरचो विमानू । उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र वल्लभ कर धारिनि । कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला । आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन । झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी । बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई । परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्ही । यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो । कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा । उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा ॥

दोहा–महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक ।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई ।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी । लाखन सखी सजी छबिखानी ॥
बजें मनोहर बाज सोहावन । नाचहिं सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन । ओली भरी रतन सलि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा । गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हिं स्वस्त्ययन विप्रन नारी । रानिन विधि दरशावहिं सारी ॥
जाय विमान निकट महराजा । संयुत रानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई । आगे ठाढ़ किये शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई । मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी । गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई । निज कर सों पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छबिधामा । दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध तनकै बस नाहीं । मनु चपला चमकी चहुँ वाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निरमाना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुपन को निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढ़ाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा–रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि ।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तेहि विमान के चारिहु ओरा । सखि मंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उठ्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधि नाना ॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा । सिंधुर चढ़ो लसत महराजा ॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत । लोकपाल युत विधि समभावत ॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी । देखन झुके झुंड नरनारी ॥
झर झर बेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखन भूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू । कहै को दशरथ सुख संदोहू ॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई । बामदेव विधि वासव होई ॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी । बरपहि सुम आरती उतारी ॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता । राम सीय लै नाम पुनीता ॥

दोहा–आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ट उचार ।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुर के द्वार ॥

द्वार चौक अंतहपुर केरी । अति विस्तार अनूप निवेरी ॥
दियो चौक ते पुरुप हटाई । नारि वृन्द [illegible] आई ॥

मध्य चौक महँ धरचो बिमानू। उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र वल्लम कर धारिनि। कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला। आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन। झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई। परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं। जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्ही। यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो। कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा। उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा—महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी। लाखन सखी सजी छविखानी ॥
वजैं मनोहर बाज सोहावन। नाचहि सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन। ओली भरी रतन सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा। गयो बिमान समीप महीपा ॥
पढ़हि स्वस्त्ययन विप्रन नारी। रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा। संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई। आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई। मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी। गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई। निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा। दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध सबके चख माहीं। मनु चपला चमकी चहुँ पाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निरमाना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुषन को निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढ़ाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा–रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि ।
बोले विविध नकीब तव, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तेहि विमान के चारिहु ओरा । सखि मंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उड्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधि नाना ॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा । सिंधुर चढ़ो लसत महराजा ॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत । लोकपाल युत विधि समभावत ॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी । देखन झुके झुंड नरनारी ॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखन भूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू । कहै को दशरथ सुख संदोहू ॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई । वामदेव विधि वासव होई ॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी । वरषहि सुम आरती उतारी ॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता । राम सीय लै नाम पुनीता ॥

दोहा–आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार ।
पहुँच्यो विमल विमान तव, अंतहपुर के द्वार ॥

द्वार चोक अंतहपुर केरी । अति विस्तार अनूप निवेरी ॥
दियो चोक ते पुरुष हटाई । नारि वृन्द सोहत तहँ आई ॥

मध्य चौक महँ धरचो विमानू। उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र वल्लभ कर धारिनि। कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला। आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन। झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल अस वानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई। परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं। जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्ही। यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो। कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा। उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा—महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी। लाखन सखी सजी छविखानी ॥
बजें मनोहर बाज सोहावन। नाचहि सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन। ओली भरी रतन सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा। गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हि स्वस्त्ययन विप्रन नारी। रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा। संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई। आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई। मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी। गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई। निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा। दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध सबके चख माहीं। मनु चपला चमकी चहुँ बाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निरमाना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुपन को निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढ़ाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा—रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि ।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तेहि विमान के चारिहु ओरा । सखि मंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उव्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधि नाना ॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक माच्यो मग शोरा ॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा । सिंधुर चढ़ो लसत महराजा ॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत । लोकपाल युत विधि सम भावत ॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी । देखन झुके झुंड नरनारी ॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखन भूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत [illegible] नोहू । कहै को द[illegible] सुख संदोहू ॥
दशरथ सरिस [illegible] । वामदेव [illegible] व होई ॥
पुरनारी चढ़ि [illegible] गहि स[illegible] तारी ॥

मध्य चौक महँ धरचो बिमानू । उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी बेत्र वल्लभ कर धारिनि । कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला । आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन । झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी । बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई । परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या बिनती अस कीन्ही । यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो । कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा । उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा—महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक ।
मनु तारा मंडल बिमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई ।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी । लाखन सखी सजी छबिखानी ॥
बजें मनोहर बाज सोहावन । नाचहि सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन । ओली भरी रतन सखि बारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा । गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हि स्वस्त्ययन बिप्रन नारी । रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा । संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई । आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई । मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी । गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई । निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छबिधामा । दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध सबके चख माहीं । मनु चपला चमकी चहुँ वाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना । मनहुँ मदन निज कर निरमाना ॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई । ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई ॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई । दियो विमानहिं निकट धराई ॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आई । पुरुपन को निज हाथ हटाई ॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी । दियो चढ़ाय विमानहिं भारी ॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी । सखी सुथल निज निज बैठारी ॥

दोहा—रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि ।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि ॥

चौपाई ।

तेहि विमान के चारिहु ओरा । सखि मंडल सोहत नहिं थोरा ॥
नृप शासन लहि उठ्यो विमाना । बाजन बजे विविध विधि नाना ॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा । फरक फरक माच्यौ मग शोरा ॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा । सिंधुर चढ़ो लसत महराजा ॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत । लोकपाल युत विधि समभावत ॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी । देखन झुके झुंड नरनारी ॥
झर झर बेत्रपाणि प्रतिहारा । भर भर रोकत मनुज अपारा ॥
आगे करि सिय राम विमाना । परछन लखन भूप हुलसाना ॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू । कहै को दशरथ सुख संदोहू ॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई । वामदेव विधि वासव होई ॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी । बरपहि सुम आरती उतारी ॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता । राम सीय लै नाम पुनीता ॥

दोहा—आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार ।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुर के द्वार ॥

द्वार चौक अंतहपुर केरी । अति विस्तार अनूप निवेरी ॥
दियो चौक ते पुरुप हटाई । नारि वृन्द सोहत तहँ आई ॥

मध्य चौक महँ धरयो विमानू । उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी बेत्र बल्लभ कर धारिनि । कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला । आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन । झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी । बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई । परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं । जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या बिनती अस कीन्ही । यह सम्पति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो । कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा । उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा–महिषी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक ।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई ।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी । लाखन सखी सजी छविखानी ॥
बजैं मनोहर बाज सोहावन । नाचहि सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन । ओली भरी रतन सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा । गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हि स्वस्त्ययन बिप्रन नारी । रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा । संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई । आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई । मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी । गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई । निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा । दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परचो चौंध सबके चख माहीं । मनु चपला चमकी चहुँ वाहीं ॥

भिन्न भिन्न सुंदर अस्थाना। मनहुँ मदन निज कर निरमाना॥
तहँ सुमंत रामहिं युत भाई। ल्याय विमानहिं दियो चढ़ाई॥
पुनि चारिहु पालकी बोलाई। दियो विमानहिं निकट धराई॥
वृद्ध वृद्ध सजनी जुरि आईं। पुरुषन को निज हाथ हटाई॥
पुनि दुलहिन पालकी उतारी। दियो चढ़ाय विमानहिं भारी॥
सुंदरि दुलहिन दूलह चारी। सखी सुथल निज निज बैठारी॥

दोहा—रतन खचित झालर मुकुत, दीन्ही परदनडारि।
बोले विविध नकीब तब, को सुख कहै उचारि॥

चौपाई।

तेहि विमान के चारिहु ओरा। सखि मंडल सोहत नहिं थोरा॥
नृप शासन लहि उव्यो विमाना। बाजन बजे विविध विधि नाना॥
चल्यो राजमंदिर की ओरा। फरक फरक माच्यो मग शोरा॥
तेहि विमान पाछे छवि छाजा। सिंधुर चढ़ो लसत महराजा॥
मणिगन चारिहु ओर लुटावत। लोकपाल युत विधि सम भावत॥
मच्यो कोलाहल नगर मझारी। देखन झुके झुंड नरनारी॥
झर झर वेत्रपाणि प्रतिहारा। भर भर रोकत मनुज अपारा॥
आगे करि सिय राम विमाना। परछन लखन भूप हुलसाना॥
राम सरिस सुत सीय पतोहू। कहै को दशरथ सुख संदोहू॥
दशरथ सरिस आज नहिं कोई। वामदेव विधि वासव होई॥
पुरनारी चढ़ि ऊँच अटारी। बरषहि सुम आरती उतारी॥
गावहिं मंगल मंजुल गीता। राम सीय लै नाम पुनीता॥

दोहा—आई सुरभीरज समय, कियो वसिष्ठ उचार।
पहुँच्यो विमल विमान तब, अंतहपुर के द्वार॥

द्वार चौक अंतहपुर केरी। अति विस्तार अनूप निवेरी॥
दियो चौक ते पुरुष हटाई। नारि वृन्द सोहत तहँ आई॥

मध्य चौक महँ धरयो विमानू। उयो सांझ वेला जनु भानू ॥
छरी वेत्र वल्लभ कर धारिनि। कौशल्या शासन दिय नारिनि ॥
फरक करहु सब नारि उताला। आयो अब परछन कर काला ॥
प्रतीहारिनी लगी हटावन। झुकहिं नारि देखन मन भावन ॥
पुनि कौशल्या सखी सयानी। बोलि कही मंजुल अस बानी ॥
खबरि जनावहु भूपहि जाई। परछन हित आवहिं अतुराई ॥
गई सखी भूपतिमणि पाहीं। जोरि पाणि बोली तिन काहीं ॥
कौशल्या विनती अस कीन्ही। यह सम्पाति अनुपम विधि दीन्ही
आवहिं सुख लूटहिं तेहि केरो। कृपा नयन नारायण हेरो ॥
सखी वचन सुनि अवध नरेशा। उतरि चल्यो तजि दियो गजेशा॥

दोहा—महिपी मंडल महिप मणि, सोहत सुभग निशंक।
मनु तारा मंडल विमल, उयो नवीन मयंक ॥

चौपाई।

त्रिशत साठि अरु त्रय महरानी। लाखन सखी सजी छविखानी ॥
बजें मनोहर बाज सोहावन। नाचहिं सखी मोद उपजावन ॥
सजी आरती थार हजारन। ओली भरी रतन सखि वारन ॥
सहित पट्टरानिन कुलदीपा। गयो विमान समीप महीपा ॥
पढ़हिं स्वस्त्ययन विप्रन नारी। रानिन विधि दरशावहि सारी ॥
जायविमान निकट महराजा। संयुतरानिन रुचिर समाजा ॥
गुरु वशिष्ठ कहँ लियो बोलाई। आगे ठाढ़ कियो शिर नाई ॥
गुरु पतनी अरुंधती आई। मनहुँ पतिव्रत मूर्ति सोहाई ॥
कौशल्या केकयी उचारी। गुरुपतनी पट देहु उघारी ॥
तहँ अरुंधती अति सुख छाई। निज कर सो पट दियो उठाई ॥
परे देखि अनुपम छविधामा। दुलहिन दूलह सीता रामा ॥
परयो चौंप सबके चख माहीं। मनु चपला चमकी चहुँ पाहीं ॥

दोहा–देखि परे तब राम सिय, सुछवि छटा क्षिति छाय।
मनहुँ सूर शशि एक सँग, कढ़े जलद बिलगाय॥

चौपाई।

गुरुआंइनि पद प्रभु शिर नाये। लाज बिवश पुनि शीश नवाये॥
पुनि क्रम सों अरुंधती जाई। तीनहुँ के पट दियो उठाई॥
दूलह दुलहिन देखन हेतू। झुकीं नारि करि बहु विधि नेतू॥
कौशल्यादि तीनि पटरानी। चढ़ीं बिमान लखन हुलसानी॥
कौशलेश कहँ लियो बोलाई। परछन करहु कही मुसकाई॥
गुरु आगे करि गये महीपा। ठाढ़ो पूत पतोह समीपा॥
गुरु पितु मातहि लखि रघुराई। नाय शीश पुनि रहे लजाई॥
गाँठि जोरि तीनिहु पटरानी। खड़ो भूप गुरु आयसु मानी॥
मणिन जटित वर कंचन थारी। कौशल्या अपने कर धारी॥
वार वार आरती उतारति। पूत पतोहू नयन निहारति॥
खड़ी भूप युत तहँ कौशल्या। जनु गौतम युग लसति अहल्या॥
दशरथ कौशल्या की आजू। वरणि सकै को भाग दराजू॥

दोहा–सखी सयानी निकट लखि, राम सीय छबि देखि।
बोली कौशल्या हुलसि, विभ्रम भयो बिशेखि॥

पद।

देखो तो सखीरी मेरो बारो मिथिला ते आयो।
धों मोहीं को होत महा भ्रम धौं सबको अस रूप जनायो॥
जनक कुमारी लागत कारो मोर किशोर गोर छवि छायो।
मिथिला की नटखटी नागरी जादू पढ़ि टोना डरवायो॥
हँसि बोली सजनी रानी सों स्वामिनि मोहिंसत्य अस भायो।
राम सुछवि सिय श्यामा लागत सिय छवि राम गोर दरशायो॥
एको भागवतिन परछन अब अस सुख त्रिभुवन कोउ नहिंपायो।
दीन सुछवि सब गुण समेटि के विधि रघुराज कुँवर ... ॥

दोहा–कह्यो वशिष्ठहिं कौशिला लै अरुंधती संग।
प्रथम करहु परछन तुमहि करि विधान
पद।
गुरु अभिमत सुनि अति हुलसान्यो।
लै अरुन्धती गाँठि जोरि कै धनि धनि भा
रतन खचित लै कनक थार कर दधि अक्षत
दुलहिन दूलह भाल विशालहि दै टिकुली
लगीउतारन आरति दंपति इकटक
श्रीरघुराज काजकरि मुनि वर आजु
दोहा–कह्यो भूप सों गुरु वचन, गाँठि
परछन करहु भुवालमणि, वेद
पद।
होन लग्यो परछन तेहि काल
करि कर थार भुवाल रानि
छवि छकि पूत पतोहू वदन
कौशल्या केकयी सुमित्रा लै
लगीं आरती उमँगि उता
पूत पतोहुन को मुख
श्रीरघुराज कीलेत
लियो छुडाय आरती

यहि विधि चारिहु कुँवरन को करि परछन रानी लहि सुखभा
चारिहु दुलहिनि दूलह को तव लिय विमान ते आशु उतारी
होन लगी निउछावर तेहि क्षण मणिगण पट भूषण जरतारी
राई लोन उतारि सखीजन पढ़ि मंगल मनु पावक डारी ।
गावहिं मंगल शोर मनोहर श्रीरघुराज जाहिं वलिहारी ॥
दुलहिन दूलह चलीं लेवाई ।

सकुचत सिय सासुन को निरखति चलति मंद पदपदुम उठा
पग आगे सखि धरहि ठीकरी सिय पग गहि तेहि देहि छुआ
कहहि रामको लाल उठावहु प्रभु जननी लखि रहे लजाई ॥
पुनि प्रभु को करकमल पकरि अलि लेहि ठीकरी हठि उठव
यहि विधि हास विलास विविध विधि करहिंसखी कौतुक दरश
गावत वाज वजावत वहु विधि नाचहि भाउ वताय वताई ।
वैठाई रघुराज वधू वर रंगनाथ के मंदिर ल्याई ॥

करवावतीं वर वधुन कर श्रीरंग पूजन विधि सहित ।
सिय राम को सिखवहिं सखी इनकी कृपा मेटति अहित ॥
करि छोह पूत पतोहु को वहु दान करवावहिं सुखित ।
सव रंगनाथ मनावतीं निज ओढ़ि अंचल चित चहित ॥
सिय राम पूत पतोहु मिलहि अनेक जनमनि जनै जित ।
युग युग जिये जोरी सुचारिहु लखें हम यहि भाँति नित ॥
यहि विधि मनावैं पुनि खेलावैं द्यूत दोहुन मोद मित ।
कोउ कहैं मोरि पतोहु जीती कोउ कहैं मम लाल जित ॥
रनिवास हास विलास यहि विधि होत सखिगण अति हँसित ।
फिर नौन करि दूलह दुलहिनी बैठि गुरुजन को लजित ॥
यहि भाँति लोकाचार करि सब वर वधुन लै गईं तित ।
जहँ सभा मंदिर रम्य सुंदर विशद मणिगण ते जटित ॥

रानी राजहु पूत पतोहू। बैठि सिंहासन सुख संदोहू॥
मम कर ते अभिषेक करावैं। मंगल मूल सकल विधि पावैं॥
नृपति मुदित तीनिउँ पटरानी। बैठायो सिंहासन आनी॥
चारिउ कुँवर चारि कुँवरानी। बैठायो आसन सुखमानी॥
चलैं चारु चामर चहुँ ओरा। छजत छत्र मणि खचित करोरा॥
रतन दीप फैली उजियारी। नाचि रहीं सन्मुख सुर नारी॥
तेहि अवसर अवास आनंदा। केहि विधिवरणौं मैंमति मंदा॥
गुरु उठि अर्घपात्र कर लीन्हा। वेदमंत्र अभिमंत्रित कीन्हा॥
किय वर वधू सविध अभिषेका। अधिष्टान करि यथा विवेका॥

दोहा—वास्तुकर्म करि भवन को, गवन कियो गुरु गेह।
भूप कहन लागे कथा, यथा विदेह सनेह॥

चौपाई।

कोउ नहिंजनक सरिससतकारी। मैं लीन्हों सब भुवन निहारी॥
गये वरात मनुज बहुलापा। को असजेहि न पूरि अभिलापा॥
जनकराज गुण शील बड़ाई। प्रीति रीति संपदा सोहाई॥
सुनि सुनिअति हरपहिंसबरानी। कौशल्या बोली तब बानी॥
सुनहु भूप मम मति अकुलानी। जिय संदेह न जाय बखानी॥
?रत रहे गवनत अँधियारे। कुँवर कौन विधि निशिचर मारे॥
?कत उठावत भाजन हाथा। हर धनु किमि तोचो रघुनाथा॥
?हँसि भूप बोल्यो तब बानी। औरहु अचरज सुनु महारानी॥
?ौतम को आश्रम रह सूना। कौशिक गे लेवाय दोउ सूना॥
?विशत आश्रम गौतम नारी। नाम अहल्या जासु उचारी॥
?ही शाप वश अंतर धाना। प्रगट भई पूज्यो विधि नाना॥
?नक नगर ते आवत माहीं। मिलेको भृगुपति मोहिं काहीं॥

दोहा—धनुपभंग अपराध गुनि, कीन्ह्यो कोप अपार।
करन चहत संहार जनु, कंधहि धरे कुठार॥

दीपावलि सिगरे पुर माहीं । खेर भेर थल थल चहुँपाहीं ॥
पुरजन अति आनँद रस साने । वित्त लुटावत नाहिं अघाने ॥
आय आय नरनाथ जोहारें । देहिं नजरि बहु मणिगण वारें ॥
बरणै कौन अवधपुर शोभा । सुर नरमुनिमानस लखि लोभा ॥

दोहा–यहि विधि निरखत नगर छवि, सहित समाज नरेश ।
कियो राजमंदिर सुखद, समय विचारि प्रवेश ॥

चौपाई ।

बैठ्यो सभाभवन महँ जाई । राज समाज सहित छवि छाई ॥
नेउतहरी भूपति सब आये । यथा योग्य सब कहँ बैठाये ॥
भूपति कियो सबन सतकारा । विनय किये ते जान अगारा ॥
देन लगे नृप तिनहिं विदाई । रथ तुरंग मातंग मँगाई ॥
रतन आभरण अम्बर नाना । जो जन जौन लेन ललचाना ॥
सकल कहहिं नृप आशु कुबेरा । देत लगन लघु जाहि सुमेरा ॥
प्रीति रीति बर विनय बड़ाई । को अस जाहि तुष्टि नहिं आई ॥
बरणत दशरथ सुयश नृपाला । निज निज देशन चले उताला ॥
भूप युधाजित दशरथ स्याला । आयो विदा होन तेहि काला ॥
करि सत्कार अवधपति बोले । बनत न अबै आपके डोले ॥
बसे युधाजित भवन बहोरी । कह्यो भूप गुरु विनती मोरी ॥
चलहु नाथ मम सँग रनिवासा । देहु दुलहिनिन सुंदर वासा ॥

दोहा–अस कहि भूप वशिष्ठ लै, गयो आशु रनिवास ।
माच्यो जहँ बैकुण्ठ सम, सुंदर हास विलास ॥

चौपाई ।

गुरु भूपति लखि उठी समाजा । आनि सिंहासन युगल दराजा ॥
यक महँ गुरु वशिष्ठ बैठायो । महा विशद जो द्वितियसोहायो ॥
भयो विराजमान अवधेशा । गुरु वशिष्ठ तब दियो निदेशा ॥

करि आचमन उठे नर नाहू। धोइ चरण कर गुनि सुख लाहू॥
बैठे पुरट पीठ महँ चाई। तीनिउ रानिनि लियो बोलाई॥
कह्यो वदन देखन को चारा। करवाओ लागे नहिं वारा॥

दोहा–राजकुमारिन चारिहू, रानीआशु लेवाय।
बैठाई भूपति निकट, कुल तिय वृद्ध बोलाय॥

कवित्त।

नृपति निकट सिय सासु की लेवाई आई,
ता क्षण मृगाक्षिण के हेरे हियो हरिगो।
रघुराज उलही दुकूलन ते अंग ओप,
चंचल चमक चौंध लोचन में भरिगो॥
घूंघुट उघारि मुख देखन दशा विसारि,
फैलत प्रकाश पुंज चंद मंद परिगो।
गिरिजा गिरा गुमान ब्रह्म जाको भूल्यो भान,
कामवाम रूप को बखान कूच करिगो॥
रति रंभा मेनका तिलोत्तमाहू पूर्वचित्ति,
उर्वशी घृताची आदि अप्सरा अपार हैं।
रघुराज अवध अधीश जू के अंगन में,
गावें नाचि रंगन में अंग सुकुमार हैं॥
शक्ररानी ब्रह्मरानी शंभुरानी विधुरानी,
देवरानी जेती आईं अवध अगार हैं।
मिथिला नरिन्द की कुमारी को वदन चंद,
देखि मंद परी जैसे इन्दु आगे तार हैं॥
कौशिला हुलसि हँसि छोह सो पतोह मुख,
घूँघुट को टारयो प्रभा पुंज दिशि छायगो।
परयो सबही के चखचौंधा सोचहूंवा चिते,

चौपाई।

हम तौ गुनि रघुकुल कर नाशा। भये विकल तजि जीवन आशा॥
तहाँ जाय यह लाल तुम्हारा। कोमल कठिनहुँ वचन उचारा॥
छीनि शरासन भृगुपति केरो। दीन शांत करि कोप घनेरो॥
यह वसिष्ठ कौशिक प्रभुताई। और हेत नहिं परै जनाई॥
सुनि रानी मन अचरज मानै। राखे कुँवर मोर भगवानै॥
भूपति कह्यौ सुनौ सब रानी। पुत्रवधू प्राणहुँ प्रिय मानी॥
नैन पलक सम राखेहु नीके। दिन दिन दून उछाह न जीके॥
रंच विसंच होन नहिं पावै। नेक विषम तिनके नहिं आवै॥
जनक राज अरु रानि सुनैना। चलत समय मोंसे कह बैना॥
सौंपौं तुमहिं कुमारी चारी। तुमहिं मातु पितु परहु निहारी॥
दून होय सुख नैहर केरे। तब मम वचन सत्य जे टेरे॥
केकय सुता कही कर जोरी। होइ यहै गिरा सति मोरी॥

दोहा–पुत्रवधू अरु पुत्र मम, सबते प्राण पियार।
औवाते सुत नींद वश, चलहु करहु ज्योनार॥

चौपाई।

अस कहि उठीं सकलतहँ रानी। पट नवीन चेरी बहु आनी॥
आप पहिरि सुत तिय पहिराई। कुँवरन भूपहु पहँ पठवाई॥
भोजन वसन पहिरि महराजा। कुँवर समेत महा छबि छाजा॥
शुद्ध सतोगुन सुंदर रूपा। भोजन भवन गयो पुनि भूपा॥
रानी पुत्रवधुन लै आई। निज निज संग सकल बैठाई॥
नृप संग बैठे सब भाई। होन लगो ज्योनार सोहाई॥
गावहिं रसिला वर सब नारी। बजै मृदंग बीण मनहारी॥
मेवहर सों भूपहि परसावैं। श्वशुर हाथ पुनि नेग देवावैं॥
[illegible] दुलहिन सुन्दर देखो। भोजन करैं न जसन विशेखो॥

चौपाई।

अस कहि पाय परम अहलादा। दियो महीपति आशिरवादा॥
पूत पतोह जियें युग चारी। अवध प्रजा नित करहिं सुखारी॥
पुनि बोलाय तीनिहुँ पटरानी। कह्यो बुझाय महीपति बानी॥
सोंपति किह्यौ पतोहुँन केरी। रंचक नाहिं बिसंच जेहि हेरी॥
ये नव वधू विदेह दुलारी। नयन पलक सम करि रखवारी॥
याम याम महँ सुधि सब लैकै। कीन्ह्यो सोंपत सब सुख दैकै॥
कनक भवन सीता कहँ देहू। माडवि को मणि मंदिर गेहू॥
देहु उर्मिला को सुख वासू। श्रुतिकीरति कहँ प्रीति विलासू॥
पृथक पृथक दुलहिन लै जाई। निज निज भवन देहु बैठाई॥
सुनि भूपति के वचन विचित्रा। कौशल्या केकयी सुमित्रा॥
चारिहु दुलहिनि लियो लेवाई। पृथक पृथक दिय भवन बताई॥
महा विभूति भरी जिन माहीं। सपनेहुँ शक्र लख्यो जो नाहीं॥

दोहा–सब विभूति बैकुंठ की, अवध माहिं दरशाति।
अहिपति शंकर शारदा, बरणत नाहिं सिराति॥

चौपाई।

ते महलन महँ राजकुमारी। निवसत भई लहत सुख भारी॥
पुनि भूपति कढ़ि बाहेर आये। सचिव सुमंत तुरंत बोलाये॥
कह्यो जो मिथिला ते जन आये। दुहितन के सँग जनक पठाये॥
सहित सकल सोंपत सत्कारा। बास करावहु विशद अगारा॥
जाय सुमंत कियो तेहि भाँती। मिथिलापुर वासिन सोइ राती॥
बसे सकल सुख सहित अगारा। बरनत दशरथ कृत व्यवहारा॥
भूप शयन हित भवन सिधारे। गावन हित गायक पगु धारे॥
रानी निज निज मंदिर आईं। सुत हित गौरि गनेश मनाईं।
राम सुहृद जेटी कुल नारी। जाय राम सों वचन उचारी॥

चकित चितौन लागी भानु तो भुलायगो।
रघुराज पलक निवारि कै निहारि छके,
रति रुचिराई को गुमानहूं हेरायगो।
फैलत प्रकाश को पसारा अभिमान सारा,
तारन समेत तारापति को परायगो॥
दोहा--कह्यौ तुरत केकय सुता, वदन देखाई नेग।
जनक दुलारी को अवहिं, देहु महीपति वेग॥

कवित्त।

बोल्यो रघुराज राज राज शिरताज सुनो,
कैसे करौं पूरो काज लाज करि हारौंगो।
करतो विचार वार वार मैं खभारहीं सों,
होत है लचार जिय कैसे निरधारौं गो॥
भूषण वसन गेह गाऊँकी चलावै कौन,
संपति सकल हूँढि हूंढिमुख वारोंगो।
अवधकी साहिवी अमरपति साहिवीहूं,
तूलिहै न नेक जो अनेक दयडारौंगो॥
लोकन की लाज लैकै शील को बनाय सांचो,
चित्र को रचाय चित्रकार कै मदन को।
शैलजा ते शारदा ते तैसेही पुलोमजा ते,
शोभा लियो छीनि रति मद के कदन को॥
भापों सत्य रघुराज आजु सुनौ प्यारी करि,
सुन्न सुंदराई ते त्रिलोक के सदन को।
सुधा लै सुधाकर की लूटि वसुधा की दुति,
इद कै बनायो विधि जानकी बदन को॥
सोरठा--रहिहौं ऋणी सदाहिं, कहा देहुँ कछु जँचत नाहिं।
दीवे को कछु नाहिं, वदन देखाई नेग को॥

उठ्यो भूप सुमिरत भगवाना। रघुपति दरशन को ललचाना॥
प्रात कृत्य करि बाहेर आई। सविध कियो मज्जन मन लाई॥
दीन्ह्यो दान वित्त बहु गाई। लहैं राम मंगल युत भाई॥
सजि पट भूषण सचिव बोलाई। बैठ सभा महँ दशरथ आई॥
उते कुँवर सब उठे प्रभाता। प्रात कृत्य कीन्हे अवदाता॥
मज्जन करि दीन्हे बहु दाना। सजि भूषण अंबर विधि नाना॥
तहि अवसर नृप दूत पठाई। लियो चारिहू कुँवर बोलाई॥
गये पिता ढिग किये प्रणामा। पितु आशिष दैलहि मुद धामा॥

दोहा–शीश सूंघि बैठाय ढिग, अनमिष निरखि स्वरूप।
लहि नरिंद आनंद अति, बोल्यो बचन अनूप॥
भयो विवाह सयान अब, भये चारिहू बंधु।
ताको तस तुम मानियो, जाको जस सनबंधु॥
धर्मरीति नृपनीति सब, प्रीति प्रजन सों ठानि।
विलसहु नित कोशल नगर, दयादीठि दृग आनि॥
सुनि पितु शासन कुँवर सब, लीन्हे शीश चढ़ाय।
भोजन को गवने भवन, पठई मातु बोलाय॥
यहि विधि नित निवसत अवध, सेवत पितु दिन राति।
बीतत काल अनंद सों, कथा न कहे सिराति॥
अष्ट याम यक दिवस को बरणों मति अनुसार।
सुनैं रसिक जन हुलसि अति, सुंदर शतक शिकार॥

कवित्त।

ज्ञान वैराग्य भक्ति योग में अनन्त सुख।
रसिक अनेकन सिंगार अधिकारी है।
केते राम रास गाये केते अष्टयाम गाये,
केतेहू शिकार गाये कवित उचारी है॥

कनक भवन कहँ चलहु पियारे । अर्द्ध निशा पाहरू पुकारे ॥
कर करि कर महँ चली लेवाई । मंद गवन लज्जित रघुराई ॥
पलटी सखी राम पहुँचाई । लै गवनी पुनि तीनिहुँ भाई ॥

दोहा--तिनके तिनके भवन महँ, बंधुन को बैठाय ।
आप जागरण करन हित, गावन लगीं सोहाय ॥

चौपाई ।

भई महा सुखछावनि रजनी । गाय बजाय बितायो सजनी ॥
बरणन करब कथा सुख मोई । मम अधिकार अहै यतनोई ॥
रास विलास कथा नहिं जानौं । दास ते अधिक और नहिं मानौं॥
भये अनेकन रसिक सिंगारी । ते रसरास कथा विस्तारी ॥
नहिं शृङ्गार कथन अधिकारा । ताते कह्यों न राम विहारा ॥
सुखित शयन कीन्हे रघुराई । आगिल कथा सुनहु मन लाई ॥
सो रजनी सब नगर मझारी । अवध प्रजन को किये सुखारी ॥
घर घर बाजहि बाजि बधाऊ । राम आगवन भयो उराऊ ॥
अंतहपुर महँ सब रनिवासा । करहिं अनेकन नाचि तमासा ॥
तेहि रजनी सोयो नहिं कोऊ । रह्यो जो भीतर बाहेर सोऊ ॥
चारि दंड निशि रहिगे बाकी । लालशिखा धुनिभयसुखछाकी ॥
पुनि प्रगटी पूरुब अरुणाई । कोक थोक को शोक मिटाई ॥

दोहा—चटकाली चहुँकित चटक, बोलि उठी गुनि भोर।
बोलन लगे विहंग वर चाय भरे चहुँओर ॥

चौपाई ।

तहँ बंदीजन अवसर जानी । मागध सूत महा मुद मानी ॥
पृथक पृथक महलन मुदपागे । द्वार द्वार यश गावन लागे ॥
भूपति बिरद बिरति सविवेका । करणी जो सुरपतिहु न छेका ॥
लै इक्ष्वाकु बंश ते आजू गायो जस जस दशरथ राजू ॥

शोर खग वृन्द चन्द्रहास सो सुनायो है।
रघुराज रावरे दरश ललचाई अरु-
णाईदिशि प्राची अनुराग को जनायो है॥
मिलन लगे हैं शोकी कोकी कोक ह्वै अशोक,
कोकनद कली अली गली पाइभागे है।
शीतल सुगंध मंद पवन पराग भरो,
प्रसरन लाग्यो लालशिखा रव रागे हैं॥
बिरले गगन तारे हारे दल ही से शूर,
परत निहारे झलमल ज्योति जागे हैं।
रघुराज वंश गुरु हंस की सहाय कीजै,
उदैमान भान कें दनुज सँग लागे हैं॥
वंदिन उचारे बैन सुनि कै नरेशप्यारे,
नींद को बिसारे द्वारदेश पगु धारे हैं।
नैन अरुणारे मुख बिथुरे सुकेश कारे,
ताजे शिर धारे नाहिं भूषण सँवारे हैं॥
लटपट परत पग मग आलस वारे,
खसत बसन कर कमल सुधारे हैं।
सेवन की आस वारे सेवक अपारे तिमि,
रघुराज रामसखा आइकै जोहारे हैं॥
सज्जन अनंद कर मज्जन निकेत जाई,
पावन जगत दन्त धावन करत भे।
कंचन कुलिश कृत कुंभनि सुगंध नीर,
न्हाइ रघुवीर पट पीत पहिरत भे॥
दीन्ह्यो अर्घ अंशुमाने उपस्थाने कियो फेरि,
संध्या सविधाने करि आनंद भरत भे।

मेरी अधिकार नहिं और रस केरो कछु,
हमें दशरत्थलाल सेवा सुख धारो है।
ताते रघुराज थोरो बरणै शिकारे गाथा,
रसिक सुजानन को लागे प्राण प्यारो है॥
शांत औ सिंगार दास्य वातसल्य सख्य रस,
भक्तजन पांचै भावना को भाव धारे हैं।
मोहिं गुरु दीन्ह्यो दास्यभाव ताते रघुराज,
सत्य सत्य सत्य ऐसे वचन पुकारे हैं॥
प्रभु के समान स्वामी सख्यरस वारे पिता,
वातसल्य वारे पितामह से उचारे हैं।
शांत वारे गुरु हैं शृंगार वारे माता सम,
भ्राता बंधु मित्र दास्य वारे ते हमारे हैं॥
चारि दंड जानिकै त्रियामा मतिधामा यंत्री,
बादन बिबिध लैके द्वारदेश आये हैं।
जानकीरमण के जगावन के हेत सबै,
भैरों राग भरि अनुराग मुख गाये हैं॥
रघुराज राजसिर ताज के दुलारे बीर,
जागिये जगतपति जग सुख छाये हैं।
भुवनप्रशंस निज वंश अवतंस जानि,
आवत दिवाकर दरश ललचाये हैं॥
हौं तो मुख समता न पायों सो लजायो रह्यौं,
अब तो प्रकाशहू को चहत गवायो है।
ऐसो के विचार लैके तारन अपार संग,
अत्रि को कुमार पारावार में दुरायो है॥
बिटते कमल जय जानि जानकी के जानि,

नीके निरवारे प्रजा कीन्हे जै जै कारे हैं ॥
वासर विचारि डेढ पहर व्यतीतो राम,
विदा करि मंत्रिन को सखा वयठारे हैं।
लषण भरत शत्रुसूदन पठाइ दूत,
तुरत वोलायो कै शिकार के विचारे हैं ॥
गावै लगे गानवारें नाचै लगे नृत्यवारे,
बाजन वजावैं वाद्यवारे सुर धारे हैं।
राज शिरताज महाराज के दुलारे राम,
जन रघुराज पीछे चारु चौर ढारे हैं ॥
बाँकी पाग पेचैं बाँकी कसी शिर पेचैं बाँकी,
भृकुटीन ऐचैं बाँकी कलँगी सँवारे हैं।
बाँकी करवाले बाँकी कसी कटि ढाले बाँकी,
पीठि ढपी ढाले बाँके नैन अरुणारे हैं ॥
रघुराज यौवन ललाई मुख बाँकी फवै,
बाँकी गति बाँके सखा संग अनियारे हैं।
आये श्रीलषण प्यारे केकयी कुमारे तिमि,
सभा पगु धारे शत्रुदमन दुलारे हैं ॥
राम को प्रणाम करि बैठे बंधु आस पास,
हास इतिहासन अनेक परकासे हैं।
भुवन विभूषण ते भासे भास भासवान,
सज्जन सुशोश सीतभानसे विलासे हैं ॥
रघुराज लोने लोकपाल उपमासे सासे,
बैठे आनसासे काम धाम को निरासे हैं।
राम मुख वचन सुधासे सुनिवे के प्यासे,
हिय के हुलासे मृगया के मौन आसे हैं ॥

रघुराज चंदन की रेख दै अशेप शोभ,
दानैं असथानै फेर आइकैं अरत भे ॥
दीन्ह्यो तिलधेनु दश धेनु हेमधेनु पुनि,
तेरह सहस्र धेनु दीन्हे हेम शृङ्गी हैं।
अवनी अभूपण दै अन्न दीन्हे अंबर दै,
शय्या दान दीन्हे गज वाजि वहु रंगी हैं॥
अगणित आये द्विज वृन्दन अनन्दन सों;
पूरे मनकाम रघुनन्दन उमंगी हैं।
रघुराज राम दान धारा के प्रवाहभये,
दरिद्र के दरिद्री विप्र आनँद के दंगी हैं॥
तर्पन हवन आदि प्रातकर्म कैकैपुनि,
दीन्ह्यौ माथे मुकुट अनन्त भानु भासी है।
जामा जरकसी वारो फेटो मुक्त छोरवारो,
हीरन को हारो धारो अंगद विभासी है॥
करमें कटक अंगुलीन मुंदरीन रचि,
कटि करवाल पीठि तूण शर रासी है।
धारे धनु एक हाथ एक हाथ सखा हाथ,
आयो रघुराज सभा अवध विलासी है॥
औसर विचारि पौर प्रकृती अमात्यगण,
सखा सरदारे ते सिधारे दरवार हैं।
पुर काज भृत्य काज गृह काज राज काज,
अरज सहित निज गरज उचारे हैं॥
समुझि निदेश दै दै कीन्हे कृत काज तिन्हैं,
रघुराज धर्म युत हुकुम निकारे हैं।
सुख को पसारे दीन दुसन निवारे न्याउ,

स्वयंवर।

शिकार खेलि आइये।
हुलसि हुकुम दीन्ह्यो,
को सांझ लों सिधाइये॥
ानि आनँद अपार चले,
कहि वाजिन धवाइये।
। से तड़ित से तानहँसि,
तुरंग रंग छाइये॥
र निहारयो चारु चमू राम,
: त्यौं हजूरी चतुरंग को।
; आवैं धुधुरि गगन छावैं,
त्यौं मतंगन तुरंग को॥
ख प्रतापी सखा ठाढ़ो सुखी,
ज भरि अतिशै उमंग को।
भृत्यन की सखन सुहृदहू की,
कारी सैन आवै मम संग को॥
वारे शीश सँवँले सजीले खूब,
नीले चटकीले त्यौं तुरंग हैं।
ठि ढाल दुति दीपति त्यौं ढालैं कसी,
रवाले उर मालैं त्यौं सुरंग हैं॥
। राजै राजवंशी शत्रु सैन ध्वन्सी,
प्रशंसी भरे ज्वानी के उमंग हैं।
त लपण लाल वीरन के माल मध्य,
आजु वारिये अनेकन अनंग हैं॥
से उमंग महीधर से मतंग राजैं,
त अखंड मंजु मदन सँवारे हैं।

जानि रुख बंधुन की खेलियो शिकार अ
विपिन मझार राम गिरा यों उचारी हैं ।
भाई सखा बोले एक बार सबै मोद भरे,
आछी कही आप अभिलाषऊ हमारी है ॥
वेगि प्रतीहार को बोलाइ कै निदेश दीन्ह्यो,
सैन्य को सजाइये शिकार की तयारी है ।
दूत दौरि द्रुतही देवाइ दियो दुंदुभी को,
रघुराज आई सैन सुनत शिकारी है ॥
गहे हाथ बंधुन को गौने रघुनाथ तहाँ,
होत भे मतंगज पै तुरत सवारै हैं ।
भाई सरदार सखा ह्वै सवार सिंधुर पै,
सबै प्रभु संग संग मंद गति धारे हैं ॥
भूप चक्रवर्ती को निदेश वेश लीबे हेत,
चले पितु द्वारे देश सुखमा पसारे हैं ।
रघुराज धाम धाम ठाढ़े पुरवासी कोटि,
काम धामवारे राम वदन निहारे हैं ॥
शत्रुंजय सिंधुर पै सज्जित अमारी भारी,
मोतिन किनारी झपी झूल जरतारी हैं ।
नेजे पाणिधारी राजवंशी बडवारी भरे,
आयू चली आवै वीर वाजिन सवारी है ॥
लषण भरत शत्रुसूदन विराजैं संग,
शोभित मतंगन शिकार की तयारी है ।
जागरे कलाप जस विविध अलापें अस,
आयो रघुराज दशरत्थ चरियारी है ॥
पृथ्वी पाट मनिपास पेल्यो प्रतीहार राम,

शासन जो होइ तौ शिकार खेलि आइये।
सुनत नरिन्द इन्द्र हुलसि हुकुम दीन्ह्यो,
खेलि कै अखेटक को सांझ लों सिधाइये॥
सुनिकै कुमार मानि आनँद अपार चले,
खेलन शिकार कहि वाजिन धवाइये।
तोरन से तरणि से तड़ित से तानहींसे,
तड़के तुरंतहीं तुरंग रंग छाइये॥
कढ़ि पुर बाहेर निहारचो चारु चमू राम,
बंधुन सखानि त्यौं हजूरी चतुरंग को।
पृथक पृथक आवैं धुधुरि गगन छावैं,
ढंग देखरावैं त्यों मतंगन तुरंग को॥
रघुराज निकट प्रतापी सखा ठाढ़ो सुखी,
भाषे रघुराज भारि अतिशै उमंग को।
भाइन की भृत्यन की सखन सुहृदहू की,
सहज शिकारी सैन आवै मम संग को॥
सोहैं गोसवारे शीश सँवले सजीले खूब,
नेजे रंग नीले
ढां

जानि रुख बंधुन की खेलियो शिकार आजु,
विपिन मझार राम गिरा यों उचारी हैं।
भाई सखा बोले एक बार सबैं मोद भरे,
आछी कही आप अभिलाषऊ हमारी है॥
बेगि प्रतीहार को बोलाइ कै निदेश दीन्ह्यो,
सैन्य को सजाइये शिकार की तयारी है।
दूत दौरि द्रुतही देवाइ दियो दुंदुभी को,
रघुराज आई सैन सुनत शिकारी है॥
गहे हाथ बंधुन को गौने रघुनाथ तहाँ,
होत भे मतंगज पै तुरत सवारे हैं।
भाई सरदार सखा ह्वै सवार सिंधुर पै,
सबै प्रभु संग संग मंद गति धारे हैं॥
भूप चक्रवर्ती को निदेश वेश लीबे हेत,
चले पितु द्वारे देश सुखमा पसारे हैं।
रघुराज धाम धाम ठाढ़े पुरवासी कोटि,
काम धामवारे राम वदन निहारे हैं॥
शत्रुंजय सिंधुर पै सज्जित अमारी भारी,
मोतिन किनारी झपी झूल जरतारी हैं।
नेन पाणिधारी राजवंशी चडवारी भरे,
आगू चले आवै वीर वाजिन सवारी है॥
लषन भरत शत्रुसूदन विराजैं संग,
शोभित मतंगन शिकार की तयारी है।
नांगेर कलापै जस विविध अलापै अस,
भाषै रघुराज दशरत्थ परियारी है॥
इमि पाट मनिपात पेख्यो प्रतीहार।

शासन जो होइ तौ शिकार खेलि आइये।
सुनत नरिन्द इन्द्र हुलसि हुकुम दीन्ह्यो,
खेलि कै अखेटक को सांझ लौं सिधाइये॥
सुनिकै कुमार मानि आनँद अपार चले,
खेलन शिकार कहि बाजिन धवाइये।
तीरन से तरणि से तड़ित से तानहींसे,
तड़के तुरंतहीं तुरंग रंग छाइये॥
कढ़ि पुर बाहेर निहारयो चारु चमू राम,
बंधुन सखानि त्यों हजूरी चतुरंग को।
पृथक पृथक आवैं धुधुरि गगन छावैं,
ढंग देखरावैं त्यौं मतंगन तुरंग को॥
रघुराज निकव प्रतापी सखा ठाढ़े सुखी,
भापे रघुराज भरि अतिशै उमंग को।
भाइन की भृत्यन की सखन सुहृदहू की,
सहज शिकारी सैन आवै मम संग को॥
सोहैं गोसवारे शीश सँवले सजीले खूब,
नेजे रंग नीले चटकीले त्यौं तुरंग हैं।
ढांपे पीठि ढाल दुति दीपति त्यों झालैं कसी,
कटि करवालै उर मालैं त्यौं सुरंग हैं॥
रघुराज राजै राजवंशो शत्रु सैन ध्वन्सी,
जगत प्रशंसी भरे ज्वानी के उमंग हैं।
आवत लषण लाल वीरन के माल मध्य,
जापै आजु वारिये अनेकन अनंग हैं॥
मद से उमंग महीधर से मतंग राजैं,
मंडित अखंड मंजु मदन सँवारे हैं।

जानि रुख बंधुन की खेलियो शिकार आजु,
विपिन मझार राम गिरा यों उचारी हैं ।
भाई सखा वोले एक बार सबैं मोद भरे,
आछी कही आप अभिलाषऊ हमारी है ॥
वेगि प्रतीहार को बोलाइ कै निदेश दीन्ह्यो,
सैन्य को सजाइये शिकार की तयारी है ।
दूत दौरि द्रुतही देवाइ दियो दुंदुभी को,
रघुराज आई सैन सुनत शिकारी है ॥
गहे हाथ बंधुन को गौने रघुनाथ तहाँ,
होत भे मतंगज पै तुरत सवारे हैं ।
भाई सरदार सखा ह्वै सवार सिंधुर पै,
सबै प्रभु संग संग मंद गति धारे हैं ॥
भूप चक्रवर्ती को निदेश वेश लीवे हेत,
चले पितु द्वारे देश सुखमा पसारे हैं ।
रघुराज धाम धाम ठाढ़े पुरवासी कोटि,
काम धामवारे राम वदन निहारे हैं ॥
शत्रुंजय सिंधुर पै सज्जित अमारी भारी,
मोतिन किनारी झपी झूल जरतारी हैं ।
नेजे पानिधारी राजवंशी बडवारी भरे,
आगू चली आवै बीर बाजिन सवारी है ॥
लषन भरत शत्रुसूदन विराजैं संग,
शोभित मतंगन शिकार की तयारी है ।
नांगर कलापैं नस विविध अलापैं अस,
भाषै रघुराज दशरत्थ पारियारी है ॥
इमि चले मनिपाल ... ।

खासे खास फौजवारे तुरंग सवारे हैं ॥
बांके बेसवारें रण कबहुँन हारे मारे,
रिपुन प्रचारे जग जस उजियारे हैं ।
रघुराज प्राण प्यारे अति अनियारे बीर,
आवत शिकारे सखा सकल हमारे हैं ॥
सेर के समान जन लीन्हे सावधान श्वान,
झूलन ढपान जिन बेग बे प्रमान हैं ।
चीते चारु चित्र से लिखे हैं जे विचित्र बेष,
बांसा बाज बहरी गनावै कोन मान हैं ॥
सुघर शिकारी जे शिकार की तयारी किये,
विपिनि खेलारी शोधकारी सहसान हैं ।
रघुराज संग में हजूरी सेन पूरी लैके,
आवत सुमन्तसूनु सचिव प्रधान हैं ॥
पागे शीश हरित हरित कटि फेटे कसे,
कंचुक हरित रङ्ग रंचुकन ओर हैं ।
हरित तुरङ्गन मतङ्गन की साजें सजी,
आयुध हरित पट छादित सुछोर हैं ॥
सावन विपिनि सुखमा सी चहुँ ओर छावे,
उपमा न जासु भट सुखमा करोर हैं ।
रघुराज सहित शिकारिन समान आन,
आवत निषाद राज प्यारे सखा मोर हैं ॥
चाय भरी चारु चतुरङ्ग चमू बन्धुन की ॥
लखन की सैन त्यों नवीनो नव आइगे ।
धूरि धुंधकार के सुनार आसमान आयों,
भासवान भान त्यों दिगन्तन दुराइगे ॥

जटित अमारी भारी माणिक मणीनहूं को,
मंद गति मानो महा मेघन अतारे हैं ॥
डग मग महि महधरहु धरत पग,
सजित शिकार राजकुँवर सवारे हैं ।
रघुराज भूरि भीर लीन्हे रणधीर वीर,
भरत कुमार आवैं सुखित शिकारे हैं ॥
माथन पै टोप झूलैं झिलिम सुझप्पेदार,
कलँगी कलित बादले की लोनी लाल हैं ॥
चामीकर कवच जड़ित दसताने पाणि,
कसे ढाले ढालै त्यौं कराले करवाल हैं ।
राजत तुरंगन मतंगन सतांगन मैं,
सरयू बनांगन मैं जागै जोति जाल हैं ॥
रघुराज राजैं राजवंशिन समाज मध्य,
आवैं शत्रुशाल साँचो सह शत्रुशाल हैं ॥
एक ओर गर्वित गयंदन कतारे भारे,
यक ओर हैं वर हजारे बेगवारे हैं ।
एक ओर पैदर अपारे सबै शस्त्र धारे,
एक ओर प्रतीहारे सुयश उचारे हैं ॥
दुन्दुभी धुकारे सुनि दिग्गज चिकारे करैं,
छावत दिगन्तन लो धूरि धुंधुकारे हैं ।
रघुराज आये लक्ष्मीनिधिहुँ शिकारे प्यारे,
सारे हैं हमारे मिथिलेश के दुलारे हैं ॥
एकै ऐंड़वारे एकै सौंहैं शूर सानवारे,
एकै तेजवारे एकै तीछे तेग धारे हैं ।
एकै चोजवारे एकैमन के सुमोज वारे,

मानो यों पुकारयो रघुराजै कृत काम हैं।
जैसे ललकारि मोहिं मारयो वरछी सों राम,
वैसे ललकारि हों तो लेतो तुव धाम हैं॥
चीते चाय छूटे चारु चपल कुरंगन पें,
तरल तुरंगन सखान हूं धवाये हैं।
धरयोहिं धरयोहि अस करत पुकार प्यारे,
बाजी को धवाय केते नेजा को चलाये हैं॥
वाह वाह भाषि रघुराज जू उछाह छाये,
देत हैं इनाम सखा सुखी शिर नाये हैं।
सखन के मारे त्यों मृगादन के मारे मृग-
नके यमसदन को जनम न पाये हैं॥
कोई मृग मारे कोई शेरन सँहारे कोई,
सिंधुर प्रहारे ल्याइ ल्याइ न्यारे न्यारे हैं।
खेलिके शिकारे सखा बंधु सरदारे सबै,
प्यारे अनियारे सरकार को जो हारे हैं॥
रघुराज ताही समै बीच सों वराह भाग्यो,
सबै ललकारे धाये वेग बेशुमारे हैं।
राम के प्रचारे बीर लषण दुलारे कढ़ि,
हन्यो कोल कुंतल सों सरयू किनारे हैं॥
ज्वरा बाज बांसे कुही बहरी लगर लोने,
टोने जरकटी त्यो सचान सानवारे हैं।
लै लै सखा हाथन में चारो बंधु साथन में,
छोड्यो खग गाथन में

रघुराज अवध नरेश के दुलारे जात,
सहज शिकारे भूमि भूरि भार खाइगे ।
दिशा गज भागै लगे शेश फन फाटे लगे,
कमठ की पीठि काचे घटसी नवाइगै ॥
कनक सँवारे बजे बिबिध नगारे भारे,
आवत अषाढ मनो घन घहरारे हैं ।
जागरे अपारे यश बिबिध उचारे नव,
नौबत धुकारे करनालै शोर प्यारे हैं ॥
बाजी पै सवारे भये बंधुन हँकारे राम,
नेजा कर धारे सखा सङ्ग पशु धारे हैं ।
सरयू किनारे महा बिपिनि मझारे दश-
रत्थ के दुलारे खूब खेलत शिकारे हैं ॥
रघुराज आइकै निषादराज बिनै कीन्ह्यौ,
बिपिनि मझार एक सिंधुर बलंद है ।
सुनिकै पुरुषसिंह सिंह लै शिकारी संग,
तरल तुरंग को धवायो रघुनंद है ॥
छोड्यो सिंह सिंधुर पै लीनो ललकार दैकै,
केहरी धरचो है करि वेग कै अमंद है ।
इतै मृगराज खायो काय गजराज केरी,
उतै गयो गोपुर को गर्बित गयंद है ॥
आइकै प्रतापी सखा भाष्यो नहिं मृषा भाषौं,
बाघ एक बेञ्यो देखि आयो यहि याम है ।
सुनत ही चारों बंधु धाइ अति चाय भरे,
दीन्ह्यो बाघ नेजा के करेजा बध काम है ॥
ताहि टटकारचो सोऊ मरचो करि शोर भारचो,

सरयू में हिली पकवानन को खाये हैं ॥
कोई सखा कहै मातु महारानी कोशिलाजू,
राम तुमहू सों मेरी छोह अति करती ।
भेजे पकवान स्वाद सुधा के समान जाके,
पायो तुम्हें राम तुम्हें नाहिं अनुसरती ॥
जाइ राजमंदिर में राम रावरे को काम,
आम करौं अंचा सों हमारी नेह भरतो ।
रघुराज देखों गो तिहारो काज रघुराज,
जननी समाज को न तेरी मति डरतो ॥
लषण देखावें कौर कर पसरावैं जब,
सखा लेन लागै तब निज मुख डारैं हैं ।
सिगरी समाज हँसै सोऊ सखा हँसि अति,
कहै रघुवीरराम बंधु को नवारै हैं ॥
हाँसी करै हठि हमहीं सों ये अनोखे लाल,
रघुराज रावरे को मुख ना निहारै है ।
चक्रवर्ती जनक महीप के समीप माहँ,
ज्यादे चारि बंधु ते दुलार तौ हमारै हैं ॥
रूसत सखानि जानि जाइ कै मनावैं राम,
खाइ त्यों खवावें कहि प्यारे तू हमारे हो ।
लषण भरत शत्रुसूदन को बोलै बैन,
सखन समान तुम मोहिं नाहिं प्यारे हो ॥
मीत मीत कहि कहि चारो बँधु हिलि मिलि,
तिनको कहत आजु बहु मृग मारे हो ।
श्रम को निवारि कारि
फे

रघुराज राम के निहारे ते अपारे पक्षी,
बसे अभिराम राय धाम के अखारे हैं ॥
जानि दुपहर बेला सखा सब हेला करि,
करि सरयू मे रेला वाजि जल प्याये हैं ।
पुलिन निकुंजन में भौंर भीर गुञ्जन में,
तजि कै तुरंग विसराम हित ठाये हैं ॥
जानि के श्रमित सैन चैन भरि चारो बंधु,
ऐन ऐसे कुंजन में बैठे मन भाये हैं ।
जुरिगे समाज रघुराज राजबंशिन को,
हंसत हँसावत शिकार सुख गाये हैं ॥
मातुन के भेजे मेवा करन कलेवा हेत,
ल्याये सूपकार सेवा आपनी देखाये हैं ।
व्यञ्जन अनेक मनोरंजन सुधासे मंजु,
भरि भरि चामीकर थारन धराये हैं ॥
चारो बंधु बाँटत सखान सरदार न को,
हीरा हेम भाजन मे भोजन डराये हैं ।
रघुराजराम को सलाम करै राजवंशी,
अति सतकार सरकारन ते पाये हैं ॥
हीरा हेम भाजन में भोजन करन लागे,
चारो बंधु मिलि सुखसिंधु में नहाये हैं ।
निज निज हाथन सो मीठ मीठ कहि कहि,
देत हे सखान माधुरी को पुनि गाये हैं ॥
कोई कहै हँसि हँसि हौं तो नहिं पायो कछू,
तापै फेंकि पय के कटोरे नहवाये हैं ।
रघुराज भोजन को भाजन ले भाजि सोऊ

धाये धरणी में सबै वाहन बिसारि कै।
पाछे ते मतंगन तुरंग चतुरंग वली,
पाउ नहिं पावै धावै वेग अति धारिकै॥
कुँवर अवाई जानि लेन अगवाई मुनि,
आये सुखछाई सब शिष्यन हँकारिकै।
मुनि को विलोकि राम परे पदपंकज में,
राम को विलोके मुनि पलक निवारि कै॥
ऋषि उर लाइ चारो बंधुन को मोद छाई,
आश्रम लेवाइ ल्याये सहित समाज है।
चूमि मुख शीश सूंघि कंदमूल दैकै कछु,
आशिष दियो सो वार वार कृत काज है॥
सुखमानिहारे वारै कोटिन अनङ्ग शोभ,
लोभि गयो मुनि मन देखि रघुराज है।
जप तप नेम व्रत याग योग भूल्यो सबै,
चित्र पूतरी सों चकि रह्यो मुनिराज है॥
बहुरि मुनीश तिय चारिहू कुमारन को,
सुखमा निहारन को निकट बोलायो है।
जाइ रघुनन्द मुनि नारि पद बंदि बैठे,
मातुन ते अधिक दुलार तहँ पायो है॥
पोंछि मुख चूमि चूमि पूँछैं भूख लागी प्यारे,
ह्वै गई अबेर अति कछू नहिं खायो है।
रघुराज ल्याई सो मिठाई मुनि मन भाई,
बिजन डोलाई निज पानि सों खवायो है॥
माँगो बिदा बहुरि मुनीश सों कुमार सबै,
हर्षि कै महर्षि उतकर्षि अन गायो है।

यहि विधि हँसत हँसावत सुछाइ मोद,
सखन खवाइ खाइ व्यञ्जन सुधा समान ।
अँचवन हेत उठि जाइ कै किनारे सबै,
अमीसों करन लागे सरयू सलिल पान ॥
धोइ मुख कर परछालि पग बैठे आइ,
सहित समाज चारौ बंधु रघुवंश भान ।
सखन सुहृद मित्र भृत्यन को भाइन को,
उठि उठि दीन्ह्यो रघुराज निज पाणि पान ॥
सरयू किनारे कहुँ बिपिन मझारे तहाँ,
निकट उतंश मुनि आश्रम रह्यो प्रधान ।
दुंदुभी धुकारे सुनि जानि पगुधारे राम,
सहज शिकारे मुनि मोदित भयो महान ॥
बोलि युग शिष्यन को पठयो प्रमोद भरि,
ल्यावो तू लेवाइ चरौ भातुकुल भास मान ।
चलि मुनि बालक सुविप्र दुख घालक,
नरेशकुल पालक सों वचन कहे प्रमान ॥
नाम है ऊतंग गुरु जानिये हमारे राम,
आपको हँकारे पगुधारे ते वनत हैं ।
गुरु गुरुआनी मति अति हुलसानी तुव,
दरश लोभानी पल कलप गनत हैं ॥
भाइन ते संग चतुरंग सैन लैकै चलौ,
महिप महान उतै मानव हनत हैं ।
रघुराज रावरे को दरश करत जन,
धन्य धरणी में होत वेदयों भनत हैं ॥
सुनि मुनि शासन उछाइ छाये चारौ बंधु,

तरुन को औलो फली महिमा उतंककी ॥
मणि सी उदक भरी सरसी लसी हैं बहु,
हाटक के घाट मंजु कुंज हैं निशंक को।
रघुराज सज्जित सिंगारा देवदारा चारु,
करहिं प्रचारा मुख सुखमा मयंक को ॥
वसन अनेक रङ्ग रङ्ग के पोशाक बने,
पादप झरन लागे जाकी जस भामना।
रतन अनेकन की जाति ते जटित वर,
भूपण परन लागे जानि जन कामना ॥
भोजन प्रकार पकवान सुधा के समान,
ठाम ठाम रासि लागी धाम धाम छामना।
सींचि गई गली शुद्ध सलिल सुगंधही ते,
रघुराज कौन कहै देवराज गामना ॥
खासे आमखासन में भासवा न वासन में,
मणि के प्रकाशन मे सकल सुपासे हैं।
सब दुख नासन में रतन के आसन में,
सरस विलासन में राजसुत भासे हैं ॥
देव सम दासन में करै कुलिसासन ते,
बीते घटी हांसन में सखा आसपासे हैं।
रघुराज राज सिंह आसन में राजैं राम,
करत हुलासन में विविध तमासे हैं ॥
अप्सरा अपारा नटसारा को पसारा कियो,
रूप की अगारा केशभारा लचै लंक है।
केती देवदारा सजी सकल सिंगारा तान,
लेती मनोहारा मुख पूरण मयंक है ॥

चाहौ कछु करन अतित्थ रावरे को नाथ,
तुम्हैं पूर्ण काम निगमागम बतायो है ॥
रहो युग याम इत अति अभिराम राम,
कीजिये अराम या अराम मन भायो है ।
सरयू के विपिनि शिकारी मनहारी वीर,
रघुराज देखे तुम्हैं जन्म फल पायो है ॥
मानि मुनि शासन त्रिलोक दुख नास नरमें,
है मुनि आसन में आनँद बढ़ाइ कै ।
ऋषि सो उतंग तपोबल सो निशंक ऋद्धि,
सिद्धि सुरलोक की विभूति को बोलाइ कै ॥
सहित समाजै रघुराजै सत्कार काजैं,
प्रगटायो दिव्य विभौ भू में भूरि भाइ कै ।
लोकन के लोकपाल अवनी अवनिपाल,
देख्यो ना सुन्यौ है कहूं नैन श्रुति लाइ कै ॥
हेम के हिमाचल सी हीरन जटित मणि,
मंदिर की राजी मेघ मंडल लों ह्वै गई ।
चन्द्रशाला चित्रशाला शयन विहार शाला,
पाकशाला मज्जन की शाला सब ह्वै गई ॥
भाइन की भृत्यन की सखन सुहृदहूं की,
पृथक पृथक शाला कंचन की वैगई ।
रघुराज हयशाला गयशाला रथशाला,
लोकशाल शाला सम सर्यूतट ज्वै गई ।
दूध की दही की घी की मधु को सिता की केती,
सरित बहन लागी पाय सके पंक की ।
काल औ अकाल ताजि नवल रसाल ताल,

न्यारे न्यारे विभव अगारेन अगारे हैं ।
छरीवारे सोटा वारे सेवक अपारे खरे,
रघुराज अवध दुलारे के दुआरे हैं ॥
देवता विमानवारे विभव निहारे नव,
हारे हिय लालसा बढाइ के अपारे हैं ।
महिमा महर्षि को उचारे मुख बार बारे,
जैसे सतकारे दशरत्थ के दुलारे हैं ॥
रघुराज औंधवारे प्यारे सब सैनवारे,
वचन पुकारे काज पूजिगे हमारे हैं ।
हेला करैं खेला करैं कुँवर नवेला वीर,
रेला मेला माचि रह्यो सरयू किनारे हैं
मुनि कृत पाइके अपार सतकार तहां,
राम चारो बंधु ऋषि निकट सिधारे हैं ।
नाइ शीश जोरि पाणि सविनय विनै कीन्ह्यो,
चाहत चलन चित्त सदन हमारे हैं ॥
रघुराज शासन जो पाऊँ तौ अवध जाऊँ,
रावरी कृपा ते न अघाऊँ युग चारे हैं ।
भाई भृत्य सचिव सुहृद सब सैनवारे,
दोऊ लोक भूले पाइ आप व्यवहारे हैं ॥
अति उतकर्षि वारि वर्षि निज नैननि,सो,
हर्षि के महर्षि चारो बंधु उर लाइके ।
शीश सूंघि चूमि मुख हाथ दै सुमंत्र पढ़ि,
पुलकि शरीर बोले बैन बिलखाइ के ॥
रघुराज जैसी होइ हृदय तुम्हारे अब,
बिनहि बिचार करौ तैसी ।

बाजैं डफगारा बीन बाँसुरो सितारा चारि,
तारा त्यों तितारा मुख लावतीं निशंक हैं ।
रघुराज रीझैं सरदार दै इनाम धारा,
अवधकुमारा कहै महिमा उतंक है॥
जौन मन भावै जाके सोई तहां तौन खावै,
जाके मन आवै जौन सोई तौन पावै है ।
भूषण बसन भावै तौन तहां परिधावै,
जौन उपजावैं चित सोई हठि आवै है ॥
महिमा महर्षि की प्रहर्ष वरपावै खूब,
रघुराज कोई नहिं चित्त को चलावै है ।
भावै नहिं औध अस सैन सब गावैराज,
सुतन सुनावै अब ह्यांते नहिं जावै हैं ॥
आइकै अखर्व सर्व गंधरव गान करैं,
भृत्य भृत्य निकट सुनृत्य होन लागीहै ।
लोकप के मौज से प्रमोदी सब फौजवारे,
भवन विसारे राजवंश के समागी है ॥
हल्ला है रह्यो है सो महल्लन महल्ला मंजु,
कोई नहीं तल्ला लेत कोई सो सुभागी हैं ।
रघुराज पाये खान पान सनमान खूब,
भानवंश के निशान दूनी दुति जागी है ।
चौरवारे क्षत्रवारे पंखा के झलन वारे,
पान दानवारे बहु पीकदान वारे हैं ।
आतपत्रवारे मोर मुर्छल करनवारे,
अनुपम अतरवारे राजत हजारे हैं ॥
महिमा महर्षि की निहारे रघुवंशवारे,

पीलपाल आगे आगे पेले सबै पीले हैं ॥
गज नगरट्ट गयो जहां वन ठट्ट लाग्यो,
महिप झपट्ट कीन्ह्यो तहां झट्ट पट्ट है।
कोई गज पट्ट परे कोई गज चट्ट भागे,
विगत खटक्क वीर मारे वाण पट्ट है ॥
महा उदभट्ट कीन्ह्यो महिप रपट्ट खून,
धावत लपट्ट सो गयंद नल पट्ट है।
परम विकट्ट नट्ट वट्टही सों धारे वेग,
रघुराज आयो राम निकट निपट्ट है ॥
कान लगि तानि के कमान वाण मार्यो वेश,
भानुकुल भान रघुकुल को प्रधान है।
महिप महान भेदि शायक समान भूमि,
मेघ के समान तऊ नेकु ना परान है ॥
आवै समुहान करि वेग वे प्रमान सहै,
शस्त्रन अमान तव लषण सुजान है।
वारन विहाइ काट्यौ शीश दै कृपान सो,
विमान चढ़ि कीन्ह्यो वयकुंठ को पयान है ॥
वाह वाह कीन्हे सबै सुभट उछाह छाये,
लषण लला की बाँह पूजत उमाह ते।
अनुज को कीन्ह्यो हिय माहँ हंस वंस नाह,
बहुत सराह्यो सुख सिंधु अवगाह ते,
रघुराज पावै कौन वीरता की थाह तेरी,
शूरन की शूरता है तेरि येसनाह ते।
भरि उतसाह है हमेश जयसाह रघु-
कुल तो पनाह पावैं तेरी बांह

तन इत रैहै मन रैहै रावरे के संग,
रसना न राखी रस जाइये सुनाइ कैं ॥
मुनि पद बंदन कै विदा रघुनन्दन ह्वै,
होत भे अनन्दन सुस्यन्दन सवारे हैं ।
सबैं राजनंदन जोहारे कुलचन्दन को,
बाजि उठे एक बार वृन्दन नगारे हैं ॥
रघुराज चली चतुरङ्ग मग मंद मंद,
राम मुनि नन्दन को वहुरि हकारे हैं ।
महिष बेलंद कहा करै जन कंदन को,
दीजिये बताइ ताहि दंडन सिधारे हैं ॥
कर को उठाइ मुनि बालक बताइ वन,
गये निज सदन सिधाइ अतुराई कै ।
रथ को बिहाइ राम महिप सो युद्ध काम,
शत्रुंजय नाम गज चढ़े आसु आइकै ॥
रघुराज भरत लषण शत्रुसूदनहूं,
सिंधुर सवारी किये चापन चढ़ाइके ।
केवल मतङ्ग आवैं और नहिं संग जावैं,
कह्यौ सरदारन को शासन सुनाइ कै ॥
कुँवर छबीले त्यौं रँगीले राजबंशी राजैं,
गजन मदीले चढ़ि चले चटकीले हैं ।
हौदन दचीले तरु टूटत डरीले शैल,
होत है फटीले शेष फन चलकीले हैं
रघुराज ढीले करि नाग नीले नीले भ्राजैं,
पूरुब पवन पाइ मानो मेघ नीले हैं ॥
ढीले नहिं कुँवर शिकार के सजीले सबै,

चतुर शिकारी एक चटक बखानो है ।
चंड मुंड ही सों चंड चंड अंशही सों अंशु,
परम प्रचंड एक खड्गी देखानो है ॥
शीश में सुमेर कैसो शृङ्ग है उतंग शृङ्ग,
गर्वे है गयंद कैसो बड़ो बलवानो है ॥
रघुराज चटक चलीजै बध कीजै ताहि,
अबलों न ऐसो कहूं जंतु दरशानो है ॥
सुनत शिकारी बैन धीर धनुधारी भैन,
चले कै तयारी चारो बंधु बर बीर हैं ।
पेलत मतङ्गन को रेलत तुरङ्गन को,
आये जहां ठाढ़ो गैंडा गाढ़ो विन पीर है ॥
रघुराज देखत भरत चन्द्र चाप धार्यो,
झेलके गयंद हन्यो ताको एक तीर है ।
खड़्गीन खेत आयो कोपित करिंद धायो,
भरत बचायो गोहरायो रघुबीर है ॥
दन्तन सों दाबैं दन्ती खड़्गी बचावै खूब,
रेला रेली ह्वै रही है गैंडा औ गयंद की ।
चारो ओर घेरि सबै राजन किशोर करि,
शोर दीन्ही मारवान चढ़िन के वृन्द की ॥
घायल सोघूमि रह्यो खड़्गी घमंड भरो,
नेजा नोक लागी शीश केकयी के नंद की ।
निफरि धसी सो भूमि गैंड़ा गिर्यो घूमि घूमि,
साखी रघुराज भाषो कह्यो रघुचंद की ॥
भरत को बार बार करत प्रशंसा राम,
सकल कुमार लागे क हैं ।

चित्र मृग श्रिमरग वेगन विलोकि वन,
ढीले चटकीले ग्राम सिंह चले धाइकै ।
पीछे राजकुँवर धवाये हैं तुरङ्गन को,
धाये हैं मतंग पीछे वेगन बढ़ाइकै,
रघुराज सिंह के समान सहसान गहे,
विविध मृगान कोपि कुत्ते अतुराइ कै
राम जू के श्वान इतै खीचैं वनजीव
गोपुर की ललना लै जाती हैं छोड़ाइ
कानन में करत कुतूहल को कमनो
कुँवर समेत कोशलेश के कुमार हैं
करत कुरङ्गन सों कुंतल की केलि
कला के कलापी काम कांति के
काल से कराल केहरी पै करि क
काय के त्रिकूटै कूटै करिकै चि
करि करि कुधर से कुंभन में
रघुराज करत शिकार सुकुमा
खेलि खेलि खेटक को खूब
विपिनि अखंड खंड करै खु
खेचर से तेज खासे खेचर
खेचर के खेचर के गति
रघुराज राजै रघुचन्द्र
खूबी के खजाने खोले
खासे आमखास वारे स
खामिद के प्यारे रघु
चमू चतुरङ्ग रघुचन्

ग्रस्यो गांसि गाढ़ो गोड़ गेयर चिकारयो है ॥
गिरत गयंद को निहारि शत्रुशाल लाल,
मारि चक्रबान नक्र बदन बिदारयो है ।
रघुराज ग्राह ते छोड़ायो ज्यों गोविंद गज,
पकरि बितुंड शुंड तैसही उबारयो है ॥
विक्रम त्रिविक्रम सो देखि शत्रुसूदन को,
बीर वर बदन बखाने बार बार हैं ।
अनुज उछाही आइ राम को सलाम कीन्ह्यो,
लीन्ह्यो अंक अभिराम कौशिल्या कुमार हैं ॥
रघुराज पोंछैं मुख फेरैं पाणि फेरि फेरि,
हेरि हेरि हियरे लगावैं दै दुलार हैं ।
खासी करी खासी करी खासी करी बांके बीर,
बीरता विदित महिमंडल मझार हैं ॥
खेलत शिकार चहुँ ओर बन ठोर ठोर,
जानि दिन थोर बानी सहित निहोर की ।
भाषो सखा जाइ राम ठोर कर जोरि जोरि,
ऐसी है रजाई पिता भूप शिरमोर की ॥
रघुराज आइयो अजोर ही में भौन ओर,
चलो चित चोर कीन्ही क्रीड़ा सुखओर की ।
सुनि कै प्रतापी बैन चमू चतुरंग फेरयो,
अवध की ओर चली अवधकिशोर को ॥
मंद

बरछो तिहारो लगो तिरछी निफरि गई,
खड़गी रह्यो सो काल मेघ के समान हैं ॥
रघुराज भरत निछावर करत वीर,
राम पहिरावैं इतै बंधु भूपणन हैं।
भूपण बसन पहिराइ उतै देवदारा,
गैंड़ा कहँ लै कै कीन्ह्यो गोपुर पयान हैं ॥
सलिलहुलासी भई प्यासी सब सैना तहाँ,
अवध निवासी सरयू के तीर आये हैं।
पान कै पियूष सम नीर रणधीर सबैं,
तैसै वाहनान पय पान को कराये हैं ॥
राज शिरताज के कुमार सों निपाद राज,
रघुराज आइकै शिकार काज गाये हैं।
नक्र एक बक्र महा शक्रही के सिंधुर सों,
सरयू किनारे बंधु मेरे देखि आये हैं ॥
दुवन प्रतापी सखा बोलि कै प्रतापी तहाँ,
परम प्रतापी राम बचन उचारे हैं।
पापी ग्राह गेरि चढ़ि गैयर में मारो जाइ,
थापी तेरी वीरता प्रवीरन अपारे हैं ॥
रघुराज सुनत सखा सोपधा पोंछि पाणि,
त्रिसखा त्रिशूल लिये चपा अरुणारे हैं।
गैयर सवार गयो ग्राह पै गरूरदार,
पाछे शत्रुशाल लाल सुखत सिधारे हैं ॥
महा विकरार गज पर्वत अकार कोध,
सायो है करार ते त्रिशूल ताहि मार्यो
मकर महोषव सो माखिकै मतंगज क.

तस तस पुरजन धावत सुखारे हैं ।
देखि रघुलाल को निहाल होत रघुराज,
भाषै भूप लाडिले हमारे प्राण प्यारे हैं ॥
अवध बजार बीच आई है सवारी जब,
देखि पुरनारी तन मन धन वारी हैं ।
चामीकर थारन में आरती उतारी आसु,
बरषें प्रसून लाजा मोद भार भारी हैं ॥
लेतीं बलिहारी मनहारी मंजु मूरति की,
राजमाधुरी निहारी पलक निवारी हैं ।
रघुराज कोटिन अनंग छवि वारों छवि,
वारी वेसवारी देखि छैलन शिकारी हैं ॥
मंद मुसक्याइ लेत जियरो लोभाइ नैन,
पथ ह्वै हिये में आइ फेरि टारे ना टरैं ।
कोटिन अनंगन की सुछवि तरंग अंग,
अंग प्रति होत बदरंग सम क्यों धरैं ॥
डहर डहर परी कहर शहर बीच,
चहर पहर माचि रह्यो तेहि पाहरैं ।
रघुराज कौन कामिनी जो करै कुलकानि,
कौशलेश कुँवर कटाक्षन कटाकरैं ॥
मंद मंद चलति गयंद की सवारी भारी,
प्यारे रघुनंदन की आतन समेत हैं ।
मंग संग,
हैं ॥

बोलत नकीब सुखसीव रघुराज आगे,
बीरन की बीरता दिशानन लों दमकै ॥
सांझ समै चारु चतुरंग रघुनंद जू की,
औध अमराई आइ चंचला सी चमकै ॥
बजत निशानन दिशानन लो छायो शोर,
फहरै निशान अंशुमान को छपावते ।
नौमत झरत सुर भरत सुभूमि भूरी,
बोलत नकीब वृन्द परम उरावते ॥
रघुराज रथ घहरानि घनही सों घोर,
बाजिन के बारण के शब्द अति भावते ।
हल्ला पर्‍यो अवध महल्लन महल्ला मध्य,
खेलि कै शिकार भूपलल्ला चारि आवते ॥
शरदघटासी ऊंची अमल अटा में चढ़ी,
बिज्जु की छटा सी छटा छावै पुर नारी हैं ।
चितै चतुरंग चमू भरि कै उमंग उर,
साजे आरती को लीन्हे चामीकर थारी हैं ॥
रुचि रुचि रंग रंग बिबिध प्रसून लाजा,
हर्ष उतकर्ष कीन्हे वर्षन तयारी हैं ।
रघुराज सहित समाज राज बंशिन ते,
आवैं कौशलेश जू के कुँवर शिकारी हैं ॥
दूब दधि रोचन धरे हैं मग चारों ओर,
नगर बिराजै रम्भ खम्भ द्वारे द्वारे हैं ।
यूथ यूथ नारी नर ठाढ़े हैं दरश आसी,
ह्वै है सुखरासी राजकुँवर निहारे हैं ॥
जस जस नगर धसति चतुरंग चारु,

गयो सरवस्व पाइ सूंघ्यो सुत माथ को ॥
भुवनाभिराम राम करिकै सलाम भूपै,
बैठे तेहि ठाम बंधु सहित ललाम हैं।
पूरि मनकाम पितु पूछ्यो कहो राम कहाँ,
कीन्ह्यो है अराम कैसे बीते तीनि याम हैं॥
रघुराज करहु शिकार को बखान आम,
केते मृग मारे कौन कौन तिन नाम हैं।
कौन कीन्ह्यो कैसो काम कौन को दियो इनाम,
वदन मलान लाल लाग्यो अति घाम है।
कहन शिकार कथा लागे रघुवंशी लाल।
मार्‌यो विकराल ग्राह एक शत्रुशाल है।
भरत शिरोमणि प्रचारि गाढ़ो गैंड़ा हन्यो,
लषण महिप माथ मार्‌यो करवाल है॥
कोई सखा मार्‌यो मृग कोई सखा सेर मार्‌यो,
मैहूं गजराज मृगराज मार्‌यो हाल है।
रघुराज वहुरि लेवाइ गे महर्षि धाम,
कीन्ह्यो सतकार जोन पायो कौन्यों काल है॥
सुतन शिकार सुनि पाइकै अपार सुख,
नृपति उदार वकशीस देन लाग्यो है।
काहू को मतंग दीन्ह्यो काहू को तुरंग दीन्ह्यो,
दीन्ह्यो पुनि जोई जोन जोरि कर माँग्यो
जैसे राम तैसे राम नैसे

आनंद अपार देत विविध जोहार लेत,
आये रघुराज राम पितु के निकेत हैं ॥
द्वारही ते भेज्यो प्रतीहारै दरवारै रान,
जाइ सो जोहारयो चक्रवर्ती नरनाथ
भरि अहलाद अहलाद उपजाइ भूपै,
विनै मरयाद ही सो कीन्हो जोरि हा
रघुराज रावरे के चारिहू कुमार आये
खेलि कै शिकार चाहैं नायो तुम्हैं
शासन करीजै देव दरशन दीजै अ
भरत लषण शत्रुशाल रघुनाथ को
सुनि नृपराय सुख सिंधु में नहाय
ल्याइये कुमारन को आसु मेरे प
दूत दौरि आयो सो कुमारन सु
चलिये जनक आम खास के
सुनिकै नरेश सुत उतारि गयंद
मंद मंद चले पितृ दरश हुल
देख्यो दरवार बैठे भूपति
वासव अगारै को अखारै
सकल समृद्धि युत वृद्ध
रिद्धि सिद्धि निद्धि ठाढ़ी
रघुराज रतन खचित
राजैं राज शिरताज
छपापति छत्र छाजे
सहित समाजै सो
निकट बोलाय

केकयी सुमित्रा आइ गईं अति आसु है।
सखिन समेत सीता लागी हैं झरोखन में,
और रनिवास आयो तौनेहीं अवासु हैं॥
चारों बन्धु प्यारे सखा सहित हुलास भारे,
परे सब मातुन के चरण के पासु है।
रघुराज महाराज राज दुलहेटन को,
छाइ रह्यो सदन में बदन बिलासु है॥
राई लोन जननी उतारि नील चीरही जारि,
डीठि मूठि टोना झारि वारि त्यों उतारिकैं।
सुखमा सदन चूमि बदन नंदन पाणि,
पकरि लेवाइ गईं मणिगणवारिकै॥
गोद बैठाय माय पूंछैं सुख पाय लाल,
कहाँ लगि जाय खेलि आये मृग मारिकै।
बदन मलीन श्रम भयो है महान प्यारे,
कहो रघुराज मृगया की कथा झारिकै॥
कह्यो रघुराज गजराज मृगराज मारे,
खड्गी महिप त्योंही मकर सँहारे हैं।
तरल तरङ्ग तीखे तुरत तुरङ्गन ते,
केतेन कुरंगन को दौरि दलि डारे हैं॥
गये एक आश्रम में सबै श्रम नाशे तहाँ,
योग के प्रभाव ऋषिराज सतकारे हैं।
जननी कियो सो मुनि घरनी दुलार भारी,
मानि हमैं बार बार बारे ये हमारे हैं॥
बदन बिलोकि निज ५ [illegible] बाहु मातु,

भूपति विलोकि श्रम अमित कुमारन को,
स्वेद बिन्दु मानो अरविंद ओसकन है ।
बार बार करिकै दुलार भूमि भरतार,
बैन सुधा धार से उचारयो ताही छन है ॥
रघुराज चारों लाल जाहु जननी के भौन,
भोजन करीजे सैन कीजे चयनन हैं ।
नैन अलसाने प्यारे कुँवर सुखाने सखा,
गमने मकाने अब ऐसी मोर मन है ॥
सुनिकै पिता के बैन उठिकै तुरंत राम,
करिकै सलाम मातु धाम पगु धारे हैं ।
सुहृद सचिव अनियारे सरदारे सखा,
द्वार पहुँचाय रघुचंद को जोहारे हैं ॥
जिन अधिकार रनिवास को प्रचार रह्यो,
राम के दुलारे सखा संगही सिधारे हैं ।
रघुराज बंधु चारे पानिप के पारावारे,
कौशिला अगारे गये कौशिला के बारेहैं ॥
कुँवर अवाई सुनि मोद अधिकाई मातु,
नारिन पठाई ते वे कलश लैं धाई हैं ।
दधि दूर्वा तंदुल प्रदीप धरि थारन में,
मंगल करत गान द्वार देश आई हैं ॥
नल को उतारि त्रिकुटी में दधि टिकुली दै,
लै चलीं लवाइ लेतीं सकल बलाई हैं ।
रघुराज आनन को चूमि भूमि आँगुरीन,
तोरि तृन तोरि मनि विविध लुटाई हैं ॥
कुँवर सिधारे गृह कौशिला के ऐसी

आशिष दे विदा कीन्ह्यो निज निज धाम हैं ॥
जानि निज काम तेहि याम में सहेली सबै,
लै चलीं लेवाइ आमखास को ललाम हैं।
रघुराज कोटि काम होत छबिछाम जापै,
कीन्हे अभिराम राम धाम में अराम हैं ॥
ह्याँलों मेरो भावना है आगे नहीं जानों कछु,
ठाढो रहौं छरी लीन्हे रोज राम द्वारे में।
बिविध बिलास रास हाँस रनिवास केरो,
मोहिं ना हुलास इतिहास के उचारे में ॥
रघुराज दास्यभाव मेरे गुरु दीन्हे मोहिं,
ताते कौन काम रासलीला के निहारे में।
स्वामिनी विदेहलली स्वामी कौशलेश लाल,
पाऊं सरवस्व सुख चारु चौंर ढारे में ॥

दोहा–यह शिकार को शतक मैं,रच्यो सुमति अनुसार।
राम रसिक बाँचैं सुनैं, तिन प्रणाम बहु बार ॥
नहिं जानौं मैं छन्द गति, नहीं भक्ति नहिं भाव।
जो कछु नीकी होइ सो, सज्जन कृपा प्रभाव ॥
सज्जन दीजे दोष नहिं, बिगरो कछू बिचारि।
रघुपति लीला जानिकै, लीजै सकल सुधारि ॥
संवत्सर चखनिधि शशी, ऊर्ज शुक्ल शनिवार।
भो संपूरण पूर्णिमा, रघुपति शतक शिकार ॥
आनँद मंगल भाँति यहि, रहत अवध महँ रोज।
उदित राम अभिराम रबि, बिकसित प्रजा सरोज ॥

छंद

एक समै

कहाँ पायो जोर ऐसो जाते मारयो मृगराज,
हहरत रहे हेरि हाऊ भय भागीना ॥
खैंचे हौ कमान तानि कोमल कमल पाणि,
मेरो जिय डरत भुजानि पीर जागीना।
रघुराज निडर भये हौ राज राज प्यारे,
बरजत कोइ उतैं वृद्ध वड़भागी ना।
क्षुधित कुँवर जानि व्यंजन विविध आनि,
जननी लगी हैं सुत भोजन करावने।
कौशिला लषण लालै शत्रुशालै गोद लीन्ह्यो,
लीन्ह्यो रघुलालै अंक केकयी सुहावने ॥
भरतै सुमित्रा भूरि भोजन करावै लगीं,
कहै यहौ मीठो यहो मीठो वही खावने।
रघुराज तेरे काज रचे पकवान केते,
बाँकी अवै मेरे कौर द्वैक मुख लावने ॥
यहि विधि व्यारी करवाइ चारों लालन को,
कर पग सलिल धोवाइ दियो पान हैं।
प्रहर प्रमाण जानि जननी कियो बखान,
कीजै शैन चैन ऐन नैन अलसान हैं ॥
जागियो न रैन अब कारज कछू क है न,
मेरे प्यारे तुमसों न मोहिं प्यारे प्रान हैं।
रघुराज राज शिरताज के अनोखे ढोटे,
फहरैं तुम्हैं सो रघुकुल के निशान हैं ॥
मातु को रजाइ पाइ चारों भाई सीस नाइ,
द्वार देश आइ ठाढ़े भये तेहि ठाम हैं।
भाइन सलाम लै कै सखन प्रमाण लै कै,

हमहुँ गये पुनि मिथिलापुर को लख्यो विवाह उछाहू ।
आये अवध लखे परछानि सुख मिट्यो सकल दुख दाहू ॥
बहुत दिवस बीते इत निवसत अब अस कृपा करीजै ।
भरतहि पठै आसु हमरे संग सासु ससुर सुख दीजै ॥
सुनत भूपमणि विरह विवश तहँ कढ़ी न मुख कछु बानी ।
भेजत बनत न रोकत बनत न भै दुचतई महानी ॥
गुनि वशिष्ठ संदेह नृपति को बोल्यो वचन उदारा ।
भेजहु भरत होउ शंकित जनि संमत अहै हमारा ॥
केकय कुँवर युधाजित को नृप सविधि करहु सत्कारा ।
सुनि गुरु वचन विहाल काल तेहि वचन भुआल उचारा ॥
गवनहुँ भरत युधाजित के सँग केकयदेश सोहावन ।
अपने मातामह को मेरी कहियो नति अति पावन ॥
चंचलता तजि रह्यो रीति महँ मातुल कुल महँ प्यारे ।
बहुत बुझाय कहौं का तुमको सब गुण सुखद तुम्हारे ॥
पितु शासन धरि शीश भरत उठि जनक कमल पद बंदे ॥
कह्यो वचन मातुल के सँग में जैहौं आसु अनंदे ॥
तेहि औसर उठि शत्रुशाल युग जोरि पाणि अस गाया ।
मोहूं को दीजे निदेश पितु तन तजि रहति न छाया ॥
कह्यो भूप गवनहुँ तुमहूं उत करन भरत सेवकाई ।
रहियो सावधान सब कालहि किहेहु न कछु चपलाई ॥
पुनि भुआलमणि वसन विभूषण रथ तुरंग मातंगा ।
दियो सभाजि युधाजित को तहँ वर आयुध बहुरंगा ॥

दोहा—उठि दशरथ निज स्याल को, मिल्यो बारहीं बार ।
कीन्हो विदा नि
भरत

भाइन भृत्यन सचिव महीसुर संयुत सकल सुखारी ॥
गुरु वशिष्ठ तेहि अवसर आये उठो समाज निहारी ।
भूपति चलि लीन्ह्यो कीन्ह्यो नति अपनो नाम उचारी ॥
सिंहासनासीन करि गुरु को विनै कियो अवधेशा ।
तुम्हरी कृपा नाथ पायों सुख मिटिगो सकल कलेशा ॥
कह्यो वशिष्ठ भूप तेरे सम रवि ते लगि अरु आजू ।
भाग्यवान इक्ष्वाकुवंश महँ भयो न कोउ महराजू ॥
जासु राम सम सुवन जगत महँ करै को तासु बड़ाई ।
शेष शारदा शंकर गणपति थकेआप यश गाई ॥
तेहि अवसर केकयनरेश को कुँवर जुधाजित नामा ।
आयो राज राज दरबारै अहै भरत को मामा ॥
करि प्रणाम दशरथ को तैसै पुनि बंद्यो गुरु काहीं ।
पूछि कुशल कौशल नरेश तेहि बैठायो ढिग माहीं ॥
कह्यो युधाजित भागनेय मम कहँ चारिहू कुमारा ।
तिनहि बोलावहु आसु भूपमणि चहौं विशेष निहारा ॥
सुनत स्याल के वचन महीपति पठै सुमंत तुरंता ।
भ्रातन सहित राम बोलवायो आये अति विलसंता ॥
उठी समाज राम कहँ देखत सबके हिये जुडाने ।
गुरु को पितु को करि प्रणाम प्रभु मातुल को सनमाने ॥
बैठायो अपने आगे तिन बंधु केकयी केरो ।
राम बदन निरखत अनमिख चख आनँद लह्यो घनेरो ॥
हुलसि कह्यो कौशलपति सों अस करो विनै मम माता ।
लखन चहों में भरत सुता सुत जाय ल्याइयो ताता ॥
हम आये काश्मीर नगर ते अवध नगर यहि हेतू ।
तुम ब्याहन सुत गये जनकपुर लखे न इत कुलकेतू ॥

सुहृद सचिव संमत विचारि मन गुरु को वचन सुनायो ॥
जो आचारज शासन दीजै तौ अस कारज होई।
करहिं राम सों विनय प्रजा सब निज निज कारज जोई ॥
कह्यो वशिष्ट राम यहि लायक भूपति भली विचारी।
पुरजन काज करहिं रघुनायक तुव शासन शिरधारी ॥
सुहृद सचिव सज्जन सराहि सब निज निज संमत कीने।
हुलसि राजमणि बोलि रामकहँ सौंपि काज सब दीने ॥
पुलकित प्रजा प्रमोदित भे सब कीन्हे जयजयकारा।
युग युग जियें जानकी रघुपति हमरे प्राण अधारा ॥
प्रभु शासन शिर धारि रघूत्तम करन काज सब लागे।
प्रति दिन पितु सों पूँछि पूँछि सब यथायोग अनुरागे ॥
धर्म धुरंधर चतुर शिरोमणि विना हेत के हेती।
सबको हित अरु सबको प्रिय जेहि करै विनय सुनि तेती ॥
उठि प्रभात करि प्रात कृत्य सब करहिं सो मातन काजू ॥
पुनि गुरु विप्र काज निरधारत गुरु गृह चलि रघुराजू।
करहिं काज पुनि पुरबासिन को सिगरे प्रजन बोलाई।
अरज गरज सुनि चरजि चित्त महँ हरज लरज बरकाई ॥
शासन उचित देहि सब कहँ प्रभु मंजुल वचन सुनाई।
काज अकाज छोड़ि पुरजन सब प्रभु दरशन हित आई ॥
विनय सुनावहिं आनँद पावहिं प्रभु छवि नयन छकाई।
लषण सहित प्रभु जाय जननि गृह भोजन करहिं सदाई ॥
सकल दिवस भरि काज करहिं जो सो सब पितै सुनाई।
शासन उचित लेत पितु सों सब अपनो हेत बुझाई ॥
याम दिवस बाकी रघुनंदन निकसहिं सहित सवारी।
अथवा मृगया हेत जात ॥

पुनि रघुकुल मणि के चरण, वंद्यो शीश छुआय ॥
जाय भवन निज जननि को, कह्यो प्रसंग बुझाय ।
माँगि विदा पुनि कौशिला, भवन आसुही आय ॥
कहि प्रसंग शिर नाय कै, लषण मातु कहँ वंदि ।
काशमीर को चलत भे, सानुज परम अनंदि ॥
यक अक्षौहिणि सैन तव, पठयो भूपति संग ।
करन पंथ रक्षण सुवन, चली चारु चतुरंग ॥
मातामह के भवन महँ, सानुज भरत सिधारि ।
केकय नृप के वंदि पद, पितुनति कह्यो उचारि ॥
केकै अधिप सुता सुवन, लखि सुख लह्यो अपार ।
प्राण सरिस राख्यो दुहुन, करि नित नव सतकार ॥

छन्द चौबोला ।

जबते गये भरत मातुल कुल तबते लछिमन रामा ।
करहिं राज पितु की सेवकाई पूरहिं जन मनकामा ॥
सोहत अवध तखत पर दशरथ विभव शक्र संकाशा ।
फेरत शासन नवौ खंड महँ मित्र हरष अरिनाशा ॥
नित नव आनँद होत अवधपुर सुखरासी पुरवासी ।
रघुपति शील सनेह स्वभाव कथत नित दरशन आसी ॥
चढ़ि मतंग कहुँ चढ़ि तुरंग कहुँ चढ़ि सतांग पुर माहीं ।
विहरत सखन सहित सुखदायक प्रातहु सांझ सदाहीं ॥
प्राणहु ते प्रिय राम जाहि नहिं अस कोउ त्रिभुवन नाहीं ।
का कहिये प्रभु अवध प्रजन को बसहिं जे प्रभु भुज छाहीं ॥
एक समय सब सचिव महाजन सुहृद सहित सरदारा ।
बैठ्यो दशरथ भूप सभा महँ गुरु को आसु हँकारा ॥
गये वशिष्ठ राजमंदिर महँ नृपनति करि बैठाये ।

रघुराज वदत सुनेन हे विदेहवाले,
विपुल विलोकिये वहार वरधंत है ।
वालन में वागन में वासन मे वारन में,
वन में वगारन में वसत वसंत है ॥
गहन में गावन में गिरि में सुगोधन में
गृह में गिरा में गोरी ग्रीपम यों छै गयो ।
गान में सुगायक में गुणमें गुणीजन में,
गोपति के गोगन में गर्म अति ह्वै गयो ॥
गो में पुनि गो में पुनि गो में पुनि गो में गुरु,
गुरु जनहू में त्यों गलानि गुण वै गयो ।
रघुराज गदत गरीव को नेवाज गाढो,
ज्ञानिन के ज्ञान में अज्ञान अस ज्वे गयो ॥
गुलगुले गिलिम गलीचे गादो गेह विछे,
गोरस के फेन ऐसे गरक गुलाव हैं ।
गोरस गिलासन में हिमगिरि गोहन के,
गिरत सुगैलन में गेहन ते आव हैं ॥
गौरि गंग सरिस सुगेहिनी सुनैरी गिरा,
रघुराज गदत गुमान के गमाव हैं ।
गिरि ते गहन ते गवाक्षन ते गौंन करैं,
ग्रीपम गुराव की ये गरम गिरावहैं ॥
पूरुव प्रचंड ये पयोधर पसरा कियो,
पारावार परसि कैं पूपा परेशानी ते ।
पूरे पय पुहुमि सुपादपनि पुष्ट कीन्हे,
पुरुप पशुनपक्षी ८
पृथिवी परत

साँझ समय पितु निकट आय पुनि अपने महल सिधारें ।
लषण सखन युत लखत नृत्य नित सुनत गान सुखसारे ॥
बीतत यामनिशा जननी गृह कराहिं सबंधु बिआरी ।
करहिं शयन पुनि कनकभवन महँ मोदित अवधविहारी ॥
अति प्रसन्न पितु सुत कारज लखि करहिं बखान सदाहीं ।
सज्जन साधु विप्र पुरवासिन काहि प्राण प्रिय नाहीं ॥
पुरजन परिजन सभ्य देशजन सज्जन भूसुर साधू ।
राम सनेह शील गुण बाँधे लहे न सपनेहु बाधू ॥
कियो बिमल यश धवल दिगंतन विक्रम विश्व बडाई ।
रमारमण सम सकल गुणाकर को पावै समताई ॥

दोहा—ऋतुपति ग्रीषम पावसहु, शरद शिशिर हेमंत ।
जनकसुता युत सुख लहत, अवधनगर निवसंत ॥

कवित्त ।

विकसत कुसुम विलास वर वेलिन को,
बगरी सुवास बन विविध विहार है ।
विधु को विकास विश्व विमल भयो है व्योम,
बोलत विहंग वृक्ष बैठे बार बार हैं ॥
बसुधाधिराज को सुबेटा वर रघुराज,
वलित विदेह बेटी विरचि विचार है ।
वदत सुबैन वामलोचनी विलोकै बसु-
धा में बसुधाधर बसंत की बहार है ॥
विकसे सुवारिज विमल वारिजा करन,
विश्व मे विभाकर विभास विलसंत है ।
वीरुध त्यों विदल विलोकि विरहीन व्यथा,
विटप विशोक करै नवदलवंत है ॥

सजि सजि सौंह होत सांकरो सरमि ससि,
सम्हैरै न सीते तव मुख समताई है ॥
हेरिये ह्वेलिन में हेलिन के हेला मचे,
हरबर होत हुब्ब होसहू शहर में।
ह्रद में हुलास हिलि मिलि कै हँसन हेत,
हंस हौसला ते होन हंस से डहर में।
ह्वै गयो हिमंत हद्द हायन में हानि हंनि,
हाउ को हटाउ नहिं अहनि परहर में।
रहै क्योंहूं वास हिय हिय के हटाये हठि,
हार हेरवाय देहु हिमि को हहर में ॥
हारिये न हिम्मत हिमंत में हमेश हेली,
हूलसी हिलातीं हिये हिमकर किरणें।
हारन हजारन में होरन के हारन से,
हिमकन होश हरैं हिमगिरि वरणें ॥
रघुराज हाजिर हजूर में हिमायतोहैं,
हेरिये विहार हार हरनी त्यों हिरनें।
हारि हरि हौंसला ते अति हहराने हव्य,
वाट को न चहत हिराने हिमि डरनें ॥
सर में सरित में सरोवर में सागर में,
सघन सहेटन में सदन शिशिर है।
सैन में सुसैनन में सब सजनीनहूं में,
सज्जन समाज में दिशानन के सिर है ॥
सौप में सरोपहूं में शीत में सुभायहूं में,
सौंकरे सहजहूं में सीत ... ।
रघुराज

पावत परम पीर प्रोषित जे प्रानी ते ।
रघुराज प्रवदत प्राणप्रिया पेखु पूरो,
पावस प्रताप को प्रकाश पौन पानी ते ॥
पपीहा पुकार प्यारी परत प्रमोद पोपी,
प्रचैरं पखेरू पति पतनी पियार में ।
पौढ़िगे परेस त्यों पधारे परदेशी देश,
पूपन छपाने पयोधर के पगार में ॥
रघुराज देखु प्रिया पंथन में पादप में,
पावस प्रचार पूरो पुहुमि पसार में ।
प्रेम में प्रयोजन में पानी में सुप्राणिन में,
पारावार प्रान्तन में पत्तन पहार में ॥
सोह्यो शुद्ध सलिल सुसरिता सरनहूं में,
सूखिगे सुपंथ त्यों सफाई सरहद की ।
सिखी सिखि नीके सुख सकल सुखाने सुखी,
सिंधुर समाने जल सोख में समद को ॥
सुंदर सरोज सरजू में सरसान लागे,
सरसी सरस शशि सुंदराइ सदकी ।
सुंदर सदन बैठी सखिन की स्वामिनी,
सुरेखु रघुराज सुख सुखमा शरद की ॥
शूर की सरोपताई शशि शीतलाई सोखै,
शर्वरी सदाई सबही को सुखदाई है ।
स्वाद भे सुभग अन्न सरस सवालि साली,
सोभती सुसीसन सिखंड सी सोहाई है ॥
रघुराज शरद सोहाग सजनी को सज-
नीको सरसीन में सरोज ... ।

चंद घटै बढै तापै कलंकित जाते नहीं उपमा की उदोती ॥
विश्व विभा जो विरंचि बटोरि रचै निपुणाई लगाय कै सोती।
श्रीरघुराज तऊ जग में नहिं सुंदरता सिय के सम होती ॥
यद्यपि राम सिया अनुराग समान सबै विधि ते परै जानो ॥
रूप उभै जिय एक मनो नहिं भेद विवेक परै पहिचानो ॥
प्रेम कृपा पुनि कोमल भाव कहाँ लगि सोय को जाय बखानो।
श्रीरघुराज कहें हिय की जिय में सिय की सरसै सरसानो ॥
चारिहू राज कुमारी बसें नित कोशल पत्तन में सुखछाई।
रोजही रोज नवीन नवीन विलासन हांसन की अधिकाई ॥
राज समाज सजी नितहीं रहै भूपति को सुख क्यों कहि जाई।
श्रीरघुराज सुलक्षण राम करैं पितु की सुख सों सेवकाई ॥
सैर शिकार विहार अपार पहार अगार कहे न सिराई।
चारिहू बंधु समेत महीप बसै पुर कौशल में सुखछाई ॥
साहिबो संपति सैन समाज कहे रघुराज को पारहिं पाई।
वारिये वासवाहू की विभूति विरंचि विभूति लहै लघुताई ॥
जानकी संयुत जानकी जानि सदा पुर कौशल माहँ विराजै।
काकी कहौं उपमा जग में जवहीं कहों जाकी तबै चित लाजै ॥
जैवे विकुंठ बसै कमला कमला पति दिव्य विभूतिनि साजै।
ते प्रगटे धरणीतल में तिनके सम काको कहै रघुराजै ॥

दोहा—यहि विधि वरण्यों राम सिय, अवध नगर संवास।
राम स्वयंवर ग्रंथ में, राज समाज हुलास ॥

चौपाई।

मातुल सदन सुऔध विहाई। जबते गये भरत दोउ भाई ॥
तबते [illegible] नीको ॥
राम [illegible]

सरस्यो सरस सनसार में शिशिर है॥
सौख भे सदन में समीर ना सोहात स्यामा,
शैल सरितान कीन सैर सुखदाई है।
सिरिफ सोहात सिखी सलिल सरोज सुभ,
सदल उसीरहूं सजाई शड्डताई है॥
रघुराज शशिकी सहाई ते शिशिर सांन,
सरसै सरस सूर सोभा सरमाई है।
सुख सरसावनी नसावनीकी सीत सेखी,
साँची सजनीनही की संगति सोहाई है॥

दोहा—यहि विधि पटऋतु सुख लहत, सीय सहित सानन्द।
ऋतु ऋतु के सुंदर सदन, बसत सहित सखि वृन्द॥

सवैया कवित्त।

राम के प्रेम को रूप मनो सिय सीय के प्रेम को रूप सो राम है।
रामहीं हैं सति कै सिय के जिय राम को जीव सिया अभिराम है।
श्रीरघुराज सनेहनहे दोउ बीतत आनँद में बसु याम है।
द्वैतन में मनो एकही आतम दंपति दीसै त्रिलोक ललाम है॥
राम मनोरथ जानत जानकी सीय मनोरथ जानत रामहीं।
राम वियोग सहै न छणो सिय सीय वियोग अराम न रामहीं॥
राम के नैनन सीय बसै सिय के दृग राम करैं बिसरामहीं।
राम की आनँद मूरति जानकी जानकी आनँद मूरति रामहीं॥
रामछिपावैं न हीकी सिया ते सिया न छिपावतिजीकी सुरामसों।
राम की प्रीति कहूं अधिकात कहूं सिय प्रीति बढ़ै विन काम तें॥
राम सों श्रीरघुराज न दूसरो दूसरो को सिय जू अभिराम सों।
राम सों सीय सों काको कहौ सिय सी सिय है अरु राम है राम सो।
द्वैमलता जड़ कैसे कहौं सम त्यों छण जोति रहैं छण जोती।

कबहुँ न उत्तर देत प्रभु, तेहि डारत बिसराय ॥

चौपाई।

क उपकार कबहुँ कोउ करई। कबहुँ न रामहिं तौन बिसरई ॥
ोइ सुधि करिकरिबुद्धिअगाधा। बिसरावत अनन्त अपराधा ॥
ान वृद्ध वय वृद्ध सुजाना। शील वृद्ध जे सज्जन नाना ॥
तनके आगे रहहिं लजाई। करैं न प्रभु आपनी बड़ाई ॥
ास्त्र शस्त्र महँ पाय प्रशंसा। लज्जित हंसवंश अवतंसा ॥
ुद्धिमान कहते सब जानै। कठिन प्रयोजन मधुर बखानै ॥
ाकी जौन होय सनबंधू। भाषहिं प्रथम दीन के बंधू ॥
ाम सरिस को कोमल भाषी। सबको सब दिन सुख अभिलाषी॥
िक्रम सरिस त्रिविक्रम जाको। कबहुं न गर्व होत मनसाको ॥
कबहुं असत्य कढ़ै नहिं बानी। जानत वेद पुराण विज्ञानी ॥
करहिं सदा वृद्धन सतकारा। सहित नाम मुख नाम उचारा ॥
ाखहिं प्रजन पाहिं अनुरागा। प्रजा करहिं नित प्रेम सभागा ॥

दोहा-परदुख में अतिशय दुखी, पर सुख में सुख भीन।
साधु विप्र पूजत सदा, दया करत लखि दीन ॥

चौपाई।

परम धर्म जानत रघुराई। इन्द्रीजित आचार सदाई ॥
रघुकुल उचित बुद्धि वर शाली। क्षत्र धर्म प्रिय मणिगन माली ॥
समर मरण प्रभु सदा सराहैं। समर गमन हित बीर उमाहैं ॥
रणहत स्वर्ग बीर हठि पावै। सकल पाप तनते नशि जावै ॥
सुनि सुनि बीर राम की बानी। समर मरणहितमति हुलसानी ॥
अनुचित कर्म निरत नहिं रामा। ग्राम कथा महँ नहिं विश्रामा ॥
वाद विवाद माहिं रघुनन्दन। सुर गुरुसरिस भानुकुल चन्दन ॥
सपनेहु रोग समीप न आवत।

भरत मातु जानत जिय माहीं। मोर पुत्र रामहिं सांत आहा॥
कौशिल्या ते दून सनेहू। करत केकयी बिन संदेहू॥
सब मातुन को राम पियारे। न्यून अधिक नहिं नयन निहारे॥
भरत गये केकयपुर माहीं। कियो मुदित मातामहकाहीं॥
नितनित केकय भूप उदारा। कराहिं सुतासुत कर सतकारा॥
मातामह करि प्रीति महाई। भरतहि दियो अवध बिसराई॥
इतहूं अवध नृपति सुधिकरहीं। भरत शत्रुहन गुणन बिसरहीं॥
यद्यपि चारिहु बंधु समाना। रामहिं दशरथ प्रेम महाना॥
बीत्यो बहुत काल यहि भाँती। सुखित सिराति जाति दिन राती॥
दोहा—देवन के शंका भई, कहहिं परसपर बैन।
कब प्रभु रावण बध करैं, लहैं अमरपति चैन॥

चौपाई।

दशरथ मख महँ हम सब आई। त्राहि त्राहि करि विनय सुनाई॥
रावण करत नाथ अति पीरा। अहै शरण तुव अमर अधीरा॥
आरत देवन देखि मुरारी। भये नाथ नरलोक बिहारी॥
सत्य सनातन विष्णु उदारा। कोशल नगर लियो औतारा॥
लहि सुत शक्रअदितिजिमिभाई। तिमि कौशिल्या सहित रघुराई॥
यहिविधि कहत बैन सुर नाना। रहहिं गगन महँ चढ़े बिमाना॥
राम चरित नित लखैं सुखारी। करिहैं प्रभु हमरी रखवारी॥
प्रभु बिहरैं कोशलपुर माहीं। अवध प्रजन सुख भरैं सदाहीं॥
कोटि मदन मद मारक रूपा। दुराधर्ष विक्रमी अनूपा॥
करहिं न कोहु के गुण महँदोषू। अपराधहु महँ होत न रोषू॥
हत दूषन नरलोक निभूषन। मृदुल सुभाउ तेज जनु पूषन॥
मिलैं दीन सों करि अति प्यारैं। प्रथमहि कोमल बचन उचारैं॥
दोहा—परुष वचन कोउ जब कहै, राम देत मुसकाय।

चिन्तक शास्त्र कृतज्ञ उदारा। जानत हिय की देखि अकारा॥
उचित अनुग्रह निग्रह करई। वक्रलीक जो मुख कछु कहई॥
सदा सुसज्जन संग्रहकारी। यथा योग सब सों व्यवहारी॥
काल काल सब सदन निहारी। करत खर्च आमदै विचारी॥
ठानत आनँद अमित उपाई। करत खर्च कछु शंक न लाई॥
काकिनि लेत लगत लघु नाहीं। वकसत कोटिन कोटिन काहीं॥
लघु वड़ ग्रंथ वस्तु सब जानत। धर्म समेत अर्थ निज आनत॥
जानत सब देशन की भाषा। विन जानी जानन अभिलाषा॥
अति स्वतंत्र परतंत्र समाना। आलस रहित कर्म सब ठाना॥

दोहा–तालभेद जानत सकल, साठि कोटि श्रुति साख।
रागभेद सब जानतो, जे चौरासी लाख॥

चौपाई।

सखी सखन सँग रासन माहीं। गाय वजाय देखावत जाहीं॥
लैविलंव द्रुत मध्यम रीती। अनुदात्तहु उदात्त स्वर नीती॥
वादी सप्त स्वरन की चाली। हीन मुख्य स्वरसमअरु खाली॥
रागमेल अरु रागविभागा। मृदु मूर्छना तान की जागा॥
दनुज मनुज सुर पन्नग गाना। जानत राम यथा ईशाना॥
शिल्प कर्म जानत रघुराई। शिलपिनि दरशावत निपुणाई॥
नाग कंध वाजिन की पीठी। चढ़त वनावत गति अति मीठी॥
सकल गुणन अद्वैत विराजा। सरल सहज साहेब रघुराजा॥
महारथी अतिरथी प्रधाना। को धनुधर रघुनाथ समाना॥
सैना व्यूह विशारद नीको। दशरथ सुवन भुवन को टीको॥
दुराधर्ष रण काल समाना। करत शत्रु हनि भवन पयाना॥
लहैं सुरासुर नहिं समताई। जेहिं के पत

दोहा

अहैं अजानबाहु रघुनाथा । जानत देश काल यक साथा ॥
परम चतुरपुनिरसिकशिरोमणि । रघुकुल कमलकलापदिवामणि ॥
ग्राही सार वस्तु सब काला । सज्जन प्रिय मुख बचन रसाला ॥
संतन प्रिय मूरति मनहारी । रच्यो एकही जन सुख चारी ॥
दोहा–ऐसे सहित अनेक गुण, भे सब गुणी प्रधान ।
राम प्राण प्रिय भे प्रजा, राम प्रजा के प्रान ॥

चौपाई ।

देखि राम गुण कौशलराई । नित नित आनँद लहत महाई ॥
सब विद्या विधान रघुभानू । जानत सांग सुवेदविधानू ॥
नहिं धनुधर रघुपति सम आना । दिव्य अस्त्र जानत सविधाना ॥
कोशल नगर जन्म प्रभु लयऊ । सदा अदीन दीन प्रिय भयऊ ॥
सत्यसंध अति मृदुल सुभाऊ । गुरुजन गण अति देत उराऊ ॥
जे जन धर्म अर्थ के ज्ञाता । पूछत धर्म हेतु कहि ताता ॥
धर्म काम अरु अर्थ बिचारी । करत काज सब सुरति सँभारी ॥
लौकिक परलौकिक सब काजा । करत समै अनगुण रघुराजा ॥
समरथ साहेब सहज सुभाऊ । सपनेहु क्षण छलछुआ न काऊ ॥
अभिप्राय अति गूढ़ विनीता । मित्र सहाई परम पुनीता ॥
सपनेहुँ जापर क्रोधित होई । तेहि शठ कहँ त्यागत सबकोई ॥
हरपित जा पर होत उताला । करत रंक कहँ राउ कृपाला ॥
दोहा–दान देत यक बार जेहिं, सो कुबेर सम होत ।
करपत धन बरसत बहुरि, जिमि रविजल सर सोत ॥

चौपाई ।

गो द्विज साधु भक्ति दृढ़ राखे । विसरत नाहिं सपनेहुँ मुख भाखे ॥
असत बचन मुखकढ़तन कबहूँ । कारज कठिन पड़ै यदि तबहूँ ॥
आलस रहित गर्वगुण हीना । निज पर दोप बिचार प्रवीना ॥

सबै सभासद सभा सिधारे। करि सतकार भूप बैठारे॥
कोशलेन्द्र कहँ भूपति वन्दे। यथायोग सब बैठि अनन्दे॥
कनक सिंहासन मध्य विराजा। तापर बैठ अवध महराजा॥
केकय राज भूप मिथिलेशू। दियो बोलावन नाहिं निदेशू॥
सुर प्रेरित सरस्वति मति फेरी। होई देवकाज महँ देरी॥
जान न पैहैं वन रघुवीरा। रावण हनी कौन रणधीरा॥

दोहा—जनक भरत ऐहैं अवध, नहिं जैहैं वन राम।
को उतारि है भार भुव, करि निशिचर संग्राम॥
देवन प्रेरित शारदा, दियो भूप मति फेरि।
कह्यो सुमंतहि राजमणि, भरत आनु करि देरि॥

चौपाई।

जब ह्वै जाहिं राम युवराजू। सुनत भरत मिथिला महराजू॥
सुनि यह सुख ऐहैं अतुराई। केकै भूपति संग लेवाई॥
सुनत राम अभिषेक उदारा। ऐहैं जनकराज तेहि बारा॥
अब न केकै जनकहि आनो। मेरी सीख सत्य करि जानो॥
नृप शासन सुनि सचिव सुमंता। आन्यो महो महीप तुरंता॥
भरी सभा दशरथ की भारी। बैठायो भूपति सतकारी॥
सोह्यो सभा मध्य महराजा। सुरन सहित मानहु सुरराजा॥
जन जगतीपति अवसर जानी। भन्यो वारिधर धुनि इव वानी॥
सुनहु नृपति सब सचिव प्रधाना। होत मोर अब अस अनुमाना॥
सबको विदित यथा यह राजू। यदि कुछ भये बड़े महाराजू॥
पाल्यो पुहुमि प्रथितयशभयऊ। मैंहूं पूर्व पथ गहि ठयऊ॥
सुत सम पाल्यो प्रजन अपारा। भयो आनन्दहि कछु न बिगारा॥

दोहा—छत्रहि छाया मैं बसत. माहि [illegible] ।

घरी घरी मुख माधुरी, झरी झरीसी होय ॥
नहिं मत्सरी अवधपति प्यारो । काल अधीन न करत विचारो ॥

चौपाई।

कबहुँ न काहु करत अपमाना । का को कहौं राम उपमाना ॥
क्षमा क्षमा अरु क्रोध पुरारी । वुधि विलोकि सुरगुरु गे हारी ॥
शक्र लजत विक्रम लखि जाको । कहत राम गुण को नाहिं थाको ॥
ऐसे गुणन सहित रघुराई । लसत किरण युत जनु दिनराई ॥
विदित गुणाकर जग रघुनाथा । वसुधा चहति होइँ मम नाथा ॥
निरखि पुत्र सुंदर गुण भाऊ । एक दिवस तहँ रघुकुल राऊ ॥
कियो विचार मनै महराजा । होइँ अवशि रघुपति युवराजा ॥
राजकाज सौंपहुँ सव रामै । मैं अव जाउँ विपिन तप कामै ॥
साठि हजार वर्ष मोहिं वीते । कवहुँ न राजकाज ते रीते ॥
लूटि लेहुँ सुख अव जग माहीं । कारि अभिषेक रघूत्तम काहीं ॥
कौन दिवस अस होइ मुरारी । लेव राम अभिषेक निहारी ॥

दोहा—जासु दंड यमदंड सम, विक्रम शक्र समान ।
बुद्धि बृहस्पति तुल्य है, धीर धराधर मान ॥
सत द्वीप नव खंड महि, राम भुवन अभिराम ।
धर्म सहित शासन करहिं, तव पूरै मनकाम ॥

चौपाई।

यहि विधिकरि निहचैमन माहीं । वोलि तुरंत सुमंतहि काहीं ॥
अपनो कह्यो मनोरथ राजा । राम होहिं आशुहि युवराजा ॥
कह्यो सुमंत पुलकि मन माहीं । आशुहि करहु विलंबहु नाहीं ॥
तब दशरथ सब सचिव बोलाये । प्रथमहि गुरु वशिष्ठ तहँ आये ॥
औरहु सब महर्षि पगुधारे । भूपति करि प्रणाम सतकारे ॥
आकृत महाजन सभ्य सुजाना । देश देश के भूपति नाना ॥

कढ़िहैं राजमार्ग रघुवीरा। हम सब देखि होवहत पीरा॥
सुनत सवन के वचन विलासा। दशरथ वहुरि वचन परकासा॥
राम होहिं युवराज प्रवीने। सुनतहि सव संमत करि दीने॥
दोहा—राज काज मेरे करत, देखे कौन अकाज।
जीते अस चाहहु सबै, राम होहिं युवराज॥
चौपाई।
तब वशिष्ठ अरु सचिव सुमंता। सवकी रुख गुनि कहे तुरंता॥
राम मनुष्य न होइँ महीपा। कोहु सों कवहुँ न होत प्रतीपा॥
जे तुव सुत गुण आनँदकारी। सुनहु भूप हम कहहिं उचारी॥
सकल दिव्य गुण राउर वेटा। हम सवको कलेश कुल मेटा॥
विष्णु सरिस विक्रम रघुराई। लायक त्रिभुवन की ठकुराई॥
भयो न है नहिं होवनहारा। अवधनाथ जस कुँवर तुम्हारा॥
राम सत्य सत पुरुप सिरोमनि। सत्य वचन पालक धरणी धनि॥
धीर धुरंधर धर्म अधारा। राकाशशि सम सव कहँ प्यारा॥
क्षमा सरिस है क्षमा बड़ाई। सुर गुरु सरिस बुद्धि अतुलाई॥
शील सत्य अरु धर्महुँ कामा। कोउ न जान जस जानत रामा॥
क्षमा करन हठि परचो सुभाऊ। अति कृतज्ञ सुत राउर राऊ॥
इन्द्रीजित जन जानत प्रीती। मृदु थिर कठिन निपुणनृपनीती॥
दोहा—सुनी आज लों कान में, अनसूयक रघुनाथ।
सहज सरल वादी मृदुल, समुझावत गहि हाथ॥
चौपाई।
वृद्ध वहुत श्रुत विप्र विज्ञानी। तिनकी संगति करत अमानी॥
भूपति तुव सुत जस यस तेजा। मिलत न कतहुँ महीतसमेजा॥
सुर नर असुर वि [illegible] तेते॥
सव विद्या व्रत [illegible]

चौपाई ।

लाग्यो आय चौथ पन मोरा । जीवन रह्यो बाचि अब थोरा ॥
ताते अस मन होत हमारा । अब चाहहुँ परलोक सुधारा ॥
करौं भजन कहुँ कानन जाई । निशिदिन नारायण पद ध्याई ॥
रामहि सौंपि राज कर भारा । भजौं मुकुंद चरण निशि बारा ॥
थके अंग नहिं चलहिं चलाये । बनी न बिन विश्रामहि पाये ॥
मोरे सम अधिकहु पुनि मोते । राम भये कारक सुख सोते ॥
जाकर विक्रम शक्र समाना । सकलगुणाकर बुद्धि निधाना ॥
करहुँ राम को मैं युवराजू । करि अभिषेक होहुँ कृत काजू ॥
पुहुमी पालन लायक रामा । धर्म धुरंधुर धीरज धामा ॥
मोकहँ बांकी अब इतनोई । सो जानहु सब विधि सब कोई ॥
कहत होहुं जो उचित विचारी । लेहु सबै गुण दोष निहारी ॥
जो तुम्हार संमत अब पाऊं । काल्हि राम युवराज बनाऊं ॥

दोहा—भूप पौरजन सचिव गण, सज्जन लेहु बिचारि ।
उचित होइ तौ आशुही, सम्मत करहु सँभारि ॥

चौपाई ।

जब दशरथ अस वचन बखाना । भयो सबन सुनि मोद महाना ॥
साधु विप्र गुरु साचिव सुजाना । पौर जान पद लघु बड़ नाना ॥
उठे बोलि सब एकहि बारा । जनु गरजे घन गगन अपारा ॥
साधु साधु यह भलो बिचारा । संमत सब विधि अहै हमारा ॥
भूप करहु युवराज राम को । नाहिं बिचार अब और कामको ।
साठि सहस्र वर्ष वय बीती । प्रीति रीति नृप नीतिन रीती ॥
रामहि करि युवराज नरेशा । मेटहु सब जिय को अंदेशा ॥
कौन दिवस होई महराजा । चढ़ि गज महाबाहु रघुराजा ॥
चलत चारु चामर रघुराया । छाई बदन छत्र की छाया ॥

सहन शीलता शूरता, विक्रमता जग आम॥

चौपाई।

त्रिभुवन राज करन के लायक। महि मंडल न फवत रघुनायक॥
सोंह भौंह भै जाकी ओरा। होत शक्र सम सो तेहि ठोरा॥
जेहि अनखोह भौंह भै जवहीं। जर ते उखरि गयो शठ तवहीं॥
होत वृथा नहिं क्रोध प्रसादा। राखत सदा धर्म मरयादा॥
जेहि वध योग न्याय करि जाने। तेहि वध करत शील नहिंआने॥
जो वध योग न तापर कोपै। ताकर होत कवहुँ नहिं लोपै॥
जेहि रीझत वकसततेहिलाखन। तदपि न होततोष अभिलाषन॥
दांत शांत जन कांत उदारा। सकल गुणाकर तोर कुमारा॥
यथा किरण युत दिपत दिनेशू। तथा गुणन युत कुवँर नरेशू॥
गुणी शिरोमणि कुवँर रावरो। महि चाहति पति होय साँवरो॥
तेरो लाल भाग वश भयऊ। जिमि वासव कश्यप के जयऊ॥
वल आयुष अरोगता बाढ़े। धर्म धुरंधर तुव सुत गाढ़े॥

दोहा–देव असुर नर उरग वर, विद्याधर गन्धर्व।
आज राम सम कोउन जग, लोकपालहूं सर्व॥

चौपाई।

वालहु वृद्ध तरुण नर नारी। सांझ सवेरे पाणि पसारी॥
माँगहि सव देवन पहँ जाई। अव युवराज होहिं रघुराई॥
राजन राउर कृपा सहाई। भई सिद्धि सवकी मन भाई॥
ताते अव नहिं करहु विलंवा। राउर लाल भुवन अवलंवा॥
इंदीवर सुंदर तन श्यामा। रिपुकरि सिंह राम अभिरामा॥
यौवराज्य कीजे अभिषेका। होइ विश्व उपकार अनेका॥
नारायण के सरिस रावरो। राज शिरोमणि कुवँर साँवरो॥
जो तुम चहहु जगत

राग ताल सुर जानत जैसो। कोउ नहिं देखि परै जग वैसो॥
गुण कल्याण भवन अति साधू। मति कुशाग्रवरती निर बाधू॥
द्विजगण महँ रघुराज विनीता। अर्थ धर्म महँ निपुण पुनीता॥
सुनत शत्रु जब कहुँ पुर ग्रामा। जात लषण युत हित संग्रामा॥
नहिं लौटत बिन बैरिन मारे। शूर शिरोमणि शायक धारे॥
शत्रुन मारि अवध जब आवैं। लषण सहित सिंधुर महँ भावैं॥
मंद मंद मग चलत बजारा। पावत पुरजन मोद अपारा॥
कहुँ चढ़ि लषणसहितवरस्यन्दन। आवत कौशलपुर रघुनन्दन॥

दोहा–संग साजि चतुरंगिनी, शूर सखन के वृन्द।
जन जन प्रति पूछत पुलकि, राम कुशल आनन्द॥

चौपाई।

'अग्निहोत्र की कुशल भलाई'। पूछत वैदिक विप्रन पाई॥
'प्रजन पुत्र पतिनी कुशलाई'। पूछत परम प्रेम देखराई॥
'गुरुजन को पूछत कर जोरी। मानत शासन शिष्य निहोरी॥
'रहत सदा वश शिष्य तिहारे'। धर्म कर्म तौ नाहिं बिगारे॥
शिष्य सेनपति पूछहि रामा। चाकर करत सदा तुव कामा"॥
'पिता यथा पुत्रन कहँ मानैं। तथा प्रजन कहँ रघुपति जानैं॥
'प्रजन देखि दुख दुखी विशेखी। सुखी प्रजन सुखलखिनिज लेखी॥
'होत प्रजन पर जबै उछाहू। पिता सरिस उर करत उमाहू॥
'मृषा वचन सपनेहुँ नाहिं भाषैं। इन्द्रीजित बिन चूक न मांषैं॥
'पुरुष सिंह सबसों मुसक्याई। सबसों पूछहिं कुशल भलाई॥
'मानहुँ मूरति धरमहि केरी। नाहिं सोहात अघकथा बनेरी॥
'उत्तर प्रति उत्तर महँ जीतैं। परमारथ सो कबहुँ न रीतैं॥
भृकुटीबंक नयन अरुणारे। विष्णुसरिस कौसिला दुलारे॥

दोहा–दशरथ तीनिहुँ धाम महँ, राम एक अभिराम।

दिय वशिष्ठ शासन नृप आगे। रहे जोरि कर सब अनुरागे ॥
तुम सुमंत साजहु सब साजू। सुवरण रतन औषधी आजू ॥
सकल देव बलि विविध विधाना। मधु सर्पिपी लाज विधि नाना ॥
विविध भांति के वसन नवीने। कनक रजत के सुखत चीने ॥
पीत पाट अम्बर अति चारू। तिमि पोशाक अमित मनहारू ॥
महा मनोहर स्यन्दन भारी। रतन कनक झांझन झनकारी ॥
श्वेत तुरंग सजे सब अंगा। फहरत द्वै पताक पचरंगा ॥
धनु शर खड्ग चर्म गद नेजा। कारक शत्रुन कतल करेजा ॥
आनहु सकल सुमंत प्रभाता। चतुरंगिनी सैन विख्याता ॥

दोहा–रतन साज सजवाय कै, शत्रुंजय गजराज।
द्वार देश ठाढो रहै, जेहि लखि मेरुहि लाज ॥

चौपाई।

युगल विजन चामर युग चारू। श्वेत क्षत्र निशिपति आकारू ॥
बनै कुंभ शत कंचन केरे। मंद परै पावक जिनहेरे ॥
रतन खचित रातिहि बनवाई। अगिनिहोत्र घर देहु धराई ॥
सनख सदंत व्याघ्र को चर्मा। धरवावहु आसुहि शुभ करमा ॥
भूपति अग्निहोत्र गृह माहीं। सिगरी सामग्री धरि जाहीं ॥
जानहु सब अभिषेक विधाना। आनहुँ साज सकल विधि नाना ॥
होत प्रभात प्रयोजन होई। लघु बड़ बस्तु कमे नहिं कोई ॥
अन्तहपुर महँ द्वारन द्वारा। अवध नगर महँ सकल प्रकारा ॥
कदली कनक खंभ मनहारी। धरवावहु करि दीप उज्यारी ॥
बंधवावहु कुसुमन के माला। छिरकावहु चंदन यहि काला ॥
धूप धूम विरचहु चहुँ ओरा। सलिल सुगंध सींचि सब ठोरा ॥
मेलि दूध दधि पाक बनाई। विरचहु पायस सहित मिठाई ॥

दोहा–लक्ष विप्र भोजन अवशि, होई होत प्रभात।

शंका समाधान रामस्वयंवर।

सुर नर कारज सब सिधि होई। यह प्रसंग जाने कोइ कोई॥
नहिं कीजै। करि अभिषेक जगत यशलीजै॥
मुनि वशिष्ठ के वचन सोहाये। एकहिं बार सभासद गाये॥
ठाढ़े भये सकल कर जोरी। अबविलंब नहिं होय बहोरी॥
दोहा–रामहि दै युवराज पद, करहु भूप विश्राम।
हम सबको अब काल्हिही, होय पूर मनकाम॥

चौपाई।

सुनि गुरु वचन भूपमणि हरषे। बारहिं बार नयन जल बरषे॥
गद्गद गर बोले मृदु बानी। परम भाग आपन हम जानी॥
प्रगट्यो पूरुब पुण्य प्रभाऊ। जेठ कुवँर पर सबकर भाऊ॥
गुरु मंत्री पुरजन नृप जेते। किये राम पर संमत तेते॥
अस कहि नृप उठि परम अनंदी। बोल्यो गुरु पद पंकज बंदी॥
सहसन भूप मोहिं कर जोरें। राम हेत बहु भाँति निहोरें॥
प्रजा प्रकृति परिजन सुख भीजै। कहत राम अभिषेक करीजै॥
ताते करहु न नाथविलंबा। करहु राम अभिषेक अलंबा॥
साजहु सकल साज मुनिराई। देहु राम युवराज बनाई॥
चैत मास यह परम सोहावन। काल्हि पुण्य नक्षत्रहु पावन॥
इतनी सुनत भूप की बानी। जय ध्वनि भै दरबार महानी॥
जय रविवंश हंस रघुराजू। जय रघुकुल कैरव द्विजराजू॥
दोहा–सभा कोलाहल कछुक जब, शांत भयो तेहि काल।
पुनि वशिष्ठ सों कहत भे, जोरि पाणि महिपाल॥

चौपाई।

कश्यप मार्कंडेय विज्ञानी। वामदेव आदिक मुनि आनी॥
सचिव सुमंतादिकन बोलाई। शासन करहु जो उचित देखाई॥
अभिमत मुनि वशिष्ठ सुख पाई। रहे सचिव तहँ सब मुनिराई॥

असकहि गये भवन मुनि दोऊ। भये प्रमोदित जन सब कोऊ ॥
इत मुनि लागे करन विधाना । गणपति पूजनादि विधि नाना॥
इतै सुमंत महीप बोलाई। बोले वचन मंजु मुसक्याई ॥
सचिव राम कहँ ल्याउ लेवाई। देखन चहहुँ भुवन सुखदाई ॥
भले सचिव कहि चल्यो तुरंता। रंगमहल महँ गयो सुमंता॥
राम भुवन महँ डेउढी साता। रोकि न गयो सचिव अवदाता॥
तहँ अशोकवाटिका सोहाई। लपण सहित बैठे रघुराई ॥
सखा सकल तहँ राज कुमारा। बैठे किये सकल शृङ्गारा ॥

दोहा-पिता सचिव आवत निरखि, उठ्यो भानु कुल भान।
मरयादा पालक प्रबल, राम सरिस नहिं आन॥

चौपाई।

करि प्रणाम मंत्री कर जोरी। कीन्ही विनै महा सुख बोरी ॥
चलहु कुवँर महराज बोलायो। आप लेवावन मैं इत आयो ॥
सुनत पिता रजाय रघुराई। चले लपण कर गहि अतुराई ॥
ड्योढ़ी चारि नाँघि जब आये। रथपर भे सवार सुख छाये ॥
लियो लपण कहँ यान चढ़ाई। सूत बाग गहि चल्यो तुराई ॥
पुरवासी रघुनाथ जोहारे। दोउ कर शिर धरिप्रभु सत्कार॥
राजमहल प्रविशे रघुराई। नाँघि तीनि ड्योढ़ी युत भाइ ॥
स्यन्दन तजि गवने रघुनन्दन। वृन्दन द्वारपाल किय वंदन ॥
तीनि पमर नाके पुनि रामा। द्वापर सों कह बैन ललामा ॥
देहु पिता कहँ खबरि जनाई। दरश हेत ठाढ़े रघुराई ॥
द्वारप दौरि कह्यो दशरथ को। खड़े राम जीते मनमथ को ॥
चहत रावरो दरश हुलासन। आवैं सभा होय जो शासन ॥

दोहा-बोल्यो हुलसि नरेश तब, आनहु आसुहि राम।
द्वारपाल द्रुत दौरिकै, कह्यो चलहु अभिराम॥

देहु निमंत्रन वैदिकन, करि सत्कार अघात ॥
दधि घृत लाजा दूरवा, कुंकुम अगर हरिद्र ।
अक्षत मृगमद दक्षिणा, कोटि कनक की मुद्र ॥

चौपाई ।

यह पुण्याह बांच नहिं हेतू । होत भोर आनहुं कारि नेवू ॥
विप्र निमंत्रित जे इत आवैं । वैठि कनक आसन महँ खावैं ॥
बँधैं नगर घर घरन पताके । अति उतंग रोकत रवि चाके ॥
गलिन गुलाव सिंचाउ वजारू । बँधैं कनक तोरन विस्तारू ॥
गायक गण गन्धर्व समाना । राग ताल जे जानत नाना ॥
वार वधू करि करि शृंगारा । ठाढ़ी रहैं दूसरे द्वारा ।
नौवत झरै महल चहुँ ओरा । वाजन वजैं होतही भोरा ॥
करौं नगर उतघोष अनेका । होत भोर रघुपति अभिषेका ॥
ग्राम देव सुर मंदिर जेते । सहित दक्षिणा पूजहु तेते ॥
अन्नपान सव पहँ पठवाई । विन पूजन कोउ नाहिं रहि जाई॥
चंदन कुसुम निवेदन पाना । पामर प्रेतहु पावहिं नाना ॥
सहित सनाह पोशाक सँवारी । कर करवाल ढाल भट धारी ॥

दोहा—दस्ताने कर धारि कै, पहिरि सेत सुम माल ।
राजित रतनाभरण ते, रघुकुल वीर विशाल ॥
महाराज के महल के, अंगन प्रथमहिं द्वार ।
खड़े रहैं दश लक्ष भट, सायुध शूर तयार ॥

चौपाई ।

लौकिक औरहु बुद्धि विचारी । करहु राम अभिषेक तयारी ॥
अस वशिष्ट मुनि परम प्रवीने । उचित और शासन सव दीने ॥
कह्योभूपसों मुनि सुनि वानी । शासन दियो सचिव सव आनी॥
रहहु सुचित नृप होत प्रभाता । होय राम अभिषेक विख्याता ॥

मदन मीत मद कदन हद, बदन मनोहर अंग ॥
हरष बरस जाको दरस, तरस परस हित होय ।
सरस सकल गुण सरस चित, नीरस लखै न कोय ॥
ग्रीषम आतप तपित जिमि, प्रजा पाय घन श्याम ।
तिमि पाये आराम सब, देखि राम अभिराम ॥

चौपाई ।

मंद मंद आवत रघुराई । नहिं अघात देखत नृपराई ॥
कराहिं सभासद उठि अभिवंदन । पाणि उठाय लेत रघुनंदन ॥
राजमहल कैलास समानू । आये मनहुँ निशाकर भानू ॥
पिता समीप लषण रघुनाथा । परसि भूमि जोरे युग हाथा ॥
आपन आपन नाम सुनाई । किये प्रणाम लषण रघुराई ॥
खड़े पार्श्व महँ जोरे हाथा । परम विनीत नवाये माथा ॥
उठि नरेश उर लियो लगाई । मानहुँ गयो मनोरथ पाई ॥
मंडित कनक मणिन सिंहासन । दिय शासन कीजे सुत आसन ॥
सकै न बैठि राम भरि लाजा । पाणि पकरि बैठायो राजा ॥
परमासन शोभित प्रभु ठयऊ । उदै उदै गिरि रवि जनु भयऊ ॥
रघुपति प्रभा सभा महँ पूरी । राज समाज शोभ मय भूरी ॥
गृह नक्षत्र संयुत निशि राई । शरद निशा सम सभा सोहाई ॥

दोहा—मुकुर माहि प्रतिबिंब निज, तिमि लखि सजित सिंगार ।
कह्यो राम सों भूप जिमि, कश्यप नयन हजार ॥

चौपाई ।

जेठ पटरानी कौशिल्या । जिमि गौतम की नारि अहिल्या ॥
तिनके पुत्र भये रघुराजू । मम समान अधिकहु तुम आजू ॥
वय ते जेठ जेठ गुनहू ते । तुमते जेठ श्रेष्ठ उनहू ते ॥
लाल परम प्रिय पुरजन केरे । तुव गुन कहैं लोग कहँ घनेरे ॥

चौपाई ।

चले लषण कर गहि रघुराई । पीछे चल्यो सचिव सुख पाई ॥
मंदिर मंदर सरिस उतंगा । सुंदर रतन खचित बहुरंगा ॥
फटिकफरशमणिखचित सोपाना । मंद मंद चढ़ि कियो पयाना ॥
देख्यौ पिता सभा रघुराजू । बैठे देश देश के राजू ।
पश्चिम के अरु पूरुब केरे । उत्तर के दक्षिणी घनेरे ।
औरहु मध्य देश के भूपा । बैठे सब निज निज अनुरूपा ।
बादशाह बहु म्लेच्छ अधीशा । गिरि बनवासी विदित बलीशा ॥
पुरवासी बहु देशहु बासी । सभ्य महाजन आनँद रासी ॥
लसैं विप्र मंडल इक ओरा । ठाढ़े बैठे मनुज करोरा ॥
कनक सिंहासन मध्य विराजा । तामें लसत अवध महराजा ॥
दशरथ भृकुटी लखैं नरेशा । केहि क्षण कापर होत निदेशा ॥
जस सुर सेवत शक्र सदाहीं । तिमि महिमहिपति दशरथ काहीं

दोहा–राज राज राजर्षि वर, राजत राज प्रधान ।
मनहुँ मरुतगण मंडलै, अति मंडित मघवान ॥

कवित्त ।

रघुराजआवत निहारा प्राण प्यारा पुत्र,
विक्रम अपारा तीनौ लोक उजियारा है ।
सजित सिंगारा लोक सुंदर उदारा मद,
मदन हजारा कोउ तारा बहु वारा है ॥
गुणनि अगारा अनियारा बोजवारा वीर,
धीर सरदारा जस भुवन पसारा है ।
देखतहीं हारा हिय अति सुकुमारा कल,
कौशिला कुमारा रघुवंश को दुलार है ॥

दोहा–सुत प्रधान आजान भुज, गवन मत्त मातंग ।

चौपाई।

किह्यो कोप संचित धन भूरी। आयुध सकल रहैं नाहिं दूरी॥
कोप और आयुध आगारा। जोनृप संचित सविधि अपारा॥
सेन सुहृद अरु सचिव सयाने। इनकी अनुमति मति मनुमाने॥
जो पालत मेदिनी महीपा। रहत सुखित तेहि मित्र प्रतीपा॥
राजनीति राजन को रामा। देवन यथा सुधा प्रदकामा॥
ताते रघुबर प्राण पियारे। किहेहु काज सबभाँति सम्हारे॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई। लहे भूप सब पुण्य बड़ाई॥
मोहिं सिखवत लागत अति लाजू। रघुनायक लायक युवराजू॥
कालिह सौंपि तुमको सब राजू। मैं करिहौं परमारथ काजू॥
सुनि नृप वचन मुनीश सुजाने। मनहीं मन कहि मुखमुसक्याने॥
नारायण कर धरि सब भारा। परमारथ कर करत विचारा॥
अज शिव वंदित जेहि पद रेनू। अधिक फलत सुरतरु सुरधेनू॥

दोहा–मानि विष्णु को पुत्र निज, चहत होन बिन शोक।
यह अचर्य कहि जात नहिं, नृप साधत परलोक॥

चौपाई।

रघुपति सुनत पिता की बानी। बोले वचन विनय रस सानी॥
नाथ सिद्धि कर आप प्रतापा। मैं केहि लायक कुमति कलापा॥
राउर शासन शिर पर मोरे। रथ लै वहत बाजि गुन जोरे॥
दियो तात जेहि भाँति रजाई। करिहौं सकल भाँति मनलाई॥
लैहै कृपा सुधारि तिहारी। नहिं शंका मति करति हमारी॥
सुनि भूपति प्रसंन अति भयऊ। जाहु भवन अस शासन दयऊ॥
पितु पद वंदि चले रघुनाथा। गहे पाणि लछिमन कर हाथा॥
सुहृद सखा जे संग सिधारे। सुने वचन जे नृपति उचारे॥
कौशिल्या के भवन तुरंता। गवन किये मोदित मतिवंता॥

अपने शील जगत वश कीन्हे । शत्रु मित्र सब सम करि दीन्हे ॥
ताते सुनहुँ कुवँर बड़भागा । चौथोपन हमार अब लागा ॥
भये केश सित रद बिलगाने । राज काज महँ अंग थकाने ॥
ताते अस मन होत कुमारा । सौंपहुं तोहिं राज कर भारा ॥
करों भजन भगवत को प्यारे । बनत सकल परलोक सुधारे ॥
घर में वा वन में हरि ध्याई । लेहुँ लाभ परलोक बनाई ॥
ताते कालिह पुष्य नक्षत्रा । सुभग योग गुरुवार पवित्रा ॥
गुरु संयुत संमत सब केरो । तुव अभिषेक करन मनमेरो ॥

दोहा--होय सुखद युवराज पद, को अभिषेक तुम्हार ।
सभ्य पौर मंत्री नृपति, गुरु युत किये विचार ॥

चौपाई ।

सकल गुणाकर जानि उदारा । सौंपहुँ तुमहि राज कर भारा ॥
बहुत बुझाय तुमहिं का कहहुँ । परम चतुर मैं जानत अहहूँ ॥
तद्यपि उचित सयानन काहीं । देव सिखापन सुतन सदाहीं ॥
नाहिं अनरस मानब मन माहीं । तुम्हरे हित महँ हित सब काहीं ॥
इन्द्रीजित रहियो सब काला । सबसों राखेहु बिनै विशाला ॥
तज्यो न कबहूँ शील सुभाऊ । दान देत महँ रहै उराऊ ॥
युवा नारि मद शयन शिकारा । अति अतुरत नाहिं रह्यो कुमारा ॥
काम क्रोध मद मत्सर मोहा । लोभहुँ सों राख्यो अति द्रोहा ॥
कबहुँ कोहु को दीह्यो न गारी । बोल्यो वचन विशेष विचारी ॥
किह्यो न बहुत हास रस प्रीती । जानेहु शत्रु मित्र की रीती ॥
आपन राज और पर राजू । लै सुधि सकल किह्यो सब काजू ॥
वृथा खर्च कबहूं नहिं करियो । सुमति संत संगति अनुसरियो ॥

दोहा--सचिव सभ्य प्रकृती प्रजा, करि रंजन बिन रंज ।
पालन कीन्ह्यो प्रीति युत, जिमि कर सो रवि कंज ॥

चौपाई ।

किह्यो कोप संचित धन भूरी । आयुध सकल रहैं नहिं दूरी ॥
कोप और आयुध आगारा । जोनृप संचित सविधि अपारा ॥
सैन सुहृद अरु सचिव सयाने । इनकी अनुमति मति मनुमाने ॥
जो पालत मेदिनी महीपा । रहत सुखित तेहि मित्र प्रतीपा ॥
राजनीति राजन को रामा । देवन यथा सुधा प्रदकामा ॥
ताते रघुवर प्राण पियारे । किहहु काज सबभाँति सम्हारे ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई । लहे भूप सब पुण्य बड़ाई ॥
मोहिं सिखवत लागत अति लाजू । रघुनायक लायक युवराजू ॥
काल्हि सौंपि तुमको सब राजू । मैं करिहौं परमारथ काजू ॥
सुनि नृप वचन मुनीश सुजाने । मनहीं मन कहि मुखमुसक्याने॥
नारायण कर धरि सब भारा । परमारथ कर करत बिचारा ॥
अज शिव वंदित जेहि पद रेनू । अधिक फलत सुरतरु सुरधेनू ॥

दोहा—मानि विष्णु को पुत्र निज, चहत होन बिन शोक ।
यह अचर्य कहि जात नहिं, नृप साधत परलोक ॥

चौपाई ।

रघुपति सुनत पिता की बानी । बोले वचन विनय रस सानी ॥
नाथ सिद्धि कर आप प्रतापा । मैं केहि लायक कुमति कलापा॥
राउर शासन शिर पर मोरे । रथ लै चहत बाजि गुन जोरे ॥
दियो तात जेहि भाँति रजाई । करिहौं सकल भाँति मनलाई ॥
लैहैं कृपा सुधारि तिहारी । नहिं शंका मनि करति हमारी ॥
सुनि भूपति प्रसंन अति भयऊ । जाहु भवन अस शासन दयऊ ॥
पितु पद वंदि चले रघुनाथा । गहे पानि लछिमन कर हाथा ॥
सुहृद सखा जे संग सिधारे । सुने वचन ते नृपति उचारे ॥
कौशिल्या के भवन तुरंता । गवन किये मोदित मतिवंता ॥

अपने शील जगत बश कीन्हे । शत्रु मित्र सब सम करि दीन्हे ॥
ताते सुनहुँ कुवँर बड़भागा । चौथोपन हमार अब लागा ॥
भये केश सित रद बिलगाने । राज काज महँ अंग थकाने ॥
ताते अस मन होत कुमारा । सौंपहुं तोहिं राज कर भारा ॥
करों भजन भगवत को प्यारे । बनत सकल परलोक सुधारे ॥
घर में वा बन में हरि ध्याई । लेहुँ लाभ परलोक बनाई ॥
ताते काल्हि पुष्य नक्षत्रा । सुभग योग गुरुवार पवित्रा ॥
गुरु संयुत संमत सब केरो । तुव अभिषेक करन मनमेरो ॥

दोहा--होय सुखद युवराज पद, को अभिषेक तुम्हार ।
सभ्य पौर मंत्री नृपति, गुरु युत किये विचार ॥

चौपाई ।

सकल गुणाकर जानि उदारा । सौंपहुँ तुमहि राज कर भारा ॥
बहुत बुझाय तुमहिं का कहहुँ । परम चतुर मैं जानत अहहूँ ॥
तद्यपि उचित सयानन काहीं । देव सिखापन सुतन सदाहीं ॥
नहिं अनरस मानव मन माहीं । तुम्हरे हित महँ हित सब काहीं ॥
इन्द्रीजित रहियो सब काला । सबसों राखेहु विनै विशाला ॥
तज्यो न कबहूँ शील सुभाऊ । दान देत महँ रहे उराऊ ॥
युवा नारि मद शयन शिकारा । अति अतुरत नाहिं रह्यौ कुमारा ॥
काम क्रोध मद मत्सर मोहा । लोभहुँ सों राख्यो अति द्रोहा ॥
कबहुँ कोहु को दीह्यौ न गारी । बोल्यो वचन विशेष विचारी ॥
किह्यो न बहुत हास रस प्रीती । जानेहु शत्रु मित्र की रीती ॥
आपन राज और पर राजू । लै सुधि सकल किह्यो सब काजू ॥
वृथा खर्च कबहूं नहिं करियो । सुमति संत संगति अनुसरियो ॥

दोहा--सचिव सभ्य प्रकृती प्रजा, करि रंजन बिन रंज ।
पालन कीन्ह्यो प्रीति युत, जिमि कर सो रवि कंज ॥

चौपाई।

किह्यो कोप संचित धन भूरी। आयुध सकल रहैं नहिं दूरी॥
कोप और आयुध आगारा। जोनृप संचित सविधि अपारा॥
सेन सुहृद अरु सचिव सयाने। इनकी अनुमति मति मनुमाने॥
जो पालत मेदिनी महीपा। रहत सुखित तेहि मित्र प्रतीपा॥
राजनीति राजन को रामा। देवन यथा सुधा प्रदकामा॥
ताते रघुवर प्राण पियारे। किहेहु काज सबभाँति सम्हारे॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई। लहे भूप सब पुण्य बड़ाई॥
मोहिं सिखवत लागत अति लाजू। रघुनायक लायक युवराजू॥
काल्हि सौंपि तुमको सब राजू। मैं करिहौं परमारथ काजू॥
सुनि नृप वचन मुनीश सुजाने। मनहीं मन कहि मुसमुसक्याने॥
नारायण कर धरि सब भारा। परमारथ कर करत विचारा॥
अज शिव वंदित जेहि पद रेनू। अधिक फलत सुरतरु सुरधेनू॥

दोहा–मानि विष्णु को पुत्र निज, चहत होन बिन शोक।
यह अचर्य कहि जात नहिं, नृप साधत परलोक॥

चौपाई।

रघुपति सुनत पिता की बानी। बोले वचन विनय रस सानी॥
नाथ सिद्धि कर आप प्रतापा। मैं केहि लायक कुमति कलापा॥
राउर शासन शिर पर मोरे। रथ लै वहत वाजि गुन जोरे॥
दियो तात जेहि भाँति रजाई। करिहौं सकल भाँति मनलाई॥
लैहै कृपा सुधारि तिहारी। नहिं शंका मति करति हमारी॥
सुनि भूपति प्रसंन अति भयऊ। जाहु भवन अस शासन दयऊ॥
पितु पद वंदि चले रघुनाथा। गहे पाणि लछिमन कर हाथा॥
सुहृद सखा जे संग सिधारे। सुने वचन जे नृपति उचारे॥
कौशिल्या के भवन तुरंता। गवन किये मोदित मतिवंता॥

सकल यथा क्रम खबरि बखाने । राम होहिं युवराज विहाने ॥
सुत अभिषेक सुनत तहँ माता । आनँद मगन भनी अस बाता ॥
रामहुँ ते तुम मोहिं पियारे । नीक होय सो पुण्य तिहारे ॥

दोहा–चूमि वदन जननी सदन, आसुहि सखो पठाय ।
रतन अनेकन आभरन, सुवरनि कोटि मँगाय ॥

चौपाई ।

अपने कर दीन्ही पहिराई । कह्यौ लेहु धन खान मिठाई ॥
दियो पयोदधि सुरभि सोहाई । पृथक् पृथक् सब सखनबोलाई ॥
सखा जननि पद पंकज बंदे । गये राम ढिग आसु अनंदे ॥
गई रंगमंदिर महरानी । लगी मनावन शारँगपानी ॥
उत जब पिता चरण शिर नाई । मंडित महल चले रघुराई ॥
प्रजा प्रकृति नृप सकल जोहारे । कहे नाथ अब होहु हमारे ॥
हमरे भाग विवश रघुनाथा । नाथ भये हम भये सनाथा ॥
विनै सहित प्रभु उत्तर दीन्ह्यों । सोइ भल जो पितु शासनकीन्ह्यों ॥
अस कहि भवन गये रघुलाला । समय जानि बोल्यो महिपाला ॥
निज निज भवन जाहु सब भाई । अइयो काल्हि प्रभात तुराई ॥
सुनि नृप वचन सचिव पुरवासी । पायो मनहुँ महा मुद रासी ॥
सुखी सकल उठि किये प्रणामा । गये भवन पूरे मनकामा ॥

दोहा–लगे मनावन देवतन, देउ भवन महँ जाय ।
काल्हि राम युवराज पद, होय विघन टरि जाय ॥

चौपाई ।

सचिव महाजन नगर निवासी । गये भवन जब आनँद रासी ॥
सभा भवन ते उठ्यो नरेशा । गहि सुमंत कर चल्यो निवेशा ॥
निज मंदिर महँ बैठि महीपा । कह्यो सुमंतहि बोलि समीपा ॥
पुण्य याग शुभ काल सुजाना । होय अवशि अभिषेक विधाना ॥

हों राजीव विलोचन काहीं। अभिषेकिहौं शंक कछु नाहीं॥
जाहु सचिव तुम राम लेवावन। ल्यावहु सीय सहित सुखछावन॥
सुनत सचिव स्वामी कर शासन। राम भवन गवन्यो दुख नासन॥
चल्यो चारु रथ सचिव प्रधाना। राम महल कहँ कियो पयाना॥
राम महल गवनत पुरवासी। लखे सुमंतहि आनँद रासी॥
दौरि दौरि पूछहिं तेहि काहीं। आजुहि नृप अभिषेक कराहीं॥
कह्यो सूत नहिं कारण जानौं। भूपति शासन रामहिं आनौं॥
घर घर मंगल बजत बधाई। पुरवासिन सुख नहिं कहि जाई॥

दोहा—घर घर बाज बजाय कै, प्रजा कराहिं सब गान।
सुखद राम युवराज पद, होई होत विहान॥

चौपाई।

राम कथा सब पुरमहँ पूरी। सुनत सचिव नेरेहु अरु दूरी॥
प्रजा सजावहिं निज निज द्वारा। कदली खंभ कुंभ जल भारा॥
लसैं कनक तोरन सपताका। मानहुँ अंबर उड़त बलाका॥
सींची गली सुगन्धित नीरा। थल थल भरी मनुज की भीरा॥
यहि विधि देखत सूत बजारा। देख्यो जाय राम गृह द्वारा॥
अति विचित्र नहिं जाय बखानी। मनु कैलास शृंग छविखानी॥
देख्यो राम भवन वर मंत्री। गायक खड़े गहे बहु तंत्री॥
शक्र सदन जेहि लखि लह लाजा। द्र [illegible] नक कपाट विराजा॥
जटित [illegible] भवन अतिभावै॥
[illegible] अति

चौपाई।

निकसत पवन पाय वरिआई। यथा कृपिण धन राज रजाई॥
मणिमय सारस शिखी विहंगा। तथा रतन के विविध कुरंगा॥
कारीगर करि करि निपुणाई। विश्वकर्म ते अधिक देखाई॥
देखत मंदिर सुंदर ताई। जहँ जात मन तहँ लोभाई॥
शशी सूर सम भवन विभासी। ब्रह्म सदन सम आनँदरासी॥
सत्य कुरंग विहंग अपारा। गृहा राम महँ करहिं विहारा॥
सदन सुमेर समान उतंगा। प्रविस्यो सचिव विहाय सतंगा॥
अति उदग्र सरदभ्र समाना। प्रतीहार ठाढ़े तहँ नाना॥
ठाढ़े पुरवासी कर जोरे। लिहे नजरहित रतन अथोरे॥
कुब्जक क्लीव विविध परिचारक। जे रासिवासन खवारि प्रचारक॥
खड़े तयार मतंग उतंगा। वाजी ताजी तहँ बहुरंगा॥
खड़े सुभट सायुध अति शूरा। अंगन मंगन गन ते पूरा॥

दोहा—प्रथम पँवर यहि विधि लख्यो, गयो दूसरे द्वार।
खड़े नजर लै जोरि कर, बहु हजार सरदार॥

चौपाई।

शत्रुंजय कुंजर तहँ भावत। जाहि जोहि लाजत ऐरावत॥
राम सवारी के बहु वाजी। सोहत सजे लगाये राजी॥
प्रतीहार तहँ देव समाना। कौन भाँति तिन करौं बखाना॥
लख्यो जाय पुनि तीसर द्वारे। कोटिन भूप खड़े बलि धारे॥
रजत कनक के वृक्ष सोहावन। चहुँकितफटिकभवनअतिपावन॥
पहुँच्यो मंत्री चौथे द्वारा। ठाढ़े रघुकुल राजकुमारा॥
रघुपति सखा सुहृद सब नाना। बैठे विपुल मनहुँ मघवाना॥
गयो सचिव पुनि पंचम द्वारा। नर्म सखा तहँ लसें अपारा॥
उठे सुमंतहि आवत देखी। बोल्यो सचिव काज निज लेखी॥

देहु राम कहँ खबरि जनाई । मैं आयों लहि राज रजाई ॥
नर्म सखा चलि खबरि जनाई । सचिव आसु लै चले लेवाई ॥
पहुँच्यो छठई डेउढी जाई । शस्त्रधारिणी सखी सोहाई ॥

दोहा—नर्म सखन तजि तहँ रह्यो, नहिं कहुँ पुरुष प्रचार ।
शस्त्रधारिणी नारि तहँ, सोहहिं अमित हजार ॥

चौपाई ।

गयो सातयें द्वार सुमंत्रा । बैठ्यो तहँ यक लपण स्वतंत्रा ॥
गहे पानि कार्मुक अरु बाना । सोहत मनहुँ शरद सित भाना ॥
नर्म सखा अरु सखी हजारन । आवत जात किये शृंगारन ॥
मणिमय भूमि भवन अति भारी । रंगमहल विकुंठ छवि हारी ॥
राम महल वरणौं केहि भाँती । नहिं जनात जाती दिन राती ॥
रवि शशि प्रभा लजावन हारो । सुर मुनि मानस चोरन वारो ॥
तहँ अशोक वाटिका सोहाई । सोहै सीय सखिन समुदाई ॥
चिंता मणि सिंहासन चारू । कल्पवृक्ष तर विशद विहारू ॥
वैठे सीय सहित रघुनन्दन । सोहि रहीं सखि वृन्दन वृन्दन ॥
अतिहि अरुण अंगन अँगरागा । निरखत शोभ मदन मद भागा ॥
चमर छत्र सजनीं कर धारे । रति रंभा मद हरहिं निहारे ॥
सीता राम उभै छविखानी । मिलि सितश्याम प्रभा पसरानी ॥

दोहा—मनहुँ भानु मंडल उपर, सोहि रह्यो घनश्याम ।
अचल चंचला राजती, वाम भाग अभिराम ॥

चौपाई ।

मनहुँ मेरु मस्तक शशि भानू । बैठे प्रभा पसारि दिशानू ॥
आल वाल वहु मणिगण केरे । कनक लता तमाल इव हेरे ॥
मनहुं रमापति रमा सोहाये । कनक शेष आसन छवि छाये ॥
को वरणै छवि सिय रघुपति की । नहिंपाहुँचि कैसेहुकविमातिकी ॥

निज पग अँगुठा डीठिहि राखी । कह्यो सुमंत वचन मृदु भाखी ॥
करौं प्रणाम राम अभिरामा । आयों आज देखावन कामा ॥
चल्हु कुँवर तुव पिता बोलाये । कारन कछु नहिं मोहि बताये ॥
गवने अंतहपुर पहँ सीता । कौशिल्या के निकट पुनीता ॥
सचिव वचन सुनि रघुकुल भानू । शंकित भये किये अनुमानू ॥
पितु समीप ते अबहीं आये । कौन काज पितु बहुरि बोलाये ॥
पितु शासन शिर धरि रघुराई । चले सुमंत संग अतुराई ॥
जनक सुता कहँ वचन प्रकाशा । शिविका चढ़ि गवनहु रनिवासा ॥

दोहा--प्रभु शासन सुनि जानकी, सहित सखिन के वृन्द ।
चढ़ि शिविका गवनत भई, जिमि तारन मधि चन्द ॥

चौपाई ।

सजी वाहकी सखी सोहाई । लीन्ही शिविका कंध उठाई ॥
कौशिल्या के सदन सिधारी । सहसन सखी संग सुकुमारी ॥
सासु सदन सिधारि शुचि सीता । करि प्रणाम ढिग बैठि पुनीता ॥
इत रघुनंदन स्यंदन चढ़िकै । पितु मंदिर गवने मुद मढ़िकै ॥
चलत पन्थ पेखत पुर शोभा । जेहि विलोकि वासव मनलोभा ॥
भूपति सखा [illegible] सरदारा । जात जनक गृह राम निहारा ॥
आकृति जानि राम अभिषेका । पूछहिं जुरि जुरि प्रजा अनेका ॥
देत सुमंत सासन समुझाई । जात राम लहि पिता रजाई ॥
लषण सुमंत सासन प्रभु भाषे । पैठों द्रुत अस कहि गृह राषे ॥
आप सुमंत गये पितु ऐना । कह्यो द्वारपहि राजिवनैना ॥
शासन मांगि सो गयो समीपा । बोलवायो सुनि राम महीपा ॥
[illegible] पितु मंदिर । चोरत चित्त चारु चय चंदिर ॥

[illegible] पूर ते भूपमणि, जोरि लियो युग हाथ ।
करत प्रणाम चले पुलकि [illegible] ॥ ५ ॥

चौपाई।

उठि नृपनाथ लियो उर लाई। बार बार दृग वारि बहाई॥
कनकासन महँ सुत बैठायो। मंजुल वचन भूप सुख गायो॥
सुनहु लाल मम प्राण पियारे। भये शिथिल सब अंग हमारे॥
साठि सहस्र वर्ष वय मोरी। पाल्यों मही सहित बरजोरी॥
भोग्यों भोग मनो अभिलाषी। सौख करन बाकी नहिं राषी॥
भूरि दक्षिणा यज्ञ अनेका। अन्न दान दै सहित विवेका॥
कीन्ह्यो सविधि सहित मुनिराई। भयों सुखी तुम सम सुत पाई॥
मनभायो दीन्ह्यो सब दाना। पढ्यौं वेद सब शास्त्र पुराना॥
नहिं बाकी अनुभव सुख कोई। देव पितर ऋषि उऋण बनोई॥
तुम अभिषेक छोड़ि रघुराई। अब बाकी कछु मोहिं न देखाई॥
ताते कहौं जौन सो कीजे। अब नहिं और कछू मन दीजे॥
पुरजन गुरुजन सचिव अनेका। चहत काल्हि राउर अभिषेका॥

दोहा—ताते काल्हि विशेषि कै, करि तुम्हरो अभिषेक।
सुखी चित्त करिहौं भजन, त्यागि सकल जिय टेक॥

चौपाई।

लखहुँ स्वप्न रजनी अति घोरा। गिरहिं लूक दिन महँ करि शोरा॥
मेरे जन्म नछत्रहि काहीं। पीड़ित कुज रवि राहु कराहीं॥
और अनेक होत उतपाता। कहत ज्योतिषी सब अस बाता॥
जहँ अस असगुन होत अलेषा। मरै भूप लहि विपति विशेषा॥
ताते जब लगि रहै शरीरा। करहुँ तोर अभिषेक अधीरा॥
आजु पुनर्वसु चन्द्र सोहावन। होइ काल्हि पुष्य कर पावन॥
सकल दैव चिंतक गुनि शोधे। सुभग सुदिन अस मोहिं प्रबोधे॥
ताते अतिहि तुरा जिय देखी। काल्हि करौं अभिषेक विशेषी॥
ताते वधू सहित रघुराई। कुश साथरी शयन करु जाई॥

सुहृद सखा रक्षैं निशि सोवत। शुभ कारजहि विघन बहु होत
बसहिं विदेश भरत जबताई। तब लगि मैं अभिषेक कराई
होय सुपद युवराज तुम्हारा। यही काल अस मतो हमारा

दोहा–यदपि भरत सज्जन सुमति, सेवक सदा तुम्हार।
इन्द्रीजित नित धर्मरत, दयावान सविचार॥

चौपाई।

तदपि मनोगति चंचल होई। क्षण क्षण फिरत न जानत कोई॥
संत धर्मरत जे बड़भागी। कबहुँ कबहुँ तेउ होत सरा
अस कहि मौन भये महराजा। उत्तर दियो न कछु रघुरा
होत बिलंब जानि अवधेशा। भवनजाहु अस दियोनिदे
करि प्रणाम गवने रघुराई। आसु आपने आलै आ
कहाँ लषण पूछ्यो परिचारन। ते कह मातु सदन पग धारन
अंतह पुर पथ ह्वै भरिनेहू। रामहुँ गये कौशिला गेहू॥
रही न जननी महलन माहीं। गई रंगप्रभु मंदिर काहीं॥
पहिरि पिताम्बर रघुपति माता। बैठी अचल न बोलति बाता॥
तहाँ रहे लछिमन अरु सीता। आय सुमित्रा बैठि पुनीता॥
मूंदे नैन कौशिला देवी। रंगनाथ ध्यावत पद सेवी॥
सीता लषण सुमित्रा रानी। बैठे परम मोद मन मानी॥

दोहा–सुत को सुनि युवराज पद, पुण्य योग नृप देत।
प्राणायाम लगी करन, लालन मंगल हेत॥
ध्याय जनार्दन पर पुरुष, रंगनाथ कहँ रानि।
बारहिं बार मनावती, जोरे पंकज पानि॥

चौपाई।

तेहि क्षण आये रघुकुल चंदा। बंदे मातु चरण अरविंदा॥
जोरि पानि नव वचन उचारा। सौंपत पिता राज कर भारा॥

व तोर शासन जो पाऊं। राज भार तो शीश उठाऊं ॥
ाल्हि होत अभिषेक हमारा। ताते पुनि अस पिता उचारा ॥
धू सहित व्रत करौं निशा में। उचित होय अब जसकछु तामें ॥
ुत्र वधू अरु पुत्रहु काहीं। करु निदेश मुद मंगल माहीं ॥
सुनत प्राण प्रिय सुत को बानो। कौशिल्या बोली हुलसानो ॥
नैनन आँनद आँसु बहावत। गद्गद कंठन कछु कहि आवत॥
वत्स राम चिरजीवहु प्यारे। लहैं नाश सब शत्रु तिहारे ॥
सनबंधी बांधव सुख लीजै। लषण सुमित्रा अनुमति दीजै ॥
परम सयोग नखत महँ जाये। मोरि कुक्षि धनि पुत्र बनाये ॥
पितहि प्रसन्न कियो सब भाँती। धन्य लाल तुग रिपुगण घाती॥

दोहा–श्रीइक्ष्वाकु नरेशते, अबलों यहि कुल केर।
श्री यश रीति बड़ापनो, वरिहैं तोहि नहिं देर ॥

चौपाई।

लेहु प्रजन पुत्र प्रिय प्यारे। ईश्वर होंइ सहाइ तिहारे ॥
रहु सीय युत निशि उपवासू। ध्यावहु दै मन रमा निवासू ॥
रैं विष्णु रक्षण सब काला। परै न कबहूं कुँवर कसाला ॥
पूरण भयो मनोरथ आजू। निरखौं तोहि होत युवराजू ॥
अस कहि मौन भई जब माता। तब रघुनन्दन आनँद दाता ॥
गहे सुमित्रा पद जलजाता। बोले वचन सनेह अघाता ॥
जननि तोरि दाया फलदाई। मोहिं अवलंब अंब सेवकाई ॥
लियो सुमित्रा प्रभु उर लाई। आखिन आनँद अंबु बहाई ॥
जियहु चारि युग पुत्र पियारे। तुमहीं से सुख सकल हमारे ॥
... जिय जानी ॥
कही ... न तुव राजू ॥
... को ॥

दोहा—बहिचर मेरे प्राण तुम, भोगहु भोग अपार ।
लेहु सकल यह राज फल, तुव हित हेत हमार ॥
मम जीवन अरु राज सब, लषण तिहारे अर्थ ।
जो न लगै तुव हेत महँ, सो हम जानहिं व्यर्थ ॥
लषण जोरि कर परसि पद, बोल्यो मंजुल बैन ।
तुव पद सेवन त्यागि कछु, कारज जानौं मैंन ॥
सुनत लषण के वचन प्रभु, उर लगाय गहि हाथ ।
विदा भये दोउ जननि सों, करि प्रणाम रघुनाथ ॥
दियो इशारा लषण सों, चलै जानकी औन ।
विदा माँगि सिय सासु सों, चली महल मुख मौन ॥
कौशिल्या के भवन ते, लषण जानकी राम ।
कनक भवन गवनत भये, ह्वै मन पूरण काम ॥

चौपाई ।

इतै भूपमणि मनहिं विचारे । होय राम अभिषेक सकारे ॥
आज वशिष्ठ जाय रघुराजै । करवावैं विधि जो निशि काजै ॥
अस विचारिनृपगुरु गृह गयऊ । करि प्रणामभल भाषत भयऊ ॥
जाहु राम मंदिर मुनिराई । आवहु सकल विधान कराई ॥
करहिं सीय युत व्रत सविधाना । जाते राज लाभ कल्याना ॥
निजअभिमतगुनिगुरुसुखपाई । कह्यो भूप सों अब हम जाई ॥
रघुपति के अभिषेकहि हेतू । करवाउन व्रतसीय समेतू ॥
अस कहि चढ्यो ब्रह्म रथमाहीं । सेत तुरंग बँधे रथ काहीं ॥
चल्यो राम के भवन मुनीसा । अति सुंदर मंदिर दृग दीसा ॥
शरद अभ्र सम शुभ्र सोहावन । रंगमहल उतंग अति पावन ॥
गये नाघि नव सप्त दरवाजा । गुरु आवत जान्यो रघुराजा ॥
द्वारन मंदिर आयो अनुराई । पाउ पयादे भवन बिदाई ॥

दोहा-गुरु स्यन्दन के निकट चलि, रघुनन्दन द्रुत आय।
लषण सहित वंदन किये, आनंदन शिर नाय॥

चौपाई।

कर गहि रथ ते लियो उतारी। चल्यो भवन लै वचन उचारी॥
भागमान मोसम को आजू। आयो जासु भवन मुनिराजू॥
गुरु को सिंहासन बैठाई। पूजे सविधि सीय रघुराई॥
जोरि पाणि बोले मृदु वानी। आयसु काह होत गुरु ज्ञानी॥
बोल्यो मुनि त्रिकाल को ज्ञाता। ह्वै विमनस मुख मंजुल बाता॥
रघुपति पिता प्रसन्न तिहारे। चकसत राजभार भिनसारे॥
भूप तुम्हैं युवराज बनावैं। राज काज तें वृत्ति हटावैं॥
ताते होहु निशा उपवासी। सहित जानकी आनँदरासी॥
एवमस्तु कह प्रभु सुसक्याई। मुनि विधि मंत्रहु दियो बताई॥
राम सिया संयम करवाई। शंकित मन गवने मुनिराई॥
कढ़े भवन ते नगर निहारे। अवध नारि नर परम सुखारे॥
उतै राम ढिग सुहृद सिधारे। बैठे हिलि मिलि भूपदुलारे॥

दोहा-हँसत हँसावत राम कहँ, कहि कहि हित इतिहास।
बोले रघुपति बैन मृदु, जान चहौं मैं वास॥

चौपाई।

जानि समय सब सखा जोहारे। राम चले जानकी अगारे॥
राम भवन ते जब मुनिराई। चले राजमंदिर अतुराई॥
नगर लख्यो नर नारि समूहा। राम भवन जूहन के जूहा॥
यथा प्रफुल्लित कमल तलाऊ। बसैं विहंग अभंग उराऊ॥
राम भवन ते कढ्यो मुनीसा। कोटिन मनुज वृन्द वर दीशा॥
कोशल नगर मनुज गण पूरा। हाटन बाटन निकटहु दूरा॥
परे नजर तहँ मनुजन भीरा। करहिं कुतूहल जन बिन पीरा॥

उठैं मनुज गण अगणित रंगा । अति संघर्ष हर्ष बहुरंगा ॥
चारिहुओर मच्यो अति शोरा । मनहुँ महोदधि रव अति घोरा ॥
रथ तुरंग मातंग सवारा । पैदर पूरित भई बजारा ॥
सींचीं गली सुगंधित नीरा । फूल फबित मंदिर जन भीरा ॥
लखी चहूं कित पुहुप जालिनी । अवधपुरी भै मनहुँ मालिनी ॥

दोहा--कनक दंड फहरत विमल, घर घर तुंग पताक ।
अवधपुरी की शोभको, भय सुर पुर लों धाक ॥

चौपाई ।

बाल वृद्ध युव पुर नर नारी । सुनत राम अभिषेक सुखारी ॥
कहत सबै कब निशा सिराई । आज उवैं अबहीं दिनराई ॥
सजैं सजावैं जन परिवारा । लखन हेत अभिषेक अपारा ॥
होत राम युवराज विहाने । ये सुख मनुजन हिय न समाने ॥
करहिं विनै विधु सों पुरवासी । होहु मलीन देहु सुख रासी ॥
कब निशि बितै उवैं दिननाहा । अवलोकैं अभिषेक उछाहा ॥
रही छाय धुनि यही बजारन । नरन नैन भै नींद निवारन ॥
यहि विधि लखत अनन्दबजारन । कसमस परत कढ़त प्रति द्वारन ॥
गुरु वशिष्ठ रथ चढ्यौ सुजाना । मंद मंद मग कियो पयाना ॥
दौरि दौरि शिशु चढ़ैं अटारी । पेखहिं पूरुव उये तमारी ॥
लसत नगर कौतुक मुनिराई । पहुँच्यो राज भवन महँ जाई ॥
शरद सलिल धर घटा समाना । अति उतंग प्रासाद महाना ॥

दोहा--गुरु वशिष्ठ रथ तजि तुरत, चल्यौ नरेश निवेस ।
पहुँच्यो दशरथ ढिग यथा, वाचसपति अमरेस ॥

चौपाई ।

कौशलेश आवत गुरु देखी । उठ्यो नृपासन त्यागि विशेखी ॥
पूछ्यो गुरुकहँ शीश नवाये । नेम ...ये ॥

कह्यो वशिष्ठ विधान कराई। राम सीय कहँ मंत्र बताई ॥
जाहिर करन आप कहँ आये। जाहुँ भवन तुव शासन पाये ॥
सुनि मुनि वचन सभासद हरषे। करि प्रणाम नैनन जल बरषे ॥
कह वशिष्ठ भूपति सों बानी। करहु गवन अब भवन विज्ञानी ॥
सकल सभासद मुनिहि सराहत। उठि उठि प्रणवत पद सुख गाहत
माँगि विदा गुरु सों महिपाला। चल्यो केकयी भवन विशाला ॥
जिमि गिरि गुहा जात मृगनाथा। तिमि रनिवास गये नृपनाथा ॥
अंतहपुर डेवढ़ी जब आये। सखी सहस्र लियो सुख छाये ॥
चलीं लेवाय केकयी ऐना। जय जय कहत मधुर मुख बैना॥
शक्र सदन सम सदन सोहावन। फैल्योंमणि प्रकाश छबिछावन॥

दोहा--सखि मंडल मंडित महा, मधि सोहत महिपाल।
तारा मंडल मध्य मनु, राकाचंद विशाल ॥

चौपाई

उतै राम गुरु शासन मानी। जानकि सदन जानकी जानी ॥
जाय कियो मज्जन सविधाना। सीता सहित सुखी भगवाना ॥
पहिरि पितांबर रघुबर सीता। रचि पायस धरि पात्र पुनीता ॥
सीता सहित राम सुख छाये। नारायण मंदिर महँ आये ॥
बेदी बिरचि अनल तेहि थापी। कियो हवन विधि सहित प्रतापी॥
इष्टदेव नारायण ध्यायो। हवन शेष पायस पुनि पायो ॥
युगुल कुशा साथरी बनाई। बैठे सीय सहित रघुराई ॥
भये मौन नारायण ध्यावत। जनु सुर कारज सुरति लगावत ॥
बसे विष्णु मंदिर महँ राती। किये शैन नेसुक अरि घाती ॥
रही जबै यक पहर त्रियामा। उठे जानकी संयुत रामा ॥
सुहृद सखन को तुरत बोलाई। दियो सपदि शासन रघुराई ॥
करहु अलंकृत मंदिर मोरा। सजवावहु मतंग रथ घोरा ॥

दोहा—सुनत सकल शासन सुहृद, सुंदर सदन सजाय।
रथ तुरंग मातंग बहु, द्वार देश मँगवाय ॥

चौपाई ।

किये निवेदन कारज करिकै । बैठे द्वारदेश मुद भरिकै ॥
तेहि अवसर तहँ परम अनंदी । आये मागध सूतहु वंदी ॥
बाँचन लागे सूत पुराना । मागध वंशावली बखाना ॥
बंदी विरद बखानन लागे । जाने प्रजा जगतपति जागे ॥
प्रात कृत्य करि नाथ नहाये । पहिरि पीतपट अति छवि छाये ॥
करि प्रभात संध्या रघुराई । जपि गायत्री अति चित लाई ॥
मधुसूदन की अस्तुति कीने । सीता सहित विनैं रस भीने ॥
करि प्रणाम अष्टांग उदारा । वैदिक विप्रन वेगि हँकारा ॥
सहसन वैदिक विप्र सिधारे । ते पुन्याह बाचनहिं उचारे ॥
तिन पुन्याह वचन धुनि भारी । छाई अवध नगर मन हारी ॥
सो धुनि सुनि परि जन जे द्वारे । लगे बजावन तूर्य नगारे ॥
नौबत झरत सुद्वारन द्वारा । बाजे बजत अनेक अपारा ॥

दोहा—कृत व्रत रघुपति जानकी, अवध प्रजा सुनि कान ।
भये विगत संदेह सब, माने मोद महान ॥

चौपाई ।

निशा सिरानि भयो भिनसारा । सजत सजावत पुरी अपारा ॥
श्वेत नदभ्र शृङ्ग सम नाना । सदन सदन प्रति फहरनिशाना ॥
द्वार द्वार मढ़ तने सिताना । सुर मंदिर पूजन सविधाना ॥
चौहट हाटन पाटन माहीं । ऊंची अटा गलिन लघु पाहीं ॥
तोरन [illegible] खंभ के खंभा । भरे कनक कमनीय सुकुंभा ॥
[illegible] गन गाय निवासी । रचे दुकान मनोहर खासी ॥
[illegible] मोद कदंबा ॥

पुर बाहेर जहँ लगि अमराई। दिये निशान उतंग बँधाई॥
जहँ लगि ग्रामदेव के नामा। रहे विटप चौरा अरु धामा॥
पूजे सब तहँ लगि पुरवासी। रघुपति सुखी रहन के आसी॥
नट नर्तक गायक गण आये। रघुपति द्वार समाज लगाये॥
गावहिं मंगल गीत सोहावन। बाज बजावहि विविध उरावन॥

दोहा–कोशलपुर चहुँ ओर में, छाये मंगल शोर।
नटी नचहिं करि करि कला, द्वार द्वार सब ठोर॥

चौपाई।

औरहु वारवधुन के वृन्दा। मंगल गावहिं पाय अनन्दा॥
जुरि जुरि थल थल महँ पुरवासी। रामकथा सब कहहिं हुलासी॥
चलहु चलहु अब भूपति द्वारे। लखहु राम अभिषेक सुखारे॥
रघुपतिकर अभिषेक उदारा। बालक खेलहिं खेल बजारा॥
कहहिं राम अभिषेक कहानी। पुरी राममय महा सोहानी॥
भौन भौन भो सुरभित धूपा। पुहुपजाल बँधि गये अनूपा॥
अवध समान शोभ नहिं कतहूं। अलकावतिहूं अमरावतिहूं॥
गलिन गलिन सिगरे पुर माहीं। झलकत पन्ना झाड़ सोहाहीं॥
रह्यो पूरि पुर परम प्रकाशा। दिवस समान भयो तम नाशा॥
जात न जाने निशि पुरवासी। पूरब प्रगट भये तमनासी॥
सकल प्रजाआपुस महँजुरि जुरि। कहहिं वचन मानहुतमफुरिफुरि॥
युग युग जीवै दशरथ राऊ। हमहिं दियो यहि भाँति उराऊ॥

दोहा–जानि जरठपन वेष निज, चतुरशिरोमणि भूप।
रामहिं दिय युवराज पद, करि अभिषेक अनूप॥

चौपाई।

कियो अनुग्रह हम पर पूरी। पातक रान भयो दुख दूरी॥
करहिं जगतपति कृपा अपारा। पालहि प्रजा राम सुख चारा॥

पूर्वापर जानत रघुराई। रहत सहज नृप गर्व विहा
धरमात्मा पंडित पंचानन। बंधु प्रजा कुल प्रिय असआ...
भरत लषण रिपुहन जस जानत। तस हमहूं सब कहँ प्रभु मानत॥
चिरंजीवि दशरथ नृप होहू। रामहिं कियो नाथ करि छोहू॥
अभिषेकित देखब रघुराजू। भाग्यवान को हम सम आजू॥
यही शोर सब पुर महँ छायो। देश मनुज गण देखन धायो॥
आजुहिं होत राम युवराजू। भयो दिशानन शोर दराजू॥
सुर नर मुनि जे जे सुनिपाये। प्रभु अभिषेक विलोकन धाये॥
रह्यो भुवन भरि मंगल शोरा। यथा पर्व लहि सागर रोरा॥
रह्यो जाहि जेतो अवकासा। चल्यो देन लै मणि धन बासा॥

दोहा–होत राम युवराज पद, भरिगो भुवन उछाह।
और सबैं मोदित भये, दुखी भयो सुरनाह॥
जिमि जलचर गन ते उदधि, सबदित पर्वहि पाय।
सबदवती कौशलपुरी, भय जिमि मोद निकाय॥
भये देव संदेहयुत, राज काज रत राम।
केहि विधि रावण मारिहैं, ठानि घोर संग्राम॥
कैकेयी की दासिका, रही मंथरा नाम।
धूम धाम सुनि नगर महँ, चली विलोकन काम॥

छंद चौबोला।

चढ़ी उतंग चन्द्र शाला महँ लखी अयोध्या नगरी।
पूरित फूलन गली बजारहु सींची सौरभ सिगरी॥
भवन अलंकृत ध्वजा पताके फहरि रहे चहुँ ओरा।
सेर भेर मचिरह्यो नगर महँ सुरपूजन सब ठोरा॥
रघुपति [illegible] धात्रीसे [illegible] कहा होत पुर माहीं।
राम [illegible] सब काहीं॥

कह्यो राम धात्री न सुने तें होत राम युवराजू।
करत काल्हि अभिषेक भूपमनि सौंपत सिगरी राजू॥
सुनि पापिनि मंथरा दुखित ह्वै गई केकयी नेरे।
तेहि जगाय अस कह्यो बैठि कस परे न लखि हगहेरे॥
केकै देश पठे भरतहि नृप कराहिं राम युवराजू।
ह्वैगो सकल सोहाग भंग तुव भई चेरि सम आजू॥
सुनत केकयी कह व्याकुल ह्वै दे अनुमति कछु मोहीं।
कह मंथरा भूप दीन्ह्यो दुइ बर पूरब जो तोहीं॥
क्रोधभवन चलि माँगु ठानि हठि देहैं नृप सतिवादी।
चौदह वर्ष बसैं वन रघुपति लैहैं भरत नृपगादी॥
सुनि केकयी क्रोध गृह गवनी आये जब महिपाला।
मरण ठानि माँग्यो सुख द्वै बर भूपति भये बिहाला॥
बोलि राम कहँ कह्यो जान बन रघुपति अति सुख माने।
सीता लषण समेत चले बन हर्ष विषाद न आने॥
शृङ्गबेरपुर बसे जाय प्रभु मिलिकै सखा निषादै।
उतरि गंग पहुँचे प्रयाग महँ दियो मुनिन अहलादै॥
भरद्वाज को मिलि पुनि रघुवर जमुना उतरि अनंदे।
बाल्मीकि के आश्रम आये बिनै सहित पद बंदे॥
बसे विचित्र चित्रकूटहि पुनि परनकुटी रचि नीकी।
लह्यो महा सुख सहित लषण सिय अवधपुरीमैं फीकी॥
राम विरह बिलपत आधी निशि भूपति तज्यो शरीरा।
केकयपुर ते भरत बोलायो गुरु वशिष्ट मतिधीरा॥
समुझायो बहु राज करन को भरत कियो नहिं राजू।
चल्यौ चित्रकूटहि मातन लै बसत जहां रघुराजू॥
शृङ्गबेरपुर मिलि निषाद सो पहुंचे भरत प्रयागा।

कवित्त।

छटी छल छद्म की हटी ना सुकृत दान,
घटी घटी पावनकी लगी चटपटीहै।
नटीसी नटति राम भक्ति लटपटी प्रेम,
तटिनी गोदारी को तेजवंत तटी है॥
भने रघुराज अटी कीरति न जाकी विश्व,
प्रगटी न कलि नटखटी अटपटी है।
सूपनखा नाक कटी राम पद चिन्ह पटी,
सोहै वयकुंठ की घटी सी पंचवटी है॥

दोहा—खरदूषण अरु त्रिशिर को, जरत धूम दृग जोय।
रावण आगे लंक महँ, परी सुपनखा रोय॥

छन्द चौबोला।

सुनत लंक पति भयो कुपित अति गयो मरीच नगीचा।
कह्यो ताहि शासन करु मेरो तैं मम अन्नहि सीचा॥
ह्वै माया कुरंग संगहि चलु जनस्थान महँ आजू।
राजकुंवर दशरथ के आये कीन्ह्यो मोर अकाजू॥
अस कहि लै मारीच संग रावण दंडक वन आयो।
इतै एकांत जानकी को लै राम वचन मुख गायो॥
याही हित हमहूं अरु तुमहूं लियो मनुज अवतारा।
अब तुम वसहु अगिनि महँ जब लगि हरौं भूमि कर भारा॥
छाया रूप जाय लंका महँ वसौं वर्ष परयंता।
मिलेहु मोहिं पावक ते पुनि तुम भये निशाचर अंता॥
प्रभु निदेश सुनि पावक प्रविसी प्रमुदित जनक कुमारी।
छाया रूप कुटी महँ राख्यो देवन हेत विचारी॥
बनि माया कुरंग मारीचहुं छाया सियहि लोभायो।

धरि रघुबर धनुधर धनु शर कर हरबर मृग पर धायो ॥
यती बेष रावण इत आयो छाया रूप सिया को ।
लै हरि चल्यो लंक धरि स्यंदन गीधराज लखि ताको ॥
ठाढ़ो रहु ठाढ़ो रहु अस कहि मारि खरन रथ टोरयो ।
लिय छड़ाय छाया बपु सिय को दशकंधर मुख मोरयो ॥
चल्यो गगनपथ छाया बपु लै राख्यो लंकहि जाई ।
इतै कपट मृग मारि लषण युत लौटे द्रुत रघुराई ॥
कुटी सून लखि हेरत बन बन गवने दक्षिण नाथा ।
मनहुँ विकल अति बिलपत पद पद चले लपण प्रभु साथा ॥
कछुक दूर आगे चलि रघुपति विकल विहंग निहारयो ।
कृपानिधान जटायु अंग रज निज जटानि सों झारयो ॥
प्रभु पद परसि गीध तन त्याग्यो निज हाथन करि करणी ।
गीधराज कहँ दई राम गति बेद पुराणन बरणी ॥
चले कछुक लखि अजामुखी राक्षसी भयानक रूपा ।
कान नाक कुच काटि लषण तेहि कीन्ह्यो विकल विरूपा ॥
पुनि कबंध योजन भुज पासहि परे लषण रघुराई ।
कियो बाहु युग खंड खड़ग सों दीन्ह्यो शाप मिटाई ॥
सो सबरी सुग्रीव सोय की दीन्ह्यो सुरति बताई ।
आये प्रभु पंपासर सानुज सबरी देखन धाई ॥
ऐहैं प्रभु यदि हित सबरी फल चीखि चीखि धरि राख्यो ।
सबरी कुटी जाय रघुनन्दन प्रेम विवश फल चाख्यो ॥
दै सबरी को गति कोशलपति चलि पंपासर आगे ।
विप्र रूप मारुतसुत मिलिकै कपि पति सों अनुरागे ॥
करि अविचल सुग्रीव मित्रता मीत दुखी जिय जानी ।
एकहि बाण बालि बध कीन्ह्यो सततार करि हानी ॥

राजा तहँ सुग्रीव बनायो करि अंगद युवराजू।
बरषा बसे प्रवर्षन हरषन वर्ष वितावन काजू॥
पावस की पूरण शोभा लखि जवैं शरद ऋतु आई।
सुरति देवावन को सुग्रीवहि दीन्ह्यो लषण पठाई॥
गवन्यो सखा समीप सुकंठहु कपि वाहनी बोलाई।
चारि दिशन छाया सिय हेरन पठयो कपि समुदाई॥
जाम्बवान अंगद हनुमानहु दक्षिण दिशि कहँ धाये।
प्यासे प्रविसे स्वयं प्रभा बिल तेहि प्रभु पास पठाये॥
तासु प्रभाव गये सागर तट शंकित भे सब भांती।
तहँ तिनको सब खबरि बतायो आय गीध संपाती॥

दोहा—को शतयोजन सिंधु नकि, जाय लंक निरशंक।
लाग्यो होन विचार यह, मरकट भये सशंक॥
जाम्बवान तब ऋक्षपति, कीन्ह्यो मनहिं विचार।
हनूमान कहँ मुद्रिका, दीन्ह्यो राजकुमार॥
पवन पूत पूरण प्रबल, करिहैं अवशि पयान।
अस विचारि बोल्यो बिलखि, कस बैठे हनुमान॥
लये निशानी देन को, सुचित बैठ केहि हेत।
कसन कूदि सागर सपदि, सिय सुधि ल्याय न देत॥

कवित्त।

वचन निबेरे ऋक्षपति के घनेरे सुनि,
बाढ़े बीर रंग के उमंग अंग तेरे हैं।
नैननि को फेरे औ तरेरे दिशि दक्षिण पै,
भुजन को हेरे त्योंही पूछ को मुरेरे हैं॥
मानि लंक नेरे है निशंक महावीर टेरे,
मारि करौं ढेरे भट लंकापति केरे हैं।

राम केरे शारँग ते चलैं प्रेरे सायक ज्यों,
जैहों लंक सुनौगे सवेरे गुन मेरे हैं ॥
भयो विकराल मुख कालहूं को काल मानो,
लोचन विशाल लाल वीररस गाढ़ भो।
फरके प्रचंड दोरदंड जे अखंड बल,
मानो अंड खंड कीबे को शरीर बाढ भो ॥
रघुराज दायक अनंद अंजनी को नन्द,
कीश कुल शालि वृन्द पाले को अपाढ़ भो।
जानुते मसकि महि पूछि को पटकि कसि,
कँमर हुलसि कूदिबे को कपि ठाढ़ भो ॥
भुजनि बढ़ाइ लामी लूम को उठाइ करि,
कानन चपाइ ग्रीवा नेसुक नवाइ कै।
पायन को रोपि महि कोपि त्यौंही रावण पै,
कूदिबे को वारिनिधि चोपि चित्त चाइ कै ॥
कटि को सकेलि मुख मेलि मुद्रिका को कीश,
झेलि उर आगू कहिरामै चित्त लाइ कै ॥
कीन्ह्यो अट्टहास रघुराजै मोद रासि दीन्ह्यो,
शैलै लीन्ह्यो ढाँपि बजरंगरंग छाइ कै ॥

दोहा—बपु बढ़ाय ऐंड़ाय कपि, भयो प्रलैरवि रूप।
कीन्ह्यो शोर कठोर अति, प्रलै जलद अनरूप ॥

कवित्त।

कैधों कोटि कुलिश को भयो पुहुमी में पात,
कैधों प्रलैकाल के पयोद की अवाज है।
कैधों कोल दाढन ते छूटी धरा धारचो फेरि,
धराधर गिरि सोई स्वयो दराज है ॥

केधौं ओनचासौ पौन के कै एकवारे गौन,
कढ़े फोरि मंदिर को सोई रवराज है।
केधौं केसौ पाय दंड लागे फाट्यो अंड कटा,
केधौं आज केसरी किशोर की गराज है॥
चल्यौ लंक नगर को मारुत डगर ह्वै कै,
मारुत को नंद मारुतै की गति धारि कै।
दूजो मारतंड सो अकाश में प्रकाश मान,
मारतंड डरि भाग्यो ग्रसिबो बिचारि कै॥
फूलन झरत फूले फूले तरु संग उडे,
चले पहुँचावें मनोबंधु शोक टारि कै।
रघुराज मोद छाये दुन्दभी बजाये देव,
जै जै कहि गाये राम दूत को निहारि कै॥
बल की अथाहैं बीर महि में मजा हैं करैं,
हठि युद्ध चाहैं रण सिंधु अवगाहैं हैं।
कपिन पनाहैं सर्वदा हैं राम जीत की,
ध्वजा हैं करि राहैं बहु लंक गढ ढाहैं हैं॥
दासन गुनाहै नहिं गुनत क्षमाहै छई,
बीरता नसाहैं फोरैं अंडहू कटाहैं हैं।
रघुराज छाहैं करैं शत्रुन को दाहैं उत,
साहन उमाहैं भरी हनुमंत बाहैं हैं॥
केधौं अहिराज आज राजत अकाशही में,
केधौं यमराज कलपाश पसराई है।
केधौं दशकंधर की मोचु मड़राती व्योम,
केधौं महाकाल कोपि रसना लमाई है॥
केधौं यात्रि नेत्र की त्रिनेत्रवन्हि शिखा फैली,

कैधौं हरि सारँगकी द्युति दरशाई है।
कैधौं रघुराज मोददाई छवि छाई मन,
भाई वायु लाल जू लँगूर लहराई है॥
कैधौं प्रलै करिवे को आजु उदयाचल में,
उयो दूजो मारतंड परम प्रकास है।
असुर कतारन हजारन को मारि मारि,
रम्यौ धौं हजार आरताको या विकास है॥
कैधौं आसमान अंबुनिधि में अरुन अंबु,
जातफूल फूल्यो सुठि शोभा को अवासहै।
कैधौं रघुराज मोद देनवारो छविवारो,
केसरी किशोरजू को वदन विलासहै॥
देवन कतारे औ कतारे त्यौहीं तारन के,
होत भे किनारे मगवारे आसमान के।
मेघ बहु रंग केरे चले उड़ि संग घेरे,
करन सहाय मनो प्रेरे मघवान के॥
तिनमें छिपात प्रगटात पुनि वार वार,
मोद सरसात राजो रूप अशुवान के।
रघुराज करत बखान हरि जान आज,
वेगवान है नहीं समान हनूमान के॥
कपिकुल मोद देनवारो यश वारो अति,
कारज करनवारो सबै जगदीश को।
दनुज दलनवारो देव मुद देनवारो,
युद्ध संतोप करनवारो अहि ईश को॥
उदधि नकनवारो सीय शोक हरन वारो,
नगर जरावनवारो मंत्री है कपीश को।

बड़ो उतसाह वारो बड़ो बाहुबलवारो,
बड़ो अनियारो प्यारो जनकललीस को ॥
दोहा–पवनपूत विश्राम हित, लहि सागर उपदेश।
मारग में मैनाक गिरि, प्रगट भयो तेहि देश ॥

कवित्त।

कर ते परखि शृंग हर्षि हिये बजरंग,
वीररस के उमंग भरो गुणग्राम है।
वचन विहँसि बोल्यो निज उर आशै खोल्यौ,
भयो तू अमोल्यौ सबै भाँति सुखधाम है ॥
आज ते तू अभै अहै देववृन्द जस कहै,
नहिं व्रजी व्रज जहै रहै यहि ठामहै।
विन अभिराम राम काम कीन्हे आठो याम,
मोहिं ना अराम नहिं करों विसराम है ॥
दोहा–पुनि सुरसा रोक्यो जलधि, पंथ लंकगढ़ जात।
मेरे मुख ह्वै जाहु कपि, कही परीक्षन बात ॥

कवित्त।

देखि भय वारी बड़ो देहधारी नारी पथ,
हिये या विचारो या विचारी को न मारिहौं।
जग में अवध्य नारी कहैं दिविचारी मुनि,
ह्वै है पाप भारी ताते युक्ति कै सिधारिहौं ॥
होइ जो पै हानिकारी रामकाज में गँवारी,
तौ तो जै है मारी नहिं नेकऊ विचारिहौं।
रघुराज मोदकारी बात यों उचारी प्रभु,
काज निरधारो तेरो कह्यो मैं सवाँरिहौं ॥
ताको माथ नाय वेगि पितापथ जाय चल्यौ,

सोहै खासो आमखास फैलि रह्यो है प्रकास,
दीपन मनिन दसवदन विलास को ।
फैली है सुवास आस पास त्यों अकासहू लों,
देव के हुलास हेरिबे को राखें आस को ॥
ऋद्धि सिद्धि वास कीन्हे मानिके सुपास अति,
कालपासहू की त्रास पावति विनास को ।
भासवान वासव निवासहू को हाँस करै,
देख्यौ रामदास ऐसे रावण अवास को ॥
सोको त्यौं अशोकवाटिका में जाइ देख्यो कपि,
मेघन के मध्य शशी रेखासी सोहाई है ।
मैलते सहित मानो कंचन को लता लोनी,
पंक लपटानी ज्यों मृणाली दरशाई है ॥
हंसहि विहाय वायसीन मध्य मानो हँसी,
सिंह के वियोग सिंहनी सी विलखाई है ।
देखि कपिराई हिय मानि सुचिताई मेटी,
सबै दुचिताई चढ़ि बैठ्यौ तरु जाई है ॥
वरण्यो कपीश रघुनाथ जू के अंग सबै,
कह्यौ तेरे हेत अति दुखित रहत हैं ।
वसन को लीबो सब रसन चसन कीबो,
नैनन में नींद लीबो नेकु ना चहत हैं ॥
कहूं तेरो ध्यान ठानि बोलहिं न बानि कछू,
कहूं तेरो नाम आठौं यामहिं कहत हैं ।
तेरे मिलिबे को योग करैं नित भोर उठि,
तेरेई वियोग राम मोद ना लहत हैं ॥
दियो ना रजाय राम राय ल्यायबे की माय,

नातो कंध में चढ़ाय प्रभुहि मिलावतो।
परम कठोर घोर कैकै सोर चारों ओर,
जीर कै उखारि लंक वारिधि वहावतो ॥
रण में प्रचारि दैत्य दलन सँहारि दश,
शीशै वेरी डारि नाथ पायन गिरावतो।
यश जग छावतो बढ़ावतो अनंद वृन्द,
कोशलेश जू को कोशला को पहुँचावतो ॥
जानकी उतारि दीन्ही चूड़ामणि हनुमाने,
कै कै सो प्रणामै फल खाने मन आन्यो है।
कह्यो जो निदेश पाऊँ क्षुधा को मिटाऊँ खल,
गण विलखाऊँ मातु ऐसो ठीक ठान्यो है ॥
सुनि कै दियो असीस भावै सोईकरे कीस,
बीस बिसे तोसे नहिं उऋण मैं मान्यो है।
सीय पद वंदन कै वाटिका निकंदन को,
चल्यो वायुनंदन अनंद अति सान्यो है ॥
लतन प्रतान के वितान तानि तानि तोरि,
फोरि फोरि फर्स रोरि रोरि करि डारयो है।
सरसोन दौरि दौरि धूरि धूरि घोरि घोरि,
तरुण को टोरि टोरि टोर टोर पारयो है ॥
कोरि कोरि महल कँगूरन को मोरि मोरि,
संभन उखारि लोरि लोरि मैं पवारयो है।
बाहैं रज लौरि लौरि ओधनाई मोरि मोरि,
केसरी किशोर शोर कै कै जोर मारयो है ॥
नैनन निहारे तबै वाटिका उजारि हनु-
मंत को हँकारे रखवारे खखारे हैं।

सोहै खासो आमखास फैलि रह्यो है प्रकास,
दीपन मनिन दसवदन विलास को ।
फैली है सुवास आस पास त्यौं अकासहू लौं,
देव के हुलास हेरिबे को रासैं आस को ॥
ऋद्धि सिद्धि वास कीन्हे मानिकै सुपास अति,
कालपासहू की त्रास पावति विनास को ।
भासवान वासव निवासहू को हाँस करै,
देख्यौ रामदास ऐसे रावण अवास को ॥
सीको त्यौं अशोकवाटिका मैं जाइ देख्यो कपि,
मेघन के मध्य शशी रेखासी सोहाई है ।
मैलते सहित मानो कंचन को लता लोनी,
पंक लपटानी ज्यौं मृणाली दरशाई है ॥
हंसहि विहाय वायसीन मध्य मानो हँसी,
सिंह के वियोग सिंहनी सी विलखाई है ।
देखि कपिराई हिय मानि सुचिताई मेटो,
सबै दुचिताई चढ़ि बैठ्यौ तरु जाई है ॥
वरण्यो कपीश रघुनाथ जू के अंग सबै,
कह्यौ तेरे हेत अति दुखित रहत हैं ।
वसन को लीनो सब रसन वसन कीनो,
नैनन में नींद लीनो नेकु ना चहत हैं ॥
कहूं तेरो ध्यान ठानि बोलहिं न बानि कछू,
कहूं तेरो नाम आठौं यामहिं कहत हैं ।
तेरे मिलिबे को योग करैं नित भोर उठि,
तेरेई वियोग राम मोद ना लहत हैं ॥
दियो ना रजाय राम राय ल्यायबे की माय,

हते देखि नायकान भगे लंक जातुधान,
जयवान वलवान हरपान हनुमान ॥
दोहा-अग्रगण्य पुनि सैन के, पंच महा वलवान ।
अमरापि पठयो लंकपति, धाये मग असमान॥

कवित्त किरवान ।

जहाँ धाये जातुधान अस्त्र छोड़ें जे महान,
मच्यो घोर घमसान देव देखें आसमान ।
जहाँ तट गज जान मीन वान औ कृपान,
देखि श्रोनि सरिता न होत भीति कादरान ॥
जहाँ करें भूप गान करि श्रोनित को पान,
गृद्ध गन त्यों अघान मोद भयो जंबुकान ।
तहाँ रण में सुजान तेजवान वलवान,
कोपि वीर हनुमान झुकि झारी किरवान ॥
दोहा-पंच अग्रगंता सयन, मारचो पवन कुमार ।
पठयो दशकंधर तुरत, मानी अक्षकुमार ॥

कवित्त ।

सुनिकै प्रतच्छ वीस अच्छवध रच्छ सनि,
वैठो जो समच्छ अच्छ अच्छनि सों लक्ष्यो है ।
उठ्यो सो ततच्छन है समर विलच्छन है,
सँग वीर लच्छन जो देव दल भक्ष्यो है ॥
अच्छे स्वच्छ अच्छ रथै चढिकै सुलच्छन दै,
वड़ो रन दच्छ तच्छ कै सो कोपि गक्ष्यो है ।
पच्छवान सैल सो विपच्छ पर पच्छिन पै,
कीस को निरिच्छो छमा छोहरी जो रक्ष्यो है ॥
गयो उड़ि आसमान हनूमान देखि सोऊ,

क्रियो है पयान चह्यो यान जातुधान है ॥
नङ को सम्हारि कियो तल को प्रहार कपि,
घोड़े परि गिरे चारि टूट्यो आसु यान है ॥
दपटि सो तेग धारि झपटि कीशौ प्रचारि,
पटकि दियो है भूमि गयो ताको प्रान है ।
निपट निशंक बंक लंक में अतंक छाइ,
आइ बैठ्यो तोरन तुरंत तेजवान है ॥

दोहा–सुनि कपीश को जीति रण, इन्द्रजीत कहँ बोलि ।
जग रावण रावण तुरत, पठयो आशै खोलि ॥

कवित्त ।

आरि बरजोर देखि घोर शोर कीश के कै,
छाय चारों ओर दोरदंड ठोकि धायो है ।
त्योंही ह्वै अभीत इन्द्रजीतहू सरोष अति,
चोपि चोपि चोख चोख बाणन चलायो है ॥
शरनि अनाथ कर भूधर उठाइ हरि,
उड़ि आसमाने जाइ विक्रम देखायो है ।
परिघ परस नेजे मेघनाद के जे भेजे,
तिन्हें के के रेजे रेजे महावीर भायो है ॥

दोहा–अस्त्र शस्त्र निज मोघ लखि, इन्द्रजीत अति कोपि ।
तज्यो अमोघनि महा शर, कपि बांधन चित चोपि ॥
मानि महाशर मान प्रबल, दिनहूं देखन लंक ।
अपनेहीं सों बंधि गयो, कियो न मन कछु शंक ॥
बांधि पवनसुत लै गयो, पिता निकट घननाद ।
[illegible] [illegible] ।।१९९, २० [illegible]

कवित्त ।

देखि लंकनाथ को निशंक कपि बोल्यो बैन,
छोड़ि धर्म कीन्ह्यो है अधर्म कर्म भारी तू ।
जनस्थान जाइके लुकाइके चोराई शठ,
लाजहिं बिहाइ हरि ल्याये परनारी तू ॥
भयो जो सो भयो अब जनक सुता को लये,
प्रभु पाँय आसु परै दंत तृणधारी तू ।
सके नहिं राखि विधि हरि हर राम द्रोही,
मारिजैहै हठि सीख मानि ले हमारी तू ॥
सुनत सकोप दशकंठ कह्यो वीरन सों,
सुनत कहा हौ वेगि कीशै बधि डारौरे ।
उठे ते भटन बैन बोलत विभीषण भे,
दूत है अवध्य बैठो सकल गवाँरौरे ॥
नीति निरधारो नहिं मारो नाथ दूतै कोपि,
इनसों उचारो अंगभंग करि डारौरे ।
मानि लंकराय अतुराय या रजाय दीन्ह्यो,
पावक लगाय याकी पूंछि प्रिय जारौरे ॥
पाइ अनुशासन दशानन को छपा चर,
चीरन को ल्याये जेहें जोरन बनाइ के ॥
लूम में लपेटि ताहि दीन्ह्यो है बढ़ाइ कीर,
वसन न बाचे कहूं तबते रिसाई के ॥
ते लहि बिबाइ पुनि पावक लगाइ दीन्हे,
नगर फिराये सबै बाजन बजाइ के ।
जागि अवलोकि टलि कोपन पागि बीर,
परिघ उठाइ लीन्हो बंधनछोड़ाई के ॥

कोरि कोरि खलन के मुंडन को फोरि फोरि,
दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचायो है।
कोर करि कोप कूदि कूदि केसरी किशोर,
कंचन कँगूरन में कालहीं सो आयो है॥
घरन घरन घुसि घुसि घूमि घूमि घोर,
शोर करि चहूं ओर पावक लगायो है।
कोई नहिं थलबच्यो लंक हलकंप मच्यो,
कहा या विरंचि रच्यो यही रव छायो है॥
पूत के पराक्रम को पेखि पूरो करिबे कों,
पौन ओनचासौ किये गौन तहाँ सरसात।
भभकि भभकि भारी भारी भीम ज्वाला जगैं,
देखि देखि क्षपाचर भागि भागि बिलखात॥
हाटन में बाटन में वाटन में हव्य बाढ़,
फैलि फैलि ऑटन में ठाटन में अधिकात।
व्योमहूं लों बाढ़ि बाढ़ि वारिधि ते एकै बार,
मानो लंक बार बार बाड़ौनल दरसात॥
करिन के जूह करि कूह भगेजात कहूं,
है वर समूह हिहिनाइ के पराने जात।
केशन को छोरे अधजरे कहूं दौरे जात,
राकस अथोरे बरजोरे बहु बिलखात॥
कहूं रोइ रोइ राक्षसी पुकारें हाइ पुत्र,
पुत्रहू पुकार करें हाय तात हाय मात।
गारी दै दै रावण को कहैं के लंक नारी सबै,
आनु अस्त्र-धारी रखवारो कोई ना देखात॥
टथारि पटारि चामी का[illegible]

फटिक फरश फूटि फूटि फांके फहराहि।
चटक चटक चटकीले चट काहि नग,
टूटि टूटि जरि जरि मुक्तागन छहराहिं॥
ताने जे विताने शोभा साने झरसाने सबै,
विपुल किताके त्यौं पताके व्योम लहराहिं।
लपटि लपटि लावैं लपटैं सुगेहन को,
लपकि लपकि लूकैं खलन पै झहराहिं॥
अनल उदंड को प्रकाश नवौ खंड छायो,
ज्वाल चंड मानो ब्रह्ममंड फोरे जाइ जाइ।
पुरी ना लखाति ज्वाल माले दरशात एक,
लोहित पयोधि भयो छाया घनो छाइ छाइ॥
देवता मुनीश सिद्ध चारन गंधर्व जेते,
मानि महा प्रलै वेगि व्योम आइ धाइ धाइ।
देखि राम राइ हेत दीन्हीं लंक लाय सबै,
चाइ भरे चले कपिराइ यश गाइ गाइ॥
कोई कहैं नंदी की शराप साँच करिबे को,
कैधौं कपि रूप धरि आये कालि काके नाथ।
कोई कहैं कैधौं देखि मुनिन को दुःख दीवो,
दुसह न सहि कोपि आये सरस्वती नाथ॥
कोई कहैं कैधौं देवराज की पुकार सुनि,
भेज्यो है प्रचंड चक्र रोपित ह्वै रमानाथ।
कोई कहैं कैधौं सीय हेत रावणै निकेत,
कपि कुलकेतु काल कीश भेज्यो रघुनाथ॥
बार बार होलि कैसी लंकै खूब जारि जारि,
चाय सों प्रचारि कै कै महाघोर किलकारि।

दीरघ देवालन विदारि खंभऊ उखारि,
दोऊ कर धारि धारि अरिन को मारि मारि ॥
यश विस्तारि कै खरारि को हिये सम्हारि,
पूछि को बुझायो वारिनिधि वारि झारि झारि ।
वाटिकै सिधारि शिर नाइ सीय शोक टारि,
केसरी कुमार पार चल्यो राम जै उचारि ॥
चढ़िकै गिरंदै पाँव मसकि कपिंद कूद्यौ,
शैल गो पताल वायुलाल आयो पार है ।
नाद को सुनाइ अंगदादिन को मोद छाइ,
बैठो आइ शीश नाइ कीशन मझार है ॥
जानकी निहारि आयो कह्यो लंक जारि आयो,
मारि आयो रावन के वीर वे शुमार है ।
सुनि हरषाइ सबै जीवन सो पाइ तहाँ,
उठि उठि धाइ धाइ भेंटे वार वार हैं ॥
आगे करि हनूमान चले बलवान सबै,
आइ मधु कानन में कीन्हे मधुपान हैं ।
दधि मुख कीश को कहा न माने मोद साने,
अतिहि अघाने पुनि कीन्हे ते पयान हैं ।
आये कोश नाथ पास परम हुलास छाये,
पौन पूत कियो काज कीन्हे या बखान हैं ।
मिलि कै सुकंठ तिन्ह अति उतकंठित ह्वै,
गौने तहाँ जहाँ बैठे भानुकुल भान हैं ॥
देखतही केसरी किशोर करजोरि दौरि,
परि प्रभु पाँयन में बोल्यो योहीं बैन है ।
जनक सुता को देखि आयों वाटिका में बैठी,

रावरे प्रतापहीं ते देख्यो खलऐन है ॥
चूड़ामणि दैके कह्यो फटिकशिला की बात,
आपही को नाम जपि काटै दिन रैन है।
बाणन सों मारिये दशानन को चलि नाथ,
सीता दुख एक मुख कहत बनै न है ॥
चूडामणिपाये रघुराजजू लगाये हिये,
भरि आये पदुम पलास युग नैन हैं।
छण एक रही नहिं अंगन की सुधि नेक,
थकित ह्वै रहे नहिं बोलि आये बैन हैं ॥
सुख दुख रोष उर भये हैं समान तीनों,
सुरति सम्हारि मिले कीशै मुदऐन हैं।
मानो रूपवान वातसल्य दास्य रस दोऊ,
मिलैं बार बार भूरि भरे चित चैन हैं ॥
बोले हरषाय रघुनाथ बैन बार बार,
देइबे को आज तीनौं लोक तोहिं थोरा है।
ताते कै विचार मन माहँ ठोक योहीं दियो,
उऋण न तोसों सदा एही मन मोरा है ॥
प्रभु के वचन सुनि कीश कर जोरि कहै,
काज तूँ प्रतापै कियो मोहिं ना निहोरा है।
कीश सेवकाई तैसे प्रभु प्रभुताई लखि,
झूलै रघुराज मन हरष हिंडोरा है ॥

दोहा—पवनसुवन के वचन सुनि,रघुपति कियो विचार।
विजै महूरत आजही, चलो लगै नहिं बार ॥

छंद।

अस विचारि पुनि उचि रघुनायक मिले पवनसुत काहीं।

बोलें वचन नैन जल ढारत तोहिं सम कोउ जग नाहीं ॥
तो से कबहुँ उऋण होवे को मोर न होत विचारा ।
ह्वै नहिं सकै जन्म भरि मोसों तेरो प्रतिउपकारा ॥
अस कहि बोलि कह्यो कपि राजहि अब वाहनी चलावो ॥
सिंधुतीर फल फूल वलित वन डेरा सैन डरावो ॥
सुनि प्रभु शासन परम हुलासन शासन सुलल सुनायो ।
जैति राम कहि दिशि दक्षिण को कपि वाहिनी चलायो ॥
हनुमत कंध चढ़े रघुनायक अंगद कन्ध अनंता ।
राजत मध्य सैन युग खगपति जनु युग वपु भगवंता ॥
चली कीश वाहिनी विराजति मनो महोदधि फूटो ।
भये पंथ पाषाण रेनु सम वन वन तरुगन टूटो ॥
वसत पंथ प्रभु चारि दिवस महँ गये तोयनिधि तीरा ।
डेरा करवायो दे शासन कपिदल को रघुवीरा ॥
उतै गयउ जबते मारुतसुत जारि निशाचर नगरी ।
तबते कहैं नारि सिगरी तहँ बनी बात अब विगरी ॥
रावण मंत्रिन सकल बोलायो करन मंत्र तहँ लाग्यो ।
इन्द्रजित आदिक तहँ बैठे कुंभकरणहूं जाग्यो ॥
देन लगे मंत्री अनुमति अस कपिन भीति नहिं भीजैं ।
मरकट मनुज अहार हमारे लखत विचारे छीजैं ॥
बोल्यो तहाँ विभीषण बाणी सुनहु निशाचर राजा ।
काल विवश भाषत सिगरे शठ होई अवशि अकाजा ॥
मोरि सलाह निशाचरनाह विचारि करहु यहि काला ।
आगे करि जानकी जाहु द्रुत जहँ कोशलपुरपाला ॥
दाबि दंत तृण परि प्रभु पाँयन ह्वै शरणागत भाई ।
निशिचर कुल अरु राजि लंक की लीजै वेगि वचाई ॥

भू को भार उतारन के हित लियो मनुज औतारा।
विश्व विदित यह बात विचारहु है संगर संहारा॥
सुनत दशानन श्रोणित आनन छाय दिशानन शोरा।
बोल्यो वचन अरे कादर तूँ भयो बंधु कस मोरा॥
मरकट मनुज भक्ष रक्षस के तिनहिं डेरात अपारा।
आँखिन ओट होत तें कस नहिं तोहिं धूर्त धिक्कारा॥
परुष वचन सुनि दशकंधर के उठ्यो विभीषण कोपी।
चारि सचिव लै संग गगन ते कह्यो वचन चित चोपी॥
मैं अब जाहुँ शरण रघुपति के लीन्ह्यो लंक बचाई।
निशिचर कुल अरु जीव आपनो जतन किह्यो भल भाई॥
मैं अब जाहुँ जहाँ रघुकुलमणि दूसर नाहिं देखाई।
अस कहि चल्यो विभीषण नभपथ सिंधु पार द्रुत आई॥
कह्यो गगन ते त्राहि त्राहि प्रभु मैं रिपुबंधु विख्याता।
हो हुँ शरण रावरे कृपानिधि तुम मेरे अब त्राता॥
सुनत राम सब सचिव बोलाये कहहु मंत्र का होई।
निज निज मत तहँ कह्यो विभीषण आवत मैं सबकोई॥
बोले प्रभु सब सुनहु मोर मत यामें नाहिं संदेहू।
एक बार जो कहत तोर मैं ताहि अभय करि देहूं॥
अस कहि पठे लषण करुणाकर लियो विभीषण आनी।
लंकराज को राजतिलक करि दियो बंधु सम मानी॥
सिंधु तीर रघुबीर गये पुनि कियो धरन उतरन को।
तीनि दिवस बीते अमरष भरि छोड्यो अगिन शरन को॥

दोहा—अति व्याकुल ह्वै सिंधु तहँ, भरि भरि मणिगन थार।
भयो राम सरनागतै, कहि तुमहीं रखवार॥

छन्द।

उतै लंकापति दूत पठायो दल देखन को आयो।

देखि गगन सम महा राम दल जाय खबरि अस गायो ॥
सुनहु लंकपति साजि कीश दल रघुकुल मणि चढ़ि आये।
करबे होय सो करहु आसुही पुनि नहिं वनी वनाये ॥
सुनि सारन के बचन लंकपति सुक राक्षसहि बोलाई ।
कहन सँदेशो कछु सुकंठ सों दीन्ह्यो ताहि पठाई ॥
शुक शुक रूप धारि नभ पथ ह्वै आयो सागर पारा ।
गगनहि ते कपिनायक सों अस रावण वचन उचारा ॥
का हमरो अपराध समुझि तुम राजसुतन सँग तेखे ।
लंक दुरासद सुरासुरन को नर बानर केहि लेखे ॥
सुनि शुक वचन दौरि बानर बहु पंख उखारयो पकरी।
तेहि सुग्रीव समीपहि ल्याये जब रजु जोरन जकरी ॥
आरत वचन सुनत शुक के प्रभु आसुहि दियो छोड़ाई ।
कह सुग्रीव सँदेश हमारो कहौ रावणहिं जाई ॥
शिव अज शरण गये बचिहौ नहिं सावधान अब रहियो ।
राम द्रोह करि दुष्ट दशानन जीवन आशा जहियो ॥
सुनि सुकंठ के वचन चल्यो शुक कह्यो रावणहिं जाई ।
तहँ सागर आयो प्रभु के ढिग अति दीनता देखाई ॥
शासन देहु नील नल को प्रभु रचैं सेतु मोहि माहीं ।
अभैदान मोको अब दीजे क्षमि अपराधन काहीं ॥
अस कहि दै बहु रतन नजरि तहँ अभै पाय सरितेशा ।
गयो आपने भवन इतै नलनीलहि कह अवधेशा ॥
रचहु सेतु सागर महँ लै कपि अति आसुहि दोउ बीरा ।
सुनि शासन रघुनाक को तहँ अङ्गदादि रणधीरा ॥
चले नील नल संग कपिन लै राम चरण शिर नाई ।
कोटिन के कोटिन कपीश गण दौरे अति अतुराई ॥

तरुन गिरिगन महा शिलागन ल्याये आसु उखारी ।
पांच दिवस महँ शतयोजन लों रचे सेतु अति भारी ॥
दशयोजन विस्तार भयो तेहि शतयोजन को लंबा ।
रच्यो सिंधु महँ महा सेतु द्रुत मिलि मिलि कपिन कदंबा ॥
मारुतसुत के चढ़े कंध तहँ दीनबंधु रघुराई ।
लषण लाल चढ़ि अंगद कंधहि चले लंक हरपाई ॥
चली सैन कछु वरणि जाति नहिं नभ सागर उपमाई ।
वानरेश लंकेश उभैदिशि और वीर समुदाई ॥
सिंधु पार वानरी वाहिनी पहुँची शैल सुवेला ।
डेरा परे लंक परिखा ह्वै अरु ह्वै सागर वेला ॥
शुक सारन द्वै सचिव दशानन पठयो देखन सेना ।
ते दोउ धरि कपि रूप प्रविसि दल देखे सकल सचैना ॥
रावण मंत्री जानि विभीषण लियो दुहुन पकराई ।
कोशलेश शासन लहि कपि पति दियो सैन देखराई ॥
देखि सैन गवने शुकसारन वरणे जाय हवाला ।
ते दोउ मंत्रिन लै शशिशाला चढ़ि देख्यो दश भाला ॥
मानहुँ भई वानरी वसुधा परै देखि नहिं पारा ।
बोरन चहत मनहुँ लंका को फूट्यो पारावारा ॥
कह्यो लंकपति दे वताय सब कौन कौन कहँ वीरा ।
शुक सारन तहँ तुरत वतायो [illegible]दादि रणधीरा ॥
अं—

नैनन निहारि अरविंद हिय हारो है ।
शूर मे शिरोमणि त्यों दानि में शिरोमणि हैं,
रघुकुल महारथी जग उजियारो है ॥
रघुराज राज राज राजनको शिरताज,
धरमधुरंधर धरा में धीर धारो है ।
बिक्रम त्रिबिक्रम सो अस्त्र में अनोखो वीर,
देखु रघुबीर दशरत्थ को दुलारो है ॥
दुराधर्ष साँचो सुरासुर के समरहूं में,
धुरा धरे धीरज को कुरा धनुधर है ।
चाहै वसुधा को बीर बाणन विदारिडारै,
शरनि अकाश भरि निराकाश कर है ॥
क्रोध के नगीच जाके वसति हमेश मीच,
बिक्रम विलोकि शक्र होत दरवर है ।
निशिचर वर सुर बर के न धोखे रहौ,
लागो करवर चढ़ि आयो रघुवर है ॥

सवैया ।

देखु दशानन दाहिने ओर दिपै भुज दाहिनो सो ढिग जाके ।
शुद्ध सुवर्ण सो वर्ण विराजत लाल विशाल विलोचन ताके ॥
श्रीरघुराज को है लघु बंधु रहै निज बंधु हमेशहो ताके ।
घूघुर वारी हलैं अलकैं अहैं लक्षन लाल ध्वजा वसुधा के ॥
पीन उरै सब अस्त्र को ज्ञाता अमर्षी महा प्रभु को प्रिय भ्राता ।
दुर्जय विश्वमें जंग में जेता महाबली वीरन वीर विख्याता ॥
श्रीरघुराज के सेवन को गुनि जीवन आपनो जीवन दाता ।
तच्छन तक्षक सो अरि भक्षक लक्षहु लक्षन लक्ष निपाता ॥
सोरठा-संख्या कही न जाय, भयो वरणि वानरी वाहिनी ।

गगन समान देखाय, भयो भुवन मर्कट मय ॥

छन्द चौबोला।

सुनि शुक वचन कोपि अति रावण कह्यौ पुरुष तेहि बैना ।
तैं शठ भीरु मोहिं डरपावत मोहीं भीति लगै ना ॥
पूरुब जो उपकार किये कछु होते नहिं शुक सारन ।
तौ दोहुँन को शीश काटि करतो पुनि कपिन विदारन ॥
सुनि दशकंधर वचन उचारन शुक सारन भय भारे ।
करि प्रणाम भागे निज भवनन अंतक विवश विचारे ॥
कह्यौ बोलाय महोदर को पुनि पठवहु दूसर चारा ।
बोल्यो द्रुतहि महोदर दूतन दशमुख वचन उचारा ॥
जाहु राम लछिमन कहँ देखहु कपि बाहिनी निहारो ।
नहिं जानें जामें कोउ मरकट आय हेवाल उचारों ॥
चले दूत वानर को वपु धरि प्रविसे सैन मझारी ।
तिनकी माया जानि विभीषण लीन्ह्यौ पकरि निहारी ॥
मारन लगे कीश तिनको तब दीन्ह्यो राम छोडाई ।
भभरि लंक चलि लंकनाथ के परे चरण शिर नाई ॥
रावण कह्यौ कहहु व्याकुल कस दूत कहे कर जोरी ।
खबरि लेन लायक नहिं कपिदल जानि लेत सब चोरी ॥
का पूछहु देखहु बैठे इत देखि परत दल भारी ।
बाँधि सेतु सागर लै कपिदल आयो उतरि खरारी ॥
गरुड़ाकार बनाय व्यूह दल परे लंक कहँ घेरी ।
युद्ध करहु दशमुख सनमुख की देहु जानकी फेरी ॥
शारदूल दूतन को पति जो तेहि दशकंधर भाषो ।
कौन वीर केहि देव अंश है देहु सकल मुख भाषी ॥
शारदूल तब लग्यो बतावन ऋक्ष राजसुत राजा ।

नैनन निहारि अरविंद हिय हारो है ।
शूर मे शिरोमणि त्यों दानि में शिरोमणि हैं,
रघुकुल महारथी जग उजियारो है ॥
रघुराज राज राज राजनको शिरताज,
धरमधुरंधर धरा में धीर धारो है ।
विक्रम त्रिविक्रम सो अस्त्र में अनोखो वीर,
देखु रघुवीर दशरत्थ को दुलारो है ॥
दुराधर्ष साँचो सुरासुर के समरहू में,
धुरा धरे धीरज को कुरा धनुधर है ।
चाहै वसुधा को वीर बाणन विदारिडारै,
शरनि अकाश भरि निराकाश कर है ॥
क्रोध के नगीच जाके वसति हमेश मीच,
विक्रम विलोकि शक्र होत दरबर है ।
निशिचर बर सुर बर के न धोखे रहौ,
लागी करबर चढ़ि आयो रघुबर है ॥

सवैया ।

देखु दशानन दाहिने ओर दिपै भुज दाहिनो सो ढिग जाके।
शुद्ध सुवर्ण सो वर्ण विराजत लाल विशाल विलोचन ताके॥
श्रीरघुराज को है लघु बंधु रहै निज बंधु हमेशहो ताके ।
घूघुर वारी हलैं अलकैं अहैं लछन लाल ध्वजा वसुधा के ॥
पीन उरै सब अस्त्र को ज्ञाता अमर्षी महा प्रभु को प्रिय भ्राता
दुर्जय विश्वमें जंग में जेता महाबली बीरन बीर वि॰
श्रीरघुराज के सेवन को गुनि जीवन आपनो
तच्छन तक्षक सों अरि भक्षक लक्षहु लक्षन
सोरठा-संख्या कही न जाय, भयो वरणि वान

दोहा—लषण वीर ताको अनुज, मनहुँ मत्त मातंग।
धर्मनिरत जेहि त्राणपथ, जितं न वासव जंग॥

छंद।

सुनि शार्दूल वचन दशकन्धर सचिवन आसु बोलायो।
करिके मंत्र काल अनुसारहि सचिवन भवन पठायो॥
गवन्यो आय राजमंदिर महँ राक्षस दामिनि जोहा।
ताको बोलि कह्यो माया करु तैं मायावी दोहा॥
सो कीन्ह्यो मन मोहनि माया सीता लखि दुख पायो।
सरमा रह्यो विभीषण नारी आय वचन अस गायो॥
यह माया राक्षसी जानु सिय अस समरथ कोउ नाहीं।
देव दैत्य राक्षस रघुवर कहँ जो जीतै रण माहीं॥
मैं अब जाति देखि आवति हौं अंतरहित दोउ भाई।
अस कहि गई गगन मारग ह्वै लख्यो लषण रघुराई॥
परम अपार निहारि कीश दल आसु लौटि सो आई।
कह्यो जानकी सुनै वचन सति कुशल अहैं दोउभाई॥
बाँधि सेतु प्रभु उतरि वारिनिधि कपिदल संग महाना।
घेरयो लंक हि बजत दुंदुभी सुनति शोर नहिं काना॥
सुनि सरमाके वचन जानकी दीन्ह्यो शोक विहाई।
पुनि सरमा बोली अस वाणी औरहु देत सुनाई॥
यहि अवसर रावण दरबारै मैं गवनी सुधि लेनै।
तहँ आई रावण कीजननी लगी सिखापन देनै॥
देहु जानकी रामचन्द्र को लेहु कुटुंब बचाई।
औरहु वृद्ध कहैं बहुतक तेहि मान्यौ नहिं चितलाई॥
लहत कालिह दशकंठ तासु फल राम सकुल येहि मारी।
अनुज सहित विजयी तोंहि लै प्रभु जैहैं अवध पधारी॥

सूरज अंश जानि सुग्रीवहि वालि अंश सुर राजा ॥
गद्गद को सुत जाम्बवान है जायो विधि जमुहाते ।
धर्म पुत्र जानहुसुखेन को दधिमुख शशि सुत ख्यातै ॥
दुर्मुख सुमुख वेग दरशीये तीनौ कपि पंचानन ।
मृत्युरूप विरच्यो इनको जग पूर्वकाल चतुरानन ॥
नील अगिन सुत पवन तनय पुनि जग जानै हनुमानैं ।
वासव को नाती अंगद है तेहि युवराज वखानैं ॥
मैंद दुविद अस्वनिकुमार के है कुमार लंकेशा ।
जाये यम के अंश पंच कपि वरणहु नाथ विशेशा
गव गवाक्ष अरु गवै सरभ तिमि गंध मादनहुं जानो
महा वली दशकोटि वलीमुख इनके संग महँ मानो ॥
और कहाँलगि मैं वरणहुँ सव वानर ऋक्ष अपारा ॥
लह्यो राम कर राजतिलक सो भ्राता छोट तुम्हारा ॥
श्वेत ज्योति मुख सूर्य अंश है जानहु कीश प्रवीरा ।
हेमकूट त्यौं वरुण अंस विशुकरमा सुत नल धीरा ॥
जग जाहिर वड़ वेगवान वसु सुत कपि दुरधर नामा ।
ऋक्ष और गोपुच्छ अनेकन जाति महा वलधामा ॥
वरण्यों मुख्य मुख्य थोरे कपि और न जानौं स्वामी ।
दशरथ नन्दन रघुकुल चन्दन देख्यौं अंतरयामी ॥
रघुकुल सिंह मदन मद मंदक सुंदर स्याम शरीरा ।
युवा वैस आजान वाहुं युग महावीर रघुवीरा ॥
चौदह सहस निशाचर मार्यौ खरदूषणहि समेतू ।
हन्यौ विराध कवंध निमिख महँ अनुपम रघुकुल केतू ॥
वली वालि को वेधि वाण सों सुग्रीवहि दिय राजू ।
आज न कोऊ महि मंडल महँ जस धनुधर रघुराजू ॥

दोहा—लषण वीर ताको अनुज, मनहुँ मत्त मातंग ।
धर्मनिरत जेहि बाणपथ, जितं न वासव जंग ॥

छंद ।

सुनि शार्दूल वचन दशकन्धर सचिवन आसु बोलायो ।
करिकै मंत्र काल अनुसारहि सचिवन भवन पठायो ॥
गवन्यो आय राजमंदिर महँ राक्षस दामिनि जीहा ।
ताको बोलि कह्यो माया करु तैं मायावी दीहा ॥
सो कीन्ह्यो मन मोहनि माया सीता लखि दुख पायो ।
सरमा रही विभीषण नारी आय वचन अस गायो ॥
यह माया राक्षसी जानु सिय अस समरथ कोउ नाहीं ।
देव दैत्य राक्षस रघुवर कहँ जो जीतै रण माहीं ॥
मैं अब जाति देखि आवति हौं अंतरहित दोउ भाई ।
अस कहि गई गगन मारग ह्वै लख्यो लषण रघुराई ॥
परम अपार निहारि कीश दल आसु लौटि सो आई ।
कह्यो जानकी सुनै वचन सति कुशल अहैं दोउभाई ॥
बाँधि सेतु प्रभु उतरि वारिनिधि कपिदल संग महाना ।
घेरचो लंक हि बजत दुंदुभी सुनति शोर नहिं काना ॥
सुनि सरमाके वचन जानकी दीन्ह्यो शोक विहाई ।
पुनि सरमा बोली अस वाणी औरहु देत सुनाई ॥
यहि अवसर रावण दरबारै मैं गवनी सुधि लेनै ।
तहँ आई रावण कीजननी लगी सिखापन देनै ॥
देहु जानकी रामचन्द्र को लेहु कुटुंब बचाई ।
औरहु वृद्ध कहैं बहुतक तेहि मान्यौ नहिं चितलाई ॥
लहत कालिह दशकंठ तासु फल राम सकुल येहि मारी ।
अनुज सहित विजयी तोंहि लै प्रभु जैहैं अवध पधारी ॥

अस कहि गई भवन कहँ सरमा सीता अति सुख पायो।
उत रावण आवन प्रभु को लखि सचिवन वेगि वोलायो॥
कह्यो काह देखत येहि अवसर दशरथ सुत चढ़ि आयो।
उचित होइ अव जौन कहहु सव दूतहु हाल सुनायो॥
कह्यो वचन तव मालयवान तहँ जो रावण को नाना।
दै सीता को सव विधि कीजै निशिचर कुल कल्याना॥
यदपि भीति नाहिं सुरासुरन ते विधि दीन्ह्यो वरदाना।
अभै न माग्यो नर वानर ते यह संदेह महाना॥
आय गयो सोई अव अवसर होत अमित उतपाता।
वरषत रुधिर मेघ गरजत खर जानि परत कुलघाता॥
व्याल शृगाल गृद्ध पुर प्रविसत वलि भक्षत घुसि श्वाना।
सेत दंत दरशाय नचैं हँसि काली तिय विधि नाना॥
चीची कूची पढ़त सारिका नभ कवंध दरशाहीं।
ताते निशिचर कुल विनाश अव जानि परत मन माहीं॥
माल्यवान के वचन सुनत अस रावण अमरप छायो।
वोल्यो वचन अरुण करि लोचन तैं कस येहि कुल जायो॥
मिले वलीमुख वहुत राम को भरि तरुगण पापाना।
रच्यो सेतुका हानि हमारी कौन हेत भय माना॥
तैं कादर निशिचर कुल दूपक कीजत मनुज वड़ाई।
पठये देत निशाचार अवहीं लेहैं कपिदल खाई॥
रोपित जानि रावणहिं भय भारि माल्यवान गृह गयऊ।
द्वार द्वार लंका रक्षण को रावण शासन दयऊ॥
महापार्श्व अरु वीर महोदर ताकैं दक्षिण द्वारा।
सेनापति प्रहस्त पूरुव दिशि रहे महा वलधारा॥
मेघनाद पश्चिम द्वारे महँ रहे साहिनी लीन्हे।

शुकसारन उत्तर द्वारे महँ रहे चित्त दृढ़ कीन्हे ॥
दोहा–विरूपाक्ष मधि नगर महँ, रहैं सुरति सब लेत।
उत्तरदिशि हमहूं रहब, निज वीरन सुख देत ॥

छन्द ।

इते राम अरु लषण बैठि सब मंत्रिन तुरत बोलायो।
पवन सुवन अरु ऋक्षराज दशकंठ अनुजहू आयो ॥
कपि कुलराज वालिनन्दन नल नीलादिक उतसाही।
सबसों कह्यो राम भाषहु अब समय उचित का चाही ॥
भन्यो विभीषण आशु सचिव मम आय लंक ते भाष्यो।
रावणहूँ चारिहु द्वारन रक्षन हित रक्षस राष्यो ॥
सुनत विभीषण वचन अवधपति कियो सैन चौ भागा।
कह्यो नील सैनापति को तुम जाहु पूर्व बड़भागा ॥
दक्षिण दिशि महँ सावधान अति गवने वालिकुमारा।
तैसहि कपिन सैन युत पश्चिम गवने पवनकुमारा।
हम लछिमन लंकापति कपिपति रहिहैं उत्तर द्वारा।
अस कहि चले सैन लै रघुपति चढे सुवेल पहारा ॥
गये त्रिकूटाचलहि शृङ्ग पर लंका नगर निहारा।
विंशति योजन लंबवान पुर दश योजन बिस्तारा ॥
अलकापुरी तथा अमरावति अस शोभा नहिं होई।
देव दैत्य दानव समरथ नहिं जो प्रविसै पुर कोई ॥
डेरा कियो वाहिनी सिगरी गरजहिं तरजहिं कीशा।
लंका सनमुख शिखर चलावहिं कहि जै जै जगदीशा ॥
सुनि हल्ला वानरी सैन को चढ़ि रावण प्रासादा।
देख्यो धवलीकृत धरणी को तदपि न लह्यो विषादा ॥
सहस खंभ चामीकर मंदिर तहँ बैठ्यो दशभाला।

नाचन गावन लगीं अपसरा लस्यो प्रकाश विशाला॥
देख्यो दशकन्धर को कपिपति वासव सरिस विराजा।
तासु गर्व सहिगयो न मन महँ लखि सनमुख रघुराजा॥
सकल यूथपन के देखतहीं देखत राम लषन के।
अति निरभै कूदेउ कपिनायक सति गुण करन सखन के॥
दशकन्धर के आमखास महँ परयो दिनेशकुमारा।
महा मनोहर होतरह्यो जहँ अति सुंदर नटसारा॥
लख्यो कीश दशवदन सदन महँ मानहु जलधर रासी।
उर महँ ऐरावत दंतन छत लंका नगर मवासी॥
शोभित अरुण बसन तन सुँदर श्यामवरण दशशीशा।
मनहुँ साँझ सावन रवि आतप परे मेघ इव दीशा॥
राकाशशि सम छजत छत्र वर चलत सुचामर चारू।
विमल रक्तचंदन अनुलेपित मंडित माणिक हारू॥
वासव सरिस विराजत दशमुख त्रिभुवन जीतनवारो।
मनहुँ गगन ते गिरयो हेमगिरि तिमि कपिपतिहि निहारो॥
चौंकि उठ्यो दशमुख चितयो चकि हहलि महल सबडोले।
ठाढ़े ह्वै सनमुख दशमुख के अभय कीशपति बोले॥
राक्षसेन्द्र मैं वानरेन्द्र हौं रामसखा अरु दासा।
मेरे प्रभु सनमुख शठ बैठि विलोकन लगे तमासा॥
नहिं जीवत तोहिं तजौं लंकपति राम प्रताप प्रचंडा।
अस कहि कूदि परयो दशमुख उर मुकुट उतारि त्रिखंड़ा॥
दियो पटकि पुहुमी पर कपिपति छिटके नग जनु तारा।
उठ्यो कोपि लंकापति बोल्यो अब नहिं तोर उबारा॥
ऋक्षराज सुत ह्वै कपिनायक मनुज चाकरी कीन्ही।
नीच तोहिं लागति न लाज कछु फेरि बुद्धि विधि दीन्ही॥

अस कहि गहि सुग्रीव चरण दोउ पटक्यो महि लंकेशा।
कंदुक सरिस उड्यो कपिनायक पहुँचि आसु तेहि देशा॥
दोहा–पकरि दशानन हाथ कपि, दीन्ह्यो भूमि गिराय।
मल्लयुद्ध लागे करन, वानर राक्षस राय॥

छंद हरिगीतिका।

श्रमस्वेद गातन चदत गातन रुधिरमय सब देह।
करि करि अनेकन पेच ठमकत लरत बिन संदेह॥
दोउ लसत किंशुक सालमली फूले सुतरुन समान।
कहुँ करत मुष्टि प्रहार तलहु प्रहार करत महान॥
कहुँ करत चरणन घात कहुँ बचि जात देखत घात।
कहुँ कूदिजात अकाश कहुँ महि परत जनु पविपात॥
कहुँ देह दोउ नवाय पद अरुझाय शीश भिड़ाय।
दोउ करि परस्पर जोर रेलत एक एक हटाय॥
अति फबी फटिकन फरश परफर कियोफोरिपपान।
उड़िजात कतहुँ अटान में कहुँ लड़त उडि असमान॥
दशकंठ और सुकंठ दोऊ लरत लरत तुरंत।
दोउ दुर्ग परिपा मे गिरे लागे लरनबलवंत॥
द्वै दंड भरि श्रम भरि खड़े पुनि कोपि लपटे धाय।
दोउ दुहुन देहन अतिहि पीड़त दोरदंड दबाय॥
पुनि परे उड़ि फड़ पर तुरत लागे लरन करि कोप।
दोउ करत अंगन को अलिंगन दरत रद जय चोप॥
दोउ परम शिच्छित वक्र विच्छत विजय इच्छित वीर।
शारदूल सिंह समान सोहत विदित जग रण धीर॥
मानहुँ युगुल सिंधुर सुवन मदमत्त करतनि युद्ध।
गज सुंडसम भुज दंड गहि दोउ करत दोहुँ अवरुद्ध॥

यक एक पुहुमि पछारि देत उछारि पुनि उठि धाय।
रह सावधान वखान करिं पुनि गँसत पेच लगाय॥
कहुँ चलत वक्र समान शक्र नवाय वक्र त्वराय।
रेलत फिरत फिर चक्र समगति नक्रकी दरसाय॥
कहुँ रहत मूठि उठाय घात लगाय अंग बचाय।
पुनि जुरत जंग उमंग भरि रणरंग अंगन छाय॥
दोउ श्रमत नहिं पद भ्रमत नहिं उर कमत कोप न थोर
बहु विधि अखंडल करत मंडलतन बराबर जोर॥
कहुँ मंद मंदहि चलत गौं युत तड़कि मारत लात।
सो जानि छल प्रथमहि हनत तल लात घात बचात॥
दशकंठ जानत हनहुँ अब मैं बचत नाहिं सुकंठ।
जानत सुकंठहु हनहुँ मैं दशकंठ कृपा विकुंठ॥
दोउ लरत भट ललकारि हिय नहिं हारि ओज अपार।
जिमि पदचरन नख चोथि अभिरत मांस हित मंजार॥
जे मल्लयुद्धहि पेचबत्तिस गतहु प्रत्यगतादि।
तेकरत लंकानाथ वानर नाथ ह्वै न प्रमादि॥
कहुँ लपट पुनि छूटत छटकि कहुँ झटकि पीठहि जात।
कहुँ चटकि पुनि अति रपटि दपटि सुछपटि पुनि छटकात॥
कहुँ देत झपकी झपकि झपकहु देत साली दाउँ।
कठिनात कहुँ द्रुत बगल ह्वै बिलगात दक्षिण बाउँ॥
बहु कियो कर छल बल दशानन चह्यो जीतन युद्ध।
सुग्रीव सो पायो न पत बल रह्यो ताको उद्ध॥
दशमुख नह्यो तब करन माया जानि जिय कपिराय।
उड़िगयो आसुहि गगन महँ नहिं पर्यो निकट लखाय॥
यहि भाँति हरि हरि मल्लयुद्ध विशुद्ध बल दरशाय।

प्रगटाय राम प्रताप रावण अंग समर थकाय ॥
कीरति दशो दिशि छाय रिपु सो जीति पाय उराय।
सुग्रीव आयो जहँ खड़े लक्षिमन सहित रघुराय ॥
दोहा--अतिहि लजाय डेराय उर, प्रभु पद शीश नवाय।
कह्यो क्षमहु करुणायतन, खोरि मोरि रघुराय ॥
मिले सखा को ललकि प्रभु, कहे वचन गहि हाथ।
अरि समीप पूछे विना,कस गवने कपि नाथ ॥
गये अकेले शत्रु घर, जो कछु होतो तोहिं।
तौ सिय ते अरु अवध ते, रहत हेतु नहिं मोहिं ॥
कह कपि सनमुख दर्प कर, दशमुख शत्रु हमार।
यह मोंसे सहि जाय किमि, ह्वै के सखा तुम्हार ॥

छन्द चौबोला।

कह्यो लषण सों पुनि रघुनायक होत अमित उतपाता।
जानि परत राक्षस वानर को ह्वैहै समर निपाता ॥
वहत परुप मारुत कँपति महि निकसत नाद पहारन।
जलधर करि कराल वपु वरसत श्रोणित मांस अपारन ॥
अनल पुंज रवि मंडल ते वहु झरत होति दिग दाहा।
शशि मंडल महँ मंडल अरुन परत भयकर निशि माहा ॥
रविमंडल महँ श्याम छिद्र लखि परत प्रलै जनु होई।
काकसेन अरु गीध गिरत अधसिवा कराहिं भय रोई ॥
रुधिरामिप को करदम ह्वैहै कपि राक्षस संग्रामा।
चलहु लंक कहँ व्यूह वाँधिकै अव वेलंव केहि कामा ॥
अस कहि उतरे शैल सुवेलहि सैन सहित रघुराई।
हनुमत अंगदादि वानर सव गये लंक नियराई ॥
जिनको जिनको चारिहु द्वारन प्रथम लगायो रामा।

ते ते कपि वर तौन वाहिनी लै गवने तिन ठामा ॥
घेरि गई लंका चारिहु दिसि पवन कढ़न गति नाहीं।
कोटिन कोटि ऋक्ष अरु वानर बढ़त क्रमहिं क्रम जाहीं ॥
यहिविधि लंका के मुरचा करि मंत्रिन राम बोलाई।
कियो मंत्र अंगद पठवन को सामकरन रघुराई ॥
वालिकुमारहि बोलि कह्यो प्रभु लंक जाहु रणधीरा।
कहँलगि कहौं बुझाय चतुर तुम जानत निज पर पीरा ॥
सब विधि कह्यो बुझाय दशानन उचित जौन तोहिं दीसै।
अंगद चल्यो निशंक लंक कहँ नाय राम पद सीसै ॥
कूदि गयो कपि एक फलंका लंकाको दरवाजा।
लखी निशाचर सभा प्रभाभर राजत रावण राजा ॥
बैठ्यो तमकि मध्य कपि कुंजर मारतंड इव भासा।
कह दशशीश कौन तै बंदर आयो किमि मम पासा ॥
अंगद कह्यो चह्यों तेरो हित मैं आयों इत धाई।
नायक अखिल ब्रह्म अंडन के परब्रह्म रघुराई ॥
तिनको करि अपराध महा शठहठ वश चह कुशलाई।
तेई प्रभु तारन को तेरे चढ़िआये रघुराई ॥
जो नहिं शरण होत तैं दशमुख तौ जानहि यहिकाला।
निशिचर हीन होति वसुधा हठि कोउ नहिं रक्षनवाला ॥
लंकराज दीन्ह्यो रघुनायक बोलि विभीषण काहीं।
राम शरण बिन तोहिं दशानन कतहुँ ठिकाना नाहीं ॥
मेरे पितु की रही मिताई तोसे श्रवण सुनी मैं।
आयों तोको वेगि बचावन तुव हित हेत गुनी मैं ॥
चतुरानन पंचानन अब जो चहैं दशानन रापी।
तो अति कठिन बचन यदि अवसर खड़े राम रण मापी ॥

रावण राम कोप पावक महँ होमहु व्रथा शरीरा ।
वासव सरिस विभूतिन सति लखि मोहिं उपजत अति पीरा।
मुनि पुलस्ति के नाती पुनि विश्रवा पुत्र विष्याता ।
करव अधर्म न उचित रह्यो तोहिं धर्म होत निज त्राता॥
ठकुर स्वहासित वदत सचिव तुव भये मीच वश सिगरे ।
पाछे कोउ न बनाय सकत शठ निज ठाकुर के बिगरे ॥
विधि बरदान विवश दरपित ह्वै किय सुर मुनि अपकारा ।
लहन चहत फल तासु आसुहीं करिले मनहि विचारा ॥
राम प्रताप दाप तोरे पर विप्र शाप भय घोरा ।
मंगल ह्वै है राम शरण में यह मत मानहु मोरा ॥

दोहा—बालि सुवन के वचन सुनि, कह दशवदन रिसाय ।
कोतैं को तेरो पिता, राम लषण को आय ॥

छंद ।

कानन सुन्यों यक कीश । रह बालि वानर ईश ॥
जो बालि सुत तैं होइ । तौ दई कुल को खोइ ॥
कहु कहु कुशल कहँ बालि । सो रह्यो अति बलशालि ॥
तब कह्यो बालि कुमार । जिन करहु मनहिं खभार ॥
दिन दशक बीते जाय । पूँछेहु सकल कुशलाय ॥
जस कुशल राम विरोध । सोइ करी सकल प्रबोध ॥
मोहिं कहत तैं कुलबोर । तैं भुवन जाहिर चोर ॥
सुनि बालि सुत के बैन । खल भन्यो श्रोणित नैन ॥
गुनि दूत देत बचाय । नहिं बसत यमपुर जाय ॥
कह बालिसुत तब बैन । तैं सत्य धर्महिं ऐन ॥
परनारि चोरी कीन । सुर मुनिन अति दुख दीन ॥
तापर न जानहु राम । यह और अद्भुत काम ॥

लीजै भगिनि सों पूँछि। जो कान नासा छूँछि॥
सो कही जो रघुनाथ। गुनि लिहे तव दशमाथ॥
तव कह्यौ विंशति बाहु। मोहिं जानु निशिचर नाहु॥
इन भुजन पर कैलास। बहु दिवस कीन्हे वास॥
अस सुन्यो कानन कीश। मोहिं कह्यो खबरिंन बीस॥
नृप सुवन तापस आय। वानर अनेक बोलाय॥
रण करन चाहत मंद। करिकै अमित छलछंद॥
आवति हँसी सुनि कान। अब काल आय निरान॥
कहु कौन है रनधीर। जो लरी मोसन बीर।
नर कीस राक्षस भक्ष। यह जगत है परतक्ष।
दोउ बापुरो नृप नंद। बलहीन बिगत अनंद॥
दोउ मनुज शत्रु तुम्हार। किय तुव पितहि संहार॥

दोहा—तापस जेहि कपिपति कियो, सो वानर भय भीर।
मेरो अनुज समान तेहि, और कौन रणधीर॥

छन्द त्रोटक।

यक वानरहै कछु वीर बड़ो पुर जारि अराम उजारि अड़ो।
सुनि वालिकुमार कह्यौ हँसि कै कहु काह कियो पुर मेंधसिकै॥
सिय खोजन हेत इहाँ पठयौ पुर जारि उजारि आराम गयो।
अब जानेहुँ ताकर कर्म सबै येहिते न गयो प्रभु पास अबै॥
भल खोजेहु तोहिं मिल्यो न कहीं नहिं रावण धावन वीर सही।
अब तोहिं बुझाय कह्यो सतिकै शठता तजि दे मन तेअतिकै॥
कुल नाश तुम्हार इतै जस है तस तोहि बधे न उन्हे जस है।
मृगनाथहि मेडुक मारत में श्रमका अस कर्म प्रचारत में॥
सुनिकै दशकंठ ठठाय हँसो यह वानर में गुण खूब लसो।
तन पालत जो बरणे तेहि को मुख भाषत है सिखयो वहिको॥

निज ठाकुर को उपकार करे नचिके नकले करि वित्त भरे।
तोहि जानि छली कटु बैन सहे नहिं मारन को तोहिं कोउमहे।
समरत्थ क्षमा कर होत सबै दिय दूत विचारि बचाय अबै।
हँसि अंगद बैन कह्यो तबहीं तुम सत्य छमाकर जाहिरही॥
भगिनी अपराध समोखि लियो खरदूषण घात बिसारि दियो।
पुर जारि उजारि गयो कपिहूं दशकंधर माफ कियो तबहूं॥
करि सागर सेतु तरे हमहूं लिय लंकहि घेरि लखो तुमहूं।
अब लेत छड़ाय पुरी सिगरी क्षमिहौ तबहू जो कछू बिगरी॥
दशभाल भन्यो तेहि काल सुनो जग जाहिर विक्रम मोर गुनो।
जग रावण हैं दश बीस नहीं भुज को बल जानत देव सही॥
तब अंगदहू हँसि बाणि कह्यो कहु लंकहि रावण कौन रह्यो।
हिरण्याक्षहि कुंडल एक लयो बलि जीतन सोय पताल गयो॥
यक हैहय राजहि जोति लियो हमरे पितु पै यक रोप कियो।
यक श्वेतहिद्वीप गयो चढि कै सतकार कियो रमणी बढ़ि कै॥

दोहा—बोल्यो दशकंधर तमकि, सो रावण तै जान।
विरचि कुसुम निज शीश के, पूज्यो देव इशान॥

छन्द।

उर कठिन जस दिग्गज गुनत बल बाहु को सुर सर्व।
करि तप लह्यो सबसों अभै गावत गुणनि गंधर्व॥
मुख कहत लगति न लाज लघु नर सुयश करसि वखान।
तब कह्यो अंगद मंद मति अबलों न जान अजान॥
कीन्ह्यो अमानुप कर्म सागर सेतु रचि भगवान।
भुव भार हारन हेत लै अवतार कीन पयान॥
जो कियो क्षत्र निक्षत्र यकइस बार भृगुकुल भानु।
रघुकुल कमल बल विपुल देखत गयो गोइ गुमानु॥

बूझेहु न बूझत तै अबूझ न सूझ निज कल्यान।
मारीच खरदूषण त्रिसिर तरु ताल सिंधु महान॥
वासव कुमार विराध वाली त्यों कबंध अमान।
जानत सकल ये राम बाण प्रभाव तै नहिं जान॥
सो जानि लैहै लंकपति हठि होत काल्हि बिहान।
तोहिं कहे अब फल कौन सूखे काठ कस रस पान॥
तब कह्यो दशकंधर बिहँसि भल कही महिमा राम।
जलमाहँ भरि पाषाण तरु उतरे कियो का काम॥
दीन्ह्यौ विरंचि विचारि वर नर बानरै बिसराय।
भोजन हमारे जानि जिय कछु जठर पन दरशाय॥
लै कपिन दल रचि सेतु सागर करन हित संग्राम।
आये इतै अब कौन पंचाइत करन को काम॥
उठि जाय बालिकुमार कहिदे होतही भिनसार।
देखहुँ सपूती तापसन की कौन कस बलवार॥
तब उच्यो अंगद तमकि बोल्यो बैन परम कराल।
रावण बचावन तोहिं पठयो मोहिं दीनदयाल॥
उपकार महँ अपकार मानत बीस लोचन अंधु।
रिस लगति अस मुख टोरि गवनहुँ जहाँ करुणा सिंधु॥
पै तोहिं मारे है न यश वश काल बात बतात।
मम नाथ द्रोही महा कोही गनत नहिं निज घात॥
तब कोपि दशकंधर कह्यो अब सुनत हो भट काह।
पटको पुहुमि मरकट चटक अब होति अति उरदाह॥
शासन सुनत दशवदन को धाये निशाचर बीर।
गहि लियो अंगद को कुपित डोल्यौ न कपि रणधीर॥
जब गसि गये कसि भुजन महँ तब तुरततमकि तरक्कि।

अंगद गयो मंदिर ऊपर भट गिरे सकल खरकि ॥
टूटे भुजा फूटे वदन मरि गे निशाचर चारि ।
अंगद उड्यो तहँ ते कहत जय लषण राम खरारि ॥
आयो अकाश अकाश वानर बली बालिकुमार ।
प्रभु चरण परसि प्रणाम करि अस कियो वचन उचार ॥
दश शीश हे प्रभु कालवश मान्यो न मेरे बैन ।
समुझाय भांति अनेक भाष्यों तजत हठ शठ हैन ॥
अब उचित कौशलनाथ अस दीजै तुरंत रजाय ।
लंका महल्ला में हुलसि हल्ला करैं कपिधाय ॥
सुनि प्रभु हरपि निवसे निशा तेहि सावधान सचैन ।
चारिहु दुवारन प्रथम भापित पठै वानरसैन ॥
हल्ला पर्‌यो कपि सैन महँ तहँ होतही भिनसार ।
धाये अनेकन कोटि मरकट विकट चारिहु द्वार ॥
तरु पर परत जिमि सलभ वृन्दन वृन्द पत्रन छाय ॥
पूरित भई तिमि वानरन लंकापुरी न लखाय ॥

दोहा—यूथप यूथप सकल कपि, धाये करि किलकारि ।
मानहु एकहि क्षणहिं महँ, लंका लेत उखारि ॥

छन्द ।

धाये सुमरकट घोर । चहुँ ओर ते रणधीर ॥
मुख सकल करत पुकार । जय राम लषण उदार ॥
जय कीशपति सुग्रीम । अस कहत धाय न धीम ॥
परिप [illegible] लाग । भारि तरु पषाण अदाग ॥
[illegible] झपटे देवालन पूर ॥
[illegible] गो हाहाकार ॥
[illegible] चिनतन चोपि ॥

चितयो चक्यो चहुँओर । वाकी न कौनौ ठौर ॥
सुधा भई कपि रूप । शंकित निशाचर भूप ॥
श्रवणन सुनत यहशोर । जय राम राजकिशोर ॥
जय लषण आति बलसीव । जय कीशपति सुग्रीव ॥
अस कहत गरजत कीश । यह सुनि कुपित दशशीश ॥
आसुहि सभा महँ आय । दिय भटन हुकुम सुनाय ॥
धावहु धरहु सब जाय । लीजो कपिन कहँ खाय
रावण वचन सुनि कान । बाजे अनेक निसान
चढ़ि कै तुरंग मतंग । कोउ चढ़े विशद सतंग
राक्षस हजारन लाख । कपि जितन की अभिलाख ॥
निकसे सो चारिहु द्वार । गहि अस्त्र शस्त्र अपार ॥
कपि रजनिचरन महान । माच्यो तहाँ घमसान ॥
जय जयति लंका नाथ । राक्षस कहहिं यकसाथ ॥
इत जयति रघुकुल चंद । बहु बदत वानर वृन्द ॥
निशिचरहु मरकट कोटि । गे लपटि बाहुनि जोटि ॥
बरछी कटार कृपाण । कुंतल चले न प्रमाण ॥
इत कीस तरु पापण । हनि करहिं रिपु बिन प्राण ॥
दोहा–धूरि भूरि नभ पूरिलिय, भे अलोप दिनराय ।
मारु मारु धरु धरु गिरा, रही मही महँ छाय ॥

छंद ।

श्रोणित नदीन प्रवाह । थल थल अपार अथाह ॥
पुनि मांस करदम भूरि । तेहि महँ पटानी धूरि ॥
तेहि समै निशिचर बीर । धाये महा रणधीर ॥
कपि कदन कीन्हे आय । इत ते बली कपि धाय ॥
दीन्हे सटन कहँ रोकि । भुजदंड चंडन ठोकि ॥

घननाद अंगद वीर। भिरिगे समर अति धीर ॥
संपाति और प्रजंघ। भिरिगे उभय जनु सिंघ ॥
पुनि जंबुमालि प्रवीन। हनुमान सोंरण कीन ॥
शत्रुध्न निशिचर आय। लीन्ह्यो विभीषण धाय ॥
गज कोश तप नहिं लीन। नीलहि निकुंभ चलीन ॥
पुनि प्रघस निशिचर काहि। सुग्रीव लिय रण माहि ॥
विरू पाक्ष लक्ष्मिन वीर। दोउ समर किय रणधीर ॥
दुरधर्ष रसमीकेतु। मित्रघ्न पावक केतु ॥
अरु यज्ञ कोपहु पाँच। रघुवीर सों रण रांच ॥
तिमि वज्रमुष्टि उदार। लिय मयँद समर मझार ॥
निशिचर असनि प्रभु आय। रोक्यो दुविद कहँ धाय ॥
प्रतपन महा भट घोर। नल सों लरयो वरजोर ॥
तहँ वीर विद्युतमालि। अभिरयो सुखेन उतालि ॥
यहि भाँति तजि छलछंद। युध होन लाग्यो द्वंद ॥
मारयो गदा घननाद। अंगदहि करत प्रवाद ॥
सोइ गदा लोकि तुरंत। हनि वालिसुत वलवंत ॥
रथ सारथी अरु बाजि। करि नाश दियो पराजि ॥
शर त्रय प्रजंघ पवारि। संपाति लीन हकारि ॥
संपाति वृक्ष चलाय। विन प्राण कीन वजाय ॥

दोहा–तहाँ जंबुमाली सुभट, हन्यो हृदय महँ शूल।
दौरि पवनसुत तल हन्यो, गिरयो भूमि तरु तूल ॥
प्रतपन राक्षस को तरकि, नल मारयो शिर मूठि।
निकसि परे दोऊ नयन, भई वीरता झूठि ॥
भट प्रचंड शर दलित हिय, कोशनाथ तरु मारि।
सरथ प्रजंघहि को दियो, मारि मही महँ डारि ॥

विरूपाक्ष को तहँ लषण, एकहि बाण चलाय ।
शीश काटि लीन्ह्यो तुरत, सारथि चल्यो पराय ।
चारि बाण ते राम तहँ मारयो निशिचर चारि ।
भाजि गयो तहँ पाँचयों, धनुष भूमि महँ डारि ॥
वज्रमुष्ट को मयंद कपि, मारयो मूठी दौरि ।
तोरयो रथ बाजी हन्यो, वाहन में रज खौरि ॥
हन्यो निकुंभ अनेक शर, नील सैनपति काहि ।
नील दौरि रथचक्र को, लियो उखारि तहाँहि ॥
सोई चक्र ते सारथी, शीश काटि मधि जंग ।
गरज्यो कपि तब भगत मे, लिहे निकुंभ तुरंग ॥
दुविद असनि प्रभु को हन्यो, असनि सारिस तरुसाल ।
सरथ सबाजी सारथी, भयो विबश सो काल ॥
विद्युतमाली रजनिचर, हन्यो सुखेनाहिं बान ।
मारि सुखेनहुँ शृङ्ग यक, तोरयो ता कर जान ॥
दौरि सुखेनहि शीशपर, हन्यो गदा बलवान ।
तेहि सुखेन मारी शिला, भो निशिचर बिनप्रान ॥
भयो युद्ध यहिभांति तहँ, राक्षस बानरकेर ।
बहुरि बहुरि पुनि लरत भे, करि करि कोप घनेर ॥

छन्द भुजंग प्रयात ।

चढ़े राक्षसामत्त मातंग केते । चढ़े हैं तुरंगानि केते सचेते ॥
किते स्यंदनै में सवारे चले हैं । महा युद्ध कोवे उछाही भले हैं ॥
इते कीश धाये किये घोर शोरा । शिलावृक्ष सोंमारि कै शीशफोरा ॥
उभै सैन को सोभयो युद्ध भारी । न कीशौ टरैं ना टरैं रात्रिचारी ॥
उडो धूरि गे पूरि त्यों आसमानै । न देखो परै नैन आगे महानै ॥
तहाँ राम सौमित्र कोपे अपारा । तजे चाप ते दाप कै बाण धारा ॥

ौ वाण मानौ महा वज्रपाता । तुरंगौ मतंगौ शतांगौ निपाता ॥
हू वाजि वाजे अनेकै जुझाऊ । प्रवीरानिके युद्ध वाढ्यो उराऊ ॥
दी रक्त धारानि की वाढ़ि धाई । मिलि सिंधु को लालरंगै वनाई ॥
चैं योगिनी की जमातैं अनन्ता । उठे हैं कबंधो महा वोजवन्ता ॥
नौरे हनौरे कहाँ जात भागे । मचोरें मचोरें अबै शस्त्र लागे ॥
हाँ जात आवै रहै सावधाने । गिरयों मे हन्योंनाहनोजातप्राने॥
ही शोर छायो सबै ठौर माहीं । महा कोश रोपे मुरैं नेकु नाहीं ॥
ये अस्त ताही समै में तमारी । लरैं लाग लंका निवासो सुखारी॥
ठसैं सर्वरी वीर की प्राणहारी । झिलेकीश दे दे उभैहाथतारी ॥
हा युद्ध में भो महा अंधकारा । न सूझै कछू हाथहूँ के पसारा ॥
रैं वानरै वानरै युद्ध आसी । लरैं राक्षसो राक्षसौं न निरासी ॥
हा संकुले संगरै रैन ठायो । लखै आपनोना लखैं न परायो॥
महा योगिनी प्रेतनी वोलि वानी । किये रक्तपानै अतीवै अघानी ॥
भयो भूमि रक्तामिषै पंक भारी । परे घायलै भूमि केते सुरारी ॥
गये लागि लोथीन केते पहारा । तरैं भीरु नाहीं नदी रक्त धारा॥
तहाँ रात्रिचारी चले यूथ बाँधे । कहाँ राम ठाढ़े कहैं चापकांधे॥
लखे राम आई चमू शत्रु आगे । सुआसो विषै से तजे वान लागे॥
परे भर भरैं वान के वृन्द जाई । मघा मेघ मानो झरी सी लगाई॥

दोहा–यज्ञसत्रु दुरधर्ष अरु, महा पार्श्व रणधीर ।
मिल्यौ मदोदर आय तिमि, वज्रदंत बल वीर ॥

चौपाई।

ते दोऊ राक्षस शुक सारन । लगे राम पर वाणन डारन ॥
निमिष माहँ तिनको रघुनन्दन । किये व्यथित हनि वाणनवृन्दन ॥
आये राक्षस और अनेकन । जिमिपतंग पावक कहँ देखन ॥
कनक वाण तजितनिरघुनायक । कीन्हे सबन स्वर्ग के लायक ॥

हनुमत अंगद हने निशाचर । आयो मेघनाद योधावर ॥
बालिसुवन तेहि दौरि शैल हनि । कियो विरथनिजनामवदनभनि॥
राम लषण अंगदहि सराहत । भुज पूजत मरकट अतिचाहत॥
लियो जीति अंगद सुत रावन । भयो निशाचर सैन परावन॥
कोपि इन्द्रजित गयो गगन महँ । अंतरधान कियो निजतन कहँ॥
हनै लाग शठ बाण हजारन । भये सर्प करि चले फुकारन ॥
लपटे राम लषण के गातन । नागपाश प्रभु बँधे सकल तन ॥
यह लीला दासन सुख नाशनि । भईं कीश मति युद्ध निराशनि॥

दोहा—हनुमत अंगद आदि भट, प्रभु कहँ लीन्हे घेरि।
आयो तहाँ विभीषणहुँ, विकल भयो प्रभु हेरि॥

छंद।

लंकेश सुरति सँभारि कै। बोल्यो सुबैन विचारि कै
यह काल है न विषाद को। पैहौ अवशि अहलाद को।
धननाद उत घर जायकै । बोल्यो वचन जयपायकै॥
हम युगल बंधुन मारि कै। आये समर महि डारि कै॥
दशकंठ सुनि सुत बैन को। पायो अमित उर चैन को॥
डौंड़ी पिटायो लंक में। सुत हन्यौ रिपु निरशंक में॥
गमन्यौ रही जहँ जानकी। बोल्यौ गिरा अभिमान की॥
धननाद करि संग्राम को। मारचो लषण अरु राम को॥
पुरुपक विमान चढ़ाय कै। ल्यावहु सियहि दरशाय कै॥
अस कहि गयो रावण घरै। सिय विकल भै दुख निरभरै॥
त्रिजिटा विभीषण कन्याका। सिय दासिका जग धन्यका॥
पुहुपकविमान मँगाय कै। लै चली सियहि चढ़ाय कै॥
सिय लख्यो लछिमन राम को। पायो महा दुख धामको॥
त्रिजिटा लगी समुझावने । लीला कियो जग पावने॥

तं सोच मति करु जानकी। इनको न दुति विन प्रानकी ॥
तोहिं शपथ मेरे प्रानकी। लीला गुनै भगवान की ॥
असकहि बुझायो सीय को। राखौ यतन करि जीय को ॥
पुष्पक वेमानहि फेरिकै। सिय लै चली दल हेरिकै ॥
राख्यो सियहि मन मंदिरै। कहि जियत है पति सुंदरै ॥
इत समर लीला देखिकै। देवर्षि कारज लेखि कै ॥
गरुडहि पठायो आसुही। अहि की छोड़ावन पाशुही ॥
खगराज पंख पसारिकै। आयो अतुरता धारिकै ॥
देखत गरुड अहि भगत भे। दोउ जगत पति द्रुत जगत भे ॥
कपि कियो जय जय कार को। लखि निरुज राजकुमार को ॥

सोरठा–कीन्ह्यौ गरुड प्रणाम, दैं परदक्षिण परसि पद।
गये आपने धाम, कपिदल जय जय कार भो ॥

छंद।

राक्षसहु जाय रावणहि द्वार। बहु वार वार कीन्हे पुकार ॥
आयो उदंड कोउ एक विहंग। जेहि निरषि भभरि भागे भुजंग॥
दोउ निरुज प्रवल दशरथ कुमार। ठाढ़े प्रवीर युध को तयार ॥
अब होन चहत हल्ला तुरंत। भेजहु प्रवीर वलवंत कंत ॥
तब कह्यो कोपि पशवदन वाणि। धूम्राक्ष वीर ले धनुप पाणि ॥
करु कीश सैन को अंत आसु। धूम्राक्ष सुनत पायो हुलासु ॥
दल लियो दीह दौरयो तुरंत। मरकटन मारि वाणन अनंत ॥
दीन्ह्यो पछेलि करि सिंह नाद। भट देन लगे तेहि विजै वाद ॥
दल विकल देखि मारुत कुमार। धायो प्रचंड कर लैं पहार ॥
धूम्राक्ष हन्यो तेहि गदा धाय। सो लगी शीश जनु फूल आय ॥
धूम्राक्ष हन्यो गिरि हनूमान। सो गिरयो भूमि ह्वै विगत प्रान ॥
पर[illegible] पुनि लंक जाय। धूम्राक्ष मरयो दीन्ह्यो सुनाय ॥

दशकंठ कोपि तब हुकुम दीन। हे वज्रदंत तुम भट प्रवीन॥
द्रुत हनौं जाय कपि सैन सर्व। लै वीर संग महँ अर्व खर्व॥
सुनि वज्रदंत रावण निदेश। आयो तुरंत जहँ समर देश॥
मारयो कपीन सायक अथोर। दोउ दलन भयो घमसान घोर॥
कपि सैन डगत अंगद प्रवीर। अति वेग चल्यो जनु राम तीर॥
लखि वज्रदंत बाली कुमार। मारयो रिसाय सायक हजार॥
लै पाणि महा परवत प्रचंड। तहँ बालिसुवन विक्रम उदंड॥
मारयो पहार रथ भंजि तासु। बोल्यो सुबैन अब करहु नासु॥
करवाल ढाल लै वज्रदंत। अंगदहि उपर आयो तुरंत॥
अंगदहु लीन कोहु की कृपान। दोउ करत पैतरे लरि सुजान॥
दोउ रुधिर अंग करते प्रयास। जनु लपत फुले सालमलि पलास॥
दोउ हने बरोबर दोहुन घाउ। दोउ गिरे बरोबर खाय ताउ॥

दोहा—वज्रदंत के उठत में, अंगद उठि अतुराय।
तासु आसु शिर काटि कै, बोल्यो जय रघुराय॥

छन्द नाराच।

निहारि वज्रदंत अंत जातुधान भागि कैं।
कियो पुकार रावणैं दुवारदेश लागि कैं॥
दियो निपात वज्रदंत बालि को कुमार है।
चढ़े चहैं कपीश आसु लंक की प्रकार है॥
दशाननो प्रकोपि कै अकंपनै बोलाय कै।
कह्यो करौ निपात कीश शुद्ध युद्ध ठाय कै॥
दशाननै निदेश को सुने अकंपनो बली।
चल्यो प्रकोपि युद्ध को लिये सुसैनहू भली॥
इते बली कपीश देखि आवतै अकंपनै।
चले उछाह युद्ध के न देह नेकु कंपनै॥

ठयो सुहोन उद्ध युद्ध कीश राक्षसान को ।
हनै पषाण कीश जातुधान त्यों कृपान को ॥
अभै अकंपनो तहाँ धस्यो सुकीश सेन मे ।
अनेक बाण मारिकै दियो चमू अचैन में ॥
चली पराय वाहिनी बली बली मुखान की ।
परी हरीन कान हाँक पौनपूत सान की ॥
सुकेसरी कुमार धाय आयगो तुरंतही ।
अकंपनै निहारि क्रोधवंत भो अनंतही ॥
हनै अनेक पाद पात काटतो अकंपनै ।
विरुद्ध क्रुद्ध युद्ध मे सुमारुती छनैछनै ॥
उखारि एक वृक्ष दौरि केसरीकिशोर है ।
दियो अकंपनै शिरै चल्यो न तासु जोर है ॥
गिरयो महो मरचो शरीर चूर चूर ह्वै गयो ।
अनेक जातुधान रावणै पुकार को दयो ॥
निशाचरे सुयुद्ध में अकंपनो हतो गयो ।
करौ विचार औरहू महा उपद्रव ठयो ॥
सुनै निशाचरान वैन लंकनाथ शंक कै ।
कह्यो प्रहस्त वोलिकै करो सुरक्ष लंक कै ॥
तुम्है विना देखात ना करै कपीश नाश जो ।
चमूपते विचारु मोहिं देइ को हुलास जो ॥
कह्यो प्रहस्त हस्त जोरि हौं प्रशस्त भापहूं ।
न युद्ध के उमंगहीन कातरी न राखहूं ॥
अबै नशान नेकु ना निशाचरेश बूझिये ।
वहोरि देहु जानकी न राम सो अरूझिये ॥
न जंग में जुरे जानति जीति जातुवान की ।

चहौ जो लंक राजि लंकराज देहु जानकी ॥
प्रहस्त बैन कानमें परे सुतप्त तेल से।
कह्यो अमर्षि बीश अक्ष कागदो गदेल से ॥
अनेक भाँति भोग भोगि खाय खूब मोरई।
प्रहस्त काम के दिना डेराय जीव चोरई ॥
निशुद्ध होहु युद्ध को विरुद्ध बात ना कहौ।
न बाचिहौ घरै घुसे लेड़ार होन ना चहौ ॥
प्रहस्त शीश नाईकै चल्यौ तमंकि युद्ध को।
चली प्रचंड वाहिनी कपीन के निरुद्ध को ॥
चले पटै अमात्य तासु वाहिनी बनावते।
कढ़े जु लंक द्वार ते लखे हरीन धावते ॥
भिरे प्रचंड जातुधान सिंहनाद कैतहाँ।
उछाह सो अनेक कीश कंदनै कियो महाँ ॥
दोहा—तहँ प्रहस्त मंत्री सबै, झिले समर सर झारि।
हन्यो नरांतक को दुविद, शैल शृङ्ग यक मारि ॥

छन्द चौबोला।

हन्यो दुविद कहँ पुनि दुर्मुख भट अति कराल यक शूला।
दुविद हन्यौ ताके शिर तरुवर गिरयो तूल के तूला ॥
जांबवान पुनि हनि पपान यक महानाद कहँ मारयो।
हन्यो कुंभहनु को अंगद तहँ वृक्ष शीश पर झारयो ॥
लखि मंत्रिन विनाश सेनापति धस्यो कीश दल माहीं।
डारयो मर्दि मर्कटन कोटिन जिमि मृगपति मृग काहीं ॥
देखि कदन बंदरन निलोचन नील सेनपति धायो।
महा एक वट वृक्ष उखारि प्रहस्तहि ताकि चलायो ॥
सो तरु निल निल करि प्रहस्त भट नीलहि पावन छायो।

तब मरकट दल नायक कोपित शिला धारि कर धायो ॥
मारयो शिला प्रहस्त शीश में मरो तुरंत प्रवीरा ।
हत दल नायक निशिचर भागे लहि कीशन ते पीरा ॥
जाय पुकारे रावण द्वारे सैनां नायक जूझा ।
दिन दिन विजय लहत वानर रण अबहुँ न बूझ अबूझा ॥
दशकंधर सुनि दरत अधर रद बोल्यो बैन रिसाई ।
रो कहु वीर द्वार लंका के सकै न वानर आई ॥
हमहिं जाव सजि समर हेत अब देखब कपि मनुसाई ।
कह सुग्रीव कहाँ भ्राता मम कहाँ लषण रघुराई ॥
डंका दियो देवाय दशानन लंका महँ चहुँ ओरा ।
निशिचरराज आज रण गवनत सजे वीर सुनि शोरा ॥
राक्षसनाह सनाह पहिरि तन चल्यो बजाय नगारा ।
महा वीर सब चले संग महँ निकस्यो उत्तर द्वारा ॥
महा सैन आवत लखि रघुपति कह्यो विभीषण पाहीं ।
सखा कौन आवत निशिचर वर जानि परत कछु नाहीं ॥
कह्यो विभीषण सुनहु नाथ यह आवत रावण राजा ।
यह महेन्द्र बल दर्प विदारक जाहि डरत यमराजा ॥
इन्द्रजीत त्रिसिरा देवाँतक नाराँतक भट भारी ।
और महोदर महा पाइर्व भट तिमि अति काय सुरारी ॥
कुंभ निकुंभ अकंपन दूजो सकल निशाचर वीरा ।
आवत सकल एक नहिं आवत कुंभकरण रणधीरा ॥
कह्यो राम तब बहुत [illegible]म में यह खल हगपथ आयो ।
य[illegible] न[illegible] [illegible] बल रूप भानु सम भायो ॥
[illegible]ंका जाई ।
[illegible] मोरि दोहाई ॥

अस कहि सब सुर काय भटन को धस्यो कीश दल एका।
मारत बाण दशानन कोपित किय विन प्राण अनेका॥
विकल देखि दल कपिपति धायो हन्यो भूमिधर भारी।
सो गिरि रावण रज सम कीन्ह्यो मारयो बाण प्रचारी॥
लगत बाण सुग्रीव गिरयो महि माच्यो हाहाकारा।
गय गवाक्ष नल ऋषभ जोतिमुख तिमि सुषेन बलवारा॥
रावण पै डारे धरणीधर सो बचाय शर मारी।
पट बीरन करि दीन्ह्यो मुरछित बार बार ललकारी॥
भगे कीश सब चले पुकारत रक्षहु रघुकुलनाथा।
महाबली दल बलीमुखन को नाश करत दशमाथा॥
आरत बचन सुनत करुणाकर मृगपति गति रघुराऊ।
चले निशंक लंकपति सनमुख लषण कह्यो भरि चाऊ॥
मैं प्रभु चहौं लरन रावण सों जो निदेश अब पाऊ।
कह्यो राम लरियो बचाय तन छली निशाचरराऊ॥
दोहा–तेहि अवसर दशमुख शरनि, जाल फारि हनुमान।
भुज उठाय गहि रथ धुरा, कीन्ह्यो बचन बखान॥
सुरासुरन ते अभै कर, पायो बिधि बरदान।
नर बानर ते रावरी, मीच नगीच निदान॥

छंद चामर।

निदाक मोर दस्त सर्प तोर दर्प दारने।
करै प्रबीरता प्रबीर नेकु ना बिचारने॥
सुन्यो सुबैन अंजनीकुमार ओजबान के।
निशाचरेश हूं भन्यो तुरंत बैन मानके॥
और [illegible] कीश तें निशंकही नचावते।
[illegible] निशाचरन [illegible] यो बचावते॥

खेलाय तोहिं मारिहों न बाचिहै परायकै ।
कह्यो कपीश मैं वही दही पुरी बजाय कै ॥
अक्षयकुमार को हन्यों सुबाटिका उजारि कै ।
प्रकोपि लंकनाथ घात पुत्र को बिचारिकै ॥
कियो तलै प्रहार कीश तू मरचो उचारि कै ।
लगे सुरारि को प्रहार बुद्धि को बिसारि कै ॥
गिरचो कपीश भूमि में उठ्यो सुधीर धारि कै ।
कियो तलै प्रहार देवशत्रु को प्रचारिकै ॥
गिरचो सुरेश शत्रु भूमि खाय कैं पछार को ।
उठ्यौ सराहि बार बार केसरीकुमार को ॥
करैलगे प्रशंस देव केसरीकिशोर की ।
कह्यो कपीश भै वृथा सुरीति मोर जोर की ॥
उठे सजीव दुष्ट तैं बहोरि मोहिं मारिलै ।
पठायहौं जमालये बिशेषि तूबिचारिलै ॥
प्रकोपि लंकनाथहू हन्यौ सुरामदासको ।
गिरचो बिसंग भूमि मेतज्यो नहीं हवास को ॥
बिसंग केसरीकुमार देखि रावणौ तदा ।
चल्यो प्रकोपि नील पै हन्यो पतत्रि त्यों गदा ॥
अखंडबाण धार नील लंकनाथ की हनी ।
सहंत सन्मुखै चल्यो बिहाय वानरी अनी ॥
हन्यो निशाचरेश को पहार एक जायकै ।
कियो सुशैल सात टूक बाण को चलायकै ॥
उठ्यो इतै सुअंजनी किशोर देखि रावनै ।
[illegible]ा नील युद्ध में गुन्यो न योग धावनै ॥
[illegible] [illegible] [illegible]क्ष वृन्द मारि राक्षसाधिपै ।

अदृश्य कैदियो प्रकोप सों दशाननो तपै ॥
पवारि वाणजाल वृक्ष छिन्न भिन्न कैदियो ।
अखंड वाणधार झारि मूंदि नीलको लियो ॥
कियो स्वरूप छोट नील हूं चढ्यो ध्वजाग्र में ॥
कहूं देखात क्रीट पै कहूं शरासनाग्र में ॥
निहारि नील लाघवी प्रसन्न रामचन्द्र भे ।
सुकंठ लक्ष्मणादि वीर पावते अनंदभे ॥
निशाचरेश पावकास्त्र चाप में सधान कै
कह्यो वचाउ कीश तोहिं देत मैं अप्रान कै ॥
चलाय नील को वसुंधरा गिराय देत भो ।
दह्यो न आनि ताहि जाहि पुत्र राखि लेतभो ॥
निहारि नील को विसंग लंकराज त्यागि कै ।
हनैलग्यो अनेक वानरान कोप पागि कै ॥
चली पराय वानरानि वाहिनी दिशाननै ।
निहारि काल सों कराल धावतो दशाननै ॥
समर्थ कौन जाय जो निशाचरेश सन्मुखै ।
विचारि यों चल्यो निशंक लक्ष्मनै भरो सुखै ॥

दोहा–रामानुज कोदंड लै, चली बाँकुरो वीर ।
ललकारयो दशकंठ को, गिरा मेघगंभीर ॥

चौपाई ।

रेरावन कपि क्षुद्रन काहीं । मारे तोहिं जग में यश नाहीं ॥
चलो आउ अब सनमुख मेरे । दरशावै बल जो कछु तेरे ॥
अस कहि कियो धनुष टंकोरा । भरो भयंकर भु महँ शोरा ॥
सुनि टंकोर शोर अति घोरा । तिरछे चिते लषण की ओरा ॥
सिंहनाद करि रावन धायो । निकट आय असवचन सुनायो ॥

चाल धरि दे धनु बाणा। भागु भागु रखैं निज प्राणा॥
हे है काल कलेवा। सकैं न राखि असुर मुनि देवा॥
नुज बोल्यो मुसक्याई। वदसि वचन विनबलहि देखाई॥
धनुप शर लै तुव आगे। कसन देखावसि ओज अभागे॥
ी सुनत लपण की बातें। हन्यो लंकपति सायक सातै॥
सम करि रावण के बाना। रामानुज नेसुक मुसक्याना॥
त दशानन बहु शर मारा। रामानुज छोड़ी शरधारा॥

दोहा–विफल निरखि निज विशिप लै, सायक यक हविबाट।
तज्यो घोर शर जोर करि, लाग्यो लपण ललाट॥

चौपाई।

ी विभाव सुसायक भाला। भयो समर कछु लपणविहाला॥
यो सँभारि तुरंत अनंता। काट्यो धनुप लपण बलवंता॥
ग धनुप काटि रण धीरा। हन्यो ललाट माहँ त्रय तीरा॥
दशभाल भाल लगि बाना। गिरयो विसंग तज्योतन भाना॥
भाल ते रुधिर पनारे। उठ्यो बहुरि सारथी हँकारे॥
त नहिं लछिमन ते देखी। ब्रह्मदंड लै शक्ति विशेखी॥
त धूम निकसत मुख ज्वाला। तज्यो लपण पै शक्ति विशाला॥
हजारन लछिमन बाना। रुकी न शक्ति प्रचंड प्रधाना॥
ी लछिमन के उर आई। मुरछित भयो भरत लघु भाई॥
छित देखि लपण तहँ रावन। दौरि बीसभुज लग्यो उठावन॥
हिमाचल मंदर मेरू। धरणी सातहु सागर फेरू॥
उठाय भुजन दश शीशा। तिलभरितज्योन भूमिफणीशा॥

दोहा–लपण विकल लखि समर महँ, धायो पवनकुमार।
हन्यो जोर भारि मूठि तेहि, गिरिगो खाय पछार॥

अदृश्य कैदियो प्रकोप सों दशाननो तपै ॥
प्रवारि वाणजाल वृक्ष छिन्न भिन्न कैदियो ।
अखंड वाणधार झारि मूंदि नीलको लियो ॥
कियो स्वरूप छोट नील हूं चढ्यो ध्वजाग्र में ।
कहूं देखात कीट पै कहूं शरासनाग्र में ॥
निहारि नील लाघवी प्रसन्न रामचन्द्र भे ।
सुकंठ लक्ष्मणादि वीर पावते अनंदभे ॥
निशाचरेश पावकास्त्र चाप में सधान कै
कह्यौ बचाउ कीश तोहिं देत मैं अप्रान कै ॥
चलाय नील को वसुंधरा गिराय देत भो ।
दह्यो न आनि ताहि जाहि पुत्र रावि लेतभो ॥
निहारि नील को विसंग लंकराज त्यागि कै ।
हनैलग्यो अनेक वानरान कोप पागि कै ।
चली पराय वानरानि वाहिनी दिशाननैं ।
निहारि काल सों कराल धावतो दशाननैं ॥
समर्थ कौन जाय जो निशाचरेश सन्मुखै ।
विचारि यों चल्यो निशंक लक्षनै भरो सुखै ॥
दोहा–रामानुज कोदंड लै, वली वाँकुरो वीर ।
ललकारयो दशकंठ को, गिरा मेघगंभीर ॥

चौपाई ।

रेरावन कपि क्षुद्रन काहीं । मारे तोहिं जग में यश नहीं ॥
चलो आउ अब सनमुख मेरे । दरशावै वल जो कछु तेरे ॥
अस कहि कियो धनुष टंकोरा । भरो भयंकर भू महँ शोरा ॥
सुनि टंकोर शोर अति घोरा । तिरछे चितै लषण की ओरा ॥
सिंहानाद कारि रावण धायो । निकट आय असवचन सुनायो ॥

अरे बाल धरि दै धनु बाणा। भागु भागु रखें निज प्राणा।
नातो ह्वै है काल कलेवा। राखें न राखि असुर मुनि देवा।
रामानुज बोल्यो मुसक्याई। बदसि वचन बिनबलहि देखाई।
खड़ो धनुष शर लै तुव आगे। कसन देखावसि ओज अभागे॥
यतनो सुनत लषण की बातै। हन्यो लंकपति सायक सातै॥
रज सम करि रावण के बाना। रामानुज नेसुक मुसक्याना॥
कुपित दशानन बहु शर मारा। रामानुज छोड़ी शरधारा॥

दोहा-बिफल निरखि निज बिशिप लै, सायक यक हनिबाट।
तज्यो घोर शर जोर करि, लाग्यो लषण ललाट॥

चौपाई।

लग्यो बिभाव सुसायक भाला। भयो समर कछु लषणबिहाला॥
उठ्यो सँभारि तुरंत अनंता। काट्यो धनुष लषण बलवंता॥
रावण धनुष काटि रण धीरा। हन्यो ललाट माहँ त्रय तीरा॥
तहँ दशभाल भाल लगि बाना। गिरयो बिसंग तज्योतन भाना॥
चले भाल ते रुधिर पनारे। उम्यो बहुरि सारथी हँकारे॥
जीतत नहिं लछिमन ते देखी। ब्रह्मदंड लै शक्ति बिशेखी॥
उठत धूम निकसत मुख ज्वाला। तज्यो लषण पै शक्ति बिशाला॥
हने हजारन लछिमन बाना। रुकी न शक्ति प्रचंड प्रधाना॥
लागी लछिमन के उर आई। मुरछित भयो भरत लघु भाई॥
मुरछित देखि लषण तहँ रावन। दौरि बीसभुज लग्यो उठावन॥
शैल हिमाचल मंदर मेरू। धरणी सातहु सागर फेरू॥
सकै उठाय [illegible] फणीशा॥

चौपाई।

दृग श्रवणन ते श्रोणित धारा। निकसी रावण के बहु बारा॥
झूमत झुकत भवँत पुनि भागत। विकलगिरयोरथपर नहिंजागत॥
मुरछित देखि दशानन याने। लगे सराहन सुर हनुमाने॥
लियो उठाय लषण हनुमाना। फूलहु ते लघु लग्यो महाना॥
यह जानहु सब भक्ति प्रभाऊ। रिपु गिरिगुरुनिजजनहरुआऊ॥
पवन सुवन लै लछिमन काहीं। आयो रघुकुल भानु जहाँहीं॥
प्रभुहि विलोकत शक्ति परानी। गई दशानन निकट महानी॥
विकल देखि रघुपति लघु भाई। उर लगाय लिय आसु उठाई॥
भयो विसल्य गई सब पीरा। उठ्यो कहत कहँदशमुख बीरा॥
निरुज निहारिलषण कहँ कीशा। बोले सब जय जयति अहीशा॥
देखि कुशल लछिमन को रामा। आपुहि करन चले संग्रामा॥
गहि कोदंड प्रचंड अखंडा। दशरथ सुवन बीर बरिबंडा॥

दोहा—दशमुख समर पयान लखि, बोल्यो पवनकुमार।
नाथ हमारे कंध चढ़ि, जीतहु रिपु यहि बार॥
पवन सुवन के बचन सुनि, प्रभु नेसुक मुसक्यान।
चढ़े कपीशहि कंधपर, यथा गरुड़ भगवान॥
सोह्यो हनुमत कंधपर, भानु वंश को भानु।
मनहुँ कनकगिरि मिलि उये, भानु कृशानु समानु॥

छंद।

लै चल्यो मारुतनन्द श्रीरघुनन्द वेग अमंद।
रघुवंस पंचानन दशानन देखि भे सानंद॥
प्रभु किये परम कठोर तहँ शारँग को टंकोर।
केते निशाचर कान फूटे भजि चले चहुँ ओर॥
बोल्यो दशानन सोंगिरा गंभीर श्रीरघुवीर।

ठाढ़ो रहे ठाढ़ो रहै कहँ जातदे अव पीर ॥
दिनराज त्यों यमराज त्यों सुरराज अगिनि उदंड ।
तोहि राखि सकत न आजु शंभु स्वयंभु ओज अखंड ॥
दशहूं दिशानन में दशानन गोपि आनन भागि ।
वचिहै न कौनौ भाँति खल मम शर शरीरहि लागि ॥
मम बंधु को तैं हने शक्ति विशेषि लेहौं वैर ।
तव पुत्र पौत्र सँहारि मैं देखरायहौं रण सैर ॥
चौदह सहस निशिचर प्रखर खर त्रिशिर दूषण संग ।
मार्‌यो निमिष महँ भगिनि सो पूछ्यो कि नहिं सो जंग ॥
प्रभु के वचन सुनि लजत कोपत लंकपति बहु तीर ।
मार्‌यो अनिल सुत को सुरति करि वैर पूरुव वीर ॥
तिल तिल विधे तन वाण पै हनुमान तेज प्रभाउ ।
क्षण क्षण वढ़त द्विगुणित समर लखि कुपित भे रघुराउ ॥
रघुवंश मणि मंडलाकारहि करि कोदंड प्रचंड ।
शर धार समर मझार छोड़्यो वार वार अखंड ॥
छाये विदिशि दिशि राम सायक गगन महिं चहुँ ओर ।
दशकंठ भान भुलान सरथ छपान वाणन झोर ॥
प्रभु प्रथम रथ काट्यो सचक्र तुरंग डारे मारि ।
काट्यो ध्वजा सारथि हन्यो तव उठ्यो कोपि सुरारि ॥
लीन्ह्यो असनि सम शूल सोउ कर में भई वहु खंड ।
पुनि कियो कर करवाल सोउ दुइ टूक भयो उदंड ॥
रघुवीर लै यक तीर रावण के हन्यो उर माहिं ।
गिरिगो धनुष धरणी व्यथित तन रही सुधि कछु नाहिं ॥
जो लोक रावण वीर रावण लागि वज्र कराल ।
कंप्यो न कछु सो राम शर लगि भयो भूरि विहाल ॥

पुनि विहँसि प्रभु यक अर्धचन्द्र चलाय सायक वोर।
काट्यो सुकीट सुपंच खंडहु झरे करत अजोर॥
अति दीन आयुध हीन तहँ दश शीश शीश उघारि।
ठाढ़ो समर जनु विन प्रकाश प्रयात अस्त तमारि॥
विषहीन आसी विष यथा जिमि अगिनि ज्वाल विहीन।
मुसक्याय को शलनाथ मार्यो वचन वाण प्रवीन॥
मारे अनेकन कीश कीन्ह्यो युद्ध परम कठोर।
अब भये तैं रावन दया वन रह्यो नहिं भुज जोर॥
अब जाहि लंका रहित शंका थाक नेकु नेवारि।
चढ़ि रथ शरासन लै वहुरि अइयो समर पग्ग धारि॥
तब लख्यो विक्रम तुम हमारो हनौं जो अब तोहिं।
तौ थको रावण हन्यो रघुपति अस कही जग मोहिं॥
सुनि राम वैन अचैन रावण भग्यो छूटे केश।
अवधेश सायक भीति भरि लंका घुस्यो लंकेश॥
जयकार कीन्ह्यो देव सब प्रभु आय अपने सैन।
कीन्ह्यो विसल्य कपीन लछिमन सहित फेरत नैन॥
सुग्रीव अंगद आदि कपि सब करहिं राम प्रणाम।
प्रभु वाहुँ पूजहिं जयति कहि कहि भये पूरण काम॥

दोहा--उत लंका महँ लंकपति, सुमिरत रघुपति वान।
भय भरि वोल्यौ निशिचरन, अब देखात नहिं त्रान॥

छंद चौबोला।

नल कूवर को वेदवतीको रंभा की नंदी की।
तथा शाप अनरन्य भूप की सत्य होति क्षति जीकी॥
जाहु जगावहु कुंभकरण को सो विशेषि जय पाई।
निशिचर कुल की वचन हेत नहिं दीसत और उपाई॥

कहुँ षट कहुँ सप्त कहुँ आठहु कहुँ नव कहुँ दश मासा।
सोवत कुंभकरण भ्राता मम अब तेहि बल नय आसा॥
करि सलाह सोयो नव दिन गत ताहि जगावहु जाई।
चले जगावन कुंभकरण को निशिचर अति भय पाई॥
लगे बजावन बाज अनेकन गये भवन के द्वारे।
कुंभकरण नासिका श्वास लगि उड़ि बाहिरे सिधारे॥
यक योजन को सेन अयन सों कुंभकरण जहँ सोवैं।
यक यक कर गहि जस तस के घुसि कहे सकल का होवै।
चंदन प्रथम लगाये तन में सींचे सुरभित नीरा।
वीणा वेणु मृदंग शंख ध्वनि कियो निशाचर भीरा॥
दश हजार निशिचर योधावर लगे जगावन ताको।
एक सहस दुंदुभी बजाये करि नादित लंका को॥
खैंचहिं कर गहि चरण दबावैं झिझकारहिं सब अंगा।
नहिं जागत उपाय कछु लागत कुंभकरण अड़बंगा॥
मूशल मुद्गर परिघ गदा लै जोर जोर भरि मारैं।
तऊ न जागत नींद विवश खल गिरि तरु तन पर डारैं॥
खर तुरंग मातंग ऊँटगण तेहि तन पर दौरावैं।
करहिं शोर [illegible] र अति उड़त विहँग गिरिजावैं॥
नहिं ज [illegible] तन पर दौराये।
त [illegible] यो नींद सुख छाये॥
[illegible]।
[illegible]॥
[illegible] ाना।
कीन्हे [illegible] ना॥
है [illegible] ना।

पुनि बिहँसि प्रभु यक अर्धचन्द्र चलाय सायक घोर।
काट्यो सुक्रीट सुपंच खंडहु झरे करत अजोर॥
अति दीन आयुध हीन तहँ दश शीश शीश उघारि।
ठाढ़ो समर जनु बिन प्रकाश प्रयात अस्त तमारि॥
विषहीन आसी विष यथा जिमि अगिनि ज्वाल विहीन।
मुसक्याय को शलनाथ मार्‌यो वचन बाण प्रवीन॥
मारे अनेकन कीश कीन्ह्यो युद्ध परम कठोर।
अब भये तैं रावन दया बन रह्यो नाहिं भुज जोर॥
अब जाहि लंका रहित शंका थाक नेकु नेवारि।
चढ़ि रथ शरासन लै बहुरि अइयो समर पगु धारि॥
तव लख्यो विक्रम तुम हमारो हनौं जो अब तोहिं।
तौ थको रावण हन्यो रघुपति अस कही जग मोहिं॥
सुनि राम बैन अचैन रावण भग्यो छूटे केश।
अवधेश सायक भीति भरि लंका घुस्यो लंकेश॥
जयकार कीन्ह्यो देव सब प्रभु आय अपने सैन।
कीन्ह्यो विसल्य कपीन लछिमन सहित फेरत नैन॥
सुग्रीव अंगद आदि कपि सब करहिं राम प्रणाम।
प्रभु बाहुँ पूजहिं जयति कहि कहि भये पूरण काम॥

दोहा--उत लंका महँ लंकपति, सुमिरत रघुपति बान।
भय भरि बोल्यौ निशिचरन, अब देखात नहिं त्रान॥

छंद चौबोला।

नल कूबर को वेदवतीको रंभा की नंदी की।
तथा शाप अनरन्य भूप की सत्य होति क्षति जीकी॥
जाहु जगावहु कुंभकरण को सो विशेपि जय पाई।
निशिचर कुल की वचन हेत नहिं दीसत और उपाई॥

कह्यो बहुरि अब जाहुं समर को बंदन लेउ हमारा ॥
अस कहि कुंभकरण संगर को चल्यो शुद्धमति क्रुद्धा ।
एक फलंक लंक दरवाजा आयो नाँघि विरुद्धा ॥
मरकट कटक देखि चटपट शठ अटपट मनहिं विचारी ।
झटपट लटपट करन कोश दल उदभट चल्यो सुरारी ॥
भगे वलीमुख महावली लखि फिरैं न फर पर फेरे ।
अंगद अरु हनुमंत धाय द्रुत बार बार अस टेरे ॥
कुल की प्रभु की और धर्म को सुरति छोड़ि कस भागे ।
उभय लोक अवहीं वनि जैहैं राम काज महँ लागे ॥
अंगद वचन सुनत मरकट भट जीवन आश बिहाई ।
धाये कोटि कोटि चहुँ दिशि ते लै तरु गिरि समुदाई ॥
कुंभकरण तन चढ़े चटक सब हनि हनि वृक्ष पहारा ।
कपिन वृन्द धरि धरि निज मूठिन लाग्यो करन अहारा ॥
कुंभकरण रन दुराधर्ष भट शत शत कपि मुखमेलै ।
कान नाक ह्वै कढ़हिं कीश बहु भयो वानरन खेलै ॥
शाखा मृगन महो महँ पटकत मीजै चरण चलाई ।
मरयो हरिण हजारन हंसि हंसि धावत भूमि कँपाई ॥
धायो दुविद मही धर लैकर कुंभकरण कहँ मारयो ।
नहिं पहुँच्यो ताके शिर पर गिरि गिरि महि सैन सँहारयो ॥
तब सहसान पपान न मारयो ता कहँ पवनकुमारा ।
महा शूल सों छेदि छेदि सब शैल व्यर्थ करि डारा ॥
कुंभकरण रणदुर्मद धायो लीन्हे शूल कराला ।
महा शैल इत लियो पवनसुत दन्यो दौरि विकराला ॥
मारुति मारयो महा महीधर लग्यो माथ मद्द जाई ।
कुंभकरण कछु भयो व्यथित तहँ सँभरि कोप अति छाई ॥

हन्यो त्रिशूल हनूमत के उर निफरि गई तन फोरी ।
शोणित वमत भयो कपि विह्वल भई मूरछा थोरी ॥
कुम्भकरण को काल विचारत भागे कीश अपारा ।
करत किलकिला शोर चहूं कित माच्यो हाहाकारा ॥
नील सैनपति कुम्भकरण को मारयो दौरि पहारा ।
वाम पाणि मूठींसों गिरिवर रज सम सो करिडारा ॥
ऋषभ सरभ अरु नील गवाक्षहु गंधमादनहु पाँचौ ।
हन्यौ कुंभकरणै गिरि तरु तल जानि दुरासद साँचौ ॥
भये पुहुप सम ते प्रहार तन कँप्यौ न नेकु सुरारी ।
कोहु कहँ पद ते कोहु कहँ तल ते मारि भूमि महँ डारी ।
भागत वानर भक्षत रण महँ मूर्तिमान जनु काला ।
को समरथ सनमुख गवनै तेहि मरकट भये विहाला ॥
दाहत यथा विपिन दावानल कुम्भकरण तेहि भाती ।
धावत धरणि कँपावत नावत मुख महँ कपिन जमाती ॥
बालिकुमार पहार पाणि लै मारयौ रावण भ्राते ।
अंग लागि फूट्यो पहार सो हँस्यौ ठठाय भयाते ॥
हन्यो मुष्टि यक वाम पाणि की गिरयौ मुरछि युवराजू ।
कुम्भकरण धायो त्रिशूल लै कहत कहाँ कपिराजू ॥
आवत कुम्भकरण को लखि तहँ रह्यो कीशपति ठाढ़ो ।
कह्यो वचन सुग्रीव भीमवल रण उमंग भरि गाढ़ो ॥

दोहा—कुम्भकरण लघु वानरन, मारे तोहिं यश नाहिं ।
मेरे सनमुख आय कै, दरशावै वल काहिं ॥
कीशराज को जानिकै, कुम्भकरण वलवान ।
लै त्रिशूल सनमुख भयो, कीन्ह्यो वचन वखान ॥
हो नाती करतार के, ऋक्ष राज के नंद ।

राम बाहुबल पाय कै, गरजहु गर्व वेलंद ॥

छंद पद्धरी।

सुग्रीव रहो अब सावधान। हौं कुंभकरण नहिं वीर आन ॥
अस सुनत कोशपति लै पहार। दशकंठ अनुज पै किय प्रहार ॥
गिरि कुँभकरण तन लगि तुरंत। छहराय परयो टूके अनंत ॥
तब कुँभकरण महि रोकि पाउ। घाल्यौ सुकंठ पै शूल घाउ ॥
सो रह्यो शूल गुरु सहस भार। निरमाण भयो जनु कुलिशसार॥
दमक्यो दिगंत दामिनि समान। घहरान घंट वानर परान ॥
लखि शूल गुन्यो मन हनूमान। राजा विशेषि बिन भयो प्रान ॥
धायो अमंद अंजनीनंद। अति करी लाघवी कपि सुछंद ॥
पायो न जान सुग्रीव पाहिं। गहि लियो शूल बीचही माहिं ॥
दै जानु शूल टोरयो प्रवीर। लखि लगी प्रशंसन देवभीर ॥
हनुमान सरिस नहिं कोउ देखाय। कपिराज प्राण लीन्ह्यो बचाय ॥
कपि लगे पुजन हनुमंत बाहु। भो जातुधान दल दीह दाहु ॥
लखि कुंभकरण निज शूल भंग। लीन्ह्यो उखारि गिरि महा शृङ्ग ॥
धायो सुकंठ के ओर घोर। मारयो पहार करि बाहु जोर ॥
गिरि लगत गिरयो सुग्रीव भूमि। भे शिथिल अंग नहिं उठ्यो झूमि॥
तहँ कुंभकरण धायो प्रचारि। लीन्ह्यो उठाय कपिपति सुरारि॥
तेहि काँख दाबि लैचल्यो लंक। दशकंठ अनुज दुर्मद निशंक ॥
अस कुंभकरण कीन्ह्यो विचार। दशकंठ जेठ भ्राता हमार ॥
तेहि [illegible] सुग्र[illegible] अग्रज बलीन। सोइ लेहुँ बैर करि कपिन दीन॥
[illegible] [illegible]मारि। लै चल्यो कपीशहि अमरिमारि॥
[illegible] [illegible]। हनुमान गुन्यो अस चित माहिं ॥
[illegible]। लै[illegible] कपीश को मैं छुड़ाय ॥
[illegible]। [illegible]नि होइगो बड़ो शोक ॥

सुग्रीव शीश रघुपति प्रताप। कबहूं न पाइ है शत्रुताप॥

दोहा—अस विचारि हनुमान तहँ, लग्यो समेटन सैन।
कुंभकरण सुग्रीव लै, गयो लंक भरिचैन॥

छन्द।

माच्यौं हल्ला लंक महल्ला कुंभकरन बलवान।
काख दाबि लायो कपिराज हि जातुधान हरपान॥
कुंभकरण पहुँच्यौ बजार महँ कपिपति गहे प्रवीर।
चढ़ी अटारी निशिचर नारी बरषहिं चंदन नीर॥
बरषहिं पुहुप लाज जय गावहिं पहिरावहिं जयमाल।
सीतल मंद समीर चलावैं लै लै व्यजन विशाल॥
सो सीतलता पाय कीशपति मुरछा तज्यौ प्रवीर।
दबे काख महँ का करिये अब अस विचारि रणधीर॥
कढ्यो कुक्ष ते गयो कन्ध पर दंतन काट्यो नाक।
काटि करण दोउ करन करज ते फैलायो जसनाक॥
पद नखते दोउ पार्श्व विदारयो पुनि उडि चल्यो अकाश
कुंभकरन पद पकरि पछारयो मान्यो प्राण विनाश॥
कंदुक इव उड़िगयो गगन पुनि सुमिरत राम प्रताप।
राम समीप आय वानरपति गह्यो चरण बिन ताप॥
नासा करण विहीन महा भट बहत रुधिर की धार।
करि गलानि मन कुंभकरण तहँ कीन्ह्यो मरण विचार॥
लौटि चल्यो पुनि समर हेत शठ लै कर मुदगर घोर।
प्रविस्यो पुनि वानरी वाहिनी लग्यो खान चहुँ ओर॥
महा मत्त रण कुंभकरण भट गयो भूलि तेहि भान।
लग्यो खान निशाचर वानर कियो घोर घमसान॥
भगे कीश हाहा पुकारि करि अब नहिं कोउ समुहात।

डरत लोक के प्रजा यथा सब महाकाल मुख जात ॥
तहँ रामानुज महा धनुर्धर दुराधर्ष रणधीर।
गवन्यो कुंभ करण के सनमुख लै आयसु रघुबीर ॥
हन्यो सात शर तासु शरीरहि निकरि गये तन फोरि।
मारयो बहुरि हजारन बाणन काट्यो कवच बहोरि ॥
बेध्यो सकल शरीर शरन सों कुंभकरन को फेरि।
रण बाँकुरा बीर रामानुज कह्यो वचन तेहि टेरि ॥
सत्य काल को जीतनवारो लख्यो पराक्रम तोर।
अब देखन तुव सकल पराक्रम उत्साहित मन मोर ॥
चढ़ि सुरेश ऐरापति पर यदि लोकपाल लै संग।
भिरहिं देव दल लै करि कर पवि तऊँ न जीतहिं जंग ॥
सुनत सुमित्रा सुवन वचन तहँ कुंभकरण रणधीर।
बोल्यो वचन विहँसि संगर महँ लषण लाल तुम बीर ॥
राजकिशोर सकल विधि समरथ मेरो करन विनास।
पै तुम्हरे जेठे भ्राता को लगी लखण की आस ॥
देहु बताय कहाँ रघुनन्दन मोहिं अब कछुन देखात।
सत्य भाउ ताको बिचारि तहँ कही लषण अस बात ॥
नील शैल सम खड़ो अचल यह रघुकुल पंकज भान।
जाहु बीर अभिलाषा पूरहु निशिचर वंश प्रधान ॥
इतना सुनत बली रजनीचर पायो परम अनन्द।
धायो रघुनन्दन के सनमुख गरजत जिमि घन वृन्द ॥
सज्यो समर कहँ शूर शिरोमणि लै धनु दशरथ लाल।
रौद्र अस्त्र कहँ करि प्रयोग प्रभु छोड़ि विशिख विशाल ॥
जिन बाणन में एक बाण सो बालि विनास्यो राम।
खरदूषण त्रिसिरा कहँ बेध्यो सततताल अभिराम ॥

ते शर कुंभकरण के तन महँ विथा करत कछु नाहिं।
तजत बाणधारा रघुनायक खैंचि खैंचि धनु काहिं॥

दोहा–कुंभकरण शर शैल भो, गई गदा कर छूटि।
कर पद सों मर्दन लग्यो, जूट जूट कपि कूटि॥
वानर ऋक्षन राक्षसन, लक्षन भक्षत जात।
समर विलक्षन रक्षपति, नहिं अक्षन दरशात॥
प्रभु के सन्मुख आय शठ, मारयो महा पहार।
सातबाण सो राम तेहिं, काट्यो लगी न वार॥
सप्तखंड गिरि गिरि गयो, द्वै शत कोश चपाय।
कह्यो सुमित्रा सुवन तब, नेकु वचन मुसक्याय॥

छन्द।

नहिं जानत अपनो पराय शठ महा मत्त रण रंग।
देहि गिराय भूमि महँ याको चढ़ि चढ़ि वानर अंग॥
दियो राम शासन कपि वृन्दन चढि तन देहु गिराय।
धाय वलीमुख चढ़े तासु तन रह्यो सोऊ ठहराय॥
जब जान्यो चढ़ि आये मरकट दीन्ह्यो देह कँपाय।
कोटि द्वैक झरिपरे भूमि कपि लियो सबन कहँ खाय॥
यह अनरथ निहारि रघुनायक धनु सायक कर धारि।
धाये कुम्भकरण पर कोपित बार बार ललकारि॥
कीन्ह्यो धनु टंकोर घोर प्रभु भरयो भयावन शोर।
सुनि धनु की ध्वनि कुंभकरण तहँ धायो रामहिं ओर॥
कुंभकरण सों कहे नाथ तब वचन मंजु मुसक्याय।
चलो आउ मेरे सन्मुख शठ और ठौर नहिं जाय॥
सुनि वाणी कोमल रघुपति की जानि राम पहिं ठौर।
कुंभकरण पुनि कह्यो बैन अस सुनिये [illegible] र॥

नहिं विराध नहिं मैं कबंध खर नहिं मारीचहु बालि।
महाबली जानहु दशरथ सुत कुंभकरण बलशालि॥
देखहु मुदगर मोर भयावन कपि दल नाशन हार।
रघुनायक विक्रम दरशाहु जो कछु होय तुम्हार॥
अस कहि धायो राम ओर खल प्रभु पवनास्त्र चलाय।
मुदगर सहित काटि डारयो भुज गिरो कपीन चपाय॥
तब रावण को अनुज कोप करि धायो ताल उखारि।
ताल सहित काट्यो भुज सोऊ इन्द्र अस्त्र प्रभु मारि॥
चपे निशाचर वानरहूं बहु दबे मतंग तुरंग।
पुनि दिव्यास्त्र मारि रघुकुलमणि कियो जंग युग भंग॥
भयो विगत पद भुज रण दुर्मद कीन्ह्यो घोर चिकार।
दशोदिशानन शैल सिंधु महँ भरिगो शोर अपार॥
उड्यो गगन महँ राहु सरिस शठ प्रभु शर मुख भरि दीन।
इन्द्र अस्त्र पुनि जोजि राम धनु कियो प्रहार प्रवीन॥
कुंभकरण को गयो शीश कटि गिरो लंक महँ जाय।
गृह गोपुर प्राकार फोरि कै गिरि सो परयो देखाय॥
गिरयो रुंड सागर महँ बूड्यो जलचर करत विनास।
प्रविसि गयो पाताल प्रयंतहि दियो भुजंगन त्रास॥
हरषे सुर बरषे बहु फूलन कीन्हे जयजयकार।
नचन लगे मरकट कहि प्रभु किय कुंभकरण संहार॥
डोली धरणि धराधर संयुत सुर नभ चढ़े विमान।
कहहिं सकल जयजय रघुकुल मणि जय जय कृपानिधान॥
मुख्य मुख्य शाखा मृग पूजहिं रघुनन्दन की बाहँ।
निरमल रवि प्रकाश कीन्हो जग पवन बह्यो सुख माहँ॥
कुंभकरण की काय चपाने मरकट युगल करोर।

ते शर कुंभकरण के तन महँ विथा करत कछु नाहिं ।
तजत बाणधारा रघुनायक खैंचि खैंचि धनु काहिं ॥

दोहा–कुंभकरण शर शैल भो, गई गदा कर छूटि ।
कर पद सों मर्दन लग्यो, जूट जूट कपि कूटि ॥
वानर ऋक्षन राक्षसन, लक्षन भक्षत जात ।
समर विलक्षन रक्षपति, नहिं अक्षन दरशात ॥
प्रभु के सन्मुख आय शठ, मारयो महा पहार ।
सातबाण सों राम तेहिं, काट्यो लगी न वार ॥
सप्तखंड गिरि गिरि गयो, द्वै शत कीश चपाय ।
कह्यो सुमित्रा सुवन तव, नेकु वचन मुसक्याय ॥

छन्द ।

नहिं जानत अपनो पराय शठ महा मत्त रण रंग ।
देहिं गिराय भूमि महँ याको चढ़ि चढ़ि वानर अंग ॥
दियो राम शासन कपि वृन्दन चढि तन देहु गिराय ।
धाय वलीमुख चढ़े तासु तन रह्यो सोऊ ठहराय ॥
जब जान्यो चढ़ि आये मरकट दीन्ह्यो देह कँपाय ।
कोटि द्वैक झरिपरे भूमि कपि लियो सबन कहँ खाय ॥
यह अनरथ निहारि रघुनायक धनु सायक कर धारि ।
धाये कुम्भकरण पर कोपित बार बार ललकारि ॥
कीन्ह्यो धनु टंकोर घोर प्रभु भरयो भयावन शोर ।
सुनि धनु की ध्वनि कुंभकरण तहँ धायो रामहिं ओर ॥
कुंभकरण सों कहे नाथ तब वचन मंजु मुसक्याय ।
चलो आउ मेरे सन्मुख शठ और ठौर नहिं जाय ॥
सुनि वाणी कोमल रघुपति की जानि राम यहि ठौर ।
कुंभकरण पुनि कह्यो बैन अस सुनिये राजकिशोर ॥

नाशत सकल वानरी सैना धाय करहु संहार ॥
धायो अंगद कहत वैन अस रैनारांतक वीर ।
का मारत वापुरे वानरन मोहिं मारै रणधीर ॥
अंगद वचन सुनत नारांतक तरल तुरंग धवाय ।
मारयो खड्ग वालिसुत के उर परयो टूटि महि जाय ॥
अंगद हन्यो तुरंगहि थापर फाट्यो तासु कपार ।
नारांतक तजि वाजि दौरि द्रुत हन्यो मूठि वलवार ॥
लगत मूठि शिर गिरयो भूमि कपि उठ्यो झूमि ललकारि ।
हन्यो नरांतक के उर मूठो मारेगो आँखि निकारि ॥
निहत नरांतक लखि देवांतक त्रिसिरा राजकुमार ।
वली महोदर रावण भ्राता भयो मतंग सवार ।
देवांतक त्रिसिरा रथ चढ़िके चले आसु भट तीन ।
तीन ओर ते वालिसुवन को मारन लगे प्रवीन ॥
जो जो तरु पखान कर धारत अंगद मारन हेत ।
तीनिउ भट करही में काटत करन प्रहारन देत ॥
मारि मारि वाणन अंगद को दीन्ह्यो भूमि गिराय ।
उठत वीर पुनि गिरत भूमि भ्रमि परयो विकल दरशाय ॥
तब हनुमान नील सेनापति कीन्हे धाय सहाय ।
देवांतक को दौरि पवनसुत हन्यो मूठि नगिचाय ॥
गयो विशाल कपाल फूटि तेहि मारेगो जीभ निकारि ।
तब चढि महा मतंग महोदर त्यों त्रिसिरा शर झारि ॥
मारि नील को भूमि गिराये उठि दलपति गहि शैल ।
सहित मतंग महोदर को तब दरशाई यम गैल ॥
मरो महोदर कहा हमारो त्रिसिरा मनहिं विचारि ।
पवनसुवन को मारि शरन ते दीन्ह्यो मूँदि पछारि ॥

नहिं हन्यो कीशन को शरन नहिं वध्यो गरवित वानि।
मृषो चलो आयो समर मन द्वन्द्व युद्ध हि आनि॥
तहँ मध्य वानर सेन में ह्वै खड़ो भट अति काय।
विन भीत सुरगण जीति दीन्ह्यो वचन कपिन सुनाय॥
जनिभगहु वानर वाण मेरे कपिन हनत लजात।
जेहि होय रण की सान अव सो आय कस नहिं जात॥
अतिकाय की अति काय लखि भागे कपीश विचारि।
पुनि के जियो रण कुंभकरण कपीन वैहै झारि॥
गे राम लछिमन शरण कपि अति काय के डर भागि।
पूछ्यो विभीषण को विहँसि तव राम कोपहि पागि॥
भाषहु सखा यह कौन राक्षस कुंभकरण समान।
आवत अभै रथ में चढ़ो वल बुद्धि तेज निधान॥
वोल्यो विभीषण नाथ यह अति काय राजकुमार।
रथ चक्र घहरत ध्वजा फहरत लंक को रखवार॥
है महा धनुधर इन्द्रजित सम करत रण विन माय।
जीत्यो सुरन वलवान याको नाम है अतिकाय॥
यह धान्य मालिनि को कुँवर तप कियो विपिन अपार।
है सुरासुर ते अवध अस वर दीन यहि करतार॥
नय सांम दामहु दंड भेदहु मंत्र कहत निशंक।
जाके भुजन वल वसत निर्भय लंकपति अरु लंक॥
यह समर अगणित वार जीत्यो सुरासुरन अपार।
शर धार सो रोक्यों कुलिश शक्रहु भग्यो गुनि हार॥
रोक्यो वरुण की पाश वाणन मारि समर मझार।
याके सरिस योधा न कोउ विक्रमी लंक कुमार॥
कीजे यतन प्रभु जितन को नाहिं कीश सेन अपार।

करिहैं सकोपित शरन सों यक याम महँ संहार ॥
रणभूमि में उत आय करि अतिकाय धनु टंकोर ।
अपनो सुनायो नाम वानर भगे चारिहु ओर ॥
तहँ कुमुद द्विविद मयंद नीलहु सरभ पांचहु वीर ।
गिरि शृङ्ग वृक्षन धाय मारे तेहि महा रणधीर ॥
अतिकाय सहजहि काटि थंभित कियो पांचहु कीश ।
नहिं लरयो जो नहिं लरयो तासों चलयो मानहुँ ईश ॥
पुनि कह्यो समर पुकारि अस कोउ वीर नाहिं यहि सैन ।
जो करै सनमुख समर मोंसे करि कछू जिय भैन ॥
अतिकाय के सुनि वचन तमक्यो लखन लाल सपूत ।
हँसि सरुप सनमुख धनुप लै धायो रुचिर रजपूत ॥
कीन्ह्यो धनुप टंकोर घोर दिगंत छायो शोर ।
लखि लपण को अतिकाय बोल्यो अरे भूप किशोर ॥
तोहिं देखि मोंहिं लागत दया भजि जाय औरै ठौर ।
सुनिकै सुमित्रा सुवन कह बहु अर्थ आखर थोर ॥
नहिं होहु वीर प्रधान भापे विन देखाये जोर ।
सुनि लपन बानी अर्थ सानी चितै ताकी ओर ॥
अतिकाय मारयो एक शर कहि गयो अब जिय तोर ।
काटयो लपण तजि अर्धचंद्रहि बाणसों शर घोर ॥
दोहा–तब अतिकाय प्रकोपि अति, छाँडयो पाँच नराच ।
लछिमन काटयो बीचहीं, जिमि झूठे को साँच ॥

छन्द ।

तेहि रह्यों कवच अभेद ताते लपण ताकि ललाट ।
मारयो पतत्रि प्रचंड फैल्यो तेज जनु हनि बाट ॥
अतिकाय भालहि लग्यो सायक चिकल गिरि तेहि ठौर ।

पुनि उठि सराहन लग्यो लपणहि वीर वर रिपु मोर ॥
पुनि तज्यो बाणन धार रजनीचर प्रधान कुमार।
छायो गगन दशहूं दिशन ह्वै गयो अति अँधियार ॥
करि लाघवी लपणहुँ तहाँ शर काटि किय उजियार।
दोऊ वरो वर तजत शरवर दोउ उछाह अपार ॥
शर गहत संधानत तजत खैंचत शरन पुनि लेत।
नहिं वीर दोऊ परत देखि सचेत करत अचेत ॥
यक बाण लै अतिकाय वेध्यो लपण के उर माहिं।
निज कर उखारयो बाण रामानुज सराह्यो ताहि ॥
पुनि तज्यो पावक अस्त्र लछिमन चली ज्वाल निकाय।
परजन्य अस्त्र चलाय तेहि अतिकाय दीन बुझाय ॥
लछिमन हन्यो पवनास्त्र तहँ बाढ्यो सुझंझा पौन।
अतिकाय परवत अस्त्र तजि रोक्यो अनिल को गौन ॥
रुद्रास्त्र छोड़त भो निशाचर जनु प्रलै करि दीन।
रुद्रास्त्रहू मारयो लपण दोउ शर भये जरि छीन ॥
अइपीक अस्त्र चलाय तहँ अतिकाय जय गुनि लीन।
इन्द्रास्त्र लपण चलाय आसुहि शांत तेहि करि दीन ॥
अतिकाय छोड़यो पुनि यमास्त्र देखान काल समान।
सौमित्र मारयो पासुपति यम अस्त्र तेज बुझान ॥
पुनि तज्यो लछिमन बाणधारा शैल निमि जलधार।
अतिकाय कवचहि लागि शर टूटे भये नहिं पार ॥
भरभर हनत निर्भर शरन निरभय सुमित्रानंद।
नहिं विधत कवच अभेद महँ गिरि परत महि मुखमंद ॥
तब कह्यो लछिमन सों पवन ब्रह्मास्त्र येकर मीच।
नहिं मरी और उपाय विधिवरदान ते तन नीच ॥

सुनि लषण लीन्ह्यो ब्रह्मसिर शर मनहु जमकर दूत ।
दिशि विदिश सूरज चन्द्र तारा उठी ज्वाल अकूत ॥
डोली धरणि जब तज्यो सायक काल सरिस कराल ।
अतिकाय लाखन बाण मारयो जरे शर की ज्वाल ॥
जब गयो सायक निकट तब अतिकाय लाघव कीन ।
असि गदा शक्ति कुठार शूल चलाय आयुध दीन ॥
नहिं रुक्यो शर तेहि लग्यो कंठहि कट्यो ताकर शीश ।
सुर मुनि गगनते बरपि फूलन कहे जयति फणीश ॥
वानर सराहन लगे लपणहि धन्य रघुपति भ्रात ।
सौमित्रि बंद्यौ राम पद स्वेदित श्रमित सब गात ॥
उत भगे रजनीचर किये लंकेश द्वार पुकार ।
अतिकाय कोलक्षिन हन्यो अब करहु जौन विचार ॥
सुनि भयो राक्षसराज नेसुक विकल बहुरि सम्हारि ।
बोल्यो वचन मेरे निशाचर गये कपि कर मारि ॥
यह लगत मोहिं अचर्य्य अब विपरीत ह्वै गो काल ।
अब करिय कौन उपाय निशिचर वंश होत बिहाल ॥
अति दुखित लखि पितु को कह्यो घननाद वचन उदंड ।
मेरे जियत नहिं सोच कीजे निरखि मम भुजदंड ॥
बोल्यौ दशानन व्यथित आनन है भरोसो तोर ।
जेहि भाँति जीतौ कपिन को सो करौ विक्रम घोर ॥

दोहा—मेघनाद अस कहि चल्यौ, शठ निकुंभिलाजाय ।
कीन्ह्यो पावक होम खल, श्याम छाग कटवाय ॥
कीन्ह्यो तंत्र विधान ते, महा घोर अभिचार ।
ब्रह्मअस्त्र अनुभव कियो, करण कीश संहार ॥
दिव्य धनुप अरु दिव्य रथ, प्रगठ्यो अगिन कराल ।

सोइ स्यंदन में चढ़ि चल्यो, धारे धनुप विशाल ॥
बोल्यो रजनी चरन सो, करहु घोर घमसान ।
आपु सरथ सह सारथी, ह्वै गो अंतरधान ॥

छन्द ।

ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग । शर तज्यो जनु अहि भोग ॥
बरपन लग्यो बहु बान । ह्वै गगन अंतरधान ॥
माया कियो अति घोर । अँधियार भो चहुँ ओर ॥
नव सप्त पंच कपीन । यक यक शरनवध कीन ॥
लै वीर भूधर वृक्ष । धावहिं चहूं कित ऋक्ष ॥
देखहिं न मारत जोय । तव फिरहिंअति भय मोय ॥
व्याकुल भये कपि वृन्द । गे शरण रघुकुल चन्द ॥
लै धनुप लछिमन राम । दोउ तजे शर बलधाम ॥
नहिं लखि परत घननाद । सुनि परत केहरि नाद ॥
जेहि पंथ आवत बान । तेहि पंथ करि अनुमान ॥
शर त्यागि दूनौं भाय । घननाद तन किय घाय ॥
तव इन्द्रजित बरजोर । ब्रह्मास्त्र छोड्यो घोर ॥
चहुँ ओर ते तेहि काल । आवन लगे शर जाल ॥
शर झरत सहसन लाख । जिमि भानु कर वैशाख ॥
नहिं और कछू देखाय । सायक रहे रण छाय ॥
लागे कटन कपि यूथ । गिरिगे वरूथ वरूथ ॥
जे तकहिं आँखि उठाय । शर लगत नैनन आय ॥
अति गाढ शर अँधिराय । नहिं सूझ हाथ पसार ॥
बोले लपण सो राम । घननाद यह बलधाम ॥
ब्रह्मास्त्र कीन प्रयोग । तेहि मानिबो अब योग ॥
जबलगि रहब हम ठाढ़ । तबलगि अमर्षहि बाढ़ ॥

छोड़ी विसिख की धार। सब दल करो संहार ॥
ताते गिरहु महि माहिं। अब जतन दूजो नाहि ॥
अस कहि शिथिल इव राम। लछिमन सहित बलधाम ॥

दोहा–किये सैन अस भूमि महँ, सहत ब्रह्म शर घोर।
राम लपण को शिथिल लखि, कियो इन्द्रजित शोर ॥

छन्द।

सुग्रीव अंगद नील। नल दुविद भारी डील ॥
गय जामवंत सुखेन। गिरि गये समर अचैन ॥
औरहु वलीमुख वीर। गिरिगे समर शर पीर ॥
भे छिन्न भिन्न शरीर। कोहुको रह्यौ नहिं धीर ॥
कोउ रह्यौ रण नहिं ठाढ़। घननाद शर लगि गाढ ॥
करि विकल वानर सैन। लहि इन्द्रजित अति चैन ॥
घननाद किय घननाद। पायो परम अहलाद ॥
लंका गयो जय पाय। दिय पितुहि सकल सुनाय ॥
दिनमणि भये तहँ अस्त। कपि सैन विकल समस्त ॥
लंकेश अनुज स्वतंत्र। ब्रह्मास्त्र वारण मंत्र ॥
जानत रह्यो यक सोय। ताते गयो नहिं सोय ॥
आसुहि विभीषण वीर। बोल्यो कपिन धरि धीर ॥
कोउ जियत है दल माहिं। उत्तर दियो कोउ नाहि ॥
उठि तुरत पवनकुमार। अस कीन वचन उचार ॥
ब्रह्मास्त्र शर लहि घात। हैं विकल कपि सब तात ॥
जो होय प्राण समेत। तेहि खोजिये करि नेत ॥
दोउ लियो ठीक विचारि। यक लूक लीन्ह्यो बारि ॥
खोजन लगे रणभूमि। हनुमत विभीषण घूमि ॥
लगि गई लोथिन रासि। कपि मरे जीभ निकासि ॥

भे अंग भंग कपीस। नहिं परे जीवत दीस ॥
हनुमत विभीषण वीर। दोउ राजसुत रणधीर ॥
ये अंग साबित चारि। नहिं और परचो निहारि ॥
सरसठि करोरि कपीन। घननाद बिन जिय कोन ॥
घट दंड महँ शर झारि। डारचो कपीशन मारि ॥

दोहा-पवनसुवन लंकेशहू, खोजत खोजत जाय।
जामवंत को लखत भे, शर जर्जरित बनाय ॥
कह्यो विभीषण ऋक्षपति, जीवत हौ की नाहिं।
जस तस कै बोल्यो वचन, जाम्ववान तेहि काहिं ॥
अहों बूढ़ शर बिधित तन, नैनन नहिं दरशात।
स्वरही ते जान्यौ परत, अहो लंकपति भ्रात ॥
कहहु तात हनुमान कहुँ, जीवत है की नाहिं।
कह्यो विभीषण वचन तव, करि अचरज मन माहिं ॥
राम लषण कौ छोड़ि कै, अंगद सुगल समेत।
पूछोहु पवन कुमार को, ऋक्ष राज केहि हेत ॥
जाम्ववान बोल्यौ वचन, सुनहु विभीषण भ्रात।
जेहि कारण हनुमान को, मैं पूछहुँ यह बात ॥
जीवत हठि हनुमान के मरेहु जियत सम कीस।
नहिं जीवत हनुमान के, जियत मरे सम दीस ॥
ऋक्षराज के वचन सुनि, गह्यो चरण हनुमान।
कह्यो वचन मैं जियत हौं, देहु सोख मतिमान ॥
जाम्ववान हनुमान को, बोल्यौ कंठ लगाय।
प्राणदान दल को करहु, औषद परवत लाय ॥
गगनपंथ सागर उपर, गमनहुं उत्तर ओर।
तहां हिमाचल शैल लखि, नकि केशरी किशोर ॥

ऋषभ नाम गिरि कनक को, अरु कैलासहि वीच ।
औषध परवत जानियो, तुरतहि जाय नगीच ॥
मृत्त सजीवनि औषधी, अरु करनी संधान ।
अरु विसल्य करनी सुखद, ल्यावहु द्रुत हनुमान ॥

कवित्त ।

जामवान को बखान सुनि हनुमान वीर,
भयो बलवान मेरु मंदर समान है ।
आसमान पंथ है पयान अनुमान करि,
उठि ऐंडाय उड्यो मानौ हरि यान है ॥
कीन्ह्यो शोर बे प्रमान दीन्ह्यो भीति जातुधान,
लीन्ह्यो वीर वेगवान वेग बे प्रमान है ।
रघुराज सुमिरि कृपानिधान भगवान,
अति अतुरान देन हेत प्रानदान है ॥
पहुँच्यौ कपीश गिरि औषध समीप जाय,
हेरैकौन औषधयों मनमें विचारि कै ।
केसरी किशोर वरि बंड भुजदंड ठोकि,
चल्यो आशु औषधी को पर्वत उखारि कै ॥
मारतंड मारग में मारतंडही सो लस्यो,
मारतंड वंश मारतंड उर धारि कै ।
दंड द्वैक माहैं नाकि वेग सो भरतखंड,
आयो लंक खंड में कपीश किलकारि कै ॥
सोरठा—गई न आधी रात, आय गयो कपि सैन में ।
[illegible]गो औषधी वात, वानर उठे अभंग सब ॥
[illegible]उठे लषण अरु राम, मिले परस्पर [illegible] अति ।
[illegible]पि पूरयो मनकाम [illegible] कौन [illegible] ॥

कीन्हे केहरि नाद, विरुज विसल्य कपीश सब।
लहे परम अहलाद, राम लषण कपिराजहू॥

दोहा–मारिगयो जब इन्द्रजित, ब्रह्मास्त्रहि कपि सैन।
जामवंत पठयो जबै, पवनसुवन गिरि लैन॥
तब रावण भेज्यो भटन, सपदि समर ते आइ।
मृतक निशाचर सिंधु में, दीन्हे राति डुबाइ॥
जबले आयो शैल को, हनूमान दल माहिं।
जिये बलीमुख गंध लहि, जिये निशाचर नाहिं॥
यहि विधि सैन जियाइ कै, सो गिरि को हनुमंत।
पहुँचायो जहँ को तहाँ, आयो बहुरि तुरंत॥

छंद।

गत राति आधी जानि। कह राम कपिपति आनि॥
यह दुष्ट माया कीन। कपि सैन को दुख दीन॥
ताते सुमरकट जाय। पुर देहि आगि लगाय॥
सुनि प्रभु निदेश कपीस। शाखा मृगा अति रीस॥
लै लूक निज निज हस्त। धाये तुरंत समस्त॥
लंका चढे चहुँ ओर। करि शोर बानर घोर॥
घुसि घरन घरनहिं बूमि। ऊँची अटारिन झूमि॥
दिय अगिनि आसु लगाय। ज्वाला उठी नभ धाय॥
लागे जरन खल कोटि। मग रहे निशिचर लोटि॥
पुर मच्यो हाहाकार। नहिं देखि परत उबार॥
भजि चले छूटि तुरंग। भागे जरत मातंग॥
तहँ बह्यो अनिल प्रचंड। उठि ज्वाल माल अखंड॥
धावति बजार बजार। भे रजनिचर जरि छार॥
घर रजत कनक अनंत। महि टिघरि टिघरि चुअंत॥

निशिचरी भागी जाहिं । अधजरी केश लखाहिं ॥
पितु मातु बालक छोड़ि । शिर ओद अंबर ओड़ि ॥
सब करत हाहाकार । नहिं लखि परत रखवार ॥
जे निकसि बाहेर जाहिं । बानर हनत तिन काहिं ॥
पुर परयो कसमस भूरि । भे कूप सरसी झूरि ॥
आभरण वसन अनंत । जरिगये शोभा वंत ॥
जे कोट बाहेर जात । तिन करत प्रभु शर घात ॥
कोउ परे कूदि समुद्र । बूड़े अनेकन क्षुद्र ॥
जरि गई सिगरी लंक । लाये कपिन निरशंक ॥
जाग्यो दशानन वीर । लखि नगर जरत अधीर ॥

दोहा—गोहरायो को द्वार में, ठाढ़ो वीर विचित्र ।
बोले कुंभ निकुंभ दोउ, कुंभकरण के पुत्र ॥
कहा होत शासन हमैं, करिहैं बिनहि बिचार ।
कह रावण जारत नगर, वानर करहु सँहार ॥
धाये कुंभ निकुंभ दोउ, मारे कपिन प्रचारि ।
लाय लंक निरशंक कपि, आये जहां खरारि ॥

छंद ।

उतै निकुंभ कुंभ द्वै निशुंभ शुंभ से चले ।
सुकुंभकर्ण पुत्र कुंभकर्ण से लसैं भले ॥
सुपाक्ष सों निताक्ष त्यों प्रजंघ औ अकंपनै ।
अमात्य चारि कुंभके प्रयात भे रनांगनै ॥
चली सुजातुधान की प्रवेग सो अनीकिनी ।
बजे अनेक दुन्दुभी रथान की सुकिंकिनी ॥
विहान होत वानरान जातुधान युद्ध भो ।
निकुंभ चाप तानि मारि मारि बाण क्रुद्ध भो ॥

इतै बली बलीमुखान सैन बीर धाइ कै ।
हने निशाचरान को सुनाम को सुनाइ कै ॥
कियो महा भयंकरै निशाचरै सुसंगरै ।
अनेक जातुधान को विनाश कीन बानरै ॥
निहारि जातुधान को दलै परात जंग में ।
अकंपनै हन्यो बलीमुखान को उमंग में ॥
इतै प्रकोपि बालि बाल पाणि में पहार लै ।
हन्यौ अकंपनै मर्‍यौ गिर्‍यो धरा अधार लै ॥
प्रचंड सो निताक्ष आइ अंगदै प्रचारि कै ।
हन्यो अनेक बाण तूं बचै न यों उचारि कै ॥
तुरंत दौरि अंगदौ छड़ायलीन चाप को ।
निकारि खड्ग सो निताक्ष देत कीश ताप को ॥
हनै चह्यौ सुअंगदै प्रबीर बालि को बली ।
मुरेरि पाणि को छड़ाय लीन तेग ना चली ॥
दियो कृपाण कंध में दुधा शरीर ह्वैगयो ।
प्रजंघ औ जुपाक्ष देखि लोहिताक्ष छै भगो ॥
चले उभै प्रकोपि बीर बालिपुत्र पै तहाँ ।
लर्‍यो दुहू न सो विचित्र अंगदो सुखो महाँ ॥
निहारि जातुधान द्वै अकेल बालि बाल है ।
चल्यो मयंद बंधु लै उखारि वृक्ष साल है ॥
हन्यो प्रजंघ बालिपुत्र के ललाट मूठि दै ।
गिर्‍यो विसंग ह्वै उठ्यो तुरंत कीश छूटि दै ॥
प्रचारि दौरि कै हन्यो ललाट मूठि जोर सों ।
कपाल तासु फूट ज्यों घटे पखान छोर सों ॥
कका विनाश देखि कै जुपाक्ष दौरि हू सों ।

चलाय वाण अंगदै शरीर कीन पूर सों ॥
तहां मयंद भ्रात जूप अक्ष ओर धाय के ।
पवारि शैल शृंग कीन भंज जान आय के ॥
हन्यो गदा तरक्कि कैं जुपाक्ष मैंद भ्रात को ।
छड़ाय कीश सो गदा कियो वहोरि घातको ॥
मरयो जुपाक्ष भूमि में गिरयो निकारि नैन को ।
भगे अनेक जातुधान भीति मानि अैन को ॥
प्रचंड कुंभकर्ण पुत्र कुंभ आसु धाय कै ।
प्रवीर वालिपुत्र को लियो पतत्रि छाय कै ॥
गिराय दीन वाण मारि सानुजे मयंद को ॥
चल्यो प्रकोपि वालिपुत्र गौन ज्यो गयंद को ।
हजार वाण मारि कुंभ अंगदै नेवारतो ।
रुक्यो न वालिपुत्र ताहि ताकि कै प्रचारतो ॥
नराच पांच भौंह बीच मारि कुंभ देत भो ।
सुपाणि नैन ढांपि कै चल्यो नहीं अचेत भो ॥

दोहा–कुम्भ करोरिनि वाण हनि, दिय अंगद हि गिराय ।
भागे बानर भीति भरि, कहे सुकंठहि जाय ॥
महाराज युवराज को, कियो कुम्भ विनप्रान ।
आप चलहु कै भेजये, हनन हेत हनुमान ॥

छंद ।

आरत वचन सुनि कीशपति लै संग पवनकिशोर ।
धायो निकुंभहि ओर छावत दशहु दिशि महँ शोर ॥
आवत सुकंठहि देखि कुंभ हन्यो हजारन वान ।
नहि रुक्यो झिलि ताके निकट टोरयो छडाय कमान ॥
सुग्रीव वोल्यो वीर वाणी कुंभकरण किशोर ।

तै कुम्भकरण समान अब देखराउ आपन जोर ॥
सुनि कुपित कूद्यो कुम्भ रथ ते गह्यौ कपिपति काहिं ।
दोउ करन लागे मल्लयुद्ध विरुद्ध सुद्ध तहांहि ॥
सुग्रीव गहिके कुम्भ कहँ फँक्यो तुरंत उठाय ।
सो परयो क्षुद्र समुद्र महँ सागर तलै लगि जाय ॥
कढ़ि कुम्भ सागर ते सपदि यक मूठि मारयो आय ।
कछु विकल ह्वै कपिराज पुनि मारी समूठी धाय ॥
कपिनाथ को लगि मुष्टि कुम्भ गिरयो मही बिनप्रान ।
लागे सराहन कीशराजहि भगे खल भय मान ॥
तहँ परिघ परम प्रचंड लै धायो निकुंभ प्रवीर ।
परिघै भवाँवत भ्रमत नभ भे देव मुनि भय भीर ॥
आयो प्रभंजननंद के सनमुख निकुम्भहु धाय ।
विधिदत्त परम प्रचंड परिघ झरै अँगार निकाय ॥
बोल्यौ प्रभंजननंद मंद चलाउ परिघ प्रचंड ।
मारयौ परिघ हनुमान के सो टूटि भो शत खंड ॥
तिल भरि न डोल्यो अनिलसुत मारयो सुमूठी धाय।
सोऊ न कंप्यौ वीर तिल भरि पवनसुत ढिग जाय ॥
लीन्ह्यो पकरि हनुमान को निज अंक बाहु बढाय ।
लै चल्यो अति निरशंक लंकहि सिंहनाद सुनाय ॥
हनुमान कूद्यौ धरणि महँ कर मध्य मूठी मारि ।
पुनि लपटि कंठ नवाय लीन निकुम्भ शीश उखारि ॥
भय भरे भागे जातुधान निहारि बल हनुमान ।
प्रभु के चरण वंद्यो पवनसुत विजयमान महान ॥
उत जाय खल दशकंठ द्वारे कह्यो समर हेवाल ।
शोचन लग्यो रावण दुखित आयो निशाचर काल ॥

खर को तनय मकराक्ष बोल्यो नाथ शोचहु नाहिं।
हम जात संगर मारिहैं हठि राम लपनहिं काहिं॥
अस कहि चल्यो रथ पै सवार अपार लै सँग सेन।
कीन्ह्यो पसर कपिसेन पर मन में कियो कछु भै न॥
मारें निशाचर बाण रण को चले कोश पराय।
मकराक्ष रथहि धवाय बोल्यो राम को नजिकाय॥
रे राम ठाढ़ो रहु समर नहिं जाय अनत पराय।
होई हमारो द्वंद्व युद्ध देखाउ बल नरराय॥
तब कियो धनु टंकोर भूपकिशोर मृदु मुसक्याय।
दिशि विदिश नभ मकराक्ष रथ दीन्ह्यो शरन सों छाय॥
मारयो तुरंगन सारथी रथ कवच धनु दिय काटि।
मकराक्ष कर लै शूल धायो राम को हग डांटि॥

छंद।

करि दियो शठ अँधियार। माया करी बलवार॥
नभ ते शरन की धार। धावति धरहि बहु बार॥
भे विकल कोश समूह। लागे करन अति कूह॥
कोपे लपण अरु राम। छोड़े शरन बलधाम॥
नहिं लखि परत घननाद। यह भयो परम विपाद॥
तब लपण बोल्यो कोपि। सब राक्षसन वध चोपि॥
ब्रह्मास्त्र छोड़हु तात। अब और नाहिं देखात॥
जेते निशाचर भूमि। ते जरहिं जहँ तहँ घूमि॥
प्रभु कह्यो करुण अगाध। यक हेत सब कर वाध॥
नहिं करब तुम को जोग। हँसि है सकल जग लोग॥
भागे लरै नहिं जोइ। लुकि रहे रूपहि गोइ॥
कर जोरि शरणहि होय। तिन हनत नहिं बुध कोय॥
लंकेश प्रबल कुमार। नहिं बची युद्ध मझार॥
पाताल स्वर्गहुँ जाय। मरिहै अवशि दुख पाय॥
अस कहि कुपित रघुवीर। लीन्ह्यो अवारन तीर॥
घननाद निज वध जानि। लंका गयो भय मानि॥
माया करो अनखाय। सिय रूप लीन बनाय॥
हनुमान सनमुख जाय। तेहि हन्यो ताहि देखाय॥
भे शिथिल हनुमत अंग। घटि गई युद्ध उमंग॥
चलि दियो पवनकुमार। दृग तजत आंसुन धार॥
प्रभु सों निवेदन कीन। भो राम वदन मलीन॥
गिरिगे मुरछि महिमाहिं। कपि देखि सब बिलखाहिं॥
बोल्यो लपण अनखाय। नहिं होत धर्म सहाय॥
जो धर्म धरणि उदोत। तो तुमहिं नहिं दुख होत॥

दोहा—धर्म सत्य होतो जगत, रावण नरकहि जात।
धर्म धुरंधर आपको, अस दुख होत न तात॥
राज त्याग वनवास पुनि, नारि हरन संताप।
तुमहिं योग नहिं लखि परत, धरा धर्मधर थाप॥
ताते जाके अर्थ है, सोई जन मतिमान।
सोई यशी वली विपुल, सोई पुरुष प्रधान॥
यहि विधि भाषत बहु वचन, लछिमन के तेहि काल।
आय गयो लंकेश तहँ, प्रभु लखि भयो विहाल॥
पूछ्यो का यह होत अब कह्यो लषण विलखात।
अनरथ कीन्ह्यो इन्द्रजित, कही पवनसुत बात॥
कह्यो विभीषण यह मृषा, भाष्यो पवनकुमार।
अस दशमुख करिहै नहीं, जानौ भेद हमार॥
पै अवध्य अब होत हठि, महावली घननाद।
करतो यज्ञ निकुंभिला, माने हारि विषाद॥
यज्ञ समापति केभये, अजर अमर ह्वै वीर।
करी कपिन संहार सव, सुनहु लषण रघुवीर॥
पठवहु लछिमन आशुहीं, अंगद हनुमत संग।
मैं सब भेद बताइहौं, जिमि होई मख भंग॥
सुनत विभीषण के वचन, उठे राम अतुराय।
बोले लछिमन सो हरषि, सव दुख गयो पराय॥
जाहु सखा लै लषण को, मरकट कटक लेवाय।
हनुमत अंगद ऋक्षपति, वीरन वेगि बोलाय॥

कवित्त।

राम को निदेश सुनि इन्द्रजीत युद्ध हेत,
नन अरविंद नेकु ह्वैगे अरुणारे हैं।

फरके प्रचंड दोरदंड जे अखंड ओज,
सायक को दंड को घमंड सो निहारे हैं ॥
उमँग्यो अनंत उतसाह उर आहव को,
लौट वन आज बिन इन्द्रजित मारे हैं ।
रघुराज आज चढ्यो चौगुनो चलत चाउ,
रामानुज अंग मनो बखतर फारे हैं ॥
मुख मुसक्याय गुन धनुष चढाय कसि,
कंध में निषंग करवाल कटि धारे हैं ।
वाम पाणि में कमान दाहिनेमें लीन्हे बान,
पहिरि सनाह माथ मुकुट सुधारे हैं ॥
उदैमान पूरण सुशारद शशी सो मुख,
मंडल अखंडल प्रकाश कोप सारे हैं ।
रघुराज उठिके उदग्र पद अग्रज के,
वंदि कै लषण अस वचन उचारे हैं ॥
जोहिहै जगत मेघनाद को हमारो युद्ध,
एकही रहै गो पाय विश्व में वड़ाई हैं ।
रघुराज रावरो प्रताप रखवारो मोर,
ताते कहौं आज मैं समाज में सुनाईहै ॥
इन्द्र यम वरुण कुबेर करतारहूं जो,
करैं घननाद की सहाइ सैन ल्याई है ।
त्रिंबक त्रिशूल धारे त्रान काजआवैं आजु,
बाचिहै न वैरी राम रावरी दोहाई है ॥
दोहा–मेघनाद मारे विना, जो इत आऊं आज ।
तौ पुनि नहिं कर धनु धरौं, करौं शपथ रघुराज ॥

दोहा–धर्म सत्य होतो जगत, रावण नरकहि जात।
धर्म धुरंधर आपको, अस दुख होत न तात॥
राज त्याग वनवास पुनि, नारि हरन संताप।
तुमहिं योग नहिं लखि परत, धरा धर्मधर थाप॥
ताते जाके अर्थ है, सोई जन मतिमान।
सोई यशी वली विपुल, सोई पुरुष प्रधान॥
यहि विधि भाषत बहु वचन, लछिमन के तेहि काल।
आय गयो लंकेश तहँ, प्रभु लखि भयो विहाल॥
पूछ्यो का यह होत अब कह्यो लषण बिलखात।
अनरथ कीन्ह्यो इन्द्रजित, कही पवनसुत वात॥
कह्यो विभीषण यह मृषा, भाष्यो पवनकुमार।
अस दशमुख करिहै नहीं, जानौ भेद हमार॥
पै अवध्य अब होत हठि, महाबली घननाद।
करतो यज्ञ निकुंभिला, माने हारि विषाद॥
यज्ञ समापति केभये, अजर अमर ह्वै वीर।
करी कपिन संहार सव, सुनहु लषण रघुवीर॥
पठवहु लछिमन आशुहीं, अंगद हनुमत संग।
मैं सव भेद वताइहौं, जिमि होई मख भंग॥
सुनत विभीषण के वचन, उठे राम अतुराय।
वोले लछिमन सो हरषि, सब दुख गयो पराय॥
जाहु सखा लै लषण को, मरकट कटक लेवाय।
हनुमत अंगद ऋक्षपति, वीरन वेगि वोलाय॥

कवित्त।

राम को निदेश सुनि इन्द्रजीत युद्ध हेत,
नन अरविंद नेकु ह्वैगे अरुणारे हैं।

बोल्यो लपण सों लंकपति मम बंधु पुत्र प्रधान।
यह थान ते युत जान ते खल होत अंतरधान॥
अब लेन पावै थान नहिं अस करहु राजकुमार।
जो थान पाई बहुरि शठ रण करो कपि संहार॥
हँसि कह्यो रामानुज बहुरि शठ सकत इत नहिं आय।
ठाढ़े हमो वट पीठ दै नहिं टरबधू टरि जाय॥
उत मारि बाणन पवनसुत को इन्द्राजित लिय छाय।
अगणित तथा तोमरन ते गज भयो वेधित काय॥
बोल्यो बिभीपण बिलखि तब का लखहु राजकुमार।
घननाद चाहत करन अब हनुमान को संहार॥
तब लपण धनु टंकोर करि मारे अनंत न बान।
लंकेश सुत पाछे चितै लखि लपण वीर प्रधान॥
वट वृक्ष के तल जानि लपण हि तासु मुख कुम्हिलान।
जहँ ते रह्यो शठ होत मारन कपिन अंतरधान॥
सो लियो रामानुज बली थल जीति सकत न आय।
लखि कै बिभीपण को तहां कह इन्द्राजित बिलखाय॥
रे कुल कलंकी निरदयी नाहिं लगत तोकहँ लाज।
ल्याये लेवाय बताय भेदहि कियो अनुचित काज॥
बोल्यो बिभीपण राम बिमुखी सुखी को जग होय।
तुव पिता के अपराध ते अब रही कुल नहिं कोय॥
मैं ताकि लीन्ह्यो राम शरन बिचारि पापी भ्रात।
जो राम जन सो मोर भ्रातहु तात मातहु नात॥
यतना कहत लंकेश के तहँ धाय पवन किशोर।
मारयो महा गिरि ताहि भापत काल आयो तोर॥
दोहा—दल्यो शरन सों तीन गिरि, सहजहि रावण नन्द।

छन्द।

[illegible] ॥
[illegible] ॥
तहँ कह्यो लषण निकुंभिला [illegible] निशाचर [illegible] ।
मनु श्याम घन घटा घनी मनु नीच की है रैन ॥
तब कह्यो लछमन सों विभीषण हनुमदादिक वीर ।
मर्कट कटक लै विकट कपि धावैं चटक रनधीर ॥
लै जाइ सनमुख सेन पर जहँ खड़ो निशिचर जूह ।
यह यूथ फोरहिं प्रविसि दल करिके भयानक व्यूह ॥
वानर विलोकत त्यागि मख ऐहै निकसि घननाद ।
तब तुमहिं हम लै चलहिंगे सहज सहित अहलाद ॥
तब दियो शासन लषण पवनकुमार को अतुराय ।
फोरि न सर सनमुख समर लै कपिन की समुदाय ॥
धायो प्रभंजन पूत अगद सहित खल दल ओर ।
मारयो निशाचर वृन्द फोरयो गोल कपि बरजोर ॥
घुसि गये वानर यज्ञशाला किये मख विध्वंस ।
नहिं सहि गयो अपचार धायो हंस राक्षस वंस
भागे वलीमुख देखि वासव जीत आवत क्रु
धायो प्रभंजन नंद तासो करन युद्ध विशु
तब रावणी निज सारथी सो कह्यो वचन
यह वीर वानर और अब लै चलहु रथहि
अस कहत सारथि सो हनत शर गयो जहँ
इत लषण लै धाये विभीषण लेन ताको
वट वृक्ष अंत निकुंभिला देवी भयंकर
लषणहि देखायो तहँ विभीषण तासु

दोउ तजत भर भर शरनि करनहि शिथिल दोउ कर अंग ॥
तहँ लषण कीन्ही लाघवी कछु तजी सायक धार ।
करि घोर धनु टंकोर दश दिशि भरयो शोर अपार ॥
कछु भयो विवरण वदन दशमुख सुवन को तेहि काल ।
बोल्यो विभीषण लषण याको आयगो अब काल ॥
अगणित शरन मारयो लषण भो इन्द्रजीत विहाल ।
उठि कै महूरत एक महँ बोल्यो वचन ततकाल ॥
रे राजसुत तोहि सुरति बिसरी नागपाशहि केरि ।
जो लख्यो मम बल प्रथम रण सो लखहु आजुहि फेरि ॥
अस कहि हन्यो शर सप्त त्यों हनुमान को दश बान ।
अपने कका को हन्यो शत शर द्विगुण क्रोध अमान ॥
बोल्यो लषण सायक तिहारे करत नेकु न पीर ।
करि जोर मारहु इन्द्रजित नहिं होहू समर अधीर ॥
तब हन्यो लछिमन को सहस शर इन्द्रजीत प्रचारि ।
कटि परयो बखतर लषण को माची समर झनकार ॥
तब हन्यो बाण हजार रामानुजहु वीर विशाल ।
कटि परयो बखतर इन्द्रजित को मनहुँ तारण जाल ॥
दोउ हनहिं दोहुँन को परसपर रुधिर बूड़े अंग ।
निरधूम पावक सरिस सोहत बड़े युद्ध उमंग ॥
दोउ विधे सायक सकल तन नहिं रह्यो तिल भरि ठोर ।
दोउ बाण छाये गगन महँ अँधियार भो चहुँ ओर ॥
दोउ छिपत प्रगटत बाण धारन श्रम शरीरन होत ।
जहँ जात बासवजित चढ्यो रथ तजत विशिख अकोत ॥
लै जात लछिमन पवनसुत तहँ बाणवृन्द बचाय ।
दोउ तजत बहु दिव्यास्त्र रण महँ

देखत विमानन चढ़े सुर वर द्वंद्व युद्ध कराल ।
उत राक्षसेंद्र कुमारइत सौमित्र वीर विशाल ॥
सागर पहारन दिशि विदिश आकाश छाये वान ।
उत खड़े राक्षस अचल इव इत खड़े कीश समान ॥
दोउ सैन देखत समर कौतुक लिखित चित्र अकार ।
नहिं देखि परत प्रवीर दोउ करि समर सर अँधियार ॥
रावण अनुज तहँ लग्यो मारन राक्षसान अपार ।
शाखा मृगन वोल्यो वचन निशिचर करहु संहार ॥
गे मारि रण भट कुंभकरणादिक अनेकन वीर ।
अब रह्यो एकहि वाचि यह मारहु सवै कपि धीर ॥
दोहा—सुनत विभीषण के वचन, धाये वानर ऋक्ष ।
मारन लगे निशाचरन, मेघनाद परतिक्ष ॥
जामवान लै विटप कर, हन्यो निशाचर वृन्द ।
गिरे परे डगरे भिरे, लरे करे वहु फन्द ॥

छन्द चौवोला ।

तहँ ऋक्षराज उखारि वृक्षन लक्ष ऋक्षन संग ।
मारचो अनेकन राक्षसान कियो ततक्षन जंग ॥
नहिं भागि वाचत निरखि राक्षस लौटि लपटे आय ।
तेहि देखि पौनकुमार लपणहिं भूमि महँ वैठाय ॥
धायो महीधर लै प्रचारत ऋक्षपति ढिग जाय ।
करिकै कदन निशिचरण को दीन्ह्यो सुरारि लगाय ॥
उत देखि लछिमन भूमि ठाढ़े तजि विभीषण काहि ।
अति कोपि धायो इन्द्रजित अस कहत वचतो नाहि ॥
दोउ करन लागे युद्ध उद्धत हनि परसपर वान ।
शरजाल दोऊ दुरत दीसत यथा पावस भान ॥

खैंचत गहत संधत धनुप करपत तजत तुकि तीर।
मंडल करत कोदंड दोऊ लखि परत नहिं वीर॥
दोउ निरखि परत अलात चक्र समान ज्वलित कृशान।
जनु चारि ओरहु अनलकन झरझर झरत झहरान॥
अवनी अकाशहु दिशन विदिशन रहे सायक छाय।
दोउ लरत कहुँ जुरि जात कहुँ बिलगात रोस बढ़ाय॥
दोउ दुहुन को नहिं देखि परत सु होत विभ्रम भूरि।
झारत शरन अति वेग सो कहुँ निकट ह्वै कहुँ दूरि॥
भरिगे निरंतर सर भयो अवकाश रहित अकाश।
सागर भयो सर संकुलित मुद्रित भई दश आश॥
मनु गये अस्ताचल दिवसपति भई भादोंराति।
निशिचर कपिन श्रोणित सरित बहती अमित घहराति॥
किलकत भयंकर भूत चहुँकित करत श्रोणित पान।
नहिं वात बहत न ज्वलत पावक देवऋषि अकुलान॥
मुनि लोक स्वस्ति सशोक भाषत प्रलै मानो होति।
नभ ते गिरत गिरवान अगन विमान छावत जोति॥
तेहि काल तजि शर चारि वेध्यो लपण तासु तुरंग।
तजि भल्ल एक प्रचण्ड काट्यो सूत शिर मधि जंग॥
घननाद अति अविपाद पग सों गह्यो बाजिन बाग।
चालत तुरंगन शरन घालत कपिन अचरज लाग॥
तब लपण मारि पतत्रि अगणित लियो रिपु कहँ छाय।
तहँ लपण को लागे प्रशंसन कोश आनँद पाय॥
तह गंधमादन सरभ रभस प्रमाथि चारिहु रीसि।
कूदे तुरंगन उपर डारि अंग अंगनि पीसि॥
हत वाजि सारथि निहत लखि घननाद कूदि तुरंत।

धायो लषण पर बाण बरषत वेग सो बलवंत ॥
तहँ भो बरोबर युद्ध दोउ क्रुद्ध वीरन केर ।
नहिं तजत निज निजनाथ को कपि रजनिचर करि घेर ॥
तब कह्यो रावणपूत सिगरे यातुधान बोलाय ।
मैं करहुँ अब अँधियार सायक गगन महि महँ छाय ॥
जबलों गगन ते गिरहि शर जबलों न होइ प्रकाश ।
तबलों न भाग्यो वीर कोउ नाहिं तज्यो समर हुलास ॥
अस कहि सुराधिपजित धुन्यो शरकियो तम चहुंओर ।
अति लाघवी करि गयो लंक निशंक तजि रणठोर ॥
चढ़ि चारु रथ लै सुमति सारथि सैन संग लेवाय ।
हय नाधि वर आयो समर कोहु को परचो न जनाय ॥
शर झरे भास भये लखे सब ताहि यान सवार ।
लछिमन विभीषन पवनसुत संसन लगे बहु बार ॥
दोहा–मेघनाद कोदंड तहँ, भयो मण्डलाकार ।
महा लाघवी करि प्रबल, कियो कपिन संहार ॥
ताहू ते करि लाघवी, रामानुज रणधीर ।
तासु चाप काट्यो चटक, दियो बंद करि तीर ॥
धनुष दूसरो कर करत, सोउ काट्यो कर माहिं ।
लषण पाँच सायक हन्यौ, ताकि तासु उर काहिं ॥
कवच फोरि तन फोरि कै, धसे भूमि महँ बान ।
विकल भयो श्रोणित वमत, इन्द्रजीत बलवान ॥
सम्हरि साजि धनु शीघ्र अति, लाखन बाण चलाय ॥
लियो लषण कह तोपि तहँ, मघाझरीसी लाय ॥
लषण काटि सिगरे शरन, तोपि ताहि शरवृन्द ।
त्रयत्रय शर रजनीचरन, मारचो दशरथनंद ॥

मेघनाद रामानुजहि, वारहि वार वखान।
मारचो भर भर शर निकर, प्रखर शरासन तानि॥

छंद भुजंगप्रयात।

असंभ्रांत रामानुजो छोड़ि वाणा। कियो सारथी को तुरंतैअप्राणा॥
विना सारथीके भये ते तुरंगा। करै मंडलै पंथ ले विद्ध अंगा॥
हनैं लक्ष्नै ताकि तीखे तुरंगे। चलै एक संगै रुकै नाहिं जंगे॥
समै पाय कै सो सुमित्रा कुमारा। अभेदै सनाहै तनैं माहिं धारा॥
गड़ै नाहिं लागे शैरे ते सनाहै। तहाँ रावणी वाण तीनै प्रवाहै॥
लगे लक्ष्नै के पतात्री ललाटै। लसे शृङ्ग ज्योतीन शैलैसवाटै॥
तहाँ वीर रामानुजो वेग भारी। दियो पाँच वाणै मुखैतासुमारी॥
दुराधर्ष हरपी दोऊ युद्ध ठाने। लखैं राक्षसौ वानरौ ते चकाने॥
कढ़ै देह दोहून के रक्त वुल्ले। मनौ साल्मली किंसुकै वृक्षफुल्ले॥
इतै राम भ्राता उतै इन्द्रजीतै। चहैं वीर दोहूँन को दोउ जीतै॥
कियो लाघवीरावणै कोकुमारा। यकै एक वाणै सवै शीशमारा॥
तहाँ यातुधानेश के भ्रात काहीं। हन्या तीन वाणै मुखैं शंकनाहीं॥
तवै लंक राजानुजौ कोपिधायो। गदा मारि वाजीन भूमैगिरायो॥
द्रुतै इन्द्रजीतौ हत्यो शूल ताहीं। कियो खंड ह्वैलक्षणैलागिनाहीं॥
तज्यौ पंच नाराच लंकेश भ्राता। कियोरावनी अंगमेंपंचवाता॥
कका पै महा कोपि सोइन्द्रजीता। दियो अंतकै जो शरैशत्रुजीता॥
कह्यो तू मरयोरे तज्या वाणसोई। सखा नाश त्योंलक्षणोलीनजोई॥
दियो स्वप्न में वाण जोवित्तनाथा। लिया राम भ्रातासोईवाणहाथा॥
दुराधर्ष दुजैं तज्यो तानि काना। लरे वाण दोऊ गये आसमाना॥
गिरे खाक ह्वै भूमि में वाण आई। रहे वीर दोऊ समाने लजाई॥
तहाँ वारुणास्त्रै तज्यो रामभ्राता।चल्योकालसोतीनलोकेविख्याता॥
तज्यौ रौद्र अस्त्रै महेन्द्र प्रमाथी। दल्यो वारुणास्त्रैयथासिंहहाथी॥

महा पावकास्त्रै तज्यो मेघनादा । इतै भास्करास्त्रै तज्यो राम भ्राता॥ बढ़ीज्वालमालाकियोसोविषादा। भयो भासभारीदिशानैअघाता॥

दोहा--उभै शस्त्र लरि गगन में, करि प्रकाश चहुँ ओर ।
गिरे दग्ध ह्वै धरणि महँ, रहे वरोवर जोर ॥
इन्द्रजीत असुरास्त्र तव, तज्यो लषण की ओर ।
कढ़े ज्वलत मुगदर खड्ग, तोमर पाशहु घोर ॥
शूल भुशुंडी असिगदा, कुंतल मुशल कुठार ।
परे वानरो सैन में, लगे करन संहार ॥
लछिमन पाशुपतास्त्र तव, तज्यो भयंकर रूप ।
भयो नाश असुरास्त्र को, कियो प्रकाश अनूप ॥
जरन लगे सुरगण सकल, कीन्हे हाहाकार ।
जानि व्यथा वड़ि विश्व की, लषण कीन संहार ॥
पितर देव गंधर्व मुनि, करि आगे सुरनाथ ।
लषण निकट ठाढ़े भये, सकल कपिन के साथ ॥

कवित्त ।

प्रवल प्रचंड पुनि लीन्ह्यौ वाण रामानुज,
दुराधर्ष दुसह दुरासद है ईश को ।
कै दियो प्रयोग त्यों महेन्द्र अस्त्र मंत्र पढ़ि,
बोल्यो वैन कै भरोस राम जगदीश को ॥
सत्यसंध धरम धुरंधर जो रघुराज,
विक्रम अखंड होय जो पे जानकीश को ।
बाण तौ हमारो यहि बार को पवारो काटि,
डारै विन वारै अब मेघनाद शीश को ॥

दोहा—अस कहि छोड्यो लषण शर, लग्यो कंठ महँ जाय ।
इन्द्रजीत के शीश को, दीन्ह्यो काटि गिराय ॥

चौपाई।

लषण रहे छोडत बहु बाना। रँगे वीर रँग मरब न जाना॥
कुंडल क्रीट सहित शिर ताको। कियोप्रकाशितअति वसुधाको॥
चढ़े विमानन देव अपारा। एकहि बार किये जयकारा॥
मरकटहू रिपु निधन विलोकी। जै जै लषण कहे बिन शोकी॥
जान्यो लषण मरयो रिपु मोरा। कीन्ह्यो विजै धनुष टंकोरा॥
भगे निशाचर चारिहु ओरा। डारि डारि आयुध तेहिं ओरा॥
घुसे जाय कोउ भय भरि लंका। कोऊ बूड़े उदधि सशंका॥
लुके निशाचर शैलन माहीं। परे देखि फर पर पुनि नाहीं॥
भये अस्त जिमि जग दिनराजू। रहतिकिरणिनहिं कतहुँ दराजू॥
तिमि विलोकिघननाद विनाशा। तजे तमीचर जीवन आशा॥
सुनासीर नभ दियो नगारा। लषण आजु सुर कंटक टारा॥
वह्यो सुगंधित सीर समीरा। मिटी लोकपति लोकन पीरा॥

दोहा–विमल भानुसित भानु भे, भई भूमि बिन भार।
गो ब्राह्मण कंटक टरयो, माच्यो जय जयकार॥

चौपाई।

सुख राँचे कपि नाचन लागे। पूँछि उठाय लषण के आगे॥
शर जरजरित शिथिल सब अंगा। रामानुज जय रंग अभंगा॥
विजयी लषण महा सुख पाई। चले जहाँ कपिपति रघुराई॥
हनुमत और विभीषण काहीं। गहे कंध गमनत मग माहीं॥
मंद मंद चलि सैन समेतू। आये जहाँ भानुकुल केतू॥
गह्यो लषण प्रभु पद अरविंदा। लिय लगाय उर रघुकुल चंदा॥
मिलत प्रभुहिमिटिगेशर घाता। भयो दुगुनबल विमलविख्याता॥
कियो प्रदक्षिण लषण राम को। बोल्यो बचन सुनाय नाम को॥
मैं लछिमन लघु दास तुम्हारा। तुव प्रताप सब काज सुधारा॥

समर हाल लंकेश उचारा। जेहि विधिलषणइन्द्रजित मारा॥
रघुपति लषण अंक बैठाई। बोले वचन नयन जल छाई॥
रह्यो बंधु जो तोहि समाना। सहजै सकल कलेश सिराना॥

दोहा–तेरे भुज बल लषण मैं, निरभय त्रिभुवन माहिं।
तरयों सिंधु गोपद सरिस, मोहिं शंका कछु नाहिं॥
अस कहि सूंघ्यो शीश पुनि, आशिष दियो अनन्त।
जियहु अनन्त अनन्त युग, तुम सम नाहिं अनन्त॥
तीन दिवस अरु तीन निशि, कियो युद्ध घननाद।
मारि ताहि आये सुखी, मोंहि यही अहलाद॥
राम सुखेन बोलाय कै, कह्यो वचन सतकारि।
हनुमत अंगद आदिकन, करहु विसल्य जितारि॥
लषणहुँ कह बिन व्रन करहु, औषध दै सुखदानि।
तुम धन्वंतर के सरिस, दिव्य औषधी ज्ञानि॥
सुनि सुखेन रघुपति वचन, औषध आसुहि ल्याय।
सो विसल्य करनी सुखद, औषधि दियो सुँघाय॥
शस्त्रघात मिटिगे तुरत, जस की तस भै देह।
दुगुन पराक्रम दुगुन बल, भयो दुगुन तन तेह॥
हनुमत अंगद नील नल, और विभीषण काँहि।
आघ्रान करवाय कै, कीन्ह्यो निरुज तहाँहि॥
जब औषध गिरि पवनसुत, ल्यावत भो अधराति।
तब सुखेन सब औषधो, धरि राखी बहु भांति॥

छंद चौबोला।

ये विसल्य निरुज बानर सब ओज तेज बलभारी।
रहि बार सराहत लषणहिं अजै शत्रु ...
मंत्री सुनि इन्द्रजीत वध रा...

दियो सुनाय निशाचर राजहि गयो आप सुतमारी ॥
सुनि रावण ह्वै गयो विमूर्छित तन की सुरति विसारी ।
पुनि उठि आँसुन धार बहत दृग बोल्यो गिरा पुकारी ॥
मारुत बहहु आजु अपने मन सूरज तपहु सुखारे ।
इन्द्र वरुण कुवेर यम सुरगण सोवहु पाउँ पसारे ॥
अब का जिये जगत महँ सुत बिन लगति देह ममभारा ।
हमहीं चलब समर सनमुख अब देहु देवाय नगारा ॥
अस कहि अतिहि कोपि सीता पर मारन कारन धायो ।
माल्यवान सोइ जरठ निशाचर तेहि बुझाय मुरकायो ॥
एकादशि द्वादशी त्रयोदशि कियो इन्द्रजित युद्धा ।
आज चतुर्दशि चैत कृष्ण की होहु शत्रु पर क्रुद्धा ॥
जौंन कोप सीता पर कीजत तौन कोप करि रामे ।
पठै मूल बल सेन हजूरी करहु बिजै संग्रामें ॥
माल्यवान को नाम सुपारसु रह्यो अविंद्य कहावत ।
तासु वचन सुनि कुपित दशानन भन्यो मूछ फरकावत
ल्याउ मूल बल बोलि हमारो सोई सेन हजूरी ।
परचर दौरि बोलि ल्याये द्रुत सेन भयंकर भूरी ॥
दीन्ह्यो तब निदेश दशकंधर जाहु सबै एक साथे ।
नहिं मारियो कपीन बिचारि गहि ल्यावहु रघुनाथे ॥
सुनत मूल बल चल्यो महा दल भट रथ तुरंग मतंगा ।
महाबली धाये रजनीचर चारु चमू चतुरंगा ॥
उड़ी धूर पथ पूरि रह्यो नभ भयो भयावन शोरा ।
कपि धुनिनीमहँ धसे धाय खल खल भल भयो न थोरा ॥
क्रुद्ध कोश भे क्षुद्ध युद्ध कहँ किये दद्ध भट उद्दे ।
अति विरुद्ध करते निरुद्ध कोरे रन विमुद्ध लघु वुद्दे ॥

बलीमुखन कहँ बली निशाचर दीन्हें मारि हटाई।
राम शरन को ताकि वचन हित मरकट चले पराई॥
बिचलत लखि बानरी वाहिनी बीर शिरोमणि रामा।
कह्यो लषण कपिपति हनुमत सों लखहु सबै संग्रामा॥
हौं अकेल दल यातुधान के धसत धनुष कर धारी।
मति कोई आवहु संग मेरे रुचि ऐसही हमारी॥
अस कहि कोशलपाल कराल कोदंड चंड टंकोरा।
धस्यौ निशाचर सैन अकेले दशरथभूप किशोरा॥
करि लाघव राघव झारचो शर चाप मंडलाकारा।
मनु घन मंडल महँ रबि मंडल झारत झुंड अगारा॥
झरत बाण दीसत चहुँकित ते लखि न परत रघुबीरा।
गिरत परत उठि भ्रमत भजत भट लटपट भटकत वीरा॥
हटकत लटकत चटकत मटकत नटखट करहिं अनेका।
झटपट गिरहिं उठहिं भट चटपट अटपट भयो विवेका।
चट चट टूटत पट्ट पास बहु फट फट फूटत मुण्डा।
घट घट महँ सटपटी अंटी तहँ कटि कटि धावहिं रुंडा॥
श्रोणित तटिनी तट घट घट महँ योगिनि नटिनी नाँचें।
घट घट करहिं पान श्रोणित को हटि हटि रटि रटि राँचें॥
विकट भूत भट निकट चटक चलि कटकट तन्त बजावैं।
मरघट इव खटकत सबके घट लखि मरकट सुख पावैं॥

दोहा–पुनि छोड्यो प्रभु समर महँ, मोहनास्त्र शर घोर।
सकल यामिनीचरन को, भयो भामिनी भोर॥

छन्द चौबोला।

यक एकन को पकरत तिय गुनि यक एकन पर कोपैं।
यक एकन पर टोपिन तोपत शिर काटि हनि चोपैं॥

यक एकन कहँ जानत रामे हनें तेग ललकारी।
कोटिन राम रूप को देखहिं भ्रम वश निशि संचारी॥
यह आयो यह आयो मारो मारो धरो धरोरे।
करो करो बल लरो लरो भल हरो प्राण न टरौरे॥
दिशि महँ राम विदिश महँ रामहि भू अकाश महरामा।
जहँ देखें तहँ राम रूप शठ करै कौन संग्रामा॥
राम चक्र लखि परयो जगत सब झरैं बाण चहुँओरा।
आपुस महँ लरि लरि सब मरिगे रजनीचर बरजोरा॥
लखे हजारन रूप राम के काल चक्र सम धावत।
कार्मुक कनक मंडलानकारहि चारि ओर चमकावत॥
महि ते नभ ते सकल दिशन ते भरभर शर निकराहीं।
पै निशिचर तहँ सकल परसपर काटि कटि गिरिगिरिजाहीं॥
यहि विधि मारि मूल बल रघुवर ठाढ़ो समर अकेला।
मनहुँ मत्त मातंग वृन्द दलि राजत सिंहनवेला॥
महा रथी दश सहस निशाचर मारुत जव रथ रोहा।
अष्टादश हजार गजवाहन सपन्यो जिनहिं न छोहा॥
चौदह सहस तुरंग सवारे महावली अनियारे।
पैदर वीर बली द्वै लाखहि निशिचर नाथ प्रचारे॥
आये काम राम संग्रामहि धूम धाम अति कीन्हे।
चारि दंड महँ रघुकुल नायक सब कर वध करि दीन्हे॥
रथ तुरंग मातंग संग ते परे रहे रणभूमी।
देखनवारे खवारे कहे भजि चरन करन मुख चूमी॥
देव प्रमो[illegible] चढ़े वि[illegible] फलन की झरिलाये।
[illegible] बजाये॥
[illegible]नुमाना।

प्रभु विजयी सहजहिं पगु धारे भयो न नेकु गुमाना ॥
वंदि वंदि पद रघुनंदन के कपिगण करहिं प्रशंसा।
जय जय अप्रमेय प्रभु भुज बल हंस बंस अवतंसा ॥
ऋक्षराज कपिराजहि अंगद लंकेशहि प्रभु भाखे।
मोहनास्त्र यह की शंकर कर की हमहीं कर राखे ॥
कहे जोरि कर सकल बीर वर तुम सरवज्ञ सुजाना।
तुमहिन बहुत निशाचर गंजन को करि सकै बखाना ॥
हल्ला परयो सुलंक महल्ला रोवहिं निशिचर नारी।
हा पितु हा सुत हाय बंधु कहि देहिं रावणहिं गारी ॥
दै नारी रावण को गारी बोलहिं वचन पुकारी ॥
निशिचर कुल क्षयकारण जानहुँ सूपनखा व्यभिचारी ॥
यहि विधि करहिं विलाप अनेकन जुरिजुरि रावण द्वारे।
देखि दशकंधर क्रोध शोक वश ऐसे वचन उचारे ॥
[illegible] हेत हमहीं जैहैं अब देहु बजाय नगारे।
जे कछु बचे होइँ रजनीचर ते सँग चलैं हमारे ॥
शत्रु वेधि बाणन बंदर दल उऋण होउँ सब काहीं।
जे हतिगे कपि कर तिनकी जग बीर बड़ाई नाहीं ॥
दशमुख शासन सुनत निशाचर सजे समर हित शूरा।
तिन लक्ष रथ तीस लक्ष गज पैदर पुहुमी पूरा ॥
सरंठ करोर तुरंग सवारे सेनापति भट चारी।
दोहा—ए निशाचर की अनीकिनी परी दिशन अँधियारी ॥
[illegible] उत्साह बाजने, रही भूरि नभ छाइ।
[illegible] [illegible] धरनि, मैं [illegible] [illegible] ॥

धस्यो धुनत शर पैन अपारन अति उतपात देखाना ॥
भये मंद तहँ भान विदिश दिशि अंधकार अति छायो।
बोले सकल विहंग दीन सुर भूमि कंप दरशायो॥
वरषन लागे रुधिर वलाहक बैठ्यो गीध ध्वजा में ।
गिरहिं तुरंग संग सब सम थल शब्द भयो वसुधा में ॥
उलका गिरी तासु स्यंदन पर फेकरन लगे सियारा।
असगुन गन्यो न कछु मन में शठ सनमुख समर सिधारा
मारन लाग्यो महा करालन बाणन सो दशभाला।
दशमुख सनमुख समर प्रखर शर सहै को वीर विशाला॥
विन शिर विन भुज विन पद मरकट होन लगे तेहि काला।
चली वलीमुख सैन विचलि जिमि निरखि सिंह गजमाला॥
आयो रावण प्रभु के सनमुख तहँ तुरंत कपिराजा।
धायो महा साल को तरु लै संयुत कपिन समाजा॥
मारयो अमित राक्षसन रोपित विरूपाक्ष तहँ धायो।
अरु दुरधर्ष चढ्यो इक सिंधुर कपिपति के ढिग आयो॥
विरूपाक्ष दुरधर्ष वीर दोउ यकहिं नाग सवारा।
मारि शरन छाये कपिराजहि जिमि घन गिरि जलधारा॥
हन्यो दौरि सुग्रीव महा तरु गिरयो भूमि गजराजा।
लै करवाल ढाल कूदे तहँ निशिचर वीर दराजा॥
विरूपाक्ष मारयो सुग्रीवहि खड्ग शीश महँ धाई।
ह्वै विसंग कपि गिरयो भूमि महँ नेसुक मुरछा आई॥
पुनि उठि दौरि हन्यो मूठी उर विरूपाक्ष तहँ डाटी।
मारि कृपाण कंध कपिपति के कनक कवच दिय काटी॥
तल प्रहार कीन्ह्यो कपि नायक गयो सो वीर बचाई।
कपिराजहु कारि बहुरि लायवी निशिचर निकट सिधाई॥

मारचो थापर तासु ललाटै फाटचो तासु कपाला ।
विरूपाक्ष मरि गिरचो भूमि महँ निकसे नैन विशाला ॥
विरूपाक्ष के गिरत समर महँ उभै सैन यक संगा ।
हरषित शोकित चली चहूं कित जिमि वरधित जल गंगा॥
विरूपाक्ष को मृतक विलोकत रह्यो महोदर दूजो ।
बोल्यो ताहि दशानन धावहु यही समै हित पूजो ॥
धायो बली महोदर सनमुख कियो कपिन दल भंगा ।
तहँ कोपित कपिनायक आयो भरो वीररस रंगा ॥
हनी शिला यक ताहि महोदर काटचो बाण चलाई ।
मारचो वृक्ष ताहि पुनि काटचौ लियो परिघ कपिराई ॥
मारि परिघ तोरचो स्यंदन तेहि कीन्ह्यो तुरँग निपाता ।
सो लै गदा हन्यो कपिपति को राक्षस वीर विख्याता ॥
परिघ गदा टूटे दोहुन के लपटि गये दोउ वीरा ।
मल्ल युद्ध तहँ करन लगे दोउ कपि राक्षस रणधीरा ॥
झपटि महोदर लियो खड्ग यक हन्यो कीशपति काहीं ।
लियो छड़ाय कृपाण कीशपति मारचौ हुमकि तहाहीं ॥
कटचो तासु शिर गिरचौ महोदर भगी निशाचर सैना ।
दूजो महापर्श्व तहँ धायो लगी ताहि कछु भैना ॥
अंगद चमू व्यथित करि दीन्ह्यो मारि हजारन बाना ।
अंगद धाय उठाय परिघ यक हन्यौ शीश बलवाना ॥
रथ ते गिरचो भूमि मुरछित ह्वै ऋक्षराज तब धाई ।
मारि वृक्ष ताको दल नास्यो निशिचर चले पराई ॥
दोहा–महापार्श्व उठि तुरत तहँ, लै कर कठिन कुठार ।
मारचो कुपित प्रचारिकै, बचे न बालि कुमार ॥
बालिसुवन करि लाघवी, तासु ९

हृदय हनो यक मूठि तेहि मरो भुजा पसराय ॥
भागी फौज निशाचरी, ओज मोज कपि सेन।
निरखत दशकंधर कुपित, कह्यो सूत सोवैन।
रे सारथी ले चलु रथहि, जहाँ लपण रघुवीर।
विक्रम देखहुँ दुहुँन को, हने बहुत मम वीर ॥

चौपाई।

रावण वचन सुनत सो सूता। लै धायो रथ अति मजबूता ॥
रावण तामसास्त्र शर घोरा। तजो चटक मरकट गण ओरा ॥
हाहाकार रह्यो दल छाई। चली वलीमुख सैन पराई ॥
सहिन सके रावण शर धारा। भयो समर वाणन अँधियारा ॥
भागत सेन निरखि रघुराऊ। चले मंदगति युद्ध उराऊ ॥
निरख्यो जाय राम कहँ रावन। मनहुँ नोलमणि शैल सुहावन ॥
वाम लपण दहिने कपिराजू। खड़ो विभीषण वीर दराजू ॥
मनुमत अंगद अरु नल नीला। दुविद मयंद महा बल शीला ॥
लपण निरखि रण रावण आवत। वढ्यो युद्ध हित वाण चलावत ॥
तजी लपण सायक वर धारा। मूद्यो रिपु रथ लगी न वारा ॥
लपण वाण वारण करि रावन। आयो जहाँ जगतपति पावन ॥
रामहिं देखि तजी शरधारा। यक दश शत सहस्र बिन वारा ॥

दोहा–तिल तिल करि रावण सरन, रघुनंदन रणधीर।
मारि तीर अति पीर किय, रह्यो न धीर शरीर ॥

चौपाई

करन लगे दोउ युद्ध भयावन। जग अभिराम राम अरु रावन ॥
छूटी दुहुँ दिशि ते शर धारा। ह्वैगो समर भूमि अँधियारा ॥
राम राम नहिं रावण रामहिं। छावत समर मत्त संग्रामहिं ॥
मंडल करहिं अनेक विचित्रा। यक अमित्र जग यक जग मित्रा ॥

मारयो थापर तासु ललाटै फाटयो तासु कपाला।
विरूपाक्ष मरि गिरयो भूमि महँ निकसे नैन विशाला॥
विरूपाक्ष के गिरत समर महँ उभै सैन यक संगा।
हरपित शोकित चली चहूं कित जिमि परथित जलगंगा॥
विरूपाक्ष को मृतक विलोकत रह्यो महोदर दूजो।
बोल्यो ताहि दशानन धावहु यही समै हित पूजो॥
धायो वली महोदर सनमुख कियो कपिन दल भंगा।
तहँ कोपित कपिनायक आयो भरो वीररस रंगा॥
हनी शिला यक ताहि महोदर काटयो वाण चलाई।
मारयो वृक्ष ताहि पुनि काटयौ लियो परिघ कपिराई॥
मारि परिघ तोरयो स्यंदन तेहि कीन्ह्यो तुरँग निपाता।
सो लै गदा हन्यो कपिपति को राक्षस वीर विख्याता॥
परिघ गदा टूटे दोहुन के लपटि गये दोउ वीरा।
मल्ल युद्ध तहँ करन लगे दोउ कपि राक्षस रणधीरा॥
झपटि महोदर लियो खड्ग यक हन्यो कीशपति काहीं।
लियो छड़ाय कृपाण कीशपति मारयौ हुमकि तहाहीं॥
कटयो तासु शिर गिरयौ महोदर भगी निशाचर सैना।
दूजो महापर्श्व तहँ धायो लगी ताहि कछु भैना॥

उलका ग्रह नक्षत्र मुख, तिमि दामिनो समान ॥

चौपाई।

रे दशानन सायक घोरा। निशिचर जरन लगे चहुँ ओरा ॥
य कृत अस्त्र तज्यो दशभाला। निकसे शूल गदा करवाला ॥
ूशल मुदगर कार्मुक पाशा। कियो गाज सम शोर प्रकाशा ॥
व गंधर्व अस्त्र प्रभु त्यागा। मयकृत अस्त्र खोजनहिं लागा ॥
ोर अस्त्र छोड्यो तब रावन। कढ़े चक्र वहु चमकि भयावन ॥
ामकत चक्र गगन महँ छाये। गिरिकपिदलअति भीति बढाये॥
न्द्र अस्त्र छोड्यो रघुराई। गिरे लूक लाखन तहँ जाई ॥
ुनि शर भर भर कोशलराऊ। तजि वेधे तन बच्यो न काऊ ॥
ाव त्यागे दशमुख दश वाना। वेध्यो सकल अंग भगवाना ॥
ाभु उखारि बाणन महि डारे। कहे वचन शर निबल तिहारे ॥
ाहि अवसर रामानुज कोपी। मार्‍यो सात बाण चितचोपी ॥
ाक शर काट्यो ध्वजा पताका। पुनि काट्यो सारथिशिर ताका॥

दोहा–कियो खंड कोदंड द्वै, मारि पंच शर घोर।
तहाँ विभीषण लै गदा, मार्‍यो चारिहु घोर ॥

चौपाई।

देखि विभीषण रावण कोपा। चाह्यो करन बंधु कर लोपा ॥
वज्र सरिस यक शक्ति कराला। हन्यो विभीषण को दशभाला ॥
बीचहिं लषण कीन त्रय खंडा। हँसन लगे वानर बरिवंडा ॥
तबहिं दशानन अतिहि रिसाई। ब्रह्मदत्त लिय शक्ति महाई ॥
तजत वदन सो पावक ज्वाला। मानहुं कालरूप विकराला ॥
जान्यो लषण विभीषण नाशा। आगू भयो बचावन आशा ॥
हने शक्ति कहँ सायक लाखा। दियो नाशिदशमुख अभिलाषा ॥
तब लंकेश कोपि कह बाता। लियो बचाय मोर शठ भ्राता ॥

चढ़े बिमान देव समुदाई। देखहिं रावण राम लड़ाई
रावण राम समर जब भयऊ। भूरि भुवन महँ भय ...
महा भयंकर धनुधर दोऊ। रह्यौ न है होनो अस कोऊ
भरिगे गगन बाण बर बृन्दा। परी मंद गति सूरज चंदा॥
जिमि दमकहि दामिनि घनमाहीं। बाण बृन्दतिमि गगन सोहाहीं॥
जहँ कहँ छिद्र होत शर जाला। सो गवाक्ष सम लसत विशाला॥
ह्वै गो समर शरन अंधियारा। जिमि भादौं निसि मेघ अपारा॥
रहे अचल दोऊ दल ठाढ़े। रावण राम समर सुख बाढ़े॥

दोहा—भयो वृत्त वासव समर, जैसे सतयुग माहिं।
तेहि विधि ताते अधिक कछु, रावण राम लखाहिं॥

चौपाई।

उभै विशारद अस्त्र अनंता। उभै बीर संगर बलवंता।
उभै करत मंडल बहु भांती। उभै तजतशर अगणित जांती॥
उभै बीर जहँ जहँ रण जाँहीं। तहँ तहँ शर तरंग लहराहीं॥
करि लाघवी तहाँ दशभाला। राम ललाट रच्यौ शर माला॥
कमल माल इव शोभित भयऊ। नाहिं कछु व्यथा नाथ कहँदयऊ॥
प्रभु रुद्रास्त्र तज्यो अति घोरा। रावण छप्यौ सरथ तेहि ठौरा॥
कवच अभेद दशानन पहिरे। गये बाण ताते नाहिं गहिरे॥
रघुनायक सायक पुनि पांचा। मारयो रावण भाल नराचा॥
भाल फोरि प्रविसे शर धरनी। देव सराहत प्रभुकी करनी॥
तनक विकल ह्वै उठ्यौ दशानन। छोड्यो असुर अस्त्र पंचानन॥
सिंह व्याघ्र वृक कढ़े हजारन। काक कंक अरु गीध अपारन॥
रासभ कुकुट श्वान वराहा। सफरी सर्प मकर भय नाहा॥
किये भीति कपि दल महँ आई। लिये एक एकन कहँ साई॥

दोहा—तज्यो राम सूर्य्यास्त्र कहँ, चंद सूर्य्य मुखवान।

उलका ग्रह नक्षत्र मुख, तिमि दामिनो समान ॥

चौपाई।

जरे दशानन सायक घोरा। निशिचर जरन लगे चहुँ ओरा ॥
मय कृत अस्त्र तज्यो दशभाला। निकसे शूल गदा करवाला ॥
मूशल मुदगर कार्मुक पाशा। कियो गाज सम शोर प्रकाशा ॥
तब गंधर्व अस्त्र प्रभु त्यागा। मयकृत अस्त्र खोजनहिं लागा ॥
सौर अस्त्र छोड्यो तब रावन। कढ़े चक्र बहु चमकि भयावन ॥
चमकत चक्र गगन महँ छाये। गिरिकपिदलअति भीति बढाये॥
चन्द्र अस्त्र छोड्यो रघुराई। गिरे लूक लाखन तहँ जाई ॥
पुनि शर भर भर कोशलराऊ। तजि वेधे तन बच्यो न काऊ ॥
तब त्यागे दशमुख दश बाना। वेध्यो सकल अंग भगवाना ॥
प्रभु उखारि बाणन महि डारे। कहे वचन शर निबल तिहारे ॥
तेहि अवसर रामानुज कोपी। मारयो सात बाण चितचोपी ॥
यक शर काट्यो ध्वजा पताका। पुनि काट्यौ सारथिशिर ताका॥

दोहा-कियो खंड कोदंड द्वै, मारि पंच शर घोर।
तहाँ बिभीषण लै गदा, मारयो चारिहु घोर ॥

चौपाई।

देखि बिभीषण रावण कोपा। चाह्यो करन बंधु कर लोपा ॥
वज्र सरिस यक शक्ति कराला। हन्यो बिभीषण को दशभाला ॥
बीचहिं लषण कीन त्रय खंडा। हँसन लगे बानर बरिबंडा ॥
तबहिं दशानन अतिहि रिसाई। ब्रह्मदत्त लिय शक्ति महाई ॥
तजत वदन सो पावक ज्वाला। मानहुं कालरूप विकराला ॥
जान्यो लषण बिभीषण नाशा। आगू भयो बचावन आशा ॥
हने शक्ति कहँ सायक लाखा। दियो नाशिदशमुख अभिलाषा ॥
तब लंकेश कोपि कह बाता। लियो बचाय मोर शठ भ्राता ॥

ताते सावधान रहु वीरा । भसम करी यह शक्ति शरीरा ॥
असकहि लषण ताकि रणधीरा । तजी शक्ति पुरदायक पीरा ॥
घंटा अष्ट वद्ध विकराला । मय निरमित धाई जनु काला ॥
आवत शक्ति देखि रघुराई । कह्यो स्वस्ति जीवै मम भाई ॥

दोहा—लगी लषण उर माँझ सो, कियो धरणि लगि फोर ।
शिथिल अंग विन संज्ञ ह्वै, गिरिगो राजकिशोर ॥

चौपाई ।

रघुपति विकल देखि लघु भ्राता । ह्वै गे सजल नयन जलजाता ॥
कियो विचार मनहिं रघुवीरा । यहि क्षण उचित न होव अधीरा ॥
नहिं विषाद कर अवसर आजू । पाय समर कहाय रघुराजू ॥
बढि आगे रघुकुल मणि वीरा । हन्यो कठिनकोटिन तहँ तीरा ॥
लषण विकललखि अति दुखपाये। हनुमत अंगद आदिक धाये ॥
लगे उखारन शक्ति कराली । कढ़ै न कठिन लषण उर शाली ॥
राम बहुरि सो शक्ति उखारी । दै भुज वीच तोरि तेहि डारी ॥
शक्ति उखारत महँ लंकेशा । दियो छाय हनि वाण अशेशा ॥
प्रभु बिसराय विपुल शर घाता । लियो अंकमहँ निज लघु भ्राता॥
कपिपति मारुति काहँ बोलाई । बोल्यौ सरुप वचन रघुराई ॥
रहहु लषण कहँ घेरि कपीसा । विक्रम काल मोहि यह दीसा ॥
मिल्यौं बहुत दिन महँ यह काला । नैनन देखि परचो दशभाला ॥

दोहा—जिमि चातक चितवत रहत, स्वाती वारिद वुंद ।
तिमि चाहत हमहूं रहे, रावण समर अनंद ॥

चौपाई ।

राज त्याग दंडकवन धावन । सीता हरण शोक उपजावन ॥
सहे नरक सम अमित कलेशा । आजु रही नहिं ताकर लेशा ॥
सुनहु सबै चित दै कपि ज्ञानी । भुज उठाय भाषों मैं वानी ॥

की रहिहै रावण जग आजू । की रहिहैं जग में रघुराजू ॥
होई अब नहिं दूसर बाता । जानहु सत्य वीर विख्याता ॥
यहि हित मरकट कटक बोलायो । बालि मारि नृप सुगल बनायो ॥
सागर सेतु रच्यो यहि हेतू । समै सो लह्यो बहुत करि नेतू ॥
गरुड दीठ किमि बचै भुजंगा । दशमुख किमि जैहै करि जंगा ॥
चढि गिरि शीश कपीश निशंका । लखहु मोर रावण रण बंका ॥
आजु राम रामता निहारों । नेकु शंक मन महँ नहिं धारों ॥
करिहौं कर्म आजु में सोई । चारिहु युग गैहें कवि जोई ॥
तीनिहु लोक सिद्धि गंधर्वा । चारण विद्याधर सुर सर्वा ॥

दोहा–जब लगि जगती जग रही, तब लगि सहित समाज ।
करहिं गान गिरवान सब, करौं कर्म जो आज ॥

चौपाई ।

अस कहि रघुकुल वीर उदंडा । कियो धनुष टंकोर अखंडा ॥
हन्यो हजारन सायक घोरा । शर अँधियार भयो चहुँ ओरा ॥
रावण राम बाण नभ छाये । लै विमान सुर विकल पराये ॥
गिरहिं गगन ते कटि कटि बाना । महा भयंकर लूक समाना ॥
मच्यो बरोबर ज्या तल शोरा । कियो जगत महँ सब कहँ भोरा ॥
प्रभु लाघवी बरणि नहिं जाई । मानहुँ मघा मेघ झरिलाई ॥
मनहुँ कढत सब अंगन बाना । गगन महीन देखात दिशाना ॥
कसमस परयो लंकपति काहीं । धनुष धरत नहिं बनत तहाहीं ॥
तिल तिल भयो तासु कटि याना । अंग भंग भे तुरंग महाँना ॥
छिन्न भिन्न भे सारथि अंगा । भये खंड बहु तासु निखंगा ॥
मुकुट कट्यो करि चटक चमंका । कट्यो धनुष दामिनी दमंका ॥
कसमसान दशमुख मन माहीं । देख्यो प्राण बचत अब नाहीं ॥

दोहा–राम बाण के वेग सों, जातुधान रणधीर ।

लंक द्वार लों उड़ि पर्यो, घुस्यो भवन भय भीर ॥

चौपाई ।

रावण जीति राम रणधीरा । आयो लखन लषण रघुवीरा ॥
विकल अनुज लखिविकलखरारी । बोलि सुखे नहिं गिरा उचारी ॥
रावण शक्ति निहत मम भाई । तलफल अहि समान दुखदाई ॥
श्रोणित गात निहारु सुखेना । लगत फीक लछिमन बिन सेना॥
रण बांकुरों लषण लघु भाई । तेहि बिन जिये न मोरि भलाई ॥
हाय लषण बिन जीवहुँ आजू । धिक ममधनुष सकलधिक काजू॥
नहिं देखात कछु आँखिन माहीं । भरे नयन जल पसरत नाहीं ॥
लखौं सपन धौं फुरि यह होई । आजु पीठ पाछे नहिं कोई ॥
करिहै सिगरो जगतहँसाई । आये निज लघु बँधु गँवाई ॥
लषण विना नहिं जीवन योगू । त्रिभुवन भोग नरक कर भोगू ॥
बिजै पाय नहिं कीरति मोरी । दे हौं लंकहि सीतहि छोरी ॥
बिना लषण जीवन तनभारू । शशि मुख अंधहि कौन बिचारू ॥

दोहा—जय ते सिय ते समर ते, अब न प्रयोजन मोर ।
कौन लाय मुँह अवध को, जैहौं तजि यहि ठोर ॥

चौपाई ।

भवन छोडि मम संग सिधारा । लषण भ्रात प्राणहुँ ते प्यारा ॥
जस आयो मम सँग लघु भाई । हौं जैहौं तेहि सँग जहँ जाई ॥
अब नहिं मिली लषणअस भ्राता । चौदह वर्ष विपिनि महँ त्राता ॥
देश न देश मिलैं वर नारी । देशन देश कुटुंबहु भारी ॥
सो न देश मोहिं नैन देखाता । मिलतो जहाँ सहोदर भ्राता ॥
कौशलराज लषण बिन सूनी । मेरी भै अपकीरति दूनी ॥
कहिहौं काह सुमित्रै जाई । जब पूछिहैं कहाँ तुव भाई ॥
उत्तर का कौशिल्यहि देहौं । कौन भांति भरतहि समुझैहौं ॥

रिपुहन सों केहि भांति वतैहों । अब तो अवध नगर नहिं जैहों ॥
इहैं मरन अब नीक देखाई । पायों पूर्व पाप फल भाई ॥
हाय लषण मम प्राण पियारे । शूर शिरोमणि जग उजियारे ॥
मोहिं अकेले छोड़ि तुराई । देखहुँ स्वर्ग जात लघु भाई ॥

दोहा–तव तव समझायो हमें, जब जब कीन विलाप ।
कस अब नहिं उठि लषण तुम, हरहु मोर संताप ॥

चौपाई ।

यहि विधि रघुपतिकरतविलापा । पावत लषण लखत संतापा ॥
कह्यो सुखेन सुनहु रघुवीरा । धर्म धुरंधर तजहु न धीरा ॥
विना प्राण नहिं लषण शरीरा । यह विचारि कछु धारहु धीरा ॥
लषण वदन नहिं भयो मलाना । शरद जलद सम तेज महाना ॥
पंकज पाणि चरण अरुणारे । अति कोमल प्रिय लगत निहारे ॥
करहु न रघुपति नेकु विषादा । देत आसु उठि अति अहलादा ॥
यहिविधि प्रभुहि सुखेन बुझाई । पवनसुवन कहँ कह्यो वोलाई ॥
जाहु आसु उत्तर दिशि प्यारे । ऋक्षराज जेहि पंथ उचारे ॥
दक्षिण शिखर द्रोण गिरि माहीं । औषधि चारिहु अहैं तहाँहीं ॥
यक विसल्य करनी सुखदाई । यक सुवर्न करनी मन भाई ॥
यक संजीवन करनी जोई । यक संधान करन मुद मोई ॥
ल्यावहु औषध लछिमन हेतू । अहै न रघुपति के चित चेतू ॥

दोहा–सुनि सुखेन के वचन तहँ, चल्यो तुरत हनुमान ।
पहुँच्यो औषधि शैल ढिग, लग्यो करन अनुमान ॥

चौपाई ।

जो औषधि उखारि लै जैहों । कौन कौन को ताहि चिन्हैहों ॥
जो ह्वै गयो मोहिं भ्रम भारी । तौ आवनि भै वृथा हमारी ॥
ताते औषधि शैल उखारी । जाउँ आसु जहँ लषण खरारी ॥

चीन्हत महँ विलंब अति ह्वै है । प्रभु के मन नाहिं शोक समै॥
अस विचारि तहँ पवनकुमारा । तुरत औषधी शैल उखारा॥
लै धायो दक्षिण दिशि वीरा । सुमिरत मन निशंक रघुवीरा॥
आयो उभै दंड महँ तहँवाँ । राम लषण कपिनायक जहँवाँ॥
कह्यो सुखेनहिं पवनकुमारा । लेहु औषधी जौन विचारा॥
लै औषधी सुखेन तुरंता । दीन्ह्यो लषण काहिं मतिवंता॥
सूँघत औषधि लषण प्रवीरा । उठ्यौ विसल्य मिटी सब पीरा॥
बोल्यौ वचन लषण धनुधारी । कहँ रावण रण हतौं प्रचारी॥
रघुनन्दन उठि वचन उचारे । आवहु लछिमन प्राण पियारे॥

दोहा--अस कहि लषणहि लपटिगे, रघुनन्दन सानन्द ।
मरत मिल्यौ मानहुँ सुधा, छूटि गयो दुख द्वन्द ॥

चौपाई।

मिल्यौ बहुरि हनुमानहिं रामा । प्राण दान दीन्ह्यो यहि ठामा॥
किये कीश सब जय जय कारा । बरषे सुमन ससुमन अपारा॥
कह्यो लषण सो पुनि रघुराई । रह्यो न तोहिं बिन जीवन भाई॥
तोहिं बिन कौन सीय कर काजू । तोहिं बिन बिजै न कोशलराजू॥
बोल्यौ वचन प्रभुहि कर जोरी । मानहु नाथ बिनै अब मोरी॥
पूरुब प्रण करि वृथा न कीजै । पालिय वचन सत्य मन दीजै॥
मैं न रहौं कि रहौं जग माहीं । मृषा प्रतिज्ञा करियो नाहीं॥
धर्म धुरंधर रघुकुल राऊ । मृषा वचन मुख कढ़ न काउ॥
प्रभु दशकंठ सकुल संहारहु । तिलक विभीषणकोपुनिसारहु॥
तुव प्रताप राखहुँ उर आशा । करौं सकुल दशकंठ विनाशा॥
पाय बाण पथ राउर स्वामी । दशमुख ह्वै है यमपुर गामी॥
बिजै सहित जो सीतहि चाहौ । मेरो बिनै नाथ निरवाहौ॥

दोहा--सुनतलषन कवचनप्रभु, दीन्ह्यो हृदय लगाय।

वीर बली मुख बीच में, राजत रघुकुल-राय ॥

चौपाई।

तहँ नवीन रथ चढ़ि लंकेशा। आयो कुपित समर के देशा ॥
जिमि रवि पर धावत स्वर भानू। तिमि दशमुखकारि कोपकृशानू ॥
मारयो प्रभुहि अनंतन बाना। रामहुँ तज्यो बाण सहसाना ॥
भयो बरोबर दोहुन युद्धा। इत रघुपति उत रावण क्रुद्धा ॥
रावण रथी राम पदचारी। सुरपति लखि मातली हँकारी ॥
बोल्यो वचन उचित नहिं होई। एक रथी यक पदचर जोई ॥
सायुध स्यंदन मम ले जाहू। तेहि पर चढ़ें भानुकुलनाहू ॥
करहिं विनाश निशाचर केरो। याके वध हित अति अवसेरो ॥
सुरपति शासन सुनि सुखपायो। मातलि रथ अवनी ले आयो ॥
करि प्रणाम बोल्यो करजोरी। सुरपति विनै कियो प्रभु थोरी ॥
रघुनंदन चढ़ि स्यन्दन माहीं। हनें बाण वृन्दन रिपु काहीं ॥
मातलि विनै सुनत रघुराई। दै परदक्षिण चढ़े तुराई ॥

दोहा–रघुनंदन स्यन्दन चढ़े, सोहे मधि संग्राम।
मानहुँ भानु सुमेरु पर, उदित भयो अभिराम ॥

चौपाई।

होन लग्यो तव द्वै रथ युद्धा। रावण राम भये अति क्रुद्धा ॥
तज्यो अस्त्र गंधर्व दशानन। पूरित भयो प्रकाश दिशानन ॥
तजि गंधर्व अस्त्र रघुराई। दियो शत्रु कर अस्त्र मिटाई ॥
पुनि देवास्त्र तज्यो दश शीशा। प्रगटे देव अदेव सरीसा ॥
देव अस्त्र रघुनाथ चलाई। देव अस्त्र कहँ दियो मिटाई ॥
राक्षसास्त्र छोड्यो दशकंधर। प्रगटे राक्षस मनहुँ विषंधर ॥
पाये फणी फणा बहु काढ़े। करत फुकार महा रिसि बाढ़े ॥
छिये भूमि नभ कपिदल छाई। भगे बलीमुख अति डेराई ॥
तज्यो राम गरुडास्त्र महाना। भक्षन कियो भुजंगन नाना ॥

तब रावण रण कोपित भयऊ । सहस बाण प्रभुपर तजि ५५
पुनि मातलि को बहु शरमारचो। वासव ध्वजा काटि रथ डारचो।
कियो व्यथित वासव के वाजिन । प्रभुकहँ मूद्यो हनि शरराजिन ।
दोहा-मानहुँ राकाशशि ग्रस्यो, राहु पर्व कहँ पाय ।
उव्यो सिंधु महँ धूम अति, भाकर भास छिपाय ॥

चौपाई ।

रवि मडल महँ परचो कबंधू । उदे केतु उतपात प्रबंधू ॥
कियो रोहणी बुध आक्रमनू । किय कुजकोशलनखतहिदमनू ॥
भुजा बीस दशशीश भयावन । देखि परचो रण रोषित रावन ॥
शिथिल भये मनु प्रभुशुभशीला। देखि विकल भे सुर रण लीला ॥
देवन कपिन विकल लखि रामा । नेसुकभृकुटि कियो तहँ वामा ॥
नेसुक भये नैन अरुणारे । छोडे सातौ सिंधु करारे ॥
प्रलय पयोधर गरजन लागे । भये सुरासुर सब भय पागे ॥
ऋषि गंधर्व सर्व सभयानन । गगन छोड़ि लै भगेविमानन ॥
रावणहूं जान्यो निज काला । हत्यो कछुक लै जान विशाला ॥
पुनि थिर चितकरिकैदशशीशा । आयो सनमुख जहाँ जगदीशा ॥
जय रावण की निशिचर भाषैं । रघुपतिकी जय सुर अभिलाषै ॥
तहँ सकोप निशिचरगण नाथा । लीन्ह्यौ महाशूल यक हाथा ॥
दोहा-बोल्यौ वचन पुकारि कै, खड़ो रहै रघुनाथ ।
अब न बचैगो शूल ते, लगी बीचही माथ ॥

चौपाई ।

अस कहि तज्यो शूल बरजोरा । तड़ित प्रकाश भयो चहुँ ओरा॥
हने राम सायक बहु लासा । भसम भये लगि सूलहि पासा ॥
लियो महेन्द्र शूल रघुराई । शत्रु शूल पर दियो चलाई ॥
भयो खंड द्वै रावण शूला । मिटो देव मुनि कपि हिय सूला ॥

पुनि प्रभु हन्यो लंकपति बाजी । मार्‍यो तेहि उर बाणन राजी ॥
शर जर जरित भये सब अंगा । हन्यो तीनशर भाल अभंगा ॥
भयो फुल्ल बंधूक समाना । विकल भयो कछु रह्यो न भाना ॥
सम्हरि बहुरि कोप्यो लंकेसा । मानहुँ भयो काल कर वेसा ॥
मारि शरन मूद्यो प्रभु काहीं । जिमि रवि अभ्र विहँगतरुमाहीं ॥
रावण घन शर बरषहि पाई । कँप्यो न अचल शैल रघुराई ॥
दशमुख शर वारत निज बानन । विचरत रण रघुकुल पंचानन ॥
तब दशमुख शर हन्यो हजारा । प्रभु तन बही रुधिर की धारा ॥
रघुनायक छवि समर प्रकासा । उव्यो फूलिमनु विपिनपलासा ॥

दोहा-कियो मंडलाकार धनु, दशरथ राजकुमार ।
रावण तन जरजरित किय, हनि शर दशै हजार ॥

चौपाई।

तहाँ समर कोपे दोउ बीरा । किये शरन अँधियार गभीरा ॥
रावण सों रघुपति मुसक्याई । बेधे बचन बाण बरिआई ॥
जनस्थान तैं जाय अभागी । चोरी करत लाज नहिं लागी ॥
अपने को मानत अति शूरा । हमहूँ लषण रहे अति दूरा ॥
जो हमरे देखत लंकेशा । चोरी करन जात तेहि देशा ॥
तौ पुनि लंक बहुरि नहिं आवत । अपनेकरमहिं कर फल पावत ॥
पै निज कुल अब सब हतवाई । कह्यो लंक ते निशिचरराई ॥
बहुरि लंक जइबो कठिनाई । दे देखाय अपनी मनुसाई ॥
अस कहि तजी राम शर धारा । गयो मूँदि निशिचर भरतारा ॥
दिव्य अस्त्र सब रघुकुल नाथे । दोउ दिशिखड़े जोरि युग हाथे ॥
बाण वृन्द पुनि पुनि रघुनाथा । हनत कहत रहु थिरदशमाथा ॥
रोम रोम वेध्यो तन बानन । भयो सल्यकी सरिसदशानन ॥

दोहा-ह्वै विसंग रथ पर गिर्‍यो, सारथि मृतक विचारि ।

लै भाग्यो रण ते तुरत, अरत वचन पुकारि ॥

चौपाई ।

लंक द्वार लगि जब रथ गयऊ । सावधान दशकंधर भयऊ ।
उक्यो देखि भागत निज याना । बोल्यो वचन निकारिकृपाना ॥
रे शठ सारथि कहँ लै जाता । रावण सरिस न वीर पराता ॥
मोर बीरता धूर मिलायो । लरत शत्रु सों समर छोड़ायो ॥
लै चलु लै चलु अब रथ मोरा । खड़ो जहाँ अवधेश किशोरा ॥
तब सारथि बोल्यो कर जोरी । नाथ न देहु मोरि कछु खोरी ॥
मैं सारथि कर धर्म निबाहा । मुरछित देखि निशाचर नाहा ॥
अब करि कछुक नाथ विश्रामा । कीजै विजै राम संग्रामा ॥
सारथि वचन सुनत लंकेशा । दीन्ह्यो कंकन जड़ित सुवेशा ॥
ह्वै प्रसन्न सारथिपर रावण । बोल्यो वचन भीति उपजावन ॥
कीन्ह्यो क्षमा तोर अपराधा । सूत धर्म गुनि करी न बाधा ॥
अब जो समर छोड़ै है मोहीं । तौ नहिं जियत त्यागिहौं तोहीं ॥

दोहा–अस कहि कछु विश्राम करि, वदन सलिल सों धोय ।
पहिरि कवच नव धनुप धारि, धायो संग न कोय ॥

सोरठा–दशरथ राजकुमार, मारहु ते सुकुमार अति ।
करत युद्ध निशि वार, भयो श्रमित स्वेदित वपुप ॥

कवित्त ।

धावत निहारि लखि रावण को आवतहीं,
भक्तजन चिन्तामणि चिन्ता उपजी मने ।
विक्रम विलोकि मेरो व्यथित पराय गयो,
आवत बहोरि दीन शर्णागत या छने ॥
ओर नाहिं शोच कछु रावण शरण होत,
एक शोच करत उदास जो अपारने ।

हां तो रघुराज लंकराजे लंक राज दे कै,
भेजिहौ बुझाय कोने भवन विभीषनै ॥
सोरठा–प्रभु दुचिताई जानि, रहे गगन देखत समर ।
मुनि अगस्त्य मतिखानि, आय कहे प्रभु से वचन ॥
दोहा–यह आदित्य हृदय सुखद, दिनकर अस्तवराज ।
पढ़हु करहु धारण चिते, करो सिद्धि सब काज ॥
मैं भाषा कीन्ह्यो नहीं, यह अस्तोत्र महान ।
समर विजय कर शंक हर, सुखकर वेद समान ॥

अथ आदित्य हृदय ।

ततोयुद्धपरिश्रान्तं समरेचिन्तयास्थितम् ।
रावणंचाग्रतोदृष्ट्वा युद्धायसमुपस्थितम् ॥
दैवतैश्चसमागम्य द्रष्टुमभ्यागतोरणम् ।
उपगम्याब्रवीद्राम मगस्त्योभगवाँस्तदा ॥
रामराममहाबाहो शृणुगुह्यंसनातनम् ।
येनसर्वानरीन्वत्स समरेविजयिष्यसे ॥
आदित्यहृदयंपुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम् ।
जयावहंजपन्नित्य मक्षयंपरमंशिवम् ॥
सर्वमङ्गलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम् ।
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ॥
रश्मिमंतंसमुद्यंतं देवासुरनमस्कृतम् ।
पूजयस्वविवस्वंतं भास्करंभुवनेश्वरम् ॥
सर्वदेवात्मकोह्येष तेजस्वीरश्मिभावनः ।
एषदेवासुर गणा ह्लोंकान्यातिगभस्तिभिः ॥
एषब्रह्माचविष्णुश्च शिवस्कंदःप्रजापतिः ।
महेन्द्रोधनदःकालो यमःसोमोह्यपांपतिः ॥

पितरोवसवःसाध्या अश्विनौमरुतोमनुः।
वायुर्वह्निःप्रजाः प्राणःऋतुःकर्ताप्रभाकरः॥
आदित्यः सवितासूर्यः खगःपूषागभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशोभानुर्हिरण्यरेतादिवाकरः॥
हरिदश्वःसहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शंभुस्त्वष्टामार्तंडकोंऽशुमान्॥
हिरण्यगर्भःशिशिर स्तपनोऽहस्करोरविः।
अग्निगर्भोदितेःपुत्रः शंखःशिशिरनाशनः॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपांमित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥
आतपीमंडलीमृत्युःपिङ्गलःसर्वतापनः।
कविर्विश्वोमहातेजा रक्तःसर्वभवोद्भवः॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपोविश्वभावनः।
तेजसामपितेजस्वी द्वादशात्मन्नमोस्तुते॥
नमःपूर्वायगिरये पश्चिमायाद्रयेनमः।
ज्योतिर्गणानांपतयेदिनाधिपतयेनमः॥
जयायजयभद्राय हर्यश्वायनमोनमः।
नमोनमःसहस्रांशो आदित्याय नमोनमः॥
नमउग्रायवीराय सारंगाय नमोनमः।
नमःपद्मप्रबोधाय प्रचंडायनमोस्तुते॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशायसूरायादित्यवर्चसे।
भास्वतेसर्वभक्षाय रौद्रायवपुषेनमः॥
तमोघ्नायहिमघ्नायशत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नायदेवाय ज्योतिषांपतयेनमः॥
तप्तचामीकराभाय हरयेविश्वकर्मणे।

नमस्तमोभिनिघ्नाय रुचयेलोकसाक्षिणे ॥
नाशयत्येषवैभूतं तमेवसृजतिप्रभुः ।
पायत्येषतपत्येष वर्षत्येषगभस्तिभिः ॥
एषसुप्तेषुजागर्तिभूतेषुपरिनिष्ठितः ।
एषचैवाग्निहोत्रंच फलंचैवाग्निहोत्रिणाम् ॥
देवाश्चक्रतवश्चैवक्रतूनां फलमेवच ।
यानिकृत्यानिलोकेषु सर्वेषुपरमप्रभुः ॥
एनमापत्सुकृच्छ्रेषु कांतारेषुभयेषुच ।
कीर्तयन्पुरुषःकश्चिन्नावसीदतिराघव ॥
पूजयस्वैनमेकाग्रोदेवदेवंजगत्पतिम् ।
एतत्त्रिगुणितंजप्त्वा युद्धेषुविजयिष्यसि ॥
अस्मिन्क्षणेमहाबाहो रावणंत्वं जहिष्यसि ।
एवमुक्त्वाततोगस्त्यो जगामसयथागतम् ॥
एतच्छ्रुत्वामहातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा ।
धारयामाससुप्रीतो राघवःप्रयातात्मवान् ॥
आदित्यंप्रेक्ष्यतेजस्वीपरंहर्षमवाप्तवान् ।
त्रिराचम्यशुचिर्भूत्वा धनुरादायवीर्यवान् ॥
रावणंप्रेक्ष्यहृष्टात्मा जयार्थंसमुपागमत् ।
सर्वयत्नेनमहतावृतस्तस्यवधेऽभवत् ॥
अथरविरवदन्निरीक्ष्यरामं मुदितमनाःपरमंप्रहृष्यमानः ।
निशिचरपतिसंक्षयंविदित्वा सुरगणमध्यगतोवचस्त्वरेति ॥

दोहा--पढ़ि आदित्य हृदय हरषि, दिनकर को शिर नाय ।
समर सजे रघुवंशमणि, हर्ष न हिये समाय ॥

चौपाई ।

चढ्यो महा रथ रावण राजा । धावत आवत संगर काजा ॥

श्याम तुरंग उतंग पताका। घर घर करत शोर रथ चाक
महा भयंकर श्याम शरीरा। लखि रावण प्रमुदित रघुवीरा
मातलि सो अस कह्यो बुझाई। तुम सुजान सारथि सुरराई
लै चलु रथहि सवेग धवाई। परै वाम दिशि निशिचर राई॥
तहँ मातलि प्रभुपद शिर नाई। रघुनंदन स्यंदनहि धवाई॥
वाम ओर लंकापति डारी। धुरत धूर लै गयो निकारी॥
जिमि रजकन तिमिरघुपतिबाना। मूँद्यो रथ युत रावण जाना॥
कोप्यो जातुधान पर धाना। करन लग्यो मंडलविधि नाना॥
रावण राम समर अति गाढ़ा। देखत कौतुक दोउ दल ठाढ़ा॥
लखैं देव नभ चढ़े विमाना। लरहिं वीर दोउ सिंह समाना॥
होन लगे तहँ अति उतपाता। वरषाहिं रुधिर जलद नभत्राता॥

दोहा–रावण मुख लागतभयो, सनमुख पवन झकोर।
जहँ जहँ गवनत लंकपति, तहँ तहँ गीध करोर॥

चौपाई।

भई विदिश दिशि श्रोणित रंगा। उलका गिरहिं अमित यकसंगा॥
लग्यो दिवाकर ग्रहण अकाला। नदहिं चहूं कित घोर शृगाला॥
रावण रथ गालारि रव करहीं। वाजिन आँखिन आँसुन झरहीं॥
देखि अशुभ रघुकुल मणि हरषे। रावण गन्यो नइन उतकरषे॥
निशिचर दल कपिदलदोउओरा। लिखे चित्रसम तजहिं न ठोरा॥
रावण राम लरें रणमाहीं। लखहिं देव चित चकित तहाँहीं॥
तव दशकंठ तज्यो यक वाना। कट्यो इन्द्ररथ तुंग निशाना॥
प्रभु यक वाण तुरंत चलायो। रावण रथ ध्वज काटि गिरायो॥
राम तुरंगन रावण मारयो। पै रथ नेकहु टरयो न टारयो॥
तव कीन्ही रण रावण माया। अंधकार दशहूं दिशि छाया॥
गदा परिघ असिचक्र अनंता। कपिदल वरष्यो सठ वलवंता॥

प्रभु हँसि भास्कर अस्त्र चलायो। क्षण महँ माया सकल उड़ायो॥

दोहा-महा धनुर्धर वीर दोउ, रचे गगन शरजाल।
तिल भर अंतर नहिं रह्यो, सुर मुनि भये विहाल॥

चौपाई।

शरपंजर अंदर ह्वै गयऊ। एकहु बाण विफल नहिं भयऊ॥
लरि लरि बाण गिरे महि माहीं। देखि परे दोउ वीर तहाँहीं॥
महा धनुर्धर दोउ रणधीरा। पुनि हनिहनि नभ भरिदियतीरा॥
रथ मंडल करि दक्षिण बामा। लरहिं समर महँ रावण रामा॥
उभै वीर रण कोपित गाढ़े। उभै वीर रण आनँद बाढ़े॥
उभै वीर त्यागहिं शर धारे। उभै वीर रण टरहिं न टारे॥
उभै वीर विक्रमी अनूपा। निशिचरभूप भानुकुल भूपा॥
उभै परसपर जय चित चाहे। छिन्न भिन्न भे उभै सनाहे॥
राम रावणहिं रावण रामहिं। हनि शर करहिं घोर संग्रामहिं॥
मंडल करत समर यक काला। भिरिगे स्यंदन उभै विशाला॥
भिरिगे बाजिन के मुख मुख सों। धुरा धुरा जुरिगे यक रुख सों॥
हन्यो दशानन बल करि बाना। बेधि गये सब तन भगवाना॥

दोहा-पुनि मातलि को लंक पति, हन्यो अनेकन बान।
किये नेकहूं नहिं व्यथा, भे शर फूल समान॥

चौपाई।

तस तन प्रभु शर किये न पीरा। यथा मातली बिधे शरीरा॥
शर वैतस्तिक भर भर मारी। कियोविमुख रिपु राम प्रचारी॥
बीस तीस शत साठिहु सायक। सहस लाख छोड़त रघुनायक॥
तेहि विधि रावणहू सर झारत। बार बार बाणन बढ़िबारत॥
कहूँ गदा कहुँ मूशल बरशैं। कहूँ बाण हनि हनि हिय हरषैं॥
रावण राम बाण के बाता। क्षोभित भये समुद्रहु साता॥

सात लोक भूतल तल बासी। भे व्याकुल तजि जीवन आ॥
सात लोक ऊरध के जेते। बाणवेग व्याकुल भे तेते॥
तहँ देवर्षि महर्षि अपारा। अति आरत अस करहिंपुकारा॥
स्वस्ति होयगो ब्राह्मण केरी।प्रलय होति अब लगति न देरी॥
सुन्यौं न दीख युद्ध अस कबहूँ। लख्यो सुरासर संगर तबहूँ॥
यथा गगन के गगन समाना। सागर सम सागर जग जाना॥

दोहा–तथा राम रावण समर, रावण राम समान।
शेष शारदा शंभु विधि, लखे सुने नहिं कान॥
तहँ राघव लाघव कियो, तजि शर तेज निकेत।
रावण शिर काट्यो तुरत, कुंडल मुकुट समेत॥

चौपाई।

दूसर शीश भयो दश शीशा। लखि आश्चर्य गुन्यो जगदीशा॥
सोउ रावणशिर काटि गिरायो। तीसर शीश तुरत ह्वैआयो॥
यहिविधि शत शिर काट्योरामा। भे नवनव शिर तेहि संग्रामा॥
कौशिल्यानंदन रणधीरा। निरखि दशानन को बिन पीरा॥
मन महँ लाग्यो करन विचारा। दशकंधर कस मरत न मारा॥
जिन शर हत्यों मरीच सुबाहू। किय त्रिसिरा खरदूषण दाहू॥
जिन शर बध्यों विराध कबंधा। बेध्यों ताल सहित असकंधा॥
जेहि शर सिंधु उठोशिखिज्वाला। जेहि शर बध्यों बालिबिकराला॥
ते शरलगि दशकंठ शरीरा। समर करत नेकहु नहिं पीरा॥
पुनि धरि धीरज रघुकुलवीरा। त्यागन लाग्यो तुकि तुकितीरा॥
कहुँ दोउ लरहिं अकाशहि जाई। कहूँ शैल शिर करहिं लराई॥
कहुँ धरणी कहुँ लरहिं दिशानन। रावण अरु रघुकुल पँचानन॥

दोहा–तहँराम रावण भयो, सिगरो जगत देखान।
कपि निशिचर मुनि सुर असुर, तन महँ तनक न भान॥

दिवस निशा छण पल लवहु, घटी महूरत याम।
समर राम रावण कियो, लह्यो न कछु विश्राम।

चौपाई।

(त)व मातलि बोल्यो कर जोरी। सुनहु नाथ विनती यक मोरी॥
(क)स भूले अपनी सुधि सारी। आपहि मधु कैभट संहारी॥
हिरण्यकशिपु कनकाक्ष सँहारे। अमित बार भुवि भार उतारे॥
(य)ह रावण है केतिक बाता। हनहु ब्रह्म शिर करै निपाता॥
(म)ातलि कहे सुरति प्रभु कीन्हा। घोर ब्रह्मशिर अस्त्रहि लीन्हा॥
(ब)से पवन जाके दोउ पक्षा। मुख महँ दिनकर पावक स्वक्षा॥
(ग)ुरुता मंदर मेरु समाना। जासु शरीर अकाश प्रमाना॥
उठत धूम निकसत मुख ज्वाला। भेदक चौदह भुवन कराला॥
सो शर संधान्यौ रघुराई। वेद मंत्र पढ़ि आनँद छाई॥
साजत शर काँपे त्रय लोका। उपज्यो रावण के उर शोका॥
रावण हृदय ताकि रघुनायक। तज्यो अमोघ ब्रह्मशिर सायक॥
रावण हृदय लग्यो शर घोरा। पत्र सरिस ताको उर फोरा॥

दोहा—रावण प्राण समेत शर, फोरि सात पाताल।
रुधिरमयो रघुनाथ जर, प्रविश्यो तूण विशाल॥
गिऱ्यो भूमि में धनुप तेहि, मृतक भयो दशभाल।
स्यन्दन ते धरणी गिऱ्यो, कँपी धरणि तेहि काल

सोरठा—रावण मृतक निहारि, देव दिये नभ दुंदुभी।
यक एकनहिं पुकारि, सुर मुनि जयजयकार किय॥
वरषे कुसुम अपार, कहि जय जय रघुवंशमणि।
उतऱ्यो भू कर भार, देव विप्र कंटक टऱ्यो॥

छन्द।

भागे निशाचर करत आरत शोर लंका ओर को।

रगदे चली मुख ऋक्ष वृक्षन हनत करि करि जोर को॥
वरजे कपिन रघुवंशमणि अब जातुधान बचाइयो।
इन कर कछुक अपराध नहिं अब कोप मन नहिं लाइयो।
बरषत सुमन सुमनस कहत जय कौशलेश कुमार की।
नद्दत नगारे नाक वारे मिटी भय संसार की॥
पूपन प्रकाशित कियो पुहुमी विमल चंद्रसतार भे।
शीतल सुमंद सुगंध मारुत वहत मुनि सुखभार भे॥
ब्रह्मर्पि हर्पि महर्पि जग मह याग करत अरंभ भे।
द्विज पाठ पूजन करनलागे विगत भीति अदंभ भे॥
अस्तुति करत रघुवंशमणि की देव मुनि पद गाय कै।
नाचहिं विमानन अपसरा बहु मधुर बाज बजाय कै॥
गंधर्व चारण सिद्ध विद्याधर सुकिन्नर गाय कै।
अस्तुति करैं प्रभु की मुदित बहु गद्यपद्य बनाय कै॥
निरमल गगन भुवि भय अभारा अति प्रसन्न दिशा भई।
दिनमणि चले प्रभु सुयश गावत देव दारा सुख छई॥
वैकुंठपति दशकंठ हनि द्रुत बोलि अति उतकंठ सो।
लंकेश और सुकंठ को कीन्ह्यो सो कंठहि कंठ सो॥
प्रभु मिले पुनि हनुमान सों अंगद लियो उर लाइ कै।
पुनि मिले लषनहि सों ललकि दृग वारि बिंदु बहाइ कै॥
तहँपृथक पृथक कपीन को लघु बड़ जहाँ जेते रहे।
सबको मिले रविवंश रवि मोहिं कहँ मिले अस सब कहे॥
लंकेश और सुकंठ को प्रभु कहे वचन बोलाय कै।
विजयी कियो तुम मोहिं दोउ जस दियो सखा सहाय कै॥
तहँ लषण सुगल विभीपणादिक परे रघुपति चरण में।
प्रभु दोरदंड अखंड बल पूजत महा मुद भरन में॥

मरकट नचत रणभूमि महँ लंगूर तुंग उठाय के।
गावत अवधपति विमल यश केती कलान देखाय के॥
राजत सुरघुकुल मुकुद चन्द्र महेन्द्र रथहिं सवार हैं।
चहुँ ओर प्रवल कपीश ठाढ़े लखत वारहिं वार हैं॥
श्रम बिंदु श्रोणित बिंदु श्याम शरीर शोभित ह्वै रहे।
जनु राय मुनि खग गण तमालहिं लसहिं थिर मोदित महे॥
रघुवंश नायक पाणि सायक सहज शोभित फेरहीं।
जनु निज सुयश थल भुवन चारिहु ओर नैनय हेरहीं॥
शिर जटा मुकुट विराजमान निखङ्ग कंधन सोहहीं।
दोर्दंड ओज अखंड धृत कोदंड सुर मुनि जोहहीं॥
जे श्री विराजत प्रभु वदन अरविंद नयन विशाल हैं।
तेहि काल दीन दयाल कपिन निहारि करत निहाल हैं॥
सुर व्रात वरणत जात यश फहरात विजै निशान हैं।
अति मंद शीतल वात वहत विलात श्रम वलवान हैं॥
पुनि उतरि रथ ते मातली मिलि कहे रघुपति वैन को।
कीन्ह्यो परम उपकार रथ लै जाउ सुरपति ऐन को॥
कलपांत करि सुख भोग सुर पुर आइहौ मम धाम को।
सुरनाथ को उपकार यह नहिं कवौं भूली राम को॥
रघुनन्द के पद वंदि मातलि पाय परम अनंदको।
लै इन्द्र स्यंदन गगन पंथ पयान कीन अमंद को॥
प्रभु बैठि रुचिर रसाल छाया सुखित कपिन समाज में।
तेहि समय सुख वर्णन करन कहु कौन मति रवुराज में॥
दोहा—जेठ बंधुको निधन लखि, तहाँ विभीषण जाय।
लाग्यो करन विलाप अति, उर अनुताप बढ़ाय॥
सोरठा—बहुत बुझायों तोहिं, काल विवश मान्यौ नहीं।

बहुरि कह्यो धिक मोहिं, लह्यो तासु फल आततें ॥

दोहा--धृति प्रवाल सुम तेज तन, सरस शूरतामूल ।
रावण तरु राघव पवन, दिय गिराय सम तूल ॥
यश कीरति युगदन्त तन, जग प्रशंस मुनि वंश।
सुंड कोप लंकेश गज, राम सिंह किय ध्वन्स॥
विक्रम ज्वाला तेज झर, श्वास धूम को धाम ।
रावण अग्नि बुझाय दिय, समर राम घनश्याम॥
विक्रम दर्प विषान युग, डील धीर अव नैन।
रावण वृषभ विनाश किय, राम बाघ बल ऐन॥
विकल सखा लखि अवधपति, बोले वचन बुझाय ।
प्रेतकर्म दशकंठको, करहु विभीषणजाय ॥
कह्यो विभीषण जोरि कर, तव द्रोही को नाथ ।
प्रेतकर्म करिहौं नहीं, दियों छोड़ि मैं साथ॥
कह कृपाल जीवतहि लगि, रह्यो वैर मम घोर ।
सखा तिहारे नात अव, यथा तोर तस मोर ॥
प्रेतकर्म दशकंठ को, करहु लंकपति जाय ।
ह्वै है अवशि पुनीत तुव, हाथ तिलांजुल पाय ॥
प्रभु शासन धरि शीश में, करन बंधु मृतकाज ।
चल्यौ विभीषण बिलखि उर, सुमिरत श्रीरघुराज ॥

छन्द ।

तेहि समय रावण नारि निकसीं करत अतिहि विलाप ।
रणभूमि महँ सब जाय लखि पति मृतक लहि संताप ॥
गहि चरण कर शिर लगीं रोवन करत आरत शोर ।
जग देविका हरि कंत कीन्ह्यो नाश कुल बरजोर ॥
मान्यो विभीषण को कह्यो नहिं दियो ताहि निकारि ।

नहिं कुंभकरण कह्यो गुन्यो हठ तजी नाहिं विचारि ॥
नहिं माल्यवान कह्यो धर्यो चित कंत ह्वै वश काल।
हमसे सहित लंका करी विधवा निशाचर पाल ॥
मंदोदरी तहँ आय रोवन लगी करत प्रलाप।
जेहि देव सनमुख रुकत नहिं तेहि मनुज ते भय ताप॥
ताते न मानुष राम हैं वैकुंठपति घनश्याम।
श्रीवत्स वक्ष विराजमान अनन्त सैन अकाम॥
धरि विष्णु मानुष रूप ह्वै दशरत्थ राजकुमार।
भूभार हारन हेत कीन्ह्यो कंत तोर सँहार ॥
नहिं आदि मध्य अनादि धाता ईश्वरहु को ईश।
वरशङ्ख चक्र गदा विराजत चारि भुज जगदीश ॥
पिय तोहिं वरज्यों प्रथम में मान्यो न मेरे बैन।
जगदंबिका घरलाय मंगल चह्यो भै कछु भैन ॥
वरज्यो विभीषण कुँभकरणहु माल्यवान प्रहस्त।
मान्यो न ताकर लह्यो फल तुम भयेकुल युत अस्त ॥
जब समर खरदूषण हते माया मरीच दराज।
मार्यो कबंधहि बालि मारि सुकंठ दीन्ह्यो राज ॥
करि सेत सागर कटक मरकट सहित उतरे पार।
तब मोर जिय डरप्यो अतिहिं पिय कियोकछु नवि चार
परब्रह्म योगी ज्ञान गम्य प्रणम्य त्रिभुवन ईश।
को कहत मानुष राम वंदत जाहि सुर विधि ईश ॥
पिय मोह वश माने नहीं करि जगत्पति सो द्रोह।
तुम कंत सहित कुटुंब नाश्यो तज्यो तन करि कोह ॥
हनुमान आयो लंक लायो भयो तबहुं न ज्ञान।
यह विष्णु को अवतार राम महान अज भगवान ॥

सीता जगत् जननी रमा तेहि हारि चह्यो कल्यान।
निज कर्म फल पायो सकल रिपु गुन्यो निज भगवान
यह लंक राज लह्यो विभीषण राम भक्त प्रभाव।
हम भई सकल अनाथ सुरपति लह्यो परम उराव॥
पिय तोर समर निहारि मरन विचार कीन्हे आज।
मोहिं एक फल दीस्यौ विमल सो कहत नहिं कछु लाज॥
तेरे जियत पिय तोर पुर नहिं लख्यो लषण खरारि।
उनके लखत उनको सदन पिय लियो समर प्रचारि॥
प्रिय विष्णु कर तीरथ समर कुल सहित तुम तन त्यागि।
अपवर्ग लीन्ह्यो वर्ग युत यतनी भली मोहिंलागि॥
मंदोदरी यहि भांति करतिं विलाप रावण रानि।
कहि वचन परम कृपाल बोध्यो जाइ जानकि जानि॥
तहँ राम शासन मानि रावण अनुज जाय निकेत।
रचि कनक विमल विमान ल्यायो माल्यवान समेत॥
रावण शरीर उठाय तेहि धारि जाय मरघट भूमि।
दीन्ह्यो मुखानल विधि सहित चहुँओर तेहि छण घूमि॥
करि अग्निहोत्र विधान दाह्यो दिय तिलांजुल न्हाय।
आयो विभीषण राम जहँ तिय वृन्द नगर पठाय॥

दोहा—दशरथ लाल रसाल तर, लषण सुकंठ समेत।
बैठे कवच उतारि जिमि, शांत धूम को केत॥

छन्द।

तहँ सकल देव निहारि समर सुरारि रावण नाश।
वरणत रघूत्तम सुयश निज निज किये गवन अवास॥
वरणत त्रिविक्रम सरिस विक्रम राम को तेहि काल।
अघटित पराक्रम कीन मरकट विकट वीर विशाल॥

तिमि लपण को हनुमान को पौरुख परम अनुराग।
सुग्रीव और विभीषणहु जो मंत्र दिय बड़भाग॥
करनी सकल वानरन को सीता पतिव्रत धर्म।
वरणत चले मुनि सिद्ध चारण देव है कृत कर्म॥
पुनि पुनि मिलत सुग्रीव पुनि पुनि परत लपणहुँ पाय।
पुनि पुनि चटक मरकट कटक मटकत नटत सुख पाय॥
रघुवंश मणि तहँ जानि अवसर कह्यो लपण बोलाय।
कीजै विभीषण राजतिलक सुलंक नगर सिधाय॥
याते अधिक नहिं काज कछु मन रह्यो शोच महान।
सो करहु पूरण आज लछिमन जाय सहित विधान॥
सुनि नाथ शासन लपण गवने लै विभीषण संग।
शाखा मृगन दीन्ह्यो निदेश विचारि तिलक प्रसंग॥
चारिहु दिशन ते सिंधु जल ल्यावहु तुरंत कपीश।
रघुराज करत विभीषणै अब आजु लँक अधीश॥
वानर तुरन्तहि जाय ल्याये सिंधुजल घट चारि।
सौमित्र सिंहासन विभीषण दियो तहँ बैठारि॥
पढ़ि वेद मंत्र स्वतन्त्र लछिमन कियो तेहि अभिषेक।
कीन्ह्यो तिलक पुनि राज को भेटी जो टेकी टेक॥
पुनि सकल वानर त्यों निशाचर कियो तेहि अभिषेक।
पुनि ब्रह्म राक्षस ताहि सींच्यो यथा शास्त्र विवेक॥
तहँ माल्यवानादिक निशाचर वृद्ध वृद्ध सिधारि।
कीन्ह्यो विभीषण नजरि मणिगण लंकनाथ उचारि॥
जे संग गवने चारि मंत्री तिन विभीषण बोलि।
कीन्ह्यो अमात्य प्रधान मंत्री धर्म शासन खोलि॥
उपहार को लै सकल धन सौमित्र संग सिधारि।

आयो विभीषण आसु प्रमुदित जहँ सुकंठ खरारि॥
प्रभु के परयो अरविन्द पद परदक्षिणा दै चारि।
उठि नाथ लीन लगाय उर अहि भोग भुजनि पसारि॥
उपहार दीन्ह्यो जो विभीषण लियो रघुकुल राज।
कृत काज मान्यो आपने को आज सहित समाज॥
तहँ भालु गो लाँगूर मरकट श्याम तेज शरीर।
तेहि बार बारहिं बारकिय जयकार लखि रघुवीर॥
तहँ खड़ो सनमुख पवनसुत गिरि सरिस परम विनीत।
परशंसि तेहि रघुवंश मणि कह वचन परम पुनीत॥
जो होय कपि अब उचित तौ लै लङ्कनाथ निदेश।
तुम जाहु लङ्कहि आसु वैदेही बसति जेहि देश॥
मेरी लषण की सुगल की कहियो कुशल भरि पूरि।
आवहु कुशल लै तासु इत नहिं वेलम कीजो भूरि॥
रावण निधन संग्राम गाथा दिजे मोरि सुनाय।
लै जानकी संदेश आय सुनाय देहु त्वराय॥
सुनि पवन सुवन प्रमोह भरि प्रभु जलज पद शिरनाय।
लै लंकनाथ निदेश आसुहि चल्यो चौगुन चाय॥
निशिचर बतावत पंथ आगे चलत कपिहि डेरात।
प्रविसत नगर निशिचर निहारत शीश नावत जात॥
दोहा—कुशल प्रश्न पूछत सकल, लखि हनुमत मुसक्यात।
भाषत सकल निशाचरन, सुखी हमारे भ्रात॥

चौपाई।

आयो अशोकवाटिका जबहीं। जनकसुता कहँ देख्यो तबहीं॥
अति मलीन तन धृत शिर वेनी। जिमि शशि रेख सघन घन श्रेनी॥
वृत्त। शिसु पाके तर माहीं। बैठी चित ध्यावति प्रभु काहीं॥

रोहिणी लही ग्रह पीरा। धोर एक मलिन तन चीरा॥
मूल महँ विगत अनन्दा। चहुँकित बैठिराक्षसी बृन्दा॥
राक्षसीं पवनकुमारा। बोलीं वचन भरी भय भारा॥
वा कपि लंका जोई जारा। यही प्रथम वाटिका उजारा॥
हि जानकी को हनुमाना। ह्वै विनीत कर जोरि सुजाना॥
रिहिं ते कपि कियो प्रणामा। कहि जय जयजगदंब ललामा॥
लख्यो जानकी जब हनुमानै। महा मोदमन किय अनुमानै॥
प्रीतम विजय समर महँ पाये। मोहिं बोलावन कोश पठाये॥
यतना मन उपजत सिय काहीं। रही हर्ष वश तन सुधि नाहीं॥

दोहा–सिय समीप हनुमंत चलि, बार बार शिर नाय।
अमृतधार जिमि मृतक मुख, दीन्ह्यो वचन सुनाय॥

चौपाई।

देवि कुशल कोशलपुर राजा। कुशलकोशपतिसहित समाजा॥
कुशल लपण देवर तुव माता। लह्यो विजै करि शत्रु निपाता॥
रावण कुंभकरण घननादा। मरे समर महँ पाय विपादा॥
रावण कुंभकरण प्रभु मार्‍यो। लपण इन्द्रजित समर सँहार्‍यो॥
हने बलीमुख बली सुरारी। कपिपति अंगदादि बलभारी॥
यदपि विभीपण कियो सहाई। यदपि लपण कीन्हे सेवकाई॥
हम सब लरे यदपि करि जोरा। यदपि कियो प्रभुविक्रम घोरा॥
तदपि विजै कर सत्य विचारा। कारण पतिव्रत धर्म तुम्हारा॥
मैं जो कह्यों मृपा तुम मानो। सोइं बात अब सत्य देखानो॥
कह्यो कृपाल मातु संदेशा। सुनिये मुदित त्यागि अन्देशा॥
तुव हित नैन नींद नहिं लीन्ह्यो। महा सेतु सागर पर्द कीन्ह्यो॥
कियो दशानन हनि प्रन पूरा। तुव दरशन बिन तनमुख झूरा॥

दोहा–लपण कोशपति अंगदहु, भाष्यो तोहि प्रनाम।

मातु मृषा नहिं मानियो, भयो पूर मनकाम ॥

चौपाई।

और यक सुख देत सुनायो। लंका राज विभीषण पायो।
सुनि कपि वचन विदेह कुमारी। आनंद मगन न गिरा उचारी।
गद्गद कंठ नयन वह नीरा। शोचति अब लखिहौं रघुवीरा।
कह्यो पवनसुत वचन वहोरी। उतर न देहु विनै सुनि मोरी॥
जस तस कै पुनिसुरतिसम्हारी। बोली वाणि विदेह कुमारी॥
राम विजै सुनु पवनकुमारा। भयो मोर जीवन रखवारा॥
को क्रुपाल रघुनाथ समाना। सहि कलेश राख्यो मम प्राना॥
कंतविजय सुनिसुधिसव विसरी। क्षण भरिवदनवात नहिं निसरी॥
लगी विचारन मैं मन माहीं। देहुँ काह मारुतसुत काहीं॥
नाथ विजय भाष्यो मोहिंआई। तेहि वदलो नहिं परै देखाई॥
आजु देहुँ जो तीनिहुँ लोका। तऊ लगत लघु उपजत शोका॥
रतन कनक महि केतिक वाता। ऋणी रहब यह भलो देखाता॥

दोहा—सुनि वैदेही के वचन, बोल्यो पवनकुमार।
जोरि पाणि सन्मुख खड़ो, वहत नयन जलधार॥

चौपाई।

कह्यो मातु जस मों कह वानी। तोहि विन को असऔरवखानी॥
कहहु मातु मैं काह न पायों। आजु धरणि महँ धन्य बनायों॥
मैं कपि जाति न कौनहु लायक। दीन जानि जनकियरघुनायक॥
...पर ऋणी कहसि तै माता। लाभ कौन अब अधिकदेखाता॥
...ज त्रिलोकि विभूती। सके कौन कपि करि करतूती॥
...वते वड़ सुख पायो। राम विजै चलि तोहि सुनायो॥
पवनसुवन की वानी। बोली गिरा कृपा रससानी॥
...लखित हनुमाना। मति अष्टांग सहित मतिमाना॥

...य॥
...आती।
...वृन्न। ...

जगत प्रशंसन लायक कीसा। धर्मधुरंधर धरणी दीसा ॥
बल सौरज निगमागम ज्ञाना। विक्रम बुद्धि प्रकाश महाना ॥
तेज क्षमा घृति विनय बड़ाई। दिन दिन दून दून अधिकाई ॥
जीवहु चिर अनंद सन्दोहू। करहिं सदा रघुनायक छोहू ॥

दोहा–होय जौन तेरे मनै, सो मांगै कपि आज ।
तोहिं देत लघु लगत सव, तीन लोक की राज ॥

चौपाई।

सुनत वचन कह पवनकुमारा। अंब एक अभिलाष हमारा ॥
प्रथमहि खबरि लेन जब आयों। इन राक्षसिनि देखि दुख पायों ॥
कहे वचन इन तोहिं कठोरा। तरजन भरसन कियो न थोरा ॥
कहे अनेकन अनुचित बाता। सो सुधि करिअवनहिंसहिजाता॥
ये पापिनी अभागिनि पूरी। धर्म वसत इन से बहु दूरी ॥
देवि देहु मोहिं यह वरदाना। मारौं इनहिं यथा मनमाना ॥
मूठी चरण करन करि घाता। करौं घसीटि घसीटि निपाता ॥
अस रिसि लागत दांतन काटौं। पेट फारि केशन उतपाटौं ॥
मम सन्मुख इन तोहिं दुखदीना। सहि न जात अपराध जो कीना॥
सुनि कपि वचन विदेह कुमारी। बोली वचन दया करि भारी ॥
सुनु कपि इन कर नहिं अपराधा। परवश दियो मोहिं अतिवाधा॥
जस जस रावण शासन दीन्हा। तस तस तेहिडरिइनसबकीन्हा ॥

दोहा–परवश मह अपराध नहिं, वसीं हमारे पास ।
शरणागत मानौ इन्हैं, दीवो उचित न त्रास ॥

चौपाई।

दीन हीन गुनि रावण दासी। कौन खोरि इन कर बलरासी ॥
निज अभाग कर मैं फल पायों। प्रभु पद छोड़ि शत्रु गृहआयों ॥
अब दशकंठ नाश सुनि काना। हम सो [illegible] त्राना ॥

केहि विधि कहौं पुत्र तुम मारहु। अब इनको अपराध विसारहु॥
सुनहु पवनसुत कथा पुरानी। वेद पुराण प्रथित जग जानी॥
मधु फल खान हेत यक भालू। रह्यौ विपिनि विचरतयक
वाघ विलोक ऋक्षभय पाई। चढ्यो एक ऊंचे तरु जाई॥
तहँ मधुफल बीनन हित कोई। आयो मनुज क्षुधावस सोई॥
देखि वाघ भय लहि तेहि कालू। सोइ तरु चढ्यो जहाँ रह भालू॥
कह्यौ वाघ तब ऋक्षहि काहीं। हम तुम बसहिं एक वन माहीं॥
यह हमरो तिहरो अरि पूरा। देहु गिराय जाहु तुम दूरा॥
ऋक्ष कह्यो तब धर्म विचारी। यह शरणागति लई हमारी॥

दोहा--अस अधर्म नहिं और जग, जस शरणागत त्याग।
भक्षण खोजहु और थल, यह मम पाछे लाग॥

चौपाई।

अस कहि रह्यो ऋक्ष तहँ सोई। कह्यो मनुज सो मृगपति सोई॥
जब हम जाव और थल माहीं। भक्षण करी भालु तोहिं काहीं॥
ताते तुम गिराय यहि देहू। दै भक्षण मोहिं गमनहु गेहू॥
ना तो दोहुन खाय हम लेहैं। ऋक्ष संग नहिं तोहि बचैहैं॥
व्याध वाघ भय मानि तुरंता। दियो गिराय ऋक्ष बलवंता॥
गिरयो न भालु भूमि महँ आई। शाखा पकरि चढ्यो तरु जाई॥
कह्यौ भालु सो वाघ बहोरी। अबहूँ नहिं समुझतिमतितोरी॥
दे गिराय लखु मानुष खोरी। कह्यो भालु विनती सुनु मोरी॥
यह शरणागत भयो हमारे। हम याके अपराध विसारे॥
अति अधर्म शरणागत त्यागा। यदि गिराय किमि होउँ अभागा॥
कैसेहु नाहिं तजिहों मैं येही। चल्यो वाघ भोजन संदेही॥
स मनुज कहँ पर पहुंचाई। लग्यो विपिनि विचरणसुखपाई॥

दोहा--ताते पवनकुमार तुम, गुनि शरणागत धर्म॥

दीन जानि कीजै दया, करहु न अनुचित कर्म ॥

चौपाई।

नहिं पर पाप पेखि उपकारी। करहिं अधर्म धर्म धुर धारी॥
साँकर समय परे मतिमाना। रक्षहिं धर्म जतन करि नाना॥
ते जग भूषण संत सुजाना। शरणागत हित त्यागत प्राना॥
पापी अथवा पुण्यमान कोउ। यद्यपि वध के योग होय सोउ॥
सज्जन करत न कोहु पर बाधा। को अस जो न करै अपराधा॥
क्रूर पापरत बहु संसारा। हिंसा करिकै करहिं अहारा॥
तिन कर रीति संत जन देखी। करहिं आप नहिंपाप विशेखी॥
मोर सकोच मानि हनुमाना। अभैदान दै राखहु प्राना॥
जनकसुता के वचन सोहाये। सुनि हनुमंत बहुरि शिर नाये॥
कह्यो वचन धनि धनि जगदंबा। तै शरणागत धर्म अलंबा॥
राम प्रिया मिथिलेश कुमारी। अपने योगहि गिरा उचारी॥
देहु रजाय मातु अब जाहूँ। जहाँ लषण अरु कोशल नाहूँ॥

दोहा–पवनसुवन को गमन गुनि, कह्यो विदेह कुमारि।
कौन घरी प्यासे नयन, ह्वै हैं सफल निहारि॥
पवनसुवन बोल्यो वचन, नहिं विलंब जगदंब।
पिय पूरण शशि वदन लखि, पैहौ मोद कदंब॥
अस कहि सीता चरण युग, वंदि सुखद हनुमंत।
चल्यो तुरंत अनन्त सुख, आयो जहँ भगवंत॥

चौपाई।

प्रभु पद प्रमुदितकियो प्रणामा। सीय खबरि पूछी तहँ रामा॥
कह्यो पवनसुत जोरे हाथा। सिय दरशन चाहति रघुनाथा॥
जेहि हित सागर सेतु बँधायो। जेहि हित रावणसकुल नसायो॥
सो सिय को प्रभु दरशन देहू। मेटहुविरह जनित संदेहू॥

महा दुखित मिथिलेश कुमारी। वहत विलोचन वारिज वारी
जवलों प्रभु पद दरशन पावति। यक क्षण युगसमसीयवितावति।
देखि तासु दरशन की आसा। मैं वोध्यौं तेहि दै विश्वासा॥
सुनि हनुमन्त वचन रघुराई। लागे ध्यान करन दुख छाई॥
नीरज नैन नीरभरि आये। शोकित श्वांसहि लेत अघाये॥
दीठ नीचकरि देखत धरनी। मानहुँ करत वृथा निज करनी॥
दंड द्वैक लगि राम विचारी। कह्यौ विभीषण काहिं हँकारी॥
जाहु सखा अति आसुहि लंका। नहवावहु सीतहि विन शंका॥

दोहा—अति उत्तम भूषण वसन, सकल भाँति पहिराइ।
ल्यावहु मेरे निकट सिय, अव वेलंव विसराइ॥

चौपाई।

सुनि प्रभु शासन निशिचरराजा। चल्यो लंक भरि मोद दराजा॥
अंतहपुरहि प्रविसि लंकेशा। सरमै त्रिजटै दियो निदेशा॥
सकल राक्षसिन लेहु वोलाई। द्रुत अशोक विनिका महँ जाई॥
सीतहि करवावहु अस्नाना। पहिरावहु भूपण पट नाना॥
अस कहि निशाचरिनमतिवाना। किय अशोक वाटिका पयाना॥
देखि जानकी को मतिधामा। कियो विभीपण दंड प्रणामा॥
कर अंजुल करि धरि शिर माहीं। वोल्यो वचन विनीत तहाँहीं॥
जननि करहु मज्जन यहि काला। पहिरहु भूपण वसन रसाला॥
करि उत्तम अंगन अँगरागा। शिविका चढ़ि गमनहुवड़भागा॥
पुरुप सिंह विजयी पति काहीं। लखहु वीच वानर दल माहीं॥
यहि विधि शासन दियरघुनायक। प्रभु रजाय करिवो तोहि लायक॥
सीता सुन्यो वभीपण वानी। वोली वचन कछुक अकुलानी॥

दोहा—विन मज्जित तन प्रभु वदन, लखन चहौं लंकेस।
अवे न मज्जन नाथ किय, मोको परत भदेस॥

चौपाई।

कह्यो विभीषण सुनु जगदंबा । तोरे एक राम अवलंबा ॥
कही जौन प्रभु सो अब कीजै । राम रजाय शीश धरि लीजै ॥
एवमस्तु तहँ कहि वैदेही । उठी करन मज्जन पिय नेही ॥
तहँ दैत्य दानव की कन्या । सिय मज्जन करवाई धन्या ॥
लेप्यो उत्तम अँग अँगरागा । पहिराई पट भरि अनुरागा ॥
दिव्य विभूषण पुनि पहिराई । षोडश विधि शृंगार बनाई ॥
मणिन जाल की रुचिर पालकी । चढ़ी सुता मिथिला भुवाल की॥
उभय ओर करि बंद वोहारा । लई उठाइ निशाचर दारा ॥
सहसन निशिचर संग सिधारे । कनक छड़ी झरझर कर धारे ॥
यहि विधि लै सीतै लंकेशा । गयो जहाँ रविवंश दिनेशा ॥
ध्यानावस्थित लखि रघुराई । कह्यो विभीषण सीता आई ॥
विमनस कही राम अस वानी । ल्यावहु सिय मेरे ढिग आनी ॥

दोहा–सुनि प्रभु शासन लंकपति, कह्यो बैन गोहराय ।
ल्यावहु आसुहि पालकी, वानर भीर हटाय ॥

चौपाई।

प्रतीहार निश्चर बलधामा । पहिरे पाग फेट अरु जामा ॥
कनक छड़ी झरझर धरि पानी । फरक फरक बोले असबानी ॥
तहँ सीता के दरशन काना । झुको चलोमुख बीर समाना ॥
निश्चर कपिन हटावत जाहीं । घुमहिं कीश दरशन ललचाहीं ॥
भयो शोर संघर्ष महाना । जिमि उठहि पवन सिंधु लहराना॥
कसमस पर्यो कपिन को भारी । लछिमन गये प्रभु कह्यो पुकारी ॥
येवानर मोहि प्राण पियारे । जिन सहाइ दशकंधर मारे ॥
जो कोउ वानर बीर हटाई । सो मोर कर दंडहि पाई ॥
सुनहु विभीषण हला हनारे । दरशहु निज गनमन अपारे ॥

करैं शांत यह शोर महाना । बोले बहुरि सरुख भगवाना
भये लाल रघुलाल नैन दोउ । चितै न सकतरामसन्मुखकोउ
भन्यो राम दाहत दृग ऐसे । बाज झपट खग कुल चुप जैसे ॥

दोहा—नहिं घर नाहिं पट कोट नाहिं, नहिं भूपति सतकार ।
नारिन को आवरन यक, होत धर्म संचार ॥

चौपाई ।

विपति परे अरु रोगहु माहीं । होय स्वयंबर युद्ध जहाँहीं ॥
यज्ञ होत अरु होत विवाहू । परदा करै न तिय नरनाहू ॥
करै न खट थल तिय आवरना । देखे तियहि दोष नहिं वरना ॥
मो पर परी विपत्ति महानी । लाज काज भल परै न जानी ॥
सीता पग सो इत चलि आवै । लंका बहुरि पालकी जावै ॥
सुनत राम के वचन कठोरा । भये विषादित कपि चहुँ ओरा ॥
कहहिं लषण कपिपति हनुमाना । कौन चरित्र करहिं भगवाना ॥
प्रभु शासन सुनि जनक कुमारी । तजि शिविका पैदर पगु धारी ॥
चली विभीषण संग सोहाई । लाजन सों निज अंग छिपाई ॥
लखि लखि बानर करहिंप्रणामा । यहि हित भयो कहहिं संग्रामा ॥
लाजन मनहुँ गड़ी महि जाती । मंद मंद पिय के ढिग आती ॥
चलत विभीषण के सिय पीछे । ताकति पति मुख नैन तिरीछे ॥

दोहा—बोले राम पुकारि कै, लखहु सीय कपि वृन्द ।
जाके हित निज जीव की, तजे छोह छल छन्द ॥

चौपाई ।

लषण सुकंठ और हनुमाना । अंगद आदि वलीमुख नाना ॥
किये जानकी चरण प्रणामा । प्रभु भय वश ठाढ़े थिर ठामा ॥
परिगो सिगरी सेन सनंका । काह करत प्रभु कहहिं सशंका ॥
मन्द मन्द चलि जनककुमारी । कीन्ह्यो प्रभुहि प्रणाम निहारी ॥

पिय मुख लगी लखन सुकुमारी। जैसे चंद चकोर सुखारी ॥
सो सुख सिय को किमिकहिजाई। विस्मय हर्ष सनेह बड़ाई ॥
प्रभु चितयो नहिं सिय की ओरा। कह्यो न आउ बैठु यहि ठोरा ॥
भय संदेह सहित वैदेही। देखत रघुपति वदन अनेही ॥
करि साहस बैठी ढिग जाई। घन समीप जनु तड़ित सोहाई ॥
निकट निहारि राम वैदेही। बोले जो सुनि दुख नहि केही ॥
जीत्यौं मैं रिपु समर प्रचारी। जो कछु करन हतो निरधारी ॥
भयो कोप अब शान्त हमारा। ताते सुनु सिय मोर विचारा ॥

दोहा-सफल भयो मम श्रम सकल, विक्रम दियो देखाय।
मोर अनादर मोर रिपु, परत न जगत लखाय ॥

चौपाई।

प्रण पूरण कीन्ह्यो रिपु मारी। जो तोहिं हरचो लोकदुखकारी॥
भयो अभाग्य जनित जो दोषू। दिह्यों मिटाय सकल करिरोपू ॥
नहिं क्षत्री जो निज अपमाना। नाशै करि विक्रम विधि नाना ॥
कुरी करी करनी हनुमाना। कूद्यौं शतयोजन बलवाना ॥
जारचो लंक निशाचर मारचो। सुग्रीवहु सनेह निरधारचो ॥
कियो विभीषण पूर सहाई। बंधु त्यागि मम शरण सिधाई ॥
बांदर प्राण दिये हित मोरे। यह सब भयो न सिय हिततोरे॥
मैं जीत्यों रिपु निज बलहीते। जिमिअगस्त्य दक्षिण दिशिजीते॥
कीन्ह्यो सकल हेत मैं अपने। निज हित जानु सीय नहिंसपने॥
तोहिं रिपु भवन वसत सुख रीते। जनकसुता दशमास व्यतीते ॥
करौं कौन विधि ग्रहण तुम्हारा। परघर वसत गहत को दारा ॥
जिमि रोगी दृग लागत दीपा। तिमि सीता मोहिंलगतिप्रतीपा॥

दोहा--ताते गवनै जानकी, जहाँ होय मन तोर।
रह्यो विजै लगि हेत मम, अब नहिं कारज मोर ॥

चौपाई।

पीतम वचन सुनत सुकुमारी। मृगी सरिस ढारति दृग वारी
करति विचार मनहिं मन सीता। केहि अपराध भइउँ अपुनीता।
उत्तर देन चहति वैदेही। कहिनसकति कछु कंत सनेही॥
जस तस कै धीरज धरि सीता। बोली वचन होत मन भीता॥
कहहु नाथ जस तस मैं नाहीं। तुव प्रताप रक्षिता सदाहीं॥
नाथ चरण तजि कहँ अब जैहौं। तुम्हरे देखत देह दहैहौं॥
पाणिग्रहण अवसर पितु हमहीं। बोल्यो वचन सुनावत तुमहीं॥
बिनु पतिजियब उचितनहिंतोहीं। सीते दुरयश दिहे न मोहीं॥
ताते जियब उचित नहिं मोरा। तुमहिं त्यागि जैहौं केहि ठोरा॥
लषण रहे दृग ढारत वारी। तासों कह्यो विदेह कुमारी॥
देहु लषण अब चिता बनाई। यह कुरोग कर यहै उपाई॥
लषण लख्यौ रघुपति की ओरा। कहिनसकत प्रभु भयभरिभोरा॥

दोहा–प्रभु अभिमत निज जानि तहँ, सैनन दीन रजाय।
अनुशासन गुनि लषण तहँ, दीन्ह्यौ चिता बनाय॥

चौपाई।

बैठ अधोमुख प्रभु तेहि ठामा। मानहुँ कालरूप भय धामा॥
कियो प्रदक्षिण पिय वैदेही। गई चिता ढिग राम सनेही॥
दियो लगाय अगिनि तहँ बाला। उठी विशाल ज्वाल विकराला॥
बोली वचन विदेह कुमारी। सुनहु सबै साखी असुरारी॥
तन मन वचन राम यदि मोरे। लख्यौं न और नैनहूं कोरे॥
तौ पावक रखै यहि काला। साखी सकल देव मुनि माला॥
असकहि प्रविसीअगिनि मझारी। लियो अगिनि जिमिपिताकुमारी॥
प्रगट्यौ पावक रूप पुनीता। बैठायो निज अंकहि सीता॥
हाहाकार मच्यो चहुँओरा। कियो राक्षसी आरत शोरा॥

रोवन लागे लषण पुकारी। वानर सेन व्यथा भै भारी ॥
मारुतसुत कपिपति लंकेशा। मुरछित गिरे भूमि तेहि देशा ॥
सीता पतिव्रत धर्म प्रकासा। पाय द्विगुणकिय ज्वाल हुतासा॥

दोहा-चढे विमानन देव सब, कीन्हे हाहाकार।
प्रविसत पावक में सियहि, भयो दुखित संसार ॥

चौपाई।

तहँ महेश वासव करतारा। आये जहँ रघुवंश कुमारा ॥
धनद वरुण यमलोकन पाला। आये सहित सकल सुरमाला ॥
प्रभु पद पंकज शीश नवाये। अति आतुर अस बैन सुनाये ॥
यह चरित्र का कियो अनूपा। भूलि गयो धौ अपनो रूपा ॥
तुम नारायण लक्ष्मी सीता। जगत जननि यह परम पुनीता॥
नित्य अहै सनबंध तुम्हारा। दशमुख तकत होत जरिछारा॥
ज्वाल माल मधि राजकुमारी। दया न उपजतिनैन निहारी ॥
कीन्ह्यो अति अनर्थ यहि काला। देखि चरित यह भुवन विहाला॥
को जानै गति नाथ तिहारी। जग सिरजक पालक संहारी ॥
तव बोले प्रभु मृदु मुसक्याई। हमको तौ अस परै जनाई ॥
हम दशरथ महिपाल कुमारा। जो हम होंहि सो करहु उचारा॥
बोल्यो वचन तहां मुखचारी। तुम नारायण हो भुज चारी ॥

दोहा-अस कहि कीन्ह्यो नाथ को, अस्तुति विमल वनाय।
सो नहिं भाषा मैं कियो, पढतहि पाप पराय ॥

यह थल मा।

ततोहिदुर्मनारामः श्रुत्वैवंवदतांगिरः।
दध्यौ मुहूर्त्तं धर्मात्मा वाष्पव्याकुललोचनः ॥
ततोवैश्रवणोराजा यमश्चामित्रकर्शनः।
सहस्राक्षोमहेन्द्रश्च वरुणश्च परंतपः ॥

षडर्द्धनयनः श्रीमान्महादेवो वृषध्वजः।
कर्त्तासर्वस्यलोकस्य ब्रह्मब्रह्मविदांवरः॥
एतेसर्वेसमागम्य विमानैःसूर्यसन्निभैः।
आगम्यनगरींलंकामभिजग्मुश्चराघवम्॥
ततःसहस्ताभरणान् प्रगृह्यविपुलान्भुजान्।
अब्रुवंस्त्रिदशश्रेष्ठा राघवंप्राञ्जलिस्थितम्॥
कर्त्तासर्वस्यलोकस्य श्रेष्ठोज्ञानवतांविभुः।
उपेक्षसेकथंसीतां पतंतींहव्यवाहने॥
कथंदेवगणश्रेष्ठमात्मानंनावबुध्यसे।
ऋतधामावसुःपूर्वं वसूनांत्वं प्रजापतिः॥
त्रयाणामपिलोकानामादिकर्तास्वयंप्रभुः।
रुद्राणामष्टमोरुद्रः साध्यानामपिपंचमः॥
अश्विनौचापितेकर्णौ चन्द्रसूर्यौचचक्षुषी।
अन्तेचादौचमध्येच दृश्यसेत्वंपरंतप॥
उपेक्षसेचवैदेहीं मानुषःप्राकृतोयथा।
इत्युक्तोलोकपालैस्तैः स्वामीलोकस्यराघवः॥
अब्रवीत्रिदशश्रेष्ठान्रामोधर्मभृतांवरः।
योहंयस्ययतश्चाहं भगवांस्तद्ब्रवीतुमे॥
इतिब्रुवाणंकाकुत्स्थं ब्रह्माब्रह्मविदांवरः।
अब्रवीच्छृणुमेराम सत्यंसत्यपराक्रमम्॥
भवान्नारायणोदेवः श्रीमांश्चक्रायुधोविभुः।
एकशृङ्गीवराहश्च भूतभव्यसपत्नजित्॥
अक्षरंब्रह्मसत्यंच मध्येसत्येचराघव।
लोकानांत्वंपरोधर्मो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः॥
शार्ङ्गधन्वाहृषीकेशः पुरुषःपुरुषोत्तमः।

अजितःखड्गधृग्विष्णुः कृष्णश्चैववृहद्बलः ॥
सेनानीर्ग्रामणीःसर्वं त्वंबुद्धिस्त्वंक्षमोदमः।
प्रभवश्चाप्ययश्चत्व मुपेन्द्रोमधुसूदनः॥
इन्द्रकर्मामहेन्द्रस्त्वं पद्मनाभोरणांतकृत्।
शरण्यंशरणंतंत्वामाहुर्दिव्यामहर्षयः॥
सहस्रशृङ्गोवेदात्मा शतशीर्षोमहर्षभः।
त्वंत्रयाणांहिलोकानामादिकर्तास्वयंप्रभुः॥
सिद्धानामपिसाध्यानामाश्रयश्चासिपूर्वजः।
त्वंयज्ञस्त्वंवषट्कारस्त्वमोंकारःपरात्परः॥
प्रभवंनिधनंवाते नविदुःकोभवानिति।
दृश्यसेसर्वभूतेषु ब्राह्मणेषुचगोषुच॥
दिक्षुसर्वासु गगने पर्वतेषुवनेषुच।
सहस्रचरणःश्रीमाञ्छतशीर्षस्सहस्रदृक्॥
त्वंधारयसिभूतानि पृथिवींसर्वपर्वतान्।
अंते पृथिव्याःसलिले दृश्यसेत्वंमहोरगः॥
त्रीँल्लोकान्धारयन्राम देवगन्धर्वदानवान्।
अहंते हृदयंराम जिह्वादेवी सरस्वती॥
देवारोमाणिगात्रेषु ब्रह्मणा निर्मिताःप्रभो।
निमेषस्तेस्मृतारात्रिरुन्मेषोदिवसस्तथा॥
संस्कारास्तेऽभवन्वेदानैतदस्तित्वयाविना।
जगत्सर्वंशरीरंते स्थैर्यंतेवसुधातलम्॥
अग्निःकोपःप्रसादस्ते सोमः श्रीवत्सलक्षणः।
त्वयालोकास्त्रयःक्रांताःपुरास्वैर्विक्रमैस्त्रिभिः॥
महेन्द्रश्चकृतोराजा बलिंबध्वामहासुरम्।
सीतालक्ष्मीर्भवान् विष्णुर्देवःकृष्णःप्रजापतिः॥

वधार्थंरावणस्येह प्रविष्टो मानुषींतनुम् ।
तदिदंनःकृतंकार्यं त्वयाधर्मभृतांवर ॥
निहतोरावणोराम प्रहृष्टोदिवमाक्रम ।
अमोघंदेववीर्यंते नतेमोघाःपराक्रमाः ॥
अमोघंदर्शनंराम नचमोघस्तवस्तवः ।
अमोघास्तेभविष्यंति भक्तिमंतस्तुयेनराः ॥
येत्वांदेवध्रुवम्भक्ताःपुराणंपुरुषोत्तमम् ।
प्राप्नुवंतिसदाकामानिहलोकेपरत्रच ॥
इममार्षस्तवंदिव्यमितिहासंपुरातनम् ।
येनराःकीर्तयिष्यंति नास्तितेषांपराभवः ॥

दोहा—पंचवटी महँ जानकी, राम रजायसु पाय ।
पावक माहँप्रवेश किय, छाया रूप टिकाय ॥
सो छाया वपु सिय मिल्यो, प्रगट्यो रूप प्रधान ।
सो पावक धरि अंक महँ, निकस्यो अति हरषान ॥

चौपाई ।

कह्यो राम सों करत प्रणामा । लेहु शुद्ध प्रभु आपनि वामा ॥
जगत जननि यह विगत बिकारा । धर्मरूप कीरति आकारा ॥
कृपा हेत रावण घर जाई । दियो परम पद सकुल पठाई ॥
कीरति करुणा भक्ति तुम्हारी । जानि जानकी लेहु खरारी ॥
तेहि अवसर प्रमुदित रघुराई । सीतै लिये निकट बैठाई ॥
सुर मुनि कपि कीन्हे जयकारा । वरषे कुसुम देव वहु वारा ॥
विधि महेश पावक कहँ रामा । बोले वचन महा मतिधामा ॥
जानत रह्यों यदपि सब भाँती । सियहि न दूषणतातिनाजिकाती ॥
जग अपवाद भीति उरलाई । पावक दियो प्रवेश कराई ॥
कछु कारण औरहु त्रिपुरारी । जानहुँ आप मलिन [illegible] ॥

तब बोले महेश करतारा। जा‍ने को प्रभु चरित तुम्हारा ॥
आज पूजिगै आश हमारी। तुम ढिग लखी विदेह कुमारी ॥
दोहा-राजहु राज समाज नित, सहित सीय रघुराज।
छायो सुयश दराज जग, भये देव कृत काज ॥

चौपाई।

अस कहि भये मौन करतारा। तब बोले पुनि शंभु उदारा ॥
उर विशाल कोसक भरतारा। भुज प्रलंब गज कर मद हारा ॥
सकल देव कारज निरधारा। धर्म धुरंधर धरणि विहारा ॥
मेट्यो तीन लोक अँधियारा। निज यशकियोभुवन उजियारा ॥
समर दुरासद रावण मारा। करि प्रणतिलक विभीपणसारा ॥
देवकाज सब नाथ सम्हारा। दुखितभरतअबअनुजतुम्हारा ॥
अवधि टरे जो अवध सिधारा। को पुनि भरत प्राण रखवारा ॥
कौशिल्या के प्राण अधारा। कैकेयी के शोक अपारा ॥
दुखित सुमित्रा अति यहिबारा। देहु मातु सुख राज कुमारा ॥
करु सनाथ रघुकुल परिवारा। लीजै शीश राज कर भारा ॥
करि वसुधा महँ धर्म प्रचारा। थापन करि रघुकुल संसारा ॥
अश्वमेध करिकै बहु बारा। दे महि देवन धन पट हारा ॥
विहरि यकादश वर्ष हजारा। गवनहु नाथ विकुंठ अगारा ॥
[illegible] जे [illegible] अवध को, होई तिलक तुम्हार।
[illegible] करन हित, ऐहों लै निज दार ॥

लषण सीय युत करहु प्रणामा। अब पूरच्यो दशरथ मनकामा।
पितै निहारि लषण रघुराई। लषण सीययुत आगे आई॥
कहि निज नाम राम अभिरामा। अनुज सीययुत कियो प्रणामा॥
देखि राम नृप त्यागि विमाना। दौरच्यो तनक रह्योनहिं भाना॥
लियो लाल कहि अंक उठाई। बार बार दृग वारि बहाई॥
सीता लषण राम कहँ राजा। बैठायो लहि मोद दराजा॥
पुनि पुनि मिलनसुबाहु पसारो। चूमि वदन शिर सूंघि सुखारी॥
गदगद कंठ बहत दृग बारी। कह्यो अवधपति गिरा उचारी॥

दोहा—यदपि विभव वासव सरिस, लह्यों स्वर्ग मैं आय।
तदपि न लागत नीक कछु, तुम बिन तोरि दोहाय॥

चौपाई।

जौन केकयी वचन उचारा। सो नहिं विसरतमोहिं बिसारा॥
तापस वेष विभूति निरासी। चौदहि वर्ष राम वनवासी॥
केकय वचन बाणकी गाँसी। हिय तेंनिकसत नाहिंनिकासी॥
आयों इन्द्रलोक ते धाई। सुनिकै रावण राम लराई॥
कुशल जानकी लषण समेतू। तुमहिं लख्यौं पायों सुख सेतू॥
कह्यो शक्र मोहिं सकल बुझाई। परब्रह्म जानहु रघुराई॥
हरन हेत अवनी कर भारा। तुव घर लियोविष्णु अवतारा॥
करन हेत रावण संहारा। भूप विष्णु तव भयो कुमारा॥
पै मोहिं लागहु वैसहि रामा। पेपत प्रीति पूर प्रति यामा॥
लगहु छोहरा सम रघुनायक। यदपि भुवनपालकगति दायक॥
पूरण भयो मनोरथ आजू। तुमहिं कुशल देख्यों रघुराजू॥
तुव तारित मैं स्वरगहु माहीं। लह्यो इन्द्र अरधासन काहीं॥

दोहा—अष्टावक्र मुनीश जिमि, पिता कहो लो नाम।
तारयों जिमि तारयो हमहिं, तुमहुँ राम अभिराम॥

चौपाई।

आज कौशिला मोदित होई। तुमहिं अवधअभिषेकित जोई॥
करि बनवास शत्रु संहारी। जैहौ कोशल नगर सुखारी॥
जे देखिहैं तुमहिं नर नारी। तेई भाग्यवंत जगभारी॥
सुनहु राम त्रिभुवन भरतारा। होई जब अभिषेक तुम्हारा॥
धर्म धुरंधर धीरज सिंधू। करुणाकर दीनन के बंधू॥
तुमहिं देखिहौं भरत समेतू। तब जैहौं पुनि आप निकेतू॥
चौदहि वर्ष भये बनवासी। मोरि प्रतिज्ञा पालेहु खासी॥
सीता लषण सहित रघुराई। मम हित सह्यो कलेश महाई॥
भयो राम पूरण बनवासा। रावण हनि यश कियो प्रकासा॥
कियो देव कारज सब भाँती। गावत कीरति देव जमाती॥
अवधि माहिं अब अवध सिधारहु। अपनो राजतिलक सुत सारहु॥
करहु बंधुयुत कोशल राजू। राजहु कोटि बरिस रघुराजू॥

दोहा—पिता वचन सुनि मोद भरि, कह्यो जोरि कर राम।
देहु मोहिं वरदान यक, बन्यो होय जो काम॥

चौपाई।

मम बनवास गवन के काला। कह्यो केकयी को महिपाला॥
करहुँ तोर सुत संयुत त्यागा। रघुकुल विपिनि दवारि अभागा॥
यह तुव शाप केकयी काहीं। भरत सहित लागै अब नाहीं॥
भरतै जननि सहित महराजा। करहु अनुग्रह देव दराजा॥
सुनि सुत वचन भूप मुसक्याई। लीन्ह्यो रामहि हिये लगाई॥
कह्यो वचन अबतुम बिन आना। करै कौन अस वचन बखाना॥
तज्यौ केकयी कर मैं द्रोहा। तुमहिं देखि लहि मुद संदोहा॥
बहुरि लषण को मिलि अवधेशा। चूमि वदन दीन्ह्यो उपदेशा॥
कीन्ही सकल राम सेवकाई। लहहु धर्म फल सुयश बड़ाई॥

सुनहु सुमित्रा नंदन प्यारे। सेवक धर्म सकल निरधारे
किय प्रसन्न रामहिं सब भांती। तोहि विलोकि भइशीतलछाती
राम कृपा सुधरहिं दोउ लोका। तोहिं कौन अब जग महँ शोका॥

दोहा—सकल लोक हित में निरत, राम विष्णु अवतार।
तीनि लोक वासव सहित, भजत राम प्रतिवार॥

चौपाई।

सिद्ध सुरर्षि महर्षि अनंता। पूजहिं राम जानि भगवंता॥
परब्रह्म अक्षर अविनासी। माया जासु राम की दासी॥
देवन हृदय निरंतर वासी। सकल प्रकाशन केर प्रकासी॥
राम परन्तप परम प्रभाऊ। अज अनादि अति सरल सुभाऊ॥
तासु चरण सेवन तुम कीन्हा। सहजहिसकल सुकृतफल लीन्हा॥
सावधान ह्वै सेवन कीजै। सदा राम शासन शिर लीजै॥
राम सीय पितु मातु तिहारे। मानेहु सब दिन सरिस हमारे॥
नृप लखि कर जोरे वैदेही। कहे वचन सुतवधू सनेही॥
सुनहु पुत्रिका जनक कुमारी। किहेहु राम सेवन सुखकारी॥
कह्यो कटुक कछु जो रघुराई। दिह्यो ताहि सपनेहुं बिसराई॥
तुव कीरति हित अगिनि प्रवेशा। करवायो रघुवंश दिनेशा॥
किहेहु अबहुँ पति सों नहिं माना। सपनेहुँ कोपन होय महाना॥

दोहा—यथा पतिव्रत धर्म तैं, सीता दियो निवाहि।
तथा जगत में दूसरो, नारि निवाही नाहि॥

चौपाई।

कसन होय मिथिलापति बेटी। देवी सकल तोर हैं चेटी॥
किह्यो अकाम राम सेवकाई। राम मातु पितु गुरु सुत भाई॥
सुयश सनेह प्रभाव बड़ाई। जैहो अनपाई तुम पाई॥
तेरो यश जग सेत बँधायो। मैथिल कुल महिमा अति पायो॥

अस कहि दशरथ भूप सुजाना। जनकसुता शिर कारि अघ्राना॥
लषण राम मिलि वारहिं वारा। ढारत दृग आनँद जलधारा॥
दिव्य विमानहि भयो सवारा। कियो प्रणाम राम वहु वारा॥
कीन्ह्यो प्रणति लषण शिर नाई। कहे जोरि कर तहँ दोउ भाई॥
त्यागेहु नहिं सुधि पिता हमारी। तुव प्रताप पायों वड़वारी॥
कियो प्रणाम श्वशुर कहँ सीता। आशिष दीन्ह्यो भूप पुनीता॥
चढ़ि विमान दशरथ महराजा। गवन्यो शक्र सदन कृत काजा॥
गावत चले सकल गंधर्वा। नाचत चलीं अप्सरा सर्वा॥

दोहा-कपिपति अंगद मरुत सुत, जामवान लंकेश।
करि दशरथ दरशन तहां, भये सुखी तेहि देश॥

चौपाई।

शक्रलोक जब गे अवधेशा। कह्यो राम सों तब अमरेशा॥
लोकपाल हम रचे तुम्हारे। दरशन होत अमोघ हमारे॥
करौं कौन तुम्हरी सेवकाई। पूरण ब्रह्म आप रघुराई॥
कह्यो शक्र सों प्रभु मुसक्याई। यह वरदान देहु सुरराई॥
जे वानर मम हित तन त्यागे। मारि शत्रु मरिगे नहिं भागे॥
छोड़ि कलत्र पुत्र घर आये। सकल काज मम हित विसराये॥
जियें सकल वल ओज निधाना। रह्यो जासु यश प्रथम प्रमाना॥
कह्यो देवपति सुन रघुराया। अति दुरलभ जीवन मृत काया॥
तुम समरथ जग अंतरयामी। चहहु सोकरहु ईश अज स्वामी॥
कीश भालु जागिहैं अपारा। सोवत मनहुं भये भिनसारा॥
जस के तस ह्वै हैं कपि भालू। नीरुज निरव्रन कृपा कृपालू॥
जहँरहैं कपि भालु तुम्हारे। होहिं सरित सर सजल अपारे॥

दोहा-जेहिं वन वानर भालु तुव, करिहैं वास कृपाल।
तहँ फ़लिहैं फलिहैं विटप, पाय अकाल सुकाल॥

चौपाई।

असकहिसुरपति अतिहियहरषे। कपिदल उपर सुधाजल बरषे
उठे भालु कपि जस के तैसे। नीरुज निरव्रन सोवत ऐसे।
एकहि बार किये जयकारा। मनहुँ महोदधि तज्यो करारा॥
मिलहिं परस्पर बानर भालू। कहहिं कौन प्रभु सरिस दयालू॥
तहाँ समिटि सब सुर यकबारा। करि प्रणाम अस बचन उचारा॥
गवनहु नाथ अवधपुर काहीं। बिदा देहु बानर घर जाहीं॥
जनकसुतै आस्वासन कीजै। बिरह जनित दुख समन करीजै॥
धृतब्रत आरत भरत निहारहु। जाय अवध मातन दुख दारहु॥
दुखित शत्रुहन शोक नशावहु। राजतिलक आपन करवावहु॥
अस कहि सुरकरिप्रभुहिप्रणामा। चढ़ि बिमान गवने निज धामा॥
प्रभु कीन्ह्यौ सुरपति प्रणामा। गयो इन्द्र पुर पूरण कामा॥
भये अस्त दिनकर तेहि काला। आई निशा उदित उडुमाला॥

दोहा--राम लषण कपि सैन युत, कीन्ह्यौ सुखित निवास।
जोरि पाणि बोल्यौ बचन, आय बिभीषण पास॥

चौपाई।

मज्जन करहु भ्रात युत रामा। पहिरहु भूषण वसन ललामा॥
लेपन करहु अंग अँगरागा। तैसे वैदेही बड़भागा॥
सुर गंधर्व असुर की कन्या। मज्जन करवावहिं जग धन्या॥
यह बिभूति रघुनाथ तिहारी। होय कृतारथ है न हमारी॥
सुनत बिभीषण बचन रसाला। हिय हरषित हँसि कह्योकृपाला॥
ो पर नेह अछेह तुम्हारा। करहु जो शासन होय हमारा॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना। जांबमान आदिक बलवाना॥
र वीरन को नहवावहु। बिबिध वसन भूषण पहिरावहु॥
करहु सब कर सतकारा। यह सब पूजन जानु हमारा॥

सदा सुखोचित कपिकुलराजा । सह्यो दुसह दुख मेरे काजा ॥
मैं नहिं मज्जेहुँ सो सुनु कारण । कीन्हे भरत मोर व्रत धारण ॥
राजकुमार वड़ो सुकुमारा । सखा भरत मोहि प्राणपियारा ॥
दोहा–तेहि विन मज्जन किमि करहुँ, धरहुँ वसन निज अंग ।
किमि भूषण पहिरों सखा, तजि न सकौं तेहिं संग ॥

चौपाई ।

जैहौं अवध जो अवधि विताई । मिली न जियत प्राणप्रियभाई ॥
सीता लषण सकल परिवारा । मोहि भरत सम नाहिं पियारा ॥
जो मम करन चहहु व्यवहारा । तौ पहुँचावहु अवध अगारा ॥
विषम पंथ दूरी अति देशा । बीतत अवधि होत अंदेशा ॥
कह्यो विभीषण तब कर जोरी । सुनहु नाथ विनती यह मोरी ॥
अवध एक दिन महँ पहुँचैहौं । नाथ सकल संदेह मिटैहौं ॥
है यक पुहपक नाम विमाना । भानु समान प्रकाश महाना ॥
जीति कुबेर दशानन ल्यायो । मन अनुसारहि चलन त्वरायो ॥
सो विमान हाजिर तुव हेतू । मोरि विनय सुनु कृपानिकेतू ॥
जो मोपर करियत अति छोहू । जो राखहु सौहृद संदोहू ॥
तौ सिय लषण सहित रघु राई । बसौ दिवस द्वै युत कपिराई ॥
जो कछु पूजन करहुँ तुम्हारा । सैन सहित अवधेश कुमारा ॥
दोहा–करि कृपाल मोपर कृपा, सबै ग्रहण करि लेहु ।
दीन जानि मोहिं मान दै, कीजे सफल सनेहु ॥

चौपाई ।

चरण शीश धरि नाथ मनाऊं । कौन योग्यता तुम्हैं दिखाऊं ॥
यह संपति के के हित लागी । जो जोर्‌यो दशकंठ अभागी ॥
सखा विनय सुनि दीनदयाला । वोले जल भरि नयन विशाला ॥
कीन्ह्यो सखा सकल सतकारा । तुम्हैं उऋण मैं युग न हजारा ॥

दै सलाह पुनि कियो सहाई । आपन तन धन प्राण लगाई
को अस करी मित्र उपकारा । यथा विभीषण सखा हमारा
कहंलगि कहौं न कहे सिराई । भरत विभीषण नेह वड़ाई ।
भरत प्राण अब हाथ तिहारे । करहु उचित जो मनहिं विचारे॥
भरत समीप वसत मन मोरा । तुम सों चलत सखा नहिं जोरा॥
चित्रकूट महँ जब हम आये । घर ते भरत मनावन धाये ॥
कौशिल्या केकई सुमित्रा । आई सब मम मातु पवित्रा ॥
सखा निषादराज मम प्यारा । भरत शत्रुहन संग सिधारा ॥

दोहा–अवध नगर वासी सकल, चित्रकूट मह आय ।
मोहिं मुरकावन हेत तहँ कीन्ह्यो कोटि उपाय ॥

चौपाई ।

मोहिं ले चलन भरतअभिलाषी । मैं निज पिता प्रतिज्ञा राषी ॥
भरत कह्यो कछु देहु अधारा । मैं पादुका दियों तेहिं वारा ॥
भरत दियो पुनि वचन सुनाई । ऐहौ जो प्रभु अवधि विताई ॥
तो मोहिं नाथ जियत नहिं पैहौ । यह कलंक केहि भाँति मिटैहौ ॥
भरत सनेह सकोच तुम्हारा । मम मन भ्रमत न पावत पारा ॥
भरत मरत मरिहैं सब माता । होई रघुकुल केर निपाता ॥
कहि नहिं सकत सकोच तिहारे । वनत मोर अब अवध सिधारे ॥
सखा क्षमहु यह चूक हमारी । कीन्ह्यो न कोप सनेह विचारी ॥
विनती करहुँ सखा कर जोरी । लाउ विमान जानि रुचि मोरी ॥
भयो सिद्ध सिगरो मम काजा । कीन्ह्यो तोहिं लंक महराजा ॥
अब भरतहु कर राखहु प्राणा । तोर निहोर मोर कल्याणा ॥
यहि विधि राम विभीषण वाता । करत परसपर भयो प्रभाता ॥

दोहा–राम वचन कल्याण सुनि, लंकराज मतिमान ।
जाय लंक [illegible] कामग पुष्प विमान ॥

सवैया ।

कंचन के मणि मंडित भौन बनी फटिकैं फरसैं मनहारी ।
सर्व अराम के धाम अनेक लसैं वर राजत गोपुर भारी ॥
सेत पताके भले फहरैं जिनमें अरुझात प्रयात तमारी ।
श्रीरघुराज भये अति राजी सिया युत पुष्प विमान निहारी ॥
किंकिनि जाल बँधे चहुँओर भई धनि घंटन की घहनारी ।
त्यौंहीं अनेकन भाँति मणीन की छाय रही तेहि देश उज्यारी॥
जोरि उभै कर जाय विभीषण राम सों कीन्ह्यो विनै सुखकारी।
कोशलराज सुनो रघुराज विमान तयार करीजे सवारी ॥

दोहा—काह उचित अब नाथ मोहिं, दीजे उचित निदेस ।
जामें परे न मोहिं कछु, दोऊ लोक भँदेस ॥

चौपाई ।

सुनत सखा के वचन कृपाला । मिले दौरि युग भुजन विशाला ॥
कही विभीषण सों मृदु बानी । सखा अहो तुम बड़े विज्ञानी ॥
हमहूं कहहिं उचित अस आजू । पूजहु सैन सहित कपिराजू ॥
हमरे तुम्हरे हित कपि नाना । त्यागे समर परम प्रिय प्राना ॥
बसन विभूषण धन बहु जाती । पूजहु सिगरो कपिन जमाती ॥
सखा शक्ति अनुसार तुरंता । पूजहु सब बानर बलवंता ॥
तुमहिं कृतघ्न दोष नहिं लागी । अबनो अनुपम कीरति जागी ॥
रतन कनकसंपति विधिनाना । जोरे सकल काल मतिमाना ॥
दान काल भूपति जो पावै । देत चित्त नहिं बार लगावै ॥
सबसों करै प्रीति परतीती । जो जस होय यही नृप रीती ॥
[illegible] सुमन चूक नहिं गुन गनछोना ॥
होन दे [illegible] सबपर नित मासे ॥

सैना करत विश्वास नहिं, होत पराजै अंत ॥

चौपाइ।

सुनत विभीषण रघुपति बैना। नाय माथ नाथहि मुद ऐना
गयो लंक महँ खोलि भँडारा। पट भूषण ऐंचाय अपारा।
अर्ब खर्ब चामीकर मुद्रा। जो संचित किय दशमुख क्षुद्रा॥
वसन विभूषण सकल भराई। आयो जहां कीश समुदाई॥
कपिपति अंगद अरु हनुमाना। नील सकल कपि सैन प्रधाना॥
बली बलीमुख और प्रधाना। यथा योग सब कहँ सनमाना॥
जोरि पाणि करि बिनै बड़ाई। लंकराज दीनता देखाई॥
पट भूषण सबकहँ पहिराये। वानर बली देव सम भाये॥
पट भूषण कपि ऋक्षहु पहिरे। नचै नगर महँ भीतर बहिरे॥
हेम हार अंबर जरतारी। दियो विभीषण कपिन पुकारी॥
जो जस रह्यौ ताहि तस दीन्हा। निसिचर नाथ योग्यता चीन्हा॥
मरकट कटक न कोउअसबाकी। लेत लेत नहिं मति जेहिथाकी॥

दोहा—निशिचर नाथ उदारता, देखि कपिन व्यवहार।
लज्यौ वित्तपति चित्त महँ, कहि धनि अनुज हमार॥

चौपाई।

पूजित सैन सकल लखि रामा। भये प्रमोदित पूरण कामा॥
सखा सराहन लगे कृपाला। तुम सम को उदार यहि काला॥
बरषे देव गगन ते फूला। कहि जयजय रघुपति सुखमूला॥
अवसर जानि भरत सुधि कैकै। वैदेही लछिमन सँग लैकै॥
पुष्प विमान चढ़े रघुराई। राजासन बैठे छबिछाई॥
खड़े चहूँकित कीश अपारा। कपिपति अंगद पवनकुमारा॥
ऋक्षराज अरु राक्षस राजा। नील सैनपति सहित समाजा॥
बली बलीमुख मुख्य निहारी। बोले मंजुल वचन खरारी॥

कीन्ह्यो मोर मित्र कर काजा । करि विक्रम हनि शत्रु समाजा ॥
तुमसे उऋण कबहुँ हम नाहीं । जाहु सबै निज निज घर काहीं ॥
कपिपति निशिचरपतिचितचाहे। हित कारज मित्रता निवाहे ॥
किसकिंधै कपिनायक जाहू। बसौ लंक महँ निशिचर नाहू ॥

दोहा—भालु कीश निज निज भवन, मोदित करहिं पयान ।
संग हमारे अवधपुर, चलहिं एक हनुमान ॥

चौपाई।

मोर प्रताप प्रभावहि पाई । सकैं न धरपन करि सुरराई ॥
शंभु स्वयंभु मानिहैं भीती । लोकपाल कोउ सकै न जीती ॥
मांगि विदा हमहूं सबपाहीं । करहिं पयान अवधपुर काहीं ॥
अजर अमर रहियो सुख बोरे । प्राणहुँ ते प्रिय हौ सब मोरे ॥
सुनत सुखद रघुनायक बानी । दुखी सुखो भे कपि बलखानी ॥
कहिन सकत तहँ प्रभुहि डेराई । देखन चहत अवध सँग जाई ॥
तहँ निशिचर वानर कुल भूपा । कहे वचन कर जोरि अनूपा ॥
सकल वीर चाहत अस स्वामी । तुम सबके हौ अंतरयामी ॥
लखैं अवधपुर संग सिधाई । राजतिलक देखैं सुख छाई ॥
लौटि आसु निज निज घर ऐहैं । जीवत भरि रघुवर यश गैहैं ॥
निरखि राजधानी मनहारी । होब सकल सब भाँति सुखारी ॥
कौशिल्या पद वंदन कैकै । ऐहैं भवन कृतारथ ह्वैकै ॥

दोहा—शाखामृग अस कहत सब, हमरेहु अस अभिलाप ।
उचित होइ सो करहु प्रभु, क्षमहु चूक तजि माप ॥

चौपाई ।

संग चलब अभिलाप विचारी । कह्यो कृपानिधि वचन पुकारी ॥
गवनहु संग सुकंठ हमारे । सहित वीर वानर बलवारे ॥
चलहु विभीषण संग त्वराई । लखहु राजधानी मनभाई ॥

यह अभिलप तहि रह्यो हमारा । लाज विवश नहिं वचनउच
सुनि प्रभु वचन कीश सुखपाये । मानहुँ मरत अमृत मुख ना
चढ़े सकल कपि पुहुपविमाना । निशाचरेन्द्र कपीन्द्र
कपि अनंत कोटिन तहँ बैठे । मानहुँ मोद महोदधि पैठे
कोउ कपि लह्यो न कछु संकेता। पुहुपविमान प्रभाव निकेता
राजत राज सिंहासन रामा । वाम भाग जानकी ललामा।
दहिने लसत लपण रणधीरा । कपिपति अंगदादि कपि वीरा॥
वाम भाग निशिचर कुल भूपण । सन्मुख हनुमत वैठ अदूपण ॥
कपि समाज राजत रघुराजा । मनहुँ देवमंडल सुरराजा ॥

दोहा—जानि समै शुभ राम तहँ, शासन दियो सुजान ।
अवध और उत्तर दिशा, गवनैपुहुप विमान ॥

चौपाई ।

राम रजाय पाय हरपाना । गगन पँथ ह्वै चल्यो विमाना ॥
मची तहाँ किंकिनि झनकारी । घंटा नाद भयो अति भारी ॥
सुरकुसुमावलि झरी लगाये । जय रघुवंश वीर मुख गाये ॥
गयो गगन जब ऊँच विमाना । देख्यो समर भूमि भगवाना ॥
कह्यो जानकी सों मुसक्याई । समर भूमि देखौ मन भाई ॥
वानर राक्षस समर महाना । यहि थल भयो घोर घमसाना ॥
यहि थल मैं रावण कोमारचौं । यहि थल कुंभकरण संघारचौं ॥
यहि थल नीलहु हत्यौं प्रहस्ते । धूम अक्ष वध हनुमत हस्ते ॥
हन्यौं सुखेनहु विद्युन्माली । अंगद भयो विकट संघाली ॥
यहि थल देवर लपण तुम्हारा । शक्रजीत कहँ समर सँहारा ॥
यहि थल मारि गयो अतिकाया । लपण ब्रह्मशिर वाण चलाया ॥
निरूपाक्ष अरु महापार्श्व भट । हने अकंपन कपिवर चटपट ॥

दोहा—देवांतकहु नरांतकहु, अरु त्रिशिरा वलवंत ।

रण उनमत्त विमत्त भट, कुंभ निकुंभ दुरंत ॥
वज्रदंत मकराक्ष भट, अरु दुरधर्ष अकंप।
शोणिताक्ष जूपाक्ष दोउ, अरु रसना जेहि संप ॥
ब्रह्मशत्रु आदिक सबै, जे निशिचर वलवान।
मारे सकल कपीश भट, तोरे हेत निदान ॥

चौपाई।

यहि थल मंदोदरी विलापा। कीन्ह्यो निहत कंत लहि तापा ॥
मैथिलि लखहु महोदधि घोरा। उठैं तरंग तुंग करि शोरा ॥
यह देखहु मयनाक महीधर। जोविश्राम भयो हनुमत कर ॥
यह उत्तर तट सागर हेरो। कियो प्रथम वानरदल डेरो ॥
इतहीं मिल्यो विभीषण आई। किह्यो लंकपति मानि मिताई ॥
सेतुतबंध प्रद पुण्य ललामा। थाप्यों महादेव यहि ठामा ॥
तीरथ महा पाप कर हारी। सेतबंध यह नाम उचारी ॥
इन शिवकर रामेश्वर नामा। पूरण करत मनुज मनकामा ॥
महा पवित्र पुण्य थल प्यारी। करहु प्रणाम महेश निहारी ॥
सीता किय प्रणाम कर जोरी। चल्यो विमान सवेग वहोरी ॥
किष्किंधा के उपर बेमाना। गयो गगन महँ वेग महाना ॥
तब सिय कह्यो सुनहु रघुराई। तारादिक तिय लेहु बोलाई ॥

दोहा—और वलो वानरन की, लीजे नारि बोलाय।
चहौं राजधानी लखन, वानरीन लै जाय ॥

चौपाई।

प्रभु कह उचित कही तैं सीता। तारादिक तिय चलै पुनीता ॥
अस कहि राम विमान उतारयो। सुग्रीवहि अस वचन उचारयो ॥
तारा रुमा आदि तिय जेती। चलैं राजधानी मम तेती ॥
सुखी सुनत सुग्रीव तुरंता। गयो भवन वानर वलवंता ॥

बोल्यो वचन सुनहु प्रिय तारे । गवनहुँ अवध वेमान स
जनक लली वानरी बोलाई । ह्वैहौ शुचि सिय दरशन प
अवध जाय देखव अभिषेका । कौशिल्यादिक रानि अनेक
सुनि तारा लहि मोद अपारा । बोलि वानरिनि करि शृंगारा
परी जाय सिय चरणन माहीं । भई विशोक देखि प्रभु काहीं
उठ्यो विमान गगन महँ धायो । तव सीता कहँ राम वतायो
यहि थल में मार्यों सिय वाली । वस्यों प्रवर्षन पादप माली।
ऋष्यमूक गिरि लखै जानकी । जेहि छवि घनदामिनिसमानकी॥

दोहा--इहाँमिल्यो सुग्रीव को, भयो सखा कपि मोर ।
कीन्ह्यो प्रण वाली वधन, लखे विभूषण तोर ॥

चौपाई।

यह पंपासर विपिनि सोहावन । शवरी को आश्रम अति पावन
इत कबंध जेहि योजन वाहू । काटि भुजा मारे हम ताहू।
रावण सों इत लर्‌यो जटाई । तुव हित तन परिहरि गति पाई॥
पंचवटी लखु जनककुमारी । गोदावरी सरित सुखकारी॥
लखै परणशाला नृप बाला । आयो इतै हरन दशभाला॥
यह अगस्त आश्रम सिय देखै । इतै सुतीक्षण कुटी परेखै॥
चल्यो सवेगहि व्योम विमाना । तव सरभंगाश्रम दरशाना॥
कह्यो राम इत वासव आयो । मुनि तन तजि परधामसिधायो॥
लखै जनक दुहिता पुहकरनी । मारि विराध गाड़िदिय धरनी॥
निवसँह इतै अत्रि अनुसुइय । कियो न कोहु परकवहुँ असुइया॥
चित्रकूट लखु प्राण पियारी । जेहि दरशत अघ रहत न भारी॥
लखै विमल मंदाकिनि सरिता । दरशत अघ हरि आनँदभरिता॥

दोहा--मोहिं मुरकावन भरत इत, आयो मातु समेत ।
चित्रकूट चितवत चतुरि, चित्त चैन अति देत ॥

चौपाई।

चित्रकूट नाके रघुबीरा । लख्यो यमुन मरकत मय नीरा॥
अति उतंग नभ कियो विमाना । पर्‍यो देखि तीरथ परधाना ॥
गंग यमुन संगम सित श्यामा । तीरथराज सकल सुखधामा ॥
कह्यो राम सिय लखे प्रयागा । करु प्रणाम संयुत अनुरागा ॥
पुनि उत्तर लखि गिरा उचारी । शृंगबेरपुर दीसत प्यारी ॥
सखा निपादराज प्रिय मोरा । ह्वै वसत विरह दुख घोरा ॥
पुनि उत्तर लखि पाणि पसारी । बोले राम त्वरा करि भारी ॥
लखु लखु लखु मिथिलेशकुमारी । राजधानि मम परै निहारी ॥
देखु अवधपुर महल उतंगा । देखि परति सरयू सित रंगा ॥
करु अवधहि प्रणाम वैदेही । पुरी पियारि लगति नहिं केही ॥
लपण जानकी संयुत रामा । करत भये सानंद प्रणामा ॥
निशिचर वानर भे सब ठाढ़े । अवध लखन उर आनँद बाढ़े ॥

दोहा–चामीकर मंदिर विमल,चमकि रहे चहुँ ओर ।
मनु कनकाचल शृङ्ग बहु, तुंग उठे रविओर ॥

चौपाई।

किये कीश निशिचरौ प्रणामा । राम राजधानी छविधामा ॥
कोशलपुरी प्रशंसन लागे । मरकटनिशिचर अतिअनुरागे ॥
पेखि प्रयागविमान उतारे । प्रभु वेणी मज्जन पगु धारे ॥
सीय लपण युत मज्जन कीन्हे । विप्रन दान अनेकन दीन्हे ॥
भरद्वाज आश्रम प्रभु आये । मुनिहिंविलोकिचरणशिर नाये ॥
पूंछिकुशल पुनि कहमुनिकाहीं । है सुभिक्ष कोशलपुर माहीं ॥
हैं अरोग कोशलपुर वासी । औरहु कहौ कछुक तपरासी ॥
जीवत भरत अहैं की नाहीं । जननीजियति बसति पुर माहीं ॥
राम बैन सुनि मुनि मुसक्याई । बोले वचन मोद उरछाई ॥

शिर शासन धरि भरत तुम्हारा। नंदि ग्राम महँ वसत उ
जटाजूट शिर मलिन शरीरा। विरह कसित धारे यक चीरा
तुव पादुका पूजि दिन राती। भरत करतकछु शीतल छाती
दोहा—सकल कुशल तौ महल में, आप विरह दुखघोर।
पुरवासी अरु मातु सब, विकल फिरैं चहुँ ओर॥
लषण जानकी सहित तुम, दंडक प्रविसे राम।
निज पग सों परसत पुहुमि, पितु प्रण पूरण काम॥
रह्यो एक दिन सो दुखद, दुवनहुँ देखत शोक।
भयो एक दिन आज अब, आनँद भरयो त्रिलोक॥

चौपाई।

लषण सीय युत कुशल निहारी। भई पूरि अभिलाष हमारी॥
जौन भयो दुख सुख वन माहीं। तपवल सो मैं लख्यौं इहाँहीं॥
सीता हरन मरीच विनाशा। काट्यो जो कवंध भुज पाशा॥
सवरी दरश कपीश मिलापा। पंपासर जस कियो विलापा॥
वाली निधन प्रवर्षन वासा। सिय खोजन कपिगे दशआसा॥
कूदि सिंधु जिमि पवनकुमारा। हनि राक्षस लंका जिमि जारा॥
जिमि कीन्ह्यो नल सागर सेतू। अंगद गवन दाशस्य निकेतू॥
भयो समर कपि राक्षस केरा। यथा आप लंका गढ़ घेरा॥
कुंभकरण रावण घननादा। जेहि विधि मारि लह्यो जयनादा॥
जेहि विधि देव सवैं तहँ आये। सीतै अगिनि प्रवेश कराये॥
भयो विदित सव मोहिं रघुराई। तुव प्रताप मैं तपवल पाई॥
अस कहि भरद्वाज मुनिराई। पूज्यो प्रभुहिं सविधि मन लाई॥
दोहा—कह्यो जोरि कर मुनि वहुरि, करो आज विश्राम।
कालिह करहु कोशल नगर, गवन लषण सिय राम॥

चौपाई।

॰ तहँ रघुराई। वसे प्रयाग महा सुख पाई॥

भरद्वाज मुनि महा प्रभाऊ । कियो निमंत्रण सहित उराऊ ॥
फूली फरी तरुन समुदाई । सकल विपिनिऋतु अनऋतुपाई॥
भये कल्पतरु सकल समाना । हरित विपिनि वर भूरुह नाना ॥
बानर वर जस मन महँ भावैं । मन वांछित तुरंग सो पावैं ॥
रणी योजन तीनि प्रयंता । फरे अमृत फल विटप अनंता ॥
नदी वहन लागी पय धारा । दधि मधु घृत रस सिता अपारा॥
भे सुंदर मंदिर निरमाना । आवन लगीं अपसरा नाना ॥
कह्यो राम मुनि सों कर जोरी । तुम दूसर विधि अस मति मोरी॥
पै मम विनै सुनहु मुनिराई । जो मै चहों जाउँ सो पाई ॥
तुम आतिथ्य कर्म के व्याजू । प्रगटेहु वासव भोग दराजू ॥
सो विन भरत फीक सब लागे । अब नहिं दरषन को जिय मागे

दोहा–ताते और न करहु कछु, देहु यही वरदान ।
इत ते अरु मुनि अवध लगि, लखौं विपिनि हरियान ॥
फूलें फलें अनेक द्रुम, किशले होइ अनंत ।
नदी सजल निरमल विपुल, सरसी सर जल्जंत ॥

चौपाई ।

दो देहु मुनिवर वरदाना । कहहुँ अनुपुर कानिद पगाना ॥
एवमस्तु तहँ मुनिवर भाष्यो । प्रभु को सकल भाँ। कलगाल्यो ॥
लै प्रयाग ते अवध प्रयंता । पादप भये फल फलांता ॥
बोल्यो मुनि सुनिये रघुराई । जहँ रहिहैं बानर समुदाई ॥
फूलें फलें भूमिरुह नाना । देहुँ आनंद पद वरदाना ॥
चैत्र शुक्ल पंचमि है आजू । आये रघुपति नारथराजू ॥
चौदहि वर्ष अवधि गे पूजी । अवध जाहु अब बात न दूजा ॥
आजहि भरतहि खबरि जनावहु । कोसल नगर महा मुद छावहु ॥
प्रभु कह उचित कह्योमुनि ज्ञाता । अवहीं अवध जात कोउ ताता ॥

अस कहि सकल कपीश निहारा । तेज बुद्धि बल ओज विचारा ॥
सब विधि योग जानि हनुमाना । कहे वचन मंजुल भगवाना ॥
जाहु अवध केसरीकिशोरा । जहाँ बैठ भ्राता लघु मोरा ॥

दोहा–सुन्यो वचन तुम भरत के, देख्यौ सब व्यौहार ।
ताकी मन अभिलाष गुनि, पेख्यौ सकल अकार ॥

चौपाई ।

पूछि सकल वृत्तांतहि जानी । ताकी रुख लीन्ह्यो पहिचानी
होय राजलोभी यदि भ्राता । तौ न कह्यौ मम अवनि वाता
आसुहि आय खबरि मोहि देहू । मैं नाहिं तजिहौं भरत सनेहू ।
करिहौं और ठौर की राजू । होय भरत कोशल महराजू ।
यदपि भरत मम अगम सनेहू । कंकर ईंचे गिरत न गेहू ॥
तदपि पितामह पितु की राजू । पाय काहि नहिं गर्व दराजू ॥
भरत खबरि लै कहो सुजाना । जबलगि करौं न दूरि पयाना ॥
शृङ्गवेरपुर प्रथमहि जाहू । सखा निषादराज मम वाहू ॥
भरतहु ते अति मोहिं पियारा । मेरे विरह सहत दुख भारा ॥
मम आवनि की खबरि कहीजै । तासों पूछि अवध पथ लीजै ॥
पूछेहु भरतहु कर व्यवहारा । जाहु आसु अब पवनकुमारा ॥
सुनि प्रभुवैन अंजनीनंदन । चल्योअवध कहँकरि पदवंदन ॥

दोहा–भरद्वाजके अश्रमै, बसे निशा सो राम ।
चैत शुक्ल तिथि पंचमी, भो प्रयाग विश्राम ॥

चौपाई ।

प्रभु शासन शिर धरि हनुमाना । कियो पितापथ तुरत पयाना ॥
संगम यमुना गंगा केरो । नक्यो पवनसुत वेग घनेरो ॥
शृंगवेरपुर पहुँच्यो आई । लख्यो निषादराज तहँ जाई ॥
राम विरह अति कृशित शरीरा । जपत राम राघव रघुवीरा ॥

परन कुटी रचि सुरसारि तीरा। बैठ्यौ मलिन अंग यक चीरा ॥
बीतत आवनि अवधि विचारे। बाँधत मनहुँ तजन तन तारे ॥
रामसखा लखि मारुत नंदन। धरि द्विज रूपकियो अभिवंदन ॥
कह्यो वचन सुनु राजनिषादा। तजहु दुखदअब विपमविषादा ॥
अवधधनी प्रिय सखा तुम्हारे। सीता लषण सहित पगु धारे ॥
लंकनाथ कपिनाथ समेतू। हैं प्रयाग भरद्वाज निकेतू ॥
समर दुरासद दशमुख मारे। त्रिभुवन महँ कीरति विस्तारे ॥
अब नहिं होहु निषाद बिहाला। कालिह देखिहौं कौशलपाला ॥

दोहा–चैत शुक्ल तिथि पंचमी, रामसखा है आज।
अवधि चतुर्दश वर्ष की, गुनि आये रघुराज ॥

चौपाई।

आजु प्रयाग परचो दल डेरा। रामहिं देखिहौ होत सवेरा ॥
सुधा सरिस सुनिवचन निषादा। कढ्यौ कुटी ते त्यागि विषादा ॥
पुलकित तन आनंद अपारा। दोउ दृग वहतिवारि की धारा ॥
गदगद गर अस भन्यौ निषादा। को हौ तात दियो अहलादा ॥
कहाँ राम कहँ लपण जानकी। करी तात मम रक्ष प्रान की ॥
इन लोचन अरविंद विलोचन। लखिहौं कबै कहो दुखमोचन ॥
कह्यो पवनसुत सुनहु निषादा। ह्वै हौ भोरहि विगत विषादा ॥
अवधपंथ मोहिं देहु बताई। जाहुँ भरत पहँ आतुर धाई ॥
बीते अवधि अनर्थ महाना। भरत त्यागिहैं तुरतहिं प्राना ॥
अवधपंथ तब कह्यौ निषादा। जाहु करहु भरतहि अविषादा ॥
चल्यो पवनसुत शीश नवाई। ध्यावत भरत चरण मन लाई ॥
टरयो रामतीरथ चलि दूरी। निरख्यो सई सरित सुखपूरी ॥

दोहा–बहुरि वरूथी सरित लखि, उतरि गोमती आसु।
निरख्यो साल विशाल वन, विविध विहंग विलासु ॥

चौपाई

प्रजा सुकोशल देश निवासी। राम विरह अतिशै दुखरासी॥
अति समृद्ध नर नारि हजारन। राम विरहअतिमलिन अकारन॥
गगन पंथ कपि कुंजर धायो। नन्दिग्राम आरामहि आयो॥
लखी प्रफुल्लित फलित द्रुमाली। वहु रसाल अवली रस साली॥
फूले फले भरत परभाऊ। त्यागे काल अकाल सुभाऊ॥
अवध नगर ते इत यक कोसा। नंदिग्राम लखि भयो भरोसा॥
नंदनवन सम विपनि सोहावन। चारु चैत्ररथ प्रभा लजावन॥
विहरि रहे कानन नर नारी। पुत्र पौत्र युत भूपण धारी॥
धर्यो पवनसुत विप्र स्वरूपा। भरत कुटी कहँ चल्यो अनूपा॥
लख्यो दूर ते रघुपति भ्राता। राम प्रेम मूरति अवदाता॥
राम विरह जनु पारावारा। लहन चहत थकि पैरत पारा॥
कृश शरीर सुंदर अति दीना। जटा जूट शिर वदन मलीना॥

दोहा—जबते गवने राम बन, तवते कुटी बनाय।
वस्यो भरत अति नेम ते, मनहुं धर्म वपु आय॥

चौपाई।

राम राम मुख कहत निरंतर। विकल होत कबहूं परि अंतर॥
रहत सदा फल मूल अहारी। तापस वेष धर्मपथ चारी॥
ओढ़े वदन श्याम मृगछाला। पहिरे बलकल वसन विशाला॥
विसद ब्रह्मऋषि सरिस प्रकाशा। लगी राम आवन की आसा॥
प्रभु पादुका पूजि कुलदीपा। शासत धरनि सातहू द्वीपा॥
प्रेम नेम कीन्हे मन माहीं। टरे अवधि रहिहै तन नाहीं॥
स्वाति वुंद जिमि चहत पपीहा। ऐहैं नाथ लगी रट जीहा॥
चारिहु वरण भूमि तल त्राता। लख्यो पवनसुत रघुपति भ्राता॥
रघुपति सेवन धर्म स्वरूपा। मानहुँ धरनि धोर कर भूपा॥

बैठे सचिव पुरोहित ज्ञानी। धरे कषाय वसन मति खानी॥
यथा भरत तस प्रजा दुखारी। राम विरह कृश तन नर नारी॥
निरखि भरत कह पवनकुमारा। गदगद गर नहिं वचन उचारा॥

दोहा—जस तस कै धरि धीर कपि, पाय परम अहलाद।
राम बंधु जीवहु सदा, दीन्ह्यो आशिरवाद॥

चौपाई।

भरत प्रणाम कियो द्विज जानी। आकसमाद बह्यो दृग पानी॥
उमग्यो आकसमाद अनंदा। मानहुँ आगये रघुकुलचंदा॥
आवहु विप्र भरत अस भाषा। कहहुसकलआपनि अभिलाषा॥
जाय पवनसुत बैठ्योनेरे। सुखी भये भरतहु तेहि हेरे॥
पूज्यो भरत विप्र जिय जानी। पूछ्यो कहँ से आयो ज्ञानी॥
तहाँ पवनसुत वचनसुनाये। अतिप्रियखबर कहन इत आये॥
जेहि वियोग वश कृशित शरीरा। ध्यावहु जाहि नैन भरि नीरा॥
जासु विरह यह दशा तिहारी। चौदहि वर्ष जासु व्रत धारी॥
पूजहु जासु पादुका प्यारे। जेहि वियोग दृग वहत पनारे॥
सो कोशलपुर पाल कृपाला। आय प्रयाग वसो यहि काला॥
कुशल जानकी लषण समेतू। पूछ्यो कुशल भानुकुल केतू॥
मरकट कटक सहित कपिराजू। ल्याये संग अवध रघुराजू॥

दोहा—ऋक्षराज बहु ऋक्ष युत, युत निशिचर लंकेश।
ल्याये अपने संग महँ, अवध उदधि राकेश॥

चौपाई।

सहित वानरी सैन समाजू। आवत लषण सीय रघुराजू॥
तजहु शोक दारुण प्रभु भ्राता। देखिहौ काल्हि भानुकुल त्राता॥
रावण कुंभकरण रण मारी। सहित जानकी सुयश पसारी॥
शची सहित जिमि सुखी सुरेशा। आवत रघुकुल कमल दिनेशा॥

यतना सुनत भरत तेहि काला। भयो महा मुद मगन विहाला॥
गिरयो भूमि सुखदंग विसंगा। दंड द्वैक भूली सुधि अंगा॥
संभरि नैन ढारत जलधारा। रोमांचित तन राजकुमारा॥
गदगद कंठ बोलि नहिं आवत। हनुमत वदन लखतटक लावत॥
जस तस कै अस वचन सुनाये। को हौ तात कहाँ ते आये॥
अस कहि पुनिउठिभरतसुजाना। लियो लगाय हिये हनुमाना॥
सींच्यो नैनन नीर शरीरा। बोल्यो भरत बहुरि धरि धीरा॥
देव अहौ की मनुज गोसाईं। मेट्यो मीच शंभु की नाईं॥

दोहा—कह्यो वचन मोहिं परम प्रिय, राख्यो जात शरीर।
देहुँ धेनु यक लक्ष तोहिं, तदपि होत नहिं धीर॥

चौपाई।

देहुँ तोहिं शत नगर सोहावन। षोड़स कन्या वपु अति पावन॥
चन्द्रमुखी साभरण शरीरा। चितवत चैन चारु चय चीरा॥
तदपि लगति लघु का अब देहूँ। मैं नहिं उऋण तोहिं विधि केहूँ॥
बोल्यो हुलसि प्रभंजन नंदन। पुलकित भरत चरण करि वंदन॥
मैं कपि हौं केसरी किशोरा। रघुपति किंकर तैसहु तोरा॥
नाम मोर जानहु हनुमाना। पठयो तुव हित कृपा निधाना॥
धरयौं विप्र वपु परिचै हेतू। दिय निदेश अस रघुकुल केतू॥
सुनि रामानुज रामागमनू। मंगल मूल अमंगल दमनू॥
पुनिपुनिमिलिअसवचन उचारा। विधि आपर को मेटन हारा॥
यह उपख्यान भनहिं मुनि ज्ञानी। जियें वर्ष शत जो जग प्रानी॥
होय कबहुँ तेहि अवसि अनंदा। मिटै सकल दुख दारुण द्वंदा॥
भई कहाँ कपि राम मिताई। केहि अवसर केहि कारण पाई॥

दोहा—भरत वचन सुनि पवनसुत, कथा कहन सब लाग।
सचिव सहित कैकय सुवन, सुनत सहित अनुराग॥

चौपाई।

भयो राम कर जिमि वनवासा। प्रेम विवश जिमि नृपतन नाशा॥
सहित जानकी लषण सोहाये। जिमि प्रभु चित्रकूट महँ आये॥
राज त्याग पुनि आय पधारे। विनै वचन वहु भांति उचारे॥
पितु प्रण राखन हित रघुराई। गये न अवध नगर चित चाई॥
लै पादुका आप पगु धारे। सो सव विदित तुमहिं प्रभु प्यारे॥
अव आगे कर सुनहु चरित्रा। कियो जो कोशलनाथ विचित्रा॥
दंडकवन प्रविशे रघुराई। सहित जानकी लछिमन भाई॥
गये अत्रि अनसुइया आश्रम। मुनि सतकारकियोभरिसंभ्रम॥
पुनि निशिचर यक हन्यो विराधा। देत रह्यो वनवासिन वाधा॥
पुनि प्रभु लषण जानकी संगा। आये जहँ मुनीश शरभंगा॥
प्रभुहि पूजि मुनि तज्यो शरीरा। सुनासीर देख्यो रघुवीरा॥
गये सुतीछण आश्रम रामा। पुनि अगस्त के भवन ललामा॥

दोहा—लहि अगस्त उपदेश प्रभु, पंचवटी महँ जाय।
वसे जानकी लषण युत, अतिशै आनँद पाय॥

चौपाई।

तहँ रावण भगिनी चलि आई। जनक नन्दनी को डेरवाई॥
काट्यो लषण नाक अरु काना। भगी विलाप करत विधि नाना॥
खरदूषण त्रिशिरा वलवंता। आये अमरपवंत तुरंता॥
चौदह सहस निशाचर भारी। हत्यो राम द्रै दंड मझारी॥
कानन तहाँ दशानन आयो। हरि सीता कहँ लंक सिधायो॥
लख्यो गीधपति मारग माहीं। कीन्ह्यो पक्ष विगत खग काहीं॥
लै सिय जाय लंक महँ राख्यो। इत प्रभु दशकंधर पर माख्यो॥
दे गति गीधराज कहँ रामा। हन्यो कवंध महा वलधामा॥
पंपा चलि सवरी गति दीन्ह्यो। कपि पति सों सनेहपुनिकीन्ह्यो॥

मारचो वालिहि एकहि वाणा। कपि सुग्रीव भूप निरमाणा॥
वसे प्रवर्षण पावस काला। पठये कपि दश दिशा विशाला॥
मोहिं मुन्द्रिका दिय निज हाथा। पठयो दक्षिण अंगद साथा॥

दोहा—स्वयं प्रभा विल में गये, तृपावंत सव कोश।
सो पहुँचायो सिंधु तट, गवनी जहँ जगदीश॥

चौपाई।

तहँ संपाति गीध यक आयो। लंक माहिं जानकी वतायो॥
मैं कूद्यौं शतयोजन सागर। राम कृपा जस भयो उजागर॥
सिय सुधि लै वाटिका उजारी। अक्षकुमार आदिकन मारी॥
जारचौं लंकपुरी तेहि जामा। आयों कूदि पार तेहि ठामा॥
कियों निवेदन प्रभुहि हवाला। कियो राम सुनि कोप कराला॥
वांध्यो कपिन सिंधु महँ सेतू। तरे लपण युत कृपानिकेतू॥
तहँ वानर राक्षस संग्रामा। भयो पंचदश दिन वसुयामा॥
रह्यो सैनपति नाम प्रहस्ता। नील सैनपति कीन्ह्यौ अस्ता॥
वली इन्द्रजित अरु अतिकाया। कियोलपणविनशिरतिनकाया॥
कुंभकरण अरु रावण राजा। मारचो समर मध्य रघुराजा॥
आय देव सव अस्तुति कीन्हे। दशरथ भूप दरश पुनि दीन्हे॥
जगद प्रतीति हेत सिय काहीं। प्रविसायो प्रभु पावक माहीं॥

दोहा—ब्रह्मरुद्र शक्रादि सुर, सीय प्रशंसन कीन।
पावक लै निज अंक महँ, आय राम कहँ दीन॥

चौपाई।

लंका राज विभीषण पायो। आसुहि पुष्पविमान मँगायो॥
लपण जानकी संयुत रामा। चढ़िगे पुष्पविमान ललामा॥
मरकट कटकहु लियो चढ़ाई। सखा कपीश निशाचर राई॥
किसकिंधा विराम युग यामा। वसत प्रयाग राम अभिरामा॥

खबर देन हित मोहिं पठायो। कालिह अवधचाहतप्रभु आयो॥
भरत सुनी सब कथा सोहाई। पुलकित तनु दृग आँसु बहाई॥
चौदहि वर्ष विते कपिराई। आज नाथ सिगरी सुधि पाई॥
पर्यो नाथ कर कीर्तन काना। आजु कौन जग मोहिं समाना॥
भयो मनोरथ पूरण आजू। लखिहों कृपासिंधु कृतकाजू॥
कह्यो पवनसुत भरत सुजाना। पुण्य योग है कालिह महाना॥
ऐहें अवशि कालिह रघुराजू। करहु अलंकृत नगर दराजू॥
कह्यो भरत सुनु पवनकुमारा। ले चलु मोहिं जहँनाथ हमारा॥

दोहा—कह्यो वचन हनुमान तव, धरहु धीर मतिधीर।
सहित वानरो भीर ते, कालिह लखहु रघुवीर॥

छन्द हरगीतिका।

हरपत भरत तहँ बोलि रिपुहन कह्यो वचन उदार।
तुम जाहु आसुहि अवधपुर जहँ जननि दुखित अपार॥
दीजे खवरि रघुवंशमणि जानकी लपण समेत।
अब कालिह आवत अवधपुर कपिसेन युत सुखसेत॥
जे देव मंदिर होहिं पुर महँ ग्रामदेव समेत।
वाजन वजाय चढ़ाय चंदन पूजिये प्रभु हेत॥
वंदी विवुध मागध सुमति वैदिक महीसुर सर्व।
जे वंश वरणन करत वैतालिक सरिस गंधर्व॥
मंगलमुखी गावत सुमंगल विविध वाजनजाय।
अगुवान लेन सिधारहीं शृंगार सकल वनाय॥
सब मातु गवनहिं पालकी चढ़ि सहित सुभट वरूथ।
पुर नारि निकसहिं कनक घट शिर धारि यूथन यूथ॥
ब्राह्मण सुक्षत्री वैश्य शूद्रहु प्रजा अवध अपार।
देखन चलहिं रघुनाथ मुख राकाशशी मददार॥

सुनि भरत शासन शत्रुहन लाखन सुदूत बोलाय।
दीन्ह्यो निदेश अनंद भरि रघुनंद दरश लोभाय॥
अब अवधपुर तें नंदिग्राम प्रयंत धरणि समान।
कीजे समुन्नत नीच थल सम होय शोभामान॥
सींच्यो सुगंधित नीर मारग लाज कुसुम बिछाय।
अति तुंग विविध पताक बांधहु धाम धाम बनाय॥
अति स्वच्छ करहु बजार रंभाखंभ देहु गड़ाय।
चटपट पुरट घट धरहु द्वारन आम पल्लव लाय॥
घर घर रचहु कुसुमावली माला विपुल लटकाय।
सब सदन करहु विचित्र चतुर चितेर चटक बोलाय।
जबलौं उवैं नहिं भान तबलों सकल साजहु साज॥
रण जीति चौदह वर्ष महँ आवत अवध रघुराज॥
सुनि शत्रुहन कर सुभग शासन सकल सचिव प्रधान।
सिगरे सजावन लगे पुर आनंद उर न समान॥
सिद्धार्थ साधक अर्थ विजैं जयंत धृष्टि अशोक।
तिमि जंत्रपाल सुमंत्र संयुत भये सचिव अशोक॥
हल्ला परचो सब अवधपुर आवत सुरघुकुल केत।
निज नाथ दरशन हेत पुरजन करन लागे नेत॥
आनंद अवध समात नहिं सब कहैं पुरजन बात।
केहि भांति आसु सिराय रजनी होय विमलप्रभात॥
को सकै वरणि प्रमोद कौशिल्ये भयो जो आज।
जिमि मरत मुख परिगो सुधा जल परचो सूखत नाज॥
खरभर मच्यो सिगरे शहर दृग तजत सब जलधार।
जनु नहिं समान करार बिच बहि चल्यो पारावार॥
साजाहिं सकल कलशावली कलधरहिं द्वारे दीप।

पुर कराहिं मंगलगान नारी देवि देव समीप ॥
यहि भाँति सजत सजावते निशि रही बाकी याम।
निकसे सकल पुरजन सुखित अभिलषित देखन राम ॥
लाखन मतंग उतंग तन जे शैल शृङ्ग समान।
राजत कनक हौदा बँधे अंबारि मानहुँ भान ॥
बहु झूल पंखे सिरी सजि घंटा सघन घहनात।
असमान लगि फहरै निशान विमान जिन रुकि जात ॥
केते मतंगन दुन्दुभी धरि चले गज नगरट्ट।
तहँ अवध नंदिकग्राम लगि लगि गयो सिंधुर ठट्ट ॥

सोरठा—चले तुरंग अपार, कोटि कोटिकी कोट करि।
सोहत सकल सवार, रामागमन अनंद भरि ॥

छन्द।

बहु कनक भूषण रतन भूषण चमर सहित सड़ाक।
अटपट चलत चटपट चमकि दामिनि दमंक उड़ाक ॥
सोहत सवार सिंगार करि बहु हंस वंश कुमार।
इलकत अलक छलकत ललक उर लषण राम उदार ॥
करिनीन कुंभनि कनक कुंभ विराजमान अनंत।
गणिका चलीं गावत मनावत राम हित भगवंत ॥
शृंगार करि पुरनारि प्रमुदित चलीं चारु सिधारि।
हम होव धन्य निहारि प्रभु यक एक हेलि हँकारि ॥
रनिवास ते मणिजाल की बहु पालकी पथ आय।
करि लियो आगू कौशिला को हौसिला न समाय ॥
परिचरी वृन्दन वृन्द डगरीं पालकिन को घेरि।
गावत सुमंगल गीत सहित सिंगार यक यक टेरि ॥
कलशावली तिय शीश लसि दीपावली तिन माहिं।

चमकति चटक हारावली तारावली सम नाहिं ॥
यक ओर पुरवासी लसत यक ओर सेन अपार।
यक ओर लसत करोर बहु रघुवंश वीर कुमार ॥
नदत समद दुरद हद गिरिन्द्र कद चलंत।
हिहिनात हैं घहरात रथ दिशि विदिशि शब्द भरंत ॥
सब कहहिं केहि क्षण लखब रघुकुल चंद सीय समेतु।
कपि कटक पुष्पविमान कर फहरात नभ कहँ केतु ॥
बाजत अनेक निसान राजत आसमान निशान।
खरभर परयो सिगरे शहर तजि गहर करत पयान ॥
सब डगर डगरन नगर बिच युव बाल वृद्ध अपार।
भाषत परसपर चलहु चलहु न आज सुख कर पार ॥
कहुँ कोउ प्रजा करि अति त्वरा कटि फेंट कीन्हे पाग।
पद पट पहिरि कर में चले उर जाग अति अनुराग ॥
कोउ पहिरि कंठाभरण चरणन बाँधि नूपुर शीश।
रघुपति दरश हित चले दौरत सुमिरि निज निज ईश ॥
जिमि उदित राका चंद लखि उमगत उदधि बहु भंग।
तिमि राम दरशन लालसा बाढ्यौ पयोधि अभंग ॥
यक एक आगे होत पहिले लखब हमहीं राम।
पाछे रहत ते कहत तुम करि लेहु कछु विश्राम ॥
बाढ्यो उछाह अथाह पुर जन धरत नहिं कछु धीर।
नर नारि कहत पुकारि कहाँ विमान जेहि रघुवीर ॥
भरि गयो नंदीग्राम जन गन तेहि निशा अवशेश।
तब कहहिं सब अब राम कहँ अब राम कहँ अवधेश ॥
कीन्ह्यो भरत मज्जन सहित सज्जन सरित सानंद।
करि पादुका पूजन विमल द्रुत बोलि मारुत नंद ॥

बोले वचन तन पुलकिहे प्रिय प्राण पवनकुमार।
अब चलहु देहु देखाय कहँ प्रभु इष्टदेव हमार॥
चौदहि बरष अँगुरी गिनत गे दिवस कल्प समान।
करुणानिधान सुजान रघुपति राखि लीन्ह्यो प्रान॥
तब कह्यो पवन सपूत पूत द्वितीय तुम सम कौन।
प्रभु प्रेम नेम निबाहिहैं तप तपत भीतर भौन॥
अबलों सुन्यौ श्रुति राम प्रेम न लखी मूरति तास।
तुव रूप लखि प्रभु प्रेम रूप भयो विशेषि विश्वास॥
इत ते उअत रवि चलहु देखन नाथ पद अरविंद।
रघुनाथ देखि सनाथ ह्वैहैं अवधपुर जन वृन्द॥

दोहा–पुरवासी भाषत सकल, चलहु भरत अतुराय।
बिन देखे रघुपति चरण, यक क्षण युग सम जाय॥

चौपाई।

कौशिल्यादि मातु सब आईं। रिपु हन सहित मोद रस छाईं॥
कौशिल्या तहँ भरत बोलाई। कह्यो लालको खबरि जनाई॥
कहाँ राम लछिमन मम बारे। केहि पठयो हित खबरि तिहारे॥
तहाँ भरत अति पुलकित गाता। बोल्यो शीश नाय असखाता॥
मातु पवनसुत नाथ पठाये। भोरआगमन खबरि सुनाये॥
मैं नहिं बदन देखावन लायक। नेह निबाहि दीन रघुनायक॥
तेहि अवसर आयो हनुमाना। गह्यो मातु पद नाम बखाना॥
जानि राम जन अति हरषाई। कौशिल्या उर लियो लगाई॥
पौन पूत पूतहु ते प्यारो। लियो राखि तैं प्रान हमारो॥
कहु कपि कहँ मम पूत पतोहू। कब लखिहौं आनँद संदोहू॥
कह्यो पवनसुत जननि सिधारहु। रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारहु॥
राम मातु तब भरत बोलाई। कह्यो पुत्र अब चलहु त्वराई॥

दोहा—नाथ पादुका माथ महँ, लियो भरत तव धारि।
चमर चलावत शत्रुहन, साथहि चल्यो सिधारि॥

चौपाई।

वाल वेजन वर छत्र सोहावन। लियो सुमंत महा छवि छावन॥
भरत धारि शिर राम खराऊँ। चले शत्रुहन सहित अगाऊँ॥
पकरे पवनसुवन कर हाथा। पूछत कहँ मिलिहैं रघुनाथा॥
चलीं भरत पाछे सव माता। चलीं सैन कछु वरणिन जाता॥
खुरन खनत मेदिनी तुरंगा। हुलसित हिहिनाते वहुरंगा॥
नद्दतमत्त मतंग हजारन। चले मनहुँ दिग्गज मद हारन॥
घहरत स्यंदन चक्र अपारा। मानहुँ तज्यो पयोधि करारा॥
गवने कोटिन नगर निवासी। रामचंद्र मुख दरशन आसी॥
भये पषाण रेणु पथ माहीं। हौदन दचक टूटि तरु जाहीं॥
सिगरे अवध नगर पुरवासी। कहैं राम कहँ दरशन आसी॥
धरे पुरट घट शीशन माहीं। चलीं मंगलामुखी तहाहीं॥
गावत मंगल गीत अपारा। नगर नारि कीन्हे शृंगारा॥

दोहा—उठत उमाहन पंथ पग, वढ़ी त्वरा अभिलाष।
जाय जाय हनुमान सो, पूछहिं जन वहुलाष॥

छन्द अरिल्ल।

वाजिरहे करनाल वेनु डफ दुंदुभो।
बीण उपंग मृदंग नारि गावैं कभी॥
राम दरश लालसा भरे पुरजन सवैं।
मंगल मंजुल गीत गाय पुर तिय फवैं॥
आवत रघुपति आजु अवध आनँद मच्यो।
अवध नेवासिन जन्म वहुरि विधि नव रच्यो॥
केहि क्षण राम सरोज वदन अलि दृग वसैं।

करि शोभा मकरंद पान देवन हसें ॥
राम सरिस को धर्मपाल दूसर दुनी।
अस करुणामय बानि न देखी नहिं सुनो ॥
बाँधि पयोनिधि सेतु लंकराजहि हने।
सुगल विभीषण प्रभु प्रताप भूपति बने ॥
धन्य भरत रघुनाथ प्रेम को रूप हैं।
राम विरह तन क्षीन धर्म को जूप हैं ॥
भ्रात लेन अगुवान जात तन सुधि नहीं।
राम भरत को मिलन होत सुख सरि वहीं ॥
यहि विधि कहत अनेक वचन पुरजन चले।
सुख कर सगुन अनेक पंथ सब कहँ मिले ॥
लपि जन दक्षिण ओर भरत सों भापहीं।
लखि नहिं परत विमान दरश अभिलापहीं ॥
कियो भरत हँसि हँसी हेरि हनुमान को।
करहु तो नहिं चपलई कीश तजि ज्ञान को ॥
नहिं दरशात वेमान प्रान अकुतात हैं।
नहिं देखात कपि वृन्द कहाँ दोउ भ्रात हैं ॥
कह्यो पवनसुत जोरि पाणि प्रभु देखिये।
फूलि उठे तरु फले विश्वास परेखिये ॥
भरद्वाज अरु इन्द्र दियो वरदान है।
तीरथपति ते अवध प्रयंत प्रमान है ॥
फलिहैं फुलिहैं विटप राम आगवन में।
जहँ रहिहैं कपि तहाँ यही गति भुवन में ॥
कहत भरत सों पवनसुवन के अस किसा।
तेहि अवसर सुनि पर्यो शोर दक्षिण दिशा ॥

दोहा—जबते राम प्रयाग ते, भये सवार विमान।
तबते कपि तेहि यान ते, चले उड़त असमान॥
अवध लखन हित अति त्वरा, मरकट पुलकित गात।
पुहुप बिमानहिं संग में, गवने गगन उड़ात॥
कोटिन मरकट जानकी, छाया जहँ तहँ जाति।
तहँ तहँ धावति भूमि मे, किलकिलाति कपि पाँति॥
सोई शोर सुनि पवनसुत, कह्यो भरत सो बैन।
कपिदल शोर सुनात इत, मृषा बैन मम हैन॥

चौपाई।

फूले फलित अमित तरु वृन्दा। सुरभित श्रवत मधुर मकरन्दा॥
भरद्वाज बरदान प्रभाऊ। बिपिनि सोहावन बिनहिंउपाऊ॥
सुनहुँ शोर प्रभु दक्षिण आसा। किलकत कपितुवदरशनआसा॥
मोरे मन अस होत विचारा। तरत गोमती सैन अपारा॥
देखहु दक्षिण नैन उठाई। धूरि पूरि नभ उड़ी महाई॥
आवत अतिहि सबेग बिमाना। धुंधुकार छावतो दिशाना॥
जानि परत मोहिं राजकुमारा। करत सालवन कपि संचारा॥
लखहु भरत अब दक्षिण आसा। पूरण शशि सम भयो प्रकासा॥
यह बिमान पुहुपक जेहि नामा। सीय सहित लछिमनअरु रामा॥
मरकट कटक सहित सुग्रीवा। लंक नाथ सोहत बलसीवा॥
तरुण तरनि सम तेज पसारत। देखि परत अब नैन निहारत॥
यतनी सुनत पवनसुत बानी। अवध प्रजा अतिशै हरपानी॥

दोहा—निरखन लागे निमिप तजि, भयो कोलाहल भूरि।
निरखौ निरखौ लखि परत, वह बिमान चढ़ि दूरि॥

चौपाई।

बाल वृद्ध वनिता पुरवासी। सकल अवधपति दरश हुलासी॥
एक बार बोले अस बानी। आवत आजु राम रजधानी॥

महा शोर तेहि अवसर भयऊ। दिशिअरुविदिशछायनभगयऊ॥
हय गय रथ निज निजतजियाना। भये भूमि महँ खड़े सुजाना॥
राम लपण संयुत वैदेही। आवत कोशल प्रजा सनेही॥
सखा सुकंठ विभीषण संगा। मरकट कटक विकट बहु रंगा॥
यही शोर छायो चहुँ ओरा। लखहिं विमानहि प्रजा करोरा॥
लंक जीति आवत रघुनंदा। लखहिं गगन चिमि पूरण चंदा॥
भयो राम लखि भरत सुखारी। पुलकित तन ढारत दृग वारी॥
प्रेम मगन भूल्यो तन भाना। सावधान ह्वै पुनि मतिमाना॥
गिरयो दंड सम भूतल माहीं। सो सुख कहत बनत मुखनाहीं॥
कह्यो पवनसुत लखहु विमाना। तुम सम कोउ नहिं प्रेमप्रधाना॥

दोहा—अर्घपाद्य अरु आचमन, दियो भरत प्रभु काहिं।
लग्यो उतारन आरती, प्रेम विवश सुधि नाहिं॥

चौपाई।

अवध प्रजा अंबुध उमगाना। निरखि राम राकाशितभाना॥
जिमि कपि कटकविमानअपारा। तिमि कहि प्रजा लहैको पारा॥
सेन निरखि मरकट मुद बाढे। लागे लखन ललकि ह्वै ठाढ़े॥
मनुज जूह धरनी परि पूरी। रथ तुरंग मातंगहु भूरी॥
तब प्रभु निकट बालिसुत जाई। कीन्ह्यो विनै सुनहु रघुराई॥
भरत लेन आये अगुवानी। आई मातु परत अस जानी॥
भरत आगवन सुनि सुख छाई। गये विमान द्वार रघुराई॥
निरखि भूमि भरतहि भगवाना। सजल विलोचन कृपानिधाना॥
खड़े विमान द्वार रघुराई। उदै मेरु मनुदिनकर राई॥
अवधप्रजा निरखैं प्रभु काहीं। गिरैं दंड सम भूतल माहीं॥
यक एकन अंगुली उठाई। अवध प्रजा भाषहिं गोहराई॥
वह विमान पर देखहु भाई। ठाढ़े अवध उदधि निशिराई॥

दोहा–कोलाहल माच्यो तहाँ, लोग लखन ललचान।
अवध अलंब बेलंब बिन, उतरै भूमि विमान॥

चौपाई।

देखि विमान द्वार निज नाथै। प्रणवें भरत भूमि धरि माथै॥
विह्वल भयौ न उठैं उठाये। प्रेम दशा सिराय किमि गाये॥
कियो शत्रुहन दंड प्रणामा। को अस जो न नम्यो तेहि ठामा॥
तेहि क्षण अवध प्रजा चहुँओरा। भये राम मुखचंद चकोरा॥
दुसह विरह वश कृशित शरीरा। बहत निरंतर नैनन नीरा॥
आनँद मगन कढ़त नहिं वानी। प्रजन दशाकिमि जाय बखानी॥
कहहिं परसपर दरश उमाहे। महि आवत विमान नहिं काहे॥
बाल वृद्ध युत अवध निवासी। यकटक लखहिंविमानप्रकासी॥
विधि मानस विमान निरमानू। उदै गगन मनु कोटिन भानू॥
निरखि अवधपुरप्रजा तयारी। मरकट कटककरत किलकारी॥
कपिपति निशिचरपतिअरु नीला। दुविद मंयद महाबलशीला॥
संयुत लषण विमानहि द्वारे। ठाढ़े अनमिख भरत निहारे॥

दोहा–लषण कह्यो कर जोरि तब, दीजे नाथ निदेश।
उतरै भूमि विमान अब, मेटो भरत कलेश॥

चौपाई।

लखे दूर ते भरतहि रामा। प्रेम विवश विह्वल तेहि ठामा॥
गदगद गर मुख कढ़ न वानी। धरि धीरज कछु जानकि जानी॥
लगे विमान माहिं जे हँसा। बोल्यो तिनसों रघुकुल हंसा॥
अब उतरै विमान महि माहीं। सानुज ठाढ़े भरत जहांहीं॥
राम रजाय पाय वर याना। उतरि चल्यो महि ओर नुगना॥
राम भरत कर होत मिलापा। जानि अपोदित देव कलापा॥
चढ़े विमानन नभ महँ आये। भरत भाउ लखि आँसु बहाये॥

प्रजन कोलाहल भयो अपारा। मनहुँ सिंधु सब तजे करारा॥
आवत राम विमान मही में। भयो हमारे अब जिय जीमें॥
गयो बैठि जब भूमि विमाना। कूदे तब तुरंत भगवाना॥
कूदत प्रभुकहँ भरत निहारी। गिरयो दंड सम भूमि मझारी॥
भूल्यो भरत भान सब अंगा। को बरणै कवि प्रेम प्रसंगा॥

दोहा-रही सुरति नहिं राम तन, धायो कोशलनाथ।
कहुँ निषंग कहुँ धनु गिरयो, लियो न कोहु कहँ साथ॥

चौपाई।

भरतहि लिय उठाइ रघुराई। गये लपटि विह्वल दोउ भाई॥
को बिलगावे को समुझावे। को कवि प्रेमदशासो गावे॥
राम भरत कर प्रेम निहारी। चले अवधपुर के नर नारी॥
युगल बंधु दृग आँसुन धारा। कंपत तन नहिं तनक सँभारा॥
बित्यो महूरत छुटे न दोउ। प्रेम विवश ठाढ़े सब कोऊ॥
गुरु वशिष्ट तेहि अवसर आये। जस तस के दोहुँन बिलगाये॥
गुरु पद परे पुलकि भगवाना। लियो अंक गुरु रह्यो न भाना॥
मुनि पूछो रामहिं कुशलाई। गुरु पद परसि कह्यो रघुराई॥
कृपा रावरी कुशल हमारी। बीते मुदित वर्ष दश चारी॥
तुम्हरी कृपा देवरिपु मारे। सुखी अवधपुर बहुरि सिधारे॥
यतना कहत वदन सो बाता। गहे भरत पुनि पद जलजाता॥
पुनि पुनि मिलत राम लघुभाई। सकै कौन उपमा कवि गाई॥

दोहा-मनहुँ प्रयोजन पाय कछु, तापस रूप बनाय।
वात्सल्य रस दास्य दोउ, मिलैं भुजानि बढ़ाय॥

चौपाई।

प्रेम पवन प्रेरित छविधामा। मानहुँ मिलत युगलघनश्यामा॥
श्रवत दृग जल दोउ उदताहे। मेन नेम करि नेह निबाहे॥

भरतहि प्रभु अंकहि बैठावत। सूंघत शीश बोलि नाहिं आवत॥
भरत न छोड़त पद अरविन्दा। धरि धीरज कह रघुकुल चन्दा॥
सावधान ह्वै कुशल बखानहु। अब मम बिछुरनकीभयभानहु॥
मिली न मोहिं तोहिं सम भाई। कहौं शपथ करि भुजाउठाई॥
भन्यो भरत तब कछु धरि धीरा। तुम सम को दयालु रघुवीरा॥
मो सम अघी लियो अपनाई। सब प्रकार औगुन बिसराई॥
राम भरतकी मिलनि निहारी। सुगल बिभीषण भये दुखारी॥
तेहि अवसर लछिमन अरु सीता। त्यागे तुरत बिमान पुनीता॥
आवत निरखि भरत बैदेही। गह्यो दौरि पद परम सनेही॥
जनकसुता दिय आशिरवादा। जिअहुलाललगि महि मरयादा॥

दोहा–गह्यो लषण तब भरत पद, भरत लियो उर लाय।
कह्यो भरत धनि धनि लषण, किय भल प्रभु सेवकाय॥

चौपाई।

शत्रु शाल गिरि प्रभु पद माहीं। लीन्ह्यौं नाम बहत दृग जाहीं॥
रिपुहन कहँ प्रभु हिये लगाई। सूँघ्यौ शीश गोद बैठाई॥
बार बार पूछहिं कुशलाई। चूमत मुख दृग वारि बहाई॥
तेहि क्षण भरत लषण अरुसीता। आये जहँ प्रभु परम पुनीता॥
गह्यो जानकी पद रिपुशाला। प्रेम मगन तन भयो बिहाला॥
सिय उठाय अंकहि बैठायो। सूँघि शीश दृग वारि बहायो॥
रिपुहन गह्यो लषण के चरणा। सो सुख कियो जायकिमिवरणा॥
चारिहु बंधु और बैदेही। लखहिं परसपर वदन सनेही॥
कह्यौ भरत सो तब रघुबीरा। आयो संग महा कपि वीरा॥
निशिचरपति अरुकपिपतिकाहीं। मोसम जानेहु अंतर नाहीं॥
इनहीं केवल रावण मारे। इनसम नाहिं कोउ मोहिं पियारे॥
करहु सकल कीशन सतकारा। भाव राखि सब माहिं हमारा॥

दोहा—कहहु जननि केहि देश महँ दरशन की रुचि होति।
अवध प्रजा मोहिं प्राण सम, देखन प्रीति उदोती॥

चौपाई।

तेहि अवसर कपिनायक आयो। निशिचर नायक सहितसोहायो॥
अंगद दुविद मयंदहु नीला। ऋषभ सुषेन महा बलशीला॥
नलहु गंध मादन संपाती। गय गवाक्ष ऋच्छप अरिघाती॥
सरभ पनस आदिक कपि वीरा। धरे मिलन हित मनुज शरीरा॥
आवत कपिन देखि रघुराई। चले भरत कहँ संग लेवाई॥
कपिपति निशिचरपतिहिचिन्हाई। मिलहु भरत भाषेहु रघुराई॥
मिले भरत सुग्रीवहि धाई। वंदन कियो बहुरि शिर नाई॥
कुशल पूछि कह करत विलापू। चारिबंधु हम पंचम आपू॥
सत्य मित्रता आप निवाहीं। चारिहु बंधु उऋण हम नाहीं॥
मित्र सोई जो कृत उपकारा। शत्रु सोई जो कृत अपकारा॥
कह सुकंठ दृग वारि बहावत। रामकृपा जस को नहिं पावत॥
मिले भरत लंकापति काहीं। करि वंदन अस कह्यो तहाँहीं॥

दोहा—राम सहाय करी भली, दै दै सुखद सलाह।
जेठ बंधु हमरो समर, जीत्यो निशिचर नाह॥
कीन्ह्यौ दुःकर कर्म दोउ, कपिपति निशिचर नाथ।
तुम्हरी पुण्य प्रभाव ते, मिले मोहिं मम नाथ॥
उर लगाय पुनि अंगदै, भन्यो भरत अस बैन।
अहौ हमारे पुत्र सम, तुम सम जगको हैन॥
ऋक्षराजको प्रणति करि, भरत मिल्यो बहु बार।
पिता सरिस मम वृद्ध वर, कियो महा उपकार॥

चौपाई।

द्विविद मयंद नील नल वीरा। गय गवाक्ष आदिक रणधीरा॥

मुख्य मुख्य कपि जे सब आये। मिले सबन सों भरत त्वराये॥
रामहि सरिस सबन कहँ माने। कहि मृदु बचन कपिनसनमाने॥
पूछि कुशल सब सों कर जोरी। आशा पूरि भई अब मोरी॥
देखि राम सम भरत सुभाऊ। कपि माने मन महा उराऊ॥
कहनलगे सब आपुस माहीं। भ्राता भूमि भरत सम नाहीं॥
पुनि कपीश निशिचरपति काहीं। राम चले कर गहि मुद माहीं॥
गुरु वशिष्ठ कहँ दियो बताई। रविकुलगुरुविधिसुत मुनिराई॥
सुगल विभीषण औरहु कीशा। धरे वशिष्ठ चरण महँ शीशा॥
आशिरवाद दियो मुनि राई। चिरजीवहु संयुत रघुराई॥
तेहि औसर सुमंत तहँ आयो। देखत राम लषण शिर नायो॥
सुधि करि रघुपति भे बनवासी। ढारत अंबक अंबु हुलासी॥

दोहा–राम लषण कहँ लपटिगो, त्यागे सुरति शरीर।
बहुत दिनन महँ मोहि मिले, सीय लषण रघुबीर॥

चौपाई।

पुनि सुधि करिकियसचिवप्रणामा। पूंछी कुशल बहुत बिधि रामा॥
अहो पिता सम सचिव हमारे। आये कुशल सुपुण्य तिहारे॥
तेहि औसर कपि कटक अपारा। तजिविमान उतर्‌यो यक बारा॥
इत कपिदल उत अवध नेवासी। मिले सिंधु युग जनु सुखरासी॥
तब सुमन्त बोल्यो कर जोरी। सुनहु लाल बिनती यह मोरी॥
मातु सकल तुव दरशन हेतू। आईं इतै मानि सुखसेतू॥
आसुहि चलहु मिलहु रघुराई। दुसह बिरह दुख देहु मिटाई॥
राम भरत लछिमन रिपुशाला। लै जानकी संग तेहि काला॥
निशिचर पति कपिपतिकरिआगे। मातु मिलन गवने अनुरागे॥
गये जननी जेहि ठामा। कियो प्रथम केकयी प्रणामा॥
च बिलखिपुलकिततनमाता। उर लगाय लिय सुख न समाता॥

नैननि बहति नीर की धारा। गदगद गर नहिं वचन उचारा॥

दोहा—सूँघि शीश चूम्यो वदन, मणिगण अमित उतारि।
भरत मातु बोली वचन, कछुक लाज उर धारि॥
कामुंह लाय देखाय मुख, कहौं लाल कछु बात।
धर्म पाल युग युग जियो, तुम अस तुमहीं तात॥

चौपाई।

प्रभु कर जोरि कही अस वानी। सुनहु मातु हिय तजहु गलानी॥
मातु कृपावश जब रणमाहीं। मारे सकल निशाचर काहीं॥
तब करि कृपा पिता तहँ आये। मोपर दीह दया दरशाये॥
तुव अरु भरत हेत तेहि काला। मैं मांग्यौ वर जानि कृपाला॥
दियो जो भरत मातु कहँ शापा। सो न करै दोहुँन संतापा॥
ताते दैव विवश जो भयऊ। सो परिताप सकल अब गयऊ॥
रहै प्रसन्न मातु सब काला। शोच विवश नहिं होय विहाला॥
दुख सुख होत भाग्य वश दोऊ। तासु प्रयोजक होइ न कोऊ॥
मैं सुत तै जननी सब भांती। मोहिं निहारिकरु शीतल छाती॥
असकहिरघुकुल कुमुदनिशाकर। गहे चरण लछिमन जननी कर॥
तहाँ सुमित्रा अति ो लाल कहि गोद उठाई॥
आँखिन बहति

पुनि प्रभु कौशिल्या ढिग जाई। परे चरण निज नाम सुनाई॥
जननी लियो अंक बैठाई। वक्ष हेरान लह्यो जनु गाई॥
फेरति पाणि पीठि महतारी। अलक संभारति वदन निहारी॥
जस कौशिल्यहि भयो अनंदा। वरणि सकौं किमि मैं मति मंदा॥
शंभु स्वयंभु शारदा शेशू। वरणि सकैं न विशेष अशेशू॥
बोली वचन जननि मुद मोई। कहँ सुग्रीव विभीषण दोई॥
उभै सखन कहँ राम वताये। दोऊ दौरि चरण शिर नाये॥
प्रेम विवश रघुपति महतारी। हिय लगाय लिय दुहुन सुखारी॥

दोहा--कह्यो वचन हे पुत्र दोउ, तुम रामहुँ ते प्यार।
समर सिंधु तुव वल तरनि, चढ़ि भो पारकुमार॥

चौपाई।

तुव वल पुण्य प्रभाव दराजू। देख्यो यह वालक कहँ आजू॥
कौनहुँ जन्म उऋण हम नाहीं। तुम समान को प्रिय जग माहीं॥
तुम दोउ धर्म कुमार हमारे। जिन सहाय पुनि राम निहारे॥
जननी वचन सुनत दोउ वीरा। वहत निरंतर नैनन नीरा॥
बोले वचन धीर उर धारी। कसन कहै रघुपति महतारी॥
उतरे तुव प्रताप रण सिंधू। सहजहि हन्यौ शत्रु दशकंधू॥
तुव समान तुव सुत रघुनायक। ह्वैवो राम मातु तोहि लायक॥
तेहि अवसर लछिमन अतुराई। गिरयो कौशिल्या पदमहँ आई॥
लियो उठाय अंक महँ माता। चूमति पुनिपुनि मुखजलजाता॥
लपण परे पुनि केकय चरणा। भरत मातुसुख जाय न वरणा॥
लपण वहुरि सव मातन वंदे। काटे मनहुँ विरह दुख फंदे॥
तिनके पाछे लपण ललामा। कियो जननि पद कंज प्रणामा॥

दोहा—दै आशिप उर लाय पुनि, कही सुमित्रा वैन।
निरखे पूत सपूत नहिं, लखी पतोहू नैन॥

चौपाई।

लषण कहाँ मिथिलेश कुमारी। देहु बताय विलंब विसारी॥
तेहिं अवसर सीता तहँ आई। लषण मातु पद गह्यो त्वराई॥
लीन सुमित्रा अंक उठाई। चूमति वदन महा सुख पाई॥
शीश सूँघि पुनि लेति वलाई। केकय सुता तुरत उठि धाई॥
सिय हिय लाय अंक बैठाई। आँखिन आँसुन ओघ वहाई॥
हर्ष सकुच वश कढ़ति न वाता। निरखति वदन शशी अवदाता॥
पुनि सिगरी दशरथ की रानी। आई सीता दरश लोभानी॥
पृथकपृथकसिय मिलि सबकाहीं। कियो प्रणाम परसि पद माहीं॥
तेहि अवसर कौशिल्या आई। गिरी जानकी चरणन जाई॥
राम मातु उर लियो लगाई। सो सुख कैसे वरणि वढ़ाई॥
सासु पतोह महा सुख सानी। प्रेमविवश मुख कढ़ति न वानी॥
पुनि पुनि सीय चरण लपटानी। सासु दशा किमि जाय वखानी॥

दोहा–तहाँ सुमित्रा आयकै, सीतहि लियो उठाय।
धरि धीरज वोली वचन, तोहि सम तुहीं देखाय॥

चौपाई।

धन्य धन्य मिथिलेश कुमारी। दोउ कुल कहँ कीन्ही उजियारी॥
भयो कृतारथ जन्म तुम्हारा। किय पुनीत रघुवंश हमारा॥
वोली कौशिल्या महरानी। आजु सुखी भे रघुकुल प्रानी॥
जेहि हित लागि रहे तन प्राना। समै देखायो सो भगवाना॥
सियहि देखि मोंहि भा संदेहू। वहुत वुझायों मिटत न केहू॥
कमल कोस ते कोमल चरना। सियकीन्ह्योकिमिविपिनविचरना॥
अस कहि मीजति सिय पद कंजू। विरह जनितदुख करि सब भंजू॥
वार वार फेरति शिर पानी। राई लोन उतारति रानी॥
मंगल वचन पढ़ति अस गाई। जनम नवीन सीय हम पाई॥

वृहद् वियोग सिंधु दुखदाई । पैरत थकी थाह जनु पाई ॥
पुनि पुनि मुख चूमति सब सासू । कहहिं कृशिततन लहिवनवासू॥
भागि उदे अब भई हमारी । निरखी आजु विदेह कुमारी ॥

दोहा–राम मातु बोली वचन, लषण जननि समुझाय ।
नंदिग्राम को लै चलहु, सियहि विमान चढ़ाय ॥

चौपाई ।

तेहि अवसर प्रभु दरशन आसी । बृन्द बृन्द सिगरे पुरवासी ॥
आगे हमहिं लखब रघुराई । झुके कहत अस आश बढ़ाई ॥
जोरे सकल कमल कर नागर । देखि राम जग होब उजागर ॥
कियो विचार राम मन माहीं । मिलौं एक बारहि सब काहीं ॥
अस कहि कियो अनंतन रूपा । मिल्यौ प्रजन कहँ कोशल भूपा॥
सब पुरजन ऐसहि मन माने । हमहिं मिले प्रभु अतिप्रिय जाने॥
जान्यो प्रभु चरित्र नहिं कोऊ । निकट रह्यो अरु दूरहु सोऊ ॥
जय जयकार मच्यो यकबारा । जय रघुवंश भूमि भरतारा ॥
तब उठि भरत सपुलकितगाता । बोल्यो मंजु वचन अवदाता ॥
पहिरहु प्रभु पादुका सोहाई । जो लीन्ह्यो मम प्राण बचाई ॥
अस कहि प्रभु पद पंकज माहीं । पहिरायो पादुका तहाँहीं ॥
तहाँ देव फूलन झरिलाये । बार बार दुंदुभी बजाये ॥

दोहा–जय कोशलपति प्रीतिरत, भरत सरिस कोउ नाहि ।
राम प्रेम को नियम करि, दीन्ह्यो नेह निबाहि ॥

चौपाई ।

पुनि करजोरि चरण शिर नाई । बोल्यो वचन प्रीतिरस छाई ॥
चित्रकूट महँ मोहिं बुझाई । कह्यो नाथ करि कृपा महाई ॥
पितु प्रण पूरण करि जब ऐहौं । थाती राज्य आपनी लैहौं ॥
तबलगि शासहु तुम प्रिय भाई । देश कोश कछु बिगरि न जाई ॥

सो तुव शासन शिर धरि नाथा। लीन्ह्यो राजभार निज माथा ॥
नाथ अवध मोरे हित आये। मोहिं धन्य जग माहिं वनाये ॥
पालेहुँ प्रजा शीश धरि शासन। प्रभु रजाय सुनिसहित हुलासन॥
देश कोशवल प्रजा सुखारी। कीन्ह्योदशगुण अधिक खरारी ॥
सो सब नाथ प्रताप प्रभाऊ। नाहिं मम शक्तिन करहुं दुराऊ ॥
सो प्रभु लेहु राज्य कर भारा। एक मनोरथ अहै हमारा ॥
होय नाथ राउर अभिषेका। पालहु प्रजा सदा सविवेका ॥
मैं अब करहुं चरण सेवकाई। जामें सब विधि मोरि भलाई ॥

दोहा-शील सनेह सुभाउ बुधि, धर्म धीर सनमान।
निरखि भरत को कीशपति, लंकहुपति हरपान ॥

चौपाई।

रुदन करन लागे सब कीशा। भरत योग भ्राता जगदीशा ॥
भरत वचन सुनिके रघुराई। प्रेम मगन दृग वारि बहाई ॥
चूमत वदन अंक बैठाई। कह्यो वचन सब काहँ सुनाई ॥
जापर ईश प्रसन्न सदाई। तेहि जग मिले भरत सम भाई ॥
राम भरत कर देखि सनेहू। भये सकलकपि पुलकित देहू ॥
भरत पाणि गहि रघुकुल राऊ। कह्यो वचन पुनि सरल सुभाऊ॥
ऋक्ष कीश औरहु पुरवासी। आये जे मम दरशन आसी ॥
सिय युत मातु बंधु हम चारी। भरत लषण रिपु हन की नारी॥
चढ़ें सकल मिलि पुहुप विमाना। नंदिग्राम कहँ करहिं पयाना ॥
नंदिग्राम यक योजन होई। पुहुप प्रभाव लखें सब कोई ॥
राम वचन सुनि अवध निवासी। वानर भालु भये सुखरासी ॥
करि कोलाहल चढ़े विमाना। मिले परसपर सुखन समाना ॥

दोहा-अंतःपुर अतिशै विमल, निरमित रह्यो विमान।
सीय सहित सब मातु तहँ, कीन्ही मुदित पयान ॥

चौपाई।

राजसिंहासन राम विराजे। सकलवंधु निज निज थल छाजे॥
निशिचरपतिकपिपति हनुमाना। अंगदादि वानर वलवाना॥
सचिव सुमंतादिक प्रभु केरे। वैठे सब निज नाथहि घेरे॥
वानर भालु और पुरवासी। मिलहिं परसपर आनँदरासी॥
दियो विमानहि राम रजाई। नंदिग्राम देहु पहुँचाई॥
प्रभु रजाय सो पाय विमाना। उड्यो गगन करि शोर महाना।
नन्दिग्राम क्षणहीं महँ आयो। सबके उर अचर्ज अति छायो॥
भरत कुटी जहँ रही सोहाई। रम्यो विमान भूमि महँ आई॥
राम सहित उतरे सब लोगू। दियो विमानहि नाथ नियोगू॥
जाहु कुवेर समीप विमाना। हम प्रसन्न तोपर विधि नाना॥
जब असमरण करौं तोहिं काहीं। आयो तुम मैं रहहुँ जहाहीं॥
प्रभु वंदन करि तुरत विमाना। गयो धनद ढिग अतिहरषाना॥

दोहा—तहँ वशिष्ठ को पुत्र जो, नाम सुयज्ञ उदार।
मिल्यो आय प्रभु को हरषि, वहति नैन जलधार॥

चौपाई।

पकरि चरण प्रभु कियों प्रणामा। वार वार मिलि लहिसुखधामा॥
कनकासन महँ तेहि वैठायो। आपहु सिंहासन महँ भायो॥
नाम सुयज्ञ वशिष्ठ कुमारा। राम सखा वर बुद्धि उदारा॥
पाणि पकरि पूछी कुशलाई। वड़ो काम कीन्ह्यो रघुराई॥
प्रभु कह सखा कृपा वश तेरे। मैं मारे रिपु प्रबल घनेरे॥
तहँ भरत लच्छन रिपुशाला। आये जेहि थल वैठ कृपाला॥
लंकनाथ सुग्रीवहु दोऊ। आये हनुमदादि सब कोऊ॥
प्रभुहि घेरि वैठे तेहि ठामा। तहँ केकयी तनय मतिधामा॥
जोरि अंजुली धरि निज शीशा। वोल्यो वचन सुनहुँ जगदीशा॥
मम माता पितु सोहित मोरे। माग्यो द्वै वर द्रोह न तोरे॥
भरत राज रामहिं वन वासू। सुनि पितु भे हत जीवन आसू॥

परयो धर्म संकट पितु काहीं । तजि तन राख्यो धरमहिकाहीं ॥

दोहा–चित्रकूट महँ मोहिं प्रभु, दियो राज्य कर भार ।
पितु प्रण पाल्यो नाथ तुम, तज्यो न मोर दुलार॥

चौपाई।

भयो जन्म धनि अस प्रभु पाई । विसरायो ऐसिहु जड़ताई ॥
को जगमोहिसमअधमस्वभाऊ । जेहि हित वसे विपिनि रघुराऊ॥
मैं निलज्य पुनि सनमुख आयो । नाथ दौरि मोहिं हिये लगायो ॥
तुम सम को दयालु रघुराई । मों सम कुटिल जन्योनहिं भाई॥
मैं जान्यो प्रभु मोहिं अपनायो । मम अपराध सकल विसरायो ॥
ताते कछु माँगहुँ रघुराई । दिहे नाथ सब विधि बनि जाई ॥
दीन्ह्यो मोहिं अवध को राजू । सो अब लेहु करहु कृत काजू ॥
वृषभ भार बालक नहिं लेई । यद्यपि होय सुमति जन सेई ॥
विन पषाण मृत्तिका अथोरे । फूट बंध तृण जुरे न जोरे ॥
वहे न खर बाजी कर भागा । चले हंस गति कबहुँ न कागा ॥
तिमि तुम सम कैसे हम ह्वैहैं । तुव प्रभुता केहि विधि हमपैहैं ॥

दोहा–कहौं दूसरो हेत प्रभु, हम सब प्रजा तुम्हार ।
सात द्वीप नव खंड लगि, होहु भूमि भरतार ॥

चौपाई।

बोय काम तरु जो निज गेहू । भयो बड़े तरु फल संदेहू ॥
सेय सींचि फल फूलन पायो । भयो वृथा श्रम जौन लगायो ॥
होति सोई क्षति मातुन काहीं । राम प्रजा पाल्यो जो नाहीं ॥
ताते हम सब कोशलवासी । केवल पद्म ललन के आसी ॥
प्रगटि भानु सम भुवन प्रतापा । हरहु सकल दासन संतापा ॥
होय राम राउर अभिषेका । पावहु प्रजन सुयश विवेका ॥
तुव अभिषेक निरखि रघुनाथा । होब सकल हम प्रजा सनाथा ॥
सुर तरंग सारंग मृदंगा । बजन रहैं प्रभु पास अभंगा ॥
कांची नूपुर धुनि सुनि काना । रहहु नाथ निज होत विहाना ॥

तुव यश करत पुनीत दिशाना । करहिं मधुर गायक गण गाना ॥
सुनत सुयश सो बहु रघुराई । हम सब करहिं चरण सेवकाई ॥
जहँ लगि उदै अस्त रवि होई । जहँ लगि मानस भूधर जोई ॥

दोहा—तहँ लगि राम वसुंधरा, नायक होहु नरेश ।
करहु मनोरथ पूर अब, चलै निदेश हमेश ॥

चौपाई ।

अस कहि भरत रहे कर जोरी । राखहु लाज नाथ अब मोरी ॥
भरत वचन सुनि दीन दयाला । प्रेम मगन ह्वैगे तेहि काला ॥
गदगद गर बोले रघुराई । अहै न भूमि भरत सम भाई ॥
भरत हेत लागहिं जो प्राना । तौ हम आपन अति हितमाना ॥
यथा भरत रुचि तैसहि करिहौं । नासा श्वास प्रयंत न टरिहौं ॥
बानर प्रजा सुनत प्रभु बैना । जै जै कार कियो भरि चैना ॥
तेहि अवसर कौशिल्या आई । लषण मातु केकयी लेवाई ॥
उठे कुमार जननि कहँ देखी । किये प्रणति मुद मानि विशेखी ॥
कह्यौ सुमंतहि रानि बोलाई । चारिहु सुअन देहु नहवाई ॥
भूषण वसन सकल पहिरावहु । अंग राग मृदु अंग लगावहु ॥
इनके विना नहाये सीता । नहिं नहाति निज धर्म पुनीता ॥
मातु निदेश सुमंत तुराई । कह्यो शत्रुशालहि समुझाई ॥

दोहा—शत्रुशाल सुनि सो सपदि, नापित परम सुजान ।
बोल्यो विगत बेलंब बिन, क्षउर कर्म अभिधान ॥

चौपाई ।

शीघ्रहस्त सुखहस्त सुखारी । केश विवर्धक भूषणधारी ॥
नापित निरखि राम अस गाये । नहिं नहान बिन भरत नहाये ॥
भरत हि अंक लियो अनुरागे । राम जटा निरवारन लागे ॥
भरत जटा निरवारि कृपाला । ऐंछि पोंछि मृदुअलकविशाला ॥
राम भरत निज कर नहवाये । भूषण वसन विविध पहिराये ॥

पुनि लछिमनहिं अंक महँ लीन्हे । जटा विशोधन निज करकीन्हे ॥
तसहि लपणहुँ कहँ नहवाये । दिव्य वसन भूपण पहिराये ॥
शत्रुशाल कहँ तिमि रघुराई । सादर लियो अंक बैठाई ॥
जटा शोध मज्जन करवाई । सुंदर पटभूपण पहिराई ॥
अंगराग अंगनि लगवाई । बैठायो समीप सुख पाई ॥
मज्जित भरत कौशिला देखी । सिय समीप गवनी सुख लेखी ॥
लपण जननि कयकेयी काहीं । कह्यो वचनअतिहुलसितहाँहीं ॥

दोहा–मज्जन करवावहु सियहि, कवरी सुभग वनाय ।
मैं सुग्रीव विभीपणहि, नहवाऊ अब जाय ॥

चौपाई ।

अस कहि गई जहाँ रह सीता । लपण मातु केकयी पुनीता ॥
कह्यो दुहुन कौशिला सुवानी । लियो बोलाय सकल नृप रानी ॥
मज्जन करवावहु सिय केरो । तन मलीन लहि विपिनिवसेरो ॥
घनमंडल राकाशशि जैसे । सीय वदन सोहत अब तैसे ॥
लपण मातु परिचरी बोलाई । सिय मज्जन हित कह्यो बुझाई ॥
लगीं सखी मज्जन करवावन । भरि घट पुरट सुरभिजलपावन ॥
धोयो सलिल छोरि शिर वेनी । मनहुँ लसै अहिसावक श्रेनी ॥
धोय पोंछि वेनी रचि नीकी । जेहिलखिलगतिअवलिअलिफीकी॥
सुरभित सलिल सखी नहवाई । अति सुंदर सारी पहिराई ॥
अंगन अंगराग कर लेपा । भूपण पहिरायो संक्षेपा ॥
तहँ सिगरी दशरथकी रानी । रच्यो विविध भोजन हुलसानी ॥
इतै चतुर नापित सुख भीने । रघुपति जटा विशोधन कीने ॥

दोहा–जब मज्जन करि चुकत भे, रघुपति बंधु समेत ।
गुरु वशिष्ठ आवत भये, गवन करावन हेत ॥

चौपाई ।

कह्यो वचन गुरु सुनहु नरेशा । आजु सुभग दिनचलहुनिवेशा ॥
प्रभु तथास्तु कहि कियोप्रणामा। लै गुरु गये भरत के धामा ॥

सुगुरु सबंधु समंत्रिन बैठे। मानहु मोद महोदधि पैठे॥
उत कौशिल्या अति अतुराई। गइ जहँ लंकापति कपिराई॥
हनुमत अंगदादिकन आनी। तारा रुमा आदि कपिरानी॥
सबहिं सविधि मज्जन करवाई। भूपण वसन सबन पहिराई॥
जिमि सिय पै किय प्रेम पसारा। मान्यो तथा रुमा अरु तारा॥
राख्यो यथा राम वर प्रेमा। तैसे कपिन प्रेम कर नेमा॥
तैसे पुनि लंकापति केरो। निजसुततिनकोकिय न निवेरो॥
कपिन सकल मज्जन करवाई। पट भूपण विचित्र पहिराई॥
तहँ तारा अरु रुमा सयानी। करि प्रणाम बोलीं अस बानी॥
भये पूत तन दरश तिहारे। सिय दरशन की आस हमारे॥

दोहा–राम जननि निज संग में, तारा रुमा लेवाय।
आई जनकसुता निकट, महा मोद उर छाय॥

चौपाई।

एक संग भोजन करवाई। एक संग सुख सेज सोवाई॥
लागे सकल सराहन बीरा। धन्य धन्य जननी रघुबीरा॥
पुनि गुरु शासन लै रघुराई। भोजन करन गये लै भाई॥
करि भोजन कीन्ह्यो विश्रामा। यतने में बीते युग यामा॥
गुरु वशिष्ट रिपुशाल बोलाई। बोले वचन मंजु मुसक्याई॥
रघुनंदन स्यंदन अब आनहु। अवध नगर कर गवनहिंठानहु॥
कह्यो शत्रुहन सचिव बोलाई। ल्यावहु रथ सुंदर सजवाई॥
शासन दियो सुमंत तुरंता। सजी सैन गज बाजि अनंता॥
हल्ला परयो नगर महँ जाई। आवत अवध आज रघुराई॥
पुरजन सजे सकल सब भाँती। भई नारि नर शीतल छाती॥
इतै राम रिपुशाल बोलाई। दीन्ह्यो हरप निदेश सुनाई॥
आनहु सजे नाग नव लाखा। चढ़ैं कीश सब अस अभिलाखा॥

दोहा–शत्रुशाल कर जोरि कह, सजे खड़े सब द्वार।

चलहु नाथ महलन मुदित, करि सनाथ परिवार ॥
उठे राम गहि भरत कर, परयो निसानन घाउ ।
नौमत लागीं झरन बहु, भौन उराउ अघाउ ॥

चौपाई ।

भे सवार स्यंदन रघुनंदन । फहरि रहे पताक बहु वृन्दन ॥
बाजिन बाग भरत कर लीनो । रिपुहन छत्र लियो मुद भीनो ॥
लषण चमर चालत सुखछाई । द्वतिय चमर लिय निशिचरराई ॥
रथध्वज लिये खड़ोहनुमाना । कियो राम इमि अवध पयाना ॥
तहँ महर्षि देवर्षि अपारे । देव मरुतगण गगन सिधारे ॥
अस्तुति करहिं बरष बहु फूला । बाज बजावहिं मधुर अतूला ॥
महा माधुरी ध्वनि दिशि छाई । पुरजन खड़े लेत अगुवाई ॥
शत्रुंजय गज राम मँगाये । जेहि लखि मंदिर मेरु लजाये ॥
करन हेत सुग्रीव सवारी । पठयो रघुकुल कमल तमारी ॥
तापर भो सुग्रीव सवारा । महा मनोहर मनुज अकारा ॥
जे नवलाख मतंगज आये । कनक साज सब भांति सजाये ॥
चढ़े भालु कपि मनुज स्वरूपा । पहिरि विभूषण वसन अनूपा ॥

दोहा—बजे शंख डफ दुंदुभी, जय जय परी पुकार ।
चहुँकित भरभर नर निकर, हरबर किय संचार ॥

चौपाई ।

दुहुँ दिशि पंथ प्रजा कर जूहा । नारि बाल युव वृद्ध समूहा ॥
खड़े राम दरशन के आसी । तेहि दिन भयो भुवन सुखरासी ॥
चल्यौकटक अति चटकअपारा । मनहुँ सिंधु तजि दियो करारा ॥
सैनअग्र भे सुतर सवारा । पुनि बाजो असवार अपारा ॥
तिनके पाछे पैदर वृन्दा । धरे शस्त्र कर भरे अनन्दा ॥
पुनि परिकर चामीकर चारू । धरे दंड पहिरेउर हारू ॥
छरी बेत्र झरझर कर धारे । फरक फरक मुख कहत सिधारे ॥
चामीकर स्यंदन छबि छाजा । तापर अति राजत रघुराजा ॥

मनहुँ उदैगिरि उदै तमारो। प्रजा जलज लखि भये सुखारी॥
तेहि अवसर बोले प्रभु बानी। मारग चलहु मंद गति ठानी॥
चली मंद गति सैन अपारा। लखहिं मनुज अवधेश कुमारा॥

दोहा–कोउ प्रणाम पुरजन करैं, कोउ पुनि करहिं जोहार।
करहि पुलकि कोउ दंडवत, कोउ पुनि करहिं दुलार॥

चौपाई।

कृपादृष्टि चितवहिं रघुराई। देहि मोदरस सबकहँ छाई॥
प्रभु पाछे नवलाख मतंगा। बानर भालु चढ़े यक संगा॥
राज राजसुत सचिव अनेकू। चले पंथ जिन यथा विवेकू॥
चढ़ि सतांग मातंग तुरंगा। चले वीर सब भरे उमंगा॥
तिनके पीछे अति सुखसानी। लै सीता गवनीं सब रानी॥
रतन जाल की नवल नालकी। चढ़ीं रानि सब अवध पालकी॥
कौशिल्लै सौतै करि आगे। चलीं अवध मंदिर अनुरागे॥
सहसन संग सहचरी भावैं। महा मनोहर सोहर गावैं॥
विप्र वेदध्वनि मंगल करहीं। लिहे सगुन कर आनँद भरहीं॥
दैविक भौतिक सगुन सोहाये। कहत मनहुँ रघुपति घर आये॥
प्रकृति विप्र मंत्री पुरवासी। चले चहूँ कित आनँदरासी॥
चितवहिं प्रभु मुख ठोरहिं ठोरा। यथा चन्द्रमहि चितव चकोरा॥

दोहा–आगे बजत अनंत तहँ, तुरही अरु करनाल।
डिगत न ताल बँधान में, गावत मधुर विशाल॥

चौपाई।

पढ़त स्वस्ति द्विज मंगल हेतू। मंगल द्रव्य लिये कर सेतू॥
अक्षत सुबरण कन्या गाई। मोदक लिहे पाणि सुखदाई॥
विप्र अनेकन रघुपति आगे। चलेजात अतिशै अनुरागे॥
करत जात प्रभु यही बखाना। सखा न जग सुग्रीव समाना॥
कहौं सत्य नहिं करौं दुराऊ। लख्यों न हनुमत सरिस प्रभाऊ॥

जेहि विधि कियोकर्म रण कीसा। सो अवलों नाहिं सुन्योन दीसा ॥
सुनि सुनि सचिव और पुरवासी। गुनि अचरजअति होत हुलासी ॥
समर कीश निशिचर कर जैसो। भयो कहत प्रभुविधियुत तैसो ॥
निज दल कीशन की अधिकाई। जिमि निशिचर दलकी बहुताई॥
वरणि कहत जब निज रणक्रीड़ा। तब उपजति प्रभु के उर व्रीड़ा ॥
लषण समरबल प्रभु जब कहहीं। सुनि सौमित्र अधोमुख रहहीं ॥
यहि विधि बरणत कथा सुखारी। मंद मंद गवनत धनुधारी ॥

दोहा–सुनत भरत हरषाय अति, पुनि पछिताय लजाय।
शीश नाय प्रभु पाय परि, चितवत आँसु बहाय ॥

कवित्त।

मंद मंद चलत गयंदन के वृन्द वृन्द,
तरल तुरंग रंगरंग के सोहाये हैं।
घर्घरत चक्र रथ भर्भतर पौरजन,
खर्खरत शस्त्रगण शत्रु भीति भाये हैं ॥
देवता विमानन में दशहूँ दिशानन में,
रामचन्द्र आनन चकोर टक लाये हैं।
राजन समाज संग राज राज रघुराज,
अवध दराज दरवाजे लों सिधाये हैं ॥

छन्द गीतिका।

गति भी बजावत दुंदुभी सुर सुमन वृन्दन वर्षहीं।
नाचहिं सुनाकनटी नवल यश विमल गावत हर्षहीं ॥
चहुँओर ठौरहि ठौर माच्यो जयति शोर अथोर है।
चितचोर नृप शिर मौर निज यश भुवन कीन अँजोर है ॥
अस कहहिं सुर पुर जन अगन सजन उरन मुद भूपि भो ॥
रघुवंश हंस प्रशंस करि दिल ते दुसह दुख दूरि भो ॥
निरखत नगर शोभाअमित टोभा सुचित छनि मुरन को ॥
अखंडल मोद मंगल नगर मंडल नरन को।

जेहि भांति बाजत व्यौम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं॥
धृत धनुप कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
वरपहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को॥
द्दग बहति आँसुन धार प्रजन अपार बारहिं बारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुबीर निमिख निवारहीं॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेत में॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारि कै॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं।
वर सन आसन मणिन दीप प्रकाश कराहिं अतूलहीं॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन पट संचार की॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में।
सब भाँति संचै करहु संच विसंच वारि उताल में॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भारि कपिराज को।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय कै॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को।
दीजे मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीर को॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै॥

दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरवर होत प्रभात।
आनहु चारि समुद्रजल, वीर वेग विख्यात॥

छंद गीतिका।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुबरन बनो।
दूसर लियो घट पुरट को कपि वेगदरशी बल घनो॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो।
चौथो विमल घट हाटकी मारुतसुवन निज कर करो॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भापहुँ नृपा॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को।

जेहि भांति बाजत व्योम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं॥
धृत धनुप कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
बरपहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्प विताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार बारहि बारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं॥
दधि दूब तंदुल थार भारि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ बार बार उतारि मणिगण मुद मढ़े॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेत में॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारिकै॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सैन आसन मणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रबाल के ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन पट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति संचै करहु संच विसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भरि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय के ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायके ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजै मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुबीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय के ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय के ॥
दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरखर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, बीर बेग विख्यात ॥

छंद गीतिका ।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुबरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरट को कपि बेगदरशी चल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो ।
चौथो विमल घट हाटकी मारुतसुवन निज कर करो ॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा ।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भापहुँ मृषा ॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को ।

जेहि भांति बाजत व्योम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी ॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी ॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं ।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं ।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके परसहीं ।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दरसहीं ॥
धृत धनुष कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि के ।
बरषहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि के ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकाहिं झूमि झड़ाक दै ।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै ॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष विताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को ॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार वारहिं वारहीं ।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं ॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े ।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मड़े ॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं ।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में ।
आये अनंदित देव बंदित अस्त गिरि रवि लेत में ॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै ।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै ।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारि कै ॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं।
वर सेन आसन मणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन पट संचार की॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में।
सब भाँति संचै करहु संच विसंच वारि उताल में॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भारि कपिराज को।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय कै॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को।
दीजे मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीर को॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै॥
दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरवर होत प्रभात।
आनहु चारि समुद्रजल, वीर वेग विख्यात॥

छंद गीतिका।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुवरन बनो।
दूसर लियो घट पुरट को कपि वेगदरशी बल घनो॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो।
चौथो विमल घट हाटको मारुतसुवन निज कर करो॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भापहुँ मृषा॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को।

जेहि भांति बाजत व्योम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी॥
ऊंची अटा बन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं॥
धृत धनुष कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
बरषहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार वारहिं वारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेत में॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारि कै॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सैन आसन मणिन दीप प्रकाश कराहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन षट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति सँचै करहु संच विसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भारि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय के ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायके ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजि मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय के ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय के ॥

दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरवर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, बीर बेग विख्यात ॥

छंद गीतिका ।

एक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुबरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरट को कपि बेगदरशी बड़ घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो ।
चौथो विमल घट हाटको मारुतसुवन निज कर करो ॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा ।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भाषहुँ मृषा ॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत करि भटन को ।

जेहि भांति बाजत व्योम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी ॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी ॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पसेहीं।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दसेहीं ॥
धृत धनुष कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
बरषहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै ॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार बारहिं बारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं ॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े ॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय बचन बदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव बंदित अस्त गिरि रवि लेत में ॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारिकै ॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सेन आसन मणिन दीप प्रकाश कराहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन षट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति संचै करहु संच विसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भरि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय कै ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजि मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुबीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै ॥

दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरवर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, बीर बेग विख्यात ॥

छंद गीतिका।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुबरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरट को कपि वेगदरशी बल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो ।
चौथो विमल घट हाटकी मारुतसुवन निज कर करो॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा ।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भाषहुँ मृषा ॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को ।

जेहि भांति बाजत व्योंम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी ॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी ॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं।
बहु बिधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं ॥
धृत धनुप कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
बरपहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै ॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को ॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार वारहिं वारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं ॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े ॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेत में ॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारि कै ॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सन आसन मणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के ।
जहँ बने युत बिस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु पारिजातहुँ ऋतुन षट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति संचै करहु संच बिसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भरि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू बिपिनि महँ और बानर वसत भे सुख पाय कै ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजि मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै ॥

दोहा—दिय सुकंठ शासन तुरत, हरवर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, वीर वेग विख्यात ॥

छंद गीतिका ।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुवरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरट को कपि वेगदरशी बल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो ।
चौथो विमल घट हाटको मारुतसुवन निज कर करो ॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा ।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भाषहुँ मृषा ॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को ।

जेहि भांति वाजत व्यौम वाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी ॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी ॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं ।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं ॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं ।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं ॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं ।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं ॥
धृत धनुप कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै ।
वरपहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै ॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै ।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै ॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष विताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को ॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार वारहिं वारहीं ।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुवीर निमिख निवारहीं ॥
दधि दूव तंडुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े ।
रघुवंश मणि कहँ वार वार उतारि मणिगण मुद मढ़े ॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं ।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं ॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में ।
आये अनंदित देव वंदित अस्त गिरि रवि लेत में ॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै ।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै ॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै ।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारिकै ॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सैन आसन मणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहिं बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु परिजातहुँ ऋतुन पट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति संचै करहु संच विसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भरि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय के ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजि मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुबीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै ॥
दोहा–दिय सुकंठ शासन तुरत, हरबर होत प्रभात ।
आनहु चारि समुद्रजल, बीर बेग विख्यात ॥

छंद गीतिका ।

यक कुम्भ लीन्ह्यो ऋक्षराज सुवर्न को सुबरन बनो ।
दूसर लियो घट पुरट को कपि वेगदरशी बल घनो ॥
तीसर लियो कपि ऋषभ कनक सुकलश रतन प्रभा भरो ।
चौथो विमल घट हाटको मारुतसुवन निज कर करो ॥
तब कह्यो केकयसुवन सुनहु सुकंठ प्यारे मम सखा ।
शत पंच सरिता सलिल देहु मँगाय नाहिं भाषहुँ मृषा ॥
सुनि भरत बैन सचैन कपिपति पंच शत कपि भटन को ।

जेहि भांति बाजत व्यौम बाजन नचहिं जिमि सुर सुंदरी॥
तिमि नगर तिय गावहिं सुनाचहिं करत कंकन मुंदरी॥
ऊंची अटा घन घटासी छन छटासी तिय सोहहीं।
कर लाज लीन्हे कुसुम वृन्दन राम मुख शशि जोहहीं॥
प्रति द्वार द्वारन रंभ खंभ सुहेम कुंभ विराजहीं।
तोरण विचित्र सुछाजहीं सिय राम मंगल काजहीं॥
फहरत पताके परम भाके भानु चाके पर्सहीं।
बहु विधि किता के नाक नाके तुंग ताके दर्सहीं॥
धृत धनुप कंध सुदीनबंधु सबंधु आवत देखि कै।
बरषहिं कुसुम तिय लाज संयुत महा मंगल लेखि कै॥
केतीं झरोखन झाँकि झाँकि झुकहिं झूमि झड़ाक दै।
केती कुलीनन कामिनी खोलहिं कपाट कड़ाक दै॥
तेहि समय को सुखअवधको को कहि सकत निरअवध को।
दशचारि वर्ष बिताय रघुपति दरश भो मुद उदधि को॥
दृग बहति आँसुन धार प्रजन अपार बारहि बारहीं।
पुलकित शरीर निहारि श्रीरघुबीर निमिख निवारहीं॥
दधि दूब तंदुल थार भरि भरि द्वार द्वार प्रजा खड़े।
रघुवंश मणि कहँ वार बार उतारि मणिगण मुद मढ़े॥
बहु आरतीन उतारतीं तरुनी सुतन मन वारतीं।
जय वचन वदन उचारि ब्रह्मानंद तुच्छ विचारतीं॥
यहि भाँति प्रभु सुख देत बंधु समेत जकन निकेत में।
आये अनंदित देव बंदित अस्त गिरि रवि लेत में॥
पितु महल द्वारे रोकि रथ प्रभु कह्यो भरत बुझाय कै।
लै जाहु तीनहुँ मातु अंतहपुरहि विनय सुनाय कै॥
सिय जाय अपने महल मातुन संग सुदिन विचारि कै।
कपिराज को तुम कर पकरि लै जाहु प्रेम पसारि कै॥

मंडित महा मणि मोर मंदिर मुक्ति झालर झूलहीं ।
वर सेन आसन मणिन दीप प्रकाश करहिं अतूलहीं ॥
वैडूर्य्य मणि मय भूमि जहँ कोमल कपाट प्रवाल के ।
जहँ बने युत विस्तार वर प्राकार रतनन जाल के ॥
जेहि बीचवनी अशोक नामा वाटिका सुविहार की ।
मंदार द्रुम अरु पारिजातहुँ ऋतुन पट संचार की ॥
तेहि महल माहिं नेवास देहु कपीश को यहि काल में ।
सब भाँति संचै करहु संच बिसंच वारि उताल में ॥
सुनि राम शासन भरत आसु हुलास भारि कपिराज को ।
करपकरि लायो कनकभवन नेवास दिय सुख शाहको ॥
सरयू विपिनि महँ और वानर वसत भे सुख पाय कै ॥
अनुराग नेह देखाय बोले भरत सुगल बोलायकै ॥
रामाभिषेक प्रभात ह्वैहै चारि सिंधुन नीर को ।
दीजि मँगाय पठाय कपि है अति अवशि रघुवीर को ॥
अस कहिपुरट घट जटितरतननचारु चटक मँगाय कै ।
दीन्ह्यो कपिन कर भरत जेहिं जस अनुहरत अतुराय कै ॥
दो॰ ... ।।सन तुरन्त हरवर होत प्रभात ।
... समुद्र ... बेग बिख्यात ॥

...ता ।

... सुवर्न को सुघरन बनो ।
... कपि वेगदर... नल घनो ॥
... कनक ... ान प्रभा भरो ।
...ौ ... कर करो ॥
सुनहु ... मम सखा ।
...लिल ... ई भापहुँ मृपा ॥
ान ... ात कपि भटन को ।

दीन्ह्यो तुरत शासन हरषि लै चले पुरटन घटन को ॥
तहँ गवै और सुषेन आदिक बीर अति अतुरातहीं।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चार बीर सुनीर चारि समुद्र को।
ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरष सुर अज रुद्र को ॥
प्रभु सकल बंधुन सहित दशरथ महल कीन नेवास है।
तहँ गुरु बशिष्ठहुँ आय बोल्यो वचन बलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजै नेम यहि निशि काल्हि तुव अभिषेक है।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यौ।
अवलंब आप प्रताप को कछु और मेरे नहिं रह्यौ ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जबै हिय हरषि कै।
तब सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद बरषि कै ॥
तेहि रैन माच्यौ चैन पुरजन शैन अैन किये नहीं।
बोलत परसपर बैन निरख बनैन प्रभु अभिषेकहीं ॥
जिमि हन्यौ रावण कुंभकरणहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुंदुभी ॥
विधि सों मनावत आजु आवत अबहिं रवि प्राची दिसा।
तौ जन्म भरि हम पूजते सुख गावते तेरी किसा ॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होत में।
कीजै विघन को निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोत मैं ॥
जननी कराहिं रनिवास महँ सुविलास हास हुलास को।
वर वास वास सुवास वासित रचहिं भूषण वास को ॥
विज्ञप्ति कराहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्ग को।
निशि के विसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्ग को ॥
अस को भुवन जेहि रामतिलकहिदेखन को अभिलापना॥

प्रभु दास हीन उपासना को कौन जाके आस ना ॥
सरभर मच्यो कोशलनगर सव डगर डगरहुँ वगर में ।
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर मधि अरुकगरमें ॥
पुरजन सकल प्रभु नजर हित भूपण वसन साजन लगे ।
बाँकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहि पगे ॥
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथ में ।
प्रभु निकट वैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथ में ॥
जव रही वाको याम निशि तव सचिव सव यक संगहीं ।
रिपुशाल सों कीन्हे विनै रघुराज तिलक उमंगहीं ॥
मज्जन करावहु नाथ को सज्जन सकल वोलवाय कै ।
गुरु को वोलावहु आस इत उत जाय पद शिर नाय कै ॥
रिपुशाल सुनि मंत्रिन वचन चलि कह्यो जाय वशिष्ठ को ।
पग धारि तहँ सव साज साजहु करहु कारज इष्ट को ॥
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जाय कै ।
आयो द्रुतहि पुनि राजमँदिर सकल सचिव लेवाय कै ॥
सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि ।
सोई भवन प्रधान, राम राज अभिपेक हित ॥
कोटिन भानु प्रकाश, सिंहासन वहु मणि मयो ।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखै ॥

कवित्त।

पूरी चौक मोतिन सों मंडित मणीन मंजु,
रचि रचि वरण विचित्र रतनावली ।
विविध किता के फहरात हैं पताके मनो,
शरद घटा के मध्य राजतीं वकावली ॥
तोरन तड़पदार झालरें झुकींअपार,
राजें वार वार मानों थिर तड़ितावली ।

दीन्ह्यो तुरत शासन हरपि लै चले पुरटन घटन को ॥
तहँ गवै और सुपेन आदिक वीर अति अतुरातहीं ।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चार बीर सुनीर चारि समुद्र को ।
ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरप सुर अज रुद्र को ॥
प्रभु सकल बंधुन सहित दशरथ महल कीन नेवास है ।
तहँ गुरु वशिष्ठहुँ आय बोल्यो वचन बलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजै नेम यहि निशि कालिह तुव अभिपेक है।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यो ।
अवलंब आप प्रताप को कछु और मेरे नहिं रह्यो ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जवै हिय हरपि कै ।
तव संहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद वरपि कै ॥
तेहि रैन मान्यौ चैन पुरजन शैन अैन किये नहीं ।
बोलत परसपर बैन निरख वनैन प्रभु अभिपेकहीं ॥
जिमि हन्यौ रावण कुंभकरणहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुंदुभी ॥
विधि सों मनावत आजु आवत अवहिं रवि प्राची दिसा ।
तौ जन्म भरि हम पूजते मुख गावते तेरी किसा ॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होत मैं ।
कीजै विघन को निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोत मैं ॥
जननी कराहिं रनिवास महँ सुविलास हास हुलास को ।
वर वास वास सुवास वासित रचाहिं भूपण वास को ॥
विज्ञति कराहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्ग को ।
निशि के विसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्ग को ॥
अस को भुवन जेहि रामतिलकहिलखन को अभिलापना॥

प्रभु दास होन उपासना की कौन जाके आस ना ॥
खरभर मच्यो कोशलनगर सब डगर डगरहुँ बगर में ।
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर मधि अरुकगरमें ॥
पुरजन सकल प्रभु नजर हित भूपण वसन साजन लगे ।
बाँकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहि पगे ॥
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथ में ।
प्रभु निकट बैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथ में ॥
जब रही बाकी याम निशि तब सचिव सब यक संगहीं ।
रिपुशाल सों कीन्हे विनै रघुराज तिलक उमंगहीं ॥
मज्जन करावहु नाथ को सज्जन सकल बोलवाय के ।
गुरु को बोलावहु आस इत उत जाय पद शिर नाय के ॥
रिपुशाल सुनि मंत्रिन वचन चलि कह्यो जाय वशिष्ट को ।
पग धारि तहँ सब साज साजहु करहु कारज इष्ट को ॥
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जाय के ।
आयो द्रुतहि पुनि राजमँदिर सकल सचिव लेवाय के ॥
सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि ।
सोई भवन प्रधान, राम राज अभिषेक हित ॥
कोटिन भानु प्रकाश, सिंहासन बहु मणि मयो ।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखे ॥

कवित्त।

पूरो चौक मोतिन सो मंडित मणीन मंजु,
रचि रचि वरण विचित्र रतनावली ।
विविध किता के फहरात हैं पताके मनो,
शरद घटा के मध्य राजती बकावली ॥
तोरन तड़पदार झालरैं झुकीं अपार,
राजें द्वार द्वार मानों थिर तड़ितावली ।

दीन्ह्यो तुरत शासन हरषि लै चले पुरटन घटन को ॥
तहँ गवै और सुषेन आदिक बीर अति अतुरातहीं।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चार बीर सुनीर चारि समुद्र को।
ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरष सुर अज रुद्र को ॥
प्रभु सकल बंधुन सहित दशरथ महल कीन नेवास है।
तहँ गुरु बशिष्ठहुँ आय बोल्यो बचन बलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजै नेम यहि निशि कालिह तुव अभिषेक है।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यौ।
अवलंब आप प्रताप को कछु और मेरे नहिं रह्यौ ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जबै हिय हरषि कै।
तब सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद बरषि कै ॥
तेहि रैन माच्यौ चैन पुरजन शैन ऐन किये नहीं।
बोलत परसपर बैन निरख बनैन प्रभु अभिषेकहीं ॥
जिमि हन्यौ रावण कुंभकरणहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुदुंभी ॥
विधि सों मनावत आजु आवत अबहिं रवि प्राची दिसा।
तौ जन्म भरि हम पूजते मुख गावते तेरी किसा ॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहि होत में।
कीजै विघन को निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोत में ॥
जननी कराहिं रनिवास महँ सुविलास हास हुलास को।
बर बास बास सुवास बासित रचाहिं भूषण बास को ॥
विज्ञप्ति कराहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्ग को।
निशि के निसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्ग को ॥
अस को भुवन जेहि रामतिलकहिलखन को अभिलापना॥

प्रभु दास हीन उपासना की कौन जाके आस ना ॥
खरभर मच्यो कोशलनगर सब डगर डगरहुँ बगर में।
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर मधि अरुकगरमें ॥
पुरजन सकल प्रभु नजर हित भूषण वसन साजन लगे।
बाँकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहि पगे ॥
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथ में।
प्रभु निकट बैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथ में ॥
जब रही बाकी याम निशि तब सचिव सब यक संगहीं।
रिपुशाल सों कीन्हे विनै रघुराज तिलक उमंगहीं ॥
मज्जन करावहु नाथ को सज्जन सकल बोलवाय के।
गुरु को बोलावहु आस इत उत जाय पद शिर नाय के ॥
रिपुशाल सुनि मंत्रिन वचन चलि कह्यो जाय वशिष्ठ को।
पग धारि तहँ सब साज साजहु करहु कारज इष्ट को ॥
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जाय के।
आयो द्रुतहि पुनि राजमँदिर सकल सचिव लेवाय के ॥

सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि।
सोई भवन प्रधान, राम राज अभिषेक हित ॥
कोटिन भानु प्रकाश, सिंहासन बहु मणि मयो।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखै ॥

कवित्त।

पूरी चौक मोतिन सों मंडित मणीन मंजु,
रचि रचि बरण विचित्र रतनावली।
विविध किता के फहरात हैं पताके मनो,
शरद घटा के मध्य राजतीं बकावली ॥
तोरन तड़पदार झालरें झुकींअपार,
राजें बार बार मानों थिर तड़ितावली।

दीन्ह्यो तुरत शासन हरपि लैं चले पुरटन घटन को ॥
तहँ गवै औंर सुषेन आदिक वीर अति अतुरातहीं।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं ॥
हनुमान आदिक चार वीर सुनीर चारि समुद्र को।
ल्याये निशा बीतत हरपि करि हरष सुर अज रुद्र को ॥
प्रभु सकल वंधुन सहित दशरथ महल कीन नेवास है।
तहँ गुरु वशिष्ठहुँ आय बोल्यो वचन वलित हुलास है ॥
सिय सहित कीजै नेम यहि निशि काल्हि तुव अभिपेक है।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है ॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यो।
अवलंब आप प्रताप को कछु औंर मेरे नहिं रह्यो ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जवै हिय हरपि कै।
तव सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद वरपि कै ॥
तेहि रैन माच्यौ चैन पुरजन शैन अैन किये नहीं।
बोलत परसपर बैन निरख वनैन प्रभु अभिपेकहीं ॥
जिमि हन्यौ रावण कुंभकरणहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर वजावत दुदुंभी ॥
विधि सों मनावत आजु आवत अवहिं रवि प्राची दिसा।
तौ जन्म भरि हम पूजते मुख गावते तेरी किसा ॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होत में।
कीजे विघन को निधन सव मिलि हिये हर्ष उदोत में ॥
जननी कराहिं रनिवास महँ सुविलास हास हुलास को।
वर वास वास सुवास वासित रचाहिं भूपण वास को ॥
विज्ञप्ति कराहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्ग को।
निशि के निसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उतसर्ग को॥
अस को भुवन जेहि रामतिलकहिलखन को अभिलापना॥

प्रभु दास होन उपासना की कौन जाके आस ना ॥
खरभर मच्यो कोशलनगर सब डगर डगरहुँ वगर में ।
मणि जगर मगर प्रकाश सुरभित अगर मधि अरुकगरमें ॥
पुरजन सकल प्रभु नजर हित भूपण वसन साजन लगे ।
बाँकी निशा पूछहिं पहरुवन क्षणहिं क्षण प्रेमहि पगे ॥
रिपुहन भरत सुग्रीव निशिचर नाथ एकहिं साथ में ।
प्रभु निकट वैठे कहत गाथहिं प्रेम पगि रघुनाथ में ॥
जब रही बाको याम निशि तब सचिव सब यक संगहीं ।
रिपुशाल सों कीन्हे विनै रघुराज तिलक उमंगहीं ॥
मज्जन करावहु नाथ को सज्जन सकल वोलवाय के ।
गुरु को वोलावहु आस इत उत जाय पद शिर नाय के ॥
रिपुशाल सुनि मंत्रिन वचन चलि कह्यो जाय वशिष्ठ को ।
पग धारि तहँ सब साज साजहु करहु कारज इष्ट को ॥
गुरु सुनत अति अतुराय मज्जन कीन सरयू जाय के ।
आयो द्रुतहि पुनि राजमँदिर सकल सचिव लेवाय के ॥

सोरठा–मंदर मेरु समान, लजत हिमाचल जाहि लखि ।
सोई भवन प्रधान, राम राज अभिपेक हित ॥
कोटिन भानु प्रकाश, सिंहासन वहु मणि मयो ।
गुरु मँगाय सहुलास, धरवायो उत्तर मुखै ॥

कवित्त ।

पूरी चौक मोतिन सों मंडित मणीन मंजु,
रचि रचि वरण विचित्र रतनावली ।
विविध किता के फहरात हैं पताके मनो,
शरद घटा के मध्य राजतीं वकावली ॥
तोरन तड़पदार झालरें झुकींअपार,
राजें वार वार मानों थिर तड़ितावली ।

दीन्ह्यो तुरत शासन हरषि लैं चले पुरटन घटन को॥
तहँ गवे और सुपेन आदिक वीर अति अतुरातहीं।
शत पंच सरिता सलिल ल्याये नेक नभ अरुणातहीं॥
हनुमान आदिक चार वीर सुनीर चारि समुद्र को।
ल्याये निशा बीतत हरषि करि हरप सुर अज रुद्र को॥
प्रभु सकल बंधुन सहित दशरथ महल कीन नेवास है।
तहँ गुरु वशिष्ठहुँ आय बोल्यो वचन वलित हुलास है॥
सिय सहित कीजै नेम यहि निशि कालिह तुव अभिषेक है।
विधि सकल जानी रावरे की यथा जौन विवेक है॥
प्रभु नाय गुरुपद शीश पंकजपाणि जोरे हँसि कह्यौ।
अवलंब आप प्रताप को कछु और मेरे नहिं रह्यौ॥
गवने निवेसहि दै निदेशहि गुरु जबै हिय हरषि कै।
तब सहित सिय रघुनाथ निवसे नेम युत मुद बरषि कै॥
तेहि रैन माच्यौ चैन पुरजन शैन ऐन किये नहीं।
बोलत परसपर बैन निरख बनैन प्रभु अभिषेकहीं॥
जिमि हन्यौ रावण कुंभकरणहि जिमि हत्यो रिपु दुंदुभी।
थल थल प्रजा यह सुयश गावत कर बजावत दुदुंभी॥
विधि सों मनावत आजु आवत अबहिं रवि प्राची दिसा।
तौ जन्म भरि हम पूजते सुख गावते तेरी किसा॥
नर नारि देव मनावहीं रघुनाथ तिलकहिं होत मैं।
कीजै विघन को निधन सब मिलि हिये हर्ष उदोत मैं॥
जननी करहिं रनिवास महँ सुविलास हास हुलास को।
वर वास वास सुवास वासित रचहिं भूषण वास को॥
विज्ञप्ति करहिं सवर्ग भर्गहि अग्र दिशि संसर्ग को।
निशि के विसर्गहि गर्ग भार्गव किय तिलक उत्सर्ग को॥
अस को भुवन जेहि रामतिलकहिलखन को अभिलापना॥

दोहा–को बरणै रघुवंशमणि, होन्ह्यो जेतो दान।
भूमंडल के द्विजन को, दारिद देखि डरान॥
सोरठा–उदैमान जब भानु, भे प्रसन्न प्राची दिशा।
बाजे अमित निशान, मच्यो नगर खरभर महा॥

चौपाई।

राम राज अभिषेक अनन्दा। सुनि सुनि आये नागर वृन्दा॥
नचहिं अंगना अंगन केती। प्रमुदित राम राज हित हेती॥
गायक गावहिं गुन गन गीता। होय सुयश सुनि भुवन पुनीता॥
नचहिं अप्सरा अनुपम रूपा। खड़े देन बलि अगणित भूपा॥
खैर भैर मचिरह्यो अवधपुर। मंगल पढ़त अनेकन भूसुर॥
गुरु वशिष्ठ तेहि अवसर आये। मुनिन वृन्द सानंद सोहाये॥
बोलि लषण बोले अस बानी। आनहु जनकसुता छबिखानी॥
सीतहि ल्याये तुरत लेवाई। रही तहां चहुँकित छबिछाई॥
सीता रामहिं संग लेवाई। चले मुनीश स्वस्तयनगाई॥
तीनिहुँ बंधु संग अति सोहैं। होत लोकपति लखत लजोहैं॥
कपिपति निशिचरपतिदोउ राजैं। अंगद हनुमत सहित समाजैं॥
देश देश के भूपति भारी। किये सफल दृग राम निहारी॥
कराहि दरश कहिजै रघुराजा। पावहि प्रजा प्रमोद दराजा॥

दोहा–राज तिलक रघुराज कर, होत आज छबि छाज।
राज काज करि करहिंगे,प्रमुदित प्रजा समाज॥

चौपाई।

बजत मनोहर नोहर बाजे। जिन सुनि गगन सघन घन लाजे॥
कलशावली मातु पठवाई। सुंदर सखी साजि सब आई॥
भरि सब सगुन सुकंचन थारा। गावत मंगल नारिंद चारा॥
आगे चलीं सिंगार सँवारे। प्रतीहार तेहि समय पुकारे॥
निज निज थल बैठहिं सब भूपा। लै बलि निज कर निजअनुरूपा॥

राम रघुराज अभिषेक की सजो है साज,
गाय उठे बंदीजन वेद विरदावली ॥
चारि दंड बाँकी निशि जानिकै भरत भूरि,
भद्र भोर होत जेठ भ्राता भौन आयो है।
कोमल कमल कर कमल चरण चापि,
उमंगि अनंद मंद मंदहीं जगायो है ॥
भाष्यो रघुराज रघुकुल शिरताज सुनौ,
आजु अभिषेक साज सकल सजायो है।
मज्जन करीजै दान दीजै सब सज्जन को,
छज्जन में थोर थोर भानु भास छायो है ॥
जानिकै प्रभात प्रभु मीजि जलजात नैन,
उठे अंगिरात अलकावली सँभारयो है।
भरत लषण रिपुसूदन अनिलसुत,
सुगल विभीषण प्रणाम को उचारयोहै ॥
रघुराज आशिष दै कीन्हे प्रातकर्म सब,
मज्जन कै नाथ रंगमंदिर पधारयो है।
बंदि कुलदेव करि सेव बोलि भूमिदेव,
देन लागे दान भे बमन ते बिसारयो है ॥
गज नगरट्ट दैकै बाजिन के ठट्ट दैकै,
ग्राम धाम दैकै विप्र वृन्द सतकारे हैं।
अन्न के अचल दैकै अविचल वृत्ति कैकै,
दिये हेमाचल ते हेमाचल ते भारे हैं ॥
देखि राम दान मूँद्यो गिरि को गिरीश माया,
मूँद्यो मघ बाहू मेरु में बन कतारे हैं।
कोशलेश कीरति प्रकाश के करत रन,
ताचल सुमेरु द्युति दुगुनो पसारे हैं ॥

ठाढ़ो दिशि दाहिने लषण लीन्हे चारु चौंर,
दूजो चौंर चालें वाम ठाढ़ो शत्रुशाल है ।
छत्र छपानाथ सो विराजत भरत कर,
आतपत्र लीन्हे खड़ो कीश कुलपाल है ॥
सिंहध्वज हेमदंड फहरैं पताक तुंग,
ठाढ़ो लै निशाचरेश विक्रम विशाल है ।
रघुराज राज राजवदन विलोकै खड़ो,
लीन्हे छरी जोरे कर आगे वायु लाल है ॥
पानदान लैकै ठाढ़ो ऋक्षराज ओजवान,
पीकदान लीन्हे त्यों निषादराज भायो है ।
नील नल दुविद मयंद आदि कीश केते,
सोंटे कर धारे महा मोदरस छायो है ॥
अंगद मुकुर लीन्हे थार लै सुमंत ठाढ़ो,
तैसहीं नरेन्द्रन को वृन्द छवि छायो है ।
एक ओर ठाढ़ो पुरवासिन को मंडल,
अखंडल उदंड रघुराज यश गायो है ।
दोहा–आयो समै सोहावनो, देव दुंदुभी दीन ।
गुरु वशिष्ठ सब मुनिनको, बोले परम प्रवीन ॥

चौपाई ।

नहु बिजे कश्यप जावाली । कात्यायन गौतम तपशाली ॥
मदेव आदिक ऋपिराई । राज तिलक बेला अब आई ॥
रहु राम अभिषेक सोहावन । लेहु बनाय जन्म निज पावन ॥
अस कहि लियो कमंडलु हाथा । लाग्यो पढ़न वेद मुद गाथा ॥
लग्यो करन रघुपति अभिषेका । वेदमंत्र पढ़ि सहित विवेका ॥
वामदेव आदिक ऋपिराई । करन लगे अभिषेक तहाँई ॥
रही वेदध्वनि चहुँकित छाई । जय जय प्रजा करहिं सुखपाई ॥
किय अभिषेक प्रथम गुरु ज्ञानी । पुनिसबमुनिविधिवतमतिखानी॥

होत तिलक रघुकुल मणिकेरो । विरह निशा गै भयो सवेरो ॥
निज निज थल बैठे सब राजा । खड़ी अवध पुर प्रजा समाजा ॥
तेहि अवसर रघुनन्दन आये । तिलक भवन अंगन छविछाये ॥
जननी अटन झरोखन बैठीं । पेखि प्रमोद पयोनिधि पैठीं ॥
रघुपति राज तिलक अनुरागीं । अगणित मणिन लुटावन लागीं ॥
वंदी विरदावली उचारैं । नभ ते कुसुम देवगण झारैं ॥
भूमि गगन माच्यो जयकारा । रह्यो न तनकर तनकसम्हारा ॥
सोरठा–मुनि वशिष्ट तेहि काल, कह्यो वचन हँसि राम सों ।
सिंहासन छविजाल, बैठहु सीता सहित अब ॥

कवित्त ।

पद्मराग मर्कत मणीन्द्र नीलमणि केरी,
विविध किता की लता लसैं चहुँ ओर हैं ।
सूर्य्यमणि चन्द्रमणि चिंतामणि चारु राजैं,
औरहू अमोल लागे रतन करोर हैं ॥
कोटि भानु भास भायो रतन सिंहासन को,
सुर नर मुनिन के मानस भे भोर हैं ।
गुरु अनुशासन ते बैठिगे सिंहासन में,
जानकी समेत रघुवंश शिरमौर हैं ॥
राम वाम भाग महाभाग मिथिलेश जू को,
राजति कुमारी जापै रति वलिहारी है ।
अभिनव विमल तमाल केसमीप मानो,
सोन जुही वल्लरी प्रफुल्लित निहारी है ।
श्यामघन निकट विराजै मनो राका चंद,
नीलमणि वाम हेम लोकसी निकारी है ।
सहित सिंगार ढिग वपुल सिंगार मानो,
राजै रघुराज रतिरूप को समारी है ॥

धरणिभारहारक महोत्तम महामते ॥
रघुराज राज राज भूपति समाज वंध,
मुनिजन मोद करापहृत स्वजनक्षते ।
पाहि रघुवंश कुल कमल दिनेश देव,
देव शोक दावानल मेघ महतां गते ॥

दोहा—लोकपाल चारिउ तहाँ, जोरे देव समाज ।
जोरि पाणि अस्तुति करत, कहि जय जय रघुराज ॥

छन्द गीतिका ।

जय राम राघव रामचन्द्र रमेश रघुवर वर हरे ।
रघुवंशभूषण रहितदूषण निहतदूषण नरहरे ॥
जय जय मुरारे रावणारे राघवेन्द्र दयानिधे ।
माधव मुकुंद महेश वंदित मधुविनाशन भानिधे ॥
संसारपारवारतारक विश्वधारक भूपते ।
आत्मप्रकाश निरस्तमायाभास सपदि सतांगते ॥
कलिकालविलुलितधर्मकर्मकुशीलकलमपकारिणाम् ।
उद्धारकारणमिह जगति चरणांबुजं संसारिणाम् ॥
दशकंठकृतभयभार हारक सदुपकारक धर्मिणाम् ।
सौजन्यमार्दवगुणवलित साहाय्यकर दिविचारिणाम् ॥
जगदंबिकाश्रितवामभाग जनापदादविभावसो ।
रघुराज तव पद पंकजं वंदामहे सिलजगद सो ॥

दोहा—यहिविधि करि अस्तुति अमर, सहित सबै करतार ।
प्रभुपद वंदन करि सुखो, निज निज गये अगार ॥
तब देवर्षि महर्षि गण, अस्तुति किये बखानि ।
जय जगजीवन जगत को, जान जानकी जानि ॥

छंद नराच ।

नमोच्युतायराघवाय रावनान्तकारिने ।
विदेहकन्यकाप्रियाय रानधर्मधारिने ॥

जिमि वसु किय वासव अभिषेका। तिमि सबमुनिरघुपतिसविवेका॥
पुनि ऋत्विज अभिषेकहि कीन्हे । पुनि अभिषेक विप्र करि दीन्हे॥
आई पुनि द्विज सुता कुमारी । किय अभिषेक सुगंधित वारी॥
मंत्री वर्ग सकल पुनि आये । करि अभिषेक महा सुख पाये॥

दोहा—सकल सुभट सामंत पुनि, कियों राम अभिषेक
वेद प्रमाण विधान ते, भयो न कछु वितरेक॥

चौपाई।

तेहि अवसर आये सुर नाना । लगे गगन महँ ठट्ट विमाना॥
लोक पाल युत सब मुख चारी। लीन्ह्यो देव समाज हंकारी॥
आयो सभा मध्य करतारा। सहित युगल अश्विनी कुमारा॥
लीन्हे कनकथार कर माहीं। दिव्य किरीट धरयो तेहि पाहीं॥
कोटि भानु सम भास प्रकासी । जटितदिव्य मणि गण छविरासी॥
मनु अभिषेक भयो जेहि काला । रच्यो विरंचि किरीट विशाला॥
सो किरीट प्रभु कहँ पहिरायो । बार बार चरणन शिर नायो॥
लग्यो करन अस्तुति मुखचारी । बार बार दृग ढारत वारी॥
जय करुणाकर जय रघुनन्दन । सुर कुलसुखदायक मुनि चन्दन॥
जय कमलामुख पंकज षट पद । त्वद्दते दीनोद्धर इतिकोवद॥
जयजय निशिचर वंश विनाशिन। परब्रह्म परविभव विकाशिन॥
जय करुणा वरुणालय रूपा । जय जय केशव कौशल भूपा॥

दोहा—तव पदपंकजमिद्दं, ये ध्यायंति परेश।
तेषामिह भवसागरे, भयंभवति रमेश॥
तेहि औसर कैलासपति, आये सभा मँझार।
प्रभु प्रणाम करि पुलकि तन, कीन्हे वचन उचार॥

रूप घनाक्षरी।

जय जय जय राम रमाप्रेष्ठ विश्वाधार,
सर्वगत सर्वपर सर्वनुत सुरपते।
प्राथितप्रताप पूर्णरूप निगमागमज्ञ,

यथायोग सबको कीन्हे प्रभु सकल भाँति सतकारा।
पुनि पुरजन मंत्रीजन सिगरे दीन्हे नज़रि अपारा॥
नचहिं अपसरा भाव बतावहिं चमकि चमकि चपलासी।
करहिं गान गंधर्व सर्व तहँ क्षण क्षण दरशन आसी॥
राम राज अभिषेक होत महँ अति प्रसन्न ह्वै धरनी।
उपजायो सब अन्न अधिक अति भूरि भद्र भल भरनी॥
फूले फरे वृक्ष गृह कानन काल अकाल बिसारी।
रहीं छाय सुरभी चहुँओरन ठौरन ठौरन भारी॥
दिशा प्रसन्न सन्न जग कंटक बहति सुमंद बयारी।
भयो विमल जल सरित सरन सब खग मृग भये सुखारी॥
रहित उपाधि रोग अरु दोषहुं भूमि भई रमनीया।
काम क्रोध मद लोभ मोह वश कोउ न क्रिया करनीया॥
रह्यो दंड यक जतिन हाँथ में रागताल महँ भेदू।
कुटिलाई केसन महँ देखी श्रम शास्त्रन अरु वेदू॥
रोष दोष परलोभ धर्म पर काम नारि निज माहीं।
वैर पाप तजि और ठौर कहुँ राम राज महँ नाहीं॥
आश एक प्रभु पद सेवन महँ रह्यो पशुन महँ मोहू।
मत्सर रोग विभौ महँ रहिगो कुत्सित वस्तु न कोहू॥
रह्यो द्विरदगण महँ मद मंडित हारिल में हठताई।
आतुरता तुरंग वृन्दन महँ गगन शूनता छाई॥
जड़ताई रतनन महँ देखी गर्व गुणन को बाढ़ो।
बहत एक सरिताजल निर्मल शोच समर को गाढ़ो॥
जबते राजतिलक रघुपति को अवध नगर महँ भयऊ।
पितु आगे नहिं मरयो कतहुँ सुत कोहुँ कर धर्म न गयऊ॥
राम राज मंगलमय वसुधा याग योग जग जागा।
बड़भागा जन कृत अनुरागा वरनहिं माहँ विभागा॥
तेहि अवसर कर जोरि सुमंत महा मतिवंत बखान्यो।

श्रुतेस्समुद्धरायमीन रूपिणेऽब्धिचारिणे।
पयोधिमन्थनायकूर्म्म रूपभृद्विहारिणे॥
नृसिंहरूपिणेप्रधान दैत्यवर्य्यदारिणे।
धरोद्धरादि शूकराय हेमदृक्प्रहारिणे॥
वलिच्छलायवामनाय दैत्यराज्यहारिणे।
निकृन्तदुष्टराजवंश सन्महोपकारिणे॥
रघूद्वहप्रभोविकुण्ठ तोऽतिवर्य्यभूतले।
निहत्यदेवतारिपून् विराजतोऽद्यकोशले॥
ऋतेभवन्तमद्यकोऽवितासुरार्ति हारकः।
दिगन्तकीर्तिकारको दशास्यदर्पदारकः॥
नमामिकोशलाधिराज जानकीवरप्रभो।
प्रसीद लक्ष्मणाग्रजप्रपन्नवृन्द को विभो॥
अजश्शिवस्सुराधिपस्सुराश्चतेपदानुगाः।
कृपाकटाक्षपालिता भवावितादिजाँश्चगाः॥

दोहा—यहिविधि करि अस्तुति जवै, सुर मुनि गे निज धाम।
वासव प्रेरित वायु तव, आयो जहँ श्रीराम॥

छंद रोला।

बने कनक के कमल प्रकाशित महा मनोहर माला।
चन्द्र सूर्यमणि जटित रतन वहु लख्यो न कोउ केहुँ काला॥
सो पहिरायो रघुनंदन को चरण कमल शिर नायो।
सानँदन करि विनै प्रभंजन अस्तुति अमल सुनायो॥
चिंतामणि को हार दियो पुनि जनकलली पद वंदी।
करि प्रणाम अभिराम राम पद गवन्यो अनिल अनंदी॥
तेहि दिनको सुख कहौं कौन विधि सकैं न शेष वखानी।
ताहू पै पुनि अवध निवासिन जिन प्रभु मानत प्रानी॥
वैठे अगणित भूप सभा महँ पृथक पृथक ते आई।
हय गय भूषण वसन रतनगन दिये नजरि शिर नाई॥

नकुमारहिं निकट बोलाई। अपने कर दीन्ह्यो पहिराई॥
न भूषण बहुविधि पहिरायो। हनूमान चरणन शिर नायो॥
यो जान प्रभु उत्तम हारा। सिय उतारि गळ ते विन वारा॥
कर हार विलोकन लागी। देहुँ काहिको पिय अनुरागी॥
ानि जानकी रुख रघुराई। बोले वचन मंद मुसक्याई॥
जापर होहु प्रसन्न पियारो। दीजे हारविलंव निसारी॥
तेज बुद्धि यश धीर बड़ाई। समरथता नय चातुरताई॥
विनें बड़ाई विक्रम वारो। सो तुव कर पावे यह हारो॥

दोहा–सिय पिय वाणी सुनतहीं, सब गुण सहित विचारि।
हनूमान के कंठ में, दियो हार सो डारि॥
पहिरि हार सोह्यो सभा, पवनकुमार अपार।
चन्द्र किरणिसितघन सहित, जैसो पुरट पहार॥
दंत दाबि यक हार मणि, फोरयो पवनकुमार॥
तब बिसमित ह्वै लंकपति, कीन्ह्यो वचन उचार॥
यदपि पवनसुत बुद्धि वर, विक्रम तेज अपार।
कपि नहिं जानत रतन गति, फोरत कौन विचार॥
हनूमान बोल्यो वचन, मैं फोरयो यहि हेत।
राम नाम अंकित मणिन देखन हित कुलकेत॥
साभिमान कह लंकपति, मणि अंतर नहिं नाम।
तन अंतर कहँ नाम है, अस जानहुं बलधाम॥

कवित्त।

सुनत बिभीषण के वैन वायुसूनु बोल्यो,
राम नाम अंकित न राखे तन कौन काम।
भाषि साभिमान निज वज्र नख नोकन सों,
चीरयो चित्त चायके चटक तनहीं को चाम॥
रघुराज जानको लषण बहु वारयो ताहि,
हाय हाय ह्वै रह्यो सभा में अरु धाम धाम।

दान द्रव्य हाजिर हुजूर महँ देहु नाथ मन मान्यो ॥
तब प्रसन्न ह्वै अतिहिं सचिव पर दान देन प्रभु लागे।
जनित अभाग भिक्षुकन के भव दारिद दूरहि भागे ॥
रतन साज साजित तुरंग नव लाखन दियो तुरंता।
दियो अनेकन अरबुद सुरभी सविधि सवत्स अनंता ॥
दियो अनंतन वृषभ कनक मढ़ि विप्रन पात्र विचारी।
तीस अर्व सुवरण की मुद्रा पाये भूमि भिखारी ॥
रतन अदूषण भूषण अगणित पूषण सरिस प्रकाशी।
दियो द्विजन कहँ रघुकुल भूषण रण खरदूषण नाशी ॥
मत्त मतंग उतंग डील के सुवरण साज समारे।
महा मोल्य अंवर डिगंवरन दै दै वहु सतकारे ॥

दोहा—रघुकुल कमल दिनेश की, वही दान की धार।
दालिद्रिन के दारिदन, कियो सिंधु के पार ॥

सवैया।

शशि सूर मणीन की माल मनोहर सूरज ज्योति सो भासकरे।
तिहुँ लोक में मोल है तासु नहीं सुर वृन्द विलोकत शंक भरे ॥
पहिराय दियो कपिराय को सो रघुराज सहर्ष उठाय करे।
मणिमाल सों मंडित कीश भयो कनकाचल में चपला ज्यों थिरे ॥

दोहा—पुनि अमोल अंगद युगल, अंगद को प्रभु दीन।
लगीं अनेकन चन्द्रमणि होत न कबहुँ मलीन ॥
उभै भुजन अंगद पहिरि, राज्यो वालिकुमार।
मेरु उभैदिशि रवि शशी, यथा पर्व भिनुसार ॥

चौपाई।

पुनि जो प्रभुहिपवन दिये हारा। लगीं महामणि सुछवि अपारा ॥
तेज तरंग उठे चहुँ ओरा। ले कर हार भूप शिर मोरा ॥
जनकसुतै दीन्ह्यो पहिराई। शशिकर सरिस रही छविछाई ॥
सिय इक सखी तुरंत बोलाई। अति उत्तम पट युगल मंगाई ॥

भरत कह्यो हाजिर हजूर महँ जो मन भावै देहू।
हम नहिं उऋण जन्मभरि इनसों दोऊ निवाह्यो नेहू॥
अस कहि सकल साज मँगवायो प्रभु दोहुँन कहँ दीन्ह्यो।
चले नाथ पहुँचावन दोहुँन भ्रातन संगहि लीन्ह्यो॥
दुर्ग द्वार लों जाय भुवनपति मिले दुहुँन बहु बारा।
शिथिल अंग भे प्रेम विवश प्रभु ढारत आँसुन धारा॥
तहँ सुग्रीव बिभीषण प्रभु के गये चरण लपटाई।
पुनि उठि जोरि पाणि बोले दोउ आँखिन अंबु बहाई॥
तजेहु नाथ जनि सुरति हमारी जानि दुहुन लघु दासा।
बहुरि आय पद लखब आसुहीं तुव पद निकट सुपासा॥
पृथक पृथक प्रभु मिले कपिन सब लघु बड़भेद नमान्यो।
भूषण बसन कनक भाजन दै सब समान सनमान्यो॥
भरत लषण रिपुसूदन सोपुनि मिले सकल बहु बारे।
राम कमलपद रेणु धारि शिर निज निज भवन सिधारे॥
पवनसुवन कहँ कह्यो राम तब निवसहु निकट हमारे।
तेहि औसर लंकापति प्रभु सों ऐसे वचन उचारे॥
देहु नाथ कछु चीन्ह आपनो जात मोर उधारा।
प्रभु कह जो चाहौ सो लीजै हमरे जौन तुम्हारा॥
कह्यो विभीषण रंगनाथ को दीजै दीनदयाला।
मैं पूजन करिहौं निशि वासर तिहरो रूप विशाला॥
प्रभु कह यदपि हमारे कुल धन रंगनाथ भगवाना।
तदपि सखा कछु नहिं अदेय तोहिं लै गमनहु मतिवाना॥
रघुकुल को धन पाय विभीषण प्रभु पद पंकज बंदी॥
चल्यो लंक कहँ धन्य जन्म गुनि बारहिं बार अनंदी॥
द्राविड देश विभीषण पहुंच्यो कावेरी के तीरा।
गरुआने तब रंगनाथ प्रभु सके न लै चलि बीरा॥
दोहा–कियो विभीषण प्रार्थना, कह्यो रंग भगवान।

चीरतहीं चाम चाम अंतर चितै परे,
चितेर के लिखे से वर्ण सीता राम सीता राम ॥
दोहा—लीन्ह्यौ हिये लगाय उठि, आसन ते रघु बीर ।
सुत समीर को पीर बिन, सुंदर भयो शरीर ॥

छन्द चौबोला ।

यहिविधि राजतिलक रघु बर को भयो अवधपुर माहीं ।
तेहि दिन ते सतयुग अस लाग्यो प्राणी सुखित सदाहीं ॥
नित नित मंगल मोद महोत्सव देश देश महँ भयऊ ।
तीनिहुँ ताप विगत पुरजन सब सपनेहुँ शोक न छयऊ ॥
पृथक पृथक बानरन सयूथन प्रभु कीन्ह्यो सतकारा ।
नित नित नव नव भोजन पान सुभूषण बसन अपारा ॥
दुविद मयंद नील नल आदिक कपि यूथपन अनेका ।
भूषण बसन दिये प्रभु सादर जेहिं जस रह्यो बिवेका ॥
कछुक काल महँ प्रभु कपिनायक निशिचरनायक आन्यो ।
शील सकोच सनेह मित्रता संयुत वचन बखान्यो ॥
अस अभिलाष होति मोरे मन कछु दिन कहँ दोउ मीतू ।
किसकिंधा लंका कहँ गवनौ संयुत सेन अभीतू ॥
बालि प्रजा सुहृदन को सुख दै फेरि अवध कहँ आवहु ।
सदा बसहु मोरे समीप महँ नित नित सुख उपजावहु ॥
कपिपति लंकापति तब बोले प्रभु शासन शिर माहीं ।
सहि न जात तुव बिरह क्षणहुँ भर कछु अपनो बश नाहीं ॥
तब प्रभु ह्वै प्रसन्न बोले पुनि शपथ मोरि सब काहीं ।
निज निज नगर जाहु कछु दिन को पुनि आइयो इहाँहीं ॥
कबहुँ हमार तुमार बिछोह न जानहु सत्य सदाहीं ।
अस कहि बहु समुझाय दुहुन को बोल्यो भरत नहाहीं ॥
लक्ष लक्ष गज दश दश लक्षहुँ बाजी कनक सँवार ।
अयुत अयुत रथ अभरण अंबर आनहु आमुद [illegible] ॥

लषण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लषण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लषण लाल युवराज कहावै यह हमरे मनशा में ॥
मम शासन सब भरत सुनावैं रिपुहन चमू चलामें ।
में बसिहौं अन्तहपुर धामें वर अशोक बनिका में ॥
लषण जोरि कर बोल्यो रामै प्रभु यह देहु न कामें ।
पद सेवन करिहौं वसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावै अपनो शपथ धरावैं ।
ह्वै युवराज करहु यह कामें केहि तुम सम हम पावैं ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवैं तुम लायक वसुधामें ।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामें ॥
सौंपेहु लषणहिं सेन सुदामें रिपुहन को धन धामें ॥
आय गये अशोक बनिका मैं सीय सहित अभिरामैं ॥
कोटिन सखी कला देखरामैं राग अनेकन गावैं
नाचहिं अरु बहु भाव बतावैं बाजन मधुर बजावैं ॥
भरत लषण रिपुसूदन धावैं कारज सकल चलावैं ।
धनहुं धरा अरु धर्म बढ़ावैं प्रजा शोक नहिं पावैं ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावै विधवा होइ न वामैं ।
कौनिहुं वस्तु न चोर चोरावै वली न निबल सतामैं ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावै पवन जोर नहिं आवैं ।
माँगे घन वरसैं वसुधा मैं नहिं अकाल कर नामै ॥
अगिनित आमय देहन आवैं जन आयुष बल पावैं ।
वेद शास्त्र सब पढ़ै पढ़ावैं धर्म अनेक सिखावैं ॥
क्षुधा विविश नहिं कोउ दुख पावैं याग करन मन लावैं ॥
वरणाश्रम को धर्म चलावैं द्रोह कोह बिसरावैं ॥
भजहिं राम पद कमल अकामैं प्रभु त्रैताप नशावैं ।
अवध प्रजा के धामन धामैं कबहुं न दुख समहावैं ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल।
गयो वालि मोहिं पालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल।
अभै हस्त मस्तक धर्‌यो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल।
आसुहि आवहु अवध कहँ बीर वालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल बसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं ॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामैं मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ पट ऋतुनित भामैं।

लषण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लषण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लषण लाल युवराज कहावें यह हमरे मनशा में ॥
मम शासन सब भरत सुनावें रिपुहन चमू चलामें ।
मैं बसिहौं अन्तहपुर धामें वर अशोक वनिका में ॥
लषण जोरि कर बोल्यो रामें प्रभु यह देहु न कामें ।
पद सेवन करिहौं वसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावें अपनो शपथ धरावें ।
ह्वै युवराज करहु यह कामें केहि तुम सम हम पावें ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवें तुम लायक वसुधामें ।
भरत मानि शासन श्रीरामैं कीन्ह्यो चरण प्रणामैं ॥
सौंपेहु लषणहिं सैन सुदामें रिपुहन को धन धामें ॥
आय गये अशोक वनिका में सीय सहित अभिरामें ॥
कोटिन सखी कला देखरामें राग अनेकन गावें
नाचहिं अरु बहु भाव बतावें बाजन मधुर बजावें ॥
भरत लषण रिपुसूदन धावें कारज सकल चलावें ।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढ़ावें प्रजा शोक नहिं पावें ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावे विधवा होइ न बामें ।
कौनेहुँ वस्तु न चोर चोरावे वली न निबल सतामें ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावे पवन जोर नहिं आवें ।
माँगे घन वरसें वसुधा में नहिं अकाल कर नामें ॥
अगिनित आमय देहन आवें जन आयुष बल पावें ।
वेद शास्त्र सब पढें पढ़ावें धर्म अनेक सिखावें ॥
क्षुधा निनिश नहिं कोउ दुख पावें याग करन मन लावें ॥
बरणाश्रम को धर्म चलावें द्रोह कोह विसरावें ॥
भजहिं राम पद कमल अकामें प्रभु त्रैताप नशावें ।
अवध प्रजा के धामन धामें कबहुं न दुख समहावें ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार ।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान ।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल ।
गयो वालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल ।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल ।
आसुहि आवहु अवध कहँ बीर वालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय ।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
बिनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर ।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान ।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला ।

नित नवमंगल बसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं ।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं ।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं ।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं ॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं ।
निरचत अर्थ धर्म अरु कामैं मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ पट ऋतुनित भामैं ।

लषण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लषण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लषण लाल युवराज कहावै यह हमरे मनशा में ॥
मम शासन सब भरत सुनावैं रिपुहन चमू चलामै ।
मैं बसिहौं अन्तहपुर धामें वर अशोक वनिका मैं ॥
लषण जोरि कर बोल्यो रामै प्रभु यह देहु न कामैं।
पद सेवन करिहौं वसुयामैं अति अभिरुचि मम यामैं ॥
तब लागे भरतहि दुलरावै अपनो शपथ धरावैं।
ह्वै युवराज करहु यह कामैं केहि तुम सम हम पावैं ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवैं तुम लायक वसुधामैं।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामैं ॥
सौंपेहु लषणहिं सेन मुदामैं रिपुहन को धन धामैं ॥
आय गये अशोक वनिका मैं सीय सहित अभिरामैं ॥
कोटिन सखी कला देखरामैं राग अनेकन गावैं
नाचहिं अरु बहु भाव बतावैं बाजन मधुर बजावैं ॥
भरत लषण रिपुसूदन धावैं कारज सकल चलावैं।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढ़ावैं प्रजा शोक नहिं पावैं ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावै विधवा होइ न वामैं।
कोनेहुँ वस्तु न चोर चोरावै वली न निबल सतामैं ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावै पवन जोर नहिं आवैं।
माँगे घन बरसैं वसुधा मैं नहिं अकाल कर नामै ॥
अगिनित आमय देहन आवैं जन आयुष बल पावैं।
वेद शास्त्र सब पढै पढ़ावैं धर्म अनेक सिखावैं ॥
क्षुधा विविश नहिं कोउ दुख पावैं याग करन मन लावैं ॥
वरणाश्रम को धर्म चलावैं द्रोह कोह निसरावैं ॥
भजहिं राम पद कमल अकामैं प्रभु त्रैताप नशावैं।
अवध प्रजा के धामन धामैं कवहुं न दुख समहावैं ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तब संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल।
गयो बालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल।
आसुहि आवहु अवध कहँ बीर बालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल वसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामैं मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ षट ऋतुनित भामैं।

लपण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लपण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लपण लाल युवराज कहावें यह हमरे मनशा में ॥
मम शासन सब भरत सुनावें रिपुहन चमू चलामें।
में बसिहों अन्तहपुर धामें वर अशोक बनिका में ॥
लपण जोरि कर बोल्यो रामें प्रभु यह देहु न कामें।
पद सेवन करिहों बसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावें अपनो शपथ धरावें।
ह्वै युवराज करहु यह कामें केहि तुम सम हम पावें ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवें तुम लायक बसुधामें।
भरत मानि शासन श्रीरामें कीन्ह्यो चरण प्रणामें ॥
सौंपेहु लपणहिं सैन मुदामें रिपुहन को धन धामें ॥
आय गये अशोक बनिका में सीय सहित अभिरामें ॥
कोटिन सखी कला देखरामें राग अनेकन गावें
नाचहिं अरु बहु भाव बतावें बाजन मधुर बजावें ॥
भरत लपण रिपुसूदन धावें कारज सकल चलावें।
धनहुं धरा अरु धर्म बढ़ावें प्रजा शोक नहिं पावें ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावे विधवा होइ न बामें।
कौनेहु वस्तु न चोर चोरावे बली न निबल सतामें ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावे पवन जोर नहिं आवें।
माँगे घन बरसें बसुधा में नहिं अकाल कर नामे ॥
अगिनित आमय देहन आवें जन आयुष बल पावें।
वेद शास्त्र सब पढें पढ़ावें धर्म अनेक सिखावें ॥
क्षुधा त्रिविश नहिं कोउ दुख पावें याग करन मन लावें ॥
वरणाश्रम को धर्म चलावें द्रोह कोह बिसरावें ॥
भजहिं राम पद क़मल अकामें प्रभु त्रैताप नशावें।
अवध प्रजा के धामन धामें कबहुं न दुख समहावें ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार ।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान ।
अवलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल ।
गयो वालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल ।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल ।
आसुहि आवहु अवध कहँ वीर वालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय ।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर ।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान ।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला ।

नित नवमंगल वसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं ।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं ।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं ।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं ।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामैं मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ पट ऋतुनित भामैं ।

लपण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लपण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लपण लाल युवराज कहावै यह हमरे मनशा मैं ॥
मम शासन सब भरत सुनावैं रिपुहन चमू चलामै।
में बसिहौं अन्तहपुर धामें बर अशोक बनिका मैं ॥
लपण जोरि कर बोल्यो रामै प्रभु यह देहु न कामैं।
पद सेवन करिहौं बसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावै अपनो शपथ धरावैं।
ह्वै युवराज करहु यह कामैं केहि तुम सम हम पावैं ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवैं तुम लायक बसुधामैं।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामैं ॥
सौंपेहु लपणहिं सेन मुदामें रिपुहन को धन धामैं ॥
आय गये अशोक बनिका मैं सीय सहित अभिरामैं ॥
कोटिन सखी कला देखरामैं राग अनेकन गावैं
नाचहिं अरु बहु भाव बतावैं बाजन मधुर बजावैं ॥
भरत लपण रिपुसूदन धावैं कारज सकल चलावैं।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढ़ावैं प्रजा शोक नहिं पावैं ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावै विधवा होइ न बामैं।
कौनिहुँ वस्तु न चोर चोरावै बली न निबल सतामैं ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावै पवन जोर नहिं आवैं।
माँगे घन बरसैं बसुधा मैं नहिं अकाल कर नामै ॥
अगिनित आमय देहन आवैं जन आयुप बल पावैं।
वेद शास्त्र सब पढैं पढ़ावैं धर्म अनेक सिखावैं ॥
क्षुधा पिपिशा नहिं कोउ दुख पावैं याग करन मन लावैं ॥
वरणाश्रम को धर्म चलावैं द्रोह कोह बिसरावैं ॥
भजहिं राम पद कमल अकामैं प्रभु त्रैताप नशावैं।
अवध प्रजा के धामन धामैं कबहुं न दुख समदावैं ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल।
गयो बालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल।
आसुहि आवहु अवध कहँ बीर बालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल वसुंधरा मैं प्रजा सरस सरसावैं।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामै मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ षट ऋतुनित भामैं।

लपण भरत रिपुहन तेहि ठामें आय कियो परनामें ॥
लपण अंक बैठाय ललामें बोले नाथ सभा में।
लपण लाल युवराज कहावे यह हमरे मनशा में ॥
मम शासन सब भरत सुनावें रिपुहन चमू चलामें।
में बसिहों अन्तहपुर धामें वर अशोक बनिका में ॥
लपण जोरि कर बोल्यो रामें प्रभु यह देहु न कामें।
पद सेवन करिहों वसुयामें अति अभिरुचि मम यामें ॥
तब लागे भरतहि दुलरावे अपनो शपथ धरावें।
ह्वै युवराज करहु यह कामें केहि तुम सम हम पावें ॥
पालहु प्रजा करहु जस आवें तुम लायक वसुधामें।
भरत मानि शासन श्रीरामै कीन्ह्यो चरण प्रणामें ॥
सौंपेहु लपणहिं सैन मुदामें रिपुहन को धन धामें ॥
आय गये अशोक बनिका में सीय सहित अभिरामें ॥
कोटिन सखी कला देखरामें राग अनेकन गावें
नाचहिं अरु बहु भाव बतावें बाजन मधुर बजावें ॥
भरत लपण रिपुसूदन धावें कारज सकल चलावें।
धनहुँ धरा अरु धर्म बढ़ावें प्रजा शोक नहिं पावें ॥
पितु देखत सुत मृत्यु न पावे विधवा होइ न बामें।
कौनेहुँ वस्तु न चोर चोरावे बली न निबल सतामें ॥
कोउ नहिं पावक भवन लगावे पवन जोर नहिं आवें।
माँगे घन बरसें वसुधा में नहिं अकाल कर नामै ॥
अगिनित आमय देहन आवें जन आयुष बल पावें।
वेद शास्त्र सब पढै पढ़ावें धर्म अनेक सिखावें ॥
क्षुधा विविश नहिं कोउ दुख पावें याग करन मन लावें ॥
वरणाश्रम को धर्म चलावें द्रोह कोह बिसरावें ॥
भजहिं राम पद कमल अकामें प्रभु त्रैताप नशावें।
अवध प्रजा के धामन धामें कबहुं न दुख समदावें ॥

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार ।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान ।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल ।
गयो वालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल ।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल ।
आसुहि आवहु अवध कहँ वीर वालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत आय ।
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद विलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर ।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान ।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला ।

नित नवमंगल बसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं ।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं ।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं संपूरण धन धावैं ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं प्रभु छवि चित्त छकावैं ।
पुनि पुनि शिर नावैं जन बलि जावैं धनि निज भाग्यगनावैं॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावैं ।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामै मनहि दुचित नहिं ल्यावैं ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ पट ऋतुनित भामैं ।

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न करव पयान ॥
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु हमार।
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव संसार ॥
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक पयान।
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान ॥
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु कृपाल।
गयो वालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोदहिं हाल ॥
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं काल।
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन रसाल ॥
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन यहि काल।
आसुहि आवहु अवध कहँ वीर वालि के लाल ॥
करि प्रणाम अंगद चलयो, मिल्यो पवनसुत आय।
वार वार दोउ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, वारहिं वार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर ॥
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकुल भान।
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल वसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावें ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावें।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावें संपूरण धन धावें ॥
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावें प्रभु छवि चित्त छकावें।
पुनि पुनि शिर नावें जन बलि जावें धनि निज भाग्यगनावें॥
तिहुँ पुर अभिरामैं जन श्रीरामैं लखत जन्मफल पावें।
विरचत अर्थ धर्म अरु कामै मनहि दुचित नहिं ल्यावें ॥
एक समय प्रभु गये अरामैं जहँ षट ऋतुनित भामैं।

यहि थल हम रहिहैं अवशि, लंक न
तुम आवहु इत रोजहीं, पूजन करहु
भुक्ति मुक्ति फल पाइहौ, छूटी तव
एवमस्तु कहि लंक पति, कीन्ह्यो लंक
अबलों आवत रंगपुर, पूजन अंतरधान
गह्यो चरण अंगद बहुरि, मोहिन तजहु
गयो वालि मोहिं घालि प्रभु, तुम्हरे गोद
लीन्ह्यो अंक उठाय प्रभु, अंगद को तेहिं
अभै हस्त मस्तक धरयो, बोले वचन र
मोहिं प्राण प्रिय तुम सदा, जाहु भवन य
आसुहि आवहु अवध कहँ वीर वालि के ल
करि प्रणाम अंगद चल्यो, मिल्यो पवनसुत
बार बार दोऊ मिले, कह अंगद बिलखाय ॥
विनै करहुँ कर जोरि कै, बारहिं बार निहोर।
कबहुँ कबहुँ रघुनाथ कहँ, सुरति करायो मोर
यहि विधि करि सब कपिन की, बिदा भानुकु
आय सभा बैठत भये रघुपति कृपानिधान ॥

छन्द रोला।

नित नवमंगल बसुंधरा में प्रजा सरस सरसावैं।
सात द्वीप नव खंड धरा में शासन राम चलावैं ॥
रोजहि प्रजा दरश कहँ आवैं नित नव आनँद पावैं।
प्रभु कहँ अति भावैं प्रति जावैं
पूरण मनकामैं ह्वै पुनि जावैं
पुनि पुनि शिर नावैं जन
तिहुँ पुर अभिरामैं जन
विरचत अर्थ धर्म अरु
एक समय प्रभु गये

वाजिमेध कीन्हे बहु रामा। थाप्यो धरणि धर्म बलधामा॥

दोहा—राज करत रघुराज को, त्रिते हजारन वर्ष।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष॥

चौपाई।

रामायण षट कांड बखाना। उत्तर सतम काव्य प्रमाना॥
यह षट कांड कथा में बरनी। राम कथा रसिकन रस भरनी॥
याको राम स्वयंवर नामा। कहत सुनत पूरत मनकामा॥
क्षमो रसिकजन मोरि ढिठाई। करौं प्रणाम चरण शिर नाई॥
वाल्मीकि तुलसी की गाई। रच्यों रीति सोइ करत ढिठाई॥
राम कथा मंजुल मनहारी। यदपि कियों संकोचहुं भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा॥
राम स्वयंवर ग्रन्थ सोहावन। केवल राम सुयश जग पावन॥
जौन हेत ग्रन्थहि निरमाना। तौन हेत अब सुनहुं सुजाना॥
गवने एक समय हम कासी। बिश्वेश्वर के दरशन आसी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद वास करि पायों॥
तहँ को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥

दोहा धर्म धुरंधर धरणि महँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

[illegible]द शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
[illegible]ाम नगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अंत माहिं नारायण वादा॥
तिनके कुल की रीति सोहाई। करहिं रामलीला सुख दाई॥
कतहुन भरतखंड महं ऐसी। करहिं रामलीला नृप जैसी॥
सब साहेबी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सब आवैं। यथा योग सतकारहिं पावैं॥

अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामै पुंडरीक कहुँ भावैं
राजसूय कहुँ यज्ञ सोहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं ।
दीनन के दारिद टरि जामै विप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजान बाहुँ अभिरामै मंद करै दुति कामै ।
नैनन सों सरसिज लजिजामै वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरे अस कोउ न देखावै जेहिंन प्राण प्रिय रामै ।
राम हेत बहु देव मनावै आसु तासु फल पामै ॥
सांझ समै प्रभु नित कढ़ि आवैं प्रजन सुछवि दरशावैं ।
हांस विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातन को सुख उपजावैं बालकला देखरामैं ।
श्रीरघुराज हरप अति पावैं आवैं देव सभा मैं ॥

दोहा—राज राज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज ।
पालत त्रिभुवन भवन वसि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई।

एक समय रघुवंश समाजा । सहित सभा रघुराज विराजा ॥
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये । प्रभु उठि भाइन युत शिर नाये॥
धरेउ शीश जल चरण पखारी । सादर पूंछ्यो कुशल खरारी ॥
मुनि पुलकित तन वदतनवाणी । ढारत नयन प्रमोदित पानी ॥
धरि धीरज अस्तुति तव कीन्हे । आसिरवाद विविध विधि कीन्हे॥
तहँ कुंभज मुनि करि विस्तारा । रावण पूरुब चरित उचारा ॥
सुनि सुनि रघुवंशी सब हरपे । करि प्रणाम दृग सुख जलबरपे ॥
लहि प्रभु सों सतकार अपारा । मुनि गवने यश करत उचारा ॥
यहि विधि रोज रोज रघुराजा । करत प्रमोदित प्रजा समाजा ॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू । पालत त्रिभुवन कृपानिकेतू ॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं । नित नित नव आनँद उरभरहीं ॥

वाजिमेध कीन्हे बहु रामा। थाप्यो धरणि धर्म बलधामा॥

दोहा–राज करत रघुराज को, बिते हजारन वर्ष।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष॥

चौपाई।

रामायण पट कांड बखाना। उत्तर सतम काव्य प्रमाना॥
यह पट कांड कथा मैं बरनी। राम कथा रसिकन रस भरनी॥
याको राम स्वयंवर नामा। कहत सुनत पूरत मनकामा॥
क्षमो रसिकजन मोरि ढिठाई। करौं प्रणाम चरण शिर नाई॥
वाल्मीकि तुलसी की गाई। रच्यों रीति सोइ करत ढिठाई॥
राम कथा मंजुल मनहारी। यदपि कियों संकोचहुं भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा॥
राम स्वयंवर ग्रन्थ सोहावन। केवल राम सुयश जग पावन॥
जौन हेत ग्रन्थहि निरमाना। तौन हेत अब सुनहुं सुजाना॥
गवने एक समय हम कासी। विश्वेश्वर के दरशन आसी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद वास करि पायों॥
तहँ को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥

दोहा धर्म धुरंधर धरणि महँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

वेद शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
राम नगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अंत माहिं नारायण वादा॥
तिनके कुल की रीति सोहाई। करहिं रामलीला सुख दाई॥
कतहुन भरतखंड महं ऐसी। करहिं रामलीला नृप जैसी॥
सब साहिबी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सब आवैं। यथा योग सतकारहिं पावैं॥

अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामै पुंडरीक कहुँ भावैं
राजसूय कहुँ यज्ञ सोहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं ।
दीनन के दारिद टरि जामै विप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजान बाहुँ अभिरामै मंद करै दुति कामै ।
नैनन सो सरसिज लजिजामै वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरे अस कोउ न देखावै जेहिंन प्राण प्रिय रामै ।
राम हेत बहु देव मनावै आसु तासु फल पामै ॥
सांझ समै प्रभु नित कढ़ि आवैं प्रजन सुछवि दरशावैं ।
हांस विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातन को सुख उपजावैं बालकला देखरामैं ।
श्रीरघुराज हरप अति पावैं आवैं देव सभा मैं ॥

दोहा—राज राज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज ।
पालत त्रिभुवन भवन बसि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई।

एक समय रघुवंश समाजा । सहित सभा रघुराज विराजा ॥
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये । प्रभु उठि भाइन युत शिर नाये॥
धरेउ शीश जल चरण पखारी । सादर पूंछ्यो कुशल खरारी ॥
मुनि पुलकित तन बदतनवाणी । ढारत नयन प्रमोदित पानी ॥
धरि धीरज अस्तुति तब कीन्हे । आसिरवाद विविध विधि कीन्हे ॥
तहँ कुंभज मुनि करि विस्तारा । रावण पूरुब चरित उचारा ॥
सुनि सुनि रघुवंशी सब हरपे । करि प्रणाम दृग सुख जलबरपे ॥
लहि प्रभु सो सतकार अपारा । मुनि गवने यश करत उचारा ॥
महि विधि राज रोज रघुराजा । करत प्रमोदित प्रजा समाजा ॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू । पालत त्रिभुवन कृपानिकेतू ॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं । नित नित नव आनँद उरभरहीं ॥

वाजिमेध कीन्हे वहु रामा। थाप्यो धरणि धर्म वलधामा॥
दोहा–राज करत रघुराज को, विते हजारन वर्ष।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष॥

चौपाई।

रामायण पट कांड वखाना। उत्तर सप्तम काव्य प्रमाना॥
यह पट कांड कथा मैं वरनी। राम कथा रसिकन रस भरनी॥
याको राम स्वयंवर नामा। कहत सुनत पूरत मनकामा॥
क्षमो रसिकजन मोरि ढिठाई। करौं प्रणाम चरण शिर नाई॥
वाल्मीकि तुलसी की गाई। रच्यौं रीति सोइ करत ढिठाई॥
राम कथा मंजुल मनहारी। यदपि कियों संकोचहुं भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा॥
राम स्वयंवर ग्रन्थ सोहावन। केवल राम सुयश जग पावन॥
जोन हेत ग्रन्थहि निरमाना। तौन हेत अव सुनहुं सुजाना॥
गवने एक समय हम कासी। विश्वेश्वर के दरशन आसी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद वास करि पायों॥
तहँ को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥
दोहा धर्म धुरंधर धरणि महँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

वेद शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
राम नगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अंत माहिं नारायण वादा॥
तिनके कुल की रीति सोहाई। करहिं रामलीला सुख दाई॥
कतहुन भरतखंड मह ऐसी। करहिं रामलीला नृप जैसी॥
सव साहेवी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सव आवैं। यथा योग सतकारहिं पावैं॥

अश्वमेध कहुँ यज्ञ लखामैं पुंडरीक कहुँ भावैं
राजसूय कहुँ यज्ञ सोहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं।
दीनन के दारिद टरि जामै विप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजान बाहुँ अभिरामै मंद करै दुति कामै।
नैनन सों सरसिज लजिजामै वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरे अस कोउ न देखावै जेहिंन प्राण प्रिय रामै।
राम हेत बहु देव मनावै आसु तासु फल पामै ॥
सांझ समै प्रभु नित कढ़ि आवैं प्रजन सुछवि दरशावैं।
हांस विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातन को सुख उपजावैं बालकला देखरामैं।
श्रीरघुराज हरष अति पावैं आवैं देव सभा मैं ॥

दोहा–राज राज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज।
पालत त्रिभुवन भवन बसि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई।

एक समय रघुवंश समाजा। सहित सभा रघुराज विराजा ॥
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये। प्रभु उठि भाइन युत शिर नाये ॥
धरेउ शीश जल चरण पखारी। सादर पूंछ्यो कुशल खरारी।
मुनि पुलकित तन वदतनवाणी। ढारत नयन प्रमोदित पानी ॥
धरि धीरज अस्तुति तव कीन्हे। आसिरवाद विविध विधि कीन्हे ॥
तहँ कुंभज मुनि करि विस्तारा। रावण पूरुब चरित उचारा ॥
सुनि सुनि रघुवंशी सब हरषे। करि प्रणाम दृग सुख जलबरषे ॥
लहि प्रभु सो सतकार अपारा। मुनि गवने यश करत उचारा ॥
यहि विधि रोज रोज रघुराजा। करत प्रमोदित प्रजा समाजा ॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू। पालत त्रिभुवन कृपानिकेतू ॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं। नित नित नव आनँद उरभरहीं ॥

वाजिमेध कीन्हे बहु रामा। थाप्यो धरणि धर्म बलधामा॥
दोहा–राज करत रघुराज को, विते हजारन वर्ष।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष॥

चौपाई।

रामायण पट कांड बखाना। उत्तर सप्तम काव्य प्रमाना॥
यह पट कांड कथा मैं बरनी। राम कथा रसिकन रस भरनी॥
याको राम स्वयंवर नामा। कहत सुनत पूरत मनकामा॥
क्षमौ रसिकजन मोरि ढिठाई। करौं प्रणाम चरण शिर नाई॥
वाल्मीकि तुलसी की गाई। रच्यों रीति सोइ करत ढिठाई॥
राम कथा मंजुल मनहारी। यदपि कियों संकोचहुं भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा॥
राम स्वयंवर ग्रन्थ सोहावन। केवल राम सुयश जग पावन॥
जौन हेत ग्रन्थहि निरमाना। तौन हेत अब सुनहुं सुजाना॥
गवने एक समय हम कासी। विश्वेश्वर के दरशन आसी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद वास करि पायों॥
तहँ को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥
दोहा धर्म धुरंधर धरणि महँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

वेद शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
राम नगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावैं। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावैं॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अंत माहिं नारायण वादा॥
तिनके कुल की रीति सोहाई। करहिं रामलीला सुख दाई॥
कतहुन भरतखंड महं ऐसी। करहिं रामलीला नृप जैसी॥
सब साहेबी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सब आवैं। यथा योग सतकारहिं पावैं॥

अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामै पुंडरीक कहुँ भावैं
राजसूय कहुँ यज्ञ सोहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं।
दीनन के दारिद टरि जामै विप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजान बाहुँ अभिरामै मंद करै दुति कामै।
नैनन सो सरसिज लजिजामै वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरै अस कोउ न देखावै जेहिंन प्राण प्रिय रामै।
राम हेत बहु देव मनावै आसु तासु फल पामै ॥
सांझ समै प्रभु नित कढ़ि आवैं प्रजन सुछवि दरशावैं।
हांस विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातन को सुख उपजावैं बालकला देखरामैं।
श्रीरघुराज हरष अति पावैं आवैं देव सभा मैं ॥

दोहा—राज राज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज।
पालत त्रिभुवन भवन बसि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई।

एक समय रघुवंश समाजा। सहित सभा रघुराज विराजा।
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये। प्रभु उठि भाइन युत शिर नाये॥
धरेउ शीश जल चरण पखारी। सादर पूंछ्यो कुशल खरारी॥
मुनि पुलकित तन वदतनवाणी। ढारत नयन प्रमोदित पानी॥
धरि धीरज अस्तुति तव कीन्हे। आसिरवाद विविध विधि कीन्हे॥
तहँ कुंभज मुनि करि विस्तारा। रावण पूरुव चरित उचारा॥
सुनि सुनि रघुवंशी सब हरषे। करि प्रणाम दृग सुख जलवरषे॥
लहि प्रभु सो सतकार अपारा। मुनि गवने यश करत उचारा॥
महि विधि रोज रोज रघुराजा। करत प्रमोदित प्रजा समाजा॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू। पालत त्रिभुवन कृपानिकेतू॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं। नित नित नव आनँद उरभरहीं॥

वाजिमेध कीन्हे बहु रामा। थाप्यो धरणि धर्म बलधामा॥

दोहा—राज करत रघुराज को, बिते हजारन वर्ष।
सतयुग सम त्रेता भयो, रह्यो पूरि जग हर्ष॥

चौपाई।

रामायण षट कांड बखाना। उत्तर सप्तम काव्य प्रमाना॥
यह षट कांड कथा में बरनी। राम कथा रसिकन रस भरनी॥
याको राम स्वयंवर नामा। कहत सुनत पूरत मनकामा॥
क्षमों रसिकजन मोरि ढिठाई। करौं प्रणाम चरण शिर नाई॥
वाल्मीकि तुलसी की गाई। रच्यों रीति सोइ करत ढिठाई॥
राम कथा मंजुल मनहारी। यदपि कियों संकोचहुं भारी॥
कहतहिं कहत भयो विस्तारा। सुकवि सुधारहु बुद्धि उदारा॥
राम स्वयंवर ग्रन्थ सोहावन। केवल राम सुयश जग पावन॥
जौन हेत ग्रन्थहि निरमाना। तौन हेत अब सुनहुं सुजाना॥
गवने एक समय हम कासी। विश्वेश्वर के दरशन आसी॥
करि शिव दरशन गंग नहायों। परमानंद वास करि पायों॥
तहँ को भूपति परम सुजाना। गौतम वंश सुविप्र प्रधाना॥

दोहा धर्म धुरंधर धरणि महँ, शुद्ध बुद्धि धृत धीर।
शील सकोच सनेह शुचि, सहज सुभाव गँभीर॥

चौपाई।

वेद शास्त्र ज्ञाता धनदाता। राम भक्ति वर बुद्धि विधाता॥
राम नगर गंगातट माहीं। निवसत गौतम भूप तहाँहीं॥
काशिराज महराज कहावें। पुनि द्विजराज प्रतिष्ठा पावें॥
जासु नाम ईश्वरी प्रसादा। अंत माहिं नारायण नादा॥
तिनके कुल की रीति सोहाई। करहिं रामलीला सुख दाई॥
कतहुन भरतखंड महं ऐसी। करहिं रामलीला नृप जैसी॥
सब साहेबी समाज समेतू। रचहिं रामलीला सुखसेतू॥
सुमति रसिक सज्जन सब आवें। यथा योग सतकारहिं पावें॥

अश्वमेध कहुँ यज्ञ ललामै पुंडरीक कहुँ भावैं
राजसूय कहुँ यज्ञ सोहावैं सकल महर्षि करावैं ॥
करहिं और प्रभु यज्ञ अकामै प्रजन सुधर्म सिखावैं।
दीनन के दारिद टरि जामै बिप्र दक्षिणा पावैं ॥
प्रभु आजान बाहुँ अभिरामै मंद करै दुति कामै।
नैनन सो सरसिज लजिजामै वचन सुधा बरसावैं ॥
अवधपुरे अस कोउ न देखावै जेहिन प्राण प्रिय रामै।
राम हेत बहु देव मनावै आसु तासु फल पामै ॥
सांझ समै प्रभु नित कढ़ि आवैं प्रजन सुछवि दरशावैं।
हांस विलास अनेक मचावैं भाइन सखन बुलावैं ॥
प्रभु मातन को सुख उपजावैं बालकला देखरामैं।
श्रीरघुराज हरष अति पावैं आवैं देव सभा मैं ॥

दोहा–राज राज रघुवंशमणि, राजत सहित समाज।
पालत त्रिभुवन भवन बसि, छावत सुयश दराज ॥

चौपाई।

एक समय रघुवंश समाजा। सहित सभा रघुराज विराजा
तहँ अगस्त्य आदिक मुनिआये। प्रभु उठि भाइन युत शिर नाये
धरेउ शीश जल चरण पखारी। सादर पूंछ्यो कुशल खरारी
मुनि पुलकित तन वदतनवाणी। ढारत नयन प्रमोदित पानी
धरि धीरज अस्तुति तव कीन्हे। आसिरबाद विविध विधि कीन्हे।
तहँ कुंभज मुनि करि विस्तारा। रावण पूरुब चरित उचारा।
सुनि सुनि रघुवंशी सब हरषे। करि प्रणाम दृग सुख जलबरषे ॥
लहि प्रभु सो सतकार अपारा। मुनि गवने यश करत उचारा ॥
यहि विधि रोज रोज रघुराजा। करत प्रमोदित प्रजा समाजा ॥
बसत अवधपुर बंधु समेतू। पालत त्रिभुवन कृपानिकेतू ॥
नित सुर नर मुनि दरशनकरहीं। नित नित नव आनँद उरभरहीं ॥

अश्विनमास प्रयंत अपारा। बहै राम रस कीतहँ धारा
मगन रामलीला रसमाहीं। काशिराज नृप रहैं सदाहीं
तुलसीकृत रामायण केरो। कियो तिलक कारि सकलनिवे
कहँलगि कहौं तासु प्रभुताई। सबसों करहिं अछेह मिताई
दोहा–मिल्यौं जाय तिन सों हुलसि, मोहिं लिय अंक लगाय
निज बालक इव जानिकै, दीन्ही प्रीति बढ़ाय॥

चौपाई।

तहँ रामलीला को दरशन। लाग्यौं करन रामरस सरसन
काशिराज तब मोहिं बोलाई। भाष्यौ सकल हेत समुझाई
तुलसीकृत महँ अति संक्षेपा। कहँलगि करी अधिक परिलेपा
ताते रचहु ग्रंथ यक ऐसो। तुलसीकृत रामायण जैसो
उक्ति युक्ति गोस्वामी केरी। वालमीकि की रीति निवे
मैं तब कह्यो परम सुख मानी। ग्रंथ रचौं तव कृपा महा
ज्ञान वृद्धि बय वृद्धि आप हौ। राम नाम मुख करत जाप
यथाशक्ति करिहौं विस्तारा। रामकृपा करिहैं सब पार
सुनि मम वचन मुदित काशीशा। फेरत पाणि घ्राण करि शीश
कीन्ह्यो मैं प्रणाम बहु वारा। आशिष दीन्ह्यो भूप उदार
बांधव देश अगार हमारा। आयो तहँ ते लगी न बार
सुमिरि मुकुन्द चरण शिर नाई। सज्जन सुकवि सहाय बुलाइ
दोहा–नौमि भारती पद कमल, कीन्ह्यो ग्रंथ अरंभ।
रामस्वयंवर नाम जेहि, रुचिर रसिक रसखंभ॥

चौपाई।

वर्ष दुइक कीन्ह्यो निरमाना। पूरन कियो कृपा भगवाना
संवत वनइस से चालीसा। भूप राशि राजित दिन ईसा
माघौ मास महा सुखरासी। दिवस असुरगुरु पूरणमासी
पूरण भयो ग्रन्थ सुख आगर। रामस्वयंवर नाम उजागर

विद्यागुरु रामानुजदासा। जासु अवधपुर सदा निवासा॥
रामभक्त निगमागम ज्ञाता। दीनन ज्ञान भक्ति रस दाता॥
भागवत और रामायण। वेद वेदांत प्रांत पारायण॥
ऊ काल ते मोहिं पढ़ायो। तिनसम द्वितियन दृग तर आयो॥
नकी कृपा पूर भो ग्रन्था। मैं मतिमन्द चल्यो सत पन्था॥
नकुञ्ज गोकुलपरसादा। अति उदंड व्याकरण विवादा॥
मि साहित्य शास्त्र कर ज्ञाता। मेरो सखा बुद्धि अवदाता॥
ास्त्री सुमति सुदर्शनदासा। उत्तम न्याय वेदांत विलासा॥

दोहा-काशीवासी विप्रवर, विश्वनाथ जेहि नाम।
काव्य व्याकरण न्याय महँ, लोक वेद मति धाम॥

चौपाई।

ामचन्द्र शास्त्री मतिमाना। सब नैयायिक माहँ प्रधाना॥
साधु माध्व मत सदाऽवलंबी। विष्णुभक्त सत गुणन कदंबी॥
ये पंडित वर चारु सुचारी। कीन्ही सकल सहाय हमारी॥
भाषा सुकवि सहायक मेरे। कहौं नाम मैं अब तिन केरे॥
रसिकनरायन रसिक अखंडा। जग महँ रघुपति भक्त उदंडा॥
भाषा संस्कृतहुँ निरमानत। राम तत्व तजि और न जानत॥
रसिकविहारी राम पुजारी। राम सुखत्व धर्म धुर धारी॥
द्विज वर श्री गोविंद जेहि नामे। वातसल्य रस राखत रामे॥
हा पात्र कवि सुमति किशोरा। बालगोविंद विप्र कवि मोरा॥
टल्यो ग्रन्थ संयुत मरयादा। मम प्रधान हनुमानप्रसादा॥
सब जुरि मिलि यह ग्रन्थ बनायो। रामकृपा मम नाम दिखायो॥
मैं मतिमन्द विदित जपखानी। ग्रन्थ रचनकी रीति न जानी॥

दोहा-भयो रामनद गर्व अति, चंचल बुद्धि कुसंग।
जो कछु होय भलो कहहुँ, सो प्रभाव सतसंग॥

अश्विनमास प्रयंत अपारा। वहै राम रस कीतहँ धारा॥
मगन रामलीला रसमाहीं। काशिराज नृप रहैं सदाहीं॥
तुलसीकृत रामायण केरो। कियो तिलक करि सकलनिबेरो॥
कहँलगि कहौं तासु प्रभुताई। सबसों करहिं अछेह मिताई॥

दोहा–मिल्यौं जाय तिन सों हुलसि, मोहिं लिय अंक लगाय।
निज बालक इव जानिकै, दीन्ही प्रीति बढ़ाय॥

चौपाई।

तहाँ रामलीला को दरशन। लाग्यौं करन रामरस सरसन॥
काशिराज तब मोहिं बोलाई। भाष्यौ सकल हेत समुझाई॥
तुलसीकृत महँ अति संक्षेपा। कहँलगि करी अधिक परिलेपा॥
ताते रचहु ग्रंथ यक ऐसो। तुलसीकृत रामायण जैसो॥
उक्ति युक्ति गोस्वामी केरी। वालमीकि की रीति निबेरी॥
मैं तब कह्यो परम सुख मानी। ग्रंथ रची तव कृपा महानी॥
ज्ञान वृद्धि वय वृद्धि आप हौ। राम नाम मुख करत जाप हौ॥
यथाशक्ति करिहौं विस्तारा। रामकृपा करिहै सब पारा॥
सुनि मम वचन मुदित काशीशा। फेरत पाणि प्राण करि शीशा॥
कीन्ह्यो मैं प्रणाम बहु बारा। आशिष दीन्ह्यो भूप उदारा॥
बांधव देश अगार हमारा। आयो तहँ ते लगी न बारा॥
सुमिरि मुकुन्द चरण शिर नाई। सज्जन सुकवि सहाय बुलाई॥

दोहा–नौमि भारती पद कमल, कीन्ह्यो ग्रंथ अरंभ।
रामस्वयंवर नाम जेहि, रुचिर रसिक रसखंभ॥

चौपाई।

वर्ष दुइक कीन्ह्यो निरमाना। पूरन कियो कृपा भगवाना॥
संवत वनइस से चातीसा। भूप राशि राजित दिन ईसा॥
माघौ मास महा सुखरासी। दिवस असुरगुरु पूरणमासी॥
पूरण भयो ग्रन्थ सुख आगर। रामस्वयंवर नाम उजागर॥

वेद्यागुरु रामानुजदासा । जासु अवधपुर सदा निवासा ॥
रामभक्त निगमागम ज्ञाता । दीनन ज्ञान भक्ति रस दाता ॥
भागवत और रामायण । वेद वेदांत प्रांत पारायण ॥
ल काल ते मोहिं पढ़ायो । तिनसम द्वितियन हग तर आयो॥
नकी कृपा पूर भो ग्रन्था । मैं मतिमन्द चल्यो सत पन्था ॥
नकुञ्ज गोकुलपरसादा । अति उदंड व्याकरण विवादा ॥
मि साहित्य शास्त्र कर ज्ञाता । मेरो सखा बुद्धि अवदाता ॥
ास्त्री सुमति सुदर्शनदासा । उत्तम न्याय वेदांत विलासा ॥

दोहा-काशीवासी विप्रवर, विश्वनाथ जेहि नाम ।
काव्य व्याकरण न्याय महँ, लोक वेद मति धाम ॥

चौपाई ।

रामचन्द्र शास्त्री मतिमाना । सव नैयायिक माहँ प्रधाना ॥
साधु माध्व मत सदाऽवलंवी । विष्णुभक्त सत गुणन कदंवी ॥
ये पंडित वर चारु सुचारी । कीन्ही सकल सहाय हमारी ॥
भाषा सुकवि सहायक मेरे । कहौं नाम मैं अब तिन केरे ॥
रसिकनरायन रसिक अखंडा । जग महँ रघुपति भक्त उदंडा ॥
भाषा संस्कृतहुँ निरमानत । राम तत्त्व तजि और न जानत ॥
रसिकविहारी राम पुजारी । राम सुतत्व धर्म धुर धारी ॥
द्विज वर श्री गोविंद जेहि नामे । वातसल्य रस राखत रामे ॥
महा पात्र कवि सुमति किशोरा । वालगोविंद विप्र कवि मोरा ॥
लिख्यो ग्रन्थ संयुत मरयादा । मम प्रधान हनुमानप्रसादा ॥
सब जुरि मिलि यह ग्रन्थ वनायो। रामकृपा मम नाम लिखायो ॥
मैं मतिमन्द विधित अघखानी । ग्रन्थ रचनकी रीति न जानी ॥

दोहा-भरो राजमद गर्व अति, चंचल बुद्धि कुसंग ।
जो कछु होय भलो कवहुँ, सो प्रभाव सतसंग ॥

अश्विनमास प्रयंत अपारा। बहै राम रस कीतहँ धारा॥
मगन रामलीला रसमाहीं। काशिराज नृप रहैं सदाहीं॥
तुलसीकृत रामायण केरो। कियो तिलक कारि सकलनिवेरो॥
कहँलगि कहौं तासु प्रभुताई। सबसों करहिं अछेह मिताई॥

दोहा-मिल्यौं जाय तिन सों हुलसि, मोहिं लिय अंक लगाय।
निज बालक इव जानिकै, दीन्ही प्रीति बढ़ाय॥

चौपाई।

तहाँ रामलीला को दरशन। लाग्यौं करन रामरस सरसन॥
काशिराज तब मोहिं बोलाई। भाष्यौ सकल हेत समुझाई॥
तुलसीकृत महँ अति संक्षेपा। कहँलगि करी अधिक परिलेपा॥
ताते रचहु ग्रंथ यक ऐसो। तुलसीकृत रामायण जैसो॥
उक्ति युक्ति गोस्वामी केरी। वालमीकि की रीति निवेरी॥
मैं तव कह्यो परम सुख मानी। ग्रंथ रची तव कृपा महानी॥
ज्ञान वृद्धि वय वृद्धि आप हौ। राम नाम मुख करत जाप हौ॥
यथाशक्ति करिहौं विस्तारा। रामकृपा करिहैं सब पारा॥
सुनि मम वचन मुदित काशीशा। फेरत पाणि प्राण कारि शीशा॥
कीन्ह्यो मैं प्रणाम बहु बारा। आशिष दीन्ह्यो भूप उदारा॥
बांधव देश अगार हमारा। आयो तहँ ते लगी न वारा॥
सुमिरि मुकुन्द चरण शिर नाई। सज्जन सुकवि सहाय बुलाई॥

दोहा-नौमि भारती पद कमल, कीन्ह्यो ग्रंथ अरंभ।
रामस्वयंवर नाम जेहि, रुचिर रसिक रसखंभ॥

चौपाई।

वर्ष दुइक कीन्ह्यो निरमाना। पूरन कियो कृपा
संवत वनइस से चातीसा। भूप राशि रा
भाषौं मास महा सुखरासी। दिवस असु
पूरण भयो ग्रन्थ सुख आगर। रामस्वयंव